گلستان سعدی

गुलिस्ताने सादी

सादिनः पुष्पलोकः

گلستانِ سعدی

गुलिस्ताने सादी

सादिनः पुष्पलोकः

फ़ारसी मूलपाठ, देवनागरी लिपीकरण,
हिन्दी एवं संस्कृत अनुवाद सहित

आचार्य धर्मेन्द्रनाथ

निखिल भारतीय भाषापीठ
INDIAN INSTITUTE OF LANGUAGES

समर्पण—
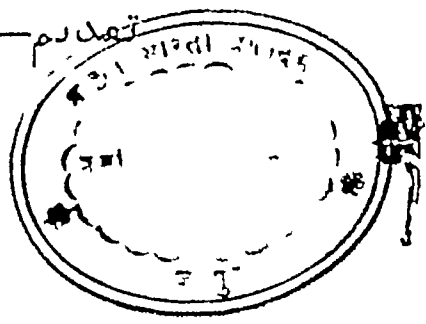
आचार्य धर्मेन्द्रनाथ ईराननरेश को गुलिस्तान का अनुवाद भेंट करते हुए।
पास में शाहबानू फराह दीबा और डा० शफा खड़े हैं।

تقدیم

به پیشگاه مبارک

اعلیحضرت همایون محمد رضا پهلوی آریامهر

شاهنشاه ایران

तक़दीम

ब पेशगाहे मुबारक

आलीहज़रत हुमायूं मुहम्मद रज़ा पहलवी आर्यमेहर

शाहन्शाह ईरान

समर्पणम्

तत्रभवता मुहम्मदरज़ापहलवीमहोदयाना

श्रीमद्राजाधिराजाना आर्यमित्राणाम्

सेवायाम्

Dedicated to

HIS IMPERIAL MAJESTY

MOHAMMAD REZA PAHLAVI ARYAMEHR

SHAHANSHAH OF IRAN

समर्पणम्

पारसीकगीर्वाणगिरौ व्यासं च फिरदौसिनम् ।
पाणिनिं कालिदासं च हाफिजं शेखसादिनम् ॥
काशीं तक्षशिलां काञ्चीं काश्मीरं शारदास्थलम् ।
शीराजं कपिशां पर्शुं श्रीस्थानं सिन्धुं नम ॥
सप्तसिन्धुं नमस्कृत्य गङ्गां च पापनाशिनीम् ।
ईरानीयाः सदानीरा नदीश्च निखिलास्तथा ॥
अल्बुर्जं पर्वतश्रेष्ठं जग्रोसं भूधरं तथा ।
हिमाद्रिं देवतात्मानं पुराणमिव पूर्वजम् ॥
नरोत्तमानहं वन्दे येऽस्माकं पूर्वपूरुषाः ।
येषामद्य प्रजाः सर्वा उभयत्र विराजिताः ॥
मुहम्मद रजाशाहमार्यमित्रं नमाम्यहम् ।
यश्शेषनरेशानामन्वयादागतः शुभम् ॥
राजन्! पुनर्नमस्तेऽस्तु वर्तमाने सति त्वयि ।
आर्याणां व्योमभेदिन्य उड्डीयन्तेऽद्य यैः ध्वजाः ॥

पृथग्भाषा पृथग्भूषा पृथगुपासनपद्धतिः ।
तथापि रक्तसम्बन्धात् प्राचीनाद् भ्रातरो वयम् ॥
न किञ्चिदिह पार्थक्यं दृश्यते चानुमीयते ।
कुलात् संस्कृतिसामान्यादेव वंशसमुद्भवात् ॥
ईरानीयो भवान् राजन्! भारतीया वयं तथा ।
अफगानजनाश्चैते, पाकिस्तानजना इमे ॥
अनेकदेशवास्तव्या अनेकद्वीपवासिनः ।
नैपाला स्वर्णद्वीपस्था ये मे चार्यकुलोद्भवाः ॥
आर्यमित्राभिधानेन सर्वास्त्वामभिजानते ।
मन्यन्ते स्वजनात्मीयं सर्वैश्च पूजितो भवान् ॥
भिन्नं विषयमाश्रित्य भिन्न-नाम-समाश्रिताः ।
इदानीं तव सान्निध्ये मृगस्य विदध्महे ॥

समर्पण

फारसीभाषा और संस्कृत को प्रणाम, व्यास और फिरदौसी को प्रणाम ।
पाणिनि और कालिदास, हाफिज और शेखसादी को प्रणाम ॥
काशी, तक्षशिला, काञ्ची और कश्मीर तथा ।
शीराज, कपिशा, फारस और सीस्तान से लिया मेन्द्रा का प्रणाम ॥
सप्तसिन्धुओं को प्रणाम, पापनाशिनी गंगा को प्रणाम ।
ईरान की समस्त नदियों को प्रणाम ॥
अल्बुर्ज और जग्रोस पर्वतों को प्रणाम ।
हमारे पूर्वजों जितने ही प्राचीन देवतात्मा हिमालय को प्रणाम ॥
उन नरोत्तमों को प्रणाम जो हमारे पूर्वपुरुष थे ।
और जिनकी सन्तान आज दोनों देशों में फैली है ॥
मुहम्मद रजाशाह आर्यमिहिर को प्रणाम ।
यशःशेष नरेशों के वंश में जो उत्पन्न हुए हैं ॥
हे राजन्! आपको पुनःपुनः प्रणाम क्योंकि आपके होने से ।
आज आर्यों की ध्वजा व्योम में फहरा रही है ॥

हमारी भाषा पृथक् है, भूषा पृथक् है, उपासनापद्धति पृथक् है ।
तथापि प्राचीन रक्त—सम्बन्ध के कारण हम भाई भाई हैं ॥
इसमें कोई भी भेद न दिखाई देता है न अनुमान किया जाता है ।
क्योंकि हमारा कुल, संस्कृति और वंश एक है ॥
हे राजन्! आप ईरानी हैं और हम भारतीय हैं ।
ये अफगान, और ये पाकिस्तानी ॥
अनेक देशों में और द्वीपों में निवासी ।
नैपाली, स्वर्णद्वीपवासी और समस्त आर्यवंशीय लोग ॥
आपको 'आर्यों का मित्र' नाम से पहचानते हैं ।
आपको स्वजन और आत्मीय मानते हैं और आप सबके आदरपात्र हैं ॥
हम भिन्न देशों में रहते हैं, हमारे नाम भिन्न हैं ।
किन्तु आज हम आपके निकट एकत्र आये हैं ॥

तक़्दीम

ज़ुवानहाये फारसी व सस्कृत रा सलाम व व्यासो फिरदौसी रा।
पाणिनि व कालिदास रा सलाम व हाफिज़ो सादी रा सलाम ॥
काशी व तक्षशिला रा व काञ्ची व दार'ल् उलूमे काश्मीर रा सलाम।
शीराज़ो कापिशा रा सलाम व फ़ार्सो सीस्तान रा सलाम ॥
हफ्तदरिया रा सलाम व इसियाँ-कुश गगा रा सलाम।
व जुमला दरियाहाए ईरान रा सलाम ॥
कोहे अल् बुर्ज रा सलाम व कोहे ज़ाग्रोस रा सलाम।
व कोहे हिमालया रा सलाम कि हमचु बुज़ुर्गाने मा क़दीम'स्त ॥
बुज़ुर्गाने दिलावर रा सलाम कि अजदादे मा बूदा अन्द।
व नस्ल हाये ऐशान् दर हर दू सरज़मीन गुस्तर्दा अन्द ॥
मुहम्मद रज़ाशाह आर्यमेहर रा सलाम।
वारिसे ताजदारानो शाहान् रा सलाम ॥
ऐ शाह! शुमा रा बाज़ हम सलाम कि बा शुमा।
हनोज़ परचमे आर्यान् फ़ल्क बोस अस्त ॥

बा आँकि ज़ुबानहाये मा मुख्तलिफ़'स्तो लिबासे मा व तरीक़ए नमाज़े मा।
बाज़ व हुक्मे रिश्तए देरीना मा बिरादरेम् ॥
व दरीं अम्र इख्तेलाफ़ नीस्त।
ईं बिरादरीए मा मबनी ए फरहगो तमद्दुन'स्त ॥
शाहन्शाहा! शुमा ईरानी हस्तेद व मा हिन्दी।
वाँहा अफ़ग़ानी अन्द व आनाँ पाकिस्तानी ॥
व बिस्यारे अज़ साकिनाने कारहा व अहालीए दीगर।
निपालियानो सरनदीबियानो हमा आर्यानज़ादाहा ॥
शुमा रा बनामे आर्यमिहर मी दानन्द।
व अज़ीज़ो खेश मी पिज़ीरन्दो शुमा मरिदे एहतरामे हमागानेद ॥
बा आँकि मा दर मुख्तलिफ सरज़मीनहाय ज़िन्दगी मी कुनेम्।
इमरोज़ व नज़्दे शुमा फक़त आर्याई हस्तेम् ॥

تقديم

زبان های فارسی و سانسکریت را سلام و ویاس و فردوسی را
پانینی و کالیداس را سلام و حافظ و سعدی را سلام
کاشی و تکشیلا را و کانچی و دار العلوم کشمیر را سلام
شیراز و کاپیشا را سلام و فارس و سیستان را سلام
هفت دریا را سلام و عصیان کوش گنگا را سلام
و جمله دریاهای ایران را سلام
کوه البرز را سلام و کوه زاگروس را سلام
و کوه هیمالیا را سلام که همچو بزرگان ما قدیم است
بزرگان دلاور را سلام که اجداد ما بوده اند
و نسل های ایشان در هر دو سرزمین گسترده اند
محمد رضا شاه آریا مهر را سلام
وارث تاجداران و شاهان را سلام
ای شاه شما را باز هم سلام که با شما
هنوز پرچم آریان فلک بوس است

با آنکه زبان های ما مختلف است و لباس ما و طریقه نماز ما
باز بحکم رشته دیرینه ما برادریم
و در این امر اختلاف نیست
این برادری ما مبنی فرهنگ و تمدن است
شاهنشاها! شما ایرانی هستید و ما هندی
و آنها افغانی اند و آنان پاکستانی
و بسیاری از ساکنان قاره‌ها و اهالی دیگر
نپالیان و سرندیپیان و همه آریان زاده‌ها
شما را بنام آریا مهر میدانند
و عزیز و خویش میپذیرند و شما مورد احترام همه گانید
با آنکه ما در سر زمین های مختلف زندگی می کنیم
امروز نزد شما فقط آریائی هستیم

समर्पणम्

साम्प्रतं प्रतिजानीमो नार्यो दासत्वमर्हति ।
अयोऽन्यस्य विपत्तौ च भविष्याम सहायका ॥
सर्वे शृण्वन्तु दिक्पाला सर्वे चार्येतरे जना ।
द्वेष्टार आर्यवंशस्य शोषणव्यवसायिन ॥
सर्वे निरपराधघ्ना सर्वेऽनीश्वरवादिन ।
लोलुपा कितवा धूर्ता मत्स्यन्यायपरायणा ॥
आर्यमित्रस्य सान्निध्य आर्यत्वाय शपामहे ।
प्रभविष्यति नो कश्चिदार्याणा भेदसाधने ॥
यथा देहैकदेशेऽस्मिन् तोदात् पीडाभिजायते ।
कृत्स्ने देहे, तथास्माकं भविष्यति परम्परा ॥
एकस्य व्यसने प्राप्ते सर्वे वैकलव्यमाप्नुम ।
ईति-भीति-निरोधार्थं भविष्याम समुद्यता ॥

सर्वे भवन्तु सम्पन्ना सर्वे सन्तु निरामया ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुखभाग्भवेत् ॥
सर्वे चास्तिक्यसम्पन्ना सर्वे हीशपरायणा ।
भ्रातृभावभरा सर्वे परदुखेन दुखिता ॥
नश्यतान्निखिलाल्लोकादन्यायस्य परम्परा ।
पीडितो न भवेत् कश्चित् पीडयेच्च न कश्चन ॥
इमा मम शुभाशसा स्वीकरोतु जगत्पति ।
श्रेयसी च मति दद्याद् यतो न कार्यसाधन ॥
वर्षाणा द्विसहस्रे च तथा पञ्चशते गते ।
आर्याणा श्रेष्ठवंशस्य राज्यस्य स्थापनोत्सवे ॥
श्रीमद् राजाधिराजाना सेवाया च समर्प्यते ।
मया धर्मेन्द्रनाथेन श्लोकानामयमञ्जलि ॥

न त्वह पद्धति जाने शिष्टाचारस्य काञ्चन ।
राजद्वारोचित राजन्नुपचार न कञ्चन ॥
हृदयस्य च रक्तस्य सम्बन्धेन समीरित ।
जाने त्वमसि चास्माकमन्यज्जाने न कञ्चन ॥

समर्पण

आज हम प्रतिज्ञा करते हैं कि आर्य कभी दास नहीं होंगे
और एक दूसरे की विपत्ति में हम एक दूसरे की सहायता करेंगे
सारे दिक्पाल सुन लें, सभी आर्येतर जन सुन लें
आर्यवंश के द्वेषी सुन लें, और शोषण के व्यवसायी सुन लें
सारे निरपराधों को मारने वाले और ईश्वर द्रोही सुन लें
लोभी, छली, प्रपंची और मत्स्यन्याय को मानने वाले सुन लें
आज आर्य मित्र की साक्षी में हम आर्यत्व की कसम खाते हैं
कि कोई भी हम आर्यों में फूट नहीं डाल सकेगा
जैसे शरीर के एक अंग में पीड़ा होने पर सारा शरीर पीड़ा पाता है
उसी प्रकार हम भी एक दूसरे के दुख सुख में साथी होंगे
एक के कष्ट में सभी वेदना का अनुभव करेंगे
और संकट मिटाने के लिये तत्पर होंगे

सब सम्पन्न हों और सभी नीरोग हों
सब अच्छाई देखें और किसी पर दुख न पड़े
सब में आस्तिकता हो, सब ईश्वर भक्त हों
सब भाईचारे से भरे हों और पराये दुख में दुख अनुभव करें
संसार से अन्याय की परम्परा मिट जाय
न कोई सताया जाय और न कोई सताये
परमात्मा मेरी इस प्रार्थना को स्वीकार करे
और सबको सन्मति दे जिससे हम सब की कार्य सिद्धि हो
दो हजार पाँचसौ वर्षों की समाप्ति पर
आर्यों के श्रेष्ठ वंश के राज्य की स्थापना के उत्सव पर
श्रीमान् शाहंशाह की सेवा में
मुझ धर्मेन्द्रनाथ की यह श्लोकाञ्जलि समर्पित है

मैं शिष्टाचार का सौन्दर्य नहीं जानता ।
आपके दरबार के योग्य बिलकुल नहीं जानता ॥
किन्तु रक्त और हृदय का सम्बन्ध मुझ से कहता है ।
'आप हमारे हैं'—मैं इतना ही जानता हूँ ॥

तक़दीम

इमरोज़ सौगन्द मी ख़ुरेम् कि मा आर्याहा बुर्दाए कसे न ख़्वाहेम् शुद ।
व दर मसाइब बा यक दीगर यावरी ख़्वाहेम् शुद ॥
साकिनाने हर सू व हमा ग़ैर आर्याहा ।
व बदख़्वाहाने आर्याहा व हमा ख़ूंख़्वारान् ॥
व क़ातिले मासूमान् व हमा मुनकिरान् ।
व हरीसानो आमिलाने क़ानूने माहियान् बिशिनवन्द ॥
ब निज़्दे आर्यमेहर सौगन्द मी ख़ुरेम् ।
कि हर कस दरमियाने मा क़स्दे निफ़ाक़ कुनद कामयाब न ख़्वाहद शुद ॥
चूनां ख़ारे कि हर गाह दर उज़्वे पैदा शवद ।
तमाम जिस्म रा ब दर्द आवरन्द ॥
आज़ारे यके अज़ मा, आज़ारे हमाए मा ख़्वाहद बूद ।
व दर दफ़ए आं आज़ार मा हमा कोशा ख़्वाहेम् बूद ॥

हमा ख़ुश बाशदो बे आज़ार ।
हमा ख़ुशबीं बाशन्दो कस आज़ुर्दा मबाद ॥
हमा फ़रमांबरदारन्दो ख़ुदापरस्त ।
हमा पुर अज़ रूह बिरादरी व हमदर्दे यक दीगर ॥
ता ख़ात्मा यावद अज़ जहान रस्मे बेदादी ।
नै कस मज़लूम बाशदो नै कस सितमपेशा ॥
ईं दुआए मन् दर बारगाहे ऐज़द तआला मक़बूल बाद ।
व ऐज़द तआला मारा ख़िरदे अता कुनद कि कामयाब बाशेम् ॥
दर ईं फ़ुरसते जश्ने फ़र्ख़ुन्दाए दू हज़ारो पानसद साल ।
व बियानगुज़ारीए शाहन्शाहीए ईरानो आर्यान् ॥
ब पेशगाहे आर्यमेहर पेशकश बाद ।
अज़ सूये धर्मेन्द्रनाथ ईं हदियाए अशआर ॥

हुस्ने आदाबे मन् न मी दानम् ।
लायक़े दरगहत न मी दानम् ॥
रिश्तए ख़ूनो दिल मरा गोयद ।
तोई अज़ मा, जुज़ ईं न मी दानम् ॥

تقدیم

امرور سوگند میحوریم که ما آریاها برده کسی حواهیم شد
و در مصائب با یکدیگر یاوری حواهیم کرد
ساکنان هر سو و همه غیر آریاها
و بدحواهان آریاها و همه حونحواران
و قاتل معصومان و همه منکران
و حریصان و عاملان قانون ماهیان بشنوند
به نرد آریا مهر سوگند میحوریم
که هر کس درمیان ما قصد نفاق کند کامیاب حواهد شد
چونان حاری که هرگاه در عضوی پیدا شود
تمام جسم را بدرد آورد
آرار یکی ار ما آرار همه ما حواهد بود
و در دفع آن آرار ما همه کوشا حواهیم بود

همه حوش باشد و بی‌آرار
همه حوشبین باشند و کس آررده مباد
همه فرمانبردارند و حدا پرست
همه پر ار روح برادری و همدرد یکدیگر
تا حاتمه یابد ار جهان رسم بیدادی
نه کسی مظلوم باشد و نه کسی ستم پیشه
این دعای من در بارگاه ایزد تعالی مقبول باد
و ایزد تعالی ما را خردی عطا کند تا کامیاب باشیم
در این فرصت جشن فرخندهٔ دو هزار و پانصد سال
بنیانگذاری شاهنشاهی ایران و آریان
به پیشگاه آریا مهر پیشکش باد
ار سوی دهرمیندر ناته این هدیه اشعار

حسن آداب من نمی‌دانم
لایق در گهت نمی‌دانم
رشته حون و دل مرا گوید
تو ای ار ما، جز این نمی‌دانم

प्रस्तावना

पुण्यस्मरण

मेरे पिता स्वर्गीय श्री पुरुषोत्तमलालजी मेरे दिन रात के शिक्षक थे। उनके समझाने का ढंग ऐसा था कि उससे स्वत ही अध्ययन और स्वाध्याय की ललक लगने लगती थी। मेरा सौभाग्य था कि मुझे अपने पितृपाद जैसे उद्भट विद्वान् और शिक्षक-पिता मिले।

पिताजी को सप्रमाण बात कहना अच्छा लगता था। किसी बात के समर्थन में वे कभी व्यास का, कभी चाणक्य का, कभी सादी का उद्धरण देते और उन्हें बड़े ही आदर से स्मरण करते। कभी कहते—'सुनो! गुरुओं के गुरु व्यास जी महाराज क्या कहते हैं, कभी कहते—देखो! चाचा सादी क्या कहते हैं!' मेरी माता यह सुनकर कहा करती—'ये मुसलमान तुम्हारे चाचा कहाँ से हो गये!' पिताजी हँसकर टाल देते। एक बार मैंने जब माँ की बात दुहराकर उन्हें टोका तो उन्होंने मुझे समझाया—'सादी, व्यास, पाणिनि और चाणक्य जैसे महापुरुष सारी मानवता के गुरु हैं, इनके प्रति अपनी भक्ति प्रकट करना और इनको प्रेम, श्रद्धा और अपनेपन से स्मरण करना इनका सच्चा श्राद्ध है।' सुनो! आँ हज़रत ने क्या खूब कहा है—'यह मत देखो कि कौन कहता है, बल्कि देखो क्या कहता है। शेख सादी मेरे ही नहीं सभी के चाचा हैं—तुम्हारे भी हैं।' इस प्रकार मुझे विदुर और सादी की सूक्तियाँ बचपन से ही याद होने लगीं।

फ़ारसी भाषा पर पिताजी का बड़ा अनुराग था। मुझे भी वे फारसी पढ़ाना चाहते थे, लेकिन मैं तब संस्कृत में उलझा था। वे प्राय कहा करते थे कि यदि सारे एशिया की भाषाओं पर अधिकार चाहते हो तो फारसी पढ़नी पड़ेगी। बिना फारसी पढ़े अच्छी संस्कृत नहीं आ सकती। मैं तब यह नहीं समझता था। अब मैं यह कह सकता हूँ कि फारसी पढ़े बिना वैदिक भाषा का विद्वान् नहीं हुआ जा सकता। पिताजी कुर्दिश, ताजिक, उज़बेक आदि फारसी मूलोद्भव भाषाओं के भी अधिकारी विद्वान् थे। संस्कृत के प्रति उन्हें कम प्रेम नहीं था लेकिन वे एक भाषा से प्रेम का अर्थ दूसरी भाषा से द्वेष नहीं लगाते थे। वे तो सभी भाषाओं में सरस्वती के दर्शन करते और चाणक्य का यह श्लोक सुनाकर हमें भी प्रेरित करते थे—

गीर्वाणवाणीषु विशिष्टबुद्धिस्तथापि भाषान्तरलोलुपोऽहम्।
यथा सुधायाममरेषु सत्यां स्वर्गाङ्गनानामधरासवे रुचि ॥

(यद्यपि मेरी संस्कृत में विशेष रुचि है फिर भी मैं दूसरी भाषाओं का लोभी हूँ। जैसे स्वर्ग के देवताओं को अमृत में प्रेम होने पर भी अप्सराओं के अधरासव में रुचि रहती है)

लेकिन तब मुझे इतनी समझ नहीं थी। पर, शास्त्रों में कहा है कि वर्षा काल में जो बीज बिना उगे रह जाते हैं वे शरद् में भी उग सकते हैं।

(देवे वपत्यपि यथा भूमौ बीजानि कानिचित्।
शरदि प्रतिरोहन्ते तथा पूर्वगुणादय ॥)

इसी न्याय से मेरे फ़ारसी के अनुराग का बीज देर से उगा है। इसे पिताजी के प्रौढ ज्ञान की धारा में स्नान का अवसर नहीं मिला, शैशव की शिक्षणग्राह्यता की अनुकूल ऋतु नहीं मिली लेकिन यह पल्लवित हुआ जरूर। मैंने अपने पुत्रों को भी स्कूली विषयों के अतिरिक्त फारसी पढ़ाई है। यही मेरा पिताजी के प्रति श्राद्ध है।

मैंने कुछ वर्षों पूर्व गुरु गोविन्द सिंह के जफरनामा का संस्कृत श्लोकों में अनुवाद किया था। उसकी भूमिका के लिये मैं तत्कालीन राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन से मिला। उन्होंने कृपा पूर्वक उसकी भूमिका लिखी और मुझसे यह वचन ले लिया कि मैं गुलिस्ताँ और शाहनामा का फ़ारसी से संस्कृत में अनुवाद करूँ। आज गुलिस्ताँ पूर्ण हो चुका है लेकिन डा० साहब हमारे बीच में नहीं हैं। शाहनामा का अनुवाद कार्य चल रहा है। यह साठ हज़ार श्लोकों का विशालकाय ग्रंथ है। समय कम है और विघ्न बहुत हैं। लेकिन आशा है कुछ ही वर्षों में मैं यह पूर्ण कर लूँगा और डाक्टर साहब को दिये गये वचन से उऋण हो सकूँगा।

प्रवेश

प्रस्तुत ग्रन्थ शेख मुस्लिहुद्दीन सादी की अपूर्व कृति है। यह 'पञ्चतन्त्र' की शैली का नीतिग्रन्थ है। इसकी भापा भी 'पञ्चतन्त्र' की भापा की तरह गद्य-पद्यमय है। मैंने गद्य भाग का अनुवाद गद्य मे और पद्य भाग का अनुवाद पद्य में किया है।

सस्कृत गद्य लिखना पद्य लिखने की अपेक्षा कठिनतर है। मुझे पहले एक शैली का चुनाव करना था। क्या मैं 'कादम्बरी'कार की कठोर, क्लिष्ट और निर्विराम रचना को अपना आदश रखू या 'अभिज्ञानशाकुन्तल' की जैसी अर्थगभ शैली अपनाऊँ। अथवा 'दशकुमार चरितम्' जैसी ललित भापा का आश्रय लूं या व्यास और वाल्मीकि की आर्पभापा पद्धति का अनुसरण करूँ। अथवा गुप्तकालीन भाणो की बोलचाल की लच्छेदार भापा को आदर्श मानू। कई वार मैंने अलग अलग ढगो से लिखकर देखा। अन्त मे मैंने पाया कि 'पञ्चतन्त्र' की भापा शैली ही इसके लिये अधिक उपयुक्त है। लेकिन 'पञ्चतन्त्र'कार को जितनी स्वतन्त्रता और सुविधा थी उतनी मुझे नहीं थी। 'पञ्चतन्त्र' मौलिक कृति है जव कि मेरी कृति अनुवाद है।

वस्तुत अनुवाद कार्य मौलिक लेखन की अपेक्षा अधिक दुष्कर है। मौलिक लेखक को जो स्वतन्त्रता प्राप्त है वह अनुवादक को दुर्लभ है। अनुवादक को पहले मूल भापा को अलकार, अनुप्रास, मुहावरे आदि से अनावृत करना पडता है, फिर उसे अनुवाद की भापा के परिधानो और अलकारो से सज्जित करना पडता है। और फिर शर्त्त यह कि इस प्रकार मूल भापा की विशेपता और स्वरूप भी अक्षुण्ण रहना चाहिये और अनुवाद की भापा दुरुह और वोझिल भी नही होनी चाहिये। मेरा कार्य तो और भी कठिन था। मैंने चेप्टा की है कि दोनो भापाओ में जो समानता है उसकी रक्षा करते हुए जहां तक सम्भव हो तुल्यवल और तुल्यस्वरूप शब्द ही रखे जॉय। इसके साथ साथ मेरी यह भी चेप्टा रही है कि सस्कृत का स्वाभाविक स्वरूप और प्रवाह भी अप्रतिहत रहे। मैं इसमें कहां तक सफल हुआ हूँ इसका निर्णय तो सुधीजन ही करेगें।

गुलिस्तान की पृष्ठभूमि और प्रभाव

शेख सादी फारसी भापा के प्रधान शैलीकारो में अन्यतम है। सक्षेप में अर्थगर्भ वात कहना, इनकी विशेपता है। इनकी भापा मुहावरेदार और अनुप्रासमयी है। फारसी के साथ साथ अरवी भापा पर भी आपको अधिकार था। इसलिये आपकी भापा में अरवी का पुट विशेप मिलता है। सादी का युग अरव प्रभाव का युग था। अरवी धर्म, अरवी सस्कृति और अरवी भापा ईरान पर छाये हुए थे। जो अरवी जानते थे वे ही समाज में पण्डित माने जाते थे। अरवी कहावतो और सूक्तियों को सादी ने जगह जगह अपने ग्रन्थ में स्थान दिया है और उनका उल्लेख वडे सम्भ्रम से किया है—'जैसा कि अरव कहता है,' अरव कहता है अर्थात् अरवी कहावत है। और जव अरव कहता है तो लोग मान लेते थे कि वात प्रामाणिक है।

सादी अरवी रग में गहरे रँगे हुए हैं। अरव लोग ईरानियो को 'अजमी' कहते हैं, जिसका कि अर्थ विदेशी और गूगा है, तो सादी भी अपने देश को 'अजम' और स्वदेशवासिया को 'अजमी' ही कहते हैं। भारत में अग्रेज़ी शासन के समय जव अग्रेज़ अपने देश वापिस जाते थे तो कहते थे—'मैं होम जा रहा हूँ।' उन्ही की देखा-देखी जव भारतीय इगलैंड जाते तो वे भी कहते—'मैं होम जा रहा हूँ।' जव कि वे वास्तव मे 'होम' से जा रहे होते थे। लेकिन तव जो अग्रेज़ का होम था वही शिक्षित और आलोकप्राप्त भारतीय का भी होम था। सादी ने अरव के सुप्रसिद्ध निज़ामिया विश्वविद्यालय में शेख अवु'ल फर्ज़ विन जौज़ी से शिक्षा पाई थी। वे अपने समय के अत्यन्त शिक्षित और आलोकप्राप्त विद्वान् थे इसलिये उन्होंने भी अपने देश को अरवो के ढग से 'विदेश' कहा है। कावा उनके लिये कावाए जलालश् है। जिसकी उन्होंने अनेक वार यात्रा की है (अध्याय २, कथा २-३-१०-२५-२६ आदि)। वे शामी लोगो के साथ उनकी भापा मे वहस करने का गर्व से उल्लेख करते हैं (अध्याय ६, कथा १)। वे वार वार अपने अरव देशो की मस्जिदो में होने का उल्लेख करते हैं (अध्याय १, कथा १०, अध्याय २, कथा १०—३१, अध्याय ३, कथा १८)। उनकी कथा का राजा अरवी है और दास अजमी (ईरानी) (अध्याय १, कथा ७)। उन्होंने मुसलमान शब्द का सज्जन के रूप में प्रयोग किया है और अरव शब्द का श्रेष्ठ के रूप में। उन्होने इस्लामी परम्परा के अनुसार मूसा और ईसा का उल्लेख तो आदर से किया है लेकिन मूसा और ईसा के अनुयायियो को वे अरवो के ढग से हीन समझते हैं (ईसाई के कुँए का पानी अशुद्ध है मगर उससे यहूदी का मुर्दा तो धुल ही सकता है—अध्याय ३, कथा २०)। वे यहूदी के पडोस को वुरा समझते हैं और उसके पडोस में स्थित होने के कारण एक मकान की कीमत खोटे दस रुपये समझते है। हाँ, यदि यहूदी पडोसी मर जाय तो उसी मकान को एक हज़ार रुपये के योग्य समझते हैं (अध्याय ४, कथा ९)। वे एक वार फिरगी क्रूसेडरों के द्वारा पकड लिये गये थे जिन्होंने सादी को यहूदियो के साथ तरावुलुस की खानो में काम पर लगा दिया था। आश्चर्य की वात यह है कि सादी

को फिरंगियों के व्यवहार से शिकायत नहीं है। उन्हें शिकायत है यहूदियों के साथ रखे जाने से, जिनको कि वे मनुष्य नहीं समझते (अध्याय ३, कथा ३१)। वे यहूदी को शरीफ मानने को तैयार नहीं हैं चाहे उसके घर की देहली सोने की क्यों न हो और उसमें चांदी की कील ही क्यों न ठुकी हो।

(गर आस्तानए सीमी व मेखे जर दारद।
गुमाँ मबर कि यहूदी शरीफ ख्वाहद शुद॥)

ईसाइयों और यहूदियों जैसी ही घृणा सादी को भारतीय अग्निपूजकों से है। उन्होंने अग्निपूजकों (गब्र) और नास्तिकों (तरसों) को एक कोटि में रखा है। (गब्रो तरसा वजीफा खुर दारी)—(मुकद्दमए गुलिस्तान)। 'यदि सौ साल भी गब्र आग को पूजता रहे तो भी अग्नि उसे जलाये बिना नहीं छोड़ती (अध्याय १, कथा १६)। हिन्दू शब्द का प्रयोग सादी ने डाकू के रूप में किया है *, और हब्शियों का उल्लेख भी बड़े अपमानजनक ढंग से किया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अरब प्रभाव के कारण इतर धर्मावलम्बियों के लिये सादी का दृष्टिकोण अनुदारता से और घृणा से भरा हुआ है। जो अरबों के घृणापात्र हैं वे सादी के भी घृणा पात्र हैं। सादी की दृष्टि में श्रेष्ठ जाति केवल एक थी और वह थी अरब जाति। वस्तुत, अरबी प्रभाव ने उस समय समस्त मुस्लिमों को अभिभूत कर रखा था। मोरक्को से पंजाब तक लोग अरबी दिखने में और अरबी बोलने में गर्व अनुभव करते थे और शेख सादी इसके अपवाद नहीं थे।

सादी पर अरब संस्कृति का एक दूसरा अनिष्ट प्रभाव समलिंग रति के रूप में दिखाई पड़ता है। उन्होंने प्रेम और यौवन के अध्याय (पाँचवाँ अध्याय—दर इश्क व जवानी) में नर-नारी के सहज आकर्षण का उल्लेख उतना नहीं किया, जितना कि नर से नर के प्रेम का उल्लेख किया है। इसकी पहली कथा में सुल्तान महमूद का अपने गुलाम अयाज से प्रेम का उल्लेख है। दूसरी कथा में किसी गृहस्थ की अपने गृहदास के प्रति आसक्ति का वर्णन है। तीसरी कथा में किसी साधु की किसी किशोर के प्रति आसक्ति का वर्णन है। चौथी कथा में किसी सामान्यजन का किसी राजकुमार पर आसक्त होने का वर्णन है। पाँचवीं कथा का विषय किसी अध्यापक का किसी रूपवान छात्र के प्रति प्रेम है। कथा ६, ७, ८, ९, १०, १३, १६, १७ में सादी का अपने किशोर मित्रों के साथ प्रेमसम्बन्धों का वर्णन है। १९वीं कथा में किसी काजी का किसी नालबन्द के लड़के से दुराचार करने का उल्लेख है। इस प्रकार बीस कथाओं वाले इस अध्याय में, चौदह कथाओं में, उस 'शौके ईराकी' को महिमामण्डित किया गया है जो भारतीय दृष्टि से अग्राह्य, अश्लील और अप्राकृतिक है। अनुवादक का दायित्व निर्वाह करते समय मुझे कई बार सोचना पड़ा कि इस अध्याय का और दूसरे अध्यायों में यत्र तत्र बिखरी ऐसी कथाओं का अनुवाद करूँ या न करूँ। अन्त में, ज्यों का त्यों अविकल अनुवाद कर देना ही मुझे उचित लगा। मैं पहले ही कह चुका हूँ कि अनुवादक का काम बहुत कठिन है।

अनुवादकों का संकट

सादी की, समलिंग रति और आसक्ति का वर्णन सभी अनुवादकों को जुगुप्साजनक लगा है। किसी ने किशोर प्रियपात्र को किशोरी प्रियतमा बनाकर सुरुचि का निर्वाह किया है, तो किसी ने उसका अनुवाद इतना दुरूह कर दिया है कि उसे कोई समझे कोई न समझे। अधिकांश ने इस अध्याय को बिना छुए ही छोड़ दिया है।

एक अनुवादक Francis Gladwin के अनुवाद में प्रियपात्र को प्रेयसी बना दिया गया है। उसके अनुवाद की एक बानगी इस प्रकार है—

They tell a story of a Kazi of Hamdan that he was enamoured with a ferrier's beautiful daughter to such a degree, that his heart was inflated by his passion, like a horseshoe red hot in a forge For a long time he suffered great inquietude, and was running about after her in the manner which has been described 'That stately cypress coming into my sight, captivated my heart and deprived me of my strength, so that I lie prostrate at her feet '

---

* वास्तव में हिन्दू शब्द का प्रयोग उस समय पठानों के लिये होता था। सादी के समय तक भारत और अफगानिस्तान के निवासी हिन्दू नाम से पुकारे जाते थे। ये पार्वतीय हिन्दू (आज के अफगान) पाणिनि के समय से ही लूटमार का धंधा करते थे।

ग्लैडविन की ही भाति एक और प्रसिद्ध अनुवादक जेम्स रौस ने भी लडके को लडकी बनाकर काम चलाया है। एक और अनुवादक जौन प्लैट्स ने अश्लील अशो का अनुवाद अंग्रेजी मे न करके लैटिन में किया है। इससे अनुवादक के कर्त्तव्य का निर्वाह भी हो गया और तत्कालीन सुरुचि की रक्षा भी हो गयी।

रौस का लैटिन अनुवाद देखिये—

ज़ोर बायद नं ज़र कि बानू रा।	*Robur requiritur, non aurum, quia herae*
गुर्ज़े सख्त बिह् जि दह् मन गोश्त ।।	*Gratior est venus, quam croesi opes*

रौस ने तो केवल इसी अश के लिये लैटिन का आश्रय लिया है। जबकि प्लैट्स ने सर्वत्र ऐसे प्रसगो के लिये लैटिन के आवरण का उपयोग किया है। इसी के लिये प्लैट्स का अनुवाद देखिये—

Vigour is wanted, not gold, *a mulier,*
Turgidus penis praefertur corporis molli

प्लैट्स के कुछ दूसरे अनुवाद इस प्रकार हैं—

शुनीदा अम् कि दर ईं रोज़हा कुहन पीरे।	I have heard that in these days a very old man
ख़याल बस्त ब पीराना सर कि गीरद जुफ्त ।।	Took it into his old head that he would take a mate
बिख्वास्त दुख्तरके खूबरूय गोहर नाम।	He married a lovely young virgin Pearl by name
चु दुर्जे गौहरश् अज़ चश्मे मर्दुमां बिनिहुफ्त ।।	And like a casket of pearls, he hid her from men's eyes
चुनांकि रस्मे अरूसी बुवद—तमाशा बुद।	*Quia est nuptiarum usus vetulus coire cupuit,*
वले ब हमलाए अव्वल असाए शैख़ बिखुफ्त ।।	*Sed primo impetu eius penis rursum flexus est*
कमा कशीदो न ज़द बर हदफ कि न तवां दोख्त।	*Arcum adduxit, sed scopum ferire impar fuit impossibile enim est penetrare,*
मगर ब सूज़ने पूलाद जामाए हगुफ्त ।।	*Vestimentum solido panno textum nisi acu chalybeo*
ब दोस्तां गिला आगाज़ कर्दो हुज्जत ख़ास्त।	He began complaining to his friends and sought for pretexts,
कि ख़ानो माने मन् ईं शोख़ दीदा पाक बरुफ्त ।।	Saying—'This bold faced hussy has made a clear sweep of all my property
मियाने शौहरो ज़न जगो फित्ना ख़ास्त चुनी।	Between husband and wife strife and discord arose, to such a degree
कि सर ब शहना ओ काज़ी कशीदो सादी गुफ्त ।।	That the case reached the head of the police and the Kazi and Sadi said,
पस अज़ मलामतो शुनअत गुनाह् दुख्तर चीस्त ?	After reproving and abusing (the husband) what is the girl's fault?
तुरा कि दस्त ब लरज़द गुहर चि दानी सुफ्त ?	Thou whose hand trembleth, what shouldst thou know about piercing a pearl?

एक और अश देखिये—

जवाने सख्त पै बायद कि अज़ शहवत बिपरहेज़द।	A young man who is strong in the loins, should abstain from carnal desire
कि पीरे सुस्त रगबत रा ख़ुद आल्त बर न मी ख़ेज़द ।।	*Etenim penis vetuli segni libidine praediti sponte sua non surget*

एक और प्रसग में प्लैट्स ने पूरी तरह् अर्थ को लैटिन से ढक दिया है—

रुबाई	Quatrain
ज़न क'ज़ बरे मद बेरज़ा बर ख़ेज़द।	*In qua domo mulier insatiata a mariti latere surgit,*
बसे फित्ना आं शोर ज़ां सरा बर ख़ेज़द ।।	*In ea haud exigua dissensio et perturbatio exorietur*
पीरे कि ज़ि जाये ख़ेश न तवानद ख़ास्त।	*Qui vetulus non potest e sede surgere,*
इल्ला ब असा कयश् असा बर ख़ेज़द ।।	*Nisi virga adjuvante eius virga quo modo surget?*

शेर	Poetry
लम्मा रअत बैन यदे बालिहा।	*In adversa mariti parte conspiciens*
शैयन् क'रख्वा शफतिस्साइमि ।।	*Rem flaccissimo jejuni viri labro similem,*
तक़ूलु हज़ा मअहु मय्यिति।	*Mulier, 'Ista' inquit, 'Quae huic est res mamma est*
व'नम'यक़ीयतु लि'न्नाइमि ।।	*Sed nonnisi fascinum dormitoris proprium est'*

हिन्दी के अनुवादों में मुझे इलाहाबाद के बाबू बेनीप्रसाद का अनुवाद देखने को मिला है। उसमें ऐसे प्रसंगों को बिल्कुल ही छोड़ दिया गया है। मथुरा के बाबू हरिदास और श्री जगन्नाथ हिन्दी कोविद के अनुवाद भी बहुत प्रसिद्ध हैं। किन्तु मुझे वे देखने को नहीं मिल सके। इसलिये मैं नहीं जानता कि उन्होंने ऐसे उत्तानशृङ्गार प्रधान प्रसंगों का अनुवाद कैसे किया है। मुझे स्वयं ये प्रसंग रुचिकर नहीं हैं लेकिन अनुवाद कार्य को मैंने अपनी व्यक्तिगत रुचि-अरुचि के प्रश्न से अलग रखा है।

इन दो दोषों को छोड़ दिया जाय तो सादी की यह कृति पञ्चतन्त्र के जोड़ की है। स्मरण रहे पञ्चतन्त्र में भी यत्र तत्र अनेक अश्लील प्रसङ्ग हैं। उसमें भी स्त्रियों के लिये अपमान जनक सूक्तियाँ और श्लोक उपलब्ध होते हैं। लगता है, क्या ईरान और क्या भारत सभी जगह पुरुषों को अपने बारे में बड़ी गलतफहमी है। शेख सादी और पण्डित विष्णुशर्मा दोनों के विचार स्त्रियों के विषय में एक जैसे हैं। तुलना कीजिये—

मशवरत बा जनान् तबाह अस्त।
(आठवाँ अध्याय, ५३वाँ उपदेश)

महताप्यर्थं सारेण यो विश्वमिति शत्रुपु।
भार्यासु सुविरक्तासु तदन्त तस्य जीवितम्।। (पञ्चतन्त्र, मित्र भेद)

मर्दे बे मुरव्वत जन'स्त।
(आठवाँ अध्याय, ७८वीं युक्ति)

सादी का जीवन दर्शन

सादी के मत से भाग्य प्रधान है। 'भोग और मृत्यु प्रारब्ध के अधीन हैं।' भारत के भाग्यवाद से यह मत इतना मिलता है कि इसकी तुलना करने की आवश्यकता नहीं है।

सादी का मत है—

'दु चीज़ मुहाले अक्ल'स्त—खुरदन् बेश अज़ रिज़्क़े मक़सूम।
व मुरदन् पेश अज़ वक़्ते मअलूम।।' (अध्याय ८, युक्ति ७०)

'ऐ तालिबे रोज़ी बिनशीन कि बिखुरी।
व ऐ मतलूबे अजल मरो कि जान न बुरी।' (अध्याय ८, युक्ति ७१)

'ब नानिहादा दस्त न रसद।
व निहादा हर कुजा कि हस्त बिरसद।' (अध्याय ८, युक्ति ७२)

'सैयादे बेरोज़ी दर दज्ला माही न गीरद।
व माहीए बेअजल दर खुश्की न मीरद।' (अध्याय ८, युक्ति ७३)

सादी का एक शेर देखिये—

'दरां दम कि दुश्मन् पया पै रसीद।
कमाने कयानी न बायद कशीद।।'

और रहीम (अब्दुर्रहीम खानखाना) का एक दोहा भी देखिये—

'रहिमन नर को सह बड़ो, समय होत बलवान।
भीलन लूटीं गोपिका वेई अर्जुन वेई बान।।'

भाग्यवाद और जुआ में नज़दीकी रिश्ता है। चाहे हर भाग्यवादी जुए का शौकीन न हो लेकिन हर जुआ खेलने वाला भाग्यवादी होता है। सादी के समय में भी जुआ और गोटियों का खेल प्रचलित था। कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं—

मुक़ामिर रा सिह शश् मी बायद।
व लेकिन सिह यक मी आयद।।

शेर

हज़ार बार चरागाह खुशतर'ज़ मैदान।
वलेक अस्प न दारद ब दस्ते खेश इनान।। (अध्याय ८, युक्ति १०३)

शतरंज का खेल भी सादी के समय काफी लोकप्रिय था। प्रतीत होता है शेख सादी को इस खेल में निपुणता प्राप्त थी। प्रतिपक्षी से बहस के दौरान, तर्क के दाँव पेचों को, सादी शतरंज के खेल से उपमा देते हैं।

'हर बैज़के कि बरान्दे, मन् व दफ़ए ओं कोशीदमे।
व हर शाहे कि बिस्वान्दे, व फर्ज़ी निगोशीदमे॥' (अध्याय ७, अन्तिम कथा)

ईरान में शतरंज के मुहरे हाथी दाँत के बनाये जाते थे। सादी ने लिखा है कि पैदल हाजी शतरंज के पैदल आजी (हाथी दाँत के पैदल) से खराब होते हैं। शतरंज के आजी जब शतरंज का मैदान पार कर लेते हैं तो फर्ज़ी बन जाते हैं अर्थात् पहले से श्रेष्ठ बन जाते हैं, लेकिन जब पैदल हाजी, हज का मैदान पार कर लेते हैं तो ज्यादा बुरे बन जाते हैं (अध्याय ७, कथा १२)। यहाँ हाजी और आजी के अनुप्रास चमत्कार से, सादी के भाषा पर अधिकार का परिचय तो मिलना ही है, सादी की शतरंज प्रियता का परिचय भी इससे मिलता है।

भारत का उल्लेख

भारतवर्ष उस समय बढ़िया तलवारों और लोहे की चीज़ों के लिये प्रसिद्ध था। सादी ने अनेक स्थलों पर भारत के लोहे का उल्लेख किया है। एक स्थान पर वे कहते हैं कि 'एकेश्वरवादी मुसलमान के चरणों में चाहे सोना बिखेरो, या सिर पर हिन्दुस्तान की (आबदार) तलवार तानो वह विचलित नहीं होता' (अध्याय ८, कथा १०७)। एक अन्य प्रसंग में वे किसी दुनियादार धनिक के घर ठहरे जो दुनिया भर की व्यापारिक वस्तुओं को एक देश से दूसरे देश ले जाना, बेचना, और लाभ कमाना चाहता था। वह ईरानी गूगल चीन को, चीनी बर्तन रूम को, रूमी रेशम भारत को, भारतीय फौलाद की चीजें हलब को, हलब के प्याले यमन को और यमन का लहरिया फारस लाना चाहता था (अध्याय ३, कथा २१)। इससे ज्ञात होता है कि भारत में उस समय रूमी रेशम की बहुत माँग थी और भारत के लोहे और लोहे से बनी चीजों की अरब और ईरान की मण्डियों में अच्छी माँग और साख थी।

कल्पना और समाधान

इतिहास के आदिकाल से मानव, सृष्टि की हर चीज़ को जिज्ञासा से देखने परखने की चेष्टा करता रहा है। मनीषी जन उन जिज्ञासाओं और सम्प्रश्नों का समाधान भी, यथामति प्रस्तुत करते रहे हैं। नये समाधान आविर्भूत होते रहे हैं और नये समाधानों के साथ ही नये प्रश्न भी प्रसूत होते रहे हैं। न प्रश्नों का अन्त है न समाधानों की इति।

अनेक प्रश्नों के प्राचीन समाधान आज गलत, अवैज्ञानिक और निराधार सिद्ध हो गये हैं। लेकिन स्मरण रहे किसी समय वे समाधान ध्रुव सत्य की भाँति स्वीकार कर लिये गये थे। कभी हमारे पूर्वज समझते थे कि मोती का जन्म स्वाति नक्षत्र में, खुली सीप में वर्षा की बूंद गिरने से होता है। हजारों वर्षों तक यह जनश्रुति एक स्थापित सत्य की भाँति अनेक उदाहरणों और दृष्टान्तों का आधार बनी रही। आज यह बात निराधार मानी जाती है। हजारों ऐसी कल्पनाएँ अभी भी लोक मस्तिष्क में स्थापित हैं। चन्द्रमा में शशक की कल्पना, वर्षा ऋतु की बिजली में इन्द्र के वज्र की कल्पना, शेषनाग के फन पर पृथ्वी की अवस्थिति की कल्पना ऐसे अधसमाहित प्रश्नों की भारतीय कल्पनाओं में से कुछ एक हैं। ईरान में भी कुछ ऐसी ही कल्पनाएँ लोक विश्वास का आधार रही हैं। सादी ने भी उनमें से कुछ का उल्लेख करके उनके द्वारा शिक्षा दी है। ऐसी ही एक कल्पना है बिच्छू का माँ के गर्भ को फाड़कर जन्म लेना और जन्म लेते ही माँ को खा डालना। यह कल्पना सादी की अपनी नहीं है। उनके पूर्व भी यह जनश्रुति एक स्थापित और समाहित सत्य के रूप में जानी जाती रही है। सादी ने तो अपनी तरफ से केवल इतनी बात कही है कि जो माँ बाप के साथ दुर्व्यवहार करते हैं वे मातृहन्ता बिच्छू की तरह निरस्कृत होते हैं। इसमें शिक्षा सिद्ध है, दृष्टान्त असिद्ध। लेकिन दृष्टान्त के असिद्ध होने से शिक्षा और शिक्षा का प्रयोजन असिद्ध नहीं होता। ऐसी ही कुछ दूसरी कथाएँ सभी नीतिकारों के शिक्षाग्रन्थों में उपलब्ध होती हैं जिनका दृष्टान्त भाग असिद्ध हो चुका है। हमें उनमें से शिक्षामात्र ग्रहण करने को उद्यत होना चाहिये। सादी के समय में माना जाता था कि बदख्शाँ प्रदेश की मिट्टी में सामान्य पत्थर यदि कुछ साल गड़े रहें तो लाल मणि (माणिक्य) बन जाते हैं। आज यह बात भी असिद्ध हो चुकी है लेकिन इस दृष्टान्त के द्वारा जो शिक्षा दी गयी है वह स्थायी रहेगी।—

'संगे ब चन्द साल शवद लाल पाराए।
ज़िन्हार ता ब यक नफसश न शवनी बसाग॥'

ईरानी और भारतीय कथानकों की समानता

सादी की नीति कथाओं पर कुछ अत्यन्त प्रसिद्ध भारतीय कथाओं का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। ऐतरेय ब्राह्मण की एक प्रसिद्ध कथा है कि महाराज हरिश्चन्द्र को एक बार जलोदर रोग हो गया। इस रोग से मुक्ति पाने के लिये जब चिकित्सा से लाभ नही हुआ तो पण्डितों और पुरोहितों ने वरुण देवता को प्रसन्न करने के लिये नर बलि की आवश्यकता सुझाई। कोई भी व्यक्ति राजा के लिये जान देने को राजी नहीं हुआ। अन्त मे एक ब्राह्मण सौ गायो के बदले अपना पुत्र बेचने के लिये राज़ी हो गया। अब प्रश्न हुआ कि इस बालक की बलि कौन दे। यहाँ भी सौ गायो के बदले पिता यह काम करने को तैयार होगया। इसी अवसर पर बालक शुन शेप के कण्ठ से वेदवाणी फूट पड़ी और वरुण की कृपा से उसके पाश कट गये। शुन शेप को ऋत्विक्त्व प्राप्त हो गया। हरिश्चन्द्र ने शुन शेप को छुड़वा दिया और उसे अनेक उपहार दिये। यह देखकर शुन शेप के पिता अजीगर्त्त ने पुत्र! पुत्र! कहकर शुन शेप के प्रति फिर प्रेम दिखाया। लेकिन शुन शेप पुन अपने स्वार्थी पिता के साथ जाने को तैयार नही हुआ। इसी कथा का शेखसादी ने गुलिस्ताँ के प्रथम अध्याय की २३वीं कथा में ईरानी रूप देकर प्रस्तुत किया है। ईरान और भारत की सस्कृति का उत्स एक है। इसलिये बहुत सम्भव है कि वेद पूर्व का यह कथानक शेख सादी के पूर्व भी ईरान की लोककथाओ में प्रचलित रहा हो। इसी प्रकार कुछ अन्य लोक श्रुतियाँ और भी हैं जो थोड़े अन्तर से ईरान और भारत दोनो देशो में प्रचलित है।

भारत में लोकश्रुति है कि सिकन्दर जब भारत आया तो उसने भारतीय योगियो और साधुओ से मिलने की इच्छा प्रकट की। लेकिन कोई साधु सिकन्दर को स्वय चलकर उपकृत करने नही गया। तब सिकन्दर स्वय एक भारतीय साधु के पास गया और उससे कुछ मांगने को कहा। साधु ने कहा जो कुछ मुझे चाहिये वह जगत के कृपा से मिल जाता है। सिकन्दर ने जब बार बार हठ किया तो साधु ने कहा—'यदि कुछ देना ही है तो मेरे पास खड़े होकर तुम जो परमात्मा की धूप रोक रहे हो, मुझे उसी का दान दे दो अर्थात् यहाँ से चले जाओ।' सिकन्दर लज्जित होकर वहाँ से चला गया। इसी कथा का ईरानी रूपान्तर प्रथम अध्याय की २९वी कथा में राजा का नाम लिये बिना गुलिस्ताँ में दिया गया है।

एक और लोककथा भारत के घरो में कही जाती है। बिल्ली ने शेर को निन्यानवे दाँव सिखाये पर एक दाँव बचा रखा। शेर जब सारे दाँव सीख चुका तो उसने बिल्ली से पूछा—'मौसी क्या अब और भी कोई दाँव बचा है।' बिल्ली के मना करने पर शेर ने बिल्ली पर ही हमला कर दिया। बिल्ली दौड़कर पेड़ पर चढ़ गयी। शेर ने पेड़ के नीचे से शिकायत की कि 'तुमने गुरु का कर्त्तव्य पूरा नहीं किया और मुझे सारे दाँव नहीं सिखाये। यह दाँव मुझे क्यों नहीं बताया?' बिल्ली ने ऊपर से ही जवाब दिया कि इसी दिन के लिये यह दाँव मैंने बचा रखा था। इसी बिल्ली और शेर की कथा को शेखसादी ने पहलवान गुरु शिष्य की कथा के रूप में गुलिस्ताँ के प्रथम अध्याय की २८वीं कथा में वर्णित किया है।

ईरान और भारत की अनेक कथाओं में जो समानता है वह कथा सग्राहकों के शोध का अलग विषय है। आशा है कोई उद्यमी साहित्य सेवी इस काम को हाथ में लेकर साहित्य की सेवा करेंगे। 'पञ्चतन्त्र और हितोपदेश' की शैली के अनुसार सादी ने भी पशुओं की बातचीत की उद्भावना से शिक्षा दी है। 'पञ्चतन्त्र' में शेर गीदड़ आदि पशुओं की बातचीत है तो शेख सादी ने सियाह गोश (जरख) से बातचीत के व्याज से उपदेश दिया है (अध्याय १, कथा १६)। प्रथम अध्याय की कथा १७ में एक लोमड़ी का उदाहरण दिया गया है जो बेगार से बचने के लिये लुकती छिपती भागी चली जा रही थी। किसी ने उससे पूछा कि तू ऐसी व्याकुल होकर क्यों भागी जा रही है तो उसने कहा कि आदि आदि।

सादी ने निर्जीव पदार्थों की भी आपस में बातचीत करवाई है। एक स्थल में, उन्होंने मिट्टी के ढेले से पूछा कि तू इतना सुगन्धित है, तू कस्तूरी से उत्पन्न है या अबीर से। मिट्टी के ढेले ने कहा—'हूँ तो मैं मिट्टी ही लेकिन कुछ दिन फूलों के साथ रह चुका हूँ। मेरे साथी की सगति ने मुझ पर प्रभाव डाला इसी से मैं इतना सुगन्धित हो गया हूँ।' *

एक और स्थल में (अध्याय २, कथा ४६) उन्होंने गुलदस्ते में लगी घास से पूछा कि—'फूलों के साथ तू यहाँ कैसे आ बैठी? फूलों के बीच तेरा क्या काम?' घास ने कहा—'जिसके बाग के फूल हैं मैं भी उसी के बाग की घास हूँ। गुणहीन और गन्धहीन हूँ तो क्या, हूँ तो उसी के बाग की।'

द्वितीय अध्याय में ही ४१वी हिकायत की मजूषा में सादी ने शाही झण्डे और शाही पर्दे के बीच में एक झगड़े की बात चलाई है। झण्डा और पर्दा झगड़ते हैं और एक दूसरे से विवाद करते हैं। इन दो निर्जीव पदार्थों के झगड़े के द्वारा सादी ने गर्व करने वालों को शिक्षा दी है कि जो अपना मुह आकाश में रखता है और गर्दन कड़ी करता है वह मुह के बल गिरता है।

---

* चाणक्य के श्लोक के कथानक से तुलना कीजिये—'आमोद कुसुमभव मृदेव धत्ते, मृद्गन्ध कुसुमानि नैव धारयन्ति।'

गुलिस्तां और पञ्चतन्त्र

'पञ्चतन्त्र और गुलिस्तान' का विषय एक ही है, दोनों की शैली भी गद्य और पद्यमय एक जैसी है। दोनों के पद्यों का वर्ण्य विषय भी एक दूसरे से इतना मिलता जुलता है कि एक के सामने दूसरा रख दे तो लगता है जैसे एक ही लेखक ने एक ही बात को दो अलग अलग भाषाओं में कहा हो। तुलना कीजिये—

'ज़मीने शोर सुम्बुल वर नयारद।'	'नहि तस्मात् फलं किञ्चित् सुकृष्टादूपरादिव।'
'म जन वेतअम्मुल विगुफ्तार दम।'	'युक्तं न वा युक्तमिदं विचिन्त्य वदेद् विपश्चिन् महतोऽनुरोधात्।'
'इल्म चन्दांकि वेशतर ख्वानी। चुं अमल दर तो नेस्त नादानी॥ नै मुहक्किक बुवद नै दानिशमन्द। चारपाये वरू किताबे चन्द॥ आं तिही मग्ज़ रा चि इल्मो खवर। कि वरू हैज़म'स्त या दफ्तर॥'	'यथा खरश्चन्दनभारवाही भारस्यवेत्ता न तु चन्दनस्य। एवं हि शास्त्राणि बहून्यधीत्य चार्थेषु मूढा खरवद् वहन्ति॥ (चरक)
'हुनर विनुमा अगर दारी नै गोहर। गुल'ज़ खार'स्तो इब्राहीम अज़ आज़र॥'	'कौशेयं कृमिजं सुवर्णमुपलाद्दूर्वापि गोरोमतः। पङ्कात्तामरसं शशाङ्क उदधेरिन्दीवरं गोमयात्॥ काष्ठादग्निरहेः फणादपि मणिर्गोपित्ततो रोचना। प्राकाश्यं स्वगुणोदयेन गुणिनो गच्छन्ति किं जन्मना॥'
'आकवत गुर्ग ज़ादा गुर्ग शवद। गर्चे वा मर्दुमां वुज़ुर्ग शवद॥'	'वयसः परिणामेऽपि यः खलः खल एव सः। सुपक्वमपि माधुर्यं नोपयातीन्द्रवारुणम्॥'
'अन्नासु अलादीनि मुलूकिहिम्।'	'राज्ञि धर्मिणि धर्मिष्ठाः पापे पापाः समे प्रजाः। राजानमनुवर्तन्ते यथा राजा तथा प्रजाः॥'
'जवाने सख्त पै वायद कि अज़ शहवत विपरहेज़द। कि पीरे सुस्त रगवत रा खुद आलत वर न मी खेज़द॥'	'पूर्वे वयसि यः शान्तः स शान्त इति मे मतिः। धातुषु क्षीयमाणेषु शमः कस्य न जायते॥'
'चु जग आवरी वा कसे दर सतेज़। कि अज़ वै गुज़ीरत वुवद या गुरेज़॥'	'यत्र न स्यात् फलं भूरि यत्र च स्यात् पराभवः। न तत्र मतिमान् युद्धं समुत्पाद्य समाचरेत्॥' अथवा 'भूमिर्मित्रं हिरण्यं च विग्रहस्य फलत्रयम्। नास्त्येकमपि यद्येषां न तं कुर्यात् कदाचन॥'
'दरख्ते कि अकनूं गिरिफ्त'स्त पाय। व नीरू ए शख्से वर आमद ज़ि जाय॥ वगर हमचुनां रोज़गारे हिली। व गरदूनश् अज़ वेख वर न गुसिली॥'	'जातमात्रं न यः शत्रुं व्याधिं च प्रशमं नयेत्। महाबलोऽपि तेनैव वृद्धिं प्राप्य स हन्यते॥'
'दानी कि चि गुफ्त ज़ाल वा गुर्द। दुश्मन् नतवां हक़ीरो वेचारा शुमुद॥'	'उत्तिष्ठमानस्तु परो नोपेक्ष्यः पथ्यमिच्छता।' अथवा 'उपेक्षितः क्षीणबलोऽपि शत्रुः प्रमाददोषात् पुरुषैर्मदान्धैः। साध्योऽपि भूत्वा प्रथमं ततोऽसावसाध्यतां व्याधिरिव प्रयाति॥'
'गर्चे दानी कि नश्नवन्द विगो।'	'प्रियं वा यदि वा द्वेष्यं शुभं वा यदि वाऽशुभम्। अपृष्टोऽपि हितं वक्ष्येद् यस्य नेच्छेत् पराभवम्॥' अथवा 'अशृण्वन्नपि बोद्धव्यो मन्त्रिभिः पृथिवीपतिः।'

'जवाने गोशानशीं शेरमर्दे राहे खुदा'स्त।
कि पीर खुद न तवानद जि गोशाए बर खास्त॥'

'पादशाहे कि तरहे जुल्म फिगन्द।
पाये दीवारे मुल्के खेश बिकन्द॥'

'हर कि बा पूलाद बाजू पंजा कर्द।
साअदे सीमीनी खुद रा रंजा कर्द॥'

'कि आजुर्दन् दिले दास्तां जेहल'स्त,
व सफफास्ते यमीन सहर।'

'व चिराग पेशे आफ्ताब परतवे न दारद।'

'हमा कस रा अक्ले खुद ब कमाल नुमायद।'

'चू मर्द बर फ्तादं जि जाया मकामे खेश।
दीगर चि ग़म खुरद हमा आफ़ाक़ जाये ऊस्त॥'

'जगो जोरावरी मकुन बा मस्त।
पेशे सर पंजा दर बग़ल निह दस्त॥'

'कूदके कू ब अक्ल पीर बुवद।
निस्दे अहले खिरद कबीर बुवद॥'

'अस्पे लाग़र—मियां बकार आयद।
रोजे मैदां नै गावे परवारी॥'

'पिश्शा चु पुर शुद बिज़नद पील रा।
बा हमा मर्दी ओ सलाबत कि अस्त॥
मोरचगां रा चु बुवद इत्तिफ़ाक़।
शेरे ज़ियां रा बदरांनन्द पोस्त॥'

'दोस्तां दर जिन्दां बकार आयन्द कि बर
सुफ़रा हमां दुश्मनां दोस्त नुमायन्द।'

'अज बदां जुज बदी नयामाज़ी।
न कुनद गुग पोस्तीदाज़ी॥'

'न खवद मेखे आहनी दर संग।'

'ता व दूकाने खाना दर गिरवी।
हरगिज़ ऐ खाम आदमी न शवी॥'

'गर व ग़रीबी रवद अज़ शहरे खेश।
सख्ती आ मिहनत न बुरद पारादोज़॥
वर व मगरबी फितद अज ममलेकत।
गुरस्ना खुस्पद मलिके नीमरोज़॥'

'पूर्वे वयसि य शान्त स शान्त इति मे मतिः।
धातुषु क्षीयमाणेषु शमः कस्य न जायते॥'

'नानानुग्रहकर्तार प्रवर्धन्ते नरेश्वराः।
नाशाना मक्षयाच्चैव क्षय यान्ति न सशय॥'

'यो रणात् प्राप्नत याति शिरस्तु मस्तकाग्यरिम्।
विमद स निवर्तेत शीर्णदन्तो गजो यथा॥'

'अपि ब्रह्मवध कृत्वा प्रायश्चित्तेन शुध्यति।
तदर्हेण विचीर्णेन न कथञ्चित् सुहृद्द्रुह॥'

'गुणवत्तरपात्रेणच्छाद्यन्ते गुणिना गुणा।
रात्रौ दीपशिखाकान्तिर्न भानावुदिते सति॥'

'स्वचित्तकल्पिता गर्व कस्य नात्रापि विद्यते।'

'यस्यास्ति सर्वत्र गतिः स कस्मात् स्वदेशरागेण हि याति नाशम्।
तातस्य कूपोऽयमिति ब्रुवाणा क्षार जल कापुरुषा पिबन्ति॥'

'अविदित्वात्मन शक्ति परस्य च समुत्सुक।
गच्छन्नभिमुख नाश याति वह्नौ पतङ्गवत्॥'

'बालस्यापि रवे पादा पतन्त्युपरि भूभृताम्।
तेजसा सहजाताना वय कुत्रोपयुज्यते॥'

'हस्ती स्थूलतनु स चाङ्कुशवश किं हस्तिमात्रोऽङ्कुश।
दीपे प्रज्वलिते प्रणश्यति तम किं दीपमात्र तम॥
वज्रेणापि हता पतन्ति गिरय किं वज्रमात्रा गिरिस्।
तेजो यस्य विराजते स बलवान् स्थूलेषु क प्रत्यय॥'

'बहूनामप्यसाराणा समवायो हि दुर्जय।
तृणैरावेष्ट्यते रज्जुर्येन नागोऽपि बद्ध्यते॥'

'स सुहृद् व्यसने य स्यादन्यजात्युद्भवोऽपि सन्।
वृद्धौ सर्वोऽपि मित्र स्यात् सर्वेषामेव देहिनाम्॥'

'घातयितुमेव नीच परकार्यं वेत्ति न प्रसाधयितुम्।
पातयितुमेव शक्तिर्नाखोरुद्धर्तुमन्नपिटकम्॥'

'नानाम्य नमते दारु नाश्मनि स्यात् क्षुरक्रिया।'

'विद्या वित्त शिल्प तावन्नाप्नोति मानव सम्यक्।
यावद् व्रजति न भूमौ देशाद्देशान्तर हृष्ट॥'

'देशानामुपरि क्ष्माभृद् ।
सर्वलोकस्य शिल्पिन॥'

'परतवे नेकाँ न गीरद हर कि बुनियादश् बद'स्त।
तरबियत ना अहल रा चूँ गिदगाँ बर गुम्बज'स्त॥'

'अन्त सारविहीनानामुपदेशो न जायते।'

अथवा

'स्वभावो नापदेशेन शक्यते कर्तुमन्यथा।'

'हर कि सुल्ताँ मुरीदे ऊ बाशद।
गर हमा बद कुनद निकू बाशद॥
वाँ कि रा पादशाह बियन्दाज़द।
कसश् अज़ खेलखाना न नवाज़द॥'

'यस्मिन्नेवाधिक चक्षुरारोपयति पार्थिव।
अकुलीन कुलीनो वा स श्रियो भाजन नर॥'

'दुश्मन् चि कुनद चू महरबान बाशद दोस्त।'

'का चिन्ता मम जीवने यदि हरिविश्वम्भरो गीयते।'

'गर न बीनद ब रोज़ शप्परा चश्म।
चश्मए आफताब रा चि गुनाह॥'

'नोलूकोऽप्यवलोकते यदि दिवा सूर्यस्य किं दूषणम्॥'

गुलिस्ताँ की सूक्तियों के तुल्यबल श्लोक पञ्चतन्त्र के अतिरिक्त विदुर तथा चाणक्य की नीतियों में और संस्कृत वाङ्मय में अन्यत्र भी देखे जा सकते हैं। ऊपर कुछ उदाहरणों के निदर्शन से केवल यही अभिप्रेत है कि ईरानी और भारतीय विचारधारा का मूल उत्स एक है और यही सारी समानता का कारण है।

गुलिस्ताँ में श्लेष और अनेकार्थकता

कहा जाता है कि सादी के एक एक शब्द के ७२—७२ अर्थ हैं। इसमें सन्देह नहीं कि सादी को विषय और भाषा पर पूरा अधिकार था। वाणी उनकी वशवदा थी। उन्होंने जिस तरह चाहा है शब्दों का उपयोग किया है। अनेक स्थलों पर उनके दो-दो अर्थ निकलते हैं। प्रयास करने पर, गोस्वामी तुलसीदासजी की चौपाइयों की तरह उनके अनेक अर्थ भी निकाले जा सकते हैं, निकाले भी जाते हैं। किन्तु मुझे सन्देह है कि ऐसे अनेक अर्थ सम्भवत सादी को स्वयं अभिप्रेत न रहे हों। मैंने अपने अनुवाद में एक दो जगह श्लेष का इङ्गित किया है। लेकिन मैं समझता हूँ सर्वत्र श्लेष के आरोप में अधिक सार नहीं है। गुलिस्तान में श्लेष का एक प्रसिद्ध उदाहरण है—

'अला जरि जैदिन् लैस यश्फउ गमहु।
व हल् यस्तकीमु रैफउ मिन् आमिलि'ल् जरि॥'

उपर्युक्त शेर के आमिल शब्द में श्लेष है, जिसका एक अर्थ 'अमल करने वाला' होता है, दूसरा अर्थ व्याकरण का 'कर्ता' होता है। अरबी व्याकरण पढ़ने वाले विद्यार्थी को प्रभावित करने के लिये सादी ने इस श्लेषयुक्त और पाण्डित्यपूर्ण अरबी पद्य की आशु रचना की थी। लेकिन वह विद्यार्थी तो अरबी का प्रारम्भिक छात्रमात्र निकला। ऐसे कूट श्लोकों का समझना उसके वश से बाहर की बात थी। इसलिये उसने कुरान का हवाला देकर कहा कि लोगों से अपनी बात, लोगों की बुद्धि में आने योग्य सरल भाषा में कहनी चाहिये। विद्यार्थी द्वारा न समझा जाकर यह कूट श्लोक तब से गुलिस्ताँ में मील के पत्थर की तरह पड़ा है, और अक्सर गुलिस्ताँ के ममज्ञमन्यों के आपस में सिर फोड़ने के काम में आता है।

श्लेष का एक और उदाहरण है—

'गीरम् कि गमत नेस्त गमे मा हम नेस्त।'

इस श्लोक को एक साधु के मुँह से कहलवाया गया है जो कि जाड़ों की रात में, किसी राजा के महल के तले निर्वसन पड़ा था। राजा शराब की मस्ती में गा रहा था कि मुझे इस अवस्था में इस समय कोई गम नहीं है। साधु ने यह सुनकर महल के बाहर से उपर्युक्त श्लेषयुक्त श्लोक कहा जिसका भाव था कि तू राजा है और महल में पहने-ओढ़े शराब की मस्ती में बैठा है, तुझे न ठण्ड सताती है, न कोई चिन्ता। माना कि तुझे कोई गम नहीं, तो हम जैसे अकृतनीशार, निःस्व और निस्पृह साधुओं को भी तो कोई गम नहीं है। एक और प्रच्छन्न अर्थ यह भी था कि—'तुझे कोई चिन्ता नहीं तो क्या हमारी (गरीबों की) भी कोई चिन्ता नहीं!' राजा इस प्रच्छन्न और प्रकट अर्थ को समझकर प्रसन्न हो उठा और उसने साधु को पुरस्कृत किया। यह भी श्लेष का एक सुन्दर उदाहरण है। अन्यत्र भी ऐसे प्रसंगों की उद्भावना की जाती है लेकिन उन सभी प्रसंगों को समझने की न मेरी बुद्धि है और न अवकाश। मैंने अध्येताओं के लिये एक आधार प्रस्तुत करने की चेष्टा की है, कोई उत्तरमुनि श्लेषों का उद्घाटन भी करेंगे ऐसी आशा है।

अनेक स्थलो पर पदच्छेद में भेद करके भी भिन्न अर्थो की कल्पना की जाती है। एक पद है—

गर मरा जार व कुश्तन् दिहद आँ यारे अजीज़।
ता न गायी कि दराँ दम ग़मे जानम् बाशद॥

इसी को कुछ लोग इस प्रकार पढ़ते है—

गर मर आजार व कुश्तन् दिहद आँ यारे अजीज़।
ता न गायी कि दराँ दम गम जानम् बाशद॥

पहले पद का अर्थ है—'यदि मुझ अभागे को वह मेरा प्रिय मित्र मरवाने को दे दे।' दूसरी प्रकार से पदच्छेद करने पर अर्थभेद हो जाता है और उसका अर्थ होता है—'यदि वह प्रिय मित्र मुझे मारने के द्वारा भी कष्ट दे।' ऐसे ही श्लेषों और पदच्छेद विभेदो के आधार पर सादी के एक एक शब्द में ७२—७२ अर्थो की कल्पना चल पड़ी है।

कुछ कूट प्रयोगों की व्याख्या

इसमें सन्देह नही कि सादी ने ऐसे अनेक प्रयोग किये हैं जो आज ईरानी पाठको की समझ में भी नही आते। इसका कारण यह है कि सादी ने बहुत देशाटन करके अनेक ऐसे विदेशी प्रयोगो को अपने ग्रन्थ में समाविष्ट किया है जो कि फारसी पाठक ने इससे पूर्व कभी नही देखे। फारसी टिप्पणीकारो ने और यूरोपीय अनुवादको ने उन प्रयोगो को न समझ पाने के कारण या तो अछूता छोड दिया है या अपनी समझ के अनुसार अयथार्थ अर्थ कर दिया है। ऐसे ही कुछ प्रयोग नीचे दिये जाते हैं—

'उस्तादे मुअल्लिम चू बुवद बेम आज़ार।
ख़िरसक बाजन्द कूदकाँ दर बाज़ार॥'

इसका अर्थ है कि पढाने वाला उपाध्याय जब बच्चो को कम पीटता है तो बच्चे बाज़ार में 'खिरसक' खेलते फिरते हैं। इस खिरसक का अर्थ बहुत दिनो तक नही समझा जा सका। पहले पहल जौन प्लैट्स ने इसके अर्थ का उद्घाटन किया। खिर्स का अर्थ है रीछ (संस्कृत के 'ऋक्ष' के वर्णव्यत्यय से प्राप्त) और 'सग' का अर्थ है सग अर्थात् कुत्ता। ईरान के पहाडी इलाको में यह खेल आँख मिचौनी की तरह खेला जाता है। एक बालक रीछ बनता है और उसके पीछे दूसरे बालक शिकारी कुत्ते बनकर दौडते हैं। रीछ जिसको छू दे उसी बच्चे को खेल से बाहर होना पडता है। इसलिये रीछ से बचकर बच्चे सब दिशाओ से उस पर आक्रमण करते हैं। रीछ को डराने के लिये कुत्ते जैसे भौंकते हैं बच्चे भी वैसाही शोर मचाते हैं। और रीछ जैसे इधर उधर भागकर शिकारी कुत्तों से अपनी जान बचाता है और गुर्राकर हमला करता है वैसे ही रीछ बना लडका भी चेष्टा करता है। इस सारे खेल में खूब भागदौड और शोरगुल होता है। उसी खेल की ओर सादी ने इस प्रसग में इंगित किया है।

इससे आगे की बात यह है कि गुप्तकाल में कन्याओ के एक खेल का वर्णन उपलब्ध होता है—'श्वार्क्षिक'। श्वा अर्थात् कुत्ता और ऋक्ष अर्थात् रीछ। (श्वा च ऋक्षश्च = श्वऋक्ष, ठञ्, किति च, ठस्येक = श्वार्क्षिक)। इसी खेल का अपभ्रंश—'छुआ-छी' या 'छुआ-छू' हो गया है। इसका अर्थ और खेलने का ढग भारत में आज भी वही है जो खिरसक का। अत मैंने भी खिरसक के संस्कृत अनुवाद के लिये 'श्वार्क्षिक' शब्द का ही प्रयोग किया है।

ऐसा ही एक पद 'गावे अम्बर' है—

'गर बे हुनर ब माल कुनद किब्र बर हकीम।
कूने ख़रश् शुमार अगर गावे अम्बर'स्त॥'

मैंने गुलिस्ताँ के फारसी अनुवाद भी देखे हैं और उर्दू तथा अंग्रेजी के भी देखने का अवसर मिला है। किसी भी अनुवादक ने इस शब्द को अवितथ नही समझा। प्राय लोगो ने इसका अर्थ किया है—'अम्बर जैसा सुगन्धित गोबर करने वाली कोई गाय।' वास्तव में अम्बर जैसा सुगन्धित गोबर करने वाली किसी गाय की कल्पना इन अनुवादो के अतिरिक्त कहीं नही मिलती और न सादी को यह अर्थ ही अभीष्ट था। अर्थ भी इससे स्फुट नही होता। मेरी व्याख्या इस प्रकार है—सादी चूँकि बहुश्रुत और ज़माना देखे हुए परिव्राजक थे इसलिये सम्भवत उन्होंने भारतीय पुराण साहित्य में वर्णित कामधेनु का वर्णन भी सुना होगा। यह 'गावे अम्बर' वही कामधेनु है। गाव = गाय, अम्बर = आकाश। आकाश की गौ अर्थात् स्वर्ग की गौ, अर्थात् कामधेनु। मैंने इसका अनुवाद 'यदि काम दुघाऽपि गौ।' ही किया है।

ऐसा ही एक और शब्द 'वर्दे अजूज' है। प्रयोग इस प्रकार है—

'गुल्हे सुर्खश् चु आरिज़े खूबां।
सुम्बुलश् हमचु जुल्फे महबूबां॥
हमचुनान'ज़ नहीबे वर्दे अजूज़।
शीर नाखुर्दा तिफ्ले दाया हनूज़॥'

वर्णन एक उपवन का है। सादी कहते हैं—'उस उपवन के लाल गुलाब के फूल ऐसे थे जैसे सुन्दरियों के गाल और उसकी सुम्बुल घास की पत्तियाँ ऐसी थी जैसे कान्ताओं की केशराशि। और यह बाग ऐसा मौन और स्पन्दन रहित था जैसे वर्दे अजूज़ के भय से, डरा हुए, धाय का दूध न पीने वाला कोई मासूम बालक हो।'

इस 'वर्दे अजूज' का अर्थ अनुवादक पाठकों को आज तक नहीं समझा सके। प्राय इतना कहकर ही छुट्टी पा ली गयी है कि 'वर्दे अजूज़' का अर्थ है ठण्डी बुढ़िया। अर्थात् वह बाग ऐसा था कि जिसमें ठण्डी बुढ़िया, यानी हेमन्त ऋतु का कोई डर नहीं था, यानी बाग खिला हुआ था। जाहिर है कि ऐसी व्याख्याओं से पाठकों का कोई समाधान नहीं हो सकता। अत सादी के एक एक शब्द में ७२ अर्थों की बात से पाठकों का मुह बन्द कर दिया जाता है। यहाँ भी यह शब्द भारतीय परम्परा से अलग रहकर नहीं समझा जा सकता है।

आर्य परम्परा में बच्चो की बीमारियों के कुछ आधिदैविक हेतु कल्पित किये गये हैं। ऐसा ही एक आधिदैविक हेतु है 'पूतना' या 'शीतपूतना'। माधव निदान आदि रोग निदान के ग्रन्थों में एक बाल रोग 'शीतपूतना' के नाम से बताया गया है। जिस बालक को यह रोग होता है, वह बालक दूध पीना छोड देता है, रह रहकर डरता-काँपता है और उसके अग ढीले पड जाते हैं। 'यया हि पूतनाजुष्ट सन्त्रस्तश्च परिश्लथ।' आदि। प्राचीनकाल में श्री कृष्ण को भी बचपन में यह रोग हुआ था। उसी का रूपक वर्णन हमें 'पूतना वध' के प्रसग में मिलता है। पूतना नामक एक राक्षसी कृष्ण को मारने आयी, उसने श्रीकृष्ण को अपनी गोद में लिया, स्तन्य पिलाया, उसके स्तनों में विष लगा हुआ था। अर्थात् कृष्ण रोगाक्रान्त हुए। पर वे तुरन्त ही स्वस्थ हो गये। रूपक वर्णन में मिलता है कि उन्होंने पूतना के स्तन को दाँतो से काट लिया जिससे कि वह राक्षसी चीत्कार करके मर गयी।

लगता है आर्यों में इसी शीतपूतना नामक बाल रोग को किसी दुष्टा राक्षसी के रूप मे मानने की कोई बहुत प्राचीन परम्परा रही है। वह बच्चा को अपना ज़हरीला दूध पिला देती थी, जिससे बालक अपनी माँ या धाय का दूध नही पीते। शीतपूतना की गोद में पडा हुआ बालक डरता और काँपता क्योकि उसकी गोद बहुत ठण्डी मानी जाती थी। आर्यों की वह आदिम कल्पना बाद में ईरान से लुप्त हो गयी लेकिन लोक मानस में उसका सस्कार 'ठण्डी बुढ़िया' के रूप मे बना रहा। भारत मे उसे बाल रोगो में सम्मिलित कर लिया गया और उसकी चिकित्सा भी निश्चित कर दी गयी। इसी शीतपूतना को शेख सादी ने 'वर्दे अजूज़' कहकर एक प्राचीन लोकविश्वास का उल्लेख किया है। मेरा अनुवाद है—

'रेजेऽरुणानि पुष्पाणि कपोल इव योषिताम्।
कबरीव प्रियायाश्च सुम्बुलस्तवकस्तथा॥
पूतना शीतपूर्वाया सन्त्रासात् किल भीरुक।
दुग्धाध्मातस्तनी धात्रीमपीत इव बालक॥'

गत सात सौ वर्षो से गुलिस्तान के अनुवाद और व्याख्याएँ की जाती रही हैं। इसके एक एक नुक्ते को खोल खोलकर समझाया जाता रहा है। फिर भी ये दो-तीन नुक्ते मुझे लगे कि असमाहित रह गये हैं।

तुल्यबल शब्दो की खोज

मैंने सस्कृत अनुवाद में चेष्टा की है कि इसमें यथासम्भव फारसी के तत्सम सस्कृत शब्द ही रखे जाँय। जिन फारसी शब्दो के लिये उपयुक्त तत्सम शब्द उपलब्ध नहीं थे उनके लिये मैंने नये शब्द गढ़ने में सकोच नही किया। सस्कृत भाषा में, अतीत में अनेक शब्दो की आमद हुई है और यदि इस भाषा को जीवन्त और प्राणवान् बनाना है तो इसमें आगे भी अनेक शब्दो और भावो का समावेश करना होगा। कालान्तर मे ये सभी प्रयोग आप्त मान लिये जायगे।

गुलिस्ताँ में एक शब्द 'पलग' का प्रयोग हुआ है, जिसका अर्थ शेर, चीता होता है। छन्द के अनुरोध से इसी का दूसरा रूप 'पालहग' भी गुलिस्ताँ में मिलता है। (आहए पालहग दर गरदन) यह शब्द सस्कृत में शामिल करने योग्य है। (पल गृह्णातीति = पलग) अपने अनुवाद में, मैंने इसे थोडा और स्पष्ट कर दिया है। सादी का पद है—'पलगाँ रिहा कर्दा खूये पलगी।' मैंने उसका अनुवाद किया है—'पलग्राहाश्च सिहाश्च हिंसा रहिततां गता।'

ऐसा ही एक शब्द है—'गोस्फन्द', जिसका अर्थ भेड बकरी, गाय आदि होता है। यह शब्द भी उच्चगाण परिवर्तन से सस्कृत में शामिल किया जा सकता है। (गो+गेग+अजादीना सम्हा = गोस्पद)। सादी की उक्ति है—'गोस्फन्द अज बराये चूपां नेस्त।' मेरा अनुवाद है—'गोमेषाजादि गोस्पदा गोपालाय न सन्ति हि।'

सस्कृत भाषा और फारसी भाषा में जो रिश्ता है वह इतने निकट का है कि यदि अरबी लिपि का व्यवधान न हो तो इसकी सज्ञाएँ और धातुएँ सस्कृत जैसी ही लगती हैं। अवश्य ही यह कहना मुझे अब नही है कि विश्व की हर भाषा सस्कृत से ही निकली है और फारसी भी सस्कृत से ही निकली है। हाँ, इतना अवश्य है कि इन दो भाषाओ की गठन आश्चर्यजनक रूप से समान है। नामो के विषय में तो यहाँ तक कहा जा सकता है कि लिपि में परिवर्तनमात्र से ही ये शुद्ध सस्कृत नाम लगने लगते हैं। मुझे ईरानी 'फरीदूं' और भारतीय 'प्रद्युम्न' में कोई अन्तर नहीं लगता। 'सुगँव' मुझे 'सुशोभ' के निकट लगता है। अम्रा लैंरस (अम्र = अमर, लैंरस = सिंह) मुझे अमर सिंह लगता है और 'गुस्तास्प'—'सप्ताश्व'। 'तहमास्प' मुझे वर्णव्यत्यय से 'अश्वत्थामा' लगता है। (तहमा = थामा, अस्प = अश्व)। यत्र तत्र मैंने इस समानता के निदर्शन के लिये अपने अनुवादक के अधिकार का प्रयोग किया भी है।

अरबी लिपि और हिन्दी लिपीकरण

हिन्दी लिपीकरण (Hindi Transliteration) के विषय में मेरा निवेदन है कि फारसी भाषा को देवनागरी लिपि में लिखने का यह नया प्रयोग है। प्रत्येक भाषा के कुछ विशिष्ट उच्चारण और लहजे होते हैं। अत उस भाषा के यथातथ उच्चारण के लिये उस भाषा के बोलने वाला को ही प्रमाण मानना चाहिये। और उन्ही से उच्चारण आदि सीखने की चेष्टा करनी उचित है। किन्तु हम देवनागरी वाले जो दावा करते हैं, कि हमारी लिपि के द्वारा प्रत्येक भाषा को लिखा जा सकता है और फिर ज्यो का त्यो पढ़ा जा सकता है, यह केवल अर्धसत्य है। पूरी सचाई यह है कि बिना कुछ चिह्न लगाये, और उच्चारण की परम्परा निश्चित किये, हम हर भाषा को ज्यो का त्यो नही बोल सकते। कम से कम फारसी भाषा और अरबी भाषा का अवितथ उच्चारण तो वर्तमान लिपि में थोड़ा विस्तार किये बिना नही कर सकते।

फारसी भाषा ने अपनी वर्तमान लिपि अरबी भाषा से ली है। अरबी वर्णमाला में कुछ अक्षर नहीं थे, इसलिये फारसी भाषा की जरूरतें पूरी करने के लिये इस लिपि में कुछ और चिह्न शामिल किये गये। इसी प्रकार फारसी भाषा के चिह्नो से उर्दू का काम पूरा नही होता था, इसलिये उर्दू ने भी कुछ और चिह्न लगाकर काम चलाया है। अरबी और फारसी उच्चारणो को हिन्दी में अविकल रूप से अवतरित करने के लिये अनिवार्यत हिन्दी में भी कुछ नये प्रयोग करने होंगे। इसके बाद भी हमारा यह दावा पूरा नहीं होगा कि हम हर भाषा को ज्यो का त्यो अपनी लिपि में लिख और बोल सकते हैं। हमें प्रत्येक भाषा के विशिष्ट उच्चारण के लिये कुछ नये चिह्न और नयी परम्परा कायम करनी होगी।

फारसी भाषा में 'अ' दो प्रकार से लिखा जाता है। एक अलिफ 'ا' से और दूसरा ऐन 'ع' से। इनमें ऐन का उच्चारण कण्ठ से एक विशेष प्रकार से किया जाता है। किसी फारसीदाँ से प्रत्यक्ष रूप से सुनकर ही इसका अभ्यास किया जा सकता है। हिन्दी में अ के नीचे बिन्दु लगाकर इसे व्यक्त करने की चेष्टा की जाती रही है। इसलिये मैंने भी ऐन के लिये 'अ़' चिह्न रखा है।

'ب (बे)', 'پ (पे)', और 'ت (ते)', हिन्दी में 'ब' 'प' और 'त', के रूप में जाने जाते है। ث का उच्चारण थोड़ा भिन्न है। अरब में इसका उच्चारण 'त्स' जैसा किया जाता है, जो सुनमें 'थ' जैसा लगता है। वास्तव में, यहाँ 'स' एक ऊष्म उच्चारण मात्र है और 'त' की ध्वनि केवल तवर्गीय प्रयत्नमात्र है। मानो 'त' कहते कहते मुँह से 'स' निकल जाय ऐसा 'ث (से)', का उच्चारण है। इसके लिये मैंने शब्द सूचीके ث प्रकरण में सर्वत्र, और ग्रन्थ के लिपीकरण में एक दो जगह 'त्स' का प्रयोग किया है। यदि भाषा वैज्ञानिको और ध्वनि शास्त्रियो को यह अभिमत हो तो अगले सस्करण में इसको सर्वत्र 'त्स' के रूप में निर्धारित किया जा सकता है।

'ج (जीम)', 'چ (चे)' और 'ح (हे)' हिन्दी में ज, च, और ह के रूप में जाने जाते हैं। 'خ' को हिन्दी वर्णमाला के 'ख' में बिन्दु लगाकर (ख़) लिखने की परम्परा निर्धारित हो चुकी है।

'د (दाल)' का उच्चारण 'द' है।

'ذ-ز-ژ-ض और ظ के उच्चारण की देवनागरी में कोई परम्परा नही है। हमारे पास केवल एक चवर्गीय ज है, जिसके नीचे विन्दु लगाकर हम इन पाँचो ध्वनियों का काम चलाते हैं। किन्तु अब समय आ गया है कि इन समस्त ध्वनियो में जो अन्तर है उसको स्पष्ट करने के लिये हमे नये चिह्न ढूढने होगे, और इनके उच्चारण की अवितथ परम्परा डालनी होगी।

महाकवि ज़ौक अविकल उच्चारण को तकल्लुफ कहा करते थे। उनका एक प्रसिद्ध शेर है—

ऐ जौक़ ! तकल्लुफ मे है तकलीफ सरासर।
आराम से हैं वो जो तकल्लुफ नही करते॥

वास्तव मे ज़ौक़ के समय तक अरवी और फारसी उच्चारण एक समस्या वन चुके थे। उर्दू भाषी लोग भी ذکر-زبان, ضرورت-زباں और ظالم सवको गडमड करके 'ज़िक्र, ज़ुवान, ज़ियाँ, ज़रूरत और ज़ालिम' कहकर सवका काम अकेले 'ज़' से चलाते थे। आज भी जो लोग कारी हाफिजो से पढ़ते हैं वे तो ठीक उच्चारण कर पाते हैं शेष उर्दूभाषी इतने तकल्लुफ में नही पडते। लेकिन हिन्दीभाषियों को यदि अपना 'जैसा लिखा वैसा पढो' का दावा पूरा करना है, और देवनागरी को एक पूर्ण लिपि वनाना है तो यह तकल्लुफ उठाना ही पडेगा।

हिन्दी में 'ज', अरवी-फारसी के जीम ج के समकक्ष है। 'ز (ज़े)' के लिये ज के नीचे विन्दु (ज़) का प्रयोग निश्चित हो चुका है। अव शेष चार ध्वनिया का अन्तर जान लेना चाहिये। ज़े ز मे ध्वनि स्फुट होती है, ज़ाल ذ मे अस्फुट। इस अन्तर को व्यक्त करने के लिये ज़े में नीचे विन्दु लगता है वहाँ ذ के लिये ज के ऊपर विन्दु लगाया जा सकता है। यथा—'ज़'।

ژ की ध्वनि अरवी भाषा मे नही है। यह ईरान की अपनी ध्वनि है। जिस तरह 'ر' (रे) के ऊपर एक विन्दु लगाकर 'ز' (ज़े) वनाते हैं, उसी तरह ईरानियो ने रे के ऊपर तीन विन्दु लगाकर एक नया अक्षर वना लिया है। इसका उच्चारण अग्रेज़ी के Pleasure में तथा रूसी के 'zh' में देखा जा सकता है। मानो 'श' कहते कहते 'ज़' की ध्वनि निकल जाय, ऐसा इसका उच्चारण है। मैंने इसके लिये 'श्ज़' का प्रयोग किया है।

ض (ज़्वाद) की ध्वनि की कुजी इसमें सलग्न 'व' और 'द' मे निहित है। जैसे 'द' कहते कहते 'ज़' की ध्वनि निकल जाय और उसी में अनुदात्त 'व' भी मिला हो, ऐसी इस शब्द की ध्वनि है। इसके लिये मेरे विचार से 'द्ज़' का चिह्न उपयुक्त हो सकता है।

ظ (ज़ोय) उच्चारण ऐसा है जैसे 'ध्व' कहते कहते 'ज़' का निसरण होजाय। इसके लिये आडा-ज़ 'ꢰ' चिह्न उपयुक्त हो सकता है।

'ر (रे)', 'س (सीन)', 'ش (शीन)' के लिये देवनागरी मे 'र', 'स', और 'श' के चिह्न निश्चित हैं।

ط (तोय) और ص (स्वाद) के लिये 'ꢰ' और 'श' के चिह्न निश्चित किये जा सकते हैं।

غ (ग़ैन), ف (फे) और ق (क़ाफ) को हिन्दी में 'ग' 'फ' और 'क' के नीचे विन्दु लगाकर व्यक्त करने की परिपाटी निश्चित हो चुकी है। (ग़—फ़—क़)।

ک (काफ), ل (लाम), م (मीम), ن (नून), और و (वाव) के लिये 'क, ल, म, न, और व' के चिह्न निश्चित हैं।

छोटी हे भी 'ह' है, लेकिन यह एक लघुप्रयत्नतर और अनुदात्त ध्वनि है। क्या इसके लिये 'ह' के नीचे वैदिक भाषा का अनुदात्त चिह्न लगाया जाय ?

अध्येताओं को इन सारी ध्वनियो का ज्ञान किसी उच्चारण विशेषज्ञ विद्वान् की सहायता से हो सकता है। इनके लिये चिह्न निश्चित करने के मेरे सुझावो पर सुधीजन विचार करे और यदि वे उचित हों तो ये चिह्न देवनागरी में सम्मिलित किये जा सकते हैं।

यहाँ यह भी स्मरण रहे कि फारसी और अरवी के उच्चारणो मे, पहले वक्तो से आज वहुत परिवर्तन हो गया है। लिखित भाषा और वोलचाल की भाषा का अन्तर तो है ही, किन्तु कुछ वर्णो का उच्चारण भी सवथा वदल गया है। फारसी में वडा काफ (ق) अव 'क़' की ध्वनि नही देता वल्कि 'ग़' जैसा वोला जाता है। वोलने की पद्धति में तो आकाश-पाताल का अन्तर हो गया है। कई शब्दो में 'ओ' और 'ए' की ध्वनि अव 'ऊ' और 'ई' की तरह वोली जाती है। आधुनिक फारसी में जोश के स्थान पर 'जूश' कहा जाता है और 'खेश' की जगह 'खीश'। 'हासिले हयात' अव 'हौसिली हयौत' कहा जाता है। 'नान' (रोटी) को फारसी को लिखते तो नान ही हैं लेकिन कहते 'नून' हैं। हिंदी लिप्यंकरण में ये सव वातें नही वताई जा सकती।

अनुवाद के विषय में दो शब्द और

शेख सादी कहावतों और सूक्तियों के सम्राट् हैं। उनकी कुछ कहावतें पद्य में हैं और कुछ अर्धपद्य जैसे गद्य में। मुझे ये अर्धपद्य इतने समर्थ और जानदार लगे कि उनको संस्कृत छन्द में उतारे बिना मुझ से रहा नहीं गया। इस प्रकार के अर्धपद्य सवा सौ के लगभग हैं जिनको मैंने संस्कृत में छन्दोबद्ध किया है। मुझे लगा कि मानो मेरी आज़माइश् के लिये ही सादी ने इन्हें असमाप्त छोड़ दिया था। एक नमूना देखिये—

तवंगरी व दिल'स्त न व माल,
व वुजुर्गी व अक्ल'स्त न व साल।

समृद्धिर्मनसा वाच्या नैषा वाच्या धनेन च।
वृद्धत्वं हि धिया ज्ञेयं न च ज्ञेयं तदायुषा॥

अज़ मैदाए ख़ाली चि कुव्वत आयद?
व अज़ दस्ते तिही चि मुरव्वत ज़ायद?
व अज़ पाये वस्ता चि सैर आयद?
व अज़ दस्ते गुरुस्ना चि ख़ैर?

किं बलं रिक्तकोष्ठस्य, रिक्तहस्तस्य का रतिः।
का गतिर्बद्धपादस्य, क्षुधापन्नस्य का मतिः॥

हिन्दी अनुवाद में मैंने केवल एक बात का ध्यान रखा है, कि उसकी सहायता से पाठक की 'मूल' में गति हो जाय। इसी उद्देश्य से मैंने हिन्दी लिपीकरण का आश्रय लिया है और इसीलिये मैंने हिन्दी को फारसी से दूर नहीं जाने दिया है। इस प्रयास में कहीं कहीं हिन्दी की गठन पर खिंचाव पड़ा है। पर मेरा विश्वास है कि हिन्दी का जन्म, विश्व की प्रमुख भाषाओं में से एक बनने के लिये हुआ है। इसलिये उसे सभी भाषाओं के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलना होगा। यदि इस प्रयास में हिन्दी की गति में कहीं अटपटापन दिखाई दे तो वह मेरा दोष है।

अन्त में, मैं उन सभी सहयोगियों का धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने इस ग्रन्थ की समाप्ति में अपना योगदान दिया है। श्री अर्जुन अरोड़ा ऐम० पी० के उल्लेख के बिना यह प्रस्तावना अधूरी रह जायगी। वास्तव में, आपके प्रोत्साहन और सक्रिय सहयोग के बिना इसका प्रकाशन सम्भव न होता। राष्ट्रीयकृत यूनाइटेड कमर्शियल बैंक के अधिकारियों ने इसके प्रकाशन के लिये प्रारम्भिक धन की जो व्यवस्था की उसके लिये मैं उनका भी आभारी हूँ। ईरानी दूतावास के श्री मुशफ़िक़ज़ादे ने सरकारी स्तर पर जो सहयोग दिया, उसके लिये मैं उनका भी आभारी हूँ। मेरे गुरु श्री विश्वबन्धु शास्त्री ने, तथा महाराजा संस्कृत कालेज के प्रिंसिपल प० गोविन्दनारायण शर्मा, तथा प० दुर्गादत्तजी ने इस ग्रन्थ का आद्योपान्त देखकर मुझे उपकृत किया अतः मैं उनका भी कृतज्ञ हूँ। और साथ ही मेरी विदुषी धर्मपत्नी डा० उजला अरोड़ा ने मुझे लेखनकार्य की फुरसत देकर और समय समय पर अनेक विद्वत्तापूर्ण सुझाव देकर जो सहायता की है, उसके लिये मैं उनका भी आभारी हूँ यदि वे इस औपचारिकता को परायापन न मानें।

इस प्रस्तावना के साथ ही गुलिस्ताँ में प्रयुक्त अरबी पदांशों का अर्थ भी दिया जा रहा है जिससे पाठकों को अरबी की गठन और भाव भूमि समझने में सहायता मिल सकेगी।

गुलिस्ताँ में प्रयुक्त शब्दों की व्युत्पत्ति सहित शब्दार्थ सूची, और गुलिस्ताँ में प्रयुक्त समस्त छन्दों के लक्षण उदाहरण आदि इस पुस्तक के अन्त में दिये जा रहे हैं।

गुलिस्ताँ में प्रयुक्त अरबी वाक्यों, आयतों, पदांशो तथा छन्दों का पदच्छेद पूर्वक अर्थ

१। बिस्मिल्लाहिर्रहमानुर्रहीम।	बि = साथ, इस्म = नाम, अल् इलाह = परमात्मा, अल् रहमान = दयालु, अल् रहीम = कृपालु।
२। क़ौलुहु तआला—एमलू आल दाऊद ! शुक्रन्	क़ौलुहु तआला = भगवद्वचन, एमलू = अमल कर, आल = वंश, दाऊद = दाऊद, शुक्रन् = शुक्र का।
व क़लीलुम् मिन् इबादी अश्शकूर। (कुरान—अध्याय ३४, पद १२ का परार्द्ध)	व = और, क़लीलुन् = कम, थोड़े, मिन् = में से, इबादी = मेरे भक्तों, अल् शकूर = कृतज्ञ हैं।
३। बैत (बहरे मुतक़ारिब)	
शफ़ीओ मुताओ नबी ओ करीम।	शफ़ीअ = सिफारिश करने वाला, मुताअ = जिसकी इताअत (आज्ञा-पालन) की जाय, नबी = दूत, करीम = दयालु (परमात्मा) का,
क़सीमो जसीमो वसीमो वसीम॥	क़सीम = बाँटने वाला, जसीम = शानदार, वसीम = बुलन्द, वसीम = निशान किये हुए।
४। शेर (बहरे कामिल)	
बलग़'ल् उला बि कमालिहि।	बलग़ = पहुँच गये, अल् उला = बुलन्दी पर, बि = से, कमालिहि = अपने कमाल (से)।
कशफ़'द्दुजा बि जमालिहि॥	कशफ़ = खोला, अल् दुजा = अँधेरा, बि = से, जमालिहि = अपने सौन्दर्य (से)।
हसुनत जमीउ खिसालिहि।	हसुनत = अच्छी हुई, जमीउ = समस्त, खिसालिहि = उनकी खूबियाँ।
सल्लू अलैहि व आलिहि॥	सल्लू = रहमत भेजो, अलैहि = उन पर, व = और, आलिहि = उनके परिवार पर।
५। या मलायकती ! लक़द इस्तहयैतु मिन् अब्दी—	या = हे, मलायकती = मेरे फरिश्तो, लक़द = बेशक, इस्तहयैतु = मुझे शर्म आती है, मिन् = से, अब्दी = मेरे भक्त (से)।
व लैस लहु ग़ैरी फ़क़द् ग़फ़र्तु लहु। (हदीस)	व = और, लैस = नहीं, लहु = उसके लिये, ग़ैरी = मेरे सिवा, फ = पस-अत, क़द् = बेशक, ग़फ़र्तु = क्षमा किया, लहु = उसको।
६। मा अबद्नाक हक़्क़ इबादतिक।	मा = नहीं, अबद्ना = हमने भक्ति की, क = तेरी, हक़्क़ = हे प्रभो ! इबादतिक = तेरी भक्ति के योग्य।
मा अरफ़्नाक हक़्क़ मारिफ़तिक।	मा = नही, अरफ़्ना = हम ने पहचाना, क = तुझे, हक़्क़ = हे प्रभो ! मारिफ़तिक = तुझे पहचानने योग्य।

दर महामिदे पादशाहे इस्लाम

७। खल्लद अल्लाहु मुल्कहु।	खल्लद = हमेशा रखे, अल्लाहु = परमात्मा, मुल्कहु = उसका राज्य।
८। ज़िल्ल'ल्लाहि फ़ि अर्ज़िहि, रब्बु'ल् अर्ज़ि अन्हु राज़।	ज़िल् = छाया, अल्लाहि = परमात्मा की, फ़ि = में, अर्ज़िहि = उसकी धरा (पर), रब्ब = प्रभु, अल् अर्ज़ = पृथ्वी (का), अन्हु = उससे, राज़ = राज़ी हो।
९। अन्नासु अला दीनि मुलूकिहिम्।	अल् नास = मनुष्य, अला दीनि = धर्म पर (होते हैं), मुलूकिहिम् = अपने राजाओं के।

१०। अल्लाहुम्म मत्ति'ल् मुस्लिमीन नितूलि हयातिहि।

अल्लाहुम्म = हे प्रभो (हुम्म = सारे नामों से युक्त), मत्तिअ = लाभ दे, अल् मुस्लिमीन = मुसलमानों का, वि = के द्वारा, तूलि = लम्बा करने (के द्वारा), हयातिहि = उसका जीवन।

व जाइफ् मवाव जमीलिहि व हुसनातिहि।

व=और, जाइफ्=बढ़ा, मवाव=पुण्यफल, जमीलिहि=उसकी नेकियों का, व = और, हुसनातिहि = उसकी अच्छाइयों का।

व अर्फा दरजत औलियायिहि व वुल्लानिहि।

व = और = अर्फअ = ऊँचा कर, दरजत = पद (को), औलियायिहि=उसके मित्रों (के), व=और, वुल्लातिहि= उसके प्रेमियों (के)।

व दम्मिर अला आदायिहि व शुनातिहि।

व=और, दम्मिर=नष्ट कर, अला=पर, आदायिहि=उसके शत्रुओं को, व = और, शुनातिहि = अशुभचिन्तकों पर।

वि मा तुलीय फि'ल् कुरानि मिन् आयातिहि।

वि = से, मा = जो कुछ, तुलीय = पढ़ा गया है, फि = में, अल् कुरान=कुरान (में), मिन्=में से, आयातिहि=उसकी आयतों (में)।

अल्लाहुम्म आमिन् वलदहु व'हूफ़ज् वल्दहु।

अल्लाहुम्म=सारेनामों वाले परमात्मा!, आमिन्=अम्नदे-शान्ति दे, वलदहु = उसके देश को, व = और, अहूफज् = रक्षा कर, वलदहु = उसके पुत्र (को)।

११। शेर (वहूरे तवील)

लवद सइद'दुनिया निहि दाम सादुहु।

लवद = वेशक, सइद = प्रसन्न होता है, (सं० प्रसीदति), अल् दुनिया = संसार, विहि = उससे, दाम = हमेशा रहे, सादुहु = उसकी प्रसन्नता।

व अय्यदहु'ल् मौला वि अल् वियति'न् नस्रि॥

व = और, अय्यदहु = मदद करे उसकी, अल् मौला = परमात्मा वि=से, अल् वियतिन्=झण्डा (से), अल् नस्रि=विजय (के)।

व ज़ालिक तनूशा लीनतु हुव इर्कुहा।

वज़ालिक = इसी तरह से, तनूशा = अंकुरित होगा, लीनतु = महान् (वृक्ष), हुव=वह, जो वह, जो उसका, इर्कुहा=उसकी जड़, उसका तना।

व हुस्नु नवाति'ल् अर्जि मिन् करमि'न् वज्रि॥

व=और, हुस्न=सौन्दय, नवात=वनस्पति, वृक्ष, अल्अर्ज= पृथ्वी में, मिन्=से, करम=कृपा, अल्वज्रि=बीज।

दर सववे तालीफे किताव गोयद

क़ता (वहूरे ख़फीफ)

१२। रौज़तुन् माउ नहूरिहा सल साल।

रौज़तुन् = एक वाग, माउ = पानी, नहूरिहा = उसकी नहर का, सल साल = ठण्डा मीठा पानी।

दौहतुन् सजूउ तयरिहा मौज़ून्॥

दौहतुन्=एक झुण्ड (एक कुञ्ज), सजअ=कविता पाठ (चहचहाना), तयरिहा = उसके पक्षी, मौजून् = उपयुक्त।

१३। अल्करीमु इज़ा वाद वफ़ा।

अल्करीमु = उदार व्यक्ति, इज़ा = जब, वाद = प्रतिज्ञा की, वफा = पूरा किया।

१४। अल् मुवय्यद मिन'स्समा'।

अल् मुवय्यद=मदद किया गया है, मिन्=से, के द्वारा, समाय= आसमान = आकाश, स्वर्गलोक।

अल् मन्सूरु अल'ल् आदा'

अल् मन्सूर=मदद किया, अला=पर, के खिलाफ, अल् आदाय= शत्रुओं।

अज़ुदु'द् दौलति'ल् काहिरित	अज़ुद = बाहु, अल् दौलत = राज्य, अल् काहिरित = विजेता।
सिराजु'ल् मिल्लति'ल् बाहिरित	सिराज=दीपक, अल् मिल्लत=धर्म, अल् बाहिरित=चमकीला।
जमालु'ल् अनामि	जमाल = सौन्दर्य, अल् अनाम = मानव जाति।
मुफ़्ख़र'ल् इस्लामि	मुफ़्ख़र = फख्र-गौरव का कारण, अल् इस्लाम = इस्लाम (के)।
सादु बिन् अताबकि'ल् आज़म	साद=साद, बिन्=(इब्न का संक्षेप) पुत्र, अताबक=अताबक, अल् आज़म = महान (का)।
शाहन्शाहु'ल् मुअज़्ज़म	शाहन्शाह = राजाधिराज, अल् मुअज़्ज़म = महान्।
मालिकु रिकाबि'ल् उमम्	मालिक = स्वामी, रिकाब = गर्दन, अल् उमम् = राष्ट्रों की।
मौला मुलूकि'ल् अरबि व'ल् अजमि	मौला=स्वामी, मुलूक=राजाओं (का), अरब=अरब (के), व = और, अल् अजम् = ईरान।
सुल्तानु'ल् बर्रि व'ल् बह्रि	सुलतान = राजा, अल् बर्र = जमीन (का), व = और, अल् बह्र = समुद्र (का)।
वारिसु मुल्कि सुलेमान	वारिस = उत्तराधिकारी, मुल्क = राज्य (का), सुलेमान = सुलेमान (के)।
मुज़फ्फ़र'द् दुनिया व'द्दीनि	मुज़फ्फ़र = विजेता, अल् दुनिया = पृथ्वी (का), व = और, अल् दीन = धर्म (का)।
अबू बक्र बिन् साद बिन् ज़ंगी, अदाम'ल्लाहु इक्बालहुमा।	अबूबक्र बिन् सादुब्न ज़ंगी = ज़ंगी के पुत्र साद के पुत्र अबूबक्र, अदाम=सदा रखे, अल्लाह=परमात्मा, इक्बालहुमा=उन दोनों का प्रताप।
व ज़ाअफ़ इज्लाल हुमा	व=और, ज़ाअफ़=बढाये, इज्लाल हुमा=बडप्पन दोनों का।
व जअल इला कुल्लि ख़ैरिन् मआल हुमा।	व = और, जअल = लगाये, इला कुल्ले ख़ैरिन् = सारी अच्छाई की ओर, मआल हुमा = उन दोनों का अंजाम।

दर मकारिमे इख्लाके अमीरे आदिल अमीरे फखरु'द्दीन अदामुल्लाहु उलुव्वहु

१५। कहफ़ु'ल् फ़ुक़राय—मलाज़ु'ल् गुरबाय	कहफ = शरणस्थल, अल् फ़ुक़राय = फकीरों (के), मलाज़ = शरणस्थल, अल् गुरबाय = गरीबों (के)।
मुरब्बीयि'ल् फ़ुज़लाय	मुरब्बी = संरक्षक, अल् फ़ुज़लाय = विद्वानों (के)।
मुहिब्बु'ल् अत्क़ियाय	मुहिब्ब = प्रेमी, अल् अत्क़ियाय = परहेज़गारों (के)।
ग़ियासु'ल् इस्लामि व'ल् मुस्लिमीन	ग़यास = फरियाद की जगह, अल् इस्लाम = इस्लाम धर्म (के), व = और, अल् मुस्लिमीन = मुसलमानों (के)।
उम्दतु'ल् मुलूकि व'स्सलातीन	उम्दा = उत्तम, अल् मुलूक = राजाओं (में), व = और, अल् सलातीन = नरेशों (में)।
अबू बक्र बिन् अबी नस्र	अबूबक्र बिन् अबीनस्र = अबीनस्र के पुत्र अबूबक्र।
अताल'ल्लाहु उम्रहु	अताल=ज्यादा करे, अल्लाह=परमात्मा, उम्रहु=उसकी आयु।
व अजल्ल क़द्रहु	व = और, अजल्ल = बढ़ाये, क़द्रहु = उसकी क़द्र (को)।
व शरह सद्रहु	व = और, शरह = खोल दे, सद्रहु = उसके हृदय (को)।
व ज़ाअफ़ अज्रहु।	व ज़ाअफ = (व+इज़ाअफ) और ज्यादा करे, अज्रहु = उसके पुण्यफल (को)।

प्रथम अध्याय

१। शेर (बहरे तवील)

इज़ा यइस'ल् इन्सानु ताल लिसानुहु।

इज़ा = जब, यइस = निराश हो जाय, अल् इन्सानु = आदमी, ताल = बढ़ जाती है, लिसानुहु = उसकी जीभ।

क सिन्नौरि मग़्लूबिन् यसूलु अल'ल् कल्बि ॥

क = जैसे, सिन्नौरि = बिल्ली, मग़्लूबिन् = दबी हुई, यसूलु = हमला करती है, अला = पर, अल् कल्बि = कुत्ते।

२। 'व'ल् काज़िमीन'ल् ग़ैज़ व'ल् आफीन अनि'न्नासि

व = और, अल् काज़िमीन = सहने वाले (जीतने वाले), अल् ग़ैज़ = क्रोध, व = और, अल् आफीन = माफ करने वाले, अन् = से, अल् नास = लोगों (को)।

व'ल्लाहु युहिब्बु'ल् मुह्सिनीन।'

(कुरान—अध्याय ४, पद १२८)

व = और, अल्लाहु = परमात्मा, युहिब्बु = प्रेम करता है, अल् मुह्सिनीन = उपकारियों को।

३। 'अ'श्शातु नजीफतुन् व'ल् फीलु जीफ़तुन्।'

अल् शातु = बकरी, नजीफतुन् = पाक है (मेध्य है), व = और, अल् फीलु = हाथी, जीफतुन् = मुर्दार (हराम) है।

४। बैत (बहरे तवील)

अकल्लु जिबालि'ल् अर्ज़ि तूरुन् व इन्नहु।

अकल्लु = सबसे छोटा, जिबाल = पहाड़ों (में), अल् अर्ज़ि = पृथ्वी (के), तूरुन् = तूर (है), व = और, इन्नहु = बेशक वह।

ल'आज़मु इन्द'ल्लाहि क़द्रँव् व मन्ज़िला ॥

ल = ज़रूर, आज़मु = महान् (है), इन्द = निकट, अल्लाहि = परमात्मा (के), क़द्रन् = इज़्ज़त में, व = और, मन्ज़िलन् = स्थिति में।

५। 'मा मिन् मौलूदिन् इल्ला व क़द् यूलदु

मा = नहीं, मिन् = में से, मौलूदिन् = बच्चा, इल्ला = किन्तु, व = और, क़द् = बेशक, यूलदु = पैदा होता है।

अल'ल् फ़ित्रति फ अबवाहु युहव्विदानिहि

अला = पर, अल् फ़ितरति = सादगी, धर्म, इस्लाम, फ़ = तो (पीछे), अबवाहु = वे दोनों (मातापिता), युहव्विदानिहि = यहूदी बना देते हैं उसे।

औ युनस्सिरानिहि औ युमज्जिसानिहि।'

(हदीस)

औ = या, युनस्सिरानिहि = ईसाई बना देते हैं उसे, औ = या, युमज्जिसानिहि = मजूसी (अग्निपूजक) बना देते हैं उसे।

६। बैत (बहरे वाफिर)

ग़ुज़ीत बिदर्रिना व निशात फ़ीना।

ग़ुज़ीत = (तू) पोसा गया है, बि = से, दर्रि = दूध, ना = हमारे, व = और, निशात = बड़ा हुआ है, फ़ीना = हम में।

फ मन् अम्बाक अन्नक इब्नु ज़िअ्बि ॥

फ = तो, मन् = किसने, अम्बा = बताया, क = तुझे, अन्न = कि, क = तू = इब्नु = पुत्र, ज़िअ्बि = भेड़िये का।

इज़ा कान'त्तिबाउ तिबाअ सूइन्।

इज़ा = जब, कान'त्तिबाउ = होती है सत्प्रकृति वाले से, तिबाअ् = प्रकृति, सूइन् = बुरी (का संयोग)।

फ लैस बिनाफिइन् अदबु'ल् अदीबि ॥

फ = तो, लैस = नहीं, बिनाफिइन् = लाभ के लिये (होता), अदब = शिष्टाचार, शास्त्र, अल् अदीबि = शास्त्री (का)।

७। शेर (बहरे वाफिर)

इज़ा शबि'ल् कमिय्यु यसूलु बत्शा।

इज़ा = जब, शबिअ = पेट भरा होता है, अल् कमिय्यु = योद्धा, यसूलु = हमला करता है, बत्शन् = कठोरता से।

व ख़ावि'ल् बत्नि यब्नुशु बि'ल् फिरारि ॥

व = और, ख़ावी = ख़ाली, अल् बत्नि = पेट (वाला), यब्तुशु = तेज़ी करता है, बि'ल् फिरारि = भागने में।

८। शेर (बहरे वाफिर)

अला ला तह्ज़नन्न अख़ु'ल् वलिय्य ।

अला=सावधान ! ला=मत, तह्ज़न=शोक कर, अख़ा=भाई, अल् वलिय्य = विपत्ति मे ।

फ़ लि'र्रह्मानि अल्ताफ़ुन् ख़ुफ़िय्य ॥

फ = तो-क्योंकि, लि = लिये, अल् रह्मानि = दयालु प्रभु, अल्ताफ़ुन् = कृपाएँ, ख़ुफ़िय्य = गुप्त ।

९। 'अह्सन अल्लाहु ख़लासहु ।'

अह्सन = समृद्ध करे, अल्लाहु = परमात्मा, ख़लासहु = उसका परिणाम ।

१०। 'अख़ज़त्हु'ल् इज़्ज़तु बि'ल् इस्मि ।'

(कुरान)

अख़ज़त् = पकडता है, हु = उसको, अल् इज़्ज़तु = सम्मान-गर्व, बि = पर, अल् इस्मि = पाप ।

११। बैत (बहरे वाफिर)

उअल्लिमुहु'रिमायत कुल्ल यौमिन् ।

उअल्लिमु = मैंने पढाई, हु = उसे, अल् रिमायत = धनुर्विद्या, कुल्ल = सब, यौमिन् = दिन ।

फ़लम्म'स्तद्द साइदुहु रमानी ॥

फ = तो, और, लम्मा = जब, इस्तद्द = मालिश हो गयी, साइदुहु=उसकी बाँह की, रमानी=(उसने) मुझे बींध दिया ।

१२। सदक़'ल्लाहु'ल् अज़ीम—'मन् अमिल

सदक=सच कहा, अल्लाहु=परमात्मा (ने), अल् अज़ीम=महान् (ने), मन् = जिसने कि, अमिल = अमल किया ।

सालिहन्—फ लि नफ़्सिहि, व मन् असाअ फ अलैहा ।'

(कुरान—अध्याय XLI, पद ४६ का अंश)

सालिहन् = अच्छी तरह-भलाई का, फ = तो, लि = के लिये, नफ़्सिहि = अपनी आत्मा, व = और, मन् = जिसने, असाअ = बुरा किया, फ = तो, अलैहा = उसी पर ।

द्वितीय अध्याय

१। 'इस्नअ् बी मा अन्त अह्लुहु वला तफ़्अल्

इस्नअ्=मुल्क कर, बी (बि+ई)=मेरे साथ, मा=वह जो, अन्त अह्लु=तेरे योग्य है, व=और, ला=मत, तफ़्अल्=कर ।

बिना मा नह्नु बि अह्लिहि ।'

बि=साथ, ना=हमारे, मा=जोकि-जिसके कि, नह्नु=हम, बि अह्लिहि = जिसके (उसके) योग्य है ।

२। बैत (बहरे बसीत)

इल्लम् अकुन् राकिब'ल् मवाशी ।

इन् लम् = यद्यपि नही, अकुन् = हूँ, राकिब = सवार, अल् मवाशी = पशु पर ।

असूई लकुम् हामिल'ल् गवाशी ॥ १५ ॥

अस्ई=कोशिश करूँगा, ल=लिये, कुम्=तुम्हारे, हामिल=ले चलने वाला, अल् गवाशी = जीन की गोट ।

३। 'अस्सलामतु फ़ि'ल् वह्दति ।'

अल् सलामतु = सुरक्षा, फि = में, अल् वह्दति = एकान्त ।

४। बैत (बहरे तवील)

कुफ़ीत अज़न या मन् तउद्दु महासिनी ।

कुफ़ीत=काफी किया गया है, अज़न=कष्ट, या=हे, मन्=जो कि, तउद्दु = गिनाता है, महासिनी = मेरी भलाइयाँ ।

अलानियती हाज़ा—व लम् तद्रि बातिनी ॥ ३१ ॥

अलानियती=बाह्य मेरा, हाज़ा=यह (है), व=और, लम्= नही, तद्रि = तू जानता, बातिनी = मेरा अन्तरंग ।

५। 'ली म' अल्लाहि वक्तुन् ला यसउनी फीहि — ली=मेरे लिये, मअ=साथ, अल्लाहि=प्रभु (के), वक्तुन्=एक समय, ला=नहीं, यसउनी=बराबर होता है, फीहि=उसमें।

मलकुम् मुक़रबुंव् व ला नबीयुम् मुर्सल।' (हदीस) — मलकुन्=फ़रिश्ता, मुकरबुन्=निकट, व=और, ला=नही, नबीयुन् = कोई नबी, मुरसल = पैग़बर।

६। शेर (बहरे तवील)

उशाहिदु मन् अहवा बिग़ैरि वसीलतिन्। — उशाहिदु=मैं देखता हूँ, मन्=जिसको कि, अहवा=मैं चाहता हूँ, बिग़ैरि = विना, वसीलतिन् = साधन के द्वारा।

फ यल्हू ग़नी शानुन् अजल्लु तरीक़न्॥३५॥ — फ=तो, यल्ह=मिलती है, ग़नी=उससे, शानुन् = हालत, अजल्लु = खो देता हूँ, तरीक़न् = मार्ग।

युवज्जिजु नारन् सुम्म युत्फ़ी बिरश्शतिन्। — युवज्जिजु = (वह) भड़काता है, नारन् = आग, सुम्म = फिर, युत्फी = बुझा देता है, बिरश्शतिन = छींटो-फुहारो से।

लि ज़ालिक तरानी मुहरक़ँव् व ग़रीक़न्॥३६॥ — लि ज़ालिक=इसलिये, तरानी=देखता है मुझे, मुहरक़न्=जला हुआ, व =और, ग़रीक़न् = डूबा हुआ।

७। 'व नह्नु अक्रबु इलैहि मिन् हब्लि'ल् वरीदि।' (कुरान—अध्याय L, पद १४ का अश) — व=और, नह्नु=हम, अक्रबु=करीब होते हैं, इलैहि=उसके, मिन्=से, हब्ल=शिरा, अल्वरीद=गले की, फड़कती हुई।

८। 'अल् वक्फु ला युम्लकु।' — अल्वक्फु = ईश्वरार्पित वस्तु, ला = नहीं, युम्लकु = मिलकियत होती (भाववाच्य प्रयोग)।

९। शेर (बहरे तवील)

नुहाजु इला सौति'ल् अग़ानी बितीबिहा। — नुहाजु = प्रसन्न होते हैं (हम), इला = पर, सौत = आवाज, अल्अग़ानी=गीतो (ग़िना का ब वचन), बितीबिहा=अच्छे।

व अन्त मुग़न्नी इन् सकत्त नुतीबुहा॥७१॥ — व = और, अन्त = तू, मुग़न्निन् = गायक (है), इन् = यदि, सकत्त = चुप रहे, नुतीबुहा = हमें, अच्छा लगता है।

१०। शेर (बहरे बसीत)

इन्नी लमुस्ततिरुन् मिन् ऐने जीरानी। — इन्नी=बेशक, ल=जरूर, मुस्ततिरुन्=छुपाने वाला हूँ, मिन्= से, ऐनें = आँख, जीरानी = मेरे पड़ोसी की।

व'ल्लाहु यालमु इसरारी व ऐलानी॥ — व=और, अल्लाहु=परमात्मा, यालमु=जानता है, इसरारी= मेरे अन्तरग को, व = और, ऐलानी = बाह्यरूप को।

११। शेर (बहरे तवील)

व इन्द हुबूबि'न्नाशिराति अल'ल्हिमा। — व=और, इन्द=निकट, हुबूब=चलती है, नाशिराति=उठाने वाली, अला = पर, अल् हिमा = चरागाह (को)।

तमीलु ग़ुसूनु'ल् बानि ल'ल् हजरुस्सलदु॥१०४॥ — तमीलु = झुकती हैं, ग़ुसून = शाखाएँ, अल् बान = बाण-सरकडे की, ला = नही, अल् हजरु = पत्थर, सलदु = कठोर।

१२। 'इन्न मअ'ल् उसरि युसरन्।' — इन्न = बेशक, मअ = साथ, अल् उसरि = मुश्किल (के), युसरन् = आसानी।

१३। 'या अबा हुरैरा! ज़ुरनी ग़िब्बन, तज़्दद हुब्बन्।' — या = हे, अबू हुरैरा! = बिल्ली के बाप!, ज़ुरनी = जियारत कर, मेरी, ग़िब्बन = एक दिन छोड़कर, तज़्दद = बढ़ेगा, हुब्बन् = प्रेम मे।

१४। 'व किना रब्बना अज़ाबन्नार।' (कुरान)
व = और, किना = बचा हमें, रब्बना = हे प्रभु हमारे, अज़ाब = दण्ड, अल्नार = नारकीय अग्नि से।

१५। बैत (बहरे रमल)

व अफ़ानीनु अलैहा जुल्नारु।
व=और, अफानीनु=शाखाएँ, अलैहा=उस पर, जुल्नार= अनार के फूल।

उलिकत् बि'श्शजूरि'ल् अख़्ज़रि नार॥
उल्लिकत् = लटकी हुई, बि = से, अल् शजूर = पेड (से), अल् अख़ज़र = हरे, नार = आग।

१६। कता (बहरे ख़फ़ीफ़)

हलक'न्नासु हौलहु अतशा।
हल्क = मरते है, अल् नासु = लोग, हौलहु = चारों ओर उसके, अतशन् = प्यास से।

व हूव साक़ी यरा व ला यस्की॥
व = और, हव = वह, साकिन् = साकी, यरा = देखता है, व = और, ला = नही, यस्की = पिलाता।

१७। 'अतामुरून'न्नास बि'ल् बिर्रि
अ = क्या, तामुरून = हुक्म करते हो, अल्नास = लोगों को, बि = से-का, अल्बिर्रि = भलाई (का)।

व तन्सौन अन्फुसकुम्।' (क़ुरान—अध्याय १, पद ५)
व=और, तन्सौन=भूल जाते हो, अनफुस=(नफ्स का ब वचन) आत्माओं को, कुम् = तुम्हारी-अपनी।

१८। 'इज़ा मर्रू बि'ल्लग्वि मर्रू किरामा।'
इज़ा = जब, मर्रू = तुम गुज़रो, बि अल् लग्वि = घृणित वस्तु के पास से, मरू = गुज़रो, किरामन् = कृपापूवक।

१९। शेर (बहरे कामिल)

इज़ा रायत असीमन् कुन् सातिरँव् व हलीमन्।
इज़ा=जब, रायत=तू देखे, असीमन्=गुनाहगार को, कुन्= हो, सातिरन्=छुपाने वाला, व=और, हलीमन्=विनम्र।

या मन् युक़ब्बिहु अम्री लिम ला तमुर्रु करीमन्॥
या=हे, मन्=जो कि, युकब्बिहु=बुरा लगता है, अम्री=मेरा काम, लिम ला=क्यों नहीं, तमुर्रु=तू गुज़रता, करीमन्=कृपा पूवक।

२०। व इन् जाहदाक अला अन् तुश्रिक बी
व=और, इन्=यदि, जाहदाक=झगडें तुझ से, अला=पर, अन् = इस (इस पर कि), तुश्रिक = तू शिर्क करे, बी = मेरे साथ।

मा लैस लक बिहि इल्म
मा = जो कि, जिसका कि, लैस = नही, लक = तुझको, बिहि = उससे, इल्म = ज्ञान

फ़ ला तुतिअ् हुमा। (कुरान—अध्याय ३१, पद १४)
फ=तो, ला=मत, तुतिअ्=तू इताअत कर, आज्ञा पालन कर, हुमा = उन दोना की-मातापिता की।

तृतीय अध्याय

१। 'हाज़'ल् मिक्दारु यहमिलुक व मा ज़ाद
हाज़ा = यह, अल मिक्दार = परिमाण, यहमिलुक = खडा रखेगी तुझे, व = और, मा = जो, ज़ाद = अधिक हो।

अला ज़ालिक फ अन्त हामिलु हु।'
अला = से, ज़ालिक = इस (से), फ = तो, अन्त = तू, हामिल = बोझा ढोने वाला (होगा), हु = उसका।

२। क़ौलुहू तआला—'कुलू व' श्रिबू व ला तुस्रिफ़ू।' (कुरान—अध्याय ८, पद १०)
क़ौलुहुताला=भगवद् वचन है=कुलू=खा, व=और, इश्रबू= पी, व = और, ला = मत, तुस्रिफ़ू = अपव्यय कर।

३। बैत (बहरे बसीत)

बि'ग़ल् मताइम् मीन'अल् जुल्लि यक्सिबुहा।

अल् क़िद्रु मुन्तसिबुन् व'ल् क़द्रु मख़फ़ूज़ु॥

बिगल मता मि, अल् मताइमु खाना भोजिका, मीन समय, अल् जुल्ल = ज़िल्लत के, यक्सिबुहा = तू कमाये उसे।

अल्क़िद्रु = हाँडी, मुन्तसिब = चढ़ गयी, व = और, अल् क़द्रु = सम्मान, मख़फ़ूज़ु = उतर गया।

४। क़ाल'ल्लाहु तआला—'व लौ बसत'ल्लाहु'

रिज़्क़ लि इबादिहि ल बग़ौ फ़ि'ल् अर्जि।'

(कुरान)

क़ाल = कहा है, अल्लाहु तआला = महान् प्रभु ने—, व = और, लौ = यदि, बसत = प्रभूत कर दे, अल्लाहु = प्रभु।

अल्रिज़्क़ = जीविका को, लि इबादिहि = उसके सेवकों के लिये, ल = जरूर, बग़ौ = बग़ावत करेंगे, फ़ि'ल् अर्जि = धरती पर।

५। शेर (बहरे बसीत)

मा ग़ा अग़्वाजक या मग़रूर! फ़ि'ल् ख़तरि।

हत्ता हलक्त? फलैत'न्नम्लु लम् ततिरि॥

मा = किस, ग़ा = चीज ने, अग़्वाजक = घुमाया तुझे, या मग़रूर = अरे घमंडी! फ़ि = में, अल् ख़तरि = ख़तरे (में)।

हत्ता = यहाँ तक कि, हलक्त = तू हलाक हुआ? फलैत = तो काश, अल् नम्लु = चींटी, लम् = न, ततिरि = उड़ती।

६। शेर (बहरे कामिल)

या लैत क़ब्ल मनीयती यौमन् अफ़ूज़ु बिमुन्यती।

नह्‌रिन् तलातुम रुक्बती फ़ अजल्लु अम्लउ क़िर्बती॥

या लैत = ऐ काश!, क़ब्ल मनीयती = मेरी मौत से पहले, यौमन् = एक दिन, अफ़ूज़ु = मैं सफल होता, बिमुन्यती = मेरी कामना में।

नह्‌रिन् = एक नहर-नदी, तलातुम = तूफानी, रुक्बती = मेरे घुटनों तक, फ़ अजल्लु = तो मैं खो देता, अम्लउ = भरने में, क़िर्बती = मेरी मशक।

७। बैत (बहरे कामिल)

क़ालू अजीनु'ल् किल्सि लैस बिताहिरिन्।

क़ुल्ना नगुद्दु बिही शुक़ूक़'ल् मब्रज़ि॥

क़ालू = उन्होंने कहा, अजीन = गारा, अल् किल्सि = चूने का, लैस = नहीं है, बिताहिरिन् = पवित्र।

क़ुल्ना = हमने कहा, नगुद्दु = हम बन्द करेंगे, बिहि = उससे, शुक़ूक़ = छेद-दरार, अल् मब्रज़ि = शौचालय के।

८। 'हत्ता इज़ा अद्‌रकहु'ल् ग़रक़ु।'

(कुरान—अध्याय १०, पद ९० का अंश)

हत्ता = यहाँ तक कि, इज़ा = जब, अद्‌रकहु = ले बैठा उसे, अल् ग़रक़ु = डूबना।

९। 'फ़ इज़ा रकिबू फ़ि'ल् फ़ुल्कि दअवुल्लाह मुख़लिसीन लहु'द्दीन।'

फ़ = तो, इज़ा = जब, रकिबू = (वे) चढ़े, फ़ि = में, अल् फ़ुल्क = नाव (में), दअवुल्लाह = दऔ + अल्लाह = उन्होंने पुकारा परमात्मा को, मुख़लिसीन = शुद्ध हृदय से, लहु = उसको (दिखाते हुए), अल् दीन = धर्मपरायणता।

१०। शेर (बहरे हज़ज्-मुसद्दस)

बद् शाबह बि'ल्‌वरा हिमारुन्।

इज्लन् जसदल्लहु ख़ुवारुन्॥

(इज्लन् जसदन् = लाल सोने का बछड़ा)

बद् = बेशक, शाबह = समान है, बि = से-में, अल्‌वरा = प्राणियों में, मनुष्यों में, हिमारुन् = गधा।

इज्लन् = बछड़ा, जसदन् = जिस्म है, लहु = उसके लिये, ख़ुवारुन् = रँभाता हुआ।

११। शेर (बहरे कामिल)

व समूई इला हुस्नि'ल् अग़ानी।

मन्ज़ा'ल्लज़ी जस्स'ल् मसानी॥

व = और, समूइ = मेरे कान (लगे हैं), इला = पर, हुस्न = सौन्दर्य, अल् अग़ानी = संगीत के।

मन् = कौन है, ज़ा = जो, अल्लज़ी = जो कि, जस्स = बजाता है, अल् मसानी = दुहरे तार से, (तार से तार)।

१२। बैत (बहरे कामिल)

मन् ज़ा युहद्दिसुनी व मर्र'ल् ईसु।

मन्=कौन, ज़ा=जो, युहद्दिसु=बात करेगा, नी=मुझ से, व=और, मर्र = चला गया, अल् ईसु = काफिला (शब्दार्थ ऊँट)।

मा लि'ल् गरीबि सिव'ल् गरीबि अनीसु ।।

मा = नहीं है, लि = लिये, अल् गरीबि = गरीब के, परदेसी के (लिये), सिवा = सिवा, अल् गरीबि = परदेसी के (सिवा), अनीसु = मित्र।

चतुर्थ अध्याय

१। शेर (बहरे कामिल)

व'ख़ु'ल् अदावति ला यमुर्रु बिसालिहिन्।

व=और, अख़ु'ल् अदावति=(शब्दार्थ=द्वेषबन्धु) शत्रु, ला= नहीं, यमुर्र=पास से गुज़रता है, बि=से, सालिहिन्=भले (के)।

इल्ला व यल्मिज़ुहु बि कज़्ज़ाबि अशिरि ।।

इल्ला = लेकिन, व = और, यलमिज़ुहु = इलज़ाम देता है उसे, बि = से, कज़्ज़ाबिन् = झूठ का, अशिरिन् = शरीर का।

२। मिसरा

रिज़ीना मिन् नवालिक बि'रहीलि।

रिज़ीना = राज़ी है हम, मिन् = से, नवालि = बख़्शीश (से), क = तेरी, बि = से, अल् रहीलि = जाने देना।

३। 'नईक़ु ग़ुराबि'ल् बैनि।'

नईक़ु = काँव कांव, ग़ुराब = कौआ, अल्बैन = वियोग का।

४। 'इन्न अन्कर'ल् अस्वाति ल सौतु'ल् हमीरि।'
(कुरान—अध्याय २१, पद १८)

इन्न=बेशक, अन्कर=ज़्यादा बुरी, अल् अस्वात=आवाज़ों (में), ल = ज़रूर, सौत = आवाज़, अल् हमीर = गधे (की)।

५। बैत (बहरे वाफ़िर)

इज़ा नहक़'ल् ख़तीबु अबु'ल् फवारिस।

इज़ा = जब, नहक़ु = चीखता है, अलख़तीबु = उपदेशक, अबुल् फवारिस = नाम।

लहु सौतुन् यहुद्दु'स्तख़्र फारिस ।।

लहु = उसकी, सौतुन् = आवाज़ (से), यहुद्दु = गिरता है, अस्तख़्र फारिस = पर्सीपोलिस नामक नगर।

पञ्चम अध्याय

१। शेर (बहरे तवील)

सरा तैफ़ु मन् यज्लू बितल्अतिहि'द्दुजा।

सरा=चला, तैफ़ु=ख़याल, मन्=वह जो कि, यज्लू=जलवा कर रहा था, बितल्अतिहि=अपने रूप से, अल दुजा=अँधेरे को।

ख़याला युराफ़िकुनी अल'ल्लैलि हादियन् ।।

ख़याल्न् = एक विचार, युराफिकुनी = जो रफ़ीक था मेरा, अला=में, पर, अल्लैलि=रात (में), हादियन्=हिदायत करने वाला, पथप्रदर्शक।

अतानि'ल्लज़ी अह्वाहु फि'क्सि'द्दुजा।

अतानी=मेरे पास आया, अल्लज़ी=वह जो कि, अह्वाहु=मैंने चाहा जिसे, फि=में, अक्स=छाया, अल्दुजा=अँधेरे की।

फ़ क़ुल्तु लहु अह्लनो सह्लन् व मर्हबन् ।।

फ = तब, क़ुल्तु = मैंने कहा, अह्लन् व सह्लन् व मर्हबन् = स्वागत है-स्वागत है-स्वागत है।

२। बैत (बह्रे तवील)

इज़ा जेतनी फ़ी रफ़्क़तिन् लि तज़ूरनी।

इज़ा=जब, जेत=आया, नी=मेरे पास, फ़ी=में, रफ़्क़तिन् =रफ़ीक के तौर पर, मित्र भाव से, लि=लिये, तज़ूरनी=तू ज़ियारत करने मेरी।

व इन् जेत फ़ी मुब्ग़िहिन् फ़ अन्त मुहारिबू॥

व=और, इन्=यद्यपि, जेत=(तू) आया, फ़ी मुब्ग़िहिन्=प्रेम भाव से, फ=तो भी, अन्त=तू, मुहारिबु=लड़ने वाला है।

३। 'तीबु'ल् अदा व सुल्को दाख़न क'ल बद्रि इज़ा बदा।'

तीब=अच्छा, अल् अदा=रंग ढंग, व=और, सुल्को=(इख़लाक़ का ख़ास बर्ताव), क=जैसा, अल् बद्र=चन्द्रमा, इज़ा=जब, बदा = उदीयमान (हुआ)।

४। शेर (बह्रे तवील)

फ़क़द्'तु ज़मान'ल वस्लि व'ल् मरउ जाहिलुन्।

फ़क़द् तु=मैंने खो दिया, ज़मान=समय, अल् वस्ल=मिलन का, व = और, अल् मरउ = मनुष्य, जाहिलुन् = मूर्ख है।

बिक़द्रि लज़ीज़ि'ल् ऐशि क़ब्लि'ल् मसाइबि॥

बिक़द्रि = क़द्र करने में, लज़ीज़ = आनन्दप्रद, अल् ऐशि = सुख की, क़ब्ल = पूर्व, अल् मसाइबि = मुसीबतों।

५। 'अत्तमरु यानिउन् व'न्नाज़ूरु ग़ैरु मानिइन्।'

अल् तमरु = खजूर, यानिउन् = पके हैं, व = और, अल् नाज़ुरु = रखवाला, ग़ैरु मानिइन् = मना करने वाला नहीं है।

६। शेर (बह्रे तवील)

व इन् सलिम'ल् इन्सानु मिन् सूए नफ़्सिहि।

व=और, इन्=यदि, सलिम=बच गया, अल् इन्सानु=मानव, मिन् = से, सू = बुराई, नफ़्सिहि = अपने मन की।

फ़ मिन् सूए ज़न्नि'ल् मुद्दई लैस यस्लिमु॥

फ=तो (भी), मिन्=से, सू ज़न्नि=दुर्विचार, अल् मुद्दई= विरोधी के, लैस = नहीं, यस्लिमु = बचता।

७। 'या ग़ुराब'ल् बैनि! या लैत!

या =हे, ग़ुराब=कौए, अल् बैनि =वियोग के, या लैत! =ऐ काश!

बैनी व बैनक बुअद'ल् मशरिक़ैन्।'

बैनी = बीच मेरे, व = और, बैनक = बीच तेरे, बुअद = दूरी हो, अल् मशरिक़ैन् = दो पूर्वों की (पूर्व और पश्चिम की)।

८। शेर (बह्रे कामिल)

ज़मअउन् फ़ि क़ल्बी ला यकादु युसीग़ुहु।

ज़मअउन् = प्यास, फ़ि क़ल्बी = मेरे प्राणों में, ला = नहीं, यकादु = सकती है, निकट पहुँचती है, युसीग़ुहु = बुझाती है वह।

रश्फु'ज़्ज़ुलालि व लौ शरिब्तु बुहूरा॥

रश्फ = घूट, अल् ज़ुलाल = ठण्डे पानी की, व लौ = और यदि, भले ही, शरिब्तु = मैं पी जाऊँ, बुहूरा = समुद्रों को।

९। 'ज़रब ज़ैद अम्रन् कान मुतअद्दियन्।'

ज़रब=मारा, ज़ैद=ज़ैद ने, अम्रन् =अम्र को, कान=हुआ, मुतअद्दियन् = कर्त्ता।

१०। नज़्म (बह्रे तवील)

ग़ुलीतु मिनन्नहविय्यिन् यसूलु मुग़ाज़िबन्।

ग़ुलीतु =मैं मुब्तिला हूँ-सताया हुआ हूँ, मिन अल् नहविय्यिन् =वैयाकरण के द्वारा, यसूलु = जो हमला करता है, मुग़ाज़िबन् = क्रोधावेश में।

अलय्य कज़ैदिन् फ़ी मुक़ातलति अम्रिन्॥

अलय्य = मुझ पर, क = जैसे, ज़ैदिन् = ज़ैद, फ़ी = में, मुक़ातलति = टक्कर (में), अम्रिन् = अम्र की।

अला जरि जैदिन् लैस यर्फउ रासहु।

अला=पर, जरि=झुकने (पर), जैदिन्=जैद, लैस=नहीं, यर्फउ=उठाता, रासहु=सिर अपना।

व हल् यस्तकीमु'रफ्उ मिन् आमिलि'ल् जरि॥

व=और, हल्=कैसे, यस्तकीमु=कायम रह सकता है, अल् रफ्उ=उठाना, मिन्=से, आमिल=कर्त्ता, अल् जरि=झुकने वाला।

११। कल्लिमि'न्नास अला कद्रि उकूलिहिम्। (कुरान)

कल्लिम=कहो, अल् नास=लोगों (में), अला=पर, के अनुसार, कद्रि=परिमाण, उकूलिहिम्=उनकी बुद्धियों।

१२। शेर (बहरे कामिल)

इल्लम् अमुत यौम'ल् वदाइ तअस्सुफन्।

इन्=यदि, लम्=नहीं, अमुत=मर जाऊँ, यौम=दिन, अल् वदाइ=विदा के, तअस्सुफन्=अफसोस से।

ला तह्सिवूनी फि'ल् मवद्दति मुन्सिफन्॥

ला=मत, तह्सिवूनी=समझ मुझे, फि=में, अल् मवद्दति=प्रेम (में), मुन्सिफन्=सच्चा।

१३। शेर (बहरे तवील)

व रुब्ब सदीकिन् लामनी फी विदादिहा।

व=और, रुब्ब=अक्सर, सदीकिन्=दोस्तों (ने), लामनी=मलामत की मेरी, फी=में, विदादिहा=उसके प्रेम (के कारण)

अलम् यरहा यौमन् फ यूज़िहु ली उज्री॥

अ=हाय! लम्=नहीं, यरहा=देखा उसे, यौमन्=किसी दिन, फ=अन्यथा, यूज़िहु=समझ लेते, ली=मेरे लिये, उज्री=मेरा उज्र।

१४। 'फ़ ज़ालिकुन्न'ल्लज़ी लुम् तुन्ननी फ़ीहि।'

फ=तो, ज़ालिकुन्न=यह है, अल्लज़ी=वह जो कि, लुम्तुन=मलामत की, नी=मुझको, फी हि=उस में।

१५। शेर (बहरे हज़ज्)

मा मर्र मिन् ज़िक्रि'ल् हिमा विमिस्मई।

मा=जो कि, मर्र=गुज़रा, मिन्=से, ज़िक्र=उल्लेख, अल् हिमा=हरियाली का, वि मिस्मई=मेरे कानों से।

लौ समिअत् वुर्कु'ल् हिमा साहत् मई॥

लौ=यदि, समिअत=सुनती, वुर्कु=पत्तियाँ, अल् हिमा=हरियाली, साहत्=रोती, मई=मेरे साथ।

या मअशर'ल् खुल्लानि कूलू लि'ल् मुआ।

या=हे, मअशर=मण्डल, अल् खुल्लानि=मित्रो के, कूलू=कहो, लि=के लिये, से, अल्मुआ=स्वस्थ (प्रेम रोग से स्वस्थ), उदासीन।

फी लस्त तद्री मा विक़ल्वि'ल् मौजई॥

फी=में, लस्त=तू नही, तद्री=जानता, मा=जो कि, वि=में से, कल्व=हृदय, मौजई=दर्द वाला (मेरा)।

१६। 'जर्बुल् हवीवि ज़वीवुन्।'

जर्व=थप्पड़-चोट, अल् हवीवि=प्यारे की, ज़वीवुन्=एक किशमिश (है)।

१७। 'ला युग्लकु वावु'त्तौवति अल'ल् इवादि

ला=नहीं, युग़लकु=बन्द किया जायगा, वाव=द्वार, अल् तौवति=तौवा का, अल'ल् इवादि=(अब्द का ब वचन)=सेवको पर।

हत्ता तत्लउ'श्शम्सु मिम् मग्रिविहा।

हत्ता=जब तक कि, तत्लउ=निकलेगा, अल् शम्सु=सूर्य, मिन्=मे से, मग्रिविहा=उसके अस्त स्थान (पश्चिम) से।

अस्तग्फ़िरुक'ल्लाहुम्म—व अतूवु इलैक।'

अस्तग्फिरु=मै क्षमा चाहता हूँ, क=तुझ से, अल्लाहुम्म=हे प्रभु!, व=और, अतूवु=तौवा करता हूँ, इलैक=तेरी तरफ।

१८। क़ाल'ल्लाहु तआला—'फ लम् यकु यन्फउहुम्

ईमानुहुम् लम्मा रऔ बासना।'

क़ाल'ल्लाहु तआला=कहा परम प्रभु ने, फ=तो, लम्=नही, यकु=हुआ, यन्फउ=नफा देने वाला, हुम्=उनको। ईमानुहुम्=उनका ईमान, लम्मा=जब, रऔ=देखा, बास=दण्ड, ना=हमारा।

षष्ठ अध्याय

१। शेर (बहरे सरी)

लम्मा रअत् बैन यदे बअ्लिहा।
शैयन् क'रखा शफति'स्साइमि॥
तक्लु हाजा मअहु मय्यिति।
व इन्नम'रुक़्यतु लि'न्नाइमि॥

लम्मा=जब, रअत् (उस स्त्री ने) देखा, बैन यदे=दोना हाथो के बीच-सामने, बअ्लिहा=अपने पति के। शैयन्=कोई चीज, क=जैसे, अरखा=सुस्त, शफति=होठ, अल् साइमि=उपवासी-लघित के। तक्लु=वह बोली, हाजा=यह, मअहु=उसके साथ, मय्यिति=मुर्दा (है)। व=और, इन्नमा=बेशक, अल् रुक़्यतु=मन्त्र, उपचार, लि=लिये, अल् नाइमि=सोने वाले (के लिये)।

२। शेर (बहरे कामिल)

मा ज'म्मिबा व'श्शैबु ग़य्यरनी।
व कफा बितग़्यीरि'ज्जमानि नजीरा॥

मा ज़ा=वहाँ, अल् सिबा=बचपन, व=और, अल्शैबु=सफेदी-पलित (ने), गय्यर=बदल दिया, नी=मुझे। व=और, कफा=काफी है, बि=से, तग़्यीरि=परिवर्त्तन, अल् ज़मानि=समय, नजीरन्=शिक्षक।

३। *तुर्किया (बहरे खफीफ)

पीरे हफ्ता सला जने मुकना।
कूरे मुक़री बिख्वानबी चश् रूश्॥

पीर=वृद्ध, हफ्ता सला=सत्तर साल का, जने=जवानी का, मुकना=आचरण करता है। कूरे मुकरी=तू जन्मान्ध है, बिख्वानबी=सोजा, चश्=चखकर, चूमकर, रूश्=उसका मुख।

सप्तम अध्याय

१। 'अम्बतहुमु'ल्लाहु नबातन् हसनन्।'

अम्बत=उगाये-बढ़ाये, हुम=उनको, अल्लाहु=परमात्म नबातन्=वृक्ष, हसनन्=सुन्दर।

२। 'बल्लिग् मा अलैक फ इल्लम् यक्बलू

फ मा अलैक।'

(तुलनीय—क़ुरान—अध्याय ३, पद ३२वाँ)

बल्लिग्=पहुँचा दे, मा=जो कुछ, अलैक=तुझ पर (कर्तव्य है) फ=तो, इन्+लम्=यदि नही, यक्बलू=कबूल करें। फ=तो, मा=नही (है), अलैक=तुझ पर (आक्षेप)।

३। 'या बुनय्य! इन्नक मसऊलुन् यौम'ल् क़ियामति

मा ज़ा क्तसब्त? व ला युसालु—

बिमनि'क्तसब्त?'

या बुनय्य=हे पुत्र, इन्नक=बेशक तू, मसऊलुन्=पूछा गय (होगा), यौम=दिन, अल क़ियामति=कयामत के। मा ज़ा=जो कुछ, इक्तसब्त=तू ने इक्तसाब (आचरण) किया व=और, ला=नही, युसालु=कहा जायगा। बि मनि=किस से, इक्तसब्त=तेरी उत्पत्ति है।

---

* यह पद अरबी का नहीं है। यहाँ देने का अभिप्राय यही है कि यह पद फारसी से भिन्न है। तुर्किया का अर्थ गँवारू बोली है कहावत है कि गँवारो से गँवारो की बोली में और शिष्टजनो से शिष्टजनो की भाषा में बोलना चाहिये। (तुर्की व तुर्की फ़ारसी : फ़ारसी)।

४। 'आदा उदुव्विक नपसुक'ल्लती वैन जम्बैक।'

आदा = घोर शत्रु, उदुव्विक = तेरा शत्रु, नपसुक = तेरा मन है, अल्लती = वह जो कि, वैन = बीच में, जम्बैक = तेरे दोनों पहलुओं के।

५। 'अऊज़ुबिल्लाहि मिन'ल् फक्रि'ल् मुकिब्वि व जवारि मन् ला युहिव्बु।'

अऊज़ु = मैं शरण लेता हूँ, वि = से, अल्लाहि = परमात्मा (से), मिन् = से, अल् फक्रि = दरिद्रता, अल् मुकिब्वि = मुंह के बल गिराने वाली, व = और, जवार = पडोसी, मन् = जो कि, ला = नहीं है, युहिव्बु = प्रेमालु।

६। 'अल फक्रु सवाद'ल वज्हि फि'द्दारैन।'
(कुरान—अध्याय ३७, पद ४०)

अल् फक्रु = दरिद्रता, सवादि = कालापन (है), अल् वजहि = चेहरे का, फि = में, अल् दारैन = दोनों लोकों (में)।

७। 'अलैहि अफज़लु'स्सलवाति व अक्मलु'त्तहीयाति।'

अलैहि = उस पर, अफज़लु = श्रेष्ठ, अल् सलवात = आशीष् (हों), व = और, अक्मलु = सर्वोत्तम, अल् तहीयात = प्रणाम (मिलें)।

८। 'अल् फक्रु फख़्री।'

अल् फक्रु = निर्धनता, फख़्री = मेरा गौरव (है)।

९। 'काद'ल फक्रु अन् यकून कुफ़्रन्।'

काद = निकट है, अल् फक्रु = दरिद्रता, अन् = यह कि, यकून = हो जाय, कुफ़्रन् = नास्तिकता से।

१०। 'उलाइक लहुम् रिज़्कुम् मालूम।'
(कुरान—अध्याय ३७, पद ४०)

उलाइक = वही लोग, लहुम् = उनके लिये, रिज़्कुन् = जीविका, मालूमुन् = परिज्ञात, निश्चित (है)।

११। 'ला रह्वानिय्यत फि'ल् इस्लाम।'

ला = नहीं (है), रह्वानिय्यत = ब्रह्मचर्य (का विधान), फि = में, अल् इस्लाम = इस्लाम में।

१२। शेर (वहरे वसीत)

मन् कान वैन यदैहि म'श्तहा रुतवन्।

मन् = वह जो, कान = (रखता) है, वैन = बीच में, में, यदैहि = अपने (दोनों) हाथों (में), मा = वह जो, इश्तहा = इष्ट, अभीप्सित, रुतवन् = पिण्डखजूर।

युग्नीहि ज़ालिक अन् रज्मि'ल् अनाकीदि॥

युग्नी = वेपरवा करता है, निरपेक्ष बनाता है, हि = उसे, ज़ालिक = यह, अन् = से, रज्म = पत्थर मारना, अल् अनाकीदि = वृन्त लग्न फलों, गुच्छों (पर)।

१३। 'ल इल्लम् तन्तहि, ल अर्जुमन्नक।'
(क़ुरान—अध्याय १९, पद ४० का अंश)

ल = निश्चय ही, इन्+लम् = यदि नहीं, तन्तहि = मानेगा (तू), ल = निश्चय, अर्जुमन्न = पत्थर मारूँगा, क = तुझे।

१४। 'व मन् यतवक्कलु अल'ल्लाहि फ हुव हस्बुहु।'
(कुरान)

व = और, मन् = जो, यतवक्कलु = अपेक्षा-तवक्को करता है, अल्लाहि = परमात्मा से, फ = तो, हुव = वह (प्रभु), हस्बुहु = काफी है उसके लिये।

१५। शेर (वहरे वसीत)

व राकिवातिन् नयाकन् फी हवादिजहा।

व = और, राकिवातिन् = सवारिनें, नयाकन् = ऊँटनियों पर, फी = में, हवादिजहा = अपने हौदों (में)।

लम् यल्तफित्न इला मन् गास फि'ल् कुसुवि॥

लम् = नहीं, यल्तफित्न = ध्यान देती है, इला = की ओर, मन् = जो कि, गास = डूबता है, फी = में, अल् कुसुवि = रेत में।

अष्टम अध्याय

१। 'अह्सिन् कमा अह्सन'ल्लाहु इलैक'

अहसिन = अहसानकर, कमा = जैसा कि, अह्सन = अहसान किया, अल्लाहु = परमात्मा ने, इलैक = तुझ पर।

२। 'जुद् व ला तम्नुन् लि अन्न'ल् फ़ायदत इलैक आयदतुन्।'

जुद = दे, व = और, ला = मत, तम्नुन् = अहसान जता, लि = लिये, अन्न = यह, अल् फ़ायदत = लाभ, इलैक = तुझ पर, आयदतुन् = आता है।

३। 'युह्दा बिहि व हुव ला यह्तदी।'

युह्दा = हिदायत की जाती है, बिहि = उससे, व = और, हुव = वह, ला = नही, यह्तदी = हिदायत पाता है।

४। 'आख़िरु'ल् हीयलि'स्सैफु।'

आख़िर = अन्तिम, अल् हीयलि = उपाय, अल्सैफु = तलवार (है)।

५। 'इह्द'ल् हुस्नैन।'

इह्दा = दो में से एक, अल् हुस्नैन = (दो) अच्छी चीजों (में से)।

६। शेर (तवील)

व क़त्रुन् अला क़त्रिन् इज़'त्तफ़क़त नह्रु।

व = और, क़त्रन् = बूँद, अला क़त्रिन् = बूँद पर, इज़ा = जब, इत्तफ़ाक़ = संयोग (हुआ), नह्रु = नदी।

व नह्रुन् इला नह्रिन् इज़'जतमअत बह्रु॥

व = और, नह्रुन् = नदी, इला नह्रिन् = नदी पर, इज़ा = जब, इज्तमअत = एकत्र हुआ, बह्रु = समुद्र।

७। 'अ लम् आहद् इलैकुम्—या बनी आदम!

अ = क्या, लम् = नही, आहद् = वचन लिया मैने, इलैकुम् = तुम लोगों से, या बनी आदम — हे मनुष्य।

अल्ला तअ्बुदु'श्शैतान इन्नहु लकुम् अदूवुम् मुबीन्।'

अन् + ला = यह + नही (कि मत), तअ्बुदू = इबादत करो, अल् शैतान = शैतान की, इन्नहु = बेशक वह, लकुम् = तुम लोगों का, अदूवुन् = शत्रु है, मुबीन = प्रकट।

८। 'क़ाल—बल् सव्वलत् लकुम् अन्फ़ुसुकुम् अम्रा।

क़ाल = कहा, बल् = बल्कि, सव्वलत् = बहकाया, लकुम् = तुम्हें, अन्फ़ुसुकुम् = तुम्हारे चित्तों ने, अम्रन् = काम से।

फ सब्रुन् जमील।'

फ = सो, सब्रुन् = सन्तोष, जमील = ठीक है।

९। 'क़ाल'ल्लाहु तआला—व ल नुज़ीक़न्नहुम् मिन'ल् अज़ाबि'ल् अद्ना दून'ल् अज़ाबि'ल् अक्बरि।
(कुरान—३२वाँ अध्याय, पद २१)

क़ाल = कहा, अल्लाहु तआला = परब्रह्म ने, व = और, ल = बेशक, नुज़ीक़न्न = चखायेंगे हम, हुम् = उन्हें, मिन् = में, अल् अज़ाब = दण्ड, अल् अद्ना = छोटे दण्ड (में से), दून = परलोक मे, अल् अज़ाब = दण्ड, अल् अक्बरि = महादण्ड।

१०। 'कुल्लु इनाइन् यतरश्शहु बिमा फ़ीहि।'

कुल्लु = सारे, इनाइन् = बर्तन, यतरश्शहु = टपकाते हैं उसे, बिमा = जो कि, फ़ीहि = उसमें (होता है)।

११। 'अल् हम्दु लिल्लाहि रब्बि'ल् आलमीन्।'

अल् हम्दु = सारी तारीफ़, लि = लिये, अल्लाहु = परमात्मा (के लिये), रब्ब = स्वामी, अल् आलमीन् = आलम वालों का।

१२। शेर (वहरे वसीत)

या नाज़िरा फीहि सल् वि'ल्लाहि मर्हमतन्।	या=हे, नाज़िरा=दर्शक (पाठक), फीहि=इसमें, सल्=माँग, वि=से, अल्लाहि=प्रभु (से), मर्हमतन्=कृपा।
अलल् मुसन्निफि व'स्तग्फिर् लि साहिविहि॥	अला=पर, अल् मुसन्निफि=लेखक (पर), व=और, अस्तग्फिर्=क्षमा, लि=लिये, साहिविहि=उसके स्वामी।
व'त्लुव् लि नफ्सिक मिन् खैरिन तुरीदुविहा।	व=और, अत्लुव्=माग, लि=लिये, नफ्सिक=अपनी आत्मा, मिन् खैरिन्=कल्याण में से, तुरीदुविहा=जो तू इरादा करे।
मिम् वादि ज़ालिक गुफ्रानल् लि कातिविहि॥	मिन्=से, वादि=वाद, ज़ालिक=इस (के वाद), गुफ्रानन्=क्षमा, लि=लिये, कातिविहि=उसके कातिव (के लिये)।
'तम्म'ल् कितावु विऔनि'ल् मलिकि'ल् वह्हाव।'	तम्म=समाप्त हुई, अल् कितावु=पुस्तक, विऔनि=सहायता से, अल् मलिक=ईश्वर (की), अल् वह्हाव=महान् दाता।

प्रकाशकीय वक्तव्य

प्रस्तुत पुस्तक निखिल भारतीय भाषापीठ (Indian Institute of Languages) की क्लासिकल पुस्तक योजना के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही है।

अगले पाँच वर्षो मे हम विश्व की समस्त प्रमुख भाषाओ के हिन्दी से—एव हिन्दी में, मध्यमाकार शब्दकोष (पृष्ठसख्या लगभग १००० प्रतिकोष) छाप देगे। इस समय फारसी, फ्रेंच तथा जर्मन भाषा के कोषो पर काम चल रहा है। इनके साथ ही हिन्दी से—एव हिन्दी में, भारतीय भाषाओ के कोषो की रूपरेखा बनाने का काम हाथ मे है। इन भाषाओ की पाठ्य पुस्तकें भी हिन्दी के माध्यम से अगले वर्ष के अन्त तक प्रकाशित हो जायेंगी।

हिन्दी को विश्व भाषाओ मे से एक बनाने का काम इतना बडा है और उसकी पात्रता प्राप्त करने का लक्ष्य इतना कठिन है कि यह काम केवल सविधान की पुस्तक मे लिखकर या केवल सरकार पर छोडकर निश्चिन्त नही हुआ जा सकता। इसके लिये समस्त भारत की भाषाओ के सगठनो, अकादमियो, प्रबुद्ध मनीषियो, केन्द्रीय एव प्रान्तीय सरकारो का समवेत सहयोग आवश्यक है।

एतदर्थ निखिल भारतीय भाषापीठ (Indian Institute of Languages), निम्नलिखित उद्देश्यो की सिद्धि के लिये आप सबके सहयोग की अभिलाषी है —

(क) विश्व की समस्त भाषाओ का हिन्दी के माध्यम मे परिचय कराना और देश में उन भाषाओ के पठन-पाठन एव परीक्षा का आयोजन करना।

(ख) समस्त भाषाओ के हिन्दी शब्दकोष तैयार करना, एव विदेशी भाषा ज्ञान सम्बन्धी पाठ्य पुस्तको का लेखन, सम्पादन तथा प्रकाशन करना।

(ग) भाषाओ के अनुसन्धान एव शोध कार्य की व्यवस्था करना एव तत् सम्बन्धी पत्रिका का प्रकाशन करना।

(घ) विभिन्न भाषाओ के विद्वानो तथा लेखको को सम्मानित करना।

(ङ) विदेशो मे भारतीय भाषाओं के पठन-पाठन आदि की व्यवस्था करना।

(च) विश्व की समस्त उत्कृष्ट कृतियो के भारतीय भाषाओ में अनुवाद की व्यवस्था करना तथा श्रेष्ठ भारतीय साहित्य का विश्व की अन्य भाषाओ में रूपान्तर करना।

(छ) विभिन्न प्रदेशो में अन्तर-भारतीय भाषाओ के शिक्षण की व्यवस्था करना।

(ज) स्कूल कालिजो मे ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न शाखाओं की टेकनिकल पुस्तको का मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा देने के उद्देश्य से अग्रेजी आदि से अनुवाद करना और प्रकाशित करना।

(झ) अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय राष्ट्रभाषा हिन्दी को मान्यता दिलवाने के लिये प्रयत्न करना।

(ञ) देश की भावनात्मक एकता और शक्ति बढाने वाले कार्यो को प्रोत्साहित करना।

(ट) भारत में स्थित दूसरी समानशील सस्थाओ को सहयोग देना तथा सहयोग प्राप्त करना, और शिक्षा तथा सस्कृति सम्बन्धी राष्ट्रीय एव अन्तर्राष्ट्रीय सगठनो के साथ सम्बन्ध स्थापित करना।

(ठ) सेना और विदेश विभाग के लिये दुभाषिये तैयार करना।

इन उद्देश्यो की सिद्धि के लिये पुन हमें आपके सहयोग की आवश्यकता है।

अर्जुन अरोडा
(चेयरमैन)
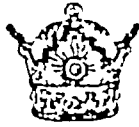
تهران - ۳ آبان ۱۳۵

ترجمه گلستان سعدی بزبان سانسکریت مایهٔ کمال خوشوقتی است،
زیرا این زبانی است که از دیرباز با ایران پیوند داشته است. در گذشته
ترجمه‌های پرارزشی از آثار کلاسیک ومعروف سانسکریت از قبیل اوپانیشادها،
پنجاتنترا وگیتا وغیره به فارسی صورت گرفته است، وحق بود که یکی از
بزرگترین آثار کلاسیک زبان فارسی چون گلستان سعدی بنوبهٔ خود به
سانسکریت ترجمه شود. خبر آغاز ترجمه شاهنامه فردوسی بدین زبان توسط
آقای آچاریه دهرمیندرنات طبعاً این خوشوقتی‌مارا بیشتر میکند.

من از جانب جامعهٔ ادب وفرهنگ ایران این دو کار سترگ را به دوست
دانشمند هندی خود تبریک میگویم و توفیق روزافزون ایشان را در فعالیتهای
پرارزش فرهنگی و ادبی آرزو میکنم.

شجاع الدین شفا

मरकज़े उमूरे फरहगी व मतबूआती
दरबारे शाहन्शाही

तेहरान—३ आबान, १३५०

तर्जुमाए गुलिस्ताने सादी व जुबाने सांसकरीत मायाए कमाले खुशवक्ती अस्त, जीरा ईं जुबाने अस्त कि अज देर बाज बा ईरान पैवन्द दाश्ता अस्त। दर गुज़श्ता तर्जुमाहाये पुर अर्ज़िश् अज़ आसारे क्लासिक व मारूफे सान्सकरीत अज कबील उपनिषदहा, पचातन्त्रा व गीता वगैरा ब फारसी सूरत गिरिफ्ता अस्त। व हक बुवद कि यके अज़ बुजुर्गतरीन आसारे क्लासीके जुबाने फारसी चूं गुलिस्ताने सादी ब नौबते खुद ब सान्सकरीत तर्जुमा शवद। खबरे आगाज़े शाहनामाए फिरदौसी बदी जुबान तवस्सुते आकाए आचार्या धर्मेन्द्रनाथ नवअन ई खुशवक्तीए मारा बेशतर मी कुनद।

मन अज जानिबे जामियाए अदब व फरहगे ईरान ईं दू कारे बुजुर्ग रा ब दोस्ते दानिशमन्दे हिन्दी ए खुद तबरीक मी गोयम् व तौफीके रोज़ अफ़ज़ूं ईशान रा दर फआलीतहाए पुरअर्ज़िशे फरहगी व अदबी आरज़ू मीकुनम।

शुजाउद्दीन शफा

साहित्य एव सास्कृतिक केन्द्र कार्यालय,
दरबारे शाहन्शाही, ईरान

तेहरान—३ आबान, १३५०

सादी के गुलिस्तान का सस्कृत भाषा मे अनुवाद सौभाग्य की पूर्णता का घन है। क्यो कि यह वह भाषा है जो कि प्राचीनकाल से ईरान से सम्बन्धित है। पहले समय में सस्कृत के प्राचीन उपनिषदो, पचतन्त्र तथा गीता आदि के अनेक बहुमूल्य अनुवाद फारसी भाषा में रूपान्तरित हुए है। और उचित ही था कि सादी के गुलिस्तान जैसे फारसी भाषा के श्रेष्ठ क्लासिक साहित्य का स्वत ही सस्कृत में अनुवाद होता। आचार्य धर्मेन्द्रनाथ द्वारा इस भाषा में फिरदौसी के शाहनामा को प्रारम्भ करने का समाचार स्वभावत हमारे इस सौभाग्य को बढ़ाता है।

मैं ईरान के सस्कृति और साहित्य मन्त्रालय की ओर से इन दो महान् कार्यों के लिये, अपने भारतीय विद्वान् मित्र का अभिनन्दन करता हूँ और उनके द्वारा साहित्य और सस्कृति की श्रीवृद्धि की कामना करता हूँ।

शुजाउद्दीन शफा

گلستانِ سعدی

مقدمهٔ گلستان

شیخ مصلح الدین سعدی سیراری

بسم الله الرحمٰن الرحیم

ست حدارا عر و حل! که طاعتش موحب قربتست - و نشکر اندرش مرید نعمت * هر نفسی که فرو میرود ممد حیاتست - و چون برمی آید مفرح ذات - پس در هر نفسی دو نعمت موحودست - و بهر نعمتی شکری واحب *

بیت

ار دست و ربان که بر آید

کر عهدهٔ شکرش بدر آید؟

قَوْلُهُ تعالی - اعْمَلُوا - آلَ دَاوُدَ شُكْرًا - وقَلِيلٌ مِن عِبَادِيَ الشَّكُور *

قطعه

بده همان به که ر تقصیر حویش

عـذر بدرگاه حدا آورد

ورنه سراوار حداوندیش

کس نتواند که بجا آورد *

باران رحمت بیحسابش همه را برا رسیده - و حوان الوان نعمت بیدریغش همه حا کشیده - و پردهٔ ناموس بندگان نگناهی فاحش ندرد - و وطیفهٔ روری حواران نحطای منکر نبرد *

قطعه

ای کریمی! که ار حرانهٔ عیب

گبر و ترسا وطیفه حور داری!

دوستان را کجا کنی محروم

تو - که با دشمنان نطر داری؟

मुक़द्दमए गुलिस्तान

शेख मुस्लिहुद्दीन सादी शीराज़ी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानुर्रहीम

मिन्नत खुदाय रा अज्ज़ व जल्ल कि ताअतश् मूजिबे कुरबत'स्त। व शुक्र अन्दरश् मज़ीद निअमत। हर नफ़मे कि फ़रो मीरवद मुमिद्दे हयात'स्त, व चूं बर मी आयद मुफ़र्रिहे ज़ात। पस दर हर नफ़मे दू निअमत मौजूद'स्त। व व हर निअमते शुक्रे वाजिब।

बैत (बहरे हज़ज)

अज़ दस्तो ज़ुबाने कि बर् आयद।

कज़ उहदए शुक्रश् बदर् आयद॥

कौल हु तआला—'एमलू आले दाऊद शुक्रन् व क़लीलुम् मिन् इबादी अ'श्शकूर।'

क़ता (बहरे सरी)

बन्दा हमां बिह् कि ज़ि तक़सीरे खेश।

उज्र ब दरगाहे खुदा आवरद॥

वरना सज़ावारे खुदावन्दीयश्।

कस न तवानद कि बजा आवरद॥

बाराने रहमते बेहिसाबश् हमारा फ़रा रसीदा व ख्वाने अलवाने निअमते बेदिरेग़श् हमा जा कशीदा। व पर्दाए नामूसे बन्दगान ब गुनाहे फ़ाहिश न दरद। व वज़ीफ़ए रोज़ी ख्वारान् ब ख़ताय मुनकिर न बुरद।

क़ता (बहरे ख़फ़ीफ़)

ऐ करीमे! कि अज़ ख़ज़ानए ग़ैब।

गब्रो तरसा वज़ीफ़ाख़ुर दारी॥

दोस्तां रा कुजा कुनी महरूम।

तो कि बा दुश्मनां नज़रदारी॥

सादी के गुलिस्तान की भूमिका

दयालु तथा कृपालु प्रभु के नाम से

प्रशंसा है प्रभु की जो प्रतापी और भव्य है कि उसकी उपासना उसकी निकटता का कारण है। और उसका धन्यवाद महान् वैभव का। हर साँस जो कि नीचे जाती है वह जीवन की सहायक है और जब (साँस) ऊपर आती है वह जीवन की पोषक है। अत हर साँस में उसकी दो कृपाएँ विद्यमान हैं। और हर कृपा के लिये धन्यवाद उचित है।

बैत

हाथ और वाणी से वैसा सम्भव हो सकता है।
कि उसकी कृपाओं का धन्यवाद कर सके॥

परब्रह्म का वचन है—
'अमल कर, हे दाऊद के वंश! शुक्र का, और थोड़े ही मेरे भक्तों में से कृतज्ञ हैं।'

क़ता

दास वही अच्छा है जो अपने पापों के लिये।
परमात्मा की दरगाह में क्षमा मांगता है॥
अन्यथा उसकी प्रभुता के योग्य प्रार्थना।
बर पाना किसी की सामर्थ्य में नहीं है॥

उसकी अपरिमेय कृपा की वृष्टि हर जगह होती है। और उसकी निःसंकोच उदारता का बहुविध भोजन पात्र सब जगह बिछा हुआ है। और वह अपने दासों की लज्जा का पर्दा पापों से नहीं उघाड़ता। वह जीविका भोजियों को उनके पापों के कारण भोजन से वंचित नहीं करता।

क़ता

हे दयालु! तू जो कि अदृश्य कोष से।
गब्र (पारसी) और नास्तिक को भी आहार देता है॥
दोस्तों को तू कहाँ वञ्चित रखेगा!
तू जो कि द्वेषियों पर भी कृपा रखता है॥

सादिन पुष्पलोकस्य भूमिका

भगवतो नाम स्मरन्दयालोः कृपालोश्च

स्तुत्यः स प्रभुर्भव्यः प्रतापी च तस्योपासना हि नाम तस्य सामीप्य-हेतुस्तस्य कृतज्ञत्वं च महद्वैभवकारणमिति। यो वायुर्निश्वासेन गृह्यते स प्राणधारणे सहायको यश्चोच्छ्वासमार्गेण वहिर्निष्पद्यते स प्राणपोषक इति। अत एकैकश्वासे द्वौ द्वावुपकारौ स्तः तथा चैकैकोप-काराय कृतज्ञत्वं हि साम्प्रतम्।

श्लोक

को मनुष्यो हि पाणिभ्यां वाचा वा प्रभवेत् किल।
यः कृपां स्वामिनस्तु तस्य शक्नुयाद्धि जगत्पते॥ १॥

परब्रह्मोवाच—
'हे दाऊद वंश! कृतज्ञश्चर। अल्पीयांसो हि मद्भक्ताः कृतज्ञाः।'

पदम्

भक्तः स वै वरः यश्चागसं स्वस्य निवेदयेत्।
प्रार्थयेत क्षमां नित्यं विदग्धस्य स्वामिनं प्रति॥ २॥
परमेशानुरूपाञ्च पूजनस्य च पात्रताम्।
न लब्धुं जातु शक्नोति नृजातः कोऽपि कुत्रचित्॥ ३॥

तस्यापरिमेयकृपावृष्टिः सर्वत्र भवति। तस्य चाजस्रमुदारं विविध भोजनपात्रं सर्वत्र विस्तारितम्। तथा च स्वस्य दासानां लज्जापटच्छदं स नोद्घाटयति। न च जीविकाभुजामपराधेन तान् भाग्यवञ्चितान् विदधाति।

पदम्

दयासिन्धो! प्रभो! कोषाददृश्यात्खलु यच्छदा।
नास्तिकेभ्योऽग्निदेवेभ्यो दत्से भोज्यमहर्निशम्॥ ४॥
कथं त्वं निजमित्राणि वञ्चितानि करिष्यसि।
द्विषतोऽपि च यो भर्त्ता दयादृष्ट्यैव सर्वदा॥ ५॥

فراش باد صبارا گفت - تا فرش زمردین بگسترد - و دایهٔ ابر بهاری را فرمود - تا بنات نبات را در مهد زمین بپرورد - و درختان را بخلعت نوروزی قبای استبرق در بر گرفته و اطفال شاخ را بقدوم موسم بهاری کلاه شکوفه بر سر نهاده - و عصارهٔ تاکی بقدرتش از شهد فائق شده - و تخم خرما بیمن تربیتش نخل باسق گشته *

قطعه

ابر و باد و مه و خورشید و فلک در کارند
تا تو نانی بکف آری - و بغفلت نخوری
همه از بهر تو سر گشته و فرمان بردار
شرط انصاف نباشد که تو فرمان نبری

در خبرست از سرور کائنات و مفخر موجودات و رحمت عالمیان و صفوت آدمیان و تتمهٔ دور زمان احمد مجتبی محمد مصطفی صلی الله علیه و سلم *

بیت

شفیعٌ مُطاعٌ نبیٌّ کریمٌ
قسیمٌ جسیمٌ نسیمٌ وسیمٌ

بیت

چه غم دیوار امت را که باشد چون تو پشتیبان؟
چه باک از موج بحر آن را که باشد نوح کشتیبان؟

شعر

بَلَغَ العُلیٰ بِکَمالِه
کَشَفَ الدُّجیٰ بِجَمالِه
حَسُنَتْ جَمیعُ خِصالِه
صَلُّوا عَلَیهِ و آلِه

که هر گاه که یکی از بندگان گنهگار پریشان روزگار دست انابت بامید اجابت بدرگاه حق جل و علا بردارد -

फ़र्राशे बादे सबा रा गुफ़्त ता फ़र्शे ज़ुमुर्रुदीन बिगुस्तरद। व दायाए अब्रे बहारे रा फ़रमूद ता बनाते नबात रा दर महदे ज़मीन बिपरवरद वो दरख़्तां रा ब ख़िलअते नौरोज़ी क़बाए इस्तब्रक़ दर बर गिरिफ़्ता। व अतफ़ाले शाख़ रा ब क़ुदूमे मौसिमे बहारी कुलाहे शगूफ़ा बर सर निहादा। व उसारए ताकी ब कुद्‌रतश् अज़ शहद् फायक़ शुदा। व तुख़्मे ख़ुर्मा ब युम्ने तरबियतश् नख़्ले बासिक़ गश्ता।

क़ता (बहरे रमल)

अब्रो बादो महो ख़ुरशीदो फ़लक दर कारन्द।
ता तो नाने ब कफ़ आरी व ब ग़फ़लत न ख़ुरी।।
हमा अज़ बहरे तो सर गश्ता ओ फ़रमाँ बरदार।
शर्ते इन्साफ़ न बाशद कि तो फ़रमाँ न बुरी।।

दर ख़बर'स्त अज़ सरवरे कायनात व मफ़ख़रे मौजूदात व रहमते आलमियान व सफ़वते आदमियान व ततिम्मए दौरे ज़माँ अहमद मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल'ल्लाहु अलैहि व सल्लम्।

बैत (बहरे मुतक़ारिब)

शफ़ीउन् मुताउन् नबीयुन् करीम।
क़सीमुन् जसीमुन् नसीमुन् वसीम।।

बैत (बहरे हज़ज्)

चि ग़म दीवारे उम्मत रा कि बाशद चू तो पुश्ती बाँ।
चि बाक'ज़ मौजे बहर आँरा कि बाशद नूह कश्ती बाँ।।

शेर (बहरे कामिल)

बलग'ल् उला बि कमालिहि।
कशफ़'द्दुजा बि जमालिहि।।
हसुनत जमीउ ख़िसालिहि।
सल्लू अलैहि व आलिहि।।

कि हरगाह कि यके अज़ बन्दगाने गुनहगार, परेशान रोज़गार दस्ते इनाबत ब उम्मीदे इजाबत ब दरगाहे हक़ जल्ल व अला बर दारद,

उसने प्रभात पवन रूपी फर्राश से कहा कि पन्ने का फर्श बिछाओ। और वासन्ती मेघमालारूपी धाय को आदेश दिया कि वनस्पति कन्याओं को धरती के हिंडोले में पाले, और वृक्षों का, नववर्ष की खिलअत के रूप में रेशमी परिधान से, वक्ष ढक दिया। और शाखा शिशुओं को मधुऋतु के अवतरण के उपलक्ष्य में कलियों की टोपी सिर पर पहना दी। और अंगूर के रस को अपने प्रभाव से शहद से भी अधिक श्रेष्ठ बनाया। और खजूर की गुठली को अपने पोषण की आशीष् से विशाल खजूर वृक्ष बना दिया।

कता

मेघ, वायु, चन्द्रमा, सूर्य, आकाश कार्यलग्न हैं।
ताकि तू रोटी हस्तगत कर सके, और गफलत से न खाये॥
ये सब तेरे ही उद्देश्य से घूम रहे हैं और आज्ञानुवर्ती हैं।
यह न्यायोचित नहीं है कि तू (प्रभु का) आज्ञानुवर्ती न हो॥

हदीस में कहा गया है कि सृष्टि के स्वामी और विद्यमानों के गौरव, सांसारिकों के लिये दयास्वरूप और मनुष्यों में पवित्र, कालचक्र की पूर्णता के प्रतीक अहमद मुज्तबा (चुने हुए), मुहम्मद मुस्तफा (चुने हुए) उन पर परमात्मा की शान्ति और स्वस्ति हो।

बैत

सिफारिश करने वाले, सम्मतादेश, देवदूत, दयालु।
दाता, विशाल, उच्च तथा दिव्य-चिह्नयुक्त॥

बैत

अनुयायियों की दीवार को क्या चिन्ता है जब आप उसकी पीठ पर हैं।
उसको सागर की लहरों से क्या भय जिसका कर्णधार नूह (मनु) है॥

शेर

पहुँचे महानता पर अपने कमाल से।
खोला अन्धकार को अपने तेज से॥
अच्छी हैं समस्त उनकी खूबियाँ।
शान्ति माँगो उन पर और उनके परिवार पर॥

कि जब कभी कोई पापी और दुर्दशाग्रस्त दास पश्चात्तापपूर्ण हाथों को क्षमा की मजूरी की आशा से परब्रह्म के दरबार में उठाता है, महान्

स प्रभातपवनं पवनमुक्तवान्—'हरितमणिमण्डितं धरातलं विदधातु', वासन्तीमेघमालामुपमातरमुपादिष्टवान्—'एता वीरुध्-कन्या धरणीदोलाया पालयितव्या।' स वृक्षं वक्षांसि वत्सरारम्भ प्राभृतेन कौशेयच्छदसम्प्रदानेन समाच्छादितवान्। तरुणशाखाशिशून् मधुमासावतरणोपलक्ष्ये च कुड्मलोष्णीषनिधापितमूर्ध्नो विहितवान्। तथा स द्राक्षारसमात्मप्रभावान्मधुनाऽपि मधुरतरं कृतवान्। खर्जूरबीजञ्च लालनपालनदीक्षया विशालं खर्जूरवृक्षं कल्पितवान्।

पदम्

अभ्रं वातश्च सोमश्च रविश्च नभ एव च।
नियुक्ता व्यापृता सर्वे यतस्त्वं ग्रासमाप्नुया॥ ६॥
(तथापि त्वं प्रमादेन न चान्नं भोक्तुमर्हसि।)
आज्ञानुवर्तिनश्चैते त्वत्कृते च भ्रमन्ति हि।
न्यायोचितं न चैवास्ति चाज्ञाया चेन्न वर्तसे॥ ७॥

परम्परायां मुहम्मदस्य, सृष्टिनाथस्य, विद्यमानानां गौरवस्य, सांसारिकाणां दयास्वरूपस्य, पुंसां पवित्रस्य, कालचक्रपूर्णत्वप्रतीकस्य, प्रचितस्याहमदस्य, मुहम्मदातिचितस्य स्वस्त्यस्तु तस्मै सदेति।

श्लोक

आशासु सम्मतादेशो, देवदूतो दयापरः।
दाता विशालदेहश्च दिव्यलक्षणसंयुतः॥ ८॥

श्लोक

का चिन्ता तव भक्तानां त्वयि पृष्ठतले सति।
किं भयं हि समुद्राच्च कर्णधारे मनौ सति॥ ९॥

श्लोक

सुश्लोकं लब्धवानेष पूर्णत्वेन समन्ततः।
तमिस्रा तेजसा स्वस्य निर्व्यापादितवानभूत्॥ १०॥
गुणाश्चैवास्य श्रेयांसः सर्वे हि परिकीर्तिताः।
भयासुराशिषोऽमुष्मै परिवाराय तस्य च॥ ११॥

यदा यदा हि कश्चित् पापभृत्, दुर्दशाग्रस्तश्च पश्चात्तापपूर्णौ करौ क्षमाकामनया परब्रह्मणः सेवायामुन्नमयते परमात्मा न तं

ایزد تعالی در وی نظر نکند - بازش بخواند - باز اعراض کند - بازش بتضرع و زاری بخواند - حق سبحانه تعالی گوید - "یَا مَلَائِکَتِی! لَقَدِ اسْتَحْیَیْتُ مِنْ عَبْدِی - وَ لَیْسَ لَهُ غَیْرِی فَقَدْ غَفَرْتُ لَهُ" - یعنی - دعوتش را اجابت کردم - و حاجتش را بر آوردم - که از بسیاری دعا و زاری بنده شرم همیدارم *

بیت

کرم بین و لطف خداوندگارا
گنه بنده کردست او شرمسارا

عاکفان کعبهٔ جلالش بتقصیر عبادت معترف - که "مَا عَبَدْنَاکَ حَقَّ عِبَادَتِکَ"۱ و واصفان حلیهٔ جمالش بتحیر منسوب - که "مَا عَرَفْنَاکَ حَقَّ مَعْرِفَتِکَ"۱ *

قطعه

گر کسی وصف او ز من پرسد
بیدل از بی‌نشان چه گوید باز؟
عاشقان کشتگان معشوقند
بر نیاید ز کشتگان آواز

یکی از صاحبدلان سر بجیب مراقبه فرو برده بود - و در بحر مکاشفه مستغرق شده * چون از آن حالت باز آمد یکی از اصحاب بطریق انبساط گفت - "درین بوستان که تو بودی مارا چه تحفهٔ کرامت آوردی"؟ گفت - بخاطر داشتم که چون بدرخت گل برسم دامنی پر کنم و هدیه اصحاب‌را برم * چون بدرخت گل رسیدم بوی گلم چنان مست کرد که دامنم از دست برفت *

بیت

گفتم که گلی بچینم از باغ
گل دیدم و مست گشتم از بوی *

ईज़द तआला दर वै नज़र न कुनद । बाज़श् बिख़्वानद, बाज़ ऐराज़ कुनद । बाज़श् ब तज़र्रुअ व ज़ारी बख़्वानद । हक़्क़े सुब्हानहू तआला गोयद—'या मलायकती ! लक़द इस्तहयैतु मिन् अब्दी व लैस लहू ग़ैरी फ़क़द् ग़फ़र्तु लहू ।' यानी दअवतश् रा इजाबत कर्दम् । व हाजतश् रा बरावुर्दम्, कि अज़ बिसयारिये दुआ व ज़ारिये बन्दा शर्म हमीदारम् ।

बैत (बहरे मुतक़ारिब)

करम बीं व लुत्फ़े ख़ुदावन्दगार ।
गुनह बन्दा कर्द'स्त ऊ शर्मसार ॥

आकिफ़ाने काबए जलालश् ब तक़सीरे इबादत मुअतरिफ़ कि—'मा अबद्नाक हक़्क़ इबादतिक ।' व वासिफ़ान हिल्यए जमालश् ब तहय्युर मन्सूब कि—'मा अरफ़्नाक हक़्क़ मारिफ़तिक ।'

क़ता (बहरे ख़फ़ीफ़)

गर कसे वस्फ़े ऊ ज़ि मन् पुरसद ।
बेदिल'ज़ बेनिशाँ चि गोयद बाज़ ॥
आशिक़ाँ कुश्तगाने माशूक़न्द ।
बर नयायद ज़ि कुश्तगान् आवाज़ ॥

यके अज़ साहिबदिलाँ सर ब जैबे मुराक़बा फ़रो बुर्दा बूद । व बहरे मुकाशफ़ा मुस्तग़रक़ शुदा । चूँ अज़ाँ हालत बाज़ आमद अज़ असहाब व तरीक़े इम्बिसात गुफ़्त—'दरीं बोस्ताँ कि बूदी मरा चि तोहफ़ए करामत आवुर्दी ?' गुफ़्त—'ब ख़ातिर दाश्तम् कि चू ब दरख़्ते गुल रसम् दामने पुर कुनम् व हदियए असहाब रा बुरम् । चूँ ब दरख़्ते गुल रसीदम् बूए गुलम् चुनाँ मस्त कर्द कि दामनम् अज़ दस्त बिरफ़्त ।' -

बैत (बहरे हज़ज्-मुसद्दस)

गुफ़्तम् कि गुले बिचीनम् अज़ बाग़ ।
गुल दीदम् व मस्त गश्तम् अज़ बूय ॥

प्रभु उस पर दृष्टिपात नही करता। वह पुन प्रार्थना करता है, वह (प्रभु) पुन मुह मोड लेता है। वह पुन रो रोकर प्रार्थना करता है। तो परब्रह्म कहता है कि—'हे मेरे फरिश्तो! वेशक मुझे शर्म आती है इस मेरे भक्त मे, और नही है उसके लिये मेरे सिवा, अत वेशक क्षमा किया उसे।' अर्थात् उसकी पुकार को स्वीकार करता हूँ। और उसकी कामना को पूर्ण करता हूँ, क्योकि प्रार्थना के आधिक्य से और रोने से यह सेवक मुझे लज्जित कर रहा है।

भूमिका

दृष्टिसनाथ कुरुते। असौ पुन प्रार्थयते, पुनरपि पराङमुख परमात्मा। असौ पुनरपि क्रन्द क्रन्द क्रोश क्रोश च प्रार्थयते। प्रभुस्तर्हि ब्रूते—'हे दिवौकस! लज्जितोऽस्मि खलु भक्तादस्माद् यतो नान्यो देव ऋते मत्तोस्ति, तत क्षम्यतेऽसौ मयेति।' अर्थात्—प्रार्थनामेतस्य स्वीकरोमि, कामना चास्य पूरयामि, यत प्राथनातिरेकाद् रोदनाच्च मा ह्रियाप्लुत विदधाति।

वैत

परमात्मा की कृपा और करुणा को देख।
पाप तो दास करता है और लज्जित वह होता है॥

उसके प्रताप निकेतन-कावा-के निवासी (यह कहकर) अपनी प्रार्थना की अपूर्णता को स्वीकार करते हैं—
'नहीं इवादत की हमने तेरी प्रभो! जैसी कि तेरी इवादत होनी चाहिये'
और उसके प्रताप की महत्ता की स्तुति करने वाले आश्चय से कहते हैं—
'नही जाना हमने तुझे जैसे कि तेरी जानकारी होनी चाहिये।'

श्लोक

प्रभोरनुग्रह पश्य चानुकम्पा तथापि च।
नमेतातिक्रम भक्तो लज्जितोऽसौ जगत्पति॥ १२॥

तस्य प्रतापनिकेतनस्य निवासिन एवमुक्त्वा स्वीयमुपासनाक्षामत्व विज्ञापयन्ति—

'न तथाऽऽराधितोऽस्माभिर्यथाऽऽराधितुमर्हसि।'

तस्य प्रतापस्य महिमान स्तुवन्त सविस्मयमाहु —

'न वय ज्ञातवन्तस्त्वा यथा विज्ञातुमर्हसि।'॥ १॥

कता

यदि कोई उसकी तारीफ मुझ से पूछे।
तो एक वेदिल (मेरे जैसा) उस वेनिशां के विषयमें क्या कहे!
प्रेमीजन प्रीतिपात्रो के मारे हुए है।
नही निकलती मारे हुओ (पहुँचे हुओ) से आवाज॥

भक्तो में से एक, अपना सिर ध्यान की गोद में रखे हुए था। और विचार-सागर में मग्न था। जव वह उस अवस्था से वापिस (होश में) आया तो एक साथी ने विनोद के ढग से पूछा—'उस वाग से कि तू जहाँ था हमारे लिये कौनसा सुन्दर उपहार लाया है?'

उसने कहा—'मैंने सोचा था कि जव गुलाव के वृक्ष तक पहुँचूगा तो (अपना) दामन भरलूँगा और मित्रो को भेंट कर दूँगा। (किन्तु) जव पुष्प वृक्ष के निकट पहुँचा तो पुष्पगन्ध ने (मुझे) इतना उन्मत्त कर दिया कि मेरा दामन ही मेरे हाथ से छूट गया।'

पदम्

गुण च परमेशस्य कश्चिन्मा यदि पृच्छति।
कथ त मादृशो मुग्धो लिङ्गातीत प्रकीर्तयेत्॥ १३॥
प्रेमिण प्रेमपात्रेण चाभिभूता समासते।
येषा चाभिभव पूर्णो ब्रुवते न कदाचन॥ १४॥

अथ भक्तेष्वेव स्वस्य मूर्धानं ध्यानक्रोडे निधाय विचारमग्न आसीत्। यदाऽसौ तस्या अवस्थाया प्रत्यावृत्तस्तर्हि कश्चिदेन विनोद-रीत्या पप्रच्छ—

'अथ तस्मादुद्यानाद्यत्रासीरस्मत्कृते किन्नाम प्राभृतमुपाहर इति।'
स ब्रूते—'मया विमृष्टमथ यदा सेवती क्षुप प्राप्स्यामि तदाऽऽत्मनो दुकूल पुष्पभरैर्भरिष्यामि मित्रेभ्यश्च समर्पयिष्यामि। परन्तु याव-त्सेवती क्षुप गतस्तावत्पुष्पगन्धो मामेतावन्तमुन्मद कृतवानथ दुकूल चैव मत्करादविमृष्टम्।

वैत

मैंने कहा था कि मैं फूल चुनूंगा उपवन से।
(पर) मैंने फूल देखा और मैं मस्त हो गया गन्ध से॥

श्लोक

उद्यानाद् गन्धपुष्पाणि चिनोमीत्युक्तवानहम्।
पश्यन् परन्तु पुष्पाणि गन्धोन्मत्तो जगाम ह॥ १५॥

قطعه

ای مرغ سحرا عشق ز پروانه بیاموز
کان سوخته را جان شد و آواز نیامد *
این مدعیان در طلبش بی خبرانند
کان را که خبر شد خبرش باز نیامد *

क़ता (बहरे हज़ज्-मुसम्मन्)

ऐ मुर्गे सहर इश्क ज़ि परवाना बियामोज़।
कां सोख़्ते रा जां शुदो आवाज़ नयामद॥
ईं मुद्दईयां दर तलबश् बेख़बरानन्द।
कांरा कि ख़बर शुद-ख़बरश् बाज़ नयामद॥

قطعه

ای برتر از خیال و قیاس و گمان و وهم
و ز هرچه گفته اند و شنیدیم و خوانده ایم *
مجلس تمام گشت و بپایان رسید عمر
ما همچنان در اول وصف تو مانده ایم *

क़ता (बहरे मुज़ारी)

ऐ बरतर अज़ ख़यालो क़यासो गुमानो वह्म।
व ज हर्चे गुफ़्ता अन्द शुनीदैमो ख़्वान्दा ऐम्॥
मजलिस तमाम गश्तो व पायां रसीद उम्र।
मा हमचुनां दर अव्वले वस्फ़े तो मान्दा ऐम्॥

در محامد پادشاه اسلام خلّد اللّٰه مُلکهُ

ذکر جمیل سعدی که در افواه عوام افتاده و صیت سخنش که در بسیط زمین رفته و قصب الجیب حدیثش که همچو نیشکر می خورند و رقعهٔ منشاتش که چون کاغذ زر می برند بر کمال فضل و بلاغت او حمل نتوان کرد بلکه خداوند جهان و قطب دائرهٔ زمان و قائم مقام سُلَیمان و ناصر اهل ایمان و شاهنشاه مُعظّم اتابک اعظم مُظفّرُ الدّنیا وَ الدّین ابو بکر بن سعد بن زنگی ظلّ اللہ فی اَرضه ربّ الارض عنهُ راض بعین عنایت نظر کرده است و تحسین بلیغ فرموده و ارادت صادق نموده * لاجرم کافهٔ انام از خواص و عوام بمحبت او گرائیده اند که النّاسُ علَیٰ دین مُلوکهم *

दर महामिदे पादशाहे इस्लाम-ख़ल्लद'ल्लाहु मुल्कहु!

ज़िक्रे जमीले सादी कि दर अफ़वाहे अवाम उफ़्तादा व सी सुख़ुनश् कि दर बसीते ज़मीन रफ़्ता। व क़स्बु'ल् ज़ैबी हदीसश् कि हम्चु नैशकर मीख़ुरन्द। व रुक़आए मनशात कि चू कागज़े ज़र मीबुरन्द। बर कमाले फ़ज़्लो बलागते हमल नतवां कर्द। बल्कि ख़ुदावन्दे जहानो क़ुतुबे दायरा ज़मां—क़ायमे मक़ामे सुलैमान—नासिरे अह्ले ईमान—शाहंशा मुअज़्ज़म—अतावके आज़म—मुज़फ़्फ़र'द्दुनिया व'द्दीन—अबूबक्र बि साद बिन् ज़ंगी—ज़िल्लु'ल्लाहि फ़ी अर्ज़िहि—(रब्बु'ल् अर्ज़ि अन्हु राज़) व ऐने इनायत नज़र करदा अस्त—व तहसीन बलीग़ फ़रमूद व इरादते सादिक़ नमूदा। लाजरम काफ़्फ़ए अनाम अज़ ख़वास अवाम व मुहब्बते ऊ गिरायीदा अन्द कि—'अन्नासु अला दी मुलूकिहिम्।'

رباعی

ز آنگه که ترا بر من مسکین نظرست
آثارم از آفتاب مشهور ترست *
گر خود همه عیبها بدین بنده درست
هر عیب که سلطان نه پسندد هنرست *

रुबाई (बहरे हज़ज्)

ज़ां गह कि तुरा बर मने मिस्की नज़र'स्त।
आसारम् अज़ आफ़्ताब मशहूर तर'स्त॥
गर ख़ुद हमा ऐबहा बदी बन्दा दर'स्त।
हर ऐब कि सुल्तां न पसन्दद हुनर'स्त॥

भूमिका

कता

हे प्रभात पक्षी (वेवफा बुलवुल) प्रेम करना परवाने से सीख ।
कि उस जलनेवाले की जान चली गयी पर आवाज़ न निकली ।।
ये मुद्दई उसकी तलाश मे वेसुव हैं ।
क्योकि जिसको खवर हो गयी उसकी खवर फिर नहीं मिली ।।

पदम्

प्रभातविहग ! प्रेम शिक्षिपीष्ठा पतङ्गत ।
दह्यमानस्त्यजेन् प्राणान्छब्दमेक न चोच्चरेन् ।। १६ ।।
ईशमन्विष्यमाणास्तु वतन्ते मोहिता इमे ।
यस्त जानीत विश्वेश तस्य वृत्त न ज्ञायते ।। १७ ।।

क़ता

हे प्रभु ! तू जो कि परे है, कल्पना, अनुमान, धारणा और भ्रम से ।
और जो कुछ भी कहा गया है, हमने सुना है या पढा है ।।
सारी सभा समाप्त हो गयी, आयु वीत गयी ।
हम अभी तक तेरे गुणगान के प्रारम्भ मे ही है ।।

पदम्

कल्पनाच्चानुमानाच्च धारणादथवा भ्रमात् ।
अतिष्ठ ! सवमुक्तेन श्रुतेन ज्ञापितेन च ।। १८ ।।
सभा समापन प्राप्ता वयश्चापि समापितम् ।
वर्तामहे गुणाख्यानेऽद्यापि ते प्रथमे वयम् ।। १९ ।।

इस्लाम धर्म के सम्राट् की प्रशस्ति में—भगवान् उसका राज्य हमेशा रखे

सादी का सुन्दर जिक्र लोगो मे होता रहता है । और उसकी सूक्तियो की ख्याति विश्वभर में फैल गयी है । और उसकी कथा-परम्परा की सुन्दर लेखनी को लोग गन्ने की तरह चूसते है । आर उसके साहित्यिक लेखो के पृष्ठो को (लोग) हुण्डी की तरह ले जाते हैं । यह उसकी विद्वत्ता के कमाल और वाग्मिता के कारण नहीं ह, वल्कि ससार के स्वामी, और कालचक्र की धुरी, सुलेमान के उत्तराधिकारी, ईमानवालो के सरक्षक, महान् सम्राट्, महान् अतावक (वशीय), विश्वविजेता तथा धर्मजयी अवूवक्र विन् साद विन् ज़गी, पृथ्वी पर परमात्मा की छायास्वरूप, (परमात्मा उससे राजी हो)—ने (सादी पर) कृपादृष्टि की है और अत्यन्त प्रशसा की ह, और सच्चा प्रेम दिखाया है । (इसलिये) नि सन्देह सभी लोगो ने—विशेप और सामान्य ने—प्रेम से उसे देखा है, क्योकि—

'लोग अपने राजा का धर्म मानते हैं ।'

इस्लामधर्मस्य सम्राज प्रशस्तौ—दिष्ट्याऽस्य-वर्धता राज्यम्

सादिन सद्गुल्लेखो जनेषु सम्प्रवतते । तस्य च सूक्तिकीर्ति समग्र धरातल व्याप्य स्थिता । तस्य कथापरम्परानुलेखनी सुलेखनी पुभिरिक्षुदण्ड इवाचोष्या । तस्य च सारस्वतलेखपत्राणि पुमास स्वर्णपत्रमिवोपाहरन्ति । नैतदस्य वैदुष्यवाग्मितानिमित्तादुद्भूत प्रत्युत क्षितिपति, कान्चननेमि, सुलेमानस्योत्तराधिकारी धार्मिकाणा गोप्ता, राजाधिराज महाऽतावकनाम्ना ख्यात, विश्वविजेता धर्मविजेता च, अवूवक्र विन् साद विन् ज़गी, क्षितितले परमात्मनश्छायाकल्प (प्रसीदतु प्रभुस्तस्मै) मा (शेखसादिन) कृपादृष्ट्या विलोकयामास, अभ्यार्थयत, निरपह्नुत च प्रेम प्रदर्शयामासेति । (अनेनैव हेतुना) ननु निर्विशेषलोकसामान्य-विशेषैश्च सोऽह बहुमतो, यतो हि—

'राजधर्मानुगा प्रजा ।'

रुवाई

जव से तुमने मुझ दीन पर दृष्टिपात किया है ।
तवसे मेरा प्रभाव सूर्य से भी अविक प्रसिद्ध हो गया है ।।
यदि समस्त दोप इस दास मे हो ।
(तो भी) हर दोप जो कि राजा को पसन्द हा, हुनर है ।।

चतुष्पदीयम्

यत प्रभृति दीनेऽस्मिन् दत्तदृष्टिस्तु वर्तसे ।
तत सूर्यादपि ज्यायान्महिमा वर्धितो मम ।। २० ।।
अपि चेत् सर्वदोपेभ्यो युक्त स्यादेप सेवक ।
राज्ञानुमोदितो दोपो सर्व एव गुणायते ।। २१ ।।

قطعه

گلی خوشبوی در حمام روزی
رسید از دست محبوبی بدستم *
بدو گفتم که مشکی یا عبیری؟
که از بوی دلاویز تو مستم *
بگفتا من گلی ناچیز بودم
ولیکن مدتی با گل نشستم *
کمال همنشین در من اثر کرد
و گرنه من همان خاکم که هستم *

اللهمّ متّع المسلمين بطول حياته!
وضاعف ثواب جميله و حسناته!
و ارفع درجة اوليائه و ولاته!
و دمّر على اعدائه و شناته!
بما تُلي في القرآن من آياته *
اللهمّ آمن بلده و احفظ ولده!

شعر

لقد سعد الدّنيا به - دام سعده!
و ايّده المولى بالوية النّصر!
كذلك تنشا لينة هو عرقها
و حسن نبات الارض من كرم البذر *

ایزد تعالی و تقدس خطه پاک شیراز را بهیبت حاکمان عادل و همت عالمان عامل تا زمان قیامت در امان سلامت نگاه دارد!

قطعه

ندانی که من در اقالیم غربت
چرا روزگاری بکردم درنگی؟

क़ता (बहरे हज़ज्-सालिम्)

गिले ख़ुशबूए दर हम्माम रोज़े।
रसीद'ज़ दस्ते महबूबे ब दस्तम्॥
बदू गुफ़्तम् कि मुश्की या अबीरी।
कि अज़ बूए दिलावेज़े तो मस्तम्॥
बिगुफ़्ता—'मन् गिले नाचीज़ बूदम्।
वलेकिन मुद्दते बा गुल निशस्तम्॥
कमाले हमनशीं दर मन असर कर्द।
वगरना मन हमां ख़ाकम् कि हस्तम्॥'

अल्लाहुम्म मत्तिइ'ल् मुस्लिमीन बि तूले हयातिहि।
व ज़ाइफ़् सवाब जमीलिहि व हसनातिहि।
व'र्फ़ा दरजत औलियायिहि व वुल्लातिहि।
व दम्मिर् अला आदायिहि व शुनातिहि।
बि मा तुलिय फ़ि'ल् क़ुरानि मिन् आयातिहि।
अल्लाहुम्म आमिन् बलदहु व'हफ़ज़् वलदहु।

शेर (बहरे तवील)

लक़द सइदु'द्दुनिया बिहि दाम सादुहु।
व अय्यदहु'ल् मौला बि अल् वियति'न् नस्रि॥
वक़ज़ालिक तनूशा लीनतु हुव इर्क़ुहा।
व हुस्नु नबाति'ल् अर्ज़ि मिन् करमि'ल् बज़्रि॥

ऐज़द तआला व तक़द्दुस ख़ित्तए पाके शीराज़ रा ब हैबते हाकिमाने आदिल व हिम्मते आलिमाने आमिल ता ज़माने क़यामत दर अमाने सलामत निगाह दारद।

क़ता (बहरे मुतक़ारिब)

न दानी कि मन् दर अक़ालीमे ग़ुरबत।
चिरा राज़गारे बिकरदम् दिरंगी॥

क़ता

एक दिन स्नानागार में सुगन्धित मिट्टी का ढेला ।
प्राप्त हुआ एक स्नेही के हाथ से मेरे हाथ मे ॥
उससे मैंने कहा कि तू कस्तूरी है या अम्बर ।
कि तेरी मनोहर गन्ध से मैं मस्त हो रहा हूँ ॥
उसने कहा—'मैं तो अकिञ्चन मिट्टी था ।
लेकिन कुछ समय तक फूल के साथ रहा हूँ ॥
मेरे साथी की विशेषता ने मुझ पर प्रभाव डाला ।
अन्यथा मैं वही मिट्टी हूँ जैसा कि हूँ ॥'

हे अनन्तनाम परमात्मा ! लाभ दे मुसलमानों को उसकी आयु बढ़ाकर। और बढ़ा उसकी नेकियो के पुरस्कार को और नेकियो को। और ऊँचा कर दरजा उसके मित्रो और प्रेमियो का। और विनाश डाल उसके शत्रुओ और अशुभचिन्तको पर। उसके नाम पर जो कुछ पढा गया है कुरान में और उसकी आयतो में। हे अनन्तनाम प्रभु ! शान्ति दे उसके देश को और रक्षा कर उसके पुत्र की।

भूमिका

पदम्

सुगन्ध मृत्तिकालोष्ठ स्नानीय चाप्तवानहम् ।
स्नानागारे च हस्तेन कस्यचित् स्नेहिन किल ॥ २२ ॥
तत्पृष्टवानह हहो ! कस्तूर्यस्यथवाऽम्बरम् ।
मनोहरेण गन्धेन नय[illegible]स्मि मूर्च्छया ॥ २३ ॥
मामेव विस्मयापन्न मृत्स्नालोष्ठ न्यवोघयत् ।
अकिञ्चनास्मि किञ्चास गन्धवत्पुष्पसन्निधौ ॥ २४ ॥
सहासीनगुणस्पर्शो मामेव कृतवानिति ।
दृश्यमान तदेवास्मि लोष्ठमात्रमतोऽन्यथा ॥ २५ ॥

हे अनन्तनाम परमात्मन् ! भद्र दर्शय मुस्लमानान् तस्यायुष्य-वर्धनात्। समर्घयास्य पुण्यफल सुकृतञ्च। वर्धय पदवी चास्य सुहृदा प्रेमास्पदानाञ्च। जहि चास्य द्विपतोऽशुभैपिणश्च। यथोक्त हि कुराने कुरानपदेषु च। हे प्रभो ! आहि चास्य देश युवराजञ्चास्येति।

शेर

निश्चय प्रसन्न होती है दुनिया उससे, हमेशा रहे उसकी प्रसन्नता ।
और सहायता करे उसकी प्रभु विजयध्वजो से ॥
ऐसे ही बढेगा खजूर का पौधा जिसका वह मूल है ।
क्योंकि धरती के पौधो का सौन्दर्य अच्छे बीज के कारण होता है ॥

परब्रह्म परमात्मा, परमपवित्र शीराज़ की पुण्यभूमि को न्यायकारी शासकों के दबदबे के द्वारा और धर्मशील विद्वानो के आशीष् के द्वारा प्रलयकाल पर्यन्त शान्ति और सुरक्षा में रखे ।

श्लोक

नन्यन्ते हि प्रजास्तेन सोऽपि नन्दतु सर्वदा ।
ध्वजमुड्डयितु तस्य परमेश सहायकृत् ॥ २६ ॥
वृद्धि यास्यत्यनेनोप्तो नवखर्जूरकाङ्कुर ।
बीजायत्त हि श्रेष्ठत्व तरूणा परिकीर्तितम् ॥ २७ ॥

परब्रह्म परमात्मा परम पवित्र शीराजभूमि न्यायपरायणाना शासकाना प्रभावे, धर्मधुरीणा च शुभाशिपि प्रलयपर्यन्तात् सक्षेममभि-रक्षतादिति ।

क़ता

तू नहीं जानता कि मैं विदेशो के प्रवास मे ।
किस लिये बहुत समय तक रहा ॥

पदम्

न जानीपे किमर्थं च विदेश सेवितो मया ?
काल यापयता तत्र प्रवासे वसता चिरम् ॥ २८ ॥

برون رفتم از تنگ ترکان که دیدم
جهان در هم افتاده چون موی زنگی *
همه آدمی زاده بودند - لیکن
چو گرگان بخونخوارگی تیز چنگی *
درون مردمی چون ملک نیک محضر
برون لشکری چون هزبران جنگی *
چو باز آمدم کشور آسوده دیدم
پلنگان رها کرده خوی پلنگی *
چنان بود در عهد اول که دیدم
جهان پر ز آشوب و تشویش و تنگی *
چنین شد در ایام سلطان عادل
اتابک ابو بکر بن سعد زنگی *

قطعه

اقلیم پارس را غم از آسیب دهر نیست
تا بر سرش بود چو توئی سایهٔ خدا *
امروز کس نشان ندهد در بسیط خاک
مانند آستان درت مامن رضا *
بر تست پاس خاطر بیچارگان - و شکر
بر ما - و بر خدای جهان آفرین جزا *
یارب! ز باد فتنه نگه دار خاک پارس
چندانکه خاک را بود و آب را بقا!

در سبب تالیف کتاب گوید

شبی در ایام گذشته تأمل میکردم - و بر عمر تلف کرده تأسف میخوردم - و سنگ سراچهٔ دل را بالماس آب دیده می سفتم - و این ابیات مناسب حال خود می گفتم *

مثنوی

هر دم از عمر میرود نفسی
چون نگه میکنم نماند بسی *
ای که پنجاه رفت و در خوابی!
مگر این پنج روز دریابی *

वरूँ रफ़्तम ज़ तंगे तुरकाँ कि दीदम्।
जहाँ दरहम् उफ़्तादा चू मूए ज़ंगी॥
हमा आदमी ज़ादा वूदन्द लेकिन।
चु गुर्गाँ व ख़ूंख़्वारगी तेज़ चङ्गी॥
दरूँ मर्दुमी चू मलक नेक महज़र।
वरूँ लश्करे चूँ हुज़ब्राने जगी॥
चु वाज़ आमदम् किश्वर आसूदा दीदम्।
पलगाँ रिहा कर्दा ख़ूए पलगी॥
चुनाँ वूद दर अहदे अव्वल कि दीदम्।
जहाँ पुर ज़ि आशूवो तशवीशो तगी॥
चुनी शुद दर अय्यामे सुलताने आदिल।
अतावक अवूवक्र विन साद ज़ंगी॥

क़ता (वहरे मुज़ारी)

अकलीमे पासरा गम ज़ आसीवे दहर नेस्त।
ता वर सरश् वुवद चु तोई सायए ख़ुदा॥
इमरोज़ कस निशाँ न दिहद दर वसीते ख़ाक।
मानिन्दे आस्ताने दरत मामने रिज़ा॥
वर तुस्त पासे ख़ातिरे वेचारगाँ, व शुक्र।
वर मा, व वर ख़ुदाय जहाँ आफरी जज़ा॥
या रव! ज़ि वादे फ़ित्ना निगह दार ख़ाके पास।
चन्दाँ कि ख़ाक रा वुवद व आव रा वका॥

दर सवबे तालीफ़े किताव गोयद

शवे दर अय्यामे गुज़िश्ता तअम्मुल मीकरदम् व वर उम्रे तलफ़ कर्दा तअस्सुफ़ मीख़ुरदम्। व सगे सराचाए दिल रा व अल्मासे आवे दीदा मी सुफ़्तम्। व ईं अवयाते मुनासिवे हाले ख़ुद मी गुफ़्तम्—

मसनवी (वहरे ख़फ़ीफ़)

हर दम ज़ उम्र मीरवद नफ़से।
चूँ निगह मीकुनम् न मांद वसे॥
ऐ कि पजाह रफ़्तो दर ख़्वावी।
मगर ईं पज रोज़ दर यावी॥

मैं वाहर निकल गया था तुर्कों के सताने से क्योंकि मैंने देखा।
दुनिया को उलझा हुआ हब्शी के बालों की तरह ।।
सभी मनुष्य—जाति के थे किन्तु।
खून पीने के लिये तेज़ पजोंवाले भेडियो के समान थे ।।
अन्दर से जो फरिश्तो जैसे भले स्वभाववाले थे।
(वे भी) वाहर से सिंहो के समान योद्धाओ की सेना वन गये थे ।।
जव मैं वापिस आया तो देश को सुखी देखा।
सिंहो ने सिंहपन की आदते छोड दी थी ।।
ऐसी थी स्थिति पहले जव कि मैंने इसे देखा।
तव दुनिया कष्ट, अशान्ति और क्लेश से भरी थी ।।
ऐसा है (देश) अब न्यायप्रिय सुलतान के समय मे।
अतावक अवूबक्र विन् साद विन् ज़गी के ।।

भूमिका

अत्याचाराच्च तुर्काणामगम देशतो वहि ।
जङ्गिन मेशजञ्जालमिवादशमिद जगत् ।। २९ ।।
समे मनोरपत्यानि चासन्नथ तथापि ते।
रक्तपातपरा हिंस्रा नखराश्च वृका इव ।। ३० ।।
अन्त प्रवृत्या ये चासन् दिव्यलक्षणसयुता ।
तेऽपि व्यूहनिवद्धा स्युर्योद्धारो व्याघ्रसन्निभा ।। ३१ ।।
देशान्तरात्परावृत्याद्राक्ष स्वविपय शुभम्।
पलग्राहाश्च सिंहाश्च हिंसारहितता गता ।। ३२ ।।
एवमत्र ह्यवस्थाऽऽसीदपश्य च पुरा यथा।
दु खक्लेशेतिभीतिम्यश्चासीत्सम्पीडित जगत् ।। ३३ ।।
इदानी सुस्थितो देश शासने न्यायकारिण ।
अतावक अवूवक्र विन् साद विन जगिन ।। ३४ ।।

कता

फ़ारस देश को समय की विपरीतता की कोई चिन्ता नही है।
जव तक कि उसके सिर पर परमात्मा की छाया समान तुम हो ।।
आज इस विस्तीर्ण धरा पर कोई नही वता सकता।
तुम्हारे द्वार की देहली के समान शान्ति-स्थल ।।
तुम पर (लाज़िम) है निसम्वलो की देखभाल।
और कृतज्ञता हम पर, और विश्वस्रष्टा प्रभु पर फलाफल ।।
हे प्रभो! फारस की भूमि को उपद्रवो की हवा से वचा।
जव तक कि पृथ्वी और जल का अस्तित्व रहे ।।

पदम्

पर्शून् न वाधते काचिद् भववाधा कदाचन।
यावत्त्व सस्थितो मूर्ध्नि छायेव परमात्मन ।। ३५ ।।
इदानी कोऽपि नो वेद विस्तीर्णेऽस्मिन् धरातले।
स्वस्ति स्थान यथा स्यात्ते दिष्ट्या द्वारस्य देहली ।। ३६ ।।
त्वय्यायत्त हि दीनाना पालन पोपण खलु।
तयाऽस्मासु कृतज्ञत्व, फल च परमात्मनि ।। ३७ ।।
प्रभो! उत्पातवातेभ्यो पर्शून् पाहि निरन्तरम्।
यावदत्र धरा तिष्ठेत् तिष्ठेच्च जीवन जलम् ।। ३८ ।।

ग्रन्थ रचना के कारण के विषय में कहते हैं

एक रात को मै वीते दिनो पर विचार कर रहा था और नष्ट किये हुए जीवन पर अफसोस कर रहा था। और हृदय के भवन के पत्थरो को आँसुओ के हीरो से वेध रहा था। और इन पद्यो को जो मेरी अपनी हालत पर घटते थे, पढ रहा था—

मसनवी

हर क्षण जीवन से एक साँस चली जाती है।
जब मै देखता हूँ तो ज्यादा नही वची ।।
अरे! पचास (वर्ष) चले गये और और तू नीद में है।
पर इन (वचे हुए) पाँच दिनों का तो उपयोग कर ।।

अथातो ग्रन्थरचनानिमित्त व्याख्यायते

एकदा दोपा व्यतीतानि दिनानि चानुशोचयन्नासम्। निष्फल चैव गतमायुप च। अश्मवेश्मान च हृत्प्राचीर नयनसलिलवज्रैर्वेधयन् स्वस्य दशाज्ञापकानि पदान्येतानि चोच्चरन्निति।

गाथा

क्षणे क्षणेऽनुयातीह श्वासमात्रेण वै वय ।
यावद् दर्शं न पश्यामि प्रकीर्णं निजजीवितम् ।। ३९ ।।
पञ्चाशत्ते व्यतीतानि वर्षाणि स्वापसेवने।
परमार्थे नियुङ्क्ष्व त्व शिष्ट दिवसपञ्चकम् ।। ४० ।।

حجل آنکس که رفت و کار ساحت
کوس رحلت ردند و بار ساحت *
حواب نوشیں بامداد رحیل
باز دارد پیاده‌را ر سبیل *
هر که آمد عمارت نو ساحت
رفت و منزل بدیگری پرداخت *
و آن دگر پخت همچیں هوسی
ویں عمارت بسر نبرد کسی *
یار نا پایدار دوست مدارا
دوستی‌را نشاید ایں عدار *
مایهٔ عیش آدمی شکمست
تا بتدریج میرود چه غمست؟
گر بسدد چنانکه نگشاید
گر دل ار عمر بر کند شاید *
ور کشاید چنانکه نتوان بست
گو ـ بشو ار حیات دنیا دست!
چار طبع مخالف و سرکش
چند روزی بوند باهم خوش *
گر یکی زیں چهار شد غالب
حان شیریں بر آید ار قالب *
لاجرم مرد عارف کامل
ننهد بر حیات دنیا دل *
نیک و بد چون همی باید مرد
خنک آن کس که گوی نیکی برد *
برگ عیشی بگور خویش فرست!
کس نیارد ز پس ـ تو پیش فرست *
عمر برفست و آفتاب تموز
اندکی مانده ـ خواجه! غره هنوز؟
ای تهی دست رفته در بازار!
ترسمت بار ناوری دستار *

खजिल आँ कस कि रफ़्तो कार न साख़्त ।
कोसे रिहलत ज़दन्दो बार न साख़्त ।।
ख़्वावे नोशीने वामदादे रहील ।
वाज़ दारद पियादा रा ज़ि सवील ।।
हर कि आमद इमारते नौ साख़्त ।
रफ़्तो मंज़िल व दीगरे परदाख़्त ।।
वाँ दिगर पुख़्त हमचुनी हवसे ।
वीं इमारत व सर न वुर्द कसे ।।
यारे नापायेदार दोस्त मदार ।
दोस्ती रा न शायद ईं ग़द्दार ।।
मायए ऐशे आदमी शिकमस्त ।
ता व तद्रीज मीरवद चि ग़मस्त ।।
गर विवन्दद चुनाँ कि न कुशायद ।
गर दिल'ज़ उम्र वर कनद शायद ।।
वर कुशायद चुनांकि न तवाँ वस्त ।
गो—विशू अज़ हयाते दुनिया दस्त ।।
चार तवए मुख़ालिफ़ो सरकश ।
चन्द रोज़े वुवन्द वाहम ख़ुश ।।
गर यके ज़ी चहार शुद ग़ालिव ।
जाने शीरी वर आयद अज़ क़ालिव ।।
लाजरम मर्दे आरिफ़े कामिल ।
न निहद वर हयाते दुनिया दिल ।।
नेको वद चूँ हमे ववायद मुर्द ।
ख़ुनुक आँ कस कि गोये नेकी वुर्द ।।
वर्गे ऐशे व गोरे ख़ेश फ़िरिस्त ।
कस नयारद ज़ि पस, तो पेश फ़िरिस्त ।।
उम्र वफ़स्तो आफ़ताव तुमूज़ ।
अन्दके मान्दा—ख़्वाजा ग़र्रा हनूज़ ।।
ऐ निही दस्त रफ़्ता दर बाज़ार ।
तरसमत वाज़ नावरी दस्तार ।।

लज्जास्पद है वह आदमी जो विना काम किये चल दिया।
कूच का नगाडा वज गया और वोझा नही सँभाला।।

प्रस्थान के प्रात काल की मीठी नीद।
पदयात्री को मार्ग से रोक रखती है।।

जो भी आया उसने नया मकान वनाया।
चला गया, और घर दूसरे को दे गया।।

और उस दूसरे ने भी वैसी ही कामना की।
और यह इमारत सिर पर कोई नही ले गया।।

इस अस्थिर (ससार) को मित्र मत वना।
यह ग़द्दार मैत्री के योग्य नही है।।

आदमी के सुख का आधार पेट है।
जव तक यह क्रम से (भरता रीतता) चलता है, तव तक क्या भय है?

अगर यह ऐसा वन्द हो जाय कि न खुले।
तो यदि दिल जीवन से निराश हो जाय तो उचित है।।

और यदि यह ऐसा खुल जाय कि न वँध सके।
तो कहो कि—'सासारिक जीवन से हाथ धो ले।।'

चार तत्व-विरोघी और विद्रोही।
कुछ दिनो तक परस्पर प्रसन्न रहते हैं।।

यदि इन (चारो) में से एक प्रचण्ड हो जाय।
तो प्यारी जान देह से वाहर निकल आती है।।

(अत) निश्चय ही पूर्ण भक्त जन।
नहीं रखते सासारिक जीवन पर दिल।।

अच्छे-वुरे सभी को मरना है।
भाग्यवान वह है जो नेकी की गेंद साथ ले जाता है।।

सुख का सामान अपनी कब्र (परलोक) को भेज।
कोई नही भेजेगा तेरे वाद, पहले ही भेज।।

आयु वर्फ़ है और कालसूर्य तप रहा है।
थोडी वची है—श्रीमान् जी अभी भी अकड रहे हैं।।

अरे तू खाली हाथ वाजार में गया है।
मैं डरता हूँ कि तू पगडी भी वापिस नही लायेगा।।

लज्जित स नरो यश्च गच्छन्नैव व्यवस्यति।
यात्रातूयनिनादेऽपि पाथेय न व्यवस्यति।। ४१।।

अथ प्रस्थानवेलाया प्रात स्वापनिषेवणम्।
मार्गे पृष्ठानुग कुर्यादवश्य पादचारिणम्।। ४२।।

नरो ह्यागतमात्रेण कल्पते नूतन गृहम्।
स एव गतमात्रेण परेभ्यस्तत् प्रयच्छति।। ४३।।

परवर्ती पुनर्धत्ते पूर्ववर्तीव कामनाम्।
न्यस्येम निलय मूर्ध्नि न कश्चिद् गतवानित।। ४४।।

मा धृथा अस्थिर मित्र मित्रत्वे समधिष्ठितम्।
न मित्रपदता पात्रमेतद् विश्वासघातनम्।। ४५।।

उदर सर्वलोकस्यैश्वर्यमूल प्रकीर्तितम्।
भ्रियते रिच्यते यावददस्तावत् कुतो भयम्।। ४६।।

यदेतत् क्रूरकोष्ठत्वाद् विरिणक्ति न कच्चन।
हृदो जिजीविषा त्यक्त्वा तदवेहि गतायुषम्।। ४७।।

यदेतदतिसारि स्यान्मलवन्धो न जायते।
जीविताशा परित्यज्य तज्ज्ञेय मुक्तवन्धनम्।। ४८।।

परस्परविरोधीनि चतुष्टत्वानि भूरिश।
अथ किञ्चिद् दिन यावन् निर्वहन्ति परस्परम्।। ४९।।

चतुर्णां यतम तत्वमेतेषा यदि कुप्यति।
प्रेयासो ह्यसवस्तर्हि देहत्याग प्रकुर्वते।। ५०।।

पण्डित पुरुषो यश्च पूर्णतामाप्तवान् किल।
निदधाति मन सङ्ग विश्वेऽस्मिन् न कदाचन।। ५१।।

समे मरणधर्माण सज्जना वाथ दुर्जना।
पुण्यभाज विजानीयाद् यो वोढा पुण्यकन्दुकम्।। ५२।।

परलोकायपाथेयमुपनेय त्वयाग्रत।
प्रणेतु न क्षम कोऽपि परलोकगते त्वयि।। ५३।।

वयो हिमनिभ तावत् काल सूर्यस्य चातप।
तत्राल्पीयोऽवशिष्ट तत् कथ भद्र! प्रतन्यते।। ५४।।

रिक्तहस्तोऽभ्युपैपित्व दुष्प्रवेशमयापणम्।
विशङ्के न त्वमुष्णीष प्रत्यानेष्यसि कच्चन।। ५५।।

هر که مزروع خود خورد بخوید
وقت خرمنش خوشه باید چید *
پند سعدی بگوش دل بشنو
ره چنین است - مرد باش - و برو

بعد از تأمل این معنی مصلحت چنان دیدم - که در نشیمن عزلت نشینم - و دامن از صحبت فراهم چینم - و دفتر از گفتهای پریشان بشویم - و من بعد پریشان نگویم *

بیت

زبان بریده بکنجی نشسته صم بکم
به از کسی که نباشد زبانش اندر حکم *

تا یکی از دوستان که در کجاوهٔ غم انیس من بودی - و در حجرهٔ هم جلیس - برسم قدیم از در در آمد * چندانکه نشاط ملاعبت کرد - و بساط ملاعبت گسترد - جوابش نگفتم - و سر از زانوی تعبد بر نگرفتم * رنجیده بمن نگه کرد و گفت *

قطعه

کنونت که امکان گفتار هست
بگو - ای برادر! بلطف و خوشی *
که فردا چو پیک اجل در رسد
بحکم ضرورت زبان در کشی *

یکی از متعلقان منش بر حسب این واقعه مطلع گردانید - که فلان عزم کرده است - و نیت جزم آورده - که بقیت عمر در دنیا معتکف نشیند - و خاموشی گزیند - تو نیز اگر توانی سر خویش گیر - و راه مجانبت در پیش آر * گفتا - بعزت عظیم و صحبت قدیم که دم بر نیارم - و قدم بر ندارم - مگر آنگه که سخن گفته شود بر عادت مالوف و طریق معروف - که آزردن دل دوستان جهلست - و کفارت یمین سهل - و خلاف رای صوابست و نقض عهد اولی الالباب - که ذو الفقار علی در نیام - و زبان سعدی در کام *

हर कि मज़रूए ख़ुद ख़ुरद व ख़वीद।
वक़्ते ख़िर्मनश् ख़ोशा बायद चीद ।।
पन्दे सादी व गोशे दिल बिशिनव।
रह चुनीनस्त मर्द बाशो बिरव ।।

बाद'ज़ ताम्मुल ईं माना मस्लहत चुनाँ दीदम कि दर नशीमने उज़लत नशीनम्। व दामन'ज़ सुहवत फ़राहम चीनम्। व दफ्तर'ज़ गुफ्तहाय परेशाँ बिशोयम्। व मिम्बाद परेशाँ न गोयम्।

बैत (बहरे मुज्तश्)

ज़ुबाँ बुरीदा बकुंजे निशस्ता सुम्मुम् बुक्म।
बिह अज़ कसे कि न बाशद ज़बानश् अंदर हुक्म ।।

ता यके अज़ दोस्तान कि दर कजावाए ग़म अनीसे मन् बूदे, व दर हुजरए हम्म जलीस, ब रस्मे क़दीम अज़ दर दरामद। चन्दाँ कि नशाते मलाग़बत कर्द, व बिसाते मुलाअबत गुस्तर्द जवाबश् न गुफ्तम्। व सर अज़ ज़ानुए तअब्बुद बर न गिरिफ्तम्। रंजीदा ब मन् निगह कर्दो गुफ्त—

क़ता (बहरे मुतक़ारिब)

कुनूनत कि इमकाने गुफ्तार हस्त।
बिगो ऐ बिरादर! ब लुत्फो ख़ुशी ।।
कि फ़र्दा चु पैके अजल दर रसद।
ब हुक्मे ज़रूरत ज़ुबाँ दरकशी ।।

यके अज़ मुतअल्लिक़ान मनश् बर हस्बे ईं वाक़आ मुत्तिलअ गरदानीद, कि 'फ़ुलाँ अज़्म कर्दा अस्त। व नीयते जज़्म आवुर्दा, कि बक़ीय्यते उम्र दर दुनिया मोतकिफ नशीनद, व ख़ामोशी गुज़ीनद। तो नीज़ अगर तवानी सरे ख़ेश गीर, व राहे मुजानबत दर पेश आर।' गुफ्ता—'ब इज़्ज़ते अज़ीम व सुहबते क़दीम कि दम बर न आरम्, व क़दम बर न दारम्, मगर आँगह कि सुखुन गुफ्ता शवद बर आदते मालूफ़ व तरीक़े मारूफ़ कि आज़ुर्दने दिले दोस्ताँ जहलस्त, व कफ़्फ़ारते यमीन् सहल। व ख़िलाफ़े राये सवाबस्त व नक़्ज़े अहदे ऊलि'ल् अलबाब कि ज़ु'ल्फ़क़ारे अली दर नियाम व ज़बाने सादी दर काम।

जो अपने खेत की उपज कच्ची खा जाता है।
वह कटाई के समय उच्छवृत्ति से वालियाँ चुनता है ।।
सादी का उपदेश दिल के कान से (दिल लगाकर) सुन।
यही मार्ग है, मर्द बन और (इस पर) चल ।।

इस प्रकार विचार करने के बाद मैंने यह उचित देखा (समझा) कि एकान्त वास करूँ और समस्त सपर्कों से दामन समेट लूं। और छिटपुट लिखे की धो डालूं और—इसके बाद छिटपुट न वोलूं।

बैत

जीभ कटा हुआ, एकान्त में बैठा, बहरा और गूंगा।
बहतर है उस व्यक्ति से कि नही है जिसकी वाणी आज्ञा में ।।

इतने में मेरे मित्रो में से एक जो कि दु खो के उष्ट्रासन पर मेरा मित्र था और चिन्ता की कोठरी में मेरा साथी था, सदा की भाँति घर के भीतर आया। अनेक प्रकार से आनन्द प्रकाश किया और हँसी-दिल्लगी की बिसात बिछाई, मैंने उसे जवाब नही दिया और ध्यान के घुटने से सिर न उठाया। (उसने) दुखी होकर मेरी ओर देखा और कहा—

क़ता

अभी तो तुझ में बोलने की शक्ति है।
बोल हे भाई! आनन्द और प्रसन्नतापूर्वक ।।
क्योकि कल जब यमदूत आ पहुँचेंगे।
(तब तो) अनिवार्यत जबान बन्द रखेगा (ही) ।।

मेरे एक सेवक ने उसे इस घटना के विषय में बताया कि 'इन्होने यह विचार किया है और इस निर्णय का सकल्प लिया है कि शेष जीवन-भर दुनिया में भक्ति लीन होकर बैठेंगे और मौन धारण करेंगे। आप भी यदि कर सकें तो अपना काम देखिये और वियोग मार्ग पकड़िये।' उसने कहा—'विराट् प्रभु के आदर की क़सम और पुरानी मित्रता की कसम कि मैं दम नही लूगा और एक क़दम भी न उठाऊँगा, जब तक कि यह नही बोलेगा, पूर्व परिचित स्वभाव से और प्रसिद्ध प्रकार से। क्योकि मित्रो का दिल दुखाना मूर्खता है, और क़सम तोडने का प्रायश्चित्त सरल है। यह बुद्धि के विरुद्ध है और बुद्धिमानो के मत के विपरीत है कि अली की जुल्फ़कार (नामक तलवार) मियान में रहे और सादी की जुबान मुंह में (चुप) रहे।

भूमिका

स्वस्यासस्यस्य क्षेत्रस्यापक्व धान्य च योऽश्नुते।
स वै लावनवेलाया शिलोञ्छवृत्तिमाचरेत् ।। ५६ ।।
दत्तश्रोत्रानुचित्तेन सादीवाक्यानि श्रूयताम्।
अय पन्था अय पन्था इतो वीर्येण गम्यताम् ।। ५७ ।।

एव विचार्य मयेद समीचीन मतमथैकान्तसेवन कुर्यां, निरस्तसर्व-सम्पर्को—धौतसर्वलेखो—निवृत्तवाग्व्यवहारश्चेति।

श्लोक

छिन्नवाङ्निर्जनाधिष्ठो मूकश्च बधिरस्तथा।
वर न च पुनर्यस्य जिह्वा नास्ति वशवदा ।। ५८ ।।

तदैव मम मित्राणामेकतमो यश्चार्घासनमधितिष्ठति स्म व्यसन-काले, चिन्तानिभृतदर्यां च सहचारो, यथापूर्वं द्वारमार्गादन्त प्रविष्ट। अनेकधा स आनन्दप्रकाशमकरोत्, विनोदविष्टर चातत न पुन-स्तमुदतरम्। न च विचारभारावनत मूर्धानि जानुन उदस्थापयम्। विषण्ण स मयि दृष्टिपातमकरोदवदच्च—

पदम्

यावद् वक्तु हि शक्नोपि भ्रातर्ब्रूहि प्रसीद च।
श्व प्राप्ते यमदूते त्वमवश्य मौनमर्हसि ।। ५९ ।।

मम सेवकेपु चैकस्त यथा घटितमवोचतायानेनैतन्निरणायीति याव-दवशिष्टजीवित भक्तिलीनो भवेय मौन च धारयेयमिति। भवानपि यदि शक्नुते यथाभीप्सितमनुचरेद् विरहमार्गं चावलम्बेतेति। सोऽब्रवदत्— 'परब्रह्मपूजायै शपे कालान्तस्थायिन्यै मैत्र्यै चावयो, न तावद् विरस्ये, पादमेकञ्च नोद्धरिप्यामि यावन्नाय ब्रूते पूर्वपरिचितया रीत्या प्रसिद्धया च पद्धत्या। यतो हि मित्राणा मनोऽवगन्यन हि मूढत्व, प्रतिज्ञाभङ्गप्रायश्चित्त च सुकरमिति। इद तावद् बुद्धिविरुद्ध—बुद्धिमता मतविपरीत च यद् अलिनोऽसि कोपे निस्तिष्ठेत् सादिनो वा वाणी दन्तरोघे चेति।

قطعه

زبان در دهان خردمند چیست؟
کلید در گنج صاحب هنر *
چو در بسته باشد - چه داند کسی
که جوهر فروشست یا شیشه گر؟

قطعه

اگرچه پیش خردمند خامشی ادبست
بوقت مصلحت آن به که درسخن کوشی *
دو چیز طیرهٔ عقلست - دم فرو بستن
بوقت گفتن - و گفتن بوقت خاموشی *

فی الجمله زبان از مکالمهٔ او در کشیدن قوت نداشتم - و روی از محادثهٔ او گردانیدن مروت ندانستم - که یار موافق بود - و در ارادت صادق *

بیت

چو جنگ آوری - با کسی در ستیز
که ازوی گزیرت بود یا گریز *

بحکم ضرورت سخن گفتیم - و تفرج کنان بیرون رفتیم در فصل ربیعی - که آثار صولت برد آرمیده بود - و آوان دولت ورد رسیده *

بیت

پیراهن برگ بر درختان
چون جامهٔ عید نیکبختان ،

قطعه

اول اردی بهشت ماه جلالی
بلبل گوینده بر منابر قضبان *
بر گل سرخ از نم اوفتاده لآلی
همچو عرق بر عذار شاهد غضبان *

شب را ببوستان با یکی از دوستان اتفاق مبیت افتاد * موضعی خوش و خرم - و درختان دلکش و درهم - گوئی خردهٔ مینا بر خاکش ریخته است - و عقد ثریا از تاکش در آویخته *

क़ता (बहरे मुतक़ारिब)

ज़बाँ दर दहाने ख़िरदमन्द चीस्त।
किलीदे दरे गंजे साहिब हुनर॥
चु दर बस्ता बाशद-चि दानद कसे।
कि जौहर फ़रोशस्त' या शीशागर॥

क़ता (बहरे मुज्तस्)

अगर्चे पेशे ख़िरदमन्द ख़ामुशी अदबस्त।
ब वक़्ते मस्लहत आँ बिह् कि दर सुख़ुन कोशी॥
दु चीज़ तीराए अक़्लस्त दम फ़रो बस्तन्।
ब वक़्ते गुफ़्तन्-ओ गुफ़्तन् ब वक़्ते ख़ामोशी॥

फ़िल् जुमला, ज़ुबान अज़ मुकालमाए ऊ दर कशीदन् क़ुव्वत न पन्दाश्तम्। व रूए अज़ मुहादिसाए ऊ गिर्दानीदन् मुरुव्वत न दानिस्तम्, कि यारे मुवाफ़िक़ बूद व दर इरादत सादिक़।

बैत (बहरे मुतक़ारिब)

चु जंग आवरी बा कसे दर सतेज़।
कि अज़ वै गुज़ीरत बुवद या गुरेज़॥

ब हुक्मे ज़रूरत सुख़ुन गुफ़्तेम व तफ़र्रुज कुनाँ बेरूँ रफ़्तेम— दर फ़स्ले रबीअ कि आसारे सौलते बर्द आरमीदा बूद व आवाने दौलते वर्द रसीदा।

बैत (बहरे हज़ज्-ग़ैरसालिम-मुसद्दस)

पैराहने बर्ग बर दरख़्ताँ।
चूँ जामाए ईदे नेकबख़्ताँ॥

क़ता (बहरे मुसरिह)

अव्वले उर्दे बिहिश्त माहे जलाली।
बुलबुले गोयन्दा बर मनाबिरे क़ुज़्बाँ॥
बर गुले सुर्ख़ अज़ नम उफ़्तादा लआली।
हमचु अरक़ बर इज़ारे शाहिदे ग़ज़्बाँ॥

शब रा ब बोस्तान बा यके अज़ दोस्तान इत्तफ़ाक़े मबीत उफ़्ताद। मौज़ाए ख़ुश व ख़ुर्रम, व दरख़्तान दिलकश व दरहम। गोया— ख़ुर्दाए मीना बर ख़ाकश् रेख़्ता अस्त—व अक़्दे सुरैया अज़ ताकश् दर आवेख़्ता।

कता

बुद्धिमान् के मुख में जिह्वा क्या है?
गुणियो के कोप द्वार की चाभी है॥
जब द्वार बन्द हो तो कैसे जाने कोई।
कि (उसके अन्दर) रत्न विक्रेता है या काच विक्रेता॥

क़ता

यद्यपि बुद्धिमानो के सामने चुप रहना शिष्टाचार है।
तथापि अवसर के समय यही ठीक है कि तू बोले॥
दो चीज़ें बुद्धि की लज्जा हैं—दम साध लेना।
बोलने के समय, और बोलना चुप रहने के समय॥

सक्षेप में, उससे बातचीत न करना मैंने उचित न समझा। और उसके साथ वार्तालाप से मुंह मोडना (मैंने) सज्जनता नही समझा, क्योकि (वह) अन्तरग मित्र था और सच्चे इरादे का था।

बैंत

जब तू लडे तो किसी ऐसे आदमी से लड।
कि जिससे प्रयोजन सिद्ध हो या पलायन सम्भव हो॥

आवश्यकतानुसार हम बातें करने लगे, और तफरीह करते हुए बाहर जाने लगे। वसन्त काल में जब कि शिशिर के कोपचिह्न शान्त हुए और गुलाब की समृद्धि के दिन आये।

बैंत

परिधान हरा पेडो पर (ऐसे शोभित था)।
जैसे सौभाग्यशालियो के ईद के वस्त्र॥

क़ता

जलाली सवत् के उर्दे बिहिश्त (चैत्र मास) के प्रथम दिन।
बुलबुलें शाखाओ की वेदी पर गा रही थी॥
लाल फूलो पर ओस के मोती पडे थे।
जैसे पसीना (आया हो) गालो पर कुपित कामिनी के॥

वह रात उपवन में एक मित्र के साथ गुज़ारने का अवसर पडा।
स्थान आनन्द और प्रमोद का था, और वृक्ष मनोहर और गुथे हुए थे।
मानो—चित्रविचित्र कांच के मनके उसकी जमीन पर बिखरे हुए थे।
और सितारो के गुच्छे उसकी द्राक्षालताओ पर लटके हुए थे।

पदम्

विदुषो वदने जिह्वा बुधैरत्रेक्ष्यते कथम्?।
गुणज्ञानामगारस्य धनकोषस्य कुञ्चिनी॥ ६०॥
दत्तागलगृहद्वारे केनचिज्ज्ञायते कथम्।
तत्रास्ते रत्नविक्रेता ह्यथवा काचविक्रयी॥ ६१॥

पदम्

अथ बुद्धिमतामग्रे मौन सद्वृत्तगम्मतम्।
तथाप्यवसरे प्राप्ते निवचन हि साम्प्रतम्॥ ६२॥
द्वौ हि प्रज्ञापराधौ स्त कथितौ हि मनीषिभि।
वचनावसरे मौन मौनस्यावसरे कथा॥ ६३॥'

अन्ततो गत्वा, ततो वाग्विरामो मया समीचीनो न मत। ततो विमुखता चाह सज्जनता नामसि। यत सोऽन्तरङ्ग सुहृन्ममासीत् सत्यसकल्पश्च।

श्लोक

युद्धस्यावसरे प्राप्ते युद्ध्येया केवल यदि।
तत प्रयोगसिद्धिर्वा शक्यते वा पलायनम्॥ ६४॥

यथावश्यकमावा वाग्व्यवहारमारप्स्वहि, विनोद कुर्वाणौ च पाद सञ्चारविहारमक्रप्स्वहि। अथ वसन्ततौं, शान्ते च हेमन्तकोपे पुष्पाणा समृद्धिकाल सप्राप्त।

श्लोक

रराज हरित पट्ट तरूणा तरुण तथा।
सौभाग्यसुप्रसन्नाना पर्वीय कञ्चुक यथा॥ ६५॥

पदम्

जलालीवत्सरस्याथ चैत्रस्य प्रथमे दिने।
गायन्ति मधुरैरच्चै शाखापीठेषु कोकिला॥ ६६॥
रक्तपाटलपुष्पेषु भासन्ते जलबिन्दव।
प्रियारोषारुणे गण्डे यथा प्रस्वेदबिन्दव॥ ६७॥

ता शर्वरीमहमुपवने केनचिन्मित्रेण सार्धमनैषम्। आमोदपूर्ण हि नाम तदधिष्ठान, मनोहरा ग्रथितशाखाश्च तत्रत्यतरवस्तत्र काचमणय आस्तीर्णा इव भुवि। द्राक्षालतावलम्बीनि नक्षत्राणीव च द्राक्षाफलानि।

قطعه

رَوْضَةٌ مَاءُ نَهْرِهَا سَلْسَال
دَوْحَةٌ سَجْعُ طَيْرِهَا مَوْزُوْن *

آں پر ار لالهای رنگارنگ
ویں پر ار میوهای گوناگوں *
باد در سایهٔ درختانش
گسترانید فرش بوقلموں *

بامدادان که خاطر باز آمدن بر رای نشستن غالب آمد ـ دیدمش دامنی پر از گل و ریحان و سنبل و ضیمران فراهم آورده ـ و رغبت شهر کرده * گفتم ـ گل بوستان‌را چنانکه دانی بقائی ـ و عهد گلستان‌را وفائی باشد ـ و حکما گفته‌اند ـ هرچه دیر نپاید دلبستگی‌را نشاید * گفتا ـ طریق چیست؟ گفتم ـ برای نزهت ناظران و فسحت حاضران کتاب گلستان تصنیف توانم کردن ـ که باد خزان‌را بر اوراق او دست تطاول نباشد ـ و گردش زمان عیش ربیعش بطیش خریف مبدل نکند *

مثنوی

بچه کار آیدت ز گل طبقی؟
از گلستان من ببر ورقی *
گل همیں پنج روز و شش باشد
وین گلستان همیشه خوش باشد *

حالی که من این بگفتم ـ دامن گل بریخت ـ و در دامنم آویخت ـ که الکریمُ اذَا وَعَدَ وَفیٰ * فصلی در همان روز اتفاق بیاض افتاد ـ در حسن معاشرت و آداب محاورت ـ در لباسی که متکلمان‌را بکار آید ـ و مترسلان‌را بلاغت بیفزاید * فی الجمله هنوز از گل بوستان بقیتی مانده بود ـ که کتاب گلستان تمام شد ـ و تمام آنگه شود بحقیقت ـ که پسندیده آید در بارگاه جهان پناه ـ سایهٔ کردگار ـ پرتو لطف پروردگار ـ خداوند زمان ـ کهف امان ـ المُؤیّد من

क़ता (वहरे ख़फ़ीफ़)

रोज़तुन् माउ नह्‌रिहा सल साल।

दौहतुन् सज्‌उ तैरिहा मौज़ू॥

आं पुर'ज़ लालहाय रंगारंग।
वीं पुर'ज़ मेवाहाये गूनागूं॥
वाद दर साया ए दरख़्तानश्।
गुस्तरानीद फ़र्शे बूक़लमूं॥

वामदादान कि ख़ातिरे वाज़ आमदन् वर राये निशस्तन् ग़ालिब आमद, दीदमश् दामने पुर अज़ गुलो-रेहानो-सुम्बुलो-जैमुरां फराहम आवुर्दा व रग़बते शह्‌र कर्दा। गुफ़्तम्—'गुले बोस्तांरा चुनांकि दानी वकाये—व अह्‌दे गुलिस्तांरा वफ़ाये न वाशद। व हुकमा गुफ़्ता अन्द—हर चि देर न पायद दिलवस्तगी रा नशायद।' गुफ़्ता—'तरीक़ा चीस्त?' गुफ़्तम्—'वराये नुज़हते नाज़िरां व फ़ुसहते हाज़िरां किताबे गुलिस्तां तसनीफ़ तवानम् कर्दन् कि वादे ख़िज़ां रा वर औराक़े ऊ दस्ते ततावुल न वाशद, व गर्दिशे ज़मां ऐशे रबीअश व तैशे ख़रीफ़ मुबद्दल न कुनद।'

मसनवी (वहरे ख़फ़ीफ़)

व चिकार आयदत ज़ि गुल तवके।
अज़ गुलिस्ताने मन् विवर वरके॥
गुल हमी पंज रोज़ो शश वाशद।
वीं गुलिस्तां हमेशा ख़ुश वाशद॥

हाले कि मन ईं विगुफ़्तम्, दामने गुल विरेख़्त, व दर दामनम् आवेख़्त-कि—'अल करीमु इज़ा वअद वफ़ा।' फ़स्ले दर हमां रोज़ इत्तिफ़ाक़े वियाज़ उफ़्ताद—दर हुस्ने मआशरत व आदावे मुहावरत—दर लिवासे कि मुतकल्लिमां रा व कार आयद-व मुतरस्सिलां रा वलाग़त वियफ़ज़ायद। फ़ि'ल् जुमला हनोज़ अज़ गुले वोस्तां वक़ीय्यते मांदा वूद—कि किताबे गुलिस्तां तमाम शुद, व तमाम आंगह शवद व हक़ीक़त कि पसन्दीदा आयद दर वारगाहे जहांपनाह—सायाए किदगार—परतवे लुत्फ़े परवरदगार—ख़ुदावन्दे ज़मां—कहफ़े अमां—अल मुवय्यद मिन-

क़ता

उद्यान जिसकी नहरो का जल ठण्डा-मीठा।
वृक्षकुञ्ज, लय जिसके पक्षियो की रागवद्ध ।।
वह रग विरगे मोतियो से भरा हुआ।
और यह तरह तरह के फलो से परिपूर्ण ।।
पवन ने उसके वृक्षो की छाया के नीचे।
विछा रखा था एक फर्श वैविध्यपूर्ण ।।

अगले दिन सवेरे, जव कि वापिस लौटने की इच्छा ठहरने की राय पर प्रवल हुई, मैंने उस (मित्र) को देखा (कि उसने अपना) दामन गुलाव-रेहाँ-सुम्वुल और जैमुराँ से भर रखा है और नगर की ओर प्रवृत्त हुआ है। मैंने कहा—'जैसा कि तुम जानते हो—उपवन के फूलो के जीवन का और उपवन की वफा का भरोसा नही होता। और पण्डितो ने कहा है कि जो चिरस्थायी न हो वह मनोनिवेश के योग्य नही है।' उसने कहा—'उपाय क्या है?' मैंने कहा—'पाठको की प्रीति और उपस्थितो (सज्जनो) की प्रसन्नता (सन्तोप) के लिये मैं गुलिस्ताँ नामक पुस्तक का प्रणयन कर सकता हूँ कि शिशिर पवन का जिसके पत्रो पर अत्याचार सम्भव नही होगा, और कालचक्र उसकी वासन्ती शोभा को पतझड के आवेश के द्वारा परिवर्तित नही कर सकेगा।'

मसनवी

तेरे किस काम आयेगी गुलाव की एक पखुडी।
मेरे गुलिस्तान से एक पत्र ले जा।।
गुलाव पाँच या छै रोज रहता है (रहेगा)।
और यह गुलिस्ताँ हमेशा खिला रहेगा।।

जैसे ही मैंने यह कहा, उसने दामन से फूल फेंक दिये, और मेरा दामन पकड लिया—कि 'जब उदार व्यक्ति प्रतिज्ञा करता है तो उसे पूरा करता है।' उसी दिन अपनी पुस्तक में लिखने का सयोग पड गया—वार्त्तालाप का सौन्दर्य (सातवाँ अध्याय) और सगति का शिष्टाचार (आठवाँ अध्याय)। ऐसे रूप में कि व्याख्यान दाताओ के लिये उपयोगी हो और लेखको की वाग्मिता वढ़ाये। सक्षेप में, अभी वाग के फूलो में से कुछ वाकी थे (वसन्त चल ही रहा था) कि गुलिस्ताँ ग्रन्थ पूरा हो गया। और वास्तव में तो तव पूरा होगा कि जव सम्राट् के दरवार में पसन्द किया जायगा (जो कि है—) परमात्मा की छाया, पालनहार (प्रभु) की कृपा-किरण है, पृथ्वी के

भूमिका

पदम्

तत्रारामे हि केदारा वहन्तो मधुर जलम्।
इतो विस्तीर्णवृक्षेषु श्रूयते पक्षिणा रुतम् ।। ६८ ।।
स पूर्णो विविधच्छायैर्मुक्ताकल्पैश्च सीकरै ।
एष वहुविधै रुच्यै सम्भृत फलवद्द्रुमै ।। ६९ ।।
प्रवातस्तत्र वृक्षाणा छायायामुपसिक्तवान्।
पत्रपुष्पादिभिर्भूमि वैविध्येनोपसेविताम् ।। ७० ।।

अथापरेऽहनि प्रत्यूपे प्रतिनिवर्तनेच्छाऽऽरामरिरमाया वलीयसी जाता, तन्मित्र पूरितदुकूल सेवती-चमेली-वकुलादिपुष्पैश्चादर्श नगराभिमुख च प्रवृत्तमिति। मयाऽभिहितम्—'जानात्येव भवान् आरामपुष्पाणा विकचत्व पुष्पोद्यानस्य च समृद्धिश्चिर न तिष्ठति। यथाहु पण्डिता—"यश्च स्यादचिरस्थायी मनस्तत्र न योजयेत्"।' सोऽवदत्—'कस्तत्रोपाय इति?' अहमवोचम्—'दर्शकाना च प्रीत्यर्थं सन्तोषार्थं सता तथा। पुस्तक पुष्पलोकाख्य प्रणेतु शक्यते मया।। २ ।। न यत्र हिमवातस्यात्याचार प्रभवेत् किल। कालोऽप्यस्य वसन्तस्य श्रिय नाहत्यपोहितुम्।' ।। ३ ।।

गाथा

कुसुमस्य दलेनाथ कि स्यात्ते कार्यसाधनम्।
मदीयात् पुष्पलोकात् त्व प्रणीयाश्च दल सकृत् ।। ७१ ।।
पञ्च वा षड्दिन यावत् पुष्पश्रीरभितिष्ठति।
मदीय पुष्पलोकोऽय श्रीसम्पन्न सनातन ।। ७२ ।।

यदाहमेवमुक्तवान्, स स्वस्माद् दुकूलात् पुष्पनिचय व्यसर्जत्, ममाशुक चाग्रहीदय ब्रुवाण—'उदारो दत्तवाक्य च सर्वथा परिपालयेत्।' तस्मिन्नेवाह्नि ग्रन्थस्य द्वावध्यायौ वार्त्तालापस्य सौन्दर्य सङ्गतेश्च शिष्टाचारमधिकृत्य तथा प्राणैषीय यथा व्याख्यातॄणा कार्यसाधन लेखकानाञ्च वाग्वृद्धिस्ततो भूयादिति। अल वहुना, यावदुद्यानपुष्पाणा न सर्वथा विनिपातस्तावत् पुष्पलोक समाप्ति गत। परन्तु वस्तुत एन तदैव समापित मन्स्ये यदाय ग्रन्थ सम्राजो राजसभायामनुमतो भविष्यतीति। यो हि-परमात्मनश्छायाकल्प, विश्वपालस्य कृपाकिरण, पृथ्वीपति, रक्षास्थानम्, स्वर्गालिलव्धसहाय,

السَّمَاءِ - المَنْصُورُ عَلَى الأَعدَاءِ - عَضُدُ الدَّولة القَاهِرَةِ - سِرَاجُ المِلَّةِ البَاهِرَةِ - جَمَالُ الأَنَامِ - مَفْخَرُ الاِسْلَامِ - سَعْدُ بن اتابك الأَعظَمِ - شاهنشاهُ المُعَظَّمِ - مالكُ رقابِ الأُمَمِ - مولى مُلُوكِ العَرَبِ و العَجَمِ - سُلطَانُ البَرِّ و البَحْرِ - وارثُ مُلكِ سُلَيمانَ - مُظَفَّرُ الدُّنيا و الدِّين - ابو بكر بن سعد بن زنگی اَدَامَ اللهُ اِقبَالَهُمَا و ضَاعَفَ اِجْلَالَهُمَا و جَعَلَ اِلَى كُلِّ خَيرٍ مَآلَهُمَا و بكرشمهٔ لطف خداوندی مطالعه فرماید *

قطعه

گر التفات خداوندیش بیاراید
نگار خانهٔ چینی و نقش ارژنگیست *
امید هست که روی ملال در نکشد
ازین سخن - که گلستان نه جای دلتنگیست *
علی الخصوص که دیباچهٔ همایونش
بنام سعد ابو بکر سعد بن زنگیست *

در مکارم اخلاق امیر عادل امیر فخر الدین
ادام الله علوّه

بکر عروس فکر من از بی جمالی سر بر نیارد - و دیدهٔ یاس از پشت پای خجالت بر ندارد - و در زمره صاحب دلان متجلی نشود - مگر آنگه که متحلی گردد بزیور قبول امیر کبیر - عامل - عادل - مؤید - مظفر - منصور - ظهیر سریر سلطنت - مشیر تدبیر مملکت - کهف الفقراء - ملاذُ الغُرباءِ - مُربّی الفُضلاءِ - مُحِبُّ الاَتقياءِ - غياثُ الاسلامِ و المُسلِمِينَ - عُمدَةُ المُلُوكِ و السّلاطِينَ - ابو بكر

'स्समा—अल् मन्सूरु अल'ल् आदाय-अज़दु'द्दौलति'ल् काहिरति—सिराजु'ल् मिल्लति'ल् बाहिरति-जमालु'ल् अनाम-मफ़्ख़रु'ल् इस्लाम—साद बिन् अताबकि'ल् आज़मु-शाहन्शाहु'ल् मुअज़्ज़मु-मालिकु रिक़ाबि'ल् उमम—मौला मुलूकि'ल् अरब व'ल् अजम—सुल्तानु'ल् बर्रि व'ल् बह्रि—वारिसु'ल् मुल्कि सुलेमान—मुज़फ़्फ़रु'द्दुनिया व'द्दीन—अबूबक्र बिन् साद बिन् ज़ंगी—अदाम'ल्लाहु इक़बालहुमा ! व ज़ाअफ़ इजलालहुमा ! व जअल इला कुल्लि ख़ैरिन् मआलहुमा ! व ब करिश्माए लुत्फ़े ख़ुदावन्दी मुतालआ फ़रमायाद ।

क़ता (बहरे मुज्तस्)

गर इल्तिफ़ाते ख़ुदावन्दियश् बियारायद ।
निगारख़ानाए चीनी व नक़्शे अरज़ंगीस्त ।।
उमीद हस्त कि रूए मलाल दर न कशद ।
अज़ीं सुख़ुन कि गुलिस्ताँ नै जाये दिलतंगीस्त ।।
अल ल ख़ुसूस कि दीबाचाए हुमायूनश् ।
ब नाम सादे अबूबक्र साद बिन् ज़ंगीस्त ।।

दर मकारिमे इख़्लाक़ अमीरे आदिल अमीरे फ़ख़रु'द्दीन-
अदाम'ल्लाहु उलुव्वहु

बिक्रे अरूसे फ़िक्रे मन् अज़ बेजमाली सर बर नयारद—व दीदये यास अज़ पुश्ते पाये ख़िजालत बर न दारद—व दर ज़ुम्रए साहिब दिलाँ मुतजल्ली न शवद—मगर आँगह कि मुतहल्ली गरदद ब ज़ेवरे क़बूले अमीरे-कबीरे-आमिल-आदिल-मुवय्यद-मुज़फ़्फ़र-मन्सूर-ज़हीरे सरीरे सल्तनत-मुशीरे तदबीरे ममलुकत—कह्फ़ु'ल फ़ुक़राय—मलाज़ु'ल् ग़ुरबाय-मुरब्बीयु'ल् फ़ुज़लाय मुहिब्बु'ल् अत्क़ियाय-ग़ियासु'ल इस्लाम व'ल् मुस्लिमीन—उम्दतु ल मुलूकि व'स्सलातीन—अबूबक्र

स्वामी, सुरक्षा के शरणस्थल, आकाश से सहायता प्राप्त, शत्रुञ्जय, विजेता राज्य के बाहुबल, जाज्वल्यमान् धर्म के दीपक, मानवता के सौन्दर्य, इस्लाम के गौरव, महान् अतावक के वंशज साद, महान् सम्राट्, राष्ट्रों के ग्रीवाधिपति, अरब और ईरान के राजाधिराज, पृथ्वी और सागर के सुलतान, सुलेमान के राज्य के उत्तराधिकारी, विश्व और धर्म के विजेता, अबूबक्र बिन् साद बिन् जंगी—सदा बनाये रखे परमात्मा प्रताप दोनों का (बापबेटों का) और बढ़ाये दोनों का तेज, और लगाये पूर्ण कल्याण की ओर दोनों के अजामों को, और जब वे स्वामिजनोचित कृपाभाव से इसे पढ़ेंगे।

भूमिका

शत्रुञ्जय, दोरिव जयिष्णो राज्यस्य, जाज्वल्यमानधर्मप्रदीप, मनुवंशभूषण, इस्लामगौरव, महानतावकात्मज साद, महान् सम्राट्, राष्ट्राणां कण्ठाधीश, आरब्यैरानगेशानामधिराज, सागरागराधीश, सुलेमानस्य राज्यस्योत्तराधिकारी, धरणी-धर्मविजेता, अबूबक्र बिन् साद बिन् जंगी, चिर स्थेयादमुयो पितापुत्रयो प्रताप, वर्धिषीष्ट चैनयोस्तेज, पुण्याभिमुख च प्रचोदयादेनयो धर्मफल परमात्मा। यदासौ स्वामिभावेन ममैना शृणुयात्कृतिम्। तदैना सफलीभूता मन्स्ये सम्यक् समादृताम्।

कता

यदि उनकी स्वामिजनोचित कृपा (इसे) मण्डित करे।
तो यह चीनी चित्रशाला और अरजंगी का चित्र है॥
आशा है कि वे खिन्नमुख न होंगे—इस वाक्य से।
क्योंकि गुलिस्तां चित्त खेद का स्थान नहीं है॥
विशेषतया तब, जब कि इसकी महान् भूमिका।
अबूबक्र बिन् साद बिन् जंगी के नाम पर (समर्पित) है॥

पदम्

यद्यस्य स्वामिनो दृष्टि भ्रमते कृपया खलु।
चीनीया चित्रशालैपारजङ्गीया भवेदियम्॥ ७३॥
आशास्महेऽस्मदाख्यानात् प्रभुर्नैवावसत्स्यति।
पुष्पलोके न चैवास्ति विषादावसर क्वचित्॥ ७४॥
विशेषतो यदैतस्या आमुख च समर्पितम्।
अबूबक्र बिन साद जगिन भूभुज प्रति॥ ७५॥

अमीर आदिल अमीर फख़रु'द्दीन की चरित्र प्रशस्ति में परमात्मा उनके उच्च पद को बनाये रखे

पुनश्च—मेरी कल्पना वधू अपनी रूपहीनता के कारण तब तक सिर न उठायेगी, और निराश नेत्रों को लज्जा के चरणों से न उठायेगी और सहृदयों की सभा में भासमान न होगी, जब तक कि वह स्वीकृति के अलंकार से मण्डित न होगी (द्वारा) महान्, अमीर, कर्मकाण्डी, न्यायकारी, सहायताप्राप्त, विजेता, शत्रुञ्जय, साम्राज्य के सिंहासन के रक्षक, राज्य के सलाहकार, दीनों के शरण, निर्धनों के आश्रय, विद्वानों के संरक्षक, परहेज़गारों के प्रेमी, इस्लाम और मुसलमानों के फरियाद की जगह, राजाओं और महाराजाओं के स्तम्भ—अबूबक्र

चरितप्रशस्तौ न्यायशीलस्योपराजस्य फख़रु'द्दीनस्य रक्षेदुच्चपदवीमस्य परमेश

पुनश्च—मामकीना कल्पनावधूटी आत्मन सौन्दर्यहीनतया न तावन्नतमूर्धानमुन्नस्यति, न च लज्जानिबद्धपाददृष्टिमुत्थापयिष्यति, न च सहृदयाना सभाया भास्वती न यावत् स्वीकरणालङ्कारेण मण्डिता स्यादनेन महोपराजेन, प्रभुभक्तेन, न्यायकारिणा, दैवलब्ध-सहायेन, विजेत्रा, शत्रुञ्जयेन, साम्राज्यस्य सिंहासनस्य च रक्षकेण, राज्यस्य परामर्शकेन, दीनाना शरण्येन, निर्धनानामाश्रयेण, विदुषा संरक्षकेण, व्रतीना स्नेहिना, इस्लामस्य मुसलमानाना च शुश्रूषास्थलेन, राज्ञा राजाधिराजाना च राज्यस्तम्भेन, अबूबक्र

بن ابی نصر - اَطَالَ اللهُ عُمرَهُ! وَ اَجَلَّ قَدرَهُ! وَ شَرَحَ صَدرَهُ! وَ ضَاعَفَ اَجرَهُ! که ممدوح اکابر آفاقست - و مجموعهٔ مکارم اخلاق *

بیت

هر که در سایهٔ عنایت اوست
گنهش طاعتست و دشمن دوست *

بر هریک از سائر بندگان و حواشی خدمتکاران خدمتی معین است - که اگر در ادای برخی از آن تهاون و تکاسل روا دارند - هر آینه درمعرض خطاب آیند و در محل عتاب - مگر برین طائفهٔ درویشان - که شکر نعمت بزرگان بر ایشان واجب است - و ذکر جمیل و دعای خیر بر همگنان فرض - و ادای چنین خدمتی در غیبت اولیتر ست ز حضور - که آن بتصنع نزدیکست و این از تکلف دور * باجابت مقرون باد!

قطعه

پشت دوتای فلک راست شد از خرمی
تا چو تو فرزند زاد مادر ایام‌را *
حکمت محض است - اگر لطف جهان آفرین
خاص کند بندهٔ مصلحت عام‌را *
دولت جاوید یافت هر که نکو نام زیست
کز عقبش ذکر خیر زنده کند نام‌را *
وصف ترا گر کند - ور نکند اهل فضل
حاجت مشاطه نیست روی دلآرام‌را *

عذر تقصیر خدمت و موجب اختیار عزلت

تقصیری و تقاعدی که در مواظبت خدمت بارگاه خداوندی میرود بنابر آنست - که طائفهٔ از حکماء هند در فضائل بزرجمهر سخن میگفتند - و در آخر جز این عیبش نتوانستند گفت - که در سخن گفتن بطی است - یعنی درنگ بسیار میکند و مستمع را بسی منتظر باید بود

विन् अबीनस्र—अताल'ल्लाहु उम्रहु! व'जल्ल क़द्रहु! व शरह सद्रहु! व ज़ाअफ अज्रहु! कि ममदूहे अकाबिरे आफाकस्त—व मजमुआए मकारिमे अख़लाक।

बैत (बहरे ख़फ़ीफ़)

हर कि दर सायाए इनायते ओस्त।
गुनहश् ताअतस्तो दुश्मन दोस्त॥

बर हर यक अज़ साइरे बन्दगान व हवाशी खिदमतगारान खिदमते मुअय्यनस्त कि अगर दर अदाय बिरख़े अज़ाँ तहावुन व तकासुल रवा दारन्द-हर आयीना दर मारिज़े खिताब आयन्द व दर महल्ले इताब-मगर बरीं तायफाए दरवेशाँ—कि शुक्रे निअमते बुज़ुर्गां बर ऐशाँ वाजिबस्त—व ज़िक्रे जमील व दुआए ख़ैर बर हमगिनान फर्ज़—व अदाये चुनी खिदमते दर ग़ैबत औलातरस्त ज़ि हुज़ूर—कि आँ ब तसन्नुअ नज़दीकस्त व ईं अज़ तकल्लुफ़ दूर। ब इजाबत मकरून बाद।

क़ता (बहरे मुसरिह)

पुश्ते दूताए फलक रास्त शुद'ज़ खुरमी।
ता चु तो फ़ज़न्द ज़ाद मादरे अय्याम रा॥
हिकमते महज़स्त अगर लुत्फे जहाँ आफरी।
ख़ास बुनद बन्दये मस्लहते आम रा॥
दौलते जावेद यापत हर कि निकू नाम ज़ीस्त।
कज़ उकबश् ज़िक्रे ख़ैर ज़िन्दा कुनद नाम रा॥
वस्फे तुरा गर कुनद वर न कुनद अहले फ़ज़्ल।
हाजते मश्शाता नेस्त रूए दिलाराम रा॥

उज़्रे तक़सीरे ख़िदमत व मूजिबे अख़्तियारे उज़्लत

तक्सीरे व तक़ाउदे कि दर मुवाज़बते खिदमते बारगाहे ख़ुदावन्दी मीरवद बिना बर आनस्त कि तायफाए अज़ हुकमाए हिन्द दर फज़ाइले बुज़ुजमिह्र सुख़ुन मीगुफ्तन्द—व दर आखिर जुज़ ईं ऐबश् न तवानिस्तन्द गुफ्त कि दर सुख़ुन गुफ्तन् बती अस्त—यानी दिरग बिस्यार मी कुनद व मुस्तमिअ रा बसे मुन्तज़िर बायद बूद

विन् अवी नस्र—परमात्मा उन्हें दीर्घायु करे। और उनका मान वढाये। और उनके मीने को खोले। और उनका पुण्यफल वढ़ाये। क्योकि वे दिगन्तव्यापी महापुरुषों के वन्दनीय हैं—और प्रशस्त गुणो के एकायन हैं।

बैंत

जो कोई इनकी कृपा की छाया के नीचे रहता है।
उसके पाप पुण्य हो जाते हैं और शत्रु मित्र (हो जाते हैं)॥

इनके समस्त सेवको और गृहदासो के लियें एक सेवा नियत है कि यदि उसकी पूर्त्ति में थोडा भी आलस्य और प्रमाद करे, तव तो नि सन्देह कहने की जगह होती है और कोप का अवसर होता है, किन्तु साधुमण्डली से नही होता, क्योंकि आदरणीयों के उपकार की कृतज्ञता उनको उचित है, और प्रशसा और मगल कामना इनका कर्त्तव्य है, और ऐसी सेवा की अदायगी प्रत्यक्ष की अपेक्षा परोक्ष में अधिक ठीक रहती है, क्योंकि वह (प्रत्यक्ष प्रशसा) प्रदर्शन के निकट होती है, और यह (परोक्ष गुणकथन) तकल्लुफ से दूर होता है। इनकी प्रार्थनाएँ स्वीकृत हो।

कता

वृद्ध आकाश की दुहरी पीठ सीधी हो गयी प्रसन्नता से।
जव कि तू पुत्र जनमा कालमाता के॥
यह महान् वुद्धिमत्ता है, यदि जगत्सृष्टा प्रभु की कृपा।
लोक सामान्य के मगल के लिये किसी विशेष दास को नियुक्त करे॥
चिरन्तन सुख पाता है जिसका जीवन यशस्वी होता है।
क्योकि उसके वाद उसका सुस्मरण उसकी कीर्त्ति को जीवित रखता है॥
विद्वान् लोग तुम्हारी प्रशसा करे या न करे।
सुन्दरी के रूप को शृगार—दासी की अपेक्षा नही होती॥

कारण सेवा में त्रुटि का और एकान्त सेवन का

अपराध और फिसड्डीपन जो कि महाराजाधिराज के दरवार की सेवा में (अनुपस्थिति के द्वारा) हुआ है, उसका कारण यह है कि जैसा भारत की पडितमडली ने वुजुजमिह्र के पाण्डित्य के विषय में कहा था। अन्ततोगत्वा इसके अतिरिक्त उसका दोष नही वता सके कि (वह) शब्दोच्चारण में सुस्त है—अर्थात् देर वहुत करता है और

विन अवीनस्रेण, दीर्घायुष्य स लप्मीप्ट। मान चैवास्यवर्धनाम्।
हृत्कोष्ठ द्योतित भूयादेवता धर्मज फलम्॥ ४॥
सता स मनत वन्द्यो गुणाना चैकगश्रय॥

श्लोक

यश्चाप्याश्रयतेऽमुष्य कृपाच्छाया महात्मन।
दोपास् तस्य गुणायन्ते मित्रायन्ते ह्यरातय॥ ७६॥

सर्वेभ्यो हि चास्य सेवकेभ्य प्रतिजन सेवा नियता, तस्मिन् काय यदि किञ्चिदपि प्रमादालस्यमनुष्ठीयते तदैवास्य तेभ्य कोपावकाश न तत् पुन साधुभ्य। यत आदरास्पदाना कृपा कृतज्ञत्व हि नाम राजपुरुषाणा कर्तव्यमथ च गुणाख्यान स्वस्तिवाचन च कर्तव्य साधूनामिति। साध्वाचारश्च तावत् प्रत्यक्षात् परोक्ष एव श्रेयस्कर। कस्माद्—यत प्रत्यक्षप्रशस्ति प्रदर्शनकोट्यामन्तर्भुज्यते, परोक्ष-मगलाकाक्षा चाकृत्रिमा भवतीति।

एतस्य प्रार्थना सर्वा लब्धकामा इयु सदा॥ ६॥

पदम्

आकाशो हि धनु पृष्ठ आनन्दोच्छ्रितमेरुवान्।
यदा प्रकृतिमाता त्वा प्रेप्ठ पुत्रमजीजनत्॥ ७७॥
महाप्रपा जगत्सृष्टुर्दृश्यते चानुमीयते।
यतस्तेन नियुक्तस्त्व प्रजानामनुरञ्जने॥ ७८॥
चिरन्तनसुख लब्ध्वा सदाचारसमन्वित।
देहत्यागोपरान्तेऽपि सुकीर्तिर्जीवयेद्धि तम्॥ ७९॥
विद्वास शब्दविज्ञास्त्वा स्तुवन्ति यदि वा न वा।
शृङ्गारचेटकी जातु नैवापेक्षेत सुन्दरी॥ ८०॥

राजसेवाया प्रमादस्य निमित्तमेकान्तसेवनस्य च हेतु

योऽपराध प्रमादश्च मयाऽनुष्ठित श्रीमन्महाराजस्य राजद्वारसेवाया तस्य हेतुरुत्प्रेक्ष्यते यथा हि भारतवर्षस्य केनचिद् विद्वन्मण्डलेन वुजुज-मिहिरस्य पाण्डित्यमुदाहरन्नोच्यत। अन्ततो गत्वा वहुधा विमर्शयन्तोऽपि ते विद्वासो नैतदतिरिक्त किञ्चिच्छिद्रमन्वेष्टु शेकुरस्य 'विलम्ब-वागयमिति', अर्थात् चिरेणोदीरयति तथा च श्रोतु प्रतीक्षाखेद जनयति

تا وی تقریر سخن کند * بزر جمهر بشنید و گفت - اندیشه کردن که چه گویم به از پشیمانی خوردن که چرا گفتم *

ता वै तकरीरे सुखुने कुनद। बुज़ुर्जमिह्र बिशुनीदो गुफ़्त—'अन्देशा करदन् कि चि गोयम् बिह् अज़ पशेमानी खुरदन् कि चिरा गुफ़्तम्।'

مثنوی

سخندان پرورده پیر کهن
بیندیشد - آنگه بگوید سخن *
مزن بی تأمل بگفتار دم
نکو گوی - گر دیر گوئی چه غم؟
بیندیش - و آنگه بر آور نفس
و زان پیش بس کن که گویند - بس!
بنطق آدمی بهترست از دواب
دواب از تو به - گر نگوئی صواب *

मसनवी (बह्रे मुतक़ारिब)

सुखुनदाने परवरदा पीरे कुहन्।
बियन्देशद आँगह बिगोयद सुखन॥
मज़न बेतअम्मुल बिगुफ़्तार दम।
निकू गोय गर् देर गोयी चि ग़म॥
बयन्देश व् आँगह बर आवर नफ़स।
व ज़ाँ पेश बस कुन कि गोयन्द बस॥
ब नुत्क़ आदमी बहतरस्त अज़ दवाब।
दवाब अज़ तो बिह् गर न गोयी सवाब॥

فکیف در نظر اعیان و بزرگان حضرت خداوندی - عزّ نصره! که مجمع اهل دل است - و مرکز علماء متبحر - اگر در سیاقت سخن دلیری کنم شوخی کرده باشم - و بضاعت مزجات بحضرت عزیز آورده - و شبه در بازار جوهریان جوی نیرزد - و چراغ پیش آفتاب پرتوی ندارد - و منارهٔ بلند در دامن کوه الوند پست نماید *

फ कैफ़ दर नज़रे अयानो बुज़ुर्गाने हज़रते ख़ुदावन्दी अज़्ज़ नस्रहु! कि मज्मए अह्ले दिलस्त—व मरकज़े उलमाय मुतबह्हिर—अगर दर सयाकते सुख़ुन दिलेरी कुनम् शोख़ी करदा बाशम्—व बिज़ाअते मुज़्जात ब हज़रते अज़ीज़ आवुर्दा—व शबा दर बाज़ारे जौहरियान जवे नयरज़द—व चिराग़ पेशे आफ़ताब परतवे न दारद—व मीनारए बुलन्द दर दामने कोहे अलवन्द पस्त नुमायद।

مثنوی

هر که گردن بدعوی افرازد
دشمن از هر طرف برو تازد *
سعدی افتاده ایست آزاده
کس نیاید بجنگ افتاده *
اول اندیشه وآنگهی گفتار
پای پیش آمدست پس دیوار *
نخلبندم ولی نه در بستان
شاهدم من ولی نه در کنعان *

मसनवी (बह्रे ख़फ़ीफ़)

हर कि गरदन ब दावा अफ़राज़द।
दुश्मन'ज़ हर तरफ़ बरू ताज़द॥
सादी उफ़तादा ऐस्त आज़ादा।
कस नयायद ब जंग उफ़तादा॥
अव्वल अन्देशा वागहे गुफ़्तार।
पाय पेश आमदस्त पस दीवार॥
नख़्ल बन्दम् वले नै दर बुस्ताँ।
शाहिदम् मन् वले नै दर किनआँ॥

لقمان حکیم‌را گفتند - حکمت از که آموختی؟ گفت - ''از نابینایان - که تا جای نه بینند پای نه نهند'' *
قَدِّم الخُروجَ قَبلَ الوُلُوجِ *

लुक़मान हकीम रा गुफ़्तन्द—'हिकमत अज़ कि आमोख़्ती?'—गुफ़्त—'अज़ नाबीनायान—कि ता जाये नै बीनन्द पाय नै निहन्द।'
क़द्दिमि'ल् ख़ुरूज क़ब्ल'ल् वुलूजि।'

श्रोता को बहुत प्रतीक्षा करनी पडती है, तब वह शब्द मुह से बोलता है। बुजुजमिह्र ने यह सुनकर कहा कि—'(यह) विचार करना कि क्या कहूँ—अच्छा है पश्चात्ताप करने से कि मैं बोला क्यों।'

मसनवी

अनुभवी और वृद्ध शब्दज्ञ।
सोचते हैं तब बात कहते हैं॥
मत मार बिना सोचे बोलने में ज़ोर।
भला बोल—भले ही देर से बोलें तो क्या चिन्ता है॥
विचार कर, और तब सांस बाहर निकाल।
और उसके पहले बस कर दे कि लोग बस बस कहें॥
भाषण शक्ति के कारण मनुष्य पशुओ से अच्छा है।
पशु तुझसे अच्छे हैं यदि तू अच्छा नही बोलता॥

अत महाराज के सामन्तो और बुजुर्गों की सभा कि दृष्टि में (उनकी विजय प्रतापशाली हो!), जो कि सहृदयो का समुच्चय है और विद्यासागर पण्डितो का केन्द्र है, यदि मैं वाद-विवाद मे दिलेरी करता तो मेरी धृष्टता होती, यदि अकिञ्चन व्यापारिक माल को मैं प्यारे महाराज के पास ले जाता। और कांच की गुरियां जौहरियो के बाज़ार में जो भी नही लाती, और सूर्य के सामने दीपक एक भी किरण नही देता, और ऊँची से ऊँची मीनार अलवन्द पर्वत की तराई में नीची दिखती है।

मसनवी

वह हर आदमी जो कि दावे से गर्दन उठाता है।
दुश्मन हर तरफ से उस पर धावा करते हैं॥
सादी नम्र है और स्वतन्त्र है।
कोई नही आता लडने नम्र से॥
पहले विचार कर और फिर बोल।
पहले नीव आती (बनती) है पीछे दीवार॥
मैं भी गुलदस्ते बनाता हूँ पर बाग़ में नही हूँ।
मैं भी सुन्दर हूँ पर किनानवाला (यूसुफ) नही॥

लुक़मान पण्डित से पूछा गया कि—'आपने विद्वत्ता किससे सीखी?' उसने कहा—'अन्धो से, जो कि जब तक जगह को टटोल नही लेते पैर नही रखते।' 'घुसने से पहले निकलने का इन्तज़ाम कर।'

ततो वचनमभ्याहरतीति।' बुजुजमिह्र एतच्छ्रुत्वाह—
वर चिन्तेनि किं ब्रूया न खेद कथमब्रवम्॥

गाथा

वाणीवेत्ता हि यो वृद्धो वयसा विद्ययाऽथवा।
विचारयति प्राग्वाक्य ततो वाचमुदाहरेत्॥ ८१॥
मा कयोपश्रम कार्षी कदाचिदविचारयन्।
भद्र ब्रूयाश्च सञ्चिन्त्य विलम्बमविचारयन्॥ ८२॥
प्राग्विचार प्रकुर्वीथास्ततो वाचमुदाहर।
कुरु व्यवसितेनाल यावदुक्तोऽस्य 'ल खलु'॥ ८३॥
भाषणेन नर श्रेयानितरैं पशुभि सदा।
श्रेयास पशवस्त्वत्तो नो चेच्छ्रेयो हि ते वच॥ ८४॥

अत कथ श्रीमन्महाराजानामर्चिष्कल्पाना सामन्ताना वृद्धजनाना च दृष्ट्या—जयतितरा चैतेषा प्रतापसभा यत्र च सहृदयाना समूहो विदुषा विद्यासागराणा केन्द्रञ्चेति। तत्र यदि वाग्वैदग्ध्य दर्शयेयमकिञ्चन च वाणिज्य प्रेयसा महाराजाना सेवायामानयेय तर्हि धाष्ट्र्य मे स्यादिति। काचमणकाश्च रत्नविक्रेतानामापणे यवेभ्योऽपि न विक्रीयन्ते, प्रदीपश्च सूर्यस्याग्रे रश्मिमेक न प्रतिक्षिपति, अत्युच्चोऽपि विजयस्तम्भ अलिवन्द भूधर नातिशेते।

गाथा

गर्वोद्ग्रीवप्रवृत्त च वाग्वैदग्ध्यावलेपिनम्।
द्विषन्तोऽनुदिश चैनमनुधावन्ति सर्वत॥ ८५॥
निरवस्य स्थिर सादी स्वतन्त्रो वर्तते तथा।
निरवस्येषु नो कश्चिदुत्कुरुते कदाचन॥ ८६॥
धारयेथा पुरा चार्थं ततो वाचमुदीरये।
आधारो रोप्यते पूर्वं ततो भित्ति प्रचीयते॥ ८७॥
कतिचिच् चितपुष्पोऽस्मि नाहमारामसन्निभ।
रूपसौन्दर्ययुक्तोऽपि न चाह कनय्यां यथा॥ ८८॥

लोकमान्य पण्डित केचन पृष्टवन्तोऽथ 'कुतो वैदुष्यमधीतवानसि?' सोऽवदत्—'[illegible] पदमुद्धरन्तीति।'
'प्रवेशनाद्धि प्रागेव व्यवस्येर्निष्क्रम किल'॥ ७॥

مصراع

مردیت بیازمای و آنگه زن کن *

قطعه

گرچه شاطر بود خروس بجنگ
چه زند پیش باز روئین چنگ؟
گربه شیر است در گرفتن موش
لیک موشست در مصاف پلنگ *

اما باعتماد سعت اخلاق بزرگان ـ که چشم از عوائب زیردستان بپوشند ـ و در افشاء جرائم کهتران نکوشند ـ کلمهٔ چند بطریق اختصار از نوادر و امثال و اشعار و حکایات و سیر ملوک ماضیه درین کتاب درج کردیم ـ و برخی از عمر گرانمایه برو خرج * موجب تصنیف کتاب گلستان این بود ـ و بالله التّوفیق *

قطعه

بماند سالها این نظم و ترتیب
ز ما هر ذره خاک افتاده جائی *
غرض نقشیست کز ما باز ماند
که هستی‌را نمی بینم بقائی *
مگر صاحبدلی روزی برحمت
کند در کار درویشان دعائی *

امعان نظر در ترتیب کتاب و تهذیب ابواب ایجاز سخن مصلحت دید ـ تا این روضهٔ رعنا و حدیقهٔ علیا چون بهشت هشت باب اتفاق افتاد * ازین سبب مختصر آمد ـ تا بملالت نینجامد ـ و الله المُوَفِّقُ لاِتمامه *

مثنوی

در آن مدت که ما را وقت خوش بود
ز هجرت شش صد و پنجاه و شش بود *
مراد ما نصیحت بود ـ گفتیم
حوالت با خدا کردیم ـ و رفتیم *

मिसरा (वहरे हज़ज)

मर्दियत बयाज़माय व आँगह ज़न कुन।

क़ता (वहरे ख़फ़ीफ़)

गरचि शातिर बुवद ख़ुरोस व जंग।
चि ज़नद पेशे बाज़े रूमी चंग॥
गुर्बा शेरस्त दर गिरिफ़्तने मूश।
लेक, मूशस्त दर मुसाफ़े पलंग॥

अम्मा व ऐतमादे सिअते अख़्लाक़े बुज़ुर्गान कि चश्म अज़ अवाइबे ज़ेरदस्तां बिपोशन्द—व दरे इफ़शाए जरायमे किहतरां न कोशन्द—कलमाए चन्द ब तरीक़े इख़्तिसार अज़ नवादिर व अमसाल व अशआर व हिकायात व सियरे मुलूके माज़ीया दरी किताब दर्ज करदेम—व बिरख़े अज़ उम्रे गरांमाया बरू ख़र्ज। मूजिबे तसनीफ़े किताबे गुलिस्तां ईं बूद—व बि'ल्लाहि'त्तौफ़ीक़।

क़ता (वहरे हज़ज)

बिमानद साल्हा ईं नज़्मो तरतीब।
ज़ि मा हर ज़र्रा ख़ाक उफ़तादा जाये॥
ग़रज़ नक़्शेस्त कज़ मा बाज़ मानद।
कि हस्ती रा न मीबीनम् बक़ाये॥
मगर साहिब दिले रोज़े ब रहमत।
कुनद दर कारे दरवेशां दुआये॥

इमआने नज़र दर तरतीबे किताब व तहज़ीबे अबवाब ईजाज़े सुख़ुन मस्लेहत दीद—ता ईं रौज़ाए राना व हदीक़ाए उलिया चूं बिहिश्त बहश्त बाब इत्तिफ़ाक़ उफ़्ताद। अज़ीं सबब मुख़्तसर आमद—ता ब मलालत नयन्जामद, व'ल्लाह'ल् मुवफ़्फ़िक़ु लि इतमामिहि।

मसनवी (वहरे हज़ज)

दरां मुद्दत कि मारा वक़्ते ख़ुश बूद।
ज़ि हिजरत शश सदो पंजा व शश बूद॥
मुरादे मा नसीहत बूद गुफ़्तेम।
हवालत बा ख़ुदा करदेमो रफ़्तेम॥

मिसरा

(पहले) पौरुष जांच ले और तब शादी कर।

फता

यद्यपि मुर्गा लड़ने में वीर होता है।
क्या लडेगा पीतल के पजो वाले बाज से ॥
बिल्ली शेर होती है चूहे को पकडने में।
किन्तु चूहा होती है शेर से लडने मे ॥

किन्तु बडो के चरित्र की उदारता के विश्वास के कारण कि वे असमर्थों के दोषो के प्रति आँखे मूद लेते हैं, और छोटो के अपराधो को प्रकट करने की चेष्टा नही करते, हमने कुछ शब्दो मे सक्षेप से विचित्र घटनाएँ, उदाहरण, श्लोक, कथाएँ और प्राचीन नरेशो के गुणो को इस ग्रन्थ में निबद्ध किया है, और बहुमूल्य जीवन का एक भाग इस पर खर्च किया है। यही गुलिस्तॉं नामक ग्रन्थ की रचना का कारण है। इसकी सफलता भगवान् के हाथ है।

फता

रहेगी वर्षो तक यह रचना और क्रम (पुस्तक)।
जब कि हमारी देहधूलि का कण कण बिखर जायेगा ॥
तात्पर्य यह कि यह हमारे उपरान्त भी रहेगा।
क्योकि जीवन की सत्ता की चिरन्तनता मैं नही देखता ॥
सिवा इसके कि कोई भक्त किसी दिन दया के लिये।
करेगा (हम जैसे) भिक्षुको के लिये ईश्वर से प्रार्थना ॥

पुस्तक के क्रम को और अध्यायो की व्यवस्था पर ध्यान देने पर शब्दो को सक्षिप्त करना ही उचित समझा, जिससे कि यह रुचिर उद्यान और श्रेष्ठ कुञ्ज स्वर्गोद्यान के सदृश आठ द्वार वाला हो गया। (इसे) इस कारण सक्षिप्त किया ताकि अरुचि न हो। और परमात्मा ने इसे कृपापूर्वक समाप्ति तक पहुँचाया।

मसनवी

उस समय हमारा समय आनन्दमय था।
हिजरत से छै सौ छप्पन (वर्ष) हुए थे ॥
हमारा उद्देश्य शिक्षा देना था।
हमने (तुम्हें) परमात्मा को सौपा और चल दिये ॥

अर्धाली

प्राक् पौरुष परीक्षेथास्ततो दारपरिग्रह ॥ ८९ ॥

पदम्

अपिचेत् ताम्रचूडोऽस्तु युद्धसन्नद्धविक्रम ।
अभियोक्तु न शक्नोति स श्येनेनारपाणिना ॥ ९० ॥
सिंहायते हि मार्जारोऽभियुक्तो मूषकेण च।
अभियुक्तश्च सिंहेन स पुनर्मूषकायते ॥ ९१ ॥

तथापि ज्यायसामुदारचरितप्रत्ययादथ तेऽशक्तानां स्खलन प्रति मीलितेक्षणा भवन्ति, कनीयसामपराद्ध च नोद्घाटितुमुत्सहन्ते, अस्माभिरल्पाक्षरसक्षेपेण चित्राणि घटितानि, दृष्टान्तानि, पदानि, आख्यानानि, प्राचीनाना भूभुजा गुणगुम्फितानि चेह ग्रन्थे निबद्धानि, बहुमूल्यस्य जीवनस्याधिकाशभाग इह व्यतीतश्चेति। अयमेव च पुष्पलोकस्यनिबन्धहेतुरिति। दैवाधीन हि चास्य साफल्यमिति।

पदम्

अनेकवर्षपर्यन्तात् स्याताऽस्य ग्रन्थसञ्चय ।
यावन्नो देहशेषस्य चिह्नमेक न मिष्यते ॥ ९२ ॥
अस्मत्पश्चादय तिष्ठेदेतद् ग्रन्थ प्रयोजनम्।
जीवितेन न पश्यामि चाभिलापप्रपूरणम् ॥ ९३ ॥
कदाचिन्न्यायकाले च भक्त कोऽपि भविष्यति।
अस्मादृशाञ्च भिक्षूणा कृते प्रार्थयिता क्षमाम् ॥ ९४ ॥

ध्याय ध्याय पुस्तकक्रममध्यायव्यवस्था च वाक्सक्षेप एव श्रेयोऽदर्शम्। ततो हि रुचिरमिदमुद्यान श्रेष्ठ च कुञ्ज त्रिविष्टपमिवाष्ट-द्वार सञ्जातम्। अत एव सक्षेपक्रम । यतोऽरुचिर्न स्यादिति।
प्रभुरेन ग्रन्थ कृपया समापनमनयदिति।

गाथा

कालोऽस्माभि सुख नीतश्चास्मिन् ग्रन्थनिबन्धने।
महाप्रस्थानवर्षस्य पट्पञ्चाशच्च पट्शतम् ॥ ९५ ॥
उपदेशो ह्यभिप्रेत उक्तवन्तो वय तथा।
ईश्वरार्पितमेवैन कृत्वाऽस्माभिस्तु गम्यते ॥ ९६ ॥

مقدمه

باب اول — در سیرت پادشاهان *

باب دوم — در احلاق درویشان *

باب سیوم — در فصیلت قناعت *

باب چهارم — در فوائد حاموشی *

باب پنجم — در عشق و جوانی *

باب ششم — در صعف و پیری *

باب هفتم — در تاثیر تربیت *

باب هشتم — در آداب صحبت *

حاتمهٔ گلستان

मुक़द्दमा

वावे अव्वल—दर सीरते पादशाहान्

वावे दुवुम्—दर अख्लाक़े दरवेशान्

वावे सिवुम्—दर फ़ज़ीलते कनाअत

वावे चहारम्—दर फवायदे खामुशी

वावे पंजुम्—दर इश्को जवानी

वावे शशम्—दर ज़ौफो पीरी

वावे हफ्तम्—दर तासीरे तरवियत

वावे हश्तम्—दर आदावे सुहवत

खातमाए गुलिस्तां

باب اول

در سیرت پادشاہان

حکایت ۱

پادشاہی را شنیدم - کہ بکشتن اسیری اشارت کرد -
بیچارہ در حالت نومیدی - بزبانی کہ داشت - ملک را
دشنام دادن گرفت و سقط گفتن - کہ گفتہ اند -

بیت

ہر کہ دست از جان بشوید
ہرچہ در دل دارد بگوید -

شعر

اذا یئس الانسان - طال لسانہ
کسنور مغلوب یصول علی الکلب -

بیت

وقت ضرورت - چو نماند گریز
دست بگیرد سر شمشیر تیز -

ملک پرسید - کہ چہ میگوید؟ یکی از وزرای نیک محضر گفت - "ای خداوند! میگوید - کہ وَالْکَاظِمِیْنَ الْغَیْظَ وَالْعَافِیْنَ عَنِ النَّاسِ - وَاللّٰہُ یُحِبُّ الْمُحْسِنِیْنَ" - ملک را بر وی رحمت آمد - و از سر خون او در گذشت - وزیر دیگر - کہ ضد او بود - گفت - "ابنای جنس ما را نشاید در حضرت پادشاہان جز براستی سخن گفتن - این ملک را دشنام داد - و نا سزا گفت" - ملک روی ازین سخن درہم کشید و گفت - "مرا آن دروغ وی پسندیدہ تر آمد ازین راست کہ تو گفتی - کہ آنرا روی در مصلحت بود - و این را بنا بر خباثتی - و خردمندان گفتہ اند - دروغ مصلحت آمیز - بہ از راستی فتنہ انگیز" -

बाबे अव्वल

दर सीरते पादशाहान

हिकायत—१

पादशाहे रा शुनीदम—कि ब कुश्तने असीरे इशारत कर्द। बेचारा दर हालते ना उमीदी—ब ज़बाने कि दाश्त—मलिक रा दुश्नाम दादन् गिरिफ़्त व सक़त गुफ़्तन्—कि गुफ़्ता अन्द—

बैत

हर कि दस्त अज़ जाँ बिशूयद।
हर चि दर दिल दारद बिगोयद॥

शेर (बहरे तवील)

इज़ा यइस'ल इंसानु ताल लिसानुहु।
क सिन्नौरि मग़्लूबिन् यसूलु अल'लकल्बि॥

बैत (बहरे सरी)

वक़्ते ज़रूरत चु न मांद गुरेज़।
दस्त बिगीरद सरे शमशीरे तेज़॥

मलिक पुर्सीद—'कि चि मीगोयद?' यके अज़ वुज़राय नेक महज़र गुफ़्त—'ऐ ख़ुदावन्द! मीगोयद कि "व'ल् काज़िमीन 'ल्ग़ैज़ व'ल् आफ़ीन अनि न्नास व'ल्लाहु युहिब्बु'ल् मुह्सिनीन्"।' मलिक रा बर वै रहमत आमद व अज़ सरे ख़ूने ऊ दर गुज़श्त। वज़ीरे दिगर—कि ज़िद्दे ऊ बूद—गुफ़्त—'अबनाय जिन्से मारा न शायद दर हज़रते पादशाहान् जुज़ ब रास्ती सुख़ुन गुफ़्तन्। ईं मलिक रा दुश्नाम दाद—व नासज़ा गुफ़्त।' मलिक रूय अज़ीं सुख़ुन दरहम कशीद—व गुफ़्त—'मरा आँ दरोग़े वै पसन्दीदातर आमद अज़ीं रास्त कि तो गुफ़्ती। कि आँरा रूय दर मस्लहत बूद—व ईं रा बिना बर ख़बासते। व ख़िरदमन्दाँ गुफ़्ता अन्द—"दरोग़े मस्लहत आमेज़ बिह् अज़ रास्ती फ़ित्ना अंगेज़"।'

पहला अध्याय

राजाओ के गुणो के विषय मे

कथा—१

एक राजा के विषय में मैंने सुना है कि उसने एक वन्दी को मारने की आज्ञा दी। बेचारे ने निराशा की अवस्था में, जीभ से जो कि उसके पास थी, राजा को गालियाँ देना और वकना शुरू कर दिया। क्योंकि कहा है कि—

वैत

वह जो कि जान से हाथ धो लेता है।
जो कुछ उसके दिल में होता है कह डालता है ।।

शेर

जब निराश होता है इन्सान लम्बी हो जाती है उसकी जीभ।
जैसे बिल्ली घिरी हुई हमला कर देती है कुत्ते पर ।।

वैत

आवश्यकता के समय, जब भागने का उपाय नही रहता।
हाथ पकड लेता है तलवार की पैनी नोक को ।।

राजा ने पूछा कि—'यह क्या कहता है?' मन्त्रियों में से एक सुस्वभाव वाले ने कहा—'हे स्वामी! (यह) कहता है "कि जो अपने क्रोध पर अकुश रखते है और लोगो को क्षमा करते हैं, और परमात्मा उपकारियो को प्रेम करता है"।' राजा को उस पर दया आ गयी और उसने उसके सिर से खून हटा दिया। दूसरा मन्त्री जो कि उस (पहले मन्त्री) से द्वेष करता था—बोला—'हमारे जैसे आदमियो को श्रीमन्महाराज से सच कहने के सिवा और कुछ कहना उचित नही है। इसने महाराज को गाली दी है और अयोग्य बातें की हैं।' राजा ने इस बात से मुह विगाड लिया, और कहा—'मुझे उसका झूठ अधिक पसन्द आया है इस सच से जो कि तूने कहा है। क्योंकि उसका अभिप्राय भलाई का था और इसका आधार विद्वेष है। और बुद्धिमानो ने कहा है—"झूठ भलाई से भरी हुई बहतर है उत्पात खडा करने वाली सचाई से"।'

प्रथमोऽध्यायः

राजोचिताचारे

आख्यायितम्—१

श्रुतवानस्मि, कश्चिद् राजा कस्यचिद्वन्दिन वधायोपादिष्टवान्। वराको निराशावस्थाया, जिह्वैकमात्रेणानिर्बन्धेन राजानमपशब्दैरुदीरितुमारेभे। यथाहु —

श्लोक

जीविताशा परित्यज्य प्राप्ते च मरणे पुमान्।
कथ्याकथ्य मनोगुप्त ब्रूते यदभिराचते ।। १ ।।

आरव्यश्लोक

नैराश्य पुरपो गत्वा लम्बजिह्व प्रजायते।
यथा रुद्धश्च मार्जार श्वानमाक्रमतेऽचिरम् ।। २ ।।

श्लोक

कृच्छ्रे काले यदा न स्यादवकाश पलायितुम्।
हस्तो गृह्णाति खड्गाग्रमापतन्त मित खलु ।। ३ ।।

राजा पप्रच्छ—'असौ किं ब्रूते?'

मन्त्रिवर्गे कश्चित्सुस्वभाव उवाच—'हे नाथ! अय ब्रूते—"धन्यास्ते ये हि धृताङ्कुशा स्वस्य कोपे, क्षमावन्तश्च मानवेपु, यत परोपकारिपु पुरुपेपु प्रीतो हि परमेश्वर"।'

राजा तस्मिन् दयार्द्र सञ्जातस्तस्य वधाज्ञा च निरस्ता कृतवान्। अथापरो मन्त्री यश्च पूर्वस्य द्वेष्टाऽऽसीदुवाच—'अस्मादृशैर्न युज्यतेऽत्र-भवता सेवायामृते सत्यात्किञ्चिद्वक्तुम्—अनेनात्रभवन्त कुत्सिता अवद्यमुक्तञ्च।' एतच्छ्रुत्वा राजा खिन्नमुख सञ्जातो ब्रूते च—'मह्यममुष्य तदसत्य रुचिरतरंस्तस्मात् सत्याद् यत् त्वयाऽभिहितम्। यतस्तस्याभिप्राय क्षेममूलकस्तव च विद्वेपमूलोऽभिप्राय। यथाहु प्राज्ञा —

असत्य च वर क्षेम्य
न सत्य क्षेमवर्जितम्।

बैत (बहरे ख़फ़ीफ़)

हर कि शाह आँ कुनद कि ऊ गोयद।
हैफ़ बाशद कि जुज़ निकू गोयद॥

ईं लतीफ़ा बर ताक़े ऐवाने फ़रीदूं नविश्ता बूद।

بیت

ہر کہ شاہ آں کند کہ او گوید
حیف باشد کہ جز نکو گوید ۔

ایں لطیفہ بر طاق ایوان فریدوں نوشتہ بود ۔

मसनवी (बहरे मुतक़ारिब)

जहाँ ऐ बिरादर न मानद ब कस।
दिल अन्दर जहाँ आफ़री बन्दो बस॥
मकुन तकिया बर मुल्के दुनिया ओ पुश्त।
कि बिस्यार कस चू तो परवर्दो कुश्त॥
चु आहंगे रफ़्तन् कुनद जाने पाक।
चि बर तख़्त मुर्दन् चि बर रूए ख़ाक॥

مثنوی

جہاں ۔ ای برادرا نماند بکس
دل اندر جہاں آفریں بند و بس ۔
مکن تکیہ بر ملک دنیا و پشت
کہ بسیار کس چوں تو پرورد و کشت ۔
چو آہنگ رفتن کند جاں پاک
چہ بر تخت مردن ۔ چہ بر روی خاک؟

हिकायत—२

यके अज़ मुलूके ख़ुरासान सुल्तान महमूद सुबुक् तगीन रा ब ख़्वाब दीद बाद अज़ वफ़ाते ऊ ब सद साल कि जुमला वुजूदे ऊ रेख़्ता बूद व ख़ाक शुदा—मगर चश्मानश् कि हमचुनाँ दर चश्मख़ाना हमी गर्दीदन्द व नज़र मी करदन्द। साइरे हुकमा अज़ तावीले आँ ख़्वाब आजिज़ मान्दन्द—मगर दुरवेशे कि बजाय आवुर्द व गुफ़्त—

'हनोज़ चश्मश् निगरानस्त कि मुल्कश् बा दिगरानस्त।'

حکایت ۲

یکی از ملوک خراساں محمود سبکتگیں را بخواب دید بعد از وفات او بصد سال ۔ کہ جملۂ وجود او ریختہ بود و خاک شدہ ۔ مگر چشمانش ۔ کہ ہمچناں در چشم خانہ ہمی گردیدند و نظر میکردند ۔ سائر حکما از تاویل آں خواب عاجز ماندند ۔ مگر درویشی ۔ کہ بجای آورد و گفت ۔

ہنوز چشمش نگرانست ۔ کہ ملکش با دگرانست ۔

नज़्म (बहरे मुज़ारे)

बस नामवर ब ज़ेरे ज़मीं दफ़न कर्दा अन्द।
कज़ हस्तीयश् ब रूए ज़मीं यक निशाँ न मांद॥
वाँ पीर लाशा रा कि सिपुर्दन्द ज़ेरे ख़ाक।
ख़ाकश् चुनाँ बिख़ुर्द कज़ू उस्तुख़्वाँ न मांद।
ज़िन्दस्त नामे फ़र्रुख़े नौशेरवाँ ब अद्ल।
गर चे बसे गुज़श्त कि नौशेरवाँ न मांद॥
ख़ैरे कुन ऐ फ़लाँ! व ग़नीमत शुमार उम्र।
ज़ाँ पेशतर कि बांगबर आयद फ़लाँ न मांद॥

نظم

بس نامور بزیر زمیں دفن کردہ اند
کز ہستیش بروی زمیں یک نشاں نماند ۔
و آں پیر لاشہ را کہ سپردند زیر خاک
خاکش چناں بخورد کزو استخواں نماند ۔
زندست نام فرخ نوشیرواں بعدل
گرچہ بسی گذشت کہ نوشیرواں نماند ۔
خیری کن ۔ ای فلاں! و غنیمت شمار عمر
زاں بیشتر کہ بانگ بر آید "فلاں نماند" ۔

बैत

जिसके कहने के अनुसार राजा काम करता है।
अफसोस है कि यदि वह भलाई के सिवा कुछ करे॥

यह सूक्ति फरीदूँ की राजसभा की दीवार पर लिखी हुई थी।

श्लोक

यस्यानुकुरुते राजा मन्त्रोक्तमुत सर्वदा।
अहो धिग् यदि स ब्रूते किञ्चिच्च श्रेयसा विना॥ ४॥

इद सूक्त प्रद्युम्नस्य राजसभाभित्तौ लिखितमासीत्।

मसनवी

हे भाई! दुनिया किसी के साथ नहीं रही।
दिल को सृष्टिकर्त्ता के साथ बाँध और बस॥
मत कर आसरा और आसक्ति दुनिया की सम्पत्ति पर।
कि बहुतसे आदमी तेरे जैसे (इसने) पाले और मारे है॥
जब गमन की ओर प्रवृत्त होता है पवित्र प्राण।
तो क्या सिंहासन पर मरना और क्या धरती पर॥

गाथा

नानुगच्छति कञ्चापि भ्रातर्! वसुमती क्वचित्।
विश्वात्मनि नियुङ्क्ष्व त्व मनोवृत्तीश्च सर्वत॥ ५॥
मा श्रिश्रिय प्रतीत सन्नैहिक पार्थिव सुखम्।
त्वादृशो बहव पुम्पा पालिता नाशिता इह॥ ६॥
परलोकमनु प्राणा भवेयुर् गन्तुमुद्यता।
सिंहासने धरित्र्या वा मरणे का विशेषता॥ ७॥

कथा—२

खुरासान के एक राजा ने सुल्तान महमूद सुबुक्तगीन को उसकी मृत्यु के सौ वर्ष बाद सपने में देखा कि उसका समस्त अस्तित्व बिखर गया है और मिट्टी हो गया है, सिवाय उसकी आँखों के जो कि पूववत् आँखो के गोलो में घूमती थी और देखती थी। सारे पण्डित उस स्वप्न का फलितार्थ बताने में असमर्थ हो गये। सिवा एक साधु के जो वहाँ आया और बोला—'अभी भी उसकी आँखे देखती है कि उसका राज्य दूसरो का हो गया है।'

आख्यायितम—२

केनचित् खुरासानमहीपतिना राजा महमूदसुबुक्तगीन स्वप्ने दृष्टस्तस्य मरणादनन्तर व्यतीतेषु शतवर्षेषु यत्समस्तमस्य शरीर विगलित मृण्मय च जातमृतेऽन्य चक्षुषी ये च पूर्ववत् पक्ष्मापाङ्गयोरितस्तत सञ्चरत स्म पश्यत स्म चेति। सर्वे पण्डिताश्चास्य स्वप्नफलादेश निर्देष्टुमसमर्था सञ्जाता ऋते साधोर्यस्तत्रागत्योवाच—

अद्यापि पश्यतो नेत्रे ह्यन्यैरधिकृता क्षमा।

नज्म

बहुतसे प्रसिद्ध व्यक्ति धरती के नीचे गाड़े हुए हैं।
कि जिनके अस्तित्व का एक भी चिह्न धरती पर नहीं बचा॥
और उस पुरानी लाश को जो कि धरती के नीचे सौंप दी गयी।
उसको मिट्टी ऐसे खा गई कि उसमें हड्डियाँ भी नही बचीं॥
जीवित है नाम विख्यात नौशेरवाँ का न्याय के कारण।
यद्यपि बहुत (दिन) बीते नौशेरवाँ नही रहा॥
हे अमुक (भले आदमी) भलाई कर और आयु को गनीमत समझ।
इसके पहले कि उद्घोषक आये कि 'अमुक नहीं रहा॥'

गाथा

बहव प्रथिता पुरुषा पिहिता येरते भुवि।
येषा धरित्र्या सत्तायाश्चिह्नमेक न शिष्यते॥ ८॥
तत्र निर्जीवदेहस्य भुवि गूढस्य सर्वत।
अस्थीन्यपि न विद्यन्ते तथा निगरित भुवा॥ ९॥
नाम नौशेरवानस्य न्यायशीलस्य विद्यते।
किञ्च बहुदिनात्पूर्व तस्य देहो न शिष्यते॥ १०॥
अहो अमुकनामा! त्व श्रेयश्चर, वयो मनाक्।
यावन्नोदघोषको ब्रूते 'अमुकोऽद्य न विद्यते'॥ ११॥

حکایت ۳

ملک زادهٔرا شنیدم - که کوتاه قد و حقیر بود - و دیگر برادرانش بلند بالا و خوبرو * باری ملک بکراهیت و استحقار در وی نظر کرد * پسر بفراست و استبصار دریافت و گفت - "ای پدر! کوتاه خردمند به از نادان بلند * هر چه بقامت کهتر بقیمت بهتر -
که اَلشَّاةُ نَظِیفَةٌ وَ اَلْفِیلُ جِیفَةٌ *

بیت

أَقَلُّ جِبَالِ اَلْأَرْضِ طُورٌ - وَإِنَّهُ
لَأَعْظَمُ عِنْدَ اَللهِ قَدْراً وَمَنْزِلاً *

قطعه

آن شنیدی - که لاغر دانا
گفت روزی بابلهی فربه -
اسپ تازی اگر ضعیف بود
همچنان از طویلهٔ خر به *

پدر بخندید - و ارکان دولت به پسندیدند - و برادران بجان برنجیدند *

قطعه

تا مرد سخن نگفته باشد
عیب و هنرش نهفته باشد *
هر بیشه گمان مبر که خالیست
شاید که پلنگ خفته باشد *

شنیدم که ملکرا در آن مدت دشمنی صعب روی نمود * چون لشکر از هر دو طرف روی در هم آوردند - قصد مبارزت کردند - اول کسیکه اسپ در میدان جهانید آن پسر بود - و می گفت -

हिकायत—३

मलिक ज़ादाए रा शुनीदम्—कि कोताह कद व हक़ीर बूद—व दीगर बिरादरानश् बुलन्द बाला व ख़ूबरू। बारे मलिक ब कराहियत व इस्तिहक़ार दर वै नज़र कर्द। पिसर ब फ़िरासत व इस्तिबसार दरयाफ्त व गुफ्त—'ऐ पिदर! कोताह ख़िरदमन्द बिह् अज़ नादाने बुलन्द।' हर चि ब क़ामत किहतर ब क़ीमत बिहतर।
कि 'अश्शातु नज़ीफ़तुन् वल् फ़ीलु जीफ़तुन्।'

बैत (बहरे तवील)

अक़ल्लु जिबालि'ल् अर्ज़े तूरुन् व इन्नहु।
ल आज़मु इन्द ल्लाहि क़द्रँव् व मंज़िला॥

क़ता (बहरे ख़फ़ीफ़)

आँ शुनीदी कि लाग़रे दाना।
गुफ्त रोज़े ब अबलहे फ़रबिह्॥
अस्पे ताज़ी अगर ज़ईफ़ बुवद।
हमचुनाँ अज़ तवीलाए ख़र बिह्॥

पिदर बिख़न्दीद—व अरकाने दौलत बिपसन्दीदन्द—व बिरादरान् ब जान रंजीदन्द।

क़ता (बहरे हज़ज्-मुसद्दस)

ता मर्द सुख़न न गुफ्ता बाशद।
ऐबो हुनरश् निहुफ्ता बाशद॥
हर बीशा गुमाँ मबर कि ख़ाली'स्त।
शायद कि पलंग ख़ुफ्ता बाशद॥

शुनीदम् कि मलिक रा दराँ मुद्दत दुश्मने सअब रूए नमूद। चूँ लश्कर अज़ हर दू तरफ़ रूय दरहम आवुर्दन्द व क़स्दे मुबारज़त कर्दन्द—अव्वल कसे कि अस्प दर मैदाँ जहानीद आँ पिसर बूद—व मी गुफ्त—

कथा—३

एक राजपुत्र के विषय मे मैंने सुना है—कि वह छोटे शरीर वाला और अकिञ्चन था—और उसके दूसरे भाई लम्बे, ऊँचे और सुन्दर थे। एक बार राजा ने उसकी ओर अरुचि और घृणा से दृष्टिपात किया। पुत्र ने चतुरता और ज्ञान से जान लिया और कहा—'हे पिता! बौना बुद्धिमान लम्बे मूर्ख से अच्छा है।

हर वह चीज़ जो आकार में छोटी हो मूल्य में श्रेष्ठ होती है। जैसे कि—भेड पवित्र होती है और हाथी अपवित्र।'

आख्यायितम्—३

श्रुतवानस्मि कश्चिद् राजपुत्रो हीनवपु दुर्दर्शनश्चासीत्। तस्य भ्रातरो विशालवपुष सुदर्शनाश्चासन्। एकदा राजा त घृणया चाक्ष्याऽद्राक्षीत्। राजपुत्रश्चतुरतया बुद्ध्या चैनदवगतवान् ब्रूते च—'हे पितृपादा!

ह्रस्वोऽपि बुद्धिमाञ्छ्रेयान् दीर्घाद्बुद्धिविवर्जितात्।
यश्चाप्याकारह्रस्व स्याच्छ्रेष्ठोऽस्ति गुणवत्तया॥ २॥ यथाहि—
मेध्य मेषभव मासममेध्य गजसम्भवम्।'

बैंत

सबसे छोटा पहाड़ो में, पृथ्वी पर तूर है और बेशक वह।
जरूर महान् है प्रभु के निकट कद्र और मञ्जिल में॥

श्लोक

कनिष्ठ पर्वतो भूमौ 'तूर' इत्युच्यते बुधै।
श्रेष्ठो विश्वात्मन सैपादृतश्चैव प्रतिष्ठित॥ १२॥

क़ता

(क्या तू ने) यह सुना है कि एक दुर्बल ज्ञानी ने।
कहा एक दिन एक मोटे मूर्ख से॥
अरबी घोड़ा यदि दुर्बल भी हो।
तो भी वह ढेर सारे गधो से अच्छा है॥

पदम्

श्रुतवानसि यच्चोक्त विदुषा दुर्बलेन च।
प्रयीयास समुद्दिश्य कञ्चिन्मूढधिय नरम्॥ १३॥
सैन्धवाश्वो हि वृद्धत्वादशक्तो यदि विद्यते।
रज्जुबद्धे खरशते तथाप्यश्वो महत्तर॥ १४॥

बाप हँस पडा—और सामन्तो ने (इसे) पसन्द किया और भाई चित्त में अत्यन्त दुखी हुए।

पिता जहास—सामन्ताश्चानुमोदितवन्त—भ्रातरश्च मनसि नितरा विरक्ता।

कता

जब तक कि मद नही बोलता।
उसके दोष और गुण छिपे रहते हैं॥
हर झाडी को खाली मत समझ।
सम्भव है कि (उसमें) सिंह सोया हुआ हो॥

पदम्

यावज्जनो न ब्रूते गुणदोषौ तावन्निगूहितौ तस्य।
मावगच्छ वन रिक्त क्वचित् सिंह प्रसुप्त स्यात्॥ १५॥

मैंने सुना है कि राजा का इस बीच में एक शत्रु शक्तिशाली प्रकट हुआ। जब सेनाऐं दोनो ओर से आई और लडाई के लिये तैयार हुई—तो पहला व्यक्ति कि जिसका घोडा मैदान में झपटा—वही पुत्र था, और जो कह रहा था—

श्रुतवानस्मि राज्ञस्तस्मिन् काले कश्चित् प्रचण्ड शत्रुरुपागत। यदा सैन्ये परस्परमुभयतो व्यूढे युद्धाय कृतनिश्चये, तर्हि प्रथमो जना यस्याश्वो युद्धक्षेत्रे धावमानानामग्रे चासीत् स राजपुत्रस्येति यश्च ब्रूते स्म—

قطعه

آن نه من باشم که روز جنگ بینی پشت من
این منم کاندر میان خاک و خون بینی سری *
آنکه جنگ آرد بخون خویش بازی میکند
روز میدان آنکه بگریزد ـ بخون لشکری *

این بگفت و بر سپاه دشمن زد و تنی چند از مردان کاری بینداخت * چون پیش پدر باز آمد ـ زمین خدمت ببوسید و گفت *

قطعه

ای که شخص منت حقیر نمود!
تا درشتی هنر نپنداری *
اسپ لاغر میان بکار آید
روز میدان ـ نه گاو پرواری *

آورده اند که سپاه دشمن بیقیاس بود و اینان اندک * جماعتی آهنگ گریز کردند * پسر نعره برزد و گفت ـ "ای مردان! بکوشید ـ تا جامهٔ زنان نپوشید"! سواران را بگفتن او تهور زیاده گشت و بیکبار حمله بردند * شنیدم که هم در آن روز بر دشمن ظفر یافتند * ملک سر و چشمش ببوسید و در کنار گرفت و هر روزش نظر بیش می کرد ـ تا ولی عهد خویش گردانید * برادرانش حسد بردند و زهر در طعامش کردند * خواهرش از غرفه بدید و دریچه برهم زد * پسر بفراست دریافت ـ و دست از طعام باز کشید و گفت ـ "محالست که هنرمندان بمیرند و بی هنران جای ایشان گیرند *

بیت

کس نیاید بزیر سایهٔ بوم
ور هما از جهان شود معدوم *

پدر را از این حال آگهی دادند * برادرانش را بخواند و گوشمالی بواجبی بداد * پس هر یکی را از اطراف بلاد حصهٔ معین کرد ـ تا فتنه بنشست و نزاع برخاست ـ که گفته اند ـ

ده درویش در گلیمی بخسپند
و دو پادشاه در اقلیمی نگنجند

कता (बहरे रमल)

आँ न मन् बाशम् कि रोज़े जंग बीनी पुश्ते मन।
ईं मनम् काँ दरमियाने ख़ाको ख़ूँ बीनी सरे॥
आँ कि जंग आरद ब ख़ूने ख़ेश बाज़ी मी कुनद।
रोज़े मैदाँ आँ कि बिगुरेज़द ब ख़ूने लश्करे॥

ईं बुगुफ़्त व बर सिपाहे दुश्मन ज़द व तने चन्द अज़ मरदाने कारी बयन्दाख़्त। चु पेशे पिदर बाज़ आमद—ज़मीने ख़िदमत बिबोसीद व गुफ़्त।

कता (बहरे ख़फ़ीफ़)

ऐ कि शख़्से मनत हक़ीर नमूद।
ता दुरुश्ती हुनर नै पिन्दारी॥
अस्प लाग़र मियाँ ब कार आयद।
रोज़े मैदाँ नै गावे परवारी॥

आवुर्दा अन्द कि सिपाहे दुश्मन बेक़यास बूद व ईनाँ अन्दक। जमाअते आहंगे गुरेज़ कर्दन्द। पिसर नारा बिज़द व गुफ़्त—'ऐ मर्दाँ! बकोशीद। ता जामाए ज़नाँ न पोशीद।' सवाराँ रा बि गुफ़्तने ऊ तहव्वुर ज़ियादा गश्त व ब यकबार हमला बुर्दन्द। शुनीदम् कि हम दराँ रोज़ बर दुश्मन ज़फ़र याफ़्तन्द। मलिक सरो चश्मश् बिबोसीद व दर किनार गिरिफ़्त। व हर रोज़श् नज़र बेश मी कर्द—ता वली अहदे ख़ेश गर्दानीद। बिरादरानश् हसद बुर्दन्द व ज़हर दर तआमश् कर्दन्द। ख़्वाहरश् अज़ ग़ुर्फ़ा बदीद व दरीचा बरहम ज़द। पिसर ब फ़िरासत दरयाफ़्त—व दस्त अज़ तआम बाज़ कशीद व गुफ़्त—'मुहालस्त कि हुनरमन्दाँ बिमीरन्द व बेहुनराँ जाये ईशान गीरन्द।'

बैत (बहरे ख़फ़ीफ़)

कस नयायद ब ज़ेरे सायए बूम।
वर हुमा अज़ जहाँ शवद मादूम॥

पिदर रा अज़ीं हाल आगही दादन्द। बिरादरानश् रा बिख़्वान्द व गोशमाली ब वाजिबी बिदाद। पस हर यके रा अज़ अतराफ़े बिलाद हिस्सा ए मुअय्यन कर्द—ता फ़ित्ना बिनिशस्त व निज़ाअ बरख़ास्त। कि गुफ़्ता अन्द—

'दह दरवेश दर गिलीमे बिख़ुस्पन्द।
व दू पादशाह दर इक़्लीमे न गुंजन्द॥'

कता

मैं वह नही हूँ कि युद्ध के दिन तू मेरी पीठ देखेगा।
मैं वह हूँ कि धूल और खून के बीच मुझे आगे देखेगा॥
जो कि युद्ध करता है अपने स्वय के रक्त से वह बाजी जीत लेता है।
और युद्ध के दिन जो भाग जाता है वह अपनी सेना के खून से खेलता है॥

यह कहकर शत्रु की सेना पर जा टूटा और योद्धाओ में से कुछ को गिरा दिया। जब बाप के पास वापिस आया तो सेवा की जमीन को चूमा और बोला—

पदम्

नाह तादृग्जनो यस्य पृष्ठ द्रक्ष्यसि सगरे।
प्रत्युतायमह स वै द्रष्टासि रेणुरक्तयो ॥१६॥
यो योत्स्यते स्वकीयेन शोणितेन स दीव्यति।
निमज्जयति स्वा सेना रक्ते यश्चपलायते ॥१७॥

इत्युक्त्वा शत्रुसैन्यमाचक्रमे कतिचिद् योद्धृश्च सञ्जघान। यदा पितुरग्रे प्रतिनिवृत्यागत स सेवाभूमि चुचुम्बोवाच च—

कता

हे (पिता तू जिसे) कि मेरा व्यक्तित्व तुच्छ लगता था।
युद्ध होने तक तू मेरे गुण को नही पहचानता था॥
पतली कमर वाला घोडा (सकट मे) काम आता है।
लडाई के दिन मोटा बैल काम नही देता॥

कहा जाता है कि शत्रु की सेना अपार थी और ये थोडे थे। सेना की एक पक्ति भागने मे प्रवृत्त हुई। (छोटे) बेटे ने चिल्लाकर कहा—

'हे वीरो! कोशिश करो।
ताकि औरतो के कपडे न पहनो॥'

सवारो का उसके कहने से साहस बढ गया और (उन्होने) एक बार ही हल्ला बोल दिया। मैने सुना कि उसी दिन उन्होने शत्रु पर विजय पाई। राजा ने उसके सिर और आंखो का चूमा और आलिगन मे जकड लिया और दिनोदिन उस पर कृपादृष्टि बढाता गया—यहाँ तक कि उसको अपना उत्तराधिकारी बना दिया। उसके भाइयो को ईर्ष्या हुई और (उन्होने) उसके भोजन मे विष मिला दिया। उसकी बहिन ने यह अटारी से देखा और खिडकी जोर से बन्द की। लडका अपनी चतुरता से भाँप गया और हाथ भोजन से खीच लिया और बोला—

'असम्भव है कि गुणवान् मर जाय
और गुणहीन उनका स्थान ले ले।'

पदम्

हे पितस्त्वामप्राप्तोऽस्मि चामस्था मामकिञ्चनम्।
यावद् युधि न तप्ताऽद्रृ प्रत्ययो न मयि क्वचित् ॥१८॥
अश्वो हि मध्यविक्षाम सग्रामे कार्यसाधक।
पीवरोऽपि बलीवर्दो युद्धक्षेत्रे न युज्यते ॥१९॥

श्रूयते शत्रुसैन्यमपरिमितमासीदिम परिमिता इमे। अथ काश्चन चमूपक्तय पलायने कृतप्रवृत्तयो बभूवु। राजपुत्र उच्चैर्गर्जमान उवाच—

'भो भो वीरा अल पलायितुम्।
मा परिदधताम् नारीवेशम्॥'

अश्वारोहिणस्तस्य प्रबोधनेन विवृद्धसाहसा सजाता पुनरेकीभूय च प्रत्याचक्रमु। श्रुतवानस्मि ते तस्मिन्नेवाह्नि विजयश्रियमापु। राजा तस्य शिरश्चक्षुश्चुम्बित्वा गाढाश्लेष कृतवान्। प्रत्यहञ्च तत प्रभृति तमनु कृपयालुलोच। अन्ततस्तस्मै यौवराज्यपद ददौ।

तस्य भ्रातर ईर्ष्याभिभूता जातास्तस्मै भोजने च विष ददु। तस्य स्वसा गवाक्षादिद सर्व ददर्श गवाक्षपट च सशब्द मिमील। राजपुत्र स्वधियैव विज्ञातवान् ग्रासप्रसृत कर सवव्रे जगाद च—

'सम्भाव्यते नो गुणिनो म्रियेरन्।
गुणैर्विहीना अधिकारमाप्नुयु ॥३॥'

बैत

कोई नही आयगा उल्लू की छाया के नीचे।
भले ही हुमा दुनिया से लुप्त हो जाय॥

बाप को इस हाल की जानकारी दी गई। उसने उसके भाइयो को बुलाया और उचित भर्त्सना की। फिर हर एक को दूर के प्रदेशो मे नियुक्त कर दिया ताकि उत्पात शान्त हो जाय और झगडा मिट जाय। क्योकि कहा गया है कि—

'दस साधु एक कम्बल में सो सकते है।
और दो राजा एक साम्राज्य में नही रह सकते॥'

श्लोक

यद्विच्जनोऽपि नायाति दिवान्धच्छायया भुवि।
अपि चेत् सर्वथा नश्येज्जगत सर्वतो हुमा ॥२०॥

राजान यथाघटित विज्ञापितवन्तोऽनुचरा स तस्य भ्रातृनाकारितवान् यथोचित च ताडितवान्। तत स एकैक सुदूरस्थेषु प्रदेशेषु नियुयुजे यत कलहो शान्तिमुपेयाद्विरोधश्च शाम्येद् यथाहु—

एक कम्बलमाश्रित्य शेरते दश साधव।
एकदेश समाश्रित्य नासाते द्वौ महीपती ॥४॥

قطعه

نیم نان گر خورد مرد خدای
بذل درویشان کند نیمی دگر
هفت اقلیم ار بگیرد پادشاه
همچنان در بند اقلیمی دگر

حکایت ۴

طائفهٔ دزدان عرب بر سر کوهی نشسته بودند و منفذ کاروان بسته ـ و رعیت بلدان از مکائد ایشان مرعوب و لشکر سلطان مغلوب ـ بحکم آنکه ملاذی منیع از قلهٔ کوهی بدست آورده بودند و ملجا و ماوای خود ساخته ـ مدبران ممالک آن طرف در دفع مضرت ایشان مشورت کردند ـ که اگر این طائفه هم برین نسق روزگاری مداومت نماید ـ مقاومت ممتنع گردد ـ

مثنوی

درختی که اکنون گرفتست پای
به نیروی شخصی بر آید ز جای
وگر همچنان روزگاری هلی
بگردونش از بیخ بر نگسلی
سر چشمه شاید گرفتن به بیل
چو پر شد نشاید گذشتن به پیل

سخن برین مقرر شد که یکی را بتجسس ایشان بر گماشتند و فرصت نگاه می داشتند تا وقتی که بر سر قومی رانده بودند و بقعه خالی مانده ـ تنی چند از مردان واقعه دیده و جنگ آزموده را بفرستادند ـ تا در شعب جبل پنهان شدند ـ شبانگاه ـ که دزدان باز آمدند سفر کرده و غارت آورده ـ رخت غنیمت بنهادند و سلاح ا[illegible] بگشادند ـ نخستین دشمنی که بر سر ایشان تاختن آورد خواب بود ـ چندانکه پاسی از شب بگذشت ـ

بیت

قرص خورشید در سیاهی شد
یونس اندر دهان ماهی شد

क़ता (बहरे रमल)

नीम नाने गर खुरद मर्दे खुदाय।
बज़्ले दरवेशाँ कुनद नीमे दिगर॥
हफ्त इक्लीम अर बिगीरद पादशाह।
हमचुनाँ दर बन्दे इक्लीमे दिगर॥

हिकायत—४

तायफ़ाए दुज़्दाने अरब बर सरे कोहे निशस्ता बूदन्द व मनफ़ज़े कारवाँ बस्ता व रैयते बुलदान अज़ मकाइदे ऐशान मरऊब व लश्करे सुल्तान मग़लूब—ब हुक्मे आँकि मलाज़े मनीअ अज़ कुल्लए कोहे ब दस्त आवुर्दा बूदन्द व मलजा व मावाए खुद साख़्ता। मुदब्बिराने मुमालिके आँ तरफ़ दर दफ़ए मज़र्रते ऐशान मशवरत करदन्द—कि अगर ईं तायफ़ा हमबरीं नस्क़ रोज़गारे मुदावमत नुमायन्द—मुक़ावमत मुम्तनअ गरदद।

मसनवी (बहरे मुतक़ारिब)

दरख़्ते कि अकनूँ गिरिफ़्तस्त पाय।
ब नीरूए शख़्से बर आयद ज़ि जाय॥
वगर हमचुनाँ रोज़गारे हिली।
ब गरदूनश् अज़ बेख़ बर नगुसिली॥
सरे चश्मा शायद गिरिफ़्तन् ब बील।
चु पुर शुद न शायद गुज़श्तन् ब पील॥

सुख़ुन बरीं मुक़र्रर शुद कि यके रा ब तजस्सुसे ऐशान बर गुमाश्तन्द व फ़ुरसत निगाह मी दाश्तन्द ता वक़्ते कि बर सरे क़ौमे रान्दा बूदन्द व बुक़्आ ख़ाली मान्दा। तने चन्द अज़ मर्दाने वाक़िआ दीदा व जंग आज़मूदा रा बफ़िरिस्तादन्द—ता दर शिअ्बे जबल पिन्हाँ शुदन्द। शबानगाह—कि दुज़्दाँ बाज़ आमदन्द सफ़र कर्दा व ग़ारत आवुर्दा—रख़्ते ग़नीमत बनिहादन्द व सिलाह अज़ तन बगुशादन्द। नुख़ुस्तीन दुश्मने कि बर सरे ऐशान ताख़्तन् आवुर्द ख़्वाब बूद। चन्दाँ कि पासे अज़ शब बिगुज़श्त।

बैत (बहरे ख़फ़ीफ़)

कुर्से खुर्शीद दर सियाही शुद।
यूनुस अन्दर दहाने माही शुद॥

कता

एक रोटी का आधा भाग यदि साधु खा रहा हो।
साधुओं की भेंट कर देता है दूसरे अर्धांश को॥
और सात देशों को यदि जीत ले राजा।
तो भी इसी प्रकार दूसरे देश के चक्कर में पड़ता है॥

कथा—४

अरब डाकुओं के एक गिरोह ने पहाड़ की चोटी पर अड्डा जमाया और कारवानों का रास्ता बन्द कर दिया। देश देशान्तरों की प्रजा उनकी चालों से त्रस्त हो गई और राज्य की सेना भी परास्त हो गई। क्योंकि उन्होंने पहाड़ की चोटी के दुर्गम स्थान को हथिया लिया था और उसे ही अपना आश्रम और निवास बना लिया था।

उस तरफ़ के देशों के शासकों ने उनकी दुष्टता को रोकने की सलाह की—कि यदि यह दल इसी प्रकार बहुत दिन रह गया तो इसका दमन असम्भव हो जायगा।

मसनवी

जिस पेड़ ने अभी जड़ पकड़ी है।
वह एक आदमी की ताकत से जड़ से उखड़ जायगा॥
और यदि ऐसे ही कुछ दिनों उसे छोड़ दे (तू)।
तो चर्खी से उसे जड़ से नहीं उखाड़ सकता॥
स्रोत का सिरा एक बेलचे से बन्द कर देना चाहिये।
जब वह भर जाता है तो वह हाथी से भी पार नहीं होता॥

यह बात तय हुई कि एक व्यक्ति को उन पर जासूसी के लिये भेजा जाय और अवसर पर निगाह रखी जाय जब तक कि दल लूटने जाय और जगह खाली रह जाय।

उन्होंने अनुभवी और रणकुशल व्यक्तियों में से कुछ को भेजा ताकि वे पहाड़ की घाटी में छिपे रहें। रात के समय जब कि डाकू यात्रा कर के और विनाश करके वापिस आये—उन्होंने लूट का माल रखा और हथियार शरीर से खोल दिये। पहला दुश्मन जिसने कि उन पर हमला किया नींद थी। यहां तक कि रात का एक पहर बीत गया।

बैत

सूर्यमण्डल अन्धकार में चला गया।
यूनुस मछली के मुंह में चला गया॥

पदम्

नैमं परिमितं पिण्डं भुञ्जानो विद्यते यदि।
उपाहरति नैमं च साधुभ्यः साधुकः सदा॥२१॥
अथ चेद् विजयते राजा सप्तद्वीपां वसुन्धराम्।
देशान्तरजयस्यास्य विजिगीषा तु वर्धते॥२२॥

आख्यायितम्—४

एकं दस्युदलं कश्चिद् गिरिकूटमधिष्ठितवत्। सार्थवाहानां मार्गञ्च न्यरुणत्। देशानां प्रकृतयस्तेषामनर्थेन त्रस्ता राजसेना अपि त्रस्ता। यतो गिरिकूटस्थं दुर्गमं स्थानं तेऽधिचक्रुः। तदेव च स्वाश्रयं निलयं चाकल्पन्त।

तत्रत्या राजानस्तेषामुत्पातनिरसनार्थं मन्त्रणां चक्रुर्यदिदं दस्युदलमनेनैव प्रकारेण बहुदिनपर्यन्तं स्थास्यति तर्ह्येतस्य दमनमसम्भवं भविष्यतीति।

गाथा

जातमात्रश्च वृक्षश्चाधृतमूलश्च साम्प्रतम्।
एकेनैव बलात् पुंसोत्पाटितुं खलु शक्यते॥२३॥
परन्तु यदि कालान्तमेव सन्त्यज्यते त्वया।
आमूलं चक्ररज्ज्वाऽपि प्रभवे नापकर्षणे॥२४॥
स्रोतोमुखं खनित्रेण पिधानं कर्तुमर्हसि।
प्रपूरितं च तत्स्रोतो गजेनापि न तीर्यते॥२५॥

तत इदं निर्णीतमथ कश्चित्पुमान् गुप्तचररूपेण तत्र प्रेषणीय उपयुक्तावसरश्च प्रेक्षणीयो यावद् दस्युदलं दस्युवृत्त्यै विनिर्गच्छेदाश्रयश्च निर्जनो भवेदिति। केचन जना दृष्टपरिश्रमाः परीक्षितसमराश्च तत्र प्रहिता ये च पर्वतोपत्यकायामात्मनो निगूह्य स्थिताः। रात्रौ यदा दस्यवः प्रतिनिवृत्ता कृताध्वानः प्रसृतविनाशाश्च। आहृतं धनं ते सन्निदधुः शस्त्राणि चावातारयन्। प्रथमं शत्रुर्यस्तानाचक्राम स स्वाप आसीत्। इत्थमेकयामा त्रियामातीता।

श्लोक

अथातस्तिमिरं प्राप प्रतीच्यां सूर्यमण्डलम्।
यूनुस्तदनुकुर्वाणो मत्स्यास्यविवरं गतः॥२६॥

مردان دلاور از کمین گاه بدر جستند و دست یکان یکان
بر کتف بستند و بامدادان همه را بدرگاه ملک حاضر
آوردند • ملک همگنان را اشارت بکشتن فرمود • اتفاقاً
در آن میان جوانی بود - که میوهٔ عنفوان شبابش نو
رسیده و سبزهٔ گلستان عذارش نو دمیده • یکی از وزرا
پایهٔ تخت ملک را بوسه داد و روی شفاعت بر زمین نهاد
و گفت - "این پسر هنوز از باغ زندگانی بر نخورده است
و از ریعان جوانی تمتع نیافته - توقع بکرم و
اخلاق خداوندی آنست - که به بخشیدن خون او بر بنده
منّت نهد" • ملک روی ازین سخن در هم کشید - و
موافق رای بلندش نیامد - و گفت -

بیت

پرتو نیکان نگیرد هر که بنیادش بدست
تربیت نا اهل را چون گردکان بر گنبدست

نسل فساد اینان منقطع کردن اولیترست - و بیخ تبار
ایشان بر آوردن عین مصلحت - که آتش نشاندن و
اخگر گذاشتن - و افعی کشتن و بچه نگاه داشتن - کار
خردمندان نیست •

قطعه

ابر گر آب زندگی بارد
هرگز از شاخ بید بر نخوری
با فرومایه روزگار مبر
کز نی بوریا شکر نخوری •

وزیر چون این سخن بشنید - طوعاً و کرهاً بپسندید -
و بر حسن رای ملک آفرین کرد - و گفت - "آنچه خداوند -
دام ملکه' فرمود عین صوابست و مسئلهٔ بیجواب -
ولیکن حقیقت آنست - که اگر در سلک بدان تربیت یافتی
طبیعت ایشان گرفتی و یکی از ایشان شدی • اما بنده
امیدوارست که بصحبت صالحان تربیت پذیرد و خوی
خردمندان گیرد - که هنوز طفلست - و سیرت بغی و عناد

मर्दाने दिलावर अज़ कमीनगाह बदर जुस्तन्द व दस्ते यकाँ यकाँ बर कितफ़ बस्तन्द। व बामदादान हमा रा ब दरगाहे मलिक हाज़िर आवुर्दन्द। मलिक हमगिनान रा इशारते ब कुश्तन् फ़रमूद। इत्तिफ़ाक़न् दर आँ मियाँ जवाने बूद—कि मेवाए उनफ़ुवाने शबाबश् नौ रसीदा व सब्ज़ाए गुलिस्ताने उज़ारश् नौ दमीदा। यके अज़ वुज़राय पायाए तख़्ते मलिक रा बोसा दाद व रूए शफ़ाअत बर ज़मीन निहाद व गुफ़्त—'ईं पिसर हनोज़ अज़ बाग़े ज़िन्दगानी बर न ख़ुर्दा अस्त व अज़ रैआने जवानी तमत्तुअ न याफ़्ता। तवक्कोअ ब करम व अख़्लाक़े ख़ुदावन्दी आन'स्त—कि ब बख़्शीदने ख़ूने ऊ बर बन्दा मिन्नत निहन्द।' मलिक रूय अज़ीं सुख़ुन दरहम कशीद व मुवाफ़िक़े राये बलन्दश् नयामद—व गुफ़्त—

बैत (बहरे रमल)

परतवे नेकाँ न गीरद हर कि बुनियादश् बद'स्त।
तरबियत ना अह्ल रा चूँ गिर्दगाँ बर गुम्बज़'स्त॥

नस्ले फ़सादे ईना मुनक़ता करदन् औलातर'स्त व बेख़े तबारे ऐशान बर आवुर्दन् ऐने मस्लहत—कि आतिश निशान्दन् व अख़गर गुज़ाश्तन् व अफ़ई कुश्तन् व बचा निगाह दाश्तन्—कारे ख़िरदमन्दान् नेस्त।

कता (बहरे ख़फ़ीफ़)

अब्र गर आबे ज़िन्दगी बारद।
हरगिज़ अज़ शाख़े बेद बर न ख़ुरी॥
बा फ़िरोमाया रोज़गार मबर।
कज़ नए बोरिया शकर न ख़ुरी॥

वज़ीर ईं सुख़ुन बिशुनीद—तौअन् व करहन् बिपसन्दीद—व बर हुस्ने राये मलिक आफ़रीं कर्द व गुफ़्त—'आँ चि ख़ुदावन्द—दाम मुल्कुहू—फ़रमूद ऐने सवाब'स्त व मस्अलाए बेजवाब। व लेकिन हक़ीक़त आन'स्त—कि अगर दर सिल्के बदाँ तरबियत याफ़्ते तबीअते ऐशान गिरिफ़्ते व यके अज़ ऐशान शुदे। अम्मा बन्दा उम्मीदवार'स्त कि ब सुहबते सालिहान् तरबियत पिज़ीरद व ख़ूए ख़िरदमन्दान् गीरद—कि हनोज़ तिफ़्ल'स्त व सीरते बग़ी व इनादे

तब दिलेर मर्द अपने छिपने के स्थान से बाहर आये और उन्होंने एक एक के हाथ पीठ पीछे बांध दिये। और सवेरे सबको राजा के दरबार में उपस्थित कर दिया। राजा ने सबको मार डालने का संकेत कर दिया। संयोग से उनके बीच में एक जवान था जिसकी जवानी के सौन्दर्य का अंकुर (मूछें) नया नया निकला था और गालों के बाग की हरियाली (दाढ़ी) नयी ही उगी थी। मंत्रियों में से एक ने राजा के सिंहासन के पाये को चूमा और सिफारिश का मुंह जमीन पर रखा और कहा—'इस लड़के ने जीवन के उपवन से फल नहीं खाया और न भरी जवानी से आनन्द उठाया है। स्वामी की कृपा और उदार चरित्र से मुझे आशा है कि इसके खून को बख्श कर मुझ दास पर उपकार करेंगे।' राजा इस बात से खिन्न मुख हो गया और उसे यह बात उसकी (मंत्री की) उच्च बुद्धि के अनुरूप नहीं लगी और बोला—

बैत

हर वह आदमी कि जिनकी बुनियाद बुरी है भलों की छाया नहीं पकड़ता।
बुरों को शिक्षा देना गुम्बज पर अखरोट रखने के समान है।।

इन उपद्रवों की नस्लों को नष्ट कर डालना ही ज्यादा अच्छा है। और इनके कुल की जड़ को उखाड़ देने में ही भलाई है। क्योंकि आग को बुझाना और चिनगारी छोड़ देना—तथा सांप को मारना और सांप के बच्चे को पालना—बुद्धिमानों का काम नहीं है।

कता

बादल यदि जीवन का जल (अमृत) बरसाये।
(तो भी तू) कदापि बेंत की शाखा से फल नहीं खायेगा।।
नीचों के साथ समय मत लगा।
सन की डंडी से तू शक्कर नहीं खायेगा।।

वजीर ने जब यह वचन सुना तो चाहे अनचाहे इसका समर्थन किया—और राजा की बुद्धि के सौन्दर्य को धन्य धन्य कर बोला—'जो स्वामी ने (उनका शासन सदा रहे) कहा है वह बिल्कुल ठीक है और युक्ति अतर्क्य है। परन्तु वास्तविकता यह है कि यदि यह बुरों की संगति में शिक्षा पाता तो इसका चित्त उनके अनुरूप हो जाता और यह उन्हीं में से एक हो जाता। किन्तु इस दास को आशा है कि यह सद्गुणियों की संगति में पाला जायगा और बुद्धिमानों की प्रकृति ग्रहण करेगा। क्योंकि यह अभी बालक है और विद्रोहियों के लक्षण

अथ वीरपुरुषा गुह्यस्थानाद् बहिश् चोपचक्रमुरन्येकैकस्य दस्यो-र्हस्तौ पृष्ठतः कृत्वा निबद्धौ। प्रभाते च सर्वे राजद्वारि समुप-स्थापितौ। राजा तान् सर्वान् हन्तुमुपादिशत्। दैवयोगात् तेषां मध्ये कश्चिद् युवाऽऽसीद् यस्य यौवनाङ्कुरो नवप्राप्त आसीत्। रम्यकपोलारामस्य हरीतिमा नवप्ररोहित एवासीत्। अथ मन्त्रि-वर्गेष्वेकतमो राजसिंहासनस्थूणं चुम्बित्वा अनुनयार्थं शिरः पृथिव्यां निदधावुक्तवांश्च—

'अनेन कुमारेण नाद्यापि जीवनारामस्य फलं भुक्तं न च यौवनस्य सुखं लब्धम्। इदानीमत्रभवतां कृपयोदारतया चाशासे यदेनं क्षमित्वा मां दासमनु-ग्रहीष्यन्ति भवन्तः।'

राजैतच्छ्रुत्वा खिन्नमुखः सञ्जातस्तेन मन्त्रणा मन्त्रिणो महनीया धियमनुरूपा न मत्वैवमुवाच—

श्लोक

नानुसरति सत्सङ्गं यस्य मूले हि दूषणम्।
दुर्वृत्तशिक्षणं तावदक्षोटं शिखरे यथा।। २७।।

एतानुपद्रवमूलान् समूलघातं हन्तुं हि वरम्। एतेषां कुलस्य मूलोच्छेदनं हि क्षेमसूत्रम्। यतः—

हुताशनस्य शमनं स्फुल्लिङ्गस्याभिरक्षणम्।
सर्पाणां मारणं चैव सर्पार्भाणां च पालनम्।। ४।।

धीमतामसम्मतमिति।

पदम्

अभ्राद् वर्षेत्सुधावृष्टिर्
वेतसस्य कुतः फलम्।
नीचैर्मा भून्तु संसर्गो
शणकाण्डात् कुतः सिता।। २८।।

मन्त्री चैतच्छ्रुत्वा यथातथा चैनं समर्थयत, राज्ञो बुद्धि वैभव प्रति धन्य धन्येतिकृत्वोवाच—'श्रीमतां राज्यं चिरस्थायि भूयात्' यथाऽत्रभवन्त आहुस्तत्सर्वथा तथा, युक्तिश्च नान्यथेति। परन्तु तथ्यमिदं यदसौ दुर्जनानां सङ्गतौ चेच्छिक्षामलप्स्यत तर्हि तेषामेव वृत्तमधास्यत तेष्वेवैकतमोऽभविष्यच्चेति। किन्तु दासोऽयमाशास्ते यदयं सज्जनसंसर्गे शिक्षां लप्स्यते बुद्धिमतां च वृत्तं धास्यतीति। यतोऽयमिदानीं बालकोऽस्ति, अत एव दुर्वृत्तानां लिङ्गानि कुवृत्तानि

آن گروه در نهاد او متمکن شده. و در حدیث است.
«مَا مِنْ مَوْلُودٍ اِلاَّ وَ قَدْ یُولَدُ عَلَی الْفِطْرَةِ فَاَبَوَاهُ یُهَوِّدَانِهِ اَوْ یُنَصِّرَانِهِ اَوْ یُمَجِّسَانِهِ».

قطعه

پسر نوح با بدان بنشست
خاندان نبوتش گم شد
سگ اصحاب کهف روزی چند
پی نیکان گرفت و مردم شد.

این بگفت و طائفه از ندمای ملک با وی (به شفاعت یار) شدند. تا ملک از سر خون او در گذشت و گفت. «بخشیدم. اگرچه مصلحت ندیدم».

رباعی

دانی که چه گفت زال با رستم گرد
دشمن نتوان حقیر و بیچاره شمرد
دیدیم بسی آب ز سر چشمهٔ خرد
چون بیشتر آمد. شتر و بار ببرد.

فی الجمله پسر را بناز و نعمت بپروردند و استاد ادیب را بتربیت او نصب کردند. تا حسن خطاب و رد جواب و سایر آداب خدمت ملوکش درآموخت و در نظر همگنان پسندیده آمد. روزی وزیر از شمائل او در حضرت ملک شمهٔ میگفت. که تربیت عاقلان در وی اثر کرده و جهل قدیم از جبلت او بدر برده. ملک از این سخن تبسم کرد و گفت.

بیت

غُذِیتَ بِدَرِّهَا وَ نَشَأْتَ فِینَا
فَمَنْ اَنْبَاكَ اَنَّ اَبَاكَ ذِیبٌ
اِذَا کَانَ الطِّبَاعُ طِبَاعَ سُوءٍ
فَلَیْسَ بِنَافِعٍ اَدَبُ الْاَدِیبِ.

आँ गुरोह दर निहादे ऊ मुतमक्किन न शुदा—व दर हदीस स्त—
"मा मिन् मौलूदिन् इल्ला व क़द् यूलदु अल'ल् फ़ित्रति फ़ अबवाहु युहव्विदानिहि औ युनस्सिरानिहि औ युमज्जिसानिहि"।'

क़ता (बहरे ख़फ़ीफ़)

पिसरे नूह बा बदाँ बनिशस्त।
ख़ानदाने नबुव्वतश् गुम शुद॥
सगे असहाबे कहफ़ रोज़े चन्द।
पये नेकाँ गिरिफ़्तो मर्दुम शुद॥

ईं बुगुफ़्त व तायफ़ाए अज़ नुदमाये मलिक बा वै ब शफ़ाअत यार शुदन्द। ता मलिक अज़ सरे ख़ूने ऊ दर गुज़श्त व गुफ़्त—'बख़्शीदम्, अगर्चि मस्लहत न दीदम्।'

रुबाई (बहरे हज़ज)

दानी कि चि गुफ़्त ज़ाल बा रुस्तमे गुर्द।
दुश्मन नतवाँ हक़ीरो बेचारा शुमुर्द॥
दीदेम् बसे आब ज़ि सर चश्मए ख़ुर्द।
चूँ बेशतर आमद शुतुरो बार बिबुर्द॥

फ़िल् जुमला पिसर रा ब नाज़ो निअमत परवरदन्द व उस्तादे अदीब रा ब तरबियते ऊ नस्ब करदन्द। ता हुस्ने ख़िताब व रद्दे जवाब व सायरे आदाबे ख़िदमते मुलूकश् दर आमोख़्त व दर नज़रे हमगिनान् पसन्दीदा आमद। रोज़े वज़ीर अज़ शुमायले ऊ दर हज़रते मलिक शिम्माए मी गुफ़्त—कि तरबियते आक़िलाँ दर वै असर कर्दा व जह्ले क़दीम अज़ जिबिल्लते ऊ बदर रफ़्ता व ख़ूए ख़िरदमन्दाँ गिरिफ़्ता। मलिक अज़ ईं गुफ़्ता तबस्सुम कर्द व गुफ़्त—

बैत (बहरे वाफ़िर)

ग़ुज़ीत बि दर्रिहा व निशात फ़ीना।
फ़ मन् अम्बाक अन्ना अबाक ज़िअबि॥
इज़ा कानत्तिबाउ तिबाअ सूइन्।
फ़ लैस बिनाफ़िइन् अदबुल् अदीबि॥

और उस गिरोह के उपद्रव इसके अन्दर दृढ नहीं हुए हैं। और शास्त्र प्रमाण है—"कोई बालक ऐसा नहीं है जो प्रकृत धर्म (इस्लाम) में पैदा नहीं होता, पीछे उसके मा बाप उसे यहूदी—ईसाई या अग्निपूजक बना देते हैं"।'

चास्मिन् दृढीभूतानि न वर्तन्ते। यथा हि शास्त्रे—
"न चास्ति बालकः कश्चिद् गुरुधर्मी यो न जन्मना।
पितरौ त विकुर्वाते कृष्टान वाऽग्निपूजकम्"॥६॥'

क़ता

(मनु) नूह के पुत्र बुरों के साथ बैठे।
उसका दैवदूतों का कुल लुप्त हो गया॥
गुफा के योगियो के कुत्ते ने कुछ दिन।
भलों की चाल पकड़ी और आदमी हो गया॥

यह कहा और राजा के अन्तरग मित्रों में से अनेक सिफारिश में उसके साथ हो गये। यहां तक कि राजा ने उसके सिर से प्राणदण्ड उठा लिया और कहा—'मैंने बख्शा, यद्यपि मैं भलाई नहीं देखता।'

पदम्

नीचैः ससर्गदोषेण नूहस्य कुलमक्षय।
गुहास्थैर्योगिभिः सार्धं कुक्कुरः पुरुषोऽभवत्॥२९॥

इत्युक्ते सति अन्येऽपि राजपुरपास्तमनु राजानमनुनेतु समारेभिरे। अन्ततो गत्वा राजा वधाज्ञा निरस्ता चकारोवाच च—'क्षमे—यद्यपि भद्र न पश्यामि।'

रुबाई

क्या तू जानता है कि ज़ाल ने रुस्तम मल्ल से क्या कहा।
दुश्मन को निर्बल, अकिंचन और असहाय मत गिन॥
हमने प्राय देखा है कि छोटेसे स्रोत के सिरे से निकला जल।
जब अधिक हो गया तो ऊँट और बोझ को बहा ले गया॥

चतुष्पदीयम्

जानासि त्वं किमुक्त वै ज़ालेन रुस्तम प्रति।
द्विषन्त निर्बल तुच्छ दीनश्चेति न कल्पयेत्॥३०॥
अस्माभिः प्रायशो दृष्ट क्षोदीयस्स्रोतसा स्रुवत्।
जलमुष्ट्र च गोणी च राशीभूय प्रवाहयेत्॥३१॥

सक्षेप में, उन्होंने उस लड़के को बड़े लाड प्यार से पाला और प्रवीण उस्ताद को उसकी शिक्षा के लिये नियुक्त किया। यहां तक कि उसे सुन्दर भाषण और प्रत्युत्तर देने और राजा की सेवा के समस्त नियम सिखाये और सभी मित्रों की नजर में वह पसन्द आया। एक दिन मन्त्री ने उसके गुणों में से कुछ राजा की सेवा में कहे कि विद्वानों की शिक्षा ने उस पर असर किया है और पुराना अज्ञान उसके स्वभाव से निकल गया है और बुद्धिमानों की आदतें उसने पकड़ी हैं। राजा इस बात से मुसकुराया और बोला—

अलं बहुना, ते कुमार बहुप्रीतिपुरस्सर पालितवन्तः प्रवीणमुपाध्याय च कञ्चिदेतस्य शिक्षणार्थं नियतवन्तश्च। यावदसौ व्याख्यान-पद्धति, प्रत्युत्तरप्रदान, निखिलराजसेवाविधिञ्चाधीय सर्वेषामभिमत आसीदिति। अथैकदा मन्त्रिगणा तस्य गुणा राज्ञ सेवाया निवेदिता, अय विदुषा शिक्षण तस्मिन् सफलतामाप प्राक्तन च जाड्य तस्य स्वभावान्निवृत्त सद्वृत्त च सता निवृत्तमिति। राजैतच्छ्रुत्वा स्मयमानोऽवोचत्—

बैत

तू पोसा गया हमारे दूध से और बढा हुआ हमारे बीच।
तो किसने बताया तुझे कि बेशक तू भेड़िये का बच्चा है॥
जब अच्छी तबीअत वाले बुरी तबीअत वाले से मिलते हैं।
तो नहीं फायदा होना अदीब के अदब को॥

श्लोक

अस्मत्स्तन्येन पुष्टोऽसि वसन्नस्मासु चैधित।
विज्ञापितो हि केनासि यतस्त्व वृकशावक॥३२॥
सच्चरित्रो यदोपैति दुश्चरित्र जन क्वचित्।
सदाचारस्य व्यृद्धि स्यादुभयो सगतेन वै॥३३॥

बैत

अन्तत भेड़िये का बच्चा भेड़िया होता है।
भले ही वह आदमी के साथ बुड्ढा हो जाय॥

उसके बाद दो वर्ष बीते—उस मुहल्ले के रहने वाले बदमाश उन से मिल गये और उन्होंने उस से दोस्ती गाठ ली। अवसर पे समय उसने मन्त्री को उसके दोनो पुत्रो सहित मार डाला और अथाह सम्पत्ति ले गया और डाकुओं की गुफा मे अपने बाप की जगह जा बैठा और विद्रोही हो गया। राजा ने आश्चर्य का (मे) हाथ दांतो तले दबाया और कहा—

श्लोक

वृकजाताऽन्नता गत्वा वृक एव पुनर्भवेत्।
अपि चेत् स मनुष्यैश्च सार्धं हि स्वविगयते॥ ३४॥

ततो द्विवर्षाणि वर्षाणि व्यतीतानि—तत्रत्यैर्विवासिना दुर्जनान्येन नाक मिलितवन्तोऽन्तरङ्गता च निष्पादितवन्त। अवसर प्राप्य स मन्त्रिणमुभौ च मन्त्रिपुत्रौ निहतवानपार च धनमुषितवान् दस्युदर्याञ्च पितुरासनमधिष्ठाय राजद्रोहमङ्गीकृतवानिति। राजा विस्मयमापन्नो दन्ताङ्गुलिरुवाच—

कता

अच्छी तलवार बुरे लोहे से कैसे कोई बनाये।
जो आदमी नही है वह शिक्षा से पडित! आदमी नही होता॥
वृष्टि की कृपा और स्वभाव में कोई विरोध नही है।
उपवन मे वह लता (पुष्प) उगाती है खारी पटपर मे काँटे॥

पदम्

श्रेष्ठखड्ग कुलोहेन केन वा क्रियते कथम्।
अनर शिक्षया, विद्वन्! नृपद नैव चाप्नुते॥ ३५॥
वारिदस्यार्जवे वर्षाकाले भेदो न कुत्रचित्।
उद्याने रोहते पुष्प क्षारभूमौ च कण्टकम्॥ ३६॥

कता

खारी धरती सुम्बुल नहीं उगाती।
उसमें श्रम का बीज नष्ट मत कर॥
भलाई बुरो के साथ करना ऐसा है।
कि (जैसे) बुराई करना भलों के साथ॥

पदम्

क्षारोपरा न वै धत्ते सुमन चैव कुन्दजम्।
तस्मिन् त्व मा प्रवाहिष्ठा श्रमबिन्दून् निरर्थकम्॥ ३७॥
उपकार कुवृत्तेषु तादृगेव ह्यसाम्प्रतम्।
सुवृत्तेषु यथा वा स्यादपकारप्रवर्तनम्॥ ३८॥

कथा—५

एक फौजी अधिकारी के पुत्र को मैंने उग्लुमश् के महल के द्वार पर देखा कि वह बुद्धि और अनुमान, ज्ञान और चातुर्य प्रशसा से अधिक रखता था। छुटपन से ही प्रौढता के लक्षण उसके ललाट पर पैदा हो गये थे—और प्रतिभा के तेज की द्युति उसके भाल पर प्रकट हो गई थी।

आख्यायितम्—५

कञ्चित्सेनापतिकुमारमहं 'उग्लुमश'नरेशस्य हर्म्यद्वारे दृष्टवान् यश्च बुद्धिमनुमान ज्ञान चातुर्यं चात्यन्तिकरूपेण दधाति स्म। शैशवे एव प्रौढत्वचिह्नान्यस्य ललाटे भासमानानि तथा च पाण्डित्यस्य च ज्योतिस्तस्य भालपटले द्युतिमद्।

बैत

चैतन्य के कारण उसके भाल पर।
चमकता था महानता का नक्षत्र॥

सक्षेप में, वह राजा की दृष्टि में स्वीकार हुआ—क्योंकि वह आकृति का सौन्दर्य और बुद्धि की पूर्णता रखता था। और पण्डित लोग कह गये है—

'सम्पन्नता मन से होती है, धन से नहीं।
और बडप्पन अक्ल से है उमर से नहीं॥'

श्लोक

चैतन्यप्रतिभा मूर्ध्नि नक्षत्रमिव द्योतते।

समासत स राज्ञोऽभिमतो बभूव। यत स आकृतिसान्दर्यं बुद्धिवैभव च दधे। यथाहु पण्डिता—

समृद्धिर्मनसा वाच्या नैषा वाच्या धनेन च।
वृद्धत्व हि धिया ज्ञेय न च ज्ञेय तदायुषा॥ ७॥

بیت

کودکی کو بعقل پیر بود
مرد اهل خرد کبیر بود.

ابنای جنس در منصب او حسد بردند و بخیانتی متهمش کردند و در کشتن او سعی بی‌فائده نمودند.

مصراع

دشمن چه کند چون مهربان باشد دوست؟

ملک پرسید - که موجب خصمی اینان در حق تو چیست؟ گفت - در سایهٔ دولت خداوندی - دام ملکه - همگنانرا راضی کردم مگر حسود - که راضی نمیشود الا بزوال نعمت من - و اقبال دولت خداوندی باقی باد!

قطعه

توانم آن که نیازارم اندرون کسی
حسودرا چه کنم؟ کو ز خود برنج درست.
بمیر - تا برهی - ای حسود! کین رنجیست
که از مشقت آن جز بمرگ نتوان رست.

قطعه

شوربختان بآرزو خواهند
مقبلانرا زوال نعمت و جاه.
گر نبیند بروز شپره چشم
چشمهٔ آفتابرا چه گناه؟
راست خواهی - هزار چشم چنان
کور بهتر که آفتاب سیاه.

حکایت ۶

یکی از ملوک عجم را حکایت کنند - که دست تطاول بمال رعیت دراز کرده بود و جور و اذیت آغاز - تا بحدی که خلق از مکائد ظلمش بجان آمده بودند و از کربت جورش راه غربت گرفتند. چون رعیت کم شد - و ارتفاع ولایت نقصان پذیرفت - خزینه تهی ماند - و دشمنان از هر طرف زور آوردند.

बैत (बहरे ख़फ़ीफ़)

कूदके कू ब अक़्ल पीर बुवद।
मर्दे अहले ख़िरद कबीर बुवद॥

अबनाए जिन्स दर मन्सबे ऊ हसद बुर्दन्द व ब ख़ियानते मुत्तहमश् कर्दन्द व दर कुश्तने ऊ सई बेफ़ायदा नमूदन्द।

मिसरा (बहरे हज़ज्)

दुश्मन चि कुनद चुँ मेहरबान बाशद दोस्त।

मलिक पुरसीद—'कि मूजिबे ख़स्मिए ईनाँ दर हक़्क़े तो चीस्त?' गुफ़्त—'दर सायाए दौलते ख़ुदावन्दी—दाम मुल्कुहू! हमगिनान रा राज़ी करदम् मगर हसूद—कि राज़ी न मी शवद इल्ला ब ज़वाले निअमते मन्—व इक़बाले दौलते ख़ुदावन्दी बाक़ी बाद।'

क़ता (बहरे मुज्तस्)

तवानम् आँ कि नयाज़ारम् अन्दरूने कसे।
हसूद रा चि कुनम्? कू ज़ि ख़ुद ब रंज दर अस्त॥
बिमीर—ता बिरही—ऐ हसूद! की रंजेस्त।
कि अज़ मशक़्क़ते आँ जुज़ ब मर्ग न तवाँ रस्त॥

क़ता (बहरे ख़फ़ीफ़)

शोर बख़्ताँ ब आरज़ू ख़्वाहन्द।
मुक़बिलाँ रा ज़वाले निअमतो जाह॥
गर न बीनद ब रोज़ शप्परा चश्म।
चश्मए आफ़ताब रा चि गुनाह॥
रास्त ख़्वाही—हज़ार चश्म चुनाँ।
कूर बिहतर कि आफ़ताब सियाह॥

हिकायत—६

यके अज़ मुलूके अजम रा हिकायत कुनन्द कि दस्ते ततावुल ब माले रैयत दराज़ कर्दा बूद व जौरो अज़ीयत आग़ाज़। ता ब हद्दे कि ख़ल्क़ अज़ मकाइदे ज़ुल्मश् ब जान आमदा बूदन्द व अज़ कुर्बते जौरश् राहे ग़ुर्बत गिरिफ़्तन्द। चूँ रैयत कम शुद—व इर्तिफ़ाए विलायत नुक़सान पिज़ीरुफ़्त—ख़िज़ाना तिही मान्द—व दुश्मनान अज़ हर तरफ़ ज़ोर आवुर्दन्द।

बैत

बालक जो कि बुद्धिमान् हो वृद्ध होता है।
विद्वानों के निकट बड़ा होता है।।

उसके साथी उसके पद से ईर्ष्या करते थे। (उन्होंने) उस पर विश्वासघात का आरोप लगाया और उसे मारने का निष्फल प्रयास किया।

मिसरा

शत्रु क्या कर सकता है जब दयालु हो प्रभु (मित्र)।

राजा ने पूछा—'इनके क्रोध का हेतु तेरे प्रति क्या है?' वह बोला—'महाराज की छत्रछाया में (उनका राज्य बना रहे) मैंने समवयस्कों को सन्तुष्ट किया है, सिवा ईर्ष्यालुओं के, जो कि सन्तुष्ट नहीं होंगे बिना मेरी समृद्धि के नाश के—स्वामी के राज्य का प्रताप बना रहे।'

कता

मैं यह कर सकता हूँ कि न सताऊँ किसी का दिल।
ईर्ष्यालु का क्या करूँ? जो अपने आप रंज में है।।
मर जा, ताकि छूट जाय, हे ईर्ष्यालु! क्योंकि यह वह रंज है।
कि इसके कष्ट से सिवा मौत के नहीं छूटा जा सकता।।

कता

अभागे अभिलाषा से चाहते हैं।
समृद्धों की समृद्धि और प्रतिष्ठा का क्षय।।
यदि नहीं देखता दिन में चमगादड़-चक्षु।
सूर्य के (प्रकाश) स्रोत का क्या दोष।।
यदि तू सच पूछे—ऐसी हज़ार आँखें।
अन्धी होंवें अच्छा (बजाय इसके) कि सूर्य काला हो।।

कथा—६

ईरान के एक राजा के बारे में कहते हैं कि उसने प्रजा के धन पर अन्याय का (से) हाथ बढ़ाया और सताना और दुखाना शुरू किया। यहाँ तक कि लोगों की उसके जुल्म की पद्धति से जान पर बन आयी और उसके बलात्कार के कष्ट से (लोग) देश छोड़ गये। जब प्रजा घट गई और देश की आय छीज गई तो खज़ाना खाली हो गया—और शत्रु चारों ओर से प्रबल हो उठे।

श्लोक

बालोऽपि कृतविद्यश्चेद् बुद्धिवृद्ध स उच्यते।
अथ बुद्धिमतामग्रे लभते परमासनम्।। ३९।।

तस्य सहचरास्तस्य समृद्ध्या जातमत्सरा अभूवन्। विश्वासघातेन तं चिक्षिपुस्तं हन्तुञ्च निष्फलप्रयत्ना बभूवुः।

पदार्धम्

द्विषन्तः किन्तु कुर्वन्ति प्रभुश्चेद्धि सहायकः।

राजा पप्रच्छ—'कस्तवैतेषां क्रोधनिमित्तं त्वयि?' स ब्रूते—'सत्रभवता छत्रच्छायाया, राज्यश्रीर्वः स्थिरा भूयात्, अहं समकक्षान् सन्तोषितवान् ऋतेऽसूयून्। ये च सन्तोषं नाप्स्यन्ति नाशात् मे वृद्धिम्। राज्यैश्वर्यं च ते राजन् सदा वृद्धिमवाप्नुयात्।। ८।।'

पदम्

प्रभवामि पुनर्स्मारात् पीड्यानि न कञ्चन।
असूयकस्य किं कुर्वे ये च शुष्यन्ति चात्मनि।। ४०।।
म्रियस्व शान्तिर्भवेयास्त्वमसूयासमर्पोडित!
यस्मादृते न मरणात् छुटकारो ततस्त्वम्।। ४१।।

पदम्

दुर्भगा अभिमन्यन्ते भजमाना सदा हृदि।
सौभाग्यनुप्रमन्नाना नश्येता धनगौरवे।। ४२।।
दिवान्धो यदि नो पश्येत् दिवा जतुकचक्षुषः।
को नु दोष प्रकाशस्योत्सस्य सूर्यस्य वै खलु।। ४३।।
यदि ते सत्यसुश्रूषा सहस्रमक्षिणामपि।
अन्धा भवन्ता यान्तु न च सूर्य प्रभाकर।। ४४।।

आख्यायितम्—६

पारसीकनरेशस्य कस्यचित्कथाऽनुश्रूयते—यत् स प्रकृतीनां धन गृध्यप्रत्याचारपुरस्सरं कर प्रसारं, बलात्कार सन्त्रासनञ्च समारेभे। अन्तता लोकास्तस्याप्यायपद्धत्या कण्ठगतप्राणा बभूवुस्तस्य प्रपीडनाद्-देशत्यागं कृतवन्तः। अथ पलायितासु प्रजासु—क्षीणे च राज्यकरे रिक्ते च राजकोषेऽरातयोऽभितः समुच्छ्रितवन्तः।

قطعه

هر که فریادرس روز مصیبت خواهد
گو - در ایام سلامت بجوانمردی کوش!
بندهٔ حلقه بگوش ار ننوازی برود
لطف کن لطف - که بیگانه شود حلقه بگوش ॰

क़ता (बहरे रमल)

हर कि फ़रियाद रसे रोज़े मुसीबत ख़्वाहद।
गो—दर अय्यामे सलामत ब जवामर्दी कोश॥
बन्दाए हल्क़ा ब गोश अर न नवाज़ी बिरवद।
लुत्फ़ कुन लुत्फ़ कि बेगाना शवद हल्क़ा ब गोश॥

باری در مجلس او کتاب شاهنامه همی خواندند - در زوال مملکت ضحاک و عهد فریدون ॰ وزیر ملک را پرسید - که فریدون گنج و حشم نداشت - ملک چه گونه برو مستقر شد؟ گفت - چنانکه شنیدی - خلقی بتعصب برو گرد آمدند و تقویت کردند - پادشاهی یافت. وزیر گفت - ای ملک! چون گرد آمدن خلق موجب پادشاهیست - تو مر خلق را چرا پریشان میکنی؟ مگر سر پادشاهی نداری ॰

बारे दर मजलिसे ऊ किताबे शाहनामा हमी ख़्वान्दन्द, दर ज़वाले ममलुकते ज़ुह्हाक व अह्दे फ़रीदूँ। वज़ीर मलिक रा पुरसीद कि 'फ़रीदूँ गंज व हश्म न दाश्त—मुल्क चि गूना बरू मुक़र्रर शुद?' गुफ़्त—'चुनाँ कि शुनीदी ख़ल्क़ ब तअस्सुब बर ऊ गिर्द आमदन्द व तक़्वियत कर्दन्द—पादशाही याफ़्त।' वज़ीर गुफ़्त—'ऐ मलिक! चू गिर्द आमदने ख़ल्क़ मूजिबे पादशाहीस्त, तो मर ख़ल्क़ रा चिरा परेशाँ मी कुनी? मगर सरे पादशाही न दारी!'

بیت

همان به که لشکر بجان پروری
که سلطان بلشکر کند سروری ॰

बैत (बहरे मुतक़ारिब)

हमाँ बिह कि लश्कर ब जाँ परवरी।
कि सुल्ताँ ब लश्कर कुनद सरवरी॥

ملک گفت - موجب گرد آمدن سپاه و رعیت چیست؟ گفت - پادشاه را کرم باید - تا برو گرد آیند - و رحمت - تا در سایهٔ دولتش ایمن نشینند - و ترا این هر دو نیست ॰

मलिक गुफ़्त—'मूजिबे गिर्द आमदने सिपाह व रैयत चीस्त?' गुफ़्त—'पादशाह रा करम बायद—ता बरू गिर्द आयन्द। व रहमत—ता दर सायाए दौलतश ऐमन नशीनन्द—व तुरा अज़ी हर दो नेस्त।'

مثنوی

نکند جور پیشه سلطانی
که نیاید ز گرگ چوپانی ॰
پادشاهی که طرح ظلم فگند
پای دیوار ملک خویش بکند ॰

मसनवी (बहरे ख़फ़ीफ़)

न कुनद जौर पेशा सुल्तानी।
कि नयायद ज़ि गुर्ग चूपानी॥
पादशाहे कि तर्हे ज़ुल्म फ़िगन्द।
पाये दीवारे मुल्के ख़ेश बिकन्द॥

ملک را پند وزیر ناصح موافق طبع نیامد - روی ازین سخن درهم کشید و بزندانش فرستاد ॰ بسی بر نیامد که بنی عم سلطان بمنازعت برخاستند و ملک پدر خواستند ॰ قومی که از دست تطاول او بجان آمده بودند و پریشان شده - بر ایشان گرد آمدند - و تقویت کردند - تا ملک از تصرف او بدر رفت و بر آنان مقرر شد ॰

मलिक रा पन्दे वज़ीरे नासिह मुवाफ़िक़े तबअ नयामद—रुय अज़ी सुख़न दरहम कशीद व ब ज़िन्दानश फ़िरिस्ताद। बसे बर नयामद कि बनी अम्म सुल्तान ब मुनाज़अत बरख़ास्तन्द व मुल्के पिदर ख़्वास्तन्द। क़ौमे कि अज़ दस्ते ततावुले ऊ ब जाँ आमदा बूदन्द व परेशाँ शुदा—बर ईशाँ गिर्द आमदन्द व तक़्वियत कर्दन्द—ता मुल्क अज़ तसर्रुफ़े ऊ बदर रफ़्त व बर आँहा मुक़र्रर शुद।

क़ता

जो कोई दुर्दिन में सहायक चाहता है।
उससे कह दे कि अच्छे दिनो में उदार बन॥
कनछिदा (क्रीत) दास भी पोसोगे नही तो भाग जायगा।
कृपा कर कृपा जिससे कि पराया भी कनछिदा होता है॥

एक बार उसकी सभा में शाहनामा पढा जा रहा था—प्रसग था जुहहाक का राज्य भ्रश और फरीदूं का उत्थान। मत्री ने राजा से पूछा कि 'फरीदूं के पास धन और अनुयायी न थे—तो देश किस प्रकार उसके वश में आया?' उसने कहा—'जैसा कि तूने सुना—प्रजा हठपूर्वक उसके चारो ओर (पक्ष में) आ गई, और समर्थन किया (जिससे उसे) राज्य मिला।' मत्री बोला—'हे राजा! जब प्रजा का समर्थन राज्य सत्ता का कारण है, तो तू ही प्रजा को क्यो सताता है? शायद तुझे राज्य बिलकुल नही चाहिये।'

पदम्

आपत्काले सहाय चेत् पुण्यो यो व्यपेक्षते।
वाच्यो यावत्सुकाल ते तावद् दानपरश्चर॥ ८५॥
क्रीतदासोऽपि पारप्याद्रक्षितोऽपि पलायते।
कृपा कुरु कृपा येन परोऽपि स्याद् वशवद॥ ४६॥

एकदा तस्य राज्यसभाया शाहनामाग्रन्थस्य प्रवचन जायमानमासीत्। जुहाकस्य निकर्षस्य प्रद्युम्नस्योत्कर्षस्य च प्रसङ्ग प्राप्त। मत्री राजान पृष्टवान्—'अथ प्रद्युम्नो धन च जन च नादधे तत्कथ स राज्य प्राप?' स ब्रूते—'यथा श्रुतवानसि, प्रकृतयस्तमभित सन्निहितास्ता समर्थयिष्यश्च तत स राज्यपद प्राप।' मन्त्री ब्रूते—'हे राजन्, यद्येव प्रजाना समर्थन राज्यलाभकारण तत्कथ प्रजाना पीडन विदधामि? मन्ये न त्व राज्यपद कामयसे।'

बैत

यही अच्छा है कि सेना को जान से पाल।
क्योकि राजा सेना से ही शासन करता है॥

राजा ने कहा—'सेना और प्रजा के समर्थन का कारण क्या है?' वह बोला—'राजा को कृपा चाहिये, ताकि लोग उसके पक्ष में हो, और दया (भी) ताकि उसके शासन की छाया में निश्चिन्त रहें, और तेरे पास इन दोनो में से एक भी चीज नही है।'

श्लोक

सदा पथ्यमिति ध्यात्वा प्राणै सेना प्रपालये।
नृपेण नीयते राज्य सेनया नीयते नृप॥ ८७॥

राजा पप्रच्छ—'चमूना प्रजाना च समर्थनस्य को हेतु?' स ब्रूते—'राजा कृपा कुर्यात् यत प्रकृतयो राजानमभित आयायु तया च दया यतस्तस्य छत्रच्छायाया ता स्वस्तिभावेन तिष्ठेनु। त्वयि नान्यतरा चानयोरिति।'

मसनवी

नही कर सकता अत्याचारी राज्य।
क्योकि नही हो सकती भेडिये से रखवाली॥
वह राजा जो अत्याचार की नीव डालता है।
अपने राज्य की दीवार की नीव खोदता है॥

राजा को मन्त्री का उपदेश रुचि के अनुकूल नही लगा, उसने मुंह बिगाड लिया और उसको कारागार में डाल दिया। बहुत दिन नहीं बीते कि राजा के भ्रातृव्य (चाचा-ताऊ के लडके) विरोध में खडे हो गये, और बाप का देश मांगने लगे। सारे लोग जो कि उसके अत्याचार के हाथ से दुखी हो गये थे और बिखर गये थे, उनके चारो ओर इकट्ठे हो गये और समर्थन करने लगे। यहाँ तक कि देश उसके अधिकार से निकल गया और इनके वश में आ गया।

गाथा

अत्याचारपरो राजा राज्यलक्ष्मी न चार्हति।
वृको नार्हत्यगृगृलोभी पशुपालपद यथा॥ ४८॥
अत्याचारस्य चाधारो रोप्यते येन भूभुजा।
स स्वकीयस्य राज्यस्याधारमेव निकृन्तति॥ ४९॥

राज्ञ ब्रूते मन्त्रिण उपदेशो रुचिरो न प्रतीत। तस्मात् स खिन्नमुख सञ्जातस्त च कारागारे निचिक्षेप। अचिरादेव राज्ञो भ्रातृव्या विरोधायोत्थिता पैतृक च राज्य ययाचिरे। प्रकृतयो याश्च तस्यात्याचारक्रमेण कण्ठगतप्राणा बभूवुर्विच्छिन्नाश्च, तानभित सन्निहिता समार्थयन्त च। अन्ततो गत्वा विषयस्तद् वशादपहृतो भ्रातृव्यैरधिकृतश्च।

قطعه

پادشاهی کو روا دارد ستم بر زیردست
دوستدارش روز سختی دشمن زور آورست
با رعیت صلح کن وز جنگ خصم ایمن نشین
زان که شاهنشاه عادل را رعیت لشکرست ٭

حکایت ۷

پادشاهی با غلامی عجمی در کشتی نشسته بود - و غلام هرگز دریا ندیده و محنت کشتی نیازموده - گریه و زاری آغاز نهاد - و لرزه بر اندامش اُفتاد ٭ چندانکه ملاطفت کردند - آرام نگرفت ٭ ملک را عیش ازو منغص شد - چاره ندانست ٭ حکیمی در آن کشتی بود ٭ ملک را گفت - اگر فرمائی - من اورا بطریقی خاموش گردانم ٭ گفت - غایت لطف و کرم باشد ٭ بفرمود تا غلام را بدریا انداختند ٭ باری چند غوطه خورد - ازآن پس مویش گرفتند و سوی کشتی آوردند ٭ بهر دو دست در سکان کشتی درآویخت ٭ چون ساعتی برآمد - بگوشهٔ بنشست و قرار گرفت ٭ ملک را پسندیده آمد - و گفت - اندرین چه حکمت بود؟ گفت - اول محنت غرق شدن نیازموده بود و قدر سلامت کشتی نمیدانست ٭ همچنین قدر عافیت کسی داند که بمصیبتی گرفتار آید ٭

قطعه

ای سیر! ترا نان جوین خوش ننماید
معشوق منست آن که بنزدیک تو زشتست ٭
حوران بهشتی را دوزخ بود اعراف
از دوزخیان پرس - که اعراف بهشتست ٭

بیت

فرقست میان آن که یارش در بر
با آن که دو چشم انتظارش بر در ٭

حکایت ۸

هرمز را گفتند - که از وزیران پدر چه خطا دیدی که بند فرمودی؟ گفت - خطائی معلوم نکردم - ولیکن

क़ता (बहरे रमल)

पादशाहे कू रवा दारद सितम बर ज़ेरदस्त।
दोस्त दारश् रोज़े सख़्ती दुश्मने ज़ोर आवर'स्त॥
बा रअय्यत सुल्ह कुन् वज़ जंगे ख़स्म ऐमन् नशीं।
ज़ाँकि शाहन्शाहे आदिल रा रअय्यत लश्कर'स्त॥

हिकायत—७

पादशाहे बा ग़ुलामे अजमी दर कश्ती निशस्ता बूद। व ग़ुलाम हरगिज़ दरिया न दीदा व मिहनते कश्ती नयाज़मूदा—गिरिया व ज़ारी आग़ाज़ निहाद—व लरज़ा बर अन्दामश् उफ़्ताद। चन्दाँ कि मुलातफ़त कर्दन्द—आराम न गिरिफ़्त। मलिक रा ऐश अज़ू मुनग़्ग़स शुद—चारा न दानस्त। हकीमे दर आँ कश्ती बूद। मलिक रा गुफ़्त—'अगर फ़रमायी मन ऊ रा ब तरीक़ए ख़ामोश गर्दानम्।' गुफ़्त—'ग़ायत लुत्फ़ व करम बाशद।' बिफ़रमूद ता ग़ुलाम रा ब दरिया अन्दाख़्तन्द। बारे चन्द ग़ोता बिख़ुर्द—अज़ाँ पस मूयश् बिगिरिफ़्तन्द व सूये कश्ती आवुर्दन्द। ब हर दू दस्त दर सुक्काने कश्ती दर आवेख़्त। चूँ साअते बर आमद—ब गोशा बनिशस्त व क़रार गिरिफ़्त। मलिक रा पसन्दीदा आमद—व गुफ़्त—'अन्दर ईं चि हिकमत बूद?' गुफ़्त—'अव्वल मिहनते ग़र्क़ शुदन् नयाज़मूदा बूद व क़दरे सलामते कश्ती नमी दानस्त। हमचुनीं क़दरे आफ़ियत कसे दानद कि ब मुसीबते गिरिफ़्तार आयद।'

क़ता (बहरे हज़ज, मुसम्मन्)

ऐ सैर! तुरा नाने जवीं ख़ुश न नुमायद।
माशूक़े मन'स्त आँ कि ब नज़दीके तो ज़िश्त'स्त॥
हूराने बिहिश्ती रा दोज़ख़ बुवद ऐराफ़।
अज़ दोज़ख़ियाँ पुर्स कि ऐराफ़ बिहिश्त'स्त॥

क़ता (बहरे हज़ज)

फ़र्क़'स्त मियाने आँ कि यारश् दर बर।
बा आँ कि दू चश्मे इन्तज़ारश् बर दर॥

हिकायत—८

हुर्मुज़ रा गुफ़्तन्द—कि अज़ वज़ीराने पिदर चि ख़ता दीदी कि बन्द फ़रमूदी? गुफ़्त—'ख़ताए मालूम न करदम—वलेकिन

دیدم که مهابت من در دل ایشان یکرانست - و بر عهد من اعتماد کلی ندارند - ترسیدم که از بیم گزند خویش آهنگ هلاک من کنند - پس قول حکما کار بستم - که گفته اند -

قطعه

از آن کز تو ترسد بترس - ای حکیم!
و گر با چو او صد برآئی بجنگ *
نه بینی که چون گربه عاجز شود
بر آرد بچنگال چشم پلنگ؟
از آن مار بر پای راعی زند
که ترسد سرش را بکوبد بسنگ *

حکایت ۹

یکی از ملوک عرب رنجور بود در حالت پیری - امید زندگانی قطع کرده * ناگاه سواری از در درآمد و گفت - بشارت باد مر ترا! که فلان قلعه را بدولت خداوندی کشادیم و دشمنان را اسیر گرفتیم - و سپاه و رعیت آن طرف بجملگی مطیع فرمان شدند * ملک نفسی سرد برآورد و گفت - این مژده مرا نیست - دشمنانم راست - یعنی وارثان ملک را *

قطعه

درین امید بسر شد - دریغ! عمر عزیز
که آنچه در دلم است از درم فراز آید *
امید بسته بر آمد - ولی چه فائده؟ زآنک
امید نیست که عمر گذشته باز آید

قطعه

کوس رحلت بکوفت دست اجل
ای دو چشمم! وداع سر بکنید!
ای کف دست و ساعد و بازو!
همه توديع يكدگر بكنيد!

दीदम् कि महाबते मन् दर दिले ईशान् येकरान रस्त—व बर अह्दे मन् ऐतमादे कुल्ली न दारन्द। तरसीदम् कि अज बीमे गज़न्दे ख़ेश आहंगे हलाके मन् कुनन्द। पस क़ौले हुकमा रा कार बस्तम्—कि गुफ़्ता अन्द—

क़ता (बहरे मुतक़ारिब)

अज़ाँ कज तो तरसद बितरस ऐ हकीम।
व गर बा चु ऊ सद बराई ब जंग॥
न बीनी कि चूँ गुरबा आजिज शवद।
बर आरद ब चंगाल चश्मे पलंग॥
अज़ाँ मार बर पाये राई ज़नद।
कि तरसद सरश् रा बकोबद ब संग॥

हिकायत—९

यके अज मुलूके अरब रंजूर बूद दर हालते पीरी—उमीद अज ज़िन्दगानी क़ता करदा। नागाह सवारे अज दर दरामद व गुफ़्त—'बिशारत बाद मर तुरा! कि फ़ुलाँ क़िलआ रा ब दौलते ख़ुदावन्दी कुशादेम् व दुश्मनाँ रा असीर गिरिफ़्तेम्। व सिपाह व रैयत आँ तरफ़ ब जुमल्गी मुतीए फ़रमान शुदन्द।' मलिक नफ़्से सर्द बर आवुर्द व गुफ़्त—'ईं मुज़्दा मरा नेस्त—दुश्मनानम् रा'स्त यानी वारिसाने मुल्क रा।'

क़ता (बहरे मुज्तस्)

दरीं उमीद बसर शुद दरेग़ उम्रे अज़ीज।
कि आँ कि दर दिलम् स्त अज दरम् फ़राज आयद॥
उमीदे बस्ता बर आमद वले चि फ़ायदा ज़ाँ कि।
उमीद नेस्त कि उम्रे गुज़िश्ता बाज आयद॥

क़ता (बहरे ख़फ़ीफ़)

कोसे रिह्लत बिकोफ़्त दस्ते अजल।
ऐ दु चश्मम्! वदाए सर बिकुनेद॥
ऐ कफ़े दस्तो साइदो बाज़ू!
हमा तौदीए यक दिगर बिकुनेद॥

किन्तु मैंने देखा कि मेरा आतक उनके दिलों में बहुत है, और मेरे वचनों पर बिलकुल विश्वास नही करते। मैं डरा कि वे अपनी हानि के भय से मेरी हत्या में प्रवृत्ति करेंगे। अत मैंने पण्डितो के कथन का अनुसरण किया कि जैसा कहा है—

कता

जो तुझ से डरता है, हे पण्डित! तू उससे डर।
भले ही उस जैसे सौ लोगो पर तू लडाई मे भारी पडता हो॥
क्या तू नही देखता कि जब बिल्ली निरुपाय हो जाती है।
तो निकाल लेती है पजे से चीते की आँख॥
इसलिये साँप गडरिये के पैर को काटता है।
क्योकि डरता है उसका सिर पत्थर से कुचल देगा॥

कथा—९

अरब का एक राजा वृद्धावस्था में बीमार पडा। (उसने) जीवन की आशा छोड दी थी। सहसा एक घुडसवार द्वार से अन्दर आया और बोला—'आपको शुभसमाचार हो! कि स्वामी की कृपा से अमुक दुर्ग को हमने खोल (जीत) लिया है और शत्रुओ को बन्दी बना लिया है। और उस तरफ की समस्त सेना और प्रजा (आपकी) आज्ञानुवर्त्ती हो गई है।' राजा ने ठण्डी साँस ली और बोला—'यह शुभसमाचार मेरे लिये नही है, मेरे शत्रुओ के लिये है—अर्थात् मेरे राज्य के उत्तराधिकारियो के लिये।'

कता

इसी आशा मे बीत गया, हाय प्यारा जीवन।
कि जो मेरे दिल मे (अभिलाषा) है वह पूरी हो जाय॥
अभिलाषाऍं पूरी हुई किन्तु उनसे क्या लाभ!
आशा नही कि बीती आयु फिर लौट आयेगी॥

कता

कूच का डका बजा दिया मौत के हाथ ने।
हे मेरी दोनो आँखो! सिर से विदा माँग लो॥
हे हाथो, हे पहुँचो, हे भुजाओ।
सब परस्पर विदा माँग लो॥

तु न जाने किन्तु मया दृष्ट यदेतेषा हृदि मत्तोऽपरिमेया भीतिरस्ति। अथ च मद्वचनेषु सर्वथाऽप्रतीतास्ते। अहं भीत आसं यदिमे स्वस्य हानिशङ्कया मा हन्तु प्रवर्तितार। अतो मया पण्डितानां मार्गोऽनुगृहीतो यथाह—

पदम्

शङ्कमानास्त्वत्तेषु बिभेहि पण्डित सर्वदा।
अपि चेत्त्वमसि तेषा शताय चापि समरे॥५५॥
किं न पश्यसि मार्जारी रुद्ध्यते यदि सर्वत।
उत्पाटयति सिंहस्य चक्षुषी नखपाणिना॥५६॥
सर्पो दशति गोपाल पुनरित्येव शङ्कया।
मा मा ग्रावा-प्रहारेण कश्चिदेष जनोऽवधीत्॥५७॥

आख्यायितम्—९

कश्चिदरबदेशीयो नृपतिर्वृद्धावस्थाया रुग्णो जात। जीवनाशा निरस्ताऽभूत्। अकस्मात् कश्चिदश्वारोही द्वारमार्गादन्त प्रविश्योवाच—'श्रूयता शुभसमाचार। अत्रामुक शत्रुदुर्ग भवत्कृपया वय जितवन्त शत्रूश्च बाधितवन्त, सेनाश्च प्रजाश्च प्रान्तसीम्ना सर्वतो भावेन श्रीमदाज्ञानुवर्तिन्यो वर्तन्ते।' राजा दीर्घ निश्वस्याह—'नायमुदन्तो मत्कृत इति, प्रत्युत मम शत्रूणा कृतेऽस्ति, अर्थात् ये च राज्योत्तराधिकारिण।'

पदम्

हन्त! हन्त! व्यतीत मे चिन्त्यमानस्य जीवितम्।
यन्मे मनसि सवतृष्ण पूर्णत्व यातु तत्कथम्॥५८॥
काम काममवाप्तोऽस्मि तत किं बत साम्प्रतम्।
नाशासे गतमायुश्च पुनरायतते क्वचित्॥५९॥

पदम्

पटहो वाद्यते मृत्यायात्रारम्भकर किल।
हे नेत्रे! शिरसोऽनुज्ञामापृच्छेथा नु गम्यते॥६०॥
हे करौ! हे प्रकोष्ठौ! हे बाहू! यूय परस्परम्।
आपृच्छेथामनुज्ञा चैवान्योन्यस्मात्परस्परम्॥६१॥

بر من اوفتاده دشمن کام
آخر ای دوستان! گذر نکنید!
روزگارم بشد بنادانی
من نکردم شما حذر بکنید!

حکایت ۱۰

بر بالین تربت یحیی پیغمبر (علیه السلام) معتکف بودم در جامع دمشق. یکی از ملوک عرب که به بی انصافی معروف بود، بزیارت آمد و نماز گذارد و حاجت خواست.

بیت

درویش و غنی بندهٔ این خاک درند
و آنان که غنی ترند محتاج ترند

آنگاه روی بمن کرد و گفت: از آنجا که همت درویشان است و صدق معاملهٔ ایشان، توجه خاطر همراه من کنید که از دشمن صعب اندیشناکم. گفتمش: بر رعیت ضعیف رحمت کن، تا از دشمن قوی زحمت نه بینی.

نظم

بازوان توانا و قوت سر دست
خطاست پنجهٔ مسکین ناتوان شکست
نترسد آن که بر افتادگان نبخشاید
که گر ز پای در آید کسش نگیرد دست
هر آن که تخم بدی کشت و چشم نیکی داشت
دماغ بیهده پخت و خیال باطل بست
ز گوش پنبه برون آر و داد خلق بده
و گر تو می ندهی داد، روز دادی هست

مثنوی

بنی آدم اعضای یکدیگرند
که در آفرینش ز یک جوهرند
چو عضوی بدرد آورد روزگار
دگر عضوها را نماند قرار
تو کز محنت دیگران بی غمی
نشاید که نامت نهند آدمی

बर मने उफ़्तादा दुश्मन काम।
आख़िर ऐ दोस्तां गुज़र न कुनेद॥
रोज़गारम् बशुद ब नादानी।
मन न करदम्—शुमा हज़र बकुनेद॥

हिकायत—१०

बर बालीने तुर्बते यहिया पैग़म्बर (अलैहिस्सलाम) मोतकिफ़ बूदम् दर जामए दमिश्क़। यके अज़ मुलूके अरब कि ब बेइन्साफ़ी मारूफ़ बूद—ब ज़ियारत आमद व नमाज़ गुज़ार्द व हाजत ख़्वास्त।

बैत (बहरे हज़ज)

दरवेश व ग़नी बन्दए ईं ख़ाके दरन्द।
आनां कि ग़नीतर अंद मुहताजतरन्द॥

आंगाह रू ब मन् कर्द व गुफ़्त—कि 'अज़ आं जा कि हिम्मते दरवेशां अस्त व सिद्क़े मुआमलाए ईशां तवज्जहे ख़ातिर हमराहे मन कुनेद कि अज़ दुश्मने सख़्त अन्देशनाकम्।' गुफ़्तमश्—'बर रईयते ज़ईफ़ रहमत कुन—ता अज़ दुश्मने क़वी ज़हमत न बीनी।'

नज़्म (बहरे मुज्तस)

ब बाज़ुआने तवाना व कुव्वते सर दस्त।
ख़ता'स्त पंजए मिस्कीने नातवां बशिकस्त॥
न तरसद आं कि बर उफ़्तादगां न बख़्शायद।
कि गर ज़ि पाये दर आयद कसश् न गीरद दस्त॥
हर आं कि तुख़्मे बदी किश्त व चश्मे नेकी दाश्त।
दिमाग़े बेहूदा पुख़्त व ख़याले बातिल बस्त॥
ज़ि गोश पम्बा बरूं आर ओ दादे ख़ल्क़ बिदे।
व गर तो मी नदिही दाद—रोज़े दादे हस्त॥

मसनवी (बहरे मुतक़ारिब)

बनी आदम आज़ाए यक दीगरन्द।
कि दर आफ़रीनिश् ज़ि यक जौहरन्द॥
चु उज़्वे ब दर्द आवुरद रोज़गार।
दिगर उज़्वहा रा न मानद क़रार॥
तो कज़ मिहनते दीगरां बेग़मी।
न शायद कि नामत निहन्द आदमी॥

حکایت ۱۱

درویشی مستجاب الدعوة در بغداد پدید آمد * حجاج بن یوسف را خبر کردند * بخواندش و گفت - مرا دعای خیر کن! گفت - خدایا! جانش بستان! گفت - از بهر خدا این چه دعاست؟ گفت - این دعای خیرست ترا و جملهٔ مسلمانان‌را * گفت - چگونه؟ گفت - اگر بمیری - خلق از عذاب تو برهند - و تو از گناهان *

हिकायत—११

दरवेशे मुस्तजाबु'द्दावत दर बग़दाद पिदीद आमद। हज्जाज बिन् यूसुफ़ रा ख़बर करदन्द। बख़्वानदश् व गुफ़्त—'मरा दुआए ख़ैर कुन।' गुफ़्त—'ख़ुदाया जानश् बिसितान।' गुफ़्त—'अज़ बहरे ख़ुदा ईं चि दुआस्त!' गुफ़्त—'ईं दुआए ख़ैर'स्त तुरा व जुमलाए मुसलमानां रा।' गुफ़्त—'चुगूना?' गुफ़्त—'अगर बमीरी—ख़ल्क़ अज़ अज़ाबे तो बरिहन्द व तो अज़ गुनाहान्।'

مثنوی

ای زبردست زیردست آزار!
گرم تا کی بماند این بازار؟
بچه کار آیدت جهان داری؟
مردنت به که مردم آزاری *

मसनवी (बहरे ख़फ़ीफ़)

ऐ ज़बरदस्त ज़ेरदस्त आज़ार।
गर्म ता कै बिमानद ईं बाज़ार॥
ब चि कार आयदत जहां दारी।
मुरदनत बिह कि मर्दुम आज़ारी॥

حکایت ۱۲

یکی از ملوك بی انصاف پارسائی‌را پرسید - از عبادتها کدام فاضلترست؟ گفت - ترا خواب نیم روز - تا در آن یك نفس خلق‌را نیازاری *

हिकायत—१२

यके अज़ मुलूके बेइन्साफ़ पारसाए रा पुरसीद—'अज़ इबादतहा कुदाम फ़ाज़िलतर'स्त?' गुफ़्त—'तुरा ख़्वाबे नीमरोज़—ता दरां यक नफ़स ख़ल्क़ रा नयाज़ारी।'

قطعه

ظالمی‌را خفته دیدم نیم روز
گفتم - این فتنه است - خوابش برده به *
آنکه خوابش بهتر از بیداریست
آنچنان بد زندگانی مرده به *

क़ता (बहरे रमल)

ज़ालिमे रा ख़ुफ़्ता दीदम् नीमरोज़।
गुफ़्तम् ईं फ़ितना'स्त ख़्वाबश् बुर्दा बिह॥
आंकि ख़्वाबश् बिहतर अज़ बेदारियस्त।
आं चुनां बद ज़िन्दगानी मुर्दा बिह॥

حکایت ۱۳

یکی از ملوك را شنیدم - که شبی در عشرت روز کرده بود و در پایان مستی همیگفت -

हिकायत—१३

यके अज़ मुलूक रा शुनीदम्—कि शबे दर इशरत रोज़ करदा बूद व दर पायाने मस्ती हमीगुफ़्त—

بیت

مارا بجهان خوشتر ازین یکدم نیست
کز نیك و بد اندیشه و از کس غم نیست *

बैत (बहरे हज़ज)

मारा ब जहां ख़ुशतर अज़ ईं यकदम नेस्त।
कज़ नेको बद अन्देशा व अज़ कस ग़म नेस्त॥

درویشی برهنه بسرما برون خفته بود - بشنید و گفت -

दरवेशे बरहना ब सरमा बरूं ख़ुफ़्ता बूद—बिशुनीद व गुफ़्त—

بیت

ای آنکه باقبال تو در عالم نیست!
گیرم که غمت نیست- غم ما هم نیست؟

वैत (बहरे हजज्)

ऐ आँकि व इक़बाले तो दर आलम नेस्त।
गीरम कि ग़मत नेस्त–ग़मे मा हम नेस्त।।

ملک‌را خوش آمد * صرهٔ هزار دینار از روزن بیرون داشت و گفت- دامن بدار! درویش گفت- دامن از کجا آرم؟ که جامه ندارم * ملک‌را بر ضعف حال او رحمت زیاده گشت- خلعتی بر آن مزید کرد و پیشش فرستاد * درویش آن نقدرا باندک روزگاری بخورد- پریشان کرد و باز آمد *

मलिक रा खुश आमद। सुर्राए हज़ार दीनार अज़ रौज़न बेरूँ दाश्त व गुफ़्त—'दामन बिदार।' दरवेश गुफ़्त—'दामन अज़ कुजा आरम् कि जामा न दारम्।' मलिक रा बर ज़ौफ़े हाले ऊ रहमत ज़ियादा गश्त। ख़िलअते बर आँ मज़ीद कर्द व पेशश् फ़िरस्ताद। दरवेश आँ नक़्द रा ब अन्दक रोज़गारे बख़ुर्द व परेशाँ कर्द व बाज़ आमद।

بیت

قرار بر کف آزادگان نگیرد مال
نه صبر در دل عاشق- نه آب در غربال

वैत (बहरे मुज्तस्)

क़रार बर कफ़े आज़ादगाँ न गीरद माल।
न सब्र दर दिले आशिक़–नै आब दर ग़िरबाल।।

درحالتی که ملک‌را پروای او نبود- حالش بگفتند- ملک بهم بر آمد و روی در هم کشید- و ازینجاست که گفته اند اصحاب فطنت و خبرت- که از حدت و صولت پادشاهان بر حذر باید بود- که غالب همت ایشان بمعظمات امور مملکت متعلق باشد- و تحمل ازدحام عوام نکند- گاهی بسلامی برنجد و وقتی بدشنامی خلعت دهد *

दर हालते कि मलिक रा परवाये ऊ न बूद, हालश् बिगुफ़्तन्द। मलिक बहम बर आमद व रूय् दरहम कशीद। व अज़ ईं जास्त कि गुफ़्ता अन्द असहाबे फ़ितनत व ख़िबरत कि अज़ हिद्दत व सौलते पादशाहान् पुर हज़र बायद बूद—कि ग़ालिब हिम्मते ऐशान् ब मुअज़्ज़माते उमूरे ममलुकत मुतअल्लिक बाशद—व तहम्मुले इज़्दहामे अवाम न कुनद—गाह ब सलामे बिरंजन्द व वक़्ते ब दुश्नामे ख़िलअत दिहन्द।

مثنوی

حرامش بود نعمت پادشاه
که هنگام فرصت ندارد نگاه *
مجال سخن تا نبینی ز پیش
به بیهوده گفتن مبر قدر خویش *

मसनवी (बहरे मुतक़ारिब)

हरामश् बुवद निअमते पादशाह।
कि हंगामे फ़ुरसत न दारद निगाह।।
मजाले सुख़ुन ता न बीनी जि पेश।
ब बेहूदा गुफ़्तन् म बर क़द्रे ख़ेश।।

ملک گفت- این گدای شوخ چشم مبذررا- که چندین نعمت باندک مدت بر انداخت- برانید- که خزینهٔ بیت المال لقمهٔ مساکینست- نه طعمهٔ اخوان الشیاطین *

मलिक गुफ़्त—'ईं गदाये शोख़ चश्मे मुबज़्ज़िर रा—कि चन्दी निअमत बा चन्द मुद्दत बर अन्दाख़्त—बरानेद! कि ख़ज़ीनाए बैतु'ल्माल लुक़मा ए मसाकीन स्त नै तअमाए इख़वानु' श्शयातीन।'

بیت

ابلهی کو روز روشن شمع کافوری نهد
زود باشد کش بشب روغن نباشد در چراغ *

वैत (बहरे रमल)

अबलहे कू रोज़े रौशन शमए काफ़ूरी निहद।
ज़ूद बाशद किश ब शब रोग़न न बाशद दर चिराग़।।

یکی از وزرای ناصح گفت ـ ای خداوند روی زمین ! مصلحت آن می بینم که چنین کسانرا وجه کفاف تفاریق مجری باید داشت ـ تا در نفقه اسراف نکنند ـ اما آنچه فرمودی از زجر و منع ـ مناسب سیرت ارباب همت نیست یکی‌را بلطف امیدوار گردانیدن و باز نومیدی خسته خاطر گردانیدن *

بیت

بروی خود در اطماع باز نتوان کرد *
چو باز شد بدرشتی فراز نتوان کرد

بیت

مرغ جائی پرد که چینه بود
نه بجائی رود که چی نبود *

قطعه

کس نبیند که تشنگان حجاز
بلب آب شور گرد آیند *
هر کجا چشمهٔ بود شیرین
مردم و مرغ و مور گرد آیند *

حکایت ۱۴

یکی از پادشاهان پیشین در رعایت مملکت سستی کردی و لشکر بسختی داشتی * لاجرم دشمنی صعب روی نمود ـ همه پشت دادند و روی بگریز نهادند *

مثنوی

چو دارند گنج از سپاهی دریغ
دریغ آیدش دست بردن به تیغ *
چه مردی کند در صف کارزار
که دستش تهی باشد از روزگار؟

یکی از آنان که غدر کردند با من دوستی داشت * ملامتش کردم و گفتم ـ دوست و ناسپاس و سفلهٔ ناحق شناس که باندک تغیر حال از مخدوم قدیم بر گردد و حقوق نعمت سالها در نوردد * گفت ـ اگر بکرم

यके अज़ वुज़राय नासेह गुफ्त—ऐ ख़ुदावन्दे रूए ज़मीन ! मस्लहत आँ मी बीनम् कि चुनी कसाँ रा वजूहे कफाफ़ व तफारीक मुजरा बायद दाश्त—ता दर नफ़क़ा इसराफ न कुनन्द। अम्मा आँ चि फरमूदी अज़ ज़ज्र व मनअ—मुनासिबे सीरते अरबाबे हिम्मत नेस्त यके रा व लुत्फ उम्मीदवार गरदानीदन् व बाज़ व नाउमेदी ख़स्ता ख़ातिर गरदानीदन्।

बैत (बहरे मुज्तस्)

व रूए ख़ुद दरे इतमाअ बाज़ नतवाँ कद।
चु बाज़ शुद—ब दुरुश्ती फराज़ न तवाँ कद ॥

बैत (बहरे ख़फीफ़)

मुग़ जाए परद कि चीना बुवद।
नै ब जाए रवद कि ची न बुवद ॥

क़ता (बहरे ख़फीफ)

कस न बीनद कि तिश्नगाने हजाज़।
व लबे आबे शार गिर्द आयन्द ॥
हर कुजा चश्मए बुवद शीरीं।
मर्दुमा मुर्गो मोर गिर्द आयन्द ॥

हिकायत—१४

यके अज़ पादशाहाने पेशीन दर रिआयते ममलुकत सुस्ती कर्दे व लश्कर व सख्ती दाश्ते। लाजरम दुश्मने सअब रूय नमूद। हमा पुश्त दादन्द व रुय व गुरेज़ निहादन्द।

मसनवी (बहरे मुतक़ारिब)

चु दारन्द गंज अज़ सिपाहे दिरेग।
दरेग आयदश् दस्त बुर्दन् व तेग ॥
चि मर्दी कुनद दर सफ़े कारज़ार।
कि दस्तश् तिही बाशद'ज़ रोजगार ॥

यके अज़ आनाँ कि ग़दर कदन्द बा मन् दोस्ती दाश्त। मलामतश् कर्दम् व गुफ्तम्—'दूस्त व नासिपास व सिफलाए नाहक शनास कि व अन्दक तगय्युरे हाल अज मख़दूमे क़दीम बर गिरदद व हुक़ूक़े निअमते सालहा दर नवरद।' गुफ्त—'अगर व करम

एक सलाहकार मन्त्री ने कहा—'हे पृथ्वीनाथ! मैं यह ठीक समझता हूँ कि ऐसे लोगो को जीविका का साधन क्रमश देना चाहिये, ताकि वृत्ति में अतिव्यय नही करे। किन्तु जो कि आपने फरमाया क्रोध और निषेध से—वह वीरो के गुणो के उपयुक्त नही है कि किसी को कृपा से (पहले तो) आशावान् बना देना और फिर आशा तोडकर हताश कर देना।'

मन्त्रिवर्गात् कश्चित् परामर्शक उवाच—'हे पृथ्वीनाथ! भद्रमेव पश्यामि—एतादृक्षु जनेषु जीविकासाधनानि चारपशो देयानि। यतो विभूति राशीभूता प्राप्यातिव्यय न कुर्वीरन्। किन्तु यदत्र-भवानुपादिशत् कोपान् निषेधाच्च न तदुदारचरिताना सम्मतमथ प्राक् कृपाव्यवहारेण कस्यचिदाशोद्दीपन तत आशाभङ्गविधानमिति।'

बैत

अपनी ओर से (किसी के लिये) कामना का द्वार नही खोलना चाहिये।
जब खुल जाय तो कठोरता से बन्द नही करना चाहिये॥

श्लोक

कस्यचित् कामनाद्वार स्वतो नार्हत्यपावृतुम्।
अनावृते ऋते रौक्ष्यान्नैव सवर्तुमर्हसि॥ ८२॥

बैत

पक्षी उस जगह जाता है कि जहाँ दाना होता है।
वहाँ नही जाता कि जहाँ कुछ नही होता॥

श्लोक

पक्षिगणस्तत्र गच्छन्ति लभन्ते यत्र वै कणम्।
न तत्र परिगच्छन्ति यत्र किञ्चिन्न विद्यते॥ ८३॥

क़ता

कोई नही देखता कि हिजाज के प्यासे।
खारी सागर के तट पर इकट्ठे होते हैं॥
जहाँ कही सोता होता है मीठा।
(वही) मनुष्य और पक्षी और चीटी इकट्ठे होते है॥

पदम्

हिजाजमरुजातास्तु दृश्यन्ते न कदाचन।
आगच्छन्तस्तृपाशान्त्यै क्षारीये सागरे तटे॥ ८४॥
यत्रापि भवति स्रोतो मधुरस्य जलस्य च।
तदुद्दिश्य हि धावन्ति नृ-विहग-पिपीलिका॥ ८५॥

कथा—१४

पुराने राजाओ में से एक राजा ने अपने राज्य प्रबन्ध में प्रमाद किया और सेना के साथ कठोरता की। अनिवार्यत एक भीम दर्शन शत्रु चढ आया। सबने पीठ दे दी और भागने की ओर मुँह कर लिया।

आख्यायितम्—१४

प्राक्तन कश्चिद् राजा राज्यप्रबन्धे प्रमाद कृतवान् सैन्येषु च पारुष्यम्। फलतो भीमदर्शन शत्रुस्तमाचक्रमे। सर्वे दत्त-पृष्ठा बभूवु पलायनाभिमुखाश्च।

मसनवी

जब सैनिक को धन से वचित रखते हैं।
तो उसे भी तलवार पर हाथ रखने में सकोच होता है॥
वह क्या पौरुष दिखायेगा लडाई की पाँत में।
जिसका हाथ जीविका से खाली हो॥

गाथा

सैनिकाय न यच्छन्ति यदा हि स्वामिनो धनम्।
सङ्कोच कुरुते सोऽपि न धत्ते खड्गहस्तताम्॥ ८६॥
किं पौरुष प्रकुरुते व्यूहाबद्ध स सङ्गरे।
रिक्तहस्तो हि विद्येत जीविकारहितश्च य॥ ८७॥

उनमें से एक जिन्होने कि विद्रोह किया था मेरे साथ दोस्ती रखता था। मैंने उसकी भर्त्सना की और कहा—'वह नीच है और कृतघ्न है और अधम नास्तिक है जो कि अपनी दशा में थोडेसे परिवर्तन के कारण अपने पुराने स्वामी से मुँह मोड लेता है और वर्षों के उपकार

तेषु द्रुह्यमानेषु कश्चित् मत्सार्धं मित्रसम्बन्ध धत्त। अह त निर्भर्त्सितवानवद च—'स नीचोऽस्ति कृतघ्नश्च, अधमश्चेश्वरद्रोही च यश्च स्वस्य दशायामल्पीयसैव परिवर्तनेन प्राक्तन स्वामिन परित्यजति बहुवर्षपर्यन्त प्राप्तानि सुखानि च विस्मरतीति।'

माजूर दारी शायद—कि अस्पम् बेजव बूद व नम्दे जीन व गिरव। सुल्तान कि व ज़र वा सिपाही बख़ीली कुनद—बा ऊ व जाँ जवाँमर्दी न तवाँ कद।

معدور داری شاید - که اسپم بی جو بود و نمد زین دگرو، سلطان که زر با سپاهی بخیلی کند - با او بجان حوانمردی نتوان کرد *

बैत (बहरे रमल)

ज़र बिदे मर्दे सिपाही रा ता सर बदिहद।
वगरश् ज़र न दिही सर बनिहद दर आलम॥

بیت

زر بده مرد سپاهی‌را تا سر بدهد
وگرش زر ندهی - سر بنهد در عالم *

शेर (बहरे वाफिर)

इज़ा शबि'ल् कमिय्यु यसूलु बत्शन्।
व खावि'ल् बत्नि यन्तुशु बि'ल् फिरारि॥

شعر

اذَا شَبِعَ الکَمِیُّ یَصُولُ بَطْشاً
وَخاوِی البطْنِ یَبْطُشُ بالفِرَارِ *

हिकायत—१५

यके अज़ वुज़राय माज़ूल शुदा व हल्क़ए दरवेशान् दर आमद—व बरकते सुहबते ऐशान दर वै असर कद व जमय्यते ख़ातिरश् दस्त दाद। मलिक बारे दीगर बा वै दिल खुश कर्द व अमलश् फरमूद। क़बूल न कद व गुफ्त—'माज़ूली बिह् कि मशगूली।'

حکایت ۱۵

یکی از وزرای معزول شده بحلقهٔ درویشان در آمد - و برکت صحبت ایشان در وی اثر کرد و جمعیت خاطرش دست داد * ملک بار دیگر باوی دل خوش کرد و عملش فرمود * قبول نکرد وگفت - معزولی به که مشغولی *

रुबाई (बहरे हज़ज्)

आनाँकि ब कुञ्जे आफियत बनिशस्तन्द।
दन्दाने सग व दहाने मर्दुम बस्तन्द॥
काग़ज़ बदरीदन्दो क़लम बिश्कस्तन्द।
व ज़ दस्तो ज़बाने हर्फ़ गीराँ रस्तन्द॥

رباعی

آنان که بکنج عافیت بنشستند
دندان سگ و دهان مردم بستند -
کاغذ بدریدند و قلم بشکستند
وز دست و زبان حرف گیران رستند *

मलिक गुफ्त—'हर आइना मारा ख़िरदमन्दे काफी बायद—कि तदबीरे ममलुकत रा शायद।' गुफ्त—'निशाने ख़िरदमन्दे काफी आन'स्त कि ब चुनी कारहा तन दर न दिहद।'

ملک گفت - هر آئینه مارا خردمند کافی باید که تدبیر مملکت‌را شاید * گفت - نشان خردمند کافی آنست که بچنین کارها تن در ندهد *

बैत (बहरे मुज्तश्)

हुमाय बर हमा मुर्ग़ाँ अज़ाँ शरफ दारद।
कि उस्तुख़्वाँ ख़ुरदो ताइरे नयाज़ारद॥

بیت

همای بر همه مرغان از آن شرف دارد
که استخوان خورد و طائری نیازارد *

हिकायत—१६

सियाहगोश रा गुफ्तन्द—'तुरा मुलाज़मते शेर व चि सबब अख़्यार उफ्ताद?' गुफ्त—'ता फुज़्लाए सैदश् मीख़ुरम् व अज़ शर्रे दुश्मनान

حکایت ۱۶

سیاه گوش‌را گفتند - ترا ملازمت شیر بچه سبب اختیار افتاد؟ گفت - تا فضلهٔ صیدش میخورم و از شر دشمنان

के अधिकार को भूल जाता है।' वह बोला—'यदि आप महरबानी करके क्षमा करें तो उचित होगा। क्योंकि मेरा घोडा बिना जौ के (भूखा) था, मेरी जीन का नम्दा गिरवी रखा हुआ था। जो राजा धन से सिपाही के साथ कजूसी करता है उसके लिये सैनिक जान लगाकर पौरुष नही दिखा सकता।'

सोऽवदत्—'यदि कृपया मा क्षम्यति तदुचितम्। अथाश्वो मम निरन्नोऽश्वासन च कुसीदजीविभिर्गृहीतमासीत्। यो राजा सैनिकेषु कार्पण्य कुरुते तस्य कृते प्राणपणेन शौर्य प्रदर्शयितु नोत्सहते हि सैनिक।'

बैत

सोना दे वीर सिपाही को ताकि वह सिर दे दे।
और यदि उसे सोना न देगा तो वह दुनिया मे सिर देगा॥

श्लोक

धन देहि स्व सैन्येभ्यो येन तैर्दीयते शिर।
धन चेत् त्व न दातासि भ्रान्तास्ते स्युरितस्तत॥ ८८॥

शेर

जब तृप्त हो योद्धा तो लडता है भयकर।
और जब खाली हो पेट, तो तेजी करता है भागने में॥

आरब्य श्लोक

यदा भृतोदरो योद्धा—सम्प्रहारभयकर।
यदासौ रिक्तकोष्ठ स्यात् त्वरितेन पलायते॥ ८९॥

कथा—१५

एक मत्री पद से हटाया जाकर साधुओ की सगति में जा बैठा। और उनकी सगति की आशीष ने उस पर प्रभाव डाला और उसका चित्त स्थिर हो गया। राजा दूसरी बार उससे प्रसन्न हुआ और उसे काम सँभालने की आज्ञा दी। उसने स्वीकार नही किया और कहा—'प्रवृत्ति से निवृत्ति अच्छी।'

आख्यायितम्—१५

कश्चित् भ्रष्टाधिकारोऽमात्य साधुवर्ग सेवितुमारेभे। तेषा सान्निध्यात् स प्रभावितो बभूव चित्त चास्य स्थैर्य गतम्। अथान्यदा राजा तस्मिन् प्रससाद राजकार्ये त पुनर्नियुयोजेति। स स्वीकार न चकारोवाच च—'प्रवृत्तिवर्त्मन श्रेयान् पन्था खलु निवृत्तिज॥ ९॥'

रुबाई

जो कि शान्ति के कोने में बैठते है।
कुत्ते के दाँतो और पिशुन मनुष्यो के मुँह को बाँध देते है॥
(कर्मलेख का) कागज़ फाड देते है और कलम तोड देते है।
और चुगलखोरो के हाथ (के इशारो) और ज़बान से छूट जाते है॥

चतुष्पदीयम्

निवृत्ता सन्ति निभृते शान्तिकोणे च ये हि तै।
बध्यन्ते दष्ट्रिणा दता मुखराणा मुखानि च॥ ९०॥
कर्मलेख दृणीयुस्ते छिन्दते कर्मलेखनीम्।
पिशुनाना गिरोऽङ्गुल्या प्रमुच्यन्तेऽभियोगिनाम्॥ ९१॥

राजा ने कहा—'हर तरह से हमको एक चतुर व्यक्ति चाहिये जो कि राज्य शासन चला सके।' मन्त्री ने कहा—'बुद्धिमान् का यही लक्षण काफी है कि ऐसे कामो में तनदिही न करे।'

राजाऽवदत्—'नितरामस्मत्कृते पण्डितो ह्यावश्यको यश्च राजकार्ये प्रवीण स्यात्।' सोऽवदत्—'एतदेव हि पाण्डित्य यन्नैतादृशु कार्येषु चात्मान विनिक्षिपेत्।'

बैत

हुमा पक्षी सारे पक्षियो में इसी लिये श्रेष्ठता रखता है।
कि हड्डियाँ खा लेता है और किसी पक्षी को नही सताता॥

श्लोक

हुमापक्षिषु सर्वेषु ह्यतो धत्ते हि श्रेष्ठताम्।
यदेषोऽस्थीनि भुञ्जानो विहगान्नैव बाधते॥ ९२॥

कथा—१६

एक जरख (Lynx) से लोगो ने पूछा—'तुझे सिंह की सेवा किस कारण से स्वीकार हुई?' उसने कहा—'ताकि उसके शिकार

आख्यायितम्—१६

केचन जनास्तरक्षु पृष्टवन्त—'अय कस्माद् हेतोस्त्वया सिंहसेवा स्वीकृतेति?' सोऽवदत्—'यतस्तस्योच्छिष्टमाखेटमद्मि तथा च

در پناه صولتش زندگانی میکنم * گفتند - اکنون که بظل حمایتش در آمدی و بشکر نعمتش اعتراف نمودی - چرا نزدیکتر نیائی - تا در حلقهٔ خاصانت در آورند و از بندگان مخلصانت شمارد؟ گفت - همچنان از بطش وی ایمن نیستم *

दर पनाहे सौलतश् ज़िन्दगानी मी कुनम्।' गुफ़्तन्द—'अकनूं कि ब ज़िल्ले हिमायतश् दर आमदी व ब शुक्रे निअमतश् ऐतिराफ़ नमूदी—चिरा नज़दीकतर नयायी? ता दर हल्क़ए ख़ासानत दर आवुरद व अज़ बन्दगाने मुख़्लिसानत शुमारद।' गुफ़्त—'हमचुनां अज़ बतुशे वै ऐमन नेस्तम्।'

بیت

اگر صد سال گبر آتش فروزد
چو یکدم اندران افتد - بسوزد *

बैत (बहरे हज़ज्)

अगर सद साल गब्र आतिश फ़रोज़द।
चु यकदम अन्दरां उफ़्तद बिसोज़द॥

گاه افتد که ندیم حضرت سلطان زر بیابد - و گاه باشد که سرش برود - و حکما گفته اند - که از تلون طبع پادشاهان بر حذر باید بود - که وقتی بسلامی برنجند و گاهی بدشنامی خلعت دهند - و گفته اند - که ظرافت بسیار هنر ندیمان است و عیب حکیمان *

गाह उफ़्तद कि नदीमे हज़रते सुल्तान ज़र बयाबद—व गाह बाशद कि सरश् बिरवद—व हुकमा गुफ़्ता अन्द कि—'अज़ तलव्वुने तबए पादशाहान् पुर हज़र बायद बूद—कि वक़्ते ब सलामे बिरंजन्द व गाहे ब दुश्नामे ख़िलअत दिहन्द।' व गुफ़्ता अन्द—कि ज़राफ़ते बिस्यार हुनरे नदीमां अस्त व ऐबे हकीमां।'

بیت

تو بر سر قدر خویش میباش و وقار
بازی و ظرافت بندیمان بگذار

बैत (बहरे हज़ज्)

तो बर सरे क़द्रे ख़ेश मी बाशो विक़ार।
बाज़ी व ज़राफ़त ब नदीमां बुगुज़ार॥

حکایت ۱۷

हिकायत—१७

یکی از رفیقان شکایت روزگار نامساعد نزدیک من آورد و گفت - کفاف اندک دارم و عیال بسیار - و طاقت بار فاقه نمی آرم - و بارها در دلم می آید که باقلیمی دیگر نقل کنم - تا بهر صفت زندگی کرده آید - و کسی را بر نیک و بد من اطلاع نباشد *

यके अज़ रफ़ीक़ान् शिकायते रोज़गारे ना मुसाइद ब नज़दीके मन् आवुर्द व गुफ़्त—'कफ़ाफ़े अन्दक दारम् व अयाले बिस्यार—व ताक़ते बारे फ़ाक़ा न मी आरम्। व बारहा दर दिलम् मी आयद कि ब अक़लीमे दिगर नक़्ल कुनम्—ता ब हर सिफ़त ज़िन्दगानी कर्दा आयद व कसे रा बर नेको बदे मन् इत्तिलाअ न बाशद।

بیت

بس گرسنه خفت و کس ندانست که کیست *
بس جان بلب آمد که برو کس نگریست *

बैत (बहरे हज़ज्)

बस गुरसना ख़ुफ़्त व कस न दानिस्त कि कीस्त।
बस जां ब लब आमद कि बरू कस न गिरीस्त॥

باز از شماتت اعدا می اندیشم که بطعنه در قفای من بخندند - و سعی مرا در حق عیال بر عدم مروت حمل کنند و گویند -

बाज़ अज़ शुमातते आदा मी अन्देशम् कि ब तअना दर क़फ़ाए मन् बिख़न्दन्द—व सइए मरा दर हक़्क़े अयाल बर अदमे मुरव्वत हमल कुनन्द व गोयन्द—

قطعه

ببین آن بی حمیت‌را - که هرگز
نخواهد دید روی نیک بختی *

क़ता (बहरे हज़ज्)

बिबीं आं बेहमीयत रा कि हरगिज़।
न ख़ाहद दीद रूए नेक बख़्ती॥

का उच्छिष्ट खा सकूं और शत्रुओं की दुष्टता से (निश्चिन्त होकर) उसके तेज की शरण में जीवनयापन करूं।' लोगों ने कहा—'अब जब कि तू उसकी शरण की छाया में आ गया है और उसकी कृपा का आभार मानता है—तो क्या (उसके) निकटतर नहीं जाता? ताकि विशिष्टों की कोटि में (वह) तुझे ले ले और तुझे अपने प्रधान सेवकों में गिने।' उसने कहा—'वैसे भी मैं उसके तेज से सुरक्षित नहीं हूँ।'

बैत

यदि सौ साल भी अग्निपूजक अग्नि को प्रज्वलित करे।
यदि सहसा उसमें गिर जाय तो जल जाता है॥

कभी ऐसा भी होता है कि राजा का अन्तरंग सोना पाता है और कभी (ऐसा भी) होता है कि उसका सिर चला जाता है। और पण्डितों ने कहा है—'कि राजाओं के स्वभाव की अस्थिरता से सावधान रहना चाहिये। क्योंकि कभी ये प्रणाम से क्रुद्ध हो जाते हैं और कभी गाली से वस्त्राभरण दे डालते हैं।' और कहा है कि—'परिहास बड़ा गुण है दरबारियों में और दोष है पण्डितों में।'

बैत

तू अपने मान और गौरव को बचा।
दांव लगाना और परिहास दरबारियों के लिये छोड़॥

कथा—१७

मेरे मित्रों में से एक समय की दुरवस्था की शिकायत मेरे पास लाया और बोला—

'मैं जीविका थोड़ी रखता हूँ और परिवार बड़ा—और उपवास का भार उठाने की सामर्थ्य नहीं रखता। और कई बार मेरे मन में आता है कि परदेश चला जाऊँ ताकि किसी तरह जीविका निर्वाह हो जाय और किसी को मेरे भले बुरे की खबर न हो।

बैत

बहुतसे भूखे सो गये और किसी ने न जाना कि कौन थे।
बहुतों के प्राण ओष्ठ गत हो गये उन पर कोई न रोया॥

फिर मैं अपने शत्रुओं के आनन्द से डरता हूँ कि मेरे पीठ पीछे ताने से हँसेंगे, और परिवार के लिये किये मेरे प्रयत्न को निममता बतायेंगे और कहेंगे—

कता

देखो इस निलज्ज को कि यह कभी भी।
नहीं देखेगा मुंह सौभाग्य का॥

शत्रूणां प्रकोपात्तस्य प्रतापच्छायायां रक्षितः सन् जीवनयापनं कुर्याम्।' ते पृष्टवन्तः—'इदानीमस्य प्रतापच्छायामवाप्नोऽसि, तस्य चानुग्रहभारं च मनुषे तदा तस्य समीपतरं न गच्छसि येन त्वां विशिष्टकोट्यां स स्थापयेत् प्रधानसेवकेषु च त्वां गणयेदिति।' सोऽवदत्—'तथापि तस्य तेजसोऽहं न मन्ये सुरक्षितम्।'

श्लोक

शतवर्षाणि यदा यावत् होता चाग्निं समन्धयेत्।
यदा पतति चैतस्मिन् सहसैव हुताशने॥९३॥

क्वचिदन्तरङ्गस्तरुन् स्वर्णं प्राप्नोति, क्वचिच्च शिर-श्छेदमिति। यथाहुः पण्डिताः—

भूपप्रकृतिचाञ्चल्यात् सावधानः सदा भवेत्।
कस्मिंश्चित् प्रणामे क्रुद्धा गुप्तार्थं ददते क्वचित्॥१०॥

अपरञ्च—

सामन्तानां गुणो हासः महादोषो मनीषिणाम्॥११॥

श्लोक

गौरवं स्वस्य मानं च रक्षितव्यौ त्वयाऽनघ।
पणबन्धः विनोदश्च सामन्तानां कृते जहि॥९४॥

आख्यायितम्—१७

कश्चित् सुहृन्मम सदो दौर्गत्यविषयकं निवेदनं कुर्वन्नुवाच—'अहं जीविकां स्वल्पां दधामि परिवारमनल्पञ्च। उपवासभारं च वोढुं नोत्सहे च। अनेकधा मन्मनसि जायतेऽस्य विदेशगमनं कुर्यां यतः प्राणनिर्वाहः स्यात् कोऽपि च मम भद्राभद्रं न जानीयादिति।'

श्लोक

क्षुधार्ताः शेरते केचित् न च कश्चिद्धि वेद तान्।
एवं कण्ठगताः प्राणाः शोचिता न च केनचित्॥९५॥

अपरञ्च शत्रूणामानन्दाद् बिभेमि ये च पृष्ठतः साक्षेपं मामुपहसिष्यन्ति सम्यक् च मदीयं कुटुम्बपालनस्य प्रयत्नं नैष्ठुर्यमिति कृत्वा वक्ष्यति—

पदम्

पश्यैनञ्च ह्रिया हीनं निरयं हीनचेतनम्।
नात्मानं शक्नुयाज्जातु स द्रष्टुं भाग्यसम्भृतम्॥९६॥

تن آسانی گزینند خویشتن را
زن و فرزند بگذارند بسختی *

و در علم محاسبه - چنانکه معلومست - چیزی - اگر بمعونت شما جهتی معین شود که موجب جمعیت خاطر باشد - بقیهٔ عمر از عهدهٔ شکر آن بیرون - آمد * گفتم - ای برادر - عمل پادشاهان هر دو طرف - امید نان و بیم جان - و خلاف رای خردمندانست باید نان در بیم جان افتادن *

قطعه

کس نیاید بخانهٔ درویش
که خراج زمین و باغ بده!
یا بتشویش غصه راضی شو
یا جگربند پیش زاغ بنه!

گفت - این سخن موافق حال من نگفتی - و جواب سؤال من نیاوردی * نشنیدهٔ که گفته اند - هر که خیانت نورزد دستش از حساب نلرزد *

بیت

راستی موجب رضای خداست
کس ندیدم که گم شد از ره راست *

و حکما گفته اند - چهار کس از چهار کس بجان آیند - حرامی از سلطان - دزد از پاسبان - و فاسق از غماز - و روسپی از محتسب * آنرا که حساب پاکست از محاسبه چه باکست؟

قطعه

مکن فراخ روی در عمل - اگر خواهی
که وقت رفع تو باشد مجال دشمن تنگ *
تو پاك باش! و مدار - ای برادر - از کس باك!
زنند جامهٔ ناپاك گازران بر سنگ *

گفتم - حکایت آن روباه مناسب حال تست که دیدندش - گریزان - و افتان و خیزان میرفت - کسی گفتش - چه

तन आसानी गुज़ीनन्द खेशतन रा।
ज़नो फ़र्ज़न्द बुगुज़ारद ब सख़्ती॥

व दर इल्मे महासबा—चुनां कि मअलूमस्त—चीज़े दानम्। अगर ब मुअवनते शुमा जिहते मुअय्यन शवद कि मूजिबे जमीय्यते ख़ातिर बाशद बक़ीय्यए उम्र अज़ उहदाए शुक्रे आं बेरूं न तवानम् आमद।' गुफ़्तम्—'ऐ बिरादर, अमले पादशाहान् हर दू तरफ़ दारद—उमीदे नान व बीमे जान। व ख़िलाफ़े राये ख़िरदमन्दान'स्त व उमीदे नान दर बीमे जान उफ़्तादन्।'

ق़ता (बहरे ख़फ़ीफ़)

कस नयायद ब ख़ानाए दरवेश।
कि ख़िराजे ज़मीनो बाग़ बिदिह॥
या ब तशवीशे ग़ुस्सा राज़ी शौ।
या जिगरबन्द पेशे ज़ाग़ बिनिह॥

गुफ़्त—'ईं सुख़ुन मुवाफ़िक़े हाले मन् न गुफ़्ती—व जवाब सवाले मन न यावुर्दी। न शुनीदई कि गुफ़्ता अन्द—'हर कि ख़यानत न वरज़द। दस्तश् अज़ हिसाब न लरज़द।'

बैत (बहरे ख़फ़ीफ़)

रास्ती मूजिबे रज़ाए ख़ुदा स्त।
कस न दीदम् कि गुमशुद अज़ रहे रास्त॥

व हुकमा गुफ़्ता अन्द—'चहार कस अज़ चहार कस ब जान आयन्द। ख़िराजी अज़ सुल्तान—दुज़द अज़ पासवान—व फ़ासिक़ अज़ ग़म्माज़—व रूस्पी अज़ मुहतसिब।' आंरा कि हिसाब पाक स्त—अज़ महासबा चि बाक स्त।'

क़ता (बहरे मुज्तस्)

मकुन फ़राख़ रवी दर अमल अगर ख़्वाही।
कि वक़्ते रफ़ए तो बाशद मजाले दुश्मन तंग॥
तो पाक बाश मदार ऐ बिरादर अज़ कस बाक।
ज़नन्द जामाए नापाक गाज़ुरां बर संग॥

गुफ़्तम्—'हिकायते आं रोबाह मुनासिबे हाले तु'स्त कि दीदन्दश् गुरेज़ां व उफ़्तां व ख़ेज़ां मी रफ़्त। कसे गुफ़्तश् चि

शरीर सुख चाहता है अपने लिये।
बीवी और बच्चों को छोड़ गया दुःख में ॥

और गणित विद्या में—जैसा कि तुम्हें ज्ञात है—मैं कुछ कुछ जानता हूँ। यदि आपकी सहायता से कोई स्थान निश्चित हो जाए कि जिससे मेरा चित्त स्थिर हो जाय तो यावज्जीवन उस धन्यवाद के अधिकार से बाहर नहीं आ सकूँगा।'

मैंने कहा—'हे भाई! राजाओं का अमल दोनों तरफ़ होता है। रोटी की आशा और प्राण का भय। और यह बुद्धिमानों के मत के विपरीत है रोटी की आशा से जान को खतरे में डालना।'

क़ता

कोई नहीं आता साधु के द्वार पर।
कि ज़मीन और बाग का कर दे ॥
या तो दुर्दशा या दुःख (झेलने) को राज़ी हो।
अथवा जिगर के टुकड़ों को कौए के आगे डाल ॥

वह बोला—'तूने यह बात मेरी अवस्था के अनुकूल नहीं कही, और मेरी याचना का उत्तर नहीं दिया। क्या तूने नहीं सुना कि कह गये हैं—

जो खयानत नहीं करता।
उसका हाथ हिसाब देने से नहीं काँपता ॥

बैत

ईमानदारी प्रभु की प्रसन्नता का निमित्त है।
कोई मैंने नहीं देखा कि सही रास्ते चलता हुआ खोया हो ॥

और पण्डित कह गये हैं—

चार आदमी, चार आदमियों से नाक में दम आये रहते हैं।
कर दाता राजा से—उचक्के चौकीदार से ॥
कुकर्मी मुखबिर से—और वेश्या चरित्र निरीक्षक से ॥
जिसका हिसाब साफ है।
उसे लेखा निरीक्षक से क्या भय है ॥

क़ता

मत कर स्वेच्छाचार, राजकाज में, यदि तू चाहता है।
कि तेरे निवृत्त होने के समय शत्रु को अवसर न मिले ॥
तू शुद्ध रह! और मत कर हे भाई! किसी से डर।
पटकते हैं मैले कपड़े को ही धोबी पत्थर पर ॥'

मैंने कहा—'उस लोमड़ी की कथा तुम्हारे हाल के अनुकूल है कि लोगों ने उसे देखा कि दौड़ती-बैठती-उठती भागी जा रही थी।

अवेक्षमाणश्चात्मानं [illegible]नुविधानतः ।
कष्टेन यापयन्त्यस्य कालं दारा सुतान्विताः ॥ ९७ ॥

'अहं गणितविद्याया [illegible] । यदि तव [illegible] [illegible] स्थानमस्मै प्राप्तं स्यात्तर्हि यावज्जीवनं [illegible] परिधिं न लङ्घयिष्यामीति ।'

अहमवादम्—'हे बन्धो ! राज्ञां द्विविधं हि [illegible] । अन्नलाभस्तु वा शिरोऽच्छेदो वा । तथा च [illegible] अन्नाशया प्राणान् [illegible] ।'

पदम्

न कश्चिद् धनहीनस्य गृहे याति [illegible] ।
[illegible] देहीति कृष्ट्वा[illegible] [illegible] ॥ ९८ ॥
अथवा दुःखादनं सोढुं [illegible] ।
देहि वा [illegible] [illegible] ॥ ९९ ॥

स प्रोक्ते—'नेदं त्वया मदवस्था[illegible]ति । [illegible] याचनाया [illegible]मिति । किं न श्रुतं [illegible] —
परावमन्ता [illegible]
[illegible] न [illegible] ॥ [illegible] ॥

श्लोक

यत्नानि सत्यवान् [illegible] ईशेच्छामनुयाति ।
न जातु दृष्टवानस्मि [illegible] पथच्युतम् ॥ १०० ॥

पण्डिताश्चाहु —

चत्वारः सम्प्रवर्तन्ते चतुर्भिर्नित्यभितया ।
भूभुजा करदाता च रक्षकेण च तस्कर ॥ [illegible] ॥
पिशुनेन दुराचार पुंश्चली च निरीक्षके ।
येषां [illegible] शुद्धो ।
लेखाधारात्र [illegible] बिभ्यति ॥ १३ ॥

पदम्

मा कार्षी राज्य कार्येषु स्वैराचार यदीच्छसि ।
यत्ते दुर्दिने प्राप्ते न शत्रुश्छिद्रमाप्नुयात् ॥ १०१ ॥
शुद्धाचारस्तु वर्तस्व मा भैषी हि कुतोऽपि च ।
मलिन रजका वस्त्र शिलाया प्रहरन्ति हि ॥ १०२ ॥'

अहमवोचम्—'भूरिमायस्य तस्य कथा त्वय्युत्प्रेक्ष्यते यश्च धावमानश्चोपतिष्ठमान, उद्ग्रीवश्चेतस्ततो वीक्षमाणो दृष्ट ।

آفتست که موجب چندیں مخافتست؟ گفت - شنیدم
که شتران را سخره میگیرند * گفتند - ای سفیه - شتر را
با تو چه مناسبتست؟ و ترا با او چه مشابهت؟ گفت -
خاموش - اگر حسودان بغرض گویند که این شتر
بچه است - و گرفتار آیم - کرا غم تخلیص من باشد
و تا تریاق از عراق آورده شود - مار گزیده مرده بود *
ترا همچنان فضل است و دیانت و تقوی و امانت -
و لیکن متعنتان در کمینند و مدعیان گوشه نشین -
اگر آنچه حسن سیرت تست - بخلاف آن تقریر کنند -
در معرض خطاب پادشاه افتی * در آن حالت کرا
مجال مقالت باشد؟ پس مصلحت آن می بینم - که ملک قناعت را
حراست کنی و ترک ریاست گوئی - که عاقلان گفته اند -

بیت

بدریا در منافع بیشمارست
وگر خواهی - سلامت بر کنارست

رفیق چون این سخن بشنید - بهم بر آمد و روی در هم
کشید و سخنان رنجش آمیز گفتن گرفت - که این چه
عقل است و کفایت و فهم و درایت؟ و قول حکما
درست آمد - که گفته اند - دوستان در زندان بکار آیند -
که بر سفره همه دشمنان دوست نمایند *

قطعه

دوست مشمار آن که در نعمت زند
لاف یاری و برادر خواندگی *
دوست آن باشد که گیرد دست دوست
در پریشان حالی و در ماندگی

دیدم که متغیر میشود - و نصیحت من بغرض
میشنود - نزدیک صاحب دیوان رفتم - بسابقهٔ معرفتی
که در میان ما بود - صورت حالش بگفتم و اهلیت
و استحقاقش بیان کردم - تا بکاری مختصرش نصب
کردند * روزی چند برین بر آمد * لطف طبعش را بدیدند

आफ़त'स्त कि मूजिबे चन्दीं मुख़ाफ़त'स्त? गुफ़्त—शुनीदा अम् कि शुतुराँ रा ब सुख़्रा मी गीरन्द। गुफ़्तन्द—ऐ सफ़ीह! शुतुर रा बा तो चि मुनासिबत'स्त? व तुरा बा ऊ चि मशाबहत? गुफ़्त—'ख़ामोश! अगर हुसूदाँ ब ग़रज़ गोयन्द कि ईं हम शुतुर बचा अस्त—व गिरिफ़्तार आयम्—किरा ग़मे तख़लीसे मन् बाशद? व ता तिरियाक़ अज़ ईराक़ आवुर्दा शवद—मार गज़ीदा मुर्दा बुवद।' तुरा हमचुनाँ फ़ज़्ल अस्त व दयानत व तक़्वा व अमानत—वलेकिन मुतअन्निताँ दर कमीनन्द व मुद्दइयान गोशा नशीन। अगर आँ चि हुस्ने सीरते तुस्त—ब ख़िलाफ़े आँ तक़रीर कुनन्द—दर मारिज़े ख़िताबे पादशाह उफ़्ती। दर आँ हालत किरा मजाले मक़ाल बाशद? पस मस्लेहत आँ मी बीनम् कि मुल्के क़नाअत रा हिरासत कुनी व तर्के रियासत गोयी कि आक़िलाँ गुफ़्ता अन्द—

बैत (बहरे हज़ज)

ब दरिया दुर मनाफ़ए बेशुमार'स्त।
वगर ख़्वाही सलामत बर किनार'स्त॥

रफ़ीक़ चू ईं सुख़ुन बिशुनीद—बहम बर आमद व रूय दरहम कशीद। व सुख़नाने रंजिश आमेज़ गुफ़्तन् गिरिफ़्त—'कि ईं चि अक़्ल'स्त व किफ़ायत व फ़हम व दिरायत? व क़ौले हुकमा दुरुस्त आमद कि गुफ़्ता अन्द—दोस्ताँ दर ज़िन्दाँ ब कार आयन्द। कि बर सुफ़रा हमा दुश्मनाँ दोस्त नुमायन्द।

क़ता (बहरे रमल-मुसद्दस)

दोस्त मशुमार आँ कि दर निअमत ज़नद।
लाफ़े यारी ओ बिरादर ख़्वान्दगी॥
दोस्त आँ बाशद कि गीरद दस्ते दोस्त।
दर परेशाँ हाली ओ दर मान्दगी॥

दीदम् कि मुतग़य्यिर मीशवद—व नसीहते मन् ब ग़रज़ मी शुनवद, ब नज़दीक साहबे दीवान रफ़्तम् व साबिक़ाए मारिफ़ते कि दर मियाने मा बूद—सूरते हालश् बगुफ़्तम् व अहलियत व इस्तिहक़ाक़श् बयान करदम्—ता ब कारे मुख़्तसरश् नस्ब करदन्द। चन्द रोज़ बर आमद। लुत्फ़े तबअश् रा बिदीदन्द

किसी ने उससे पूछा—'क्या सकट आ गया जो ऐसी घवराहट का कारण हुआ है?' वोली—'मैंने सुना है कि ऊँटो को वेगार के लिये पकड रहे है।' लोगो ने कहा—'अरी मूर्खा! ऊँट की तुझ से क्या समानता है? और तेरी उससे क्या समता है?' वह वोली—'चुप रह! यदि ईर्ष्यालु लोग स्वार्थवश कह दें कि यह भी ऊँट की वच्ची है और मैं पकडी जाऊँ तो किसको मेरे छुडाने की चिन्ता होगी? और जव तक विषौषध ईराक से आयेगी—साँप का काटा मर जायगा।' इसी प्रकार तुम मे विद्वत्ता, ईमानदारी, पवित्रता और विश्वास पात्रता है, किन्तु शत्रु घात मे लगे है और विरोधी कोनो मे वैठे हैं।

यदि—तुम्हारे जो गुण हैं—उनके विरुद्ध भी वे वोलेंगे, तो राजा तुमसे अप्रसन्न हो जायगा। उस अवस्था में किसको वोलने की मजाल होगी। अत, भलाई मैं इसी मे (यही) देखता हूँ कि अपने सतोष (रूपी) राज्य की रक्षा करो और रियासत की वात छोड दो। क्योकि वुद्धिमान जन कह गये है—

वैत

समुद्र में लाभ के मोती अगणित है।
पर यदि चाहिये तो सुरक्षा तट पर है॥

मित्र ने जव यह वचन सुने, तो वह रुष्ट हो गया—और मुंह मोड लिया। और क्रोध भरे वचन वोलने लगा कि यह क्या अक्ल है—और क्या समझदारी है, क्या समझ है और क्या ज्ञान है। और पण्डितो का वचन ठीक ही है जैसा कि कह गये हैं—

दोस्त (वे हैं) जो कारागार में भी काम आते है।
दस्तरखान पर तो सभी दुश्मन दोस्त दिखते हैं॥

क़ता

दोस्त मत गिन उसे जो कि ऐश्वर्य के समय।
मित्रता की डींग मारता है और भाईचारे की॥
दोस्त वह होता है जो कि मित्र का हाथ पकडता है।
आपत्ति और विपत्ति में॥

मैंने देखा कि (वह) वदलता जाता है, और मेरे उपदेश को स्वार्थपूर्ण समझ रहा है—अत मैं कोषाध्यक्ष के पास गया, पुराने परिचय के साथ जो हमारे वीच में था। मैंने उसका हाल वताया और उसके गुण और उसकी योग्यता वयान की—यहाँ तक कि उसे एक छोटेसे काम पर लगा लिया। इसके उपरान्त कुछ दिन वीत गये। उन लोगो ने उसके स्वभाव की उत्तमता को देखा और उसके प्रवन्ध की

कश्चित्तमृचे—'अथ कोऽय सकट एतावान् विभ्रमहेतु नजात?' सोऽवदत्—'श्रुतवानस्मि यदुष्ट्रा वलाद्भृतिनिमित्तेन गृह्यन्त इति।' त ऊचु—'रे मूर्ख! उष्ट्रस्य त्वया किं सामान्य, तव चोष्ट्रेण का समतेति?' स ब्रूते—'अलमुक्त्वा! यद्युपजापविदो निमित्तेन ब्रुवते—"एषोऽपि अमेनकार्भक" तथा चाह गृहीत स्या कस्यास्ति मे मोक्षचिन्ता? अथ च—यावद् विषौषध नीत सर्पदष्टा मरिष्यति'॥ १४॥

त्वयि वैदुष्य—प्रामाण्य—पवित्रत्व—विश्वासपात्रत्व चास्ति किन्तु द्वेष्टारो घातलग्ना, कोणे कोणे विरोधिनश्च।

यद्येते तव गुणगणमप्यवगणय्य त्वामाक्षेप्स्यन्ति, राजा त्वय्यप्रसन्नो भविष्यति। एतावत्यामवस्थाया कस्य तस्य पुरतो वाग्व्यवहारावकाश स्यादिति। अत इदंव कल्याण ते पश्यामि यत् स्वस्य सन्तोषसाम्राज्य रक्षन् वर्तेथा, राज्यसेवावसरस्यान्वेषण विहाय चेति। यत पण्डिता आहु—

श्लोक

समुद्रगर्भे रत्नानि सख्यातीतानि सन्त्यपि।
किन्त्वसशयमिच्छेश्चेद्वेलायामेव केवलम्॥ १०३॥

मम मित्रमेतच्छ्रुत्वा कुपित जात खिन्नमुखञ्च। क्रोधगर्भाणि वचासि वक्तुमारभताथ—'कीदृशीय मति, का च नीति, का प्रज्ञा, केय वुद्धिश्च? युक्तमुक्त हि पण्डितैर्यदाहु—

मित्राणि तानि जानीयाद् व्यसने स्थीयते च यै।
भोजनस्य च वेलाया मित्रायन्तेऽप्यरातय॥ १५॥'

पदम्

मित्र मा जीगणन्तद् यत् सम्पत्तावुपतिष्ठति।
यच्चात्ममैत्री वन्धुत्वमत्ययेन विकत्थते॥ १०४॥
तदेव मित्र जानीयाद् यत् करोति सहायताम्।
व्यसने च विपत्तौ च दुःखे च दुरत्यये॥ १०५॥

अथ विपरिणमन्त त दृष्ट्वा ममोपदेशे स्वार्थपरता क्षिपन्त चाह कोषाध्यक्ष प्रत्यगम आवयोर्मध्ये प्राक्तन परिचय चाविष्कृत्येति। तमह मम मित्रस्यावस्था न्यवेदय तस्य गुणान् योग्यताश्च। अन्तत स क्षोदीयसि कार्यव्यापारे नियोजित। अत पर कतिपयदिनानि व्यतीतानि। राजपुरुषैस्तस्य सद्वृत्तमवेक्षित प्रवन्धचातुर्यञ्च।

و حسن تدبیرش را بپسندیدند * کارش از آن در گذشت
و بمرتبهٔ بالاتر از آن متمکن گشت * همچنین نجم
سعادتش در ترقی بود تا باوج ارادت رسید - و مقرب
حضرت سلطان گشت - و مشار الیه و معتمد علیه -
بر سلامت حالش شادمانی کردم و گفتم -

بیت

ز کار بسته میندیش و دل شکسته مدار
که آب چشمهٔ حیوان درون تاریکیست

شعر

اَلَا لَا تَحْزَنَنَّ اَخَا الْبَلِيَّة!
فَلِلرَّحْمٰنِ اَلْطَافٌ خَفِيَّة *

بیت

منشین ترش تو از گردش ایام - که صبر
گرچه تلخست - ولیکن بر شیرین دارد *

در آن مدت مرا با طائفهٔ یاران اتفاق سفر حجاز
افتاد * چون از زیارت مکه باز آمدم - دو منزلم استقبال
کرد * ظاهر حالش را دیدم پریشان و در هیأت
درویشان * گفتم - که حال چیست؟ گفت - چنانکه تو
گفتی - طائفهٔ حسد بردند و بخیانتم منسوب کردند -
و ملک - دام ملکه! در کشف حقیقت آن استقصا
نفرمود - و یاران قدیم و دوستان صمیم از کلمهٔ حق
خاموش گردیدند و صحبت دیرینه فراموش کردند *

قطعه

نه بینی که پیش خداوند جاه
ستایش کنان دست بر سر نهند؟
وگر روزگارش در آرد ز پای
همه عالمش پای بر سر نهند *

فی الجمله بانواع عقوبتش گرفتار بودم - تا درین هفته -
که مژدهٔ سلامت حجاج برسید - از بند گرانم خلاص

व हुस्ने तदबीरश् रा बिपसन्दीदन्द। कारश् अज़ आँ दर गुज़श्त व ब मरतबाए बालातर अज़ाँ मुतमक्किन गश्त। हमचुनी नज्मे सआदतश् दर तरक़्क़ी बूद ता ब औजे इरादत रसीद—व मुक़र्रबे हज़रते सुल्तान गश्त व मुशारुन् इलैहि व मुअतमिद अलैहि शुद। बर सलामते हालश् शादमानी कर्दम् व गुफ्तम्—

बैत (बहरे मुज्तस्)

ज़ि कारे बस्ता मयन्देश ओ दिल शिकस्ता मदार।
कि आबे चश्माए हैवाँ दरूने तारीकी'स्त॥

शेर (बहरे वाफ़िर)

अला ला तह्ज़ननन्न अख़ु'ल् बलिय्यह्।

फ़ लि'रह्मानि अल्ताफ़ुन् ख़ुफ़िय्यह॥

बैत (बहरे रमल)

मनशी तुर्श तो अज़ गर्दिशे अय्याम कि सब्र।
गर्चे तल्ख़'स्त वलेकिन बरे शीरी दारद॥

दराँ मुद्दत मरा बा तायफ़ाए यारान इत्तफ़ाक़े सफ़रे हिजाज़ उफ्ताद। चू अज़ ज़ियारते मक्का बाज़ आमदम्-दू मंज़िलम् इस्तक़बाल कर्द। ज़ाहिरे हालश् रा दीदम् परेशाँ व दर हैअते दर्वेशान्। गुफ्तम्—'कि हाल चीस्त?' गुफ्त—'चुनाँ कि तो गुफ्ती तायफ़ाए हसद बुर्दन्द व ब ख़यानतम् मन्सूब कर्दन्द— व मलिक—दाम मुल्कहू—दर कश्फ़े हक़ीक़ते आँ इस्तिक़साअ न फ़रमूद। व याराने क़दीम व दोस्ताने समीम अज़ कलमाए हक़ ख़ामोश गरदीदन्द व सुहबते देरीना फ़रामोश कर्दन्द।

क़ता (बहरे मुतक़ारिब)

नै बीनी कि पेशे ख़ुदावन्दे जाह।
सितायम् कुनाँ दस्त बर सर निहन्द॥
वगर रोज़गारश् दर आरद ज़ि पाय।
हमा आलमश् पाय बर सर निहन्द॥

फ़ि'ल् जुमला ब अनवाए उक़ूबतश् गिरिफ़्तार बूदम्—ता दर ईं हफ़्ता— कि मुज़्दाए सलामते हुज्जाज बिरसीद—अज़ बन्दे गिरानम् ख़लास

चतुराई को पसन्द किया। उसका काम उससे बढ गया और वह उसकी अपेक्षा ऊँचे पद पर स्थायी हो गया। इसी तरह उसके भाग्य का नक्षत्र ऊँचा होता गया, यहाँ तक कि वह अपनी अभिलाषा के शिखर तक पहुँच गया। और राजा का अन्तरग हो गया और उसका सलाहकार और विश्वासपात्र बन गया। मैंने उसके हाल की सलामती पर हर्ष मनाया और कहा—

बैंत

काम के बँध जाने से चिन्ता मत कर और दिल मत तोड।
क्योकि अमृत के जल का स्रोत अँधेरे में है॥

शैर

सावधान! मत चिन्ता कर हे भाई गाढ में।
क्योकि परमात्मा रखता है भलाइयाँ छुपी हुई॥

बैंत

मत बैठ खट्टा होकर तू दिनो के फेर से क्योंकि सन्तोष।
यद्यपि कडवा होता है किन्तु मीठा फल धारण करता है॥

उन्ही दिनो मुझे मित्रमण्डल के साथ हिजाज की यात्रा का अवसर आ पडा। जब मैं मक्का की तीर्थयात्रा से वापिस आया तो वह दो मजिल तक मेरा स्वागत करने गया। उसका हाल मैंने देखा कि परेशान और फकीरो जैसा है। मैंने कहा कि—'क्या हाल है?' वह बोला कि—'जैसा कि तुमने कहा था, लोग ईर्ष्या करने लगे और (उन्होंने) मुझ पर विश्वासघात का आरोप लगा दिया, और राजा ने—उनका राज्य बना रहे—उसकी वास्तविकता को खोलने के लिये जाँच की आज्ञा न दी। और पुराने मित्र और अन्तरग साथी भी सच बोलने से चुप रह गये और पुरानी सगति को भूल बैठे।

क़ता

क्या तुम नही देखते कि पदासीनो के सामने।
प्रशसा करने वाले हाथ सिर पर रखते हैं॥
और यदि समय उसको नीचे लाये पैरो के।
तो सारा आलम उसके सिर पर पाव रखता है॥

सक्षेप में, मैं उसके विविध दण्डो मे गिरिफ्तार हो गया—यहाँ तक कि इसी सप्ताह जब कि हजयात्रियो की सुरक्षा का समाचार मिला, तो मुझे भारी क़ैद से छोडा गया, पर (और) मेरी पैतृक सम्पत्ति

स गुरुतरकार्यं पदवृद्धि चालभत। तस्य भाग्याकाशनक्षत्रमुन्नतस्थानमवाप स च स्वस्याभिलापस्य शिखरमारुरोह। स राजोऽन्तरङ्गपदवीं प्राप्य तस्य परामर्शको विश्वासभाजनञ्चाभवत्। तस्य क्षेम विज्ञायाह परं हर्षमारक्षमवोच च—

श्लोक

मा शुच कार्यव्यापारे नैराश्य चापि मा गम।
यतस्तैव गुप्ताधारा अन्धतमसि गर्भिता॥१०६॥

श्लोक

कष्टातिसम्प्रपन्नस्त्व भ्रातरापत्सु मा शुच।
प्रभुर्दधाति सर्वत्र भद्राणि निहितानि हि॥१०७॥

श्लोक

कषायितश्च मा तिष्ठा दुर्दिनापन्न एव च।
सन्तोषस्य फल नियत विपाके मिष्टमुच्यते॥१०८॥

तस्मिन्नेव काले मित्रवर्गै सार्धम्मे हिजाजयात्रावसर प्राप्त। यदा मक्कातीर्थ परिक्रम्याह प्रतिनिवृत्तस्तदा स सुहृन् मा द्वयहमध्वानमभित आगत्य मम स्वागतमकरोत्। विपन्नावस्थ दीनहीन च तमवेक्ष्याह पृष्टवान्—'एषा काऽवस्था?' स उक्ते—'यथा भवानुक्तवान् केचन जना मत्सरग्रस्ता बभूवु, राजकोपहरणेन च मामाक्षिपन्। राजा च—राज्य तस्य चिर भूयात्—एतस्य मर्मपरीक्षाया प्रवृत्तो नाभूत्। पुरातनमित्राण्यन्तरङ्गसुहृद्गणा अपि तथ्य वक्तु विरता सञ्जाता बहुदिनान्निर्वृत्ता कालान्तस्थायिनी मैत्री च विस्मृतवन्त।

पदम्

न किं पश्यसि सत्तायामधिरूढाञ्जनान् समे।
सत्यापयन्ति चाटूका हस्त दधति मस्तके॥१०९॥
तानेव यदि सधत्ते क्रूर काल पदानतान्।
तेषा हि निर्ममा लोका पद दधति मस्तके॥११०॥

समासतोऽह तस्य विविधैर्दण्डैर्गृहीत। अथास्मिन्नेव सप्ताहे तीर्थयात्रिकाणा शुभागमनोदन्ते प्राप्ते कठिनकारावासान्मोचितोऽस्मि किन्तु पैतृकसम्पत्तिर्मे नष्टेति।'

बदन्द व मिल्के मौरूसम् ख़ास।' गुफ़्तम्—'मौअ़ज़ाए मन् क़बूल न कर्दी कि गुफ़्तम्—अमले पादशाहान् चूँ सफ़रे दरिया'स्त सूदमन्द व ख़तरनाक। या गंज बर गीरी या दर तलातुमे अमवाज बमीरी।

बैत (बहरे मुज़ारी)

या दुर ब हर दू दस्त कुनद ख़्वाजा दर किनार।
या मौज रोज़े अफ़गनदश् मुर्दा बर किनार॥

मस्लहत न दीदम् अज़ ईं पेश रेशे दरवेश रा ब नैशे मलामत ख़राशीदन्—व नमक पाशीदन्—बदीं दू बैत इख़्तसार कर्दम्—

क़ता (बहरे हज़ज)

न दानस्ती कि बीनी बन्द बर पाय।
चु दर गोशत नयामद पन्दे मर्दुम्॥
दिगर रह गर न दारी ताक़ते नैश।
मकुन अंगुश्त दर सूराख़े कज़्दुम्॥

हिकायत—१८

तने चन्द दर सुहबते मन् बूदन्द—ज़ाहिरे ऐशान् ब सलाह आरास्ता व बातिन ब फ़लाह पैरास्ता। यके अज़ बुज़ुर्गान दर हक़्क़े ईं तायफ़ा हुस्ने ज़न्ने बलीग़ दाश्त—व इदरारे मुअय्यन कर्दा। मगर यके अज़ ऐशान् हरकते कर्द कि मुनासिबे हाले दरवेशान् न बूद। ज़न्ने आं शख़्स फ़ासिद शुद व बाज़ारे ईनाँ कासिद। ख़्वास्तम्—ता ब तरीक़े कफ़ाफ़े यारान् मुस्तख़लिस कुनम्। आहंगे ख़िदमतश् कर्दम्। दरबानम् रिहा न कर्द व जफ़ा गुफ़्त। मअज़ूरश् दाश्तम् कि लतीफ़ान् गुफ़्ता अन्द—

क़ता (बहरे ख़फ़ीफ़)

दरे मीरो वज़ीरो सुल्ताँ रा।
बे वसीलत मगर्द पैरामन॥
सग ओ दरबाँ चु याफ़्तन्द ग़रीब।
ईं गिरेबाँ गिरिफ़्तो आँ दामन॥

کردند و ملک موروثم خاص * گفتم - موعظهٔ من قبول نکردی - که گفتم - عمل پادشاهان چون سفر دریاست سودمند و خطرناک - یا گنج بر گیری یا در تلاطم امواج بمیری *

بیت

یا در بهر دو دست کند خواجه در کنار
یا موج روزی افگندش مرده بر کنار *

مصلحت ندیدم از ین بیش ریش درویش را بنیش ملامت خراشیدن و نمک پاشیدن - بدین دو بیت اختصار کردم -

قطعه

ندانستی که بینی بند بر پای
چو در گوشت نیامد پند مردم؟
دگر ره گر نداری طاقت نیش
مکن انگشت در سوراخ کژدم *

حکایت ۱۸

تنی چند در صحبت من بودند - ظاهر ایشان بصلاح آراسته و باطن بفلاح پیراسته * یکی از بزرگان در حق این طائفه حسن ظن بلیغ داشت - و ادراری معین کرده * مگر یکی از ایشان حرکتی کرد که مناسب حال درویشان نبود * ظن آن شخص فاسد شد - و بازار اینان کاسد * خواستم تا بطریقی کفاف یاران مستخلص کنم * آهنگ خدمتش کردم * دربانم رها نکرد و جفا گفت * معذورش داشتم - که لطیفان گفته اند -

قطعه

در میر و وزیر و سلطان را
بی وسیلت مگرد پیرامن *
سگ و دربان چو یافتند غریب
این گریبان گرفت و آن دامن

چندانکه مقربان حضرت آن بزرگ بر حال من وقوف یافتند - باکرامم در آوردند و برتر مقامی معین کردند - اما بتواضع فروتر نشستم و گفتم -

بیت

بگذار - که بندهٔ کمینم
تا در صف بندگان نشینم *

گفت - الله! الله! چه جای این سخن است!

بیت

گر بر سر و چشم من نشینی
بارت بکشم - که نازنینی *

فی الجمله بنشستم و از هر دری سخن در پیوستم تا حدیث زلت یاران در میان آمد * گفتم -

قطعه

چه جرم دید خداوند سابق الانعام
که بنده در نظر خویش خوار میدارد؟
خدایراست مسلم بزرگی و الطاف
که جرم بیند و نان بر قرار میدارد *

حاکم این سخن را پسندید و اسباب معاش یارانم فرمود تا بر قاعدهٔ ماضی مهیا دارند - و مؤنت ایام تعطیل را وفا کنند * شکر نعمت بگفتم - و زمین خدمت ببوسیدم - و عذر جسارت خواستم و در حال بیرون آمدم و گفتم -

قطعه

چو کعبه قبلهٔ حاجت شد - از دیار بعید
روند خلق بدیدار او بسی فرسنگ *
ترا تحمّل امثال ما باید کرد
که هیچکس نزند بر درخت بی بر سنگ *

حکایت ۱۹

ملک زادهٔ گنج فراوان از پدر میراث یافت - دست کرم بر کشاد و داد سخاوت داد و نعمت بی دریغ بر سپاه و رعیت بریخت *

चन्दाकि मुकर्रिवाने हज़रते आँ वुज़ुर्ग वर हाले मन् वक़ूफ़ यापतन्द—व इकरामम् दर आवुर्दन्द व वरतर मुक़ामे मुअय्यन कर्दन्द—अम्मा व तवाज़ोअ फ़िरोतर निशस्तम् व गुफ़्तम्—

वैत (वहरे हज़ज-मुसद्दस)

वगुज़ार कि वन्दाए कमीनम्।
ता दर सफ़े वन्दगाँ नशीनम्॥

गुफ़्त—'अल्लाह! अल्लाह! चि जाये ईं सुख़ुनस्त!'

वैत (वहरे हज़ज-मुसद्दस)

गर वर सरो चश्मे मन् नशीनी।
नाज़त विकशम् कि नाज़नीनी॥

फ़िल् जुमला वनिशस्तम् व अज़ हर दरे सुख़ुन दर पैवस्तम्—ता हदीसे ज़िल्लते यारान् दर मियान आमद। गुफ़्तम्—

क़ता (वहरे मुज्तस़)

चि जुर्म दीद ख़ुदावन्दे साविक़ुल् इनआम।
कि वन्दा दर नज़रे ख़ेश ख़्वार मीदारद॥
ख़ुदायरा'स्त मुसल्लम वुज़ुर्गी ओ अल्ताफ़।
कि जुर्म वीनदो नाँ वरक़रार मीदारद॥

हाकिम ईं सुख़ुन रा पसन्दीद व असवावे मआशे यारान फ़रमूद ता वाज़ वर क़ाइदाए माज़ी मुहय्या दारन्द—व मोअनते अय्यामे तातील रा वफ़ा कुनन्द। शुक्रे निअमत विगुफ़्तम्—व ज़मीने ख़िदमत वुवोसीदम्—व उज़्रे जसारत ख़्वास्तम् व दरहाल वेरूँ आमदम् व गुफ़्तम्—

क़ता (वहरे मुज्तस़)

चु काबा क़िब्लाए हाजत शुद अज़ दयारे वईद।
रवन्द ख़ल्क़ व दीदारे ऊ वसे फ़र्संग।
तुरा तहम्मुले अमसाले मा वबायद कद।
कि हेच कस न ज़नद वर दरख़्ते वेवर सग॥

हिकायत—१९

मलिकज़ादाए गंजे फ़रावान अज़ पिदर मीरास यापत। दस्ते करम वर कुशाद व दादे सख़ावत विदाद व निअमते वे दरेग़ वर सिपाह व रैयत विरेख़्त।

जब कि उस बडे आदमी के मित्रों को मेरा हाल मालूम हुआ (तो वे) मुझे सादर अन्दर ले गये और ऊँचे आसन पर बिठाने लगे। किन्तु मैं नम्रता से नीचे बैठ गया और बोला—

यदैतस्य श्रीमतः परिजना मर्मेतावन्तो स्थितिं ज्ञातवन्तस्तदा मां सादरमाहूयान्तःपुरे प्रवेशितवन्त उच्चासनं च मह्यं दत्तवन्तः किन्तु विनयेनाहं पृथिव्यामुपाविश्यावोचम्—

बैत

जाने दो कि मैं एक तुच्छ दास हूँ।
ताकि मैं दासों की पंक्ति में बैठूँ॥

श्लोक

आज्ञापयतु मां दासं तुच्छं पुनरकिञ्चनम्।
यतोऽभिनिविशे चाथ दासश्रेण्यां च दासवत्॥ ११६॥

वह बोला—'अल्ला! अल्ला! इस बात का यह कौनसा मौका है!

स ब्रूते—'हरे हरे! कोऽयमवसरोऽस्य वचनः!

बैत

यदि तुम मेरे सिर और आँखों पर बैठो।
मैं तुम्हारे नाज उठाऊँगा क्योंकि तुम प्रिय हो॥

श्लोक

त्वं चेन्निवेष्टुकामः स्या मदीये मूर्ध्नि चक्षुषो।
विश्रमं ते वहे नित्यं यतस्त्वं सुप्रियो मम॥ ११७॥

संक्षेप में, मैं बैठ गया और अनेक विषयों पर बातें करने लगा, यहाँ तक कि मित्रों के अपमान का उल्लेख बीच में आया।

समासेन, अहं यथादिष्टमुपविष्टवान्। [illegible]। अन्ततो मम सुहृदां मानभङ्गस्य प्रसङ्गः प्राप्तः।

कता

क्या अपराध देखा पिछली कृपाओं के स्वामी ने।
कि दास को अपनी दृष्टि में हीन कर दिया॥
परमेश्वर के गुण तसलीम किये जाते हैं बडप्पन और दया।
क्योंकि वह अपराध देखता है और रोटी यथापूर्व देता है॥

पदम्

को दोषो लक्षितोऽस्माकं कृपानाथेन स्वामिना।
कृपया पालितो दासो यतो दृष्ट्या निरस्कृतः॥ ११८॥
परमात्मन एवायं महिमा चाप्यनुग्रहः।
दोषं पश्यति दासानां भोजनं न निषेधति॥ ११९॥

अधिकारी ने इस बात को पसन्द किया और मित्रों की वृत्ति को जारी करने की आज्ञा दे दी कि पुनः पहले के नियम के अनुसार दी जाती रहे—और तातील के दिनों की सहायता भी पूरी कर दी जाय। मैंने इस कृपा का धन्यवाद किया और सेवा भूमि को चूमा और धृष्टता की क्षमा याचना की और उसी अवस्था में बाहर निकल आया और बोला—

श्रीमानेतच्छ्रुत्वा प्रासीदत्। जीवनयात्रोपादानस्य तेषां वृत्तिं पुनर्दातुमादिशत्, 'वृत्तिभङ्गदिवसानां चापि निश्चिता वृत्तिर्देया' इत्यादिशत्। अहं तस्यैतस्योपकारं प्रति कृतज्ञतां ज्ञापितवान्, सेवाभूमिं चाचुम्बम्, धार्ष्ट्यस्य स्वस्य क्षमायाचनं कृत्वा, तस्यामवस्थायां बहिरागतश्चावोचम्—

कता

चूँकि काबा कामना केन्द्र है दूर दूर के देशों से।
जाते हैं लोग उसके दर्शनों को बहुत कोसों से॥
तुमको हमारे जैसे को सहन करना ही उचित है।
क्योंकि कोई नहीं मारता बिना फल वाले पेड पर पत्थर॥

पदम्

काबास्ति कामनाकेन्द्रं देशदेशान्तरस्य हि।
द्रष्टुकामाः प्रपद्यन्ते लोका हि बहुयोजनान्॥ १२०॥
तवाऽस्मादृक्षु लोकेषु क्षमाभावो हि साम्प्रतम्।
कश्चिन्निष्फलवृक्षेषु न हन्यादुपलं क्वचित्॥ १२१॥

कथा—१९

एक राजकुमार को विशाल कोष पिता से उत्तराधिकार में मिला। (उसने) कृपा का हाथ खोल दिया और उदारता से दान दिया और सम्पत्ति को बेखिझक सेना और प्रजा पर न्योछावर कर दिया।

आख्यायितम्—१९

कश्चिद् राजकुमारः पितुरुत्तराधिकारितया विशालं राजकोषं लब्धवान्। असौ मुक्तहस्तो बभूवोदारतया च तेनास्य प्रजास्वत्र दानवृष्टिं कर्तुमारेभे।

قطعه

بیاساید مشام از طلاء عود
بر آتش نه که چون عنبر ببوید *
بزرگی بایدت ـ بخشندگی کن
که تا دانه نیفشانی نروید *

یکی از جلسای بی تدبیر نصیحتش آغاز کرد ـ که ملوك پیشین مر این نعمت‌را بسعی اندوخته اند ـ و برای مصلحتی نهاده ـ دست از این حرکت کوتاه کن ـ که واقعها در پیشست و دشمنان در کمین ـ نباید که بوقت حاجت درمانی *

قطعه

اگر گنجی کنی بر عامیان بخش
رسد مر هر گدای‌را برنجی *
چرا نستانی از هر یك جوی سیم
که گرد آید ترا هر روز گنجی *

ملك زاده روی از این سخن در هم کشید ـ و موافق طبع بلندش نیامد ـ و مر اورا زجر فرمود و گفت ـ مرا خداوند تعالی مالك این ممالك گردانیده است تا بخورم و ببخشم ـ نه پاسبانم که نگهدارم *

بیت

قارون هلاك شد که چهل خانه گنج داشت
نوشیروان نمرد که نام نکو گذاشت *

حکایت ۲

آورده اند که نوشیروان عادل‌را در شکارگاهی صیدی کباب می کردند * نمك نبود ـ غلامی‌را بروستا فرستاد تا نمك آرد * نوشیروان گفت ـ نمك بقیمت بستان تا رسمی نشود ـ و دیه خراب نگردد * گفتند ـ ازین قدر چه خلل زاید؟ گفت ـ بنیاد ظلم اول در جهان اندك بوده است ـ هر که آمد بر آن مزید کرد ـ تا بدین غایت رسیده *

कता (बहरे हज़ज्)

नयामायद मशाम अज़ तब्ल ए ऊद।
बर आतिश निह् कि चू अम्बर बिबूयद॥
बुज़ुर्गी बायदत—बख़्शन्दगी कुन।
कि ता दाना नयफ़्शानी न रूयद॥

यके अज़ जुल्साय बेतदबीर नसीहतश् आग़ाज़ कर्द कि 'मुल्के पेशीन मर ईं निअमत रा ब सई अन्दोख़्ता अन्द व बराये मस्लहते निहादा—दस्त अज़ीं हरकत कोताह कुन्—कि वाक़अहा दर पेशस्त व दुश्मनाँ दर कमीन—न बायद कि ब वक़्ते हाजत दरमानी।'

क़ता (बहरे हज़ज्)

अगर गंजे कुनी बर आमियाँ बख़्श।
रसद मर हर गदाये रा बिरन्जे॥
चिरा नस्तानी अज़ हर यक जवे सीम।
कि गिर्द आयद तुरा हर रोज़ गंजे॥

मलिकज़ादा रूय अज़ीं सुख़न दरहम कशीद—व मुआफ़िक़े तबए बुलन्दश् नयामद व मर ऊरा ज़ज्र फ़रमूद व गुफ़्त—'मरा ख़ुदावन्दे तआला मालिके ईं ममालिक गर्दानीदा अस्त ता बिख़ुरम् व बिबख़्शम्। नै पासबानम् कि निगह दारम्।'

बैत (बहरे मुज़ारी)

क़ारूँ हलाक शुद कि चेहल ख़ाना गंज दाश्त।
नौशेरवाँ न मुर्द कि नामे निकू गुज़ाश्त॥

हिकायत—२०

आवुर्दा अन्द कि नौशेरवाने आदिल रा दर शिकार गाहे सैदे कबाब मीकर्दन्द। नमक न बूद। गुलामे रा ब रूस्ता फ़िरिस्ताद ता नमक आरद। नौशेरवाँ गुफ़्त—'नमक ब क़ीमत बिसितान ता बे रस्मी न शवद—व दिह ख़राब न गर्दद।' गुफ़्तन्द—'अज़ीं क़दर चि ख़लल ज़ायद?' गुफ़्त—'बुनियादे ज़ुल्म अव्वल दर जहाँ अन्दक बूदा अस्त—हरकि आमद बराँ मज़ीद कर्द—ता बदीं ग़ायत रसीदा।'

कता

ऊद के थाल से दिमाग़ तर नही होता।
आग पर रख कि जिससे कि वह अबर की तरह महके॥
यदि तुझे बडप्पन चाहिये तो दान कर।
क्योकि जब तक तू दाना नही बिखेरेगा पेड नही उगेगा॥

एक मूर्ख दरबारी ने उसे उपदेश देना शुरू किया कि पहले राजाओं ने इस सम्पत्ति को बडे यत्न से जोडा है और भलाई के लिये रख छोडा था। इस हरकत से हाथ खीचो क्योकि सकट सामने हैं और शत्रु ताक में। ऐसा न हो कि समय पडने पर तुम विपन्न हो जाओ।

पदम्

घ्राणेन्द्रिय न तृप्नोति हव्यभाण्डेन कर्हिचित्।
अग्नौ निवेहि तद्गन्ध मुञ्चते हि यथाम्बरम्॥१२२॥
इच्छेश्चेद् गौरव तर्हि दानशील सदा भव।
न यावत् क्षिप्यते बीज तावत् तन्न प्ररोहति॥१२३॥

कश्चिन् मतिहीनो राजसभासदस्तमुपदेश कर्तुमारेभे 'अस्य पूर्वजैर्नरेशैरिद धन यत्नेन सञ्चित कल्याणहेतोश्च रक्षितमासीत्। अलमेतादृशा मुक्तहस्तेन यतो विपद प्रत्यक्ष, शत्रवश्च परोक्ष तिष्ठन्ति। न स्यादथ समुत्पन्ने व्यसने विपन्नेन त्वया भूयत।'

क़ता

यदि एक कोष तू जनता में लुटा दे।
मिलेगा हर भिखारी को एक एक चावल॥
क्यो तू नही लेता हर एक से जौ जौ चांदी।
कि जुड जाय तुझे हर रोज़ एक खज़ाना॥

राजकुमार ने इस बात पर मुंह सिकोड लिया—और यह बात उसे अपने उच्च स्वभाव के अनुकूल नही लगी, उसने उसे झिडका और बोला—'मुझे परमेश्वर ने इस राज्य का स्वामी (इसलिये) बनाया है, ताकि मैं खाऊँ और खिलाऊँ। मैं चौकीदार नही हूँ कि चौकीदारी करता रहूँ।'

पदम्

त्वया हि जनसामान्ये कोषश्चेद्धि वितीयते।
एकैको लोक आप्नोति शालिमात्र ततो धनम्॥१२४॥
नादत्से तत्कथ रौप्य सर्वस्माद् यवसम्मितम्।
यतोऽनुदिवस चीया कोषमेक समन्तत॥१२५॥

राजकुमारोऽनेन प्रसगेन खिन्नमुख सजात, एषा कथा तस्मा उच्चविचारानुरूपा न प्रतीता। स त निर्भर्त्सयन्नाह—'परमात्मनाऽहमेतस्य राज्यस्याधिपतिरनेन हेतुना रचितो यतो भुञ्जे ददामि च। नाहमस्य प्रतीहारो यदस्य द्वारपालता दधान उपतिष्ठामि।'

बैत

कारूँ नष्ट हो गया जो कि चालीस कोठे धन रखता था।
नौशेरवाँ नही मरा क्योकि नेकनाम छोड गया है॥

श्लोक

चत्वारिंशच्च कोष्ठानि दधन् कारूँ प्रणाशित।
नौशेरवाँ यशस्वित्वादमरत्वमुपागत॥१२६॥

कथा—२०

कहते हैं कि न्यायशील नौशेरवाँ के लिये शिकारगाह मे किसी पशु का कबाब बन रहा था। (वहाँ) नमक नही था। एक गुलाम को (निकटस्थ) गाँव में भेजा गया कि नमक ले आवे। नौशेरवाँ ने कहा—'नमक मूल्य से लाना ताकि बुरी प्रथा न पडे और गाँव न उजडे।' लोगो ने कहा—'इस ज़रा सी बात से क्या हानि होगी?' उसने कहा—'पहले अन्याय की जड दुनिया में थोडी ही थी—हर कोई जो आया, उसे बढाता गया, यहाँ तक कि अब इतनी ज्यादा बढ गई है।'

आख्यायितम्—२०

श्रूयतेऽथ कदाचिन्नौशेरवानस्य कृते मृगयाक्षेत्रे कस्यचिदाखेटस्य शूल्य साधितवन्तो जना। तत्र लवणो नासीत्। तं कश्चिद् दासो ग्राम प्रति प्रहितोऽथ लवणमानेतुमिति। नौशेरवान उवाच—'लवण मूल्य दत्त्वाऽऽनय, यथा प्रथाविपर्ययो न स्याद् ग्रामश्चापि न नश्येदिति।' सहाया ऊचु—'अनेनाल्पीयसा का हानि?' सोऽवदत्—'पुराऽल्पीय एवासीदन्यायमूलम। आगतमात्रेण सर्वेण हि चैतस्य मूलमभिषिञ्चितमत एवास्य विशालता।'

قطعه

اگر ز باغ رعیت ملک خورد سیبی
بر آورند غلامان او درخت از بیخ *
به نیم بیضه که سلطان ستم روا دارد
زنند لشکریانش هزار مرغ بسیخ *

بیت

نماند ستمگار بد روزگار
بماند برو لعنت پایدار *

حکایت ۲۱

عاملی را شنیدم که خانهٔ رعیت خراب کردی تا خزانهٔ سلطان آبادان کند - بی خبر از قول حکما - که گفته اند - هر که خلق را بیازارد تا دل سلطان بدست آرد - خدای تعالی همان خلق را برو گمارد - تا دمار از نهاد او بر آرد *

بیت

آتش سوزان نکند با سپند
آنچه کند دود دل دردمند

گویند - سر جملهٔ حیوانات شیر است - و کمتر جانوران خر - و باتفاق خردمندان خر بار بر به از شیر مردم در *

مثنوی

مسکین خر - اگرچه بی تمیزست
چون بار همی برد - عزیزست
گاوان و خران بار بردار
به ز آدمیان مردم آزار *

گویند - ملک را طرفی از ذمائم اخلاقش بتراشی معلوم شد - در شکنجه کشید - و بانواع عقوبتش بکشت

قطعه

حاصل نشود رضای سلطان
تا خاطر بندگان نجوئی
خواهی که خدای بر تو بخشد
با خلق خدای کن نکوئی *

क़ता (वहरे मुज्तश्)

अगर ज़ि वागे रअय्यत मलिक खुरद सेवे।
वर आवरन्द गुलामाने ऊ दरख़्त अज़ वेख़॥
व नीम वैज़ा कि सुल्ताँ सितम रवा दारद।
ज़नन्द लश्करीयानश् हज़ार मुर्ग़ व सीख़॥

वैत (वहरे मुतकारिव)

न मानद सितमगारे वद रोज़गार।
विमानद वरू लानते पायेदार॥

हिकायत—२१

आमिले रा शुनीदम् कि खानाए रैयत खराव कर्दे ता ख़ज़ानाए सुल्तान आवादाँ कुनद—वेखवर अज़ क़ौले हुकमा—कि गुफ़्ता अन्द—'हर कि ख़ल्क़ रा वयाज़ारद ता दिले सुलतान व दस्त आरद—ख़ुदाय तआला हमा खल्क रा वरू गुमारद ता दिमार अज़ निहादे ऊ वर आरद।'

वैत (वहरे सरी)

आतिशे सोज़ाँ न कुनद वा सिपन्द।
आँ चि कुनद दूदे दिले दर्दमन्द॥

गोयन्द—सरे जुमलाए हैवानान् शेर अस्त—व कमतरीने जानवरान् खर—व व इत्तिफाके खिरदमन्दाँ खरे वारवर विह् अज़ शेरे मर्दुम दर।

मसनवी (वहरे हज़ज्-मुसद्दस)

मिसकीन ख़र—अगरचि वेतमीज़'स्त।
चू वार हमे वुरद अज़ीज़'स्त॥
गावानो खराने वार वर दार।
विह्'ज़ आदमियाने मर्दुम आज़ार॥

गोयन्द—मलिक रा तरफ़े अज़ ज़मायमे अख़्लाकश् व कराइन मअलूम शुद—दर शिकंजा कशीद—व व अनवाए उक़ूवतश् विकुश्त।

क़ता (वहरे हज़ज्-मुसद्दस)

हासिल न शवद रिज़ाए सुलतान।
ता खातिरे वन्दगान् न जोई॥
ख़्वाही कि ख़ुदाय वर तो वख़्शद।
वा ख़ल्के ख़ुदाय कुन निकोई॥

कता

यदि प्रजा के बाग़ से राजा एक सेब खा ले।
उखाड डालते हैं उसके दास पेड को जड से॥
आधे अण्डे के लिये जो राजा अत्याचार करता है।
मार डालते हैं उसके लश्करवाले हज़ार पक्षियो को कबाब के लिये॥

बैत

नही रहता अत्याचारी हमेशा।
रहता है उस पर धिक्कार हमेशा॥

कथा—२१

एक राजकर्मचारी के विषय में मैंने सुना है कि वह प्रजा का घर उजाडता था ताकि राजा का खजाना भर जाय। वह पण्डितो के वाक्य से अनभिज्ञ था कि कह गये है कि जो लोगो को सताता है—ताकि राजा के दिल को हाथ में कर ले, परमेश्वर सारे लोगो को उस पर उभाड देता है ताकि वे विनाश उसके अस्तित्व पर ले आवें।

बैत

जलती हुई आग नही करती सिपन्द के साथ वह।
जो कि करता है दुखी दिल का धुआँ॥

कहा है कि—प्रधान सारे पशुओ में शेर है और पशुओ में नीचतम गधा है—और बुद्धिमानो के एकमत से भारवाही गधा अच्छा है नरभक्षी शेर से।

मसनवी

बेचारा गधा यद्यपि बेतमीज़ होता है।
चूँकि बोझा ले जाता है इसलिये प्यारा होता है॥
बैल और गधे बोझा ढोने वाले।
ज्यादा अच्छे है नृशस मनुष्यो से॥

कहते है—राजा को उसके आचरण के कुछ दुष्कर्मों का सकेत मालूम हुआ—(उसने उसे) शिकजे में कस दिया, और अनेक प्रकार की यत्रणाओ से उसे मार डाला।

कता

उपलब्ध न होगी राजा की प्रसन्नता।
जब तक कि सेवको को प्रसन्न नही करोगे॥
यदि चाहते हो कि परमात्मा तुम्हें क्षमा कर दे।
परमात्मा की प्रजा के प्रति भलाई करो॥

पदम्

प्रजाना चेत् फलोद्यानाद् राज्ञा चादीयते फलम्।
तस्य दासै समूल च वृक्षो ह्युत्पाटयिष्यते॥१२७॥
नेमडिम्बस्य हेतोश्चेत् प्रजा प्रकुरुते नृप।
शूल्याद्धेतोश्च हिंनन्ति सैन्यास्ताम्रनिखीनतम्॥१२८॥

श्लोक

न तिष्ठति सदा य स्यादत्याचारपरायण।
अपकीर्त्ति सदा लोके दुराचारस्य तिष्ठति॥१२९॥

आख्यायितम्—२१

श्रुतवानस्मि कश्चिद्राजपुरुष प्रजाना गृहान् सर्वशून्यान् कुरुते स्म येन राज्ञो राजकोप पूर्ण स्यात्—अजानन्नेतद्विदुषा वाक्य यथाहु—

य प्रजा पीडयेच्चैव राज्ञ प्रेम्णो व्यपेक्षया।
प्रभुस्तस्य विनाशाय विरुद्धा कुरुते प्रजाम्॥१७॥

श्लोक

वीरुच्च कटुधूमा तु धूम न कुरुते हुतम्।
यथा हि कुरुते धूम मन केनचिदर्दितम्॥१३०॥

उच्यते हि—पशूना प्रकृष्टो हि सिंह, निकृष्टश्च खर। सर्वविदुषा सम्मतमथ—'भारवाही खर श्रेयान् नृशसो न च केसरी।'

गाथा

खरो बुद्धिविवेकेन वराको वचितोऽपि सन्।
भार वहति तेनासौ सर्वेषा स्नेहभाजन॥१३१॥
गावश्चैव खराश्चैव ये चापि भारवाहिन।
लोकानुपीडकेभ्यस्ते श्रेयान्सो हि सदा स्मृता॥१३२॥

श्रूयते—राजा कानिचिदस्याचरणदुष्कर्माणि विज्ञातवान्। ग त यन्त्रे यन्त्रितवान् बहुविधयातनाभिरेन घातितवाश्चेति।

पदम्

अथ लब्धु न शक्नोति प्रसाद चैव स्वामिन।
यावद्धि सेवकास्तस्य न प्रीणाति जन क्वचित्॥१३३॥
इच्छेश्चेत् परमेशस्ते क्षमेत भृशमागसम्।
उपकारेण वर्तेथा परमेशप्रजाप्रति॥१३४॥

آورده اند - که یکی از ستم دیدگان بر سر او بگذشت - و در حال تباه او تأمل کرد و گفت -

आवुर्दा अन्द—कि यके अज़ सितम दीदगाँ वर सरे ऊ वगुज़श्त व दर हाले तबाहे ऊ ताम्मुल कर्द व गुफ्त—

قطعه

نه هر که قوت بازو و منصبی دارد
سلطنت بخورد مال مردمان بگزاف *
توان بحلق فرو بردن استخوان درشت
ولی شکم بدرد - چون بگیرد اندر ناف *

क़ता (बहरे मुज्तश्)

नै हर कि क़ुव्वते बाज़ू व मन्सबे दारद।
व सल्तनत बिख़ुरद माले मर्दुमाँ व गुज़ाफ़॥
तवाँ व हल्क़ फरो बुर्दन् उस्तुख़्वाने दुरुश्त।
वले शिकम बिदरद—चूँ बिगीरद अन्दर नाफ़॥

حکایت ۲۲

مردم آزاری را حکایت کنند - که سنگی بر سر ... زد * درویش را مجال انتقام نبود * سنگ را با خود همیداشت تا وقتی که ملک را بر آن لشکری خشم آ... - و در چاه زندانش کرد * درویش بیامد و سنگ بر سر ... کوفت * گفتا - تو کیستی؟ و این سنگ بر من چرا زدی؟ گفت - من فلانم - و این سنگ همانست که در فلان تاریخ بر سر من زدی * گفت - چندین ... کجا بودی؟ گفت - از جاهت اندیشه میکردم - اکنون که در چاهت دیدم - فرصت را غنیمت شمردم - که زیرکان گفته اند -

हिकायत—२२

मर्दुम आज़ारे रा हिकायत कुनन्द कि सगे वर सरे सालिहे ज़द। दरवेश रा मजाले इन्तक़ाम न बूद। सग रा बा ख़ुद हमीदाश्त ता वक़्ते कि मलिक रा वर आँ लश्करी ख़िश्म आमद—व दर चाहे ज़िन्दानश् कर्द। दरवेश बयामद व सग वर सरश् कोफ़्त। गुफ़्ता—'तो कीस्ती? व ईं सग वर मन चिरा ज़दी?' गुफ़्त—'मन् फलानम्। व ईं सग हमान'स्त कि दर फ़लाँ तारीख़ वर सरे मन् ज़दी।' गुफ़्त—'चन्दी रोज़गार कुजा बूदी?' गुफ़्त—'अज़ जाहत अन्देशा मी करदम्—अकनूँ कि दर चाहत दीदम्—फ़ुरसत रा ग़नीमत शुमर्दम्—कि ज़ीरकाँ गुफ़्ता अन्द—

مثنوی

ناسزائی را چو بینی بختیار
عاقلان تسلیم کردند اختیار *
چون نداری ناخن درنده تیز
با بدان آن به که کم گیری ستیز *
هر که با پولاد بازو پنجه کرد
ساعد سیمین خود را رنجه کرد *
باش - تا دستش ببندد روزگار
پس بکام دوستان مغزش بر آر *

मसनवी (बहरे रमल-मुसद्दस)

नासज़ाए रा चु बीनी बख़्तियार।
आक़िलाँ तसलीम कदन्द अख़्तियार॥
चूँ न दारी नाख़ुने दरिन्दा तेज़।
बा बदाँ आँ बिह् कि कम गीरी सतेज़।
हर कि बा पूलाद बाज़ू पंजा कर्द।
साइदे सीमीने ख़ुद रा रंजा कर्द॥
बाश ता दस्तश् बिबन्दद रोज़गार।
पस ब कामे दोस्ताँ मग़ज़श् वर आर॥

حکایت ۲۳

یکی از ملوک را مرضی هائل بود - که اعادهٔ ذکر آن ناکردن اولیتر است * طائفهٔ از حکمای یونان ...

हिकायत—२३

यके अज़ मुलूक रा मरज़े हायल बूद—कि इआदाए ज़िक्रे आँ नाकरदन् औलातर अस्त। तायफ़ाए अज़ हुकमाए यूनान मुत्तफ़िक़

कहते हैं—उसके अत्याचार पीडितो में से एक उसके सिरहाने होकर निकला और उसकी दुर्दशा पर विचार करके बोला—

श्रूयते—कश्चिदस्य ग्रातात्याचारग्रस्तोऽन्यतमस्तदन्तिक गा-त्वावेक्ष्योवाच—

क़ता

कोई भी आदमी जो वाहुवल और पद धारण करता है।
राज्य में प्रजा का धन वलात् नहीं खा सकता।।
गले से टेढ़ी हड्डी को निगल जाना सम्भव हो सकता है।
लेकिन पेट फाड देती है जब कि नाभि तक पहुँचती है।।

पदम्

दोर्वलेन पदेनाथ युक्त शक्नोति कश्चन।
न च राज्ये धन भोक्तु प्रजाना प्रसभात् क्वचित्।। १३५।।
वक्रास्थि कण्ठमार्गेणोदरीकर्तु हि शक्यते।
नाभावतरित तद्धि विदृणात्युदर पुन।। १३६।।

कथा—२२

किसी मनुष्यो को सताने वाले की कथा कहा करते हैं कि उसने एक पत्थर किसी साधु के सिर पर दे मारा। साधु को वदला लेने की सामर्थ्य नही थी। (उसने) पत्थर को तव तक अपने पास रखे रखा जव तक कि राजा को उस लश्करी पर क्रोध आया—और एक अन्धे कुएँ में उसको डाल दिया। तव साधु आया और पत्थर उसके सिर पर दे मारा। वह वोला—'तू कौन है। और यह पत्थर मुझ पर क्यो मारा है?' साधु वोला—'मैं अमुक हूँ। और यह पत्थर वही है जो अमुक दिन मेरे सिर पर तूने मारा था।' वह वोला—'इतने दिनो तक तू कहाँ था।' साधु ने कहा—'मैं तेरे पद से डरता था, अव जव कि तुझे कुएँ में देखता हूँ, इस फुरसत को ग़नीमत गिनता हूँ, क्योकि पण्डित कह गये हैं—

ग्राख्यायितम्—२२

लोकशल्यस्य कस्यचित्कथाऽनुश्रूयतेऽथैकदा स कश्चित् साधु लोष्ठेन शिरसि ताडयामास। साधु प्रतिशोधसामर्थ्य न दधे। ग्रतोऽसौ लोष्ठ सुरक्षित निदधौ। ग्रथ कदाचिद्राजा तस्मै कुपितो-ऽभूत्—ग्रन्धकूपे च त निवेशितवान्। साधुस्तत्रागत्य लोष्ठेन तस्य शिरसि प्रजहार। स ब्रूते—'कस्त्वम्? कथ च लोष्ठेनानेन मच्छिरसि ताडितवानसि?' सोऽवदत्—'ग्रमुकोऽहमस्मि, तदेवै तल्लोष्ठ येन च त्व मामभिहतवानमुष्या तिथाविति।' स ब्रूते—'ग्रत पूर्व क्वासी?' सोऽवदत्—'त्वदुच्चपदव्या ग्रभैषम्। इदानी त्वा कूपपतित दृष्ट्वेम योग वैरानृण्यनुयोगमिति मन्ये।' यथाहु पण्डिता —

मसनवी

अयोग्य को जव तू देखे सौभाग्यशाली।
तो वुद्धिमान् लोग उसका अधिकार स्वीकार करते हैं।।
यदि तू नही रखता फाडने वाले तीक्ष्ण नख।
तो यही अच्छा है कि वुरों के साथ कलह न करे।।
हर वह जो कि फौलाद की वाजू वाले से पजा लडाता है।
अपनी चाँदी की (जैसी कोमल) कलाई को चोट पहुँचाता है।।
ठहर, जव तक कि उसके हाथ को समय वाँध दे।
तव दोस्तो की प्रसन्नता के लिये उसका भेजा निकाल लेना।।

गाथा

ग्रयोग्यमथ पश्येस्त्व दिष्ट्या सौभाग्यवर्धितम्।
वुधै स्वीक्रियते तस्याप्ययोग्यस्य प्रशासनम्।। १३७।।
यदि नो ध्रियते तीक्ष्ण नख च दारुण त्वया।
एतदेवोचित ते यन्न दुष्टै कलहक्रम।। १३८।।
यश्चापि लोहदोर्दण्डै सग्राह च समाचरेत्।
स स्वस्य कोमल हस्त दूयमान करोति हि।। १३९।।
तिष्ठ यावद्धि वध्नाति कालस्तस्य करौ दृढम्।
ततो मित्रप्रसादाय तस्य मज्जा प्रकर्षये।। १४०।।

कथा—२३

एक राजा को एक वीमारी (ऐसी) लग गई कि उसके ज़िक्र को न दुहराना ही अच्छा है। यूनान के चिकित्सक मण्डल की एकमति

ग्राख्यायितम्—२३

कश्चिद् राजा केनचिद रोगेण पीडितो वभूव, यस्य निर्वचननपि ग्रशुभहेतु। सर्वे यवनभिषज एकमत्या मेनिरेऽस्यास्यौप गो

شدند ـ که مر این رنج را دوائی نیست ـ مگر زهرهٔ آدمی
که بچندین صفت موصوف باشد * ملک بفرمود ـ
کردند * دهقان پسری یافتند بدان صفت که ـ
بودند * پدر و مادرش را بخواندند و نعمت بیکران
گردانیدند ـ و قاضی فتوی داد ـ که خون یکی از رعیت
ریختن برای سلامت نفس پادشاه روا باشد
او کرد * پسر سر سوی آسمان کرد و بخندید
پرسید ـ در این حالت چه جای خندیدن است؟ گفت ـ
ناز فرزندان بر پدر و مادر باشد ـ و دعوی پیش قاضی
برند ـ و داد از پادشاه خواهند ـ اکنون پدر و مادر
حطام دنیوی مرا بخون در سپردند ـ و قاضی
فتوی داد ـ و سلطان مصالح خویش در هلاک من
می بیند ـ بجز خدای عز و جل پناهی نمی بینم

بیت

پیش که بر آورم ز دستت فریاد
هم پیش تو از دست تو میخواهم داد

سلطان را ازین سخن دل بهم بر آمد ـ و آب در دیده
بگردانید ـ و گفت ـ هلاك من اولیتر که خون چنین
بیگناهی ریختن * سر و چشمش ببوسید ـ و در کنار
گرفت ـ و نعمت بی اندازه بخشید ـ و آزادش کرد
گویند که هم در آن روز ملك شفا یافت *

قطعه

همچنان در فکر آن بیتم ـ که گفت
پیل بانی بر لب دریای نیل
زیر پایت گر بدانی حال مور
همچو حال تست زیر پای پیل *

حکایت ۲۴

یکی از بندگان عمرو لیث گریخته بود کسان در
عقبش رفتند و باز آوردند * وزیررا با وی غرضی بود *
اشارت بکشتن کرد ـ تا دیگر بندگان چنین حرکت
نکنند * بنده پیش عمرو لیث سر بر زمین نهاد و گفت

शुदन्द—कि मर ईं रंज रा दवाए नेस्त—मगर जहराए आदमी कि ब चन्दीं ईं सिफ़त मौसूफ़ बाशद। मलिक बिफ़रमूद—ता तलब कर्दन्द।' दिहक़ान पिसरे याफ़्तन्द बदाँ सिफ़त कि हुकमा गुफ़्ता बूदन्द। पिदर व मादरश् रा बख़्वान्दन्द व ब निअमते बेकराँ ख़ुशनूद गर्दानीदन्द—व क़ाज़ी फ़तवा दाद कि ख़ूने यके अज़ रैयत रेख़्तन् बराये सलामते नफ़्से पादशाह रवा बाशद। जल्लाद क़स्दे ऊ कर्द। पिसर सर सूये आसमान कर्द व बिख़न्दीद। मलिक पुरसीद—'दर ईं हालत चि जाए ख़न्दीदन'स्त?' गुफ़्त—'नाज़े फ़र्ज़न्दान् बर पिदर व मादर बाशद—व दावा पेशे क़ाज़ी बुरन्द—व दाद अज़ पादशाह ख़्वाहन्द। अकनूँ पिदर व मादर ब इल्लते हुतामे दुनियवी मरा ब ख़ून दर सिपुर्दन्द—व क़ाज़ी ब कुश्तनम् फ़तवा दाद—व सुल्तान मसालिहि ख़ेश दर हलाके मन् मी बीनद—बजुज़ ख़ुदाय अज़्ज़ व जल पनाहे न मी बीनम्।'

बैत (बहरे हज़ज्)

पेशे कि बर आवरम् ज़ि दस्तत फ़रियाद।
हम पेशे तो अज़ दस्ते तो मीख़्वाहम् दाद॥

सुल्तान रा अज़ीं सुख़ुन दिल बहम बर आमद—व आब दर दीदा बगिर्दानीद—व गुफ़्त—'हलाके मन् औलातर कि ख़ूने चुनी बेगुनाहे रेख़्तन्।' सर व चश्मश् बिबोसीद—व दर किनार गिरिफ़्त—व निअमते बेअन्दाज़ा बख़्शीद—व आज़ादश् कर्द। गायन्द कि हम दराँ रोज़ मलिक शिफ़ा याफ़्त—

क़ता (बहरे रमल-मुसद्दस)

हम चुनाँ दर फ़िक्रे आँ बैतम्—कि गुफ़्त।
पीलबाने बर लबे दरियाये नील॥
ज़ेरे पायत गर बिदानी हाले मोर।
हम चु हाले तुस्त ज़ेरे पाये पील॥

हिकायत—२४

यके अज़ बन्दगाने अम्रोलैस गुरेख़्ता बूद। कसाँ दर उक़बश् रफ़्तन्द व बाज़ आवुर्दन्द। वज़ीर रा बा वै ग़रज़े बूद। इशारत बकुश्तन् कर्द ता दीगर बन्दगान् चुनी हरकत न कुनन्द। बन्दा पेशे अम्रोलैस सर बर ज़मीन निहाद व गुफ़्त—

कथा—३०

एक मंत्री मिस्री सन्त जुन्नून के पास गया और आशीष् माँगने लगा—कि मैं दिन रात राजा की सेवा में दत्तचित्त और उसकी कृपा की कामना करता रहूँ और उसके दण्ड से डरता रहूँ।' जुन्नून रो पड़ा और कहने लगा—'यदि मैं भगवान् से इतना डरता जितना तू राजा से (डरता है) तो मैं सिद्धों में से एक हो जाता।'

क़ता

यदि न होती आशा सुख और दुख की।
साधु का पाँव आकाश (स्वर्ग) में होता॥
और यदि मंत्री भगवान् से (इतना) डरता।
जैसा कि राजा से (डरता है) तो फरिश्ता हो जाता॥

कथा—३१

एक राजा ने एक निरपराध को मारने का संकेत किया। वह बोला—'हे राजा! उस क्रोध में कारण जो कि तुझे मेरे ऊपर है अपनी हानि मत कर बैठना।' राजा ने कहा—'कैसे?' वह बोला—'यह दण्ड मुझ पर से तो एक पल में बीत जायगा, और यह पाप तुझ पर सदा रहेगा।'

रुबाई

जीवन का दौर रेगिस्तानी आँधी की तरह गुजर गया।
कटुता, प्रसन्नता और बुराई-भलाई गुजर गई॥
अत्याचारी ने सोचा कि उसने हम पर क्रूरता की।
वह उसकी गर्दन पर रही और हम पर से गुजर गई॥

राजा को यह उपदेश लाभदायक लगा और उसके सिर से खून उठा लिया।

कथा—३२

नौशेरवान के मंत्री एक महत्वपूर्ण राजकीय मामले पर विचार कर रहे थे। और हर कोई अपनी बुद्धि के अनुपात से राय दे रहा था। राजा ने भी इसी तरह एक उपाय सुझाया। बुजुर्ज मिहिर को राजा की सम्मति स्वीकार हुई। दूसरे मन्त्रियों ने उससे चुपके से पूछा कि—'राजा की सम्मति में आपने क्या उत्कृष्टता देखी—ऐसे ऐसे पण्डितों की राय से?' वह बोला—'क्योंकि कार्य का परिणाम ज्ञात नहीं है, और साथियों की राय प्रभु की इच्छा पर है कि पूरी उतरे या ओछी। अतः राजा की राय से सहमत होना ही ज्यादा ठीक है। ताकि अगर काम बिगड़ जाय तो उसके आज्ञानुवर्ती होने के कारण हम दण्ड से सुरक्षित रहेंगे। क्योंकि कहा है—

आख्यायितम्—३०

कश्चिदमात्यो मिश्रीय सन्त जुन्नून गत, आशीर्वादमन्व याचे-ऽथाहमहोरात्र राजसेवातत्परो भूयास, तस्य कुशल कामयान्, तस्य दण्डाद् भयमानश्चेति। जुन्नूनो बाष्पमुच्चरन्नुवाच—'यद्यह परमात्मनस्तथाभेष्य यथा त्व राज्ञो बिभेषि तर्हि सिद्धेष्वेकतमो-ऽभविष्यमिति।'

पदम्

नैवाशा चेन्न वाऽऽशङ्काऽभविष्यत्सुखदुःखयो।
पादावस्यास्यता साधोर्नभोमण्डलव्यापिनौ॥ १७४॥
अमात्यो हि यथा राज्ञो बिभेति सतत तथा।
स चेद्भगवतोऽभेष्यदलप्स्यत पर पदम्॥ १७५॥

आख्यायितम्—३१

कश्चिद् राजा कञ्चिन्निरपराध हन्तुमुपादिशत्। सोऽवदत्—'हे राजन्! इदानी क्रोधहेतुत्वाद् मय्याग्रहमस्ति न त्व-मात्महानि कर्तुमर्हसि।' राजा ब्रूते—'तत्कथम्?' सोऽवदत्—'अय ते दण्ड क्षणस्थायी ममातिवाह्यते, शश्वद् वहनीय चेद पाप त्वयेति।'

चतुष्पदीयम्

मरुप्रवातकल्पानि व्यतीतानि दिनानि मे।
विषादश्च प्रसादश्च व्यसनगुणश्च शुभाशुभे॥ १७६॥
निस्त्रिंशो मन्यते तेन क्रूरकर्म कृत मयि।
मत्तस्तद्विनिवृत्त च तस्मिन्नस्यास्यति सर्वदा॥ १७७॥

राजस्तस्योपदेशोऽभिमतो बभूव त च दण्डान्मुक्त कृतवानिति।

आख्यायितम्—३२

नौशेरवानस्यामात्या किञ्चन महत्त्वपूर्ण राजकार्य विमृशन्त आसते। सर्वे च यथामति मन्त्र ददु। राजाऽपि तथैवोपायमेक-मभिहितवान्। बुजुर्जमिहिरस्य राज्ञो मति सम्मतेति। अन्ये-ऽमात्यास्त निभृत ऊचु—'अथ राज्ञ सम्मतौ हि का विशेषता दृष्टा या चैतेषा विदुषा मतिमतिशेते।' सोऽवदत्—'यत कार्यविपाको ऽज्ञात, सभ्यपक्षाणा मन्त्रित ह्रीश्वराधीनमथ पूर्ण स्याद् वा न वा। अतो राज्ञोऽभिमतेन सहमतिरेव श्रेयसीति। अथ चेत् कार्यविपत्ति स्यात्तस्याज्ञानुवर्तित्वाद् दण्डभयाद् विमुक्ता स्मो वयमिति। यथाहु—

मसनवी

राजा की राय से प्रतिकूल राय देना।
अपने स्वयं के खून से हाथ धोना है।।
यदि राजा दिन को कहे—"यह रात है"।
तो उचित है कहना—"देखो चाँद और तारे"।।'

कथा—३३

एक यात्री ने अपने बाल सँवारे कि 'मैं अली के वंश का (सैयद) हूँ।' और एक हिजाज के यात्री दल के साथ नगर में आया कि—'मैं हज से आया हूँ।' और राजा के पास एक प्रशस्ति काव्य ले गया कि 'मैंने लिखा है।' राजा का एक दरबारी उसी वर्ष समुद्र यात्रा से आया था। उसने कहा—'मैंने इसे ईदुज्जुहा पर बसरा में देखा था—यह हाजी कैसे हुआ?' एक दूसरा बोला—'मैं इसे पहचानता हूँ, इसका बाप मल्तातिया में ईसाई था, यह अली के वंश का (सैयद) कैसे हो गया?' उसके दोहे अनवरी के काव्य संग्रह में मिले। राजा ने आज्ञा दी कि इसे पीटो और निकाल दो कि ऐसा झूठ क्या बोला? वह बोला—'हे पृथ्वीनाथ! एक बात और कहनी है। यदि ठीक न हो तो हर दण्ड जो कि आप देंगे मैं उसका पात्र होऊँगा।' राजा ने कहा—'वह क्या है' वह बोला—

फ़िता

एक गरीब यदि तेरे सामने छाछ लाये।
(तो उसमें) दो सकोरा पानी होगा और एक चम्मच दही।।
यदि दास से एक झूठ सुनो तो नाराज मत हो।
क्योंकि संसार देखे लोग बहुत झूठ बोलते हैं।।

राजा हँस पड़ा और बोला—'इससे ज्यादा ठीक बात तूने नहीं कही।' आज्ञा दी कि जो इसका अपेक्षित हो, वह उसे दे दें।

कथा—३४

एक वजीर अपने अधीनस्थों पर दया करता था—और साथियों की राय को ध्यानपूर्वक सुनता था। संयोग से वह राजा के क्रोध में ग्रस्त हो गया। साथियों ने उसकी मुक्ति के लिये यत्न किया—और उसके संरक्षकों ने उसके दण्ड (काल) में उससे कोमलता दिखाई और दूसरे बड़े आदमियों ने उसके सद्गुणों का प्रकाश किया—यहाँ तक कि राजा ने उसे दोष से मुक्त कर दिया। एक भक्त ने इस हाल की सूचना पाई और कहा—

गाथा

राज्ञो मन्त्राच्च मन्त्रोऽन्यो मतभेदेन दर्शित।
स्वस्य रक्तेन स्वस्यैव हस्तप्रक्षालनं यथा।। १७८।।
राजा यदि दिवा ब्रूयात् "देव भातीव शर्वरी"।
युक्तं तर्हि सदा वक्तु "पश्य चन्द्रं च तारकम्"।।' १७९।।

आख्यायितम्—३३

कश्चित् पान्थ केशान् प्रासाधयत्—'अथालीयोऽस्मीति।' हिजाजात् प्रत्यावर्तमानेन सार्थेन सह नगरमनुयातोऽथ—'तीर्थयात्राया प्रतिनिवृत्तोऽस्मीति।' प्रशस्ति पद्यानि राज्ञोऽभिगुरागनयदथ—'मया रचितानीति।' अथामात्येष्वेकतमस्तस्मिन्नेव वर्षे समुद्रयात्राया प्रतिनिवृत्त आसीत्। सोऽवदत्—'अहमेनं बलिदानपर्वणि बसरापुर्यामद्राक्षम्। हजयात्री कथमयम्?' अथान्यो ब्रूते—'अहमेनं जाने, पिताऽस्य मलातीयाया पुर्यां कृष्टान आसीत्, तत् कथमयमलीवंशीय?' तस्य विरचितानि पदानि नाम्बरिण काव्यसंग्रहे प्राप्तानि। राजोपादिशत्—'अथैनं ताडयित्वाऽऽचन्द्र दत्वा च वहिर्निष्कासयन्तु। अथ कथं मृषामात्रमुक्तमनेन।' सोऽवदत्—'हे राजन्! सुभाषितमन्यच्चापि जाने, यद्येतत् सत्यं न स्याद्दण्डार्होऽस्मीति।' राजा ब्रूते—'तत् किम्?' सोऽवदत्—

पदम्

दरिद्रश्च कदाचित् ते मथितं चेदुपाहरेत्।
धारावद्वयपानीयमदाभार ततो दधि।। १८०।।
यदि स्वमनृतं दासाच्छृणुते तर्हि मा कुप।
बहुदृष्टश्च प्रायेण ह्यसत्यमभिभाषते।। १८१।।

राजा हसितवानुवाच च—'अत सत्यतरा वाच न त्वं कथितवानसि।' आदिदेश च यथाभीप्सितमस्मै दीयतामिति।

आख्यायितम्—३४

अमात्येषु एकतम आधीनेषु कृपामकरोत् समकक्षाणाञ्च सम्मतिं ध्यानेनाशृणोत्। दैववशात् स एकदा राज्ञ कोपभाजनं बभूव। सहकारिणस्तस्योत्सर्गे सयत्ना बभूवु, संरक्षकाश्च तस्य बन्धनकाले चार्जवं प्रदर्शयामासु, अन्ये च महाजनास्तस्य गुणानाख्यापितवन्त, अन्ततो गत्वा राजा तं दोषमुक्तं विहितवान्।

कश्चिदीश्वरभक्त एव विज्ञायोवाच—

क़ता

ताकि मित्रों का मन तू हाथ में कर सके।
बाप का बाग बिका अच्छा ।।
शुभचिन्तकों के लिये देग पकाने में।
घर का सारा सामान जला अच्छा ।।
बुरा चाहने वाले के साथ भी भलाई कर।
कुत्ते का मुंह ग्रास से सिला हुआ (बन्द) अच्छा ।।

पदम्

मित्राणामथ प्रीत्यर्थं प्रसादार्थं च चेतसा ।
अथ चेत् पैतृकोद्यानं सर्वं विक्रीयते वरम् ।। १८२ ।।
महानसव्यवस्थाया भोजनार्थं हितैषिणाम् ।
उपस्करो गृहस्थीयो सर्वं प्रज्वलितो वरम् ।। १८३ ।।
दुराशयप्रधानेऽपि ह्युपकारं समाचर ।
शुनश्चैव मुखस्फारं पिण्डेनापूरितो वरम् ।। १८४ ।।

कथा—३५

हारूँ रशीद का एक पुत्र बाप के सामने आया क्रुद्ध होकर और बोला—'अमुक सरदार के पुत्र ने मुझे माँ की गाली दी है।' हारूँ रशीद ने सरदारों से कहा—'ऐसे आदमी की सजा क्या हो?' एक ने मरवाने का इशारा किया और दूसरे ने जीभ कटवाने का, और एक अन्य ने अर्थदंड का। हारूँ ने कहा—'हे पुत्र! उदारता तो यह है कि—क्षमा कर, और यदि न कर सके तो तू भी उसे गाली दे, (पर) इतनी नहीं कि प्रतिशोध सीमा लाँघ जाय। तब अपराध तेरी ओर होगा और दावा विरोधी की ओर।'

आख्यायितम्—३५

हारूनर्रशीदस्य पुत्रेष्वेकतमः पितुः पुरत आगत्य क्रोधपुरस्सरमुवाच—'अमुकसामन्तपुत्रो मे मातरं कुत्सयन्नवद्यमुक्तवानिति।' हारूनर्रशीदः सामन्तानूचे—'एतादृग्जनस्य को दण्डो विधेयः?' कश्चिद्वधं विमृष्टवानथान्येन 'जिह्वाच्छेदो विहितः' इत्युपादिष्टम्। अथापरोऽर्थदण्डमामन्त्रयामास। हारूनवदत्—'हे पुत्र! औदार्यं तावदिदं यत् क्षाम्येः, अथ चेदिदं दुष्करं तर्हि त्वमपि क्रुश। न पुनरेतावदयं प्रतीकारो हि दण्डमतिक्रमते। तदा त्वमभियुक्तोऽसि तव विरोधी चाभियोक्तेति।'

कता

नहीं मर्द है वह बुद्धिमानों के निकट।
जो कि हाथी की ताकत वालों से जूझता है।।
बल्कि मर्द वह आदमी है विवेक की रू से।
कि जब उसे क्रोध आता है (तो) असंगत नहीं बोलता।।

पदम्

नैवास्ति स जनः शूरस्तावन्मतिमतां मतौ।
यश्च मत्तगजैस्सार्धं समरं हि समाचरेत् ।। १८५ ।।
अथ शूरः समाख्यातो जनः स हि विवेकतः ।
क्रोधावेगेऽपि नो ब्रूते यश्च वाक्यमसंगतम् ।। १८६ ।।

मसनवी

एक को किसी दुर्जन ने गाली दी।
(उसने) सहन किया और बोला—हे भले आदमी।।
मैं ज्यादा बुरा उससे हूँ कि जो तू कहेगा कि 'तू यह है'।
क्योंकि मैं जानता हूँ मेरे दोष—तू मेरी तरह नहीं जानता।।

गाथा

दुर्जनेनैकदा कश्चिदपशब्दैरुदीरितः ।
स सेहे तदवचश्चैनं प्रत्युवाच ह भद्रक।। १८७ ।।
ततोऽधिकं कुवृत्तोऽस्मि यैराचक्षे खराक्षरैः ।
यथा जानामि मे दोषान् न त्वं जानासि तांस्तथा ।। १८८ ।।

कथा—३६

मैं बड़े आदमियों की एक मण्डली के साथ नाव में बैठा था। एक छोटी नाव हमारे सामने डूब गई। दो भाई भँवर में गिर पड़े। एक बुजुर्ग ने मल्लाह से कहा कि—'पकड़ इन दोनों डूबते हुओं को

आख्यायितम्—३६

अहमेकदा महाजनैरुपसेवितो नौकामधिष्ठित आसम्। अस्मत्प्रत्यक्षमेवैकमुडुपं निमग्नमभूत्। द्वौ भ्रातरौ ततः आवर्ते पतितौ। अथैको महाजनो नाविकं ब्रूते—'परित्रायस्व तावुभौ मज्जन्तौ

कि पचास मुहरें तुझे हर एक के लिये दूँगा। मल्लाह ने एक को बचा लिया और उस दूसरे ने अपनी जान प्रभु को सौंप दी। मैंने कहा—'उसकी आयु नहीं बची थी इसलिये उसे पकड़ने में तूने देर कर दी।' मल्लाह हँसा और बोला—'जो कि तू कहता है, वह निश्चित है, और दूसरे मेरी प्रवृत्ति इसको बचाने में अधिक थी। वह इस कारण कि एक समय रास्ते में मैं बीमार हो गया। इसने (बचने वाले ने) मुझको अपने ऊँट पर बिठाया था, और उस दूसरे (डूबने वाले) के हाथ से मैंने कोड़ा खाया था।' मैंने कहा—'सच कहा है परमेश्वर ने! जिसने कि अमल किया अच्छा, तो अपनी आत्मा के लिये और जिसने बुरा किया तो (वह भी) अपने लिये।'

चैकैकार्थं पञ्चाशद् दीनारान् दास्यामीति।' नाविकेनैकतर उद्धृतो-ऽन्यतरश्च प्राणान् ईश्वरार्पितान् व्यधात्। अहमवदम्—'मृतस्या-युष्य नावशिष्टमासीदत एव तमुद्धर्तुं विलम्बं कृतवानसि।' नाविको विहस्याह—'यत् त्वमाह तत्तथा, अपरञ्च मच्चित्तप्रवृत्तिरेनमुद्धर्तुं-विशेषतयाऽऽसीत्। तदनेन हेतुनार्थादाह पथि रुग्णः सञ्जातः। असौ मां स्वीयमुष्ट्रमध्यासयत् तथा चापरो मां कशाघातमास्वादय-दिति।' अहमवोचम्—'सत्यमुक्तं हि भगवताऽथ—येन सदनुष्ठितं तच्चाप्यात्मने येनासदनुष्ठितं तच्चाप्यात्मने।'

क़ता

जहाँ तक सम्भव हो किसी का हृदय मत दुखा।
क्योंकि इस राह में बहुतसे काँटे हैं॥
निर्धन उम्मेदवार के काम आ।
क्योंकि तेरे भी बहुतसे काम अटके हैं॥

पदम्

यथाशक्ति च कस्यापि मा भूस्त्वं कष्टकारणम्।
यतः कीर्णानि मार्गेऽस्मिन् बहूनि कण्टकानि च॥ १८९॥
कार्यार्थिनश्च दीनस्य भव कार्यस्य साधकः।
यतः कार्याणि ते चापि व्यपेक्षन्ते हि साधकम्॥ १९०॥

कथा—२७

दो भाई थे। एक राजा की सेवा करता था। और दूसरा बाहुओं के परिश्रम से रोटी खाता था। एक बार वह धनी भाई निर्धन से बोला—'कि क्या तू सेवा नहीं करता ताकि काम करने के श्रम से छूट जाय?' उसने कहा—'तू क्या काम नहीं करता ताकि सेवा के अपमान से मुक्ति पा जाय? क्योंकि बुद्धिमान् कह गये हैं—जौ की रोटी खाना और धरती पर बैठना अच्छा है, मगर कमर में सुनहरी पेटी लगाने और सेवा में खड़े रहने से।'

आख्यायितम्—३७

अथ कदाचिद् द्वौ भ्रातरावास्ताम्। तयोरेकतरो राजसेवायां नियुक्त आसीदन्यतरश्च हस्तश्रमेण जीविकामर्जयति स्म। अथैकदा धनिको भ्राता निर्धनमूचे—'अथ कथं भृतिं न कुरुषे यतः श्रमकष्टात् प्रमुच्यसे?' सोऽवदत्—'त्वं कथं श्रमं न करोषि येन भृतिजन्यापमानात् प्रमुच्यसे? यथाहुः पण्डिताः—

भूमावुपासनं श्रेयो यवान्नस्य च भोजनम्।
न कटिं हैमपट्टेन बद्ध्वा हि निष्ठितं भृतौ॥' २१॥

बैत

हाथ से चूना सानकर गारा बनाना।
अच्छा है प्रधान के सामने छाती पर हाथ बाँधने से॥

श्लोक

हस्तेन कलनाधानं सुधायाः क्रियते वरम्।
न कृताञ्जलिना स्थातुं प्रभोरग्रे कदाचन॥ १९१॥

क़ता

मेरी बहुमूल्य आयु इसी में खर्च हो गयी।
कि गर्मियों में क्या खाऊँगा और क्या पहनूँगा शीत में॥
हे बुरे पेट! एक रोटी से ही काम चला।
ताकि तुझे न करनी पड़े कमर सेवा में दुहरी॥

पदम्

अमूल्यं चिन्त्यमानस्य व्यतीतं मम जीवितम्।
मया निदाघे किं भक्ष्यं वस्त्रं वा शिशिरेऽथ किम्॥ १९२॥
दुष्टोदर! स्वल्पेन पिण्डेनैकेन तुष्यताम्।
भृतौ येन न सन्धत्से द्विरावृत्तां तनोर्लताम्॥ १९३॥

कथा—३८

एक आदमी न्यायकारी नौशेरवाँ के सम्मुख शुभसमाचार लेकर गया और कहा—'कि आपके अमुक शत्रु को परमात्मा ने उठा लिया।' नौशेरवान ने कहा—'क्या यह भी सुना है कि वह मुझे छोड़ देगा ?'

फर्द

मुझे शत्रु के मरने से प्रसन्नता का कोई मौका नहीं है।
क्योंकि हमारा जीवन भी अमर नहीं है॥

आख्यायितम्—३८

कश्चिज् जनो न्यायकारिणं नौशेरवाहनं प्रति शुभवृत्तान्तमनयत् उवाच—भवतामभुक शत्रु परमात्मनाऽऽहृत।' नौशेरवाहनोऽवदत्—'अप्येवं श्रुतवानसि स मां हास्यतीति ?'

श्लोक

शत्रोस्तु मरणान्नो मे प्रसादावसर क्वचित्।
अस्माकं जीवितञ्चापि नामृतत्वाय कल्पितम्॥ १९४॥

कथा—३९

एक विद्वत् परिषद् किसरा के दरबार में एक नीति पर विचार कर रही थी। बुजुर्जमिहिर चुप थे। उन्होंने कहा—'क्यों इस बहस में हमारे साथ नहीं चालते ?' बुजुर्जमिहिर ने कहा—'मन्त्रीगण वैद्यों के समान हैं। और वैद्य दवा नहीं देता सिवा बीमार के, अतः जब मैं देखता हूँ कि आपलोगों की राय ठीक है, मुझे उसमें बोलना बुद्धिमानी नहीं लगती।'

आख्यायितम्—३९

एकदा विद्वत्परिषन् नौशेरवाहनस्य राजसभायां कञ्चिन्नीतिप्रश्नविमर्शमारेभे। बुजुर्जमिहिरस्तत्र तूष्णीभूयावस्थित। पार्षदा ऊचु'रथ कथमस्माभिः साधमस्मिन् विचारे न ब्रूषे ?' स उवाच—'मन्त्रिणो वैद्यसन्निभा। वैद्यश्च भैषज्य न ददात्यरोगाय, अतो यावत् पश्यामि भवतां विमर्श श्रेयोऽनुगं न तावन्मदीय वाग्व्यवहार समीचीनं मन्ये।'

क़ता

जब कोई काम मेरी व्यर्थ बात के बिना पूरा होता हो।
मुझे उसमें बोलना उचित नहीं है॥
और यदि देखूँ कि अन्धा है और कुआँ सामने है।
तब यदि चुप बैठूँ तो गुनाह है॥

पदम्

यदि कार्य विना मन्व्यर्थमदीयात् सिद्धिमाप्नुयात्।
व्युपयुञ्जीत तु वचस्तस्मिन् मदीय न च साम्प्रतम्॥ १९५॥
अपश्यञ्चेदनुपश्येय धावन्तं पल्वलं प्रति।
मौनं तत्रोपविश्याञ्चेत् तर्हि दोषो महान्मम॥ १९६॥

कथा—४०

हारूँ रशीद का जब मिश्र देश पूर्ण विजित हो गया, तो उसने कहा—'उस नास्तिक (फिरऔन) के विपरीत, जो कि मिश्र देश के राज्य के मद में ईश्वरत्व का दावा करता था, नहीं दूँगा इस राज्य को सिवा अपने तुच्छतम दास के।' उसके पास एक हब्शी था। उसका नाम खुसैब था। मिश्र देश उसी को दे दिया। कहा जाता है कि उसका ज्ञान और बुद्धि इतने परिमित थे कि एक साल मिश्र के किसानों का एक दल उसके पास शिकायत ले गया कि 'हमने रुई बोई थी नील नदी के किनारे, वर्षा असमय आ गई, पूरी (खेती) नष्ट हो गयी।' वह बोला—'ऊन उचित था बोना ताकि नष्ट न होती।' एक पण्डित ने सुना, हँसा और कहने लगा—

आख्यायितम्—४०

हारूनरशीदस्य यदा मिश्रदिग्विजय सम्पन्न स उवाच—'अहो धिक् तं पापं यो मिश्रदेशस्याधिपत्यगौरवादीश्वरम्मन्य मासीत्। दास्याम्यनेन विषयमकिञ्चनतमाय दासायेति।' स कज्जलवर्णमेकं दासमधत्त नाम्ना सुशोभं। मिश्रदेशमथ तस्मै ददौ। श्रूयते—तस्य बुद्धिश्च प्रज्ञा चैतावत्यौ परिमिते आस्ताम्, यदैकदा मिश्रीयाणां कृषीवलानां गणस्तमुपागत्यात्मदुःख न्यवेदयत्—'अयं वयं कार्पासमुप्तवन्तो नीलनदीतटे, अकालेऽवर्षीच्च देव दृष्टं च नष्टमस्माकं समन्ततस्तत।' स ब्रूते—'ऊर्णा हि वपनीया स्यात् यतो न नश्येदिति।' कश्चित् पण्डित एतच्छ्रुत्वा विहस्य चाह—

مثنوی

اگر روزی بدانش بر فزودی
ز نادان تنگ‌تر روزی نبودی *
بنادان آنچنان روزی رساند
که دانا اندر آن حیران بماند *

مثنوی

بخت و دولت بکاردانی نیست
جز بتائید آسمانی نیست *
اوفتادست در جهان بسیار
بی تمیز ارجمند و عاقل خوار
کیمیاگر بغصه مرده و رنج
ابله اندر خرابه یافته گنج *

حکایت ۴۱

یکی از ملوک را کنیزک چینی آوردند در غایت حسن و جمال * خواست که در حالت مستی با وی جمع شود کنیزک ممانعت کرد * ملک در خشم شد و مر اورا بسیاهی زنگی بخشید - که لب زبرینش از پرهٔ بینی بر گذشته بود - و زیرین بگریبان فرو هشته - هیکلی که صخر جنی از طلعت او برمیدی - و عین القطر از بغلش بگندیدی *

بیت

تو گوئی تا قیامت زشت روئی
برو ختمست - و بر یوسف نکوئی *
چنانکه گفته اند -

قطعه

شخصی نه چنان کریه منظر
کز زشتی او خبر توان داد *
وانگاه بغل - نَعُوذُ بالله!
مردار به آفتاب مرداد!

मसनवी (बहरे हज़ज)

अगर रोज़ी ब दानिश बर फ़ज़ूदे।
ज़ि नादाँ तंगतर रोज़ी न बूदे॥
ब नादाँ आँचुनाँ रोज़ी रसानद।
कि दाना अन्दर आँ हैराँ बिमानद॥

मसनवी (बहरे ख़फ़ीफ़)

बख़्तो दौलत ब कारदानी नेस्त।
जुज़ ब ताईदे आसमानी नेस्त॥
ऊफ़तादस्त दर जहाँ बिस्यार।
बेतमीज़ अर्जुमन्दो आक़िल ख़्वार॥
कीमियागर ब ग़ुस्सा मुर्दा व रंज।
अबला अन्दर ख़राबा याफ़्ता गंज॥

हिकायत—४१

यके अज़ मुलूक रा कनीज़के चीनी आवुर्दन्द दर ग़ायते हुस्न व जमाल। ख़्वास्त कि दर हालते मस्ती बा वै जमा शवद। कनीज़क मुमानिअत कर्द। मलिक दर ख़िश्म शुद व मर ऊरा ब सियाहे ज़ंगी बख़्शीद—कि लबे ज़बरीनश अज़ परए बीनी बर गुज़श्ता बूद—व ज़ेरीन ब गरेबान फ़रो हिश्ता। हैकले कि सख़र जिन्नी अज़ तलअ़ते ऊ बरमीदे—व ऐनु'ल क़ित्र अज़ बग़लश बिगन्दीदे।

बैत (बहरे हज़ज)

तो गोयी ता क़यामत ज़िश्त रूई।
बरू ख़त्मस्तो बर यूसुफ़ निकूई॥

चुनाँकि गुफ़्ता अन्द—

क़ता (बहरे हज़ज-मुसद्दस)

शख़्से नै चुनाँ करीह मंज़र।
कज़ ज़िश्तिए ऊ ख़बर तवाँ दाद॥
वाँगाह बग़ल नऊज़ु बि'ल्लाह।
मुर्दार बिह आफ़ताबे मुर्दाद॥

मसनवी

यदि जीविका बुद्धि के अनुपात से बढ़ती।
तो नासमझ से ज्यादा कोई रोजी से तंग न होता॥
नासमझ को वह इतनी रोजी भेजता है।
कि समझदार भीतर ही भीतर चकित रह जाता है॥

गाथा

यद्यवर्धिष्यत सम्पत्तिरनुबुद्धि यथागति।
अज्ञादन्यतर कश्चिन्नाप्स्यत्कष्टमनर्थकम्॥ १९७॥
एतावान् बालिशो भोगै समृद्ध किन्तु वर्तते।
यदन्तर्विस्मित प्राज्ञश्चकितश्च विलोकते॥ १९८॥

मसनवी

सौभाग्य और समृद्धि काम जानने से नहीं होते।
बिना आसमानी स्वीकृति के नहीं होते॥
हुआ है संसार में बहुधा।
मूढ़ सफल मनोरथ और चतुर अपमानित॥
रसायनज्ञ शोक और क्षोभ से मर गया है।
मूर्ख ने खण्डहर में खजाना पाया है॥

गाथा

सौभाग्य च समृद्धिश्च नाश्रयेते गुणं किल।
नाना भागवती दृष्टा लभ्येते न कदाचन॥ १९९॥
बहुधाऽप्यगनुप्राप्त संसारे दृश्यते तथा।
मूढश्चेताप्तकामोऽस्ति पण्डितश्च तिरस्कृत॥ २००॥
रसायनज्ञो दारिद्र्ये शोकात् क्षोभान्मृतस्तथा।
निधिं च निहितं प्राप बालिशो जीर्णवेश्मनि॥ २०१॥

कथा—४१

एक राजा के पास लोग एक खुता देश की दासी लाये, अत्यन्त रूप और यौवन सम्पन्ना। उसने चाहा कि नशे की हालत में उससे मैथुन करे। दासी ने मना कर दिया। राजा क्रुद्ध हो गया और उसको एक हब्शी को दे दिया कि जिसका उपरला होंठ नथुनों से भी ऊपर निकला हुआ था, और निचला होंठ गर्दन तक लटकता था। आकार ऐसा कि सखरा नामक भूत भी उसे देखकर भय से भाग खड़ा हो। तारकोल के सार जैसा गाढ़ा मैल उसकी बगल से गंधाता था।

आख्यायितम्—४१

एकदा राजवेश्मनि केचन पुमासश्चीनीया दासीमनैषु रूपयौवन-सम्पन्ना च। अथ राजा मदोन्मदावस्थायां रिरंसया तां प्राप्त। दास्याऽसौ निवारित्त। ततो राजा कोपं गतस्तां च कस्मैचित् कज्जलवर्णाय दासाय ददौ, यस्य चापरोष्ठो नासिकयमतिशेते स्म, अधरोष्ठश्च ग्रीवावलम्बी चासीत्। आकारस्तावद्—अथ सखरा पिशाचोऽपि तं दृष्ट्वा भयात्पलायते। अङ्गारनिष्ट्रासारमिव स्वेदनिष्ट्रारं तस्य कुक्षिकक्षाया दुर्गन्धायते स्म।

बैत

यह कहो कि प्रलय तक कुरूपता।
उस पर खतम है और यूसुफ पर रूप खतम है॥
जैसा कि कहते हैं—

श्लोक

तं दृष्ट्वा त्वं प्रवक्तासि—'प्रलयान्तात् कुरूपता।
तस्मिंस्तु पूर्णतां प्राप्ता यूसुफे रूपता यथा॥' २०२॥

कता

कोई आदमी नहीं हुआ ऐसा कुदसान।
कि जिसकी कुरूपता से उसकी तुलना हो सके॥
और वे बगलें! भगवान् ही हमारा रक्षक है।
सड़ता मुर्दा अच्छा (उससे) निदाघ सूर्य में॥

पदम्

एतावान् कुत्सिताकारो न मर्त्यो वर्तते क्वचित्।
येन तस्य कुरूपत्वे तुलालेशोऽपि धीयते॥ २०३॥
अघो कक्षे तु एतस्य! सर्वेश शरणं मम।
वरं कुणपं दुर्गन्धो ग्रीष्मर्तौ तप्त भास्वति॥ २०४॥

سیاه‌را در آن مدت نفس طالب بود و شهوت غالب ، مهرش بجنبید و مهرش بر داشت ، بامدادان ـ که ملك هشیار شد ـ کنیزك‌را جست و نیافت ، ما جرا بگفتند ، خشم گرفت و فرمود تا سیاه‌را با کنیزك دست و پای استوار به بندند و از بام جوسق قلعه بخندق در اندازند ، یکی از وزرای نیك محضر روی شفاعت بر زمین نهاد و گفت ـ سیاه بیچاره را درین خطائی نیست ـ بلکه سائر بندگان و خدمتگاران بخشش و انعام خداوندی امیدوار اند ، ملك گفت ـ اگر درین مفاوضت شبی تاخیر کردی ـ چه شدی؟ گفت ـ ای خداوند روی زمین ! نشنیدهٔ که گفته اند؟

قطعه

تشنهٔ سوخته بر چشمهٔ حیوان چو رسد
تو مپندار که از پیل دمان اندیشد ،
ملحد گرسنه در خانهٔ خالی بر خوان
عقل باور نکند کز رمضان اندیشد ،

ملك‌را این لطیفه پسندیده آمد ـ و گفت ـ سیاه‌را بتو بخشیدم ـ کنیزك‌را چه کنم؟ وزیر گفت ـ کنیزك‌را هم بسیاه بخش ـ که نیم خوردهٔ سگ هم سگ‌را شاید ـ که گفته اند ـ

قطعه

هرگز اورا بدوستی مپسند
که رود جای نا پسندیده ،
تشنه‌را دل نخواهد آب زلال
نیم خورد دهان گندیده ،

قطعه

دست سلطان دگر کجا بیند؟
چون بسرگین در اوفتاد ترنج ،
تشنه‌را دل نخواهد آن کوزه
که رسید است بر دهان سکنج ،

सियाह रा दर आँ मुद्दत नफ़्स तालिब बूद व शहवत ग़ालिब मेहरश बजुम्बीद व मुहरश बर दाश्त। बामदादाँ कि मलिक होशियार शुद—कनीज़क रा जुस्त व नयाफ़्त। माजरा बिगुफ़्तंद। ख़श्म गिरिफ़्त व फ़रमूद ता सियाह रा बा कनीज़क दस्तो पाय उस्तुवार बिबन्दंद व अज़ बामे जौसके क़िल्आ ब ख़न्दक़ दर अन्दाज़ंद। यके अज़ वुज़राय नेक महज़र रूए शफ़ाअत बर ज़मीन निहाद व गुफ़्त—'सियाहे बेचारा रा दर ईं ख़ताए नेस्त—बल्कि साइरे बन्दगान् व ख़िदमतगारान् ब बख़्शिश व इनआम ख़ुदावन्दी उमीदवार अन्द।' मलिक गुफ़्त—'अगर दर ईं मुफ़ावज़त शबे ताख़ीर करदे—चि शुद?' गुफ़्त—'ऐ ख़ुदावन्दे रूए ज़मीन! न शुनीदई कि गुफ़्ता अन्द?—

क़ता (बहरे रमल)

तिश्नाए सोख़्ता बर चश्मए हैवाँ चु रसद।
तो मपिन्दार कि अज़ पीले दमाँ अन्देशद।।
मुल्हिदे गुरसना दर ख़ानाए ख़ाली बुर ख़्वान।
अक़्ल बावर न कुनद कज़ रमज़ाँ अन्देशद।।'

मलिक रा ईं लतीफ़ा पसन्दीदा आमद—व गुफ़्त—'सियाह रा ब तो बख़्शीदम्—कनीज़क रा चि कुनम्?' वज़ीर गुफ़्त—'कनीज़क रा हम ब सियाह बख़्श—कि नीम ख़ुर्दाए सग हम सग रा शायद—कि गुफ़्ता अन्द—

क़ता (बहरे ख़फ़ीफ़)

हरगिज़ ऊरा ब दोस्ती मपसन्द।
कि रवद जाए ना पसन्दीदा।।
तिश्ना रा दिल न ख़्वाहद आबे ज़ुलाल।
नीम ख़ुर्दे दहाने गन्दीदा।।

क़ता (बहरे ख़फ़ीफ़)

दस्ते सुल्ताँ दिगर कुजा बीनद।
चूँ ब सरगीन दर उफ़्ताद तुरुंज।।
तिश्ना रा दिल न ख़्वाहद आँ कूज़ा।
कि रसीदस्त बर दहाने कुकुज।।

हब्शी का उस समय मनोवेग उत्तेजित हो गया और काम वेग प्रचण्ड। उसका प्रेम जाग गया और उसने उस (दासी) की मुहर तोड दी। सवेरे जब राजा होश में आया, दासी को ढूंढा और नही पाया। लोगो ने माजरा बताया। वह क्रुद्ध हुआ और आज्ञा दी कि हब्शी को दासी के साथ ही हाथ पैर कसकर बाँधे और किले के ऊँचे छज्जे से खाई में फेंक दें। एक सदाचारी मत्री ने सिफ़ारिश के लिये मुँह ज़मीन पर रखा और कहने लगा—'हब्शी बेचारे का इसमें कोई दोष नही है, बल्कि सारे दास और सेवक स्वामी से दान और पुरस्कार की आशा करते है।' राजा ने कहा—'यदि वह इस मैथुन में एक रात का विलम्ब कर देता तो क्या हो जाता ?' उसने कहा—'हे पृथ्वीनाथ क्या तूने नही सुना कि कहा है—

कज्जलवर्णस्य सुरतस्पृहोत्तेजिता, कामावेशश्च प्रचण्डो बभूव। उद्दीप्ताया हि रतौ कौमार्यच्छदोऽनेन निर्भिण्णः। अथ प्रत्यूषे राजा मदनिद्राया उत्थित, दासीमन्वेषयामास न च प्राप। यथाघटित लोकैर्विज्ञापितम्। तत स कोप गत्वाऽऽदिदेशाय कज्जलवर्णं दास्या सार्धं हस्तपादौ निगडय्य दुर्गशिखरान्निक्षिपेयुर्दुर्गपरिखायामिति। अथामात्येष्वेकतम सदाचारसमन्वितोऽनुनयार्थं शिर पृथिव्यामाधायोचे—'कज्जलवर्णस्येह दोषो नोद्भाव्यते, यत सर्वे दासा सेवकाश्च पुरस्कार-प्राभृत व्यपेक्षन्त इति।' राजा ब्रूते—'यद्यसौ रन्तु दिनैकविलम्बिन चिरमकरिष्यत् कस्तत्रोत्क्षेपोऽभविष्यदिति ?' सोऽवदत्—'कि न ते श्रुतिविषयमापतित यथाहु —

क़ता

प्यास से जलता हुआ व्यक्ति जब जलस्रोत पाता है।
तू मत समझ कि (वह) मस्त हाथी से डरेगा॥
भूखा नास्तिक भरी थाली वाले खाली घर में।
बुद्धि स्वीकार नही करती कि वह रमज़ान से डरेगा॥'

पदम्

दह्यमानस्तृषाकाम स्वच्छोदोत्स श्रयेद यदा।
मा प्रत्यगा कदाचित् स गजेभ्यो भेष्यति क्वचित्॥ २०५॥
अव्रतश्च निराहार शून्यगेहेऽन्नसनिधौ।
अधियाचिन्तित चैतद् धत्ते चान्द्रायण व्रतम्॥' २०६॥

राजा को यह उदाहरण पसन्द आया और बोला—'हब्शी को तुझे देता हूँ, दासी का क्या करूँ ?' मत्री बोला—'दासी को भी हब्शी के साथ ही दे दे, क्योकि कुत्ते का अधखाया भी कुत्ते का होता है। क्योकि कहा है—

राज्ञ इद दृष्टान्तमभिमत बभूव। उवाच च—'अथ कज्जलवर्णं तुभ्य ददामि, दास्या कि करोमि ?' अमात्य उवाच—'दासीमपि कज्जलवर्णेन सार्धं देहि, यत अर्धभुक्त शुनोच्छिष्ट श्वानभोग्यमवेहि तत्॥ २२॥' यथाहु —

क़ता

हरगिज़ उसकी दोस्ती पसन्द मत कर।
जो कि जाती है अनिच्छित जगह॥
प्यासे का दिल नही चाहता वह स्वच्छ जल।
जो अधपिया हुआ हो गन्दे मुँह से॥

पदम्

न जातु प्रेमसम्बन्धममुष्या मार्गये क्वचित्।
स्वैराचारेण या युक्ता या चैवोन्मार्गगा सदा॥ २०७॥
तृषितस्य मनो नेच्छेत् पातु तच्छीतल जलम्।
यच्च दूषितवक्त्रेण नेमपीत हि विद्यते॥ २०८॥

क़ता

राजा का हाथ दुबारा कब देखता (छूना चाहता) है।
जब गोबर में गिर पड़े नारगी॥
प्यासे का दिल नही चाहता वह जलपात्र।
जो पहुँचा हुआ हो गन्दे मुँह तक॥'

पदम्

राजा नोत्सहते स्प्रष्टु हस्तेन च पुन क्वचित्।
यदा पुरीषपतित नारग स तु पश्यति॥ २०९॥
तृषितस्य मनो नेच्छेत् जलपात्र कदाचन।
यच्च दूषितवक्त्रस्य स्पर्शाच्च अशता गतम्॥ २१०॥

हिकायत—४२

इस्कन्दर रा पुर्सीदन्द—कि 'दयारे मशरिक व मग़रिब रा ब चि गिरिफ़्ती? कि मुलूके पेशीन रा ख़ज़ाइन व उम्र व लश्कर बेश अज़ तो बूद—व चुनी फ़त्ह मयस्सर न शुद।' गुफ़्त—'ब औनि 'ल्लाह तआला—हर ममलुकत रा कि गिरिफ़्तम् रैयतश् रा नियाज़ुर्दम्—व नामे पादशाहाने पेशीन जुज़ ब निकूई न बुर्दम्।'

बैत (बहरे मुतक़ारिब़)

बुज़ुर्गश् न ख़्वानन्द अह्ले ख़िरद।
कि नामे बुज़ुर्गां ब ज़िश्ती बुरद॥

क़ता (बहरे रमल)

ईं हमा हेच अस्त चूं मी बिगुज़रद।
तख़्त-ओ-बख़्त ओ अम्रो-नहि ओ गीरो-दार॥
नामे नेके रफ़्तगां ज़ाया मकुन्।
ता बिमानद नाम नेकत बर क़रार॥

حکایت ۴۲

اسکندررا پرسیدند - که دیار مشرق و مغرب را بچه گرفتی؟ که ملوک پیشین را خزائن و عمر و لشکر بیش از تو بود - و چنین فتحی میسر نشد ، گفت - بعون الله تعالی - هر مملکت را که گرفتم رعیتش را نیازردم - و نام پادشاهان پیشین جز به نکوئی نبردم ،

بیت

بزرگش نخوانند اهل خرد
که نام بزرگان بزشتی برد ،

قطعه

این همه هیچست چون می بگذرد
تخت و بخت و امر و نهی و گیر و دار ،
نام نیک رفتگان ضائع مکن
تا بماند نام نیکت بر قرار ،

कथा—४२

लोगों ने सिकन्दर से पूछा—कि 'पूर्व और पश्चिम के देशों को तूने जीत लिया? क्योंकि पूर्ववर्ती राजाओं का कोष, आयु और सेना तुझ से अधिक थी—और ऐसी विजय (उन्हें) प्राप्त नहीं हुई।' उसने कहा—'परमेश्वर की सहायता से जिस राज्य को मैंने जीता उसकी प्रजा को मैंने नहीं सताया—और पहले राजाओं का नाम मैंने बिना आदर के नहीं लिया।'

बैत

बुजुर्ग उसको नहीं मानते हैं बुद्धिमान् लोग।
जो कि बुजुर्गों का नाम अनादर से लेता है।।

क़ता

यह सब हेच है जो गुज़र जाता है।
सौभाग्य-राज्य, आदेश-निषेध, और लेना-रखना।।
दिवगतों के सुनाम को नष्ट मत कर।
ताकि रहे तेरा सुनाम सुरक्षित।।

आख्यायितम्—४२

केचन अलक्षेन्द्र पृष्टवन्त—'अथ केनोपायेन पौरस्त्यपाश्चात्य च राज्य जितवानसि? यत पूर्ववर्तिना राज्ञा धनायुष्यसैन्यानि त्वत्तो विशेषाणि चासन्। अथ चैतावती तैर्न प्राप्ता सिद्धिरिति।' सोऽवदत्—'भगवत्कृपया य देशमह जितवान् तस्य प्रजा़तीरह न सन्त्रासितवान्। प्राक्तनाना राज्ञा च नामोच्चारमादरादृते नोदीरितवानिति।'

श्लोक

ज्यायान्स नैव मन्यन्ते विद्वासस्त कदाचन।
उदीरयति यो नाम ज्यायसामादरादृते।। २११।।

पदम्

अकिञ्चनमिद सर्वं यच्चापि चलचञ्चलम्।
भाग्य राज्य च सामर्थ्यमस्ति नास्त्योर्धनागम।। २१२।।
सुनाम स्वगतानाञ्च मा स्म कार्षीस्तु लाञ्छितम्।
यतो विद्येत ते नाम सुनामा सदच सवदा।। २१३।।

باب دوم

در اخلاق درویشان

حکایت ۱

یکی از بزرگان پارسائی‌را گفت - که چه گوئی در حق فلان عابد؟ که دیگران در حق او بطعنه سخنها گفته اند * گفت - در ظاهرش عیب نمی بینم - و در باطنش غیب نمی دانم *

قطعه

هرکرا جامه پارسا بینی
پارسا دان و نیك مرد انگار *
ور ندانی که در نهانش چیست
محتسب‌را درون خانه چه کار؟

حکایت ۲

درویشی‌را دیدم - که سر بر آستان کعبه همی مالید و می گفت - یا غفورا یا رحیم! تو دانی که از ظلوم و جهول چه آید *

قطعه

عذر تقصیر خدمت آوردم
که ندارم بطاعت استظهار *
عاصیان از گناه توبه کنند
عارفان از عبادت استغفار *

عابدان جزای طاعت خواهند - و بازرگانان بهای بضاعت - من بنده امید آورده ام - نه طاعت - و بدریوزه آمده ام - نه بتجارت - اِصْنَعْ بِی مَا اَنْتَ لَهُ اَهْلُهُ - وَلَا تَفْعَلْ بِنَا مَا نَحْنُ بِاَهْلِهِ -

बाबे दुवुम्

दर अख़्लाक़े दरवेशान

हिकायत—१

यके अज़ बुज़ुर्गान् पारसाये रा गुफ़्त—'कि चि गोई दर हक़्क़े फ़लाँ आबिद? कि दीगराँ दर हक़्क़े ऊ ब तअ़्ना सुख़ुनहा गुफ़्ता अन्द।' गुफ़्त—'दर ज़ाहिरश् ऐब नमी बीनम्, व दर बातिनश् ग़ैब न मी दानम्।'

क़ता (बह्‌रे ख़फ़ीफ़)

हर कि रा जामा पारसा बीनी।
पारसा दान ओ नेक मर्द अंगार॥
वर न दानी कि दर निहानश् चीस्त।
मुह्‌तसिब रा दरूने ख़ाना चि कार॥

हिकायत—२

दरवेशे रा दीदम् कि सर बर आस्ताने काबा हमी मालीद व मी गुफ़्त—'या ग़फ़ूर! या रहीम! तो दानी कि अज़ ज़लूम व जहूल चि आयद।'

क़ता (बह्‌रे ख़फ़ीफ़)

उज़्रे तक़्सीरे ख़िदमत आवुर्दम्।
कि न दारम् ब ताअ़त इस्तिज़्हार॥
आसियाँ अज़ गुनाह् तौबा कुनन्द।
आरिफ़ाँ अज़ इबादत इस्तिग़्फ़ार॥

आबिदान जज़ाये ताअ़त ख़्वाहन्द व बाज़रगानान बहाये बिज़ाअ़त, मन् बन्दा उमीद आवुर्दा अम् नै ताअ़त—व ब दर्यूज़ा आमदा अम्—नै ब तिजारत। 'इस्नअ़ बी मा अन्त लहू अह्‌लुहू व ला तफ़्अ़ल् बिना मा नह्‌नु बि अह्‌लिहि।'

दूसरा अध्याय

साधुओं के चरित्र के विषय में

कथा—१

एक बड़े आदमी ने एक साधु से पूछा कि—'तुम अमुक महात्मा के विषय में क्या कहते हो? क्योंकि दूसरे लोग उसके बारे में ताने के साथ अनेक बातें करते हैं।' उसने कहा—'प्रकट उसका दोष मैं नहीं जानता और उसके अन्तस्तल के विषय में मैं भेद नहीं जानता।'

क़ता

जिस किसी को तू साधु वेश में देखे।
उसे साधु समझ और भला आदमी गिन॥
और यदि तू नहीं जानता कि उसके हृदय में क्या है।
(तो तुझ) चरित्र निरीक्षक का घर में क्या काम॥

कथा—२

एक साधु को मैंने देखा कि अपने सिर को काबा की देहली पर रगड़ रहा था और कह रहा था—'हे क्षमालु! हे कृपालु! तू जानता है कि अन्यायी और जड़मति से क्या हो सकता है?'

क़ता

अपने दोषों का यह कारण तेरी सेवा में लाया हूँ।
कि मैं तेरी उपासना की सामर्थ्य नहीं रखता॥
पापी पाप से पश्चात्ताप करते हैं।
भक्त जन उपासना में रहे दोष की क्षमा मांगते हैं॥

उपासक उपासना का बदला चाहते हैं और व्यापारी अपने माल की कीमत। मैं सेवक आशा लेकर आया हूँ न कि पूजा। और प्रार्थी होकर आया हूँ न कि व्यापार के लिये। 'सुलूक कर मेरे साथ वह जो तेरे योग्य है, और मत कर हमारे साथ वह जिसके कि हम पात्र हैं।'

द्वितीयोऽध्यायः

मुनिजनाचारे

आख्यायितम्—१

कश्चित् महाजनः कञ्चित् महात्मानमूचे—'अथामुकस्य महात्मनो विषये त्वं किं ब्रूषे? अन्ये न तमधिकृत्य बहूनि आक्षेपवाक्यान्याहरन्ति।' सोऽवदत्—'प्रकाशं तस्य दोषं पश्यामि, नापि तस्यान्तःस्थितेऽदृष्टं न जानामि।'

पद्यम्

यं चापि मुनिवेशं च दधानमथ पश्यसि।
तमपेहि मुनिं सत्पदमुमयस्य सज्जनम्॥ १॥
निश्चित्य चेन्न जानीषे कस्यचिन्निहितं हृदि।
चरित्रदर्शिनस्तत्र का व्यपेक्षा प्रवर्तते॥ २॥

आख्यायितम्—२

मया कश्चित् साधुर्दृष्टः स्वस्य मूर्धानं काबामन्दिरस्य देहल्यां परिघट्टयन् वाचं ब्रुवंश्च—'हे क्षमालो! हे दयालो! त्वं जानीषेऽत्याचारादृशस्यान्यायप्रधानेभ्यो जडमतिभ्यश्च किं सम्भवति?'

पद्यम्

निवेदयामि सेवायामात्मना दोषकारणम्।
पूजोपासनसामर्थ्यं त्वदीयं न दधाम्यहम्॥ ३॥
कृतागसो जनाश्च त्वां याचन्ते सागसः क्षमाम्।
धार्मिकाः धर्मचर्यायां सञ्जातस्खलनक्षमाम्॥ ४॥

उपासकास्तावदुपासनाया प्रतिदानमपेक्षन्ते यथा च वणिजो स्वस्य वाणिज्यस्य मूल्यम्। अयमहं दासः स्वाशामानीयागतोऽस्मि न चोपासनाम्। प्रार्थित्वात्प्रपन्नोऽस्मि न च व्यापाराद्धेतोः।

'तथाऽस्मासु प्रवर्तेथा यथा त्वय्युपपद्यते।
मा वर्तिष्ठास्तथाऽस्मासु यस्य स्मो भाजनं वयम्॥ १॥'

بیت

گر کشی ور جرم بخشی
روی و سر بر آستانم *
بنده را فرمان نباشد
هر چه فرمائی بر آنم *

वैत (वहरे रमल)

गर कुशी वर जुर्म बख़्शी।
रूय व सर बर आस्तानम्॥
बन्दा रा फ़रमाँ न बाशद।
हर चि फ़रमायी बर आनम्॥

قطعه

بر در کعبه سائلی دیدم
که همی گفت و میگریستی خوش *
می نگویم که طاعتم بپذیر
قلم عفو بر گناهم کش *

क़ता (वहरे ख़फ़ीफ़)

बर दरे काबा साइले दीदम्।
कि हमी गुफ़्तो मी गिरीस्ते ख़ुश॥
मी न गोयम् कि ताअतम् बिपज़ीर।
क़लमे अफ़्व बर गुनाहम् कश॥

حکایت ۳

عبد القادر گیلانی (رحمه الله علیه) را دیدند - که در حرم کعبه - روی بر حصا نهاده - می نالید و میگفت - ای خداوندا! ببخشای - و اگر مستوجب عقوبتم - در قیامتم نابینا برانگیز - تا در روی نیکان شرمسار نشوم *

हिकायत—३

अब्दु'ल् क़ादिर गीलानी (रहमतु'ल्लाह् अलैहि) रा दीदन्द कि दर हरमे काबा रूय बर हसा निहादा—मीनालीद व मी गुफ़्त—'ऐ ख़ुदावन्द! बिबख़्शाय—व अगर मुस्तौजिबे उक़ूबतम्—दर क़ियामतम् नाबीना बर अंगेज़—ता दर रूए नेकान शर्मसार न शवम्।'

قطعه

روی بر خاك عجز میگویم
هر سحرگه که یاد می آید -
ای که هرگز فرامشت نکنم!
هیچت از بنده یاد می آید؟

क़ता (वहरे ख़फ़ीफ़)

रूए बर ख़ाके इज्ज़ मी गोयम्।
हर सहरगह कि याद मी आयद॥
ऐ कि हरगिज़ फ़रामुशत न कुनम्।
हेचत अज़ बन्दा याद मी आयद॥

حکایت ۴

دزدی خانهٔ پارسائی در آمد * چندانکه جست چیزی نیافت * دلتنگ بازگشت * پارسارا از حال او خبر شد * گلیمی - که در آن خفته بود - برداشت و در ره گذر دزد انداخت - تا محروم نرود *

हिकायत—४

दुज़्दे ब ख़ानाए पारसाए दर आमद। चन्दा कि जुस्त चीज़े न याफ़्त। दिलतंग बाज़ गश्त। पारसा रा अज़ हाले ऊ ख़बर शुद। गलीमे—कि दर आँ ख़ुफ़्ता बूद—बर दाश्त व दर रहगुज़र दुज़्द अन्दाख़्त ता महरूम न शवद।

قطعه

شنیدم که مردان راه خدا
دل دشمنان هم نکردند تنگ *
ترا کی میسر شود این مقام؟
که با دوستانت خلافست و جنگ *

क़ता (वहरे मुतक़ारिब)

शुनीदम् कि मरदाने राहे ख़ुदा।
दिले दुश्मनाँ हम न करदन्द तंग॥
तुरा कै मुयस्सर शवद ईं मक़ाम?
कि बा दोस्तानत ख़िलाफ़स्तो जंग॥

مودت اهل صفا چه در روی و چه در قفا - نه چنانکه در پشت عیب گیرند - و در پیشت میرند *

मुवद्दते अहले सफ़ा—चि दर रूय व चि दर क़फ़ा—नै चुनाँ कि दर पसत ऐब गीरन्द—व दर पेशत बमीरन्द।

बैत

नाहे तू मारे और चाहे छोड़े।
मेरा मुंह और सिर तेरी दहली पर है।।
सेवक का काम आदेश देना नहीं है।
तू जो आज्ञा दे मैं वही करूँ।।

श्लोक

यद् मां सेवकं हन्या दद्या वा कृपया क्षमाम्।
यथाकाम प्रकुर्वीया धृतशीर्षोऽस्मि देहलीम्।। ५।।
सेवकोऽस्मि न चादेष्टु समर्थोऽस्मि कदाचन।
कर्ताऽस्म्यादेशनिर्वाह यद् यदादिश्यते त्वया।। ६।।

कता

काबा के द्वार पर मैंने एक प्रार्थी को देखा।
कि बोलता जाता था और फूट फूट कर रोता जाता था।।
'मैं नहीं कहता कि मेरी पूजा स्वीकार कर।
(केवल) क्षमा की कलम मेरे गुनाहों पर फेर दे।।'

पदम्

काबाद्वारि जन कञ्चिदपश्य प्राथनापरम्।
आक्रन्दन्त ब्रुवन्त स आसीत् तद्गतचेतन।। ७।।
'नैव ब्रवीमि मे पूजामङ्गीकुरु कदाचन।
याचे यल्लोहलेखिन्या लिख मे पापपञ्जिकाम्।। ८।।

कथा—३

अब्दुल कादिर गीलानी (उन पर ईश्वर की कृपा हो) को लोगों ने देखा कि काबा की मस्जिद में अपना मुह कंकड़ों पर रखे हुए रो रहे थे और कह रहे थे—'हे प्रभु! क्षमा कर और यदि मैं दण्ड के योग्य होऊँ तो प्रलय के दिन मुझे अन्धा उठाना, ताकि भले लोगों के सामने लज्जित न होऊँ।'

आख्यायितम्—३

अब्दु'ल् कादिर गीलानी (तस्मै स्यात् भगवत्कृपा) लोष्ठेषु मुख निधाय चाक्रन्दीदवादीच्च—'हे प्रभो! क्षमस्व मा! अथचेद् दण्डनीय स्याम् तर्हि प्रलयेऽह्नि मामन्धीकृत्य हीनो विदध्या यत सज्जनाना सन्निधौ लज्जितो न स्यामिति।'

कता

अपने मुंह पर खाक डालकर मैं बड़ी बात कहता हूँ।
हर सवेरे जैसे ही मुझे होश आता है।।
हे तू जो कि कभी मुझसे विस्मृत नहीं होता।
तुझे भी कभी इस दास की याद आती है।।

पदम्

पृथिव्या मस्तक धृत्वा पृच्छामि त्वामह प्रभो।
उत्तिष्ठामि प्रभाते त्वा स्मार स्मार हि सर्वदा।। ९।।
न यथा विस्मरामीह, हे प्रभो! त्वामहर्निशम्।
अपि जातवस्य दासस्य स्मरण क्रियते त्वया।। १०।।

कथा—४

एक चोर किसी साधु के घर में घुसा। बहुत ढूँढा (पर) एक भी चीज न मिली। दुखी होकर वापिस लौट गया। साधु को उसके हाल की खबर हो गयी। उसने वह कम्बल जिसमें (जिसे ओढ़कर) वह सोया हुआ था, उठाया और चोर के रास्ते में डाल दिया ताकि निराश न जाय।

आख्यायितम्—४

कश्चिच् चौर कस्यचित् साधो कुटीर प्रविवेश। भूयो भूयोऽन्वेषयामास न च किञ्चित् प्राप। स नितरा विषण्णो भूत्वा प्रतिनिवृत्त। साधुस्तस्य विषाद विवेद। स कम्बलास्तरण यमधिशेते स्म, नीत्वा चौरस्य मार्गे प्राहिणोत्। यतो निराशो न यायादिति।

कता

मैंने सुना है कि ईश्वर मार्ग के अनुयायी।
शत्रुओं का भी दिल नहीं दुखाते।।
तुझे कैसे प्राप्त होगी यह स्थिति।
कि तेरी तो दोस्तों से लड़ाई रहती है।।

सन्तों का प्रेम—क्या सामने और क्या पीठ पीछे—ऐसा नहीं होता कि तेरे पीछे दोष निकालें, और तेरे सामने मरने को तैयार हों।

पदम्

श्रुतवानस्मि ये सन्ति प्रभुमार्गपरायणा।
द्विषतामपि चित्तानि व्यथयन्ति न कर्हिचित्।। ११।।
त्वया कथमवस्थेय प्राप्तव्या तु भविष्यति।
यश्च युद्ध स्वकीयैस्तु मित्रवर्गे समाचरेत्।। १२।।

सता स्नेह किं वा पुरस्तात् किं वा पश्चात्, नैतादृशो भवति, अथ पृष्ठतो योऽभियुञ्जीत, पुरतश्च प्राणोत्सर्गोद्यतश्चेति।

بیت

در برابر چو گوسفند سلیم
در قفا همچو گرگ مردم در

بیت

هر که عیب دگران پیش تو آورد و شمرد
بیگمان عیب تو پیش دگران خواهد برد

حکایت ۵

تنی چند از روندگان متفق در سیاحت بودند و شریک رنج و راحت. خواستم که موافقت کنم. موافقت نکردند. گفتم از کرم و اخلاق بزرگان بدیع است روی از مصاحبت مسکینان برتافتن و فایده دریغ داشتن که من در نفس خود آن قدر قوت و سرعت میشناسم که در خدمت مردان یار شاطر باشم نه بار خاطر.

بیت

إِنْ لَمْ أَكُنْ رَاكِبَ الْمَوَاشِي
أَسْعَى لَكُمْ حَامِلَ الْغَوَاشِي

یکی از آن میان گفت از این که شنیدی دل تنگ مدار که درین روزها دزدی بصورت صالحان بر آمد و خود را در سلک صحبت ما منتظم کرد. از آنجا که سلامت حال درویشانست گمان فضولش نبردند و بیاری قبولش کردند.

بیت

چه داند مردم که در جامه کیست؟
نویسنده داند که در نامه چیست

مثنوی

ظاهر حال عارفان دلقست
این قدر بس که روی در خلقست
در عمل کوش و هرچه خواهی پوش!
تاج بر سر نه و علم بر دوش

बैत (बहरे ख़फ़ीफ़)

दर बराबर चु गोसफ़न्दे सलीम।
दर क़फ़ा हमचु गुर्गे मर्दुम दर॥

बैत (बहरे रमल)

हर कि ऐबे दीगरां पेशे तो आवुर्द ओ शुमुर्द।
बेगुमां ऐबे तो पेशे दीगरां ख़्वाहद बुर्द॥

हिकायत—५

तने चन्द अज़ रविन्दगान् मुत्तफ़िक़ दर सियाहत बूदन्द व शरीके रंज व राहत। ख़्वास्तम् कि मुवाफ़िक़त कुनम्—मुवाफ़क़त न कर्दन्द। गुफ़्तम्—'अज़ करम व अख़्लाक़े बुज़ुर्गान् बदीअ अस्त रूय अज़ मुसाहबते मिस्कीनान् बर ताफ़्तन् व फ़ायदा दरेग़ दाश्तन्। कि मन् दर नफ़्से ख़ुद आँ क़द्र क़ुव्वत व सुरअत मी शनासम कि दर ख़िदमते मर्दां यारे शातिर बाशम्—नै बारे ख़ातिर।'

बैत (बहरे बसीत)

इन् लम् अकुन राकिबल् मवाशी।

उस्आ लकुम् हामिलल् ग़वाशी॥

यके अज़ आं मियान गुफ़्त—'अज़ ईं कि शुनीदी दिल तंग मदार—कि दरीं रोज़हा दुज़्दे ब सूरते सालिहान् बर आमद व ख़ुद रा दर सिल्के सुहबते मा मुन्तज़िम कर्द। अज़ आंजा कि सलामत हाले दुर्वेशानस्त गुमाने फ़ुज़ूलश न बुर्दन्द व ब यारी क़बूलश कर्दन्द।'

बैत (बहरे मुतक़ारिब)

चि दानन्द मर्दुम् कि दर जामा कीस्त?
नवीसिन्दा दानद कि दर नामा चीस्त॥

मसनवी (बहरे ख़फ़ीफ़)

ज़ाहिरे हाले आरिफ़ां दल्क़’स्त।
ईं क़दर बस कि रूय दर ख़ल्क़’स्त॥
दर अमल कोश ओ हर चि ख़्वाही पोश।
ताज बर सर निह् ओ अलम बर दोश॥

'बैत

सामने जैसे भोली भेड।
पीठ पीछे जैसे नरभक्षी भेडिया।।

श्लोक

प्रत्यक्षमेत्य चावीच चार्जवेन समन्वितं।
गते परोक्ष एवैप नृशसश्च वृको यथा।। १३।।

बैत

हर वह जो कि दूसरो के दोष तेरे सामने लाता-गिनाता है।
निश्चय ही वह दूसरो के सामने भी तेरे दोष ले जायेगा।।

श्लोक

यश्चापि परदोषाश्च व्याख्याति पुरतस्तव।
परेषा पुरतो दोषान् वक्ष्यतेऽसौ ध्रुव तव।। १४।।

कथा—५

कुछ यात्री साथ साथ यात्रा में थे और (एक दूसरे के) सुख दुख मे शामिल थे। मैंने चाहा कि उनके साथ हो जाऊँ पर उन्होने साथ न लिया। मैंने कहा—'बडे लोगो की दया और आचार से परे है निर्धनो की सगत से मुँह मोडना। और लाभ से वचित रखना। क्योकि मैं अपने हृदय में इतनी शक्ति और सामर्थ्य समझता हूँ कि मर्दो की सेवा में चतुर मित्र होऊँगा न कि चित्त पर भारस्वरूप।'

आख्यायितम्—५

केचन पुमास सहयात्रा आरान्। अन्योऽन्यस्य सुखदुखयो समभागाश्चासन्। अहमैच्छमथ तेषा सङ्गती गच्छेयम्। न च तैरङ्गीकृत। अहमवोचम्—'ज्यायसामाचारविरुद्ध दयाविपयस्तञ्चैतदथ दीनाना सङ्गत्या पराङ्मुखत्वमुपकारवैराग्यञ्चेति। स्वयमपि चाहमेतादृश सामर्थ्यवन्तमात्मान मन्ये यत्सत्पुरुषाणा सेवाया चतुर सखा भविष्यामि न च भारस्वरूपो हृद।'

बैत

यद्यपि मैं नही हूँ किसी पशु पर सवार।
चेष्टा करूँगा आप लोगो के लिये जीन ढोने की।।

श्लोक

यद्यपि नास्मि चारूढ आरूढीय पशु खलु।
श्रीमद्भ्य सम्भविष्यामि विष्टरस्य च वाहन।। १५।।

उनमें से एक बीच में बोल पडा—'जो तूने सुना है (उससे) दुखी मत हो—क्योकि इन्ही दिनो एक चोर साधुओ के रूप में आया और अपने आपको हमारी सगति के सूत्र मे व्यवस्थित कर लिया। चूंकि सिधाई साधुओ का लक्षण है हमने उस पर व्यर्थ सन्देह नही किया उसकी मैत्री को स्वीकार कर लिया।'

तेषु कश्चिन्मामन्तरा ब्रूते—'यत् त्वया श्रुत मा तेन विषीद। कतिपयदिनात् प्राक् कश्चिच् चौर साधुवेश दधान इहागत्यात्मान चास्माक सङ्गतिसूत्रे ग्रथितवान्। यत आर्जव हि साधूना स्वभाव, नाकारण सन्देहोऽस्माभि कृत, मित्रभावेन सोऽङ्गीकृतश्च।'

बैत

कैसे जानें आदमी को कि कपडो में कौन है।
लेखक ही जाने कि पत्र में क्या है।।

श्लोक

पुरुष वाससाच्छन्न को नु विज्ञातुमर्हति।
निबन्धको विजानीते लिखित किन्नु पुस्तके।। १६।।

मसनवी

मुनियो का बाहरी वेश तो वल्कल है।
इतना ही काफी है (उनके लिये) कि जिनका मुँह दुनियाँ में है।।
आचरण में प्रवृत्त हो और जो चाहे पहन।
चाहे सिर पर ताज रख और (चाहे) झडा कधे पर।।

गाथा

लक्षण प्रभुभक्ताना कथ्यते जीर्णवल्कलम्।
तदेव लोकसामान्य पर्याप्तमिति मीयते।। १७।।
धर्माचारेण वर्तेथा परिधत्स्व यथारुचि।
निधेहि मुकुट मूर्ध्नि ध्वजमसावलम्बिनम्।। १८।।

ترک دنیا و شهوتست و هوس
پارسائی - نه ترک جامه و بس *
در قزاگند مرد باید بود
بر مخنث سلاح جنگ چه سود *

तर्के दुनिया व शहवत व हवस।
पारसाई है तर्के जामा व बस॥
दर क़ज़ागन्द मर्द बायद बूद।
बर मुख़न्नस सिलाहे जंग चि सूद॥

روزی تا شب رفته بودیم و شبانگه در پای حصاری خفته * دزد بی توفیق ابریق رفیق برداشت - که بطهارت میرود - او خود بغارت رفت *

रोज़े ता ब शब रफ़्ता बूदेम् व शबांगह दर पाये हिसारे ख़ुफ़्ता। दुज़्द बेतौफ़ीक़ इबरीक़े रफ़ीक़ बरदाश्त—कि ब तहारत मी रवद—ऊ ख़ुद ब ग़ारत रफ़्त।

بیت

پارسای - که خرقه در بر کرد
جامهٔ کعبه‌را جل خر کرد *

बैत (बहरे ख़फ़ीफ़)

ना रवाए कि ख़िरक़ा दर बर कर्द।
जामाए काबा रा जुले ख़र कर्द॥

چندانکه از نظر درویشان غائب شد - برجی برفت و درجی بدزدید * تا روز روشن شد - آن تاریک مبلغی راه رفته بود و رفیقان بی گناه خفته * بامدادان همه‌را بقلعه در آوردند و بزندان کردند * از آن تاریخ باز ترک صحبت گفتیم - و طریق عزلت گرفتیم * "السّلامة فی الوحدة" بر خواندیم *

चन्दांकि अज़ नज़रे दरवेशाँ ग़ायब शुद—बुर्जे बरफ़्त व दुर्जे बदुज़्दीद। ता रोज़ रोशन शुद—आँ तारीक मब्लग़े राह रफ़्ता बूद व रफ़ीक़ाने बेगुनाह ख़ुफ़्ता। बामदादाँ हमा रा ब क़िलआ दर आवुरदन्द व ब ज़िन्दाँ कर्दन्द। अज़ आँ तारीख़ बाज़ तर्के सुहबत गुफ़्तेम्—व तरीक़े उज़्लत गिरिफ़्तेम्। 'अस्सलामतु फ़िल् वहदति बर ख़्वांदेम्।'

قطعه

چو از قومی یکی بیدانشی کرد
نه که را منزلت ماند نه مه را *
نمی‌بینی که گاوی در علفزار
بیالاید همه گاوان ده را *

क़ता (बहरे हज़ज)

चु अज़ क़ौमे यके बेदानिशी कर्द।
न किह् रा मंज़िलत मानद न मिह् रा॥
न मी बीनी कि गावे दर अलफ़ ज़ार।
बियालायद हमा गावाने दिह् रा॥

گفتم - سپاس و منت خدای را عز و جل - که از فوائد درویشان محروم نماندم - اگرچه بصورت از صحبت وحید شدم - اما بدین فائده مستفید گشتم - و مرا همه عمر این نصیحت بکار آید *

गुफ़्तम्—सिपास व मिन्नत ख़ुदाय रा अज़्ज़ व जल्ल कि अज़ फ़वायदे दरवेशाँ महरूम न मान्दम्—अगरचे ब सूरत अज़ सुहबत वहीद शुदम्—अम्मा बदीं फ़ायदा मुस्तफ़ीद गश्तम्—व मरा हमा उम्र ईं नसीहत बकार आयद।

مثنوی

بیک ناتراشیده در مجلسی
برنجد دل هوشمندان بسی *
اگر برکهٔ پر کنند از گلاب
سگی در وی افتد کند منجلاب *

मसनवी (बहरे मुतक़ारिब)

ब यक नातराशीदा दर मजलिसे।
बिरंजद दिले होशमन्दाँ बसे॥
अगर बिर्कए पुर कुनन्द अज़ गुलाब।
सगे दर वै उफ़्तद कुनद मंजलाब॥

दुनिया, और राग और लोभ का त्याग।
साधुता है केवल वस्त्रों के त्याग में नहीं॥
कवच में मर्द होना चाहिये।
नपुंसक पर युद्ध के हथियार से क्या लाभ॥

ससारस्य परित्यागश्चैषणालोभनिग्रह ।
धर्माचार इति प्रोक्त परित्यागो न वाससः ॥ १९ ॥
सङ्ग्रामे वमविभ्राण पुरुष शूर उच्यते।
शस्त्रास्त्रेणापि युक्त सन् कातरो हि नपुंसक ॥ २० ॥

एक दिन देर रात तक चलते रहे और रात के समय एक किले के नीचे सो गये। उस कृतघ्न चोर ने एक मित्र का टोंटीदार लोटा उठाया कि शौच के लिये जाता हूँ, और वह स्वयं चोरी कर गया।

एकदाऽऽरात्र वय प्राचलाम्, सम्प्राप्ते च रात्रिनिपाते कञ्चिद् दुर्गप्राचीरमाश्रित्य सुषुप्ता । स कृतघ्नश्चौर कस्यचित्साधो पात्र नीत्वाऽथ शौचार्थं गच्छामीत्युक्त्वा तदमुष्णात् ।

बैत

वह कुपात्र जो कि मुनिवेश धारण करता है।
वह काबा की चादर को गधे की झूल बनाता है॥

श्लोक

मुनिवेश दधानश्चासत्पात्रो यो हि वर्तते।
काबापटच्छद धत्ते यथा वैशाखनन्दन ॥ २१ ॥

जब साधुओं की दृष्टि से ओझल हुआ तो थोडी दूर जाकर एक पेटी चुरा ली। जब दिन प्रकाशमान हुआ वह पापी पूरा मार्ग चल चुका था और निरपराध मित्र सो रहे थे। सवेरे सबको किले के अन्दर ले गये और जेल में डाल दिया। उस दिन के बाद हमने सगति त्याग की प्रतिज्ञा कर ली और एकान्तमार्ग पकड लिया। 'सुरक्षा एकाकिता में है।'

यदाऽसौ साधुभ्य परोक्ष गत, नातिदूरादेव काञ्चिन् मञ्जूषा-ममुष्णात्। यदा सूर्य उदगात् स पापोऽतिलघिताध्वाऽभवत्, साधवश्च निरपराधास्तथैव सुषुप्ता आसन्। प्रभाते सर्वे साधवो दुर्गे नीता कारायामवरुद्धाश्च। तत प्रभृतिरस्माभि सङ्गत्याग प्रतिज्ञात एकान्तवासश्चाङ्गीकृत । 'शान्ति सङ्गपरित्यागे पण्डितै परिकीर्तित ।'

कता

जब सारी जाति में से एक आदमी असगत काम करता है।
तो न छोटे का आदर रहता है न बडे का॥
क्या नही देखते कि चरागाह में आया हुआ जगली सांड।
बिगाड देता है सारे गाव के सांडों को॥

पदम्

यदा कुटुम्बे कश्चिद्धि कार्यं कुर्यादसगतम्।
कनिष्ठस्य वरिष्ठस्य सम्मान न च कस्यचित् ॥ २२ ॥
गोचरे किन्न जानासि प्राप्त शुष्मी वनेचर ।
दूषीकरोति ग्रामीणान् बलीवर्दान् महोक्षजान् ॥ २३ ॥

मैंने कहा कि—'धन्यवाद और अनुकम्पा है परमेश्वर की कि साधुओं के लाभों से मैं वंचित नही रहा। यद्यपि प्रकटत मैं सत्सग से एकाकी रह गया, किन्तु मैं लाभ से लाभान्वित हो गया और मुझे सारी उम्र को यह उपदेश हो गया।'

अहमवोचम्—'परमात्मनो महती कृपाऽस्ति यत् सता सङ्ग-लाभान्न वञ्चितोऽस्मि। यद्यपि प्रकाशमह सत्सङ्गवर्जित स्थित, तथापि तेन लाभान्वितोऽभूवम्। अयमुपदेश समस्ताय जीवनाय मदीयायालमिति।'

मसनवी

एक भी बेढगे के द्वारा सग साथ में।
दुख जाता है दिल अनेक बुद्धिमानों का॥
अगर एक हौज को भर दे गुलाब जल से।
एक कुत्ता उसमें गिर जाय तो कर देता है उसे भ्रष्ट॥

गाथा

असगतेन चैकेन पुरुषेणापि सङ्गतौ।
विवेकबुद्धियुक्ताना हृदय चाभिभूयते ॥ २४ ॥
सुबन्ध्यामपि चेत् कुल्या सुगन्धाद्भि प्रपूरयेत्।
पतितेन शुना तस्मिन् कृत्स्न तोय हि दुष्यते ॥ २५ ॥

حکایت ۶

زاهدی مهمان پادشاهی بود. چون بطعام بنشستند - کمتر از آن خورد که ارادت او بود - و چون بنماز برخاستند - بیشتر از آن کرد که عادت او بود - تا ظن صلاح در حق او زیادت کنند.

بیت

ترسم نرسی بکعبه - ای اعرابی!
کین ره که تو میروی بترکستانست.

چون بخانه باز آمد - سفره خواست - تا تناول کند. پسری داشت صاحب فراست. گفت - ای پدر! بدعوت سلطان بودی - طعام نخوردی؟ گفت - در نظر ایشان چیزی نخوردم که بکار آید. گفت - نماز را هم قضا کن - که چیزی نکردی که بکار آید.

قطعه

ای هنرها نهاده بر کف دست!
عیبها را نهفته زیر بغل!
تا چه خواهی خریدن - ای مغرور!
روز درماندگی بسیم دغل؟

حکایت ۷

یاد دارم که در ایّام طُفولیّت مُتعبّد بودم و شبخیز و مولع زهد و پرهیز. شبی در خدمت پدر نشسته بودم و همه شب دیده برهم نبسته - و مصحف عزیز در کنار گرفته و طائفهٔ گرد ما خفته. پدر را گفتم - ازینان یکی سر بر نمیدارد که دوگانه بگذارد - چنان خواب غفلت شان برده که گوئی مرده اند. گفت - ای جان پدر! اگر تو نیز بخفتی به که در پوستین خلق افتی.

قطعه

نبیند مدعی جز خویشتن را
که دارد پردهٔ پندار در پیش.
گرت چشم خدا بینی ببخشند
نبینی هیچکس عاجزتر از خویش.

हिकायत—६

ज़ाहिदे मिहमाने पादशाहे बूद। चूँ ब तआम बिनिशस्तन्द—कमतर अज़ आँ ख़ुर्द कि इरादते ऊ बूद—व चूँ ब नमाज़ बरख़ास्तन्द—बेशतर अज़ आँ कर्द कि आदते ऊ बूद। ता ज़न्ने सलाह दर हक़्क़े ऊ ज़ियादत कुनन्द।

बैत (बहरे हज़ज)

तरसम् न रसी ब काबा ऐ आराबी।
कीं रह कि तो मी रवी ब तुर्किस्तानस्त॥

चूँ ब ख़ाना बाज़ आमद सुफ़रा ख़्वास्त—ता तनावुल कुनद। पिसरे दाश्त साहिबे फ़िरासत। गुफ़्त—'ऐ पिदर! ब दावते सुल्तान बूदी—तआम न ख़ुर्दी?' गुफ़्त—'दर नज़रे ईशाँ चीज़े न ख़ुर्दम् कि ब कार आयद।' गुफ़्त—'नमाज़ रा हम क़ज़ा कुन कि चीज़े न कर्दी कि ब कार आयद।'

क़ता (बहरे ख़फ़ीफ़)

ऐ हुनरहा निहादा बर कफ़े दस्त।
ऐबहा रा निहुफ़्ता ज़ेरे बग़ल॥
ता चि ख़्वाही ख़रीदन् ऐ मग़रूर।
रोज़े दरमान्दगी ब सीमे दग़ल॥

हिकायत—७

याद दारम् कि दर अय्यामे तुफ़ूलीय्यत मुतअब्बिद बूदम् व शबख़ेज़ व मूलए ज़ुह्द व परहेज़। शबे दर ख़िदमते पिदर निशस्ता बूदम् व हमा शब दीदा बरहम न बस्ता—व मुसहफ़े अज़ीज़ दर किनार गिरिफ़्ता व तायफ़ाये गिर्दे मा ख़ुफ़्ता। पिदर रा गुफ़्तम्—'अज़ ईनाँ यके सर बर न मी दारद कि दुगानाए बिगुज़ारद—चुनाँ ख़्वाबे ग़फ़लत शान बुर्दा कि गोया मुर्दा अन्द।' गुफ़्त—'ऐ जाने पिदर! अगर तो नीज़ बिख़ुफ़्ती बिह् कि दर पोस्तीने ख़ल्क़ उफ़्ती!'

क़ता (बहरे हज़ज)

न बीनद मुद्दई जुज़ ख़ेश्तन रा।
कि दारद पर्दाए पिन्दार दर पेश॥
गरत चश्मे ख़ुदा बीनी बिबख़्शन्द।
नै बीनी हेच कस आजिज़तर अज़ ख़ेश॥

कथा—६

एक महात्मा किसी राजा का अतिथि हुआ। जब खाने के लिये बैठे, तो (उसने) जितनी इच्छा थी, उससे कम खाया, और जब नमाज़ के लिये (सब) उठे तो जितना अभ्यास था उससे ज्यादा की। ताकि (लोग) अच्छी राय उसके विषय मे बढ़ायें।

बैत

मैं डरता हूँ, तू नही पहुँचेगा काबा, हे अरववासी।
कि यह माग जिससे तू जा रहा है तुर्किस्तान का है।।

जब घर वापिस आया तो दस्तरख्वान माँगा ताकि भोजन करे। उसके एक बुद्धिमान् पुत्र था। उसने कहा—'हे पिता! तू राजा के भोज में था—खाना नही खाया?' वह बोला—'उनके देखते हुए मैंने कोई चीज नही खायी कि आगे काम आये।' बेटे ने कहा—'नमाज़ भी दुबारा कर क्योकि तूने कोई चीज ऐसी नही की कि जो आगे काम आये।'

कता

अरे गुणो को रखे हुए हाथ की हथेली पर।
(और) दोषो को छिपाये हुए बगल मे।।
तू क्या चाहता है खरीदना हे अभिमानी।
मुसीबत के दिन खोटी चाँदी से।।

कथा—७

मुझे याद आता है कि बचपन के दिनो मे मैं बडा प्रार्थना परायण था और रात में उठने वाला और यम-नियमो का पपाल था। एक रात मैं पिताजी की सेवा में बैठा था और सारी रात आँख से आँख नही लगी—और कुरान को गोद में पकडे हुआ था। और जनसमूह हमारे चारो ओर सोया हुआ था। मैंने पिताजी से कहा—'इनमे से कोई भी सिर नही उठाता कि द्विगुणा (नमाज) कर ले। ऐसी गफलत की नीद में ये पडे है मानो मुर्दा हो।' पिताजी ने कहा—'हे पिता के प्राण! यदि तू भी सो जाता तो अच्छा होता लोगो के कपडो में झाँकने से।'

क़ता

मुद्दई नही देखता सिवा अपने आपके।
कि रखता है अहकार का पट अपने सामने।।
यदि तुझे दिव्यदृष्टि मिल जाय।
नही देखेगा किसी आदमी को निर्बलतर अपने से।।

आख्यायितम्—६

एकदा कश्चिन् महात्मा कञ्चिद् राजानमतिथिरूपेण गत यदा सर्वे भोजनार्थमुपाविक्षन्, स हीनमात्र बुभुजे बुभुक्षाया, ५ पोपासनार्थमुच्छ्रिता स ततोऽधिकगुणासागारा यावन्तमभ्यासते स्मेति यस्मात् प्रशसित स्यादिति।

श्लोक

बिभेमि त्व न गन्तासि काबास्थान हि यात्रिक।
गच्छन्ननेन मार्गेण तुर्कस्थान व्रजिष्यति।। २६।।

यदाऽसौ स्वीय गृह प्रतिनिवृत्तस्तर्हि पुनर्भोक्तुमैच्छत्। तस्यैक विवेकी पुत्र आसीत। सोऽवदत्—'हे तात! त्व राजकीय भोज गत। किं न तत्र भुक्त त्वया?' सोऽवदत्—'तेषु पश्यत्सु न च किञ्चिन्मया युक्त यत स्यात् कार्यसाधनम्।' पुत्रो ब्रूते—'उपासनाऽपि पुनरुपासीथा यतो न च किंचित् त्वया ह्युप्त यत स्यात् कार्यसाधनम्।'

पदम्

निदधासि गुणान् स्वस्य करामलकवत् समम्।
पिदधासि तथा दोषान् कक्षामूलनिगूहितान्।। २७।।
किमनेन परिक्रेतुमिष्यते गर्वित! त्वया।
आपत्काले समापन्नेऽशुद्धराजतमुद्रया।। २८।।

आख्यायितम्—७

स्मराम्यर्भकादा शैशवकालेऽहमतीव प्रार्थनापरायण, महति प्रत्यूषे शय्यात्यागी, यमनियमाना च पालक आसम्। एकदा शर्वर्यामह तातपादाना सेवायामुपाविशम्, कृत्स्ना च शवरी मया चक्षुपोरेव नीता। धर्मग्रन्थश्च मदीये क्रोडे स्थापित आसीत्। जनसमूहश्चावा परित सुप्त आसीत्। अह तातपादानवोचम्—'नैषा कश्चिन्मूर्धानमुत्थापयति यत प्रत्यूपोपासनामुपासीत। इमे तथा प्रमादनिद्राविवशा यथा शवा।' पितृपादा आहु—'हे पितुर्जीवित! त्वमपि चेदस्वप्स्यस्तद्वरम्, यत परेषा दोष नाद्रक्ष्य इति।'

पदम्

छिद्रान्वेषी जन किञ्चिदृते छिद्रान्न पश्यति।
गर्वो दध्यात् पटाक्षेप पुरतस्तस्य चक्षुषो।। २९।।
तुभ्य यदि प्रभुर्दद्याद्दिव्यदृष्टि कथञ्चन।
न त्व हीनतर कञ्चित् त्वत्तो सद्रष्टुमर्हसि।। ३०।।

حکایت ٦

زاهدی مهمان پادشاهی بود + چون بطعام بنشستند ـ کمتر از آن خورد که ارادت او بود ـ و چون بنماز برخاستند ـ بیشتر از آن کرد که عادت او بود ـ تا ظن صلاح در حق او زیادت کنند +

بیت

ترسم نرسی بکعبه ـ ای اعرابی!
کین ره که تو میروی بترکستانست +

چون بخانه باز آمد ـ سفره خواست ـ تا تناول کند + پسری داشت صاحب فراست + گفت ـ ای پدر! بدعوت سلطان بودی ـ طعام نخوردی؟ گفت ـ در نظر ایشان چیزی نخوردم که بکار آید + گفت ـ نمازرا هم قضا کن ـ که چیزی نکردی که بکار آید +

قطعه

ای هنرها نهاده بر کف دست!
عیبهارا نهفته زیر بغل!
تا چه خواهی خریدن ـ ای مغرور!
روز درماندگی بسیم دغل؟

حکایت ٧

یاد دارم که در اَیّامِ طُفولیّت مُتَعَبِّد بودم و شبخیز و مولع بزهد و پرهیز + شبی در خدمت پدر نشسته بودم و همه شب دیده برهم نبسته ـ و مصحف عزیز در کنار گرفته و طائفهٔ گرد ما خفته + پدر را گفتم ـ ازینان یکی سر بر نمیدارد که دوگانه بگذارد ـ چنان خواب غفلت شان برده که گوئی مرده اند + گفت ـ ای جان پدر! اگر تو نیز بخفتی به که در پوستین خلق افتی +

قطعه

نبیند مدعی جز خویشتن را
که دارد پردهٔ پندار در پیش +
گرت چشم خدا بینش ببخشند
نه بینی هیچکس عاجزتر از خویش +

हिकायत—६

ज़ाहिदे मिहमाने पादशाहे बूद। चू ब तआम बिनिशस्तन्द—कमतर अज़ आँ ख़ुर्द कि इरादते ऊ बूद—व चूँ ब नमाज़ बर ख़ास्तन्द—बेशतर अज़ आँ कर्द कि आदते ऊ बूद। ता ज़न्ने सलाह दर हक़्क़े ऊ ज़ियादत कुनन्द।

बैत (बहरे हज़ज्)

तरसम् न रसी ब काबा ऐ आराबी।
कीं रह कि तो मी रवी ब तुर्किस्तान'स्त॥

चू ब ख़ाना बाज़ आमद सुफ़रा ख़्वास्त—ता तनावुल कुनद। पिसरे दाश्त साहिबे फ़िरासत। गुफ़्त—'ऐ पिदर! ब दावते सुल्तान बूदी—तआम न ख़ुर्दी?' गुफ़्त—'दर नज़रे ऐशाँ चीज़े न ख़ुर्दम् कि बकार आयद।' गुफ़्त—'नमाज़ रा हम क़ज़ा कुन कि चीज़े न कर्दी कि बकार आयद।

क़ता (बहरे ख़फ़ीफ़)

ऐ हुनरहा निहादा बर कफ़े दस्त।
ऐबहा रा निहुफ़्ता ज़ेरे बग़ल॥
ता चि ख़्वाही ख़रीदन् ऐ मग़रूर।
रोज़े दरमान्दगी ब सीमे दग़ल॥

हिकायत—७

याद दारम् कि दर अय्यामे तुफ़ूलीय्यत मुतअब्बिद बूदम् व शबख़ेज़ व मूलअ ब ज़ुह्द व परहेज़। शबे दर ख़िदमते पिदर निशस्ता बूदम् व हमा शब दीदा बरहम न बस्ता—व मुसहफ़े अज़ीज़ दर किनार गिरिफ़्ता व तायफ़ाये गिर्दे मा ख़ुफ़्ता। पिदर रा गुफ़्तम्—'अज़ ईनान यके सर बर न मी दारद कि दुगानाए बिगुज़ारद—चुनाँ ख़्वाबे ग़फ़लत शान बुर्दा कि गोया मुर्दा अन्द।' गुफ़्त—'ऐ जाने पिदर! अगर तो नीज़ बिख़ुफ़्ती बिह् कि दर पोस्तीने ख़ल्क़ उफ़्ती।'

क़ता (बहरे हज़ज्)

न बीनद मुद्दई जुज़ ख़ेशतन रा।
कि दारद पर्दाए पिन्दार दर पेश॥
गरत चश्मे ख़ुदा बीनिश बिबख़्शन्द।
नै बीनी हेच कस आजिज़तर अज़ ख़ेश॥

कथा—८

एक बडे आदमी की (लोग) सभा मे स्तुति कर रहे थे—और उसके प्रशस्त गुणों मे अतिशयोक्ति पर रहे थे। विचार के पश्चात् (उसने) सिर ऊपर उठाया और बोला—'मैं जो हूँ वह मैं जानता हूँ।'

बैत

काफी है कष्ट, अरे (तू) जो गिनाता है मेरे गुण।
यह मेरा बाह्य है और तू नही जानता मेरा अन्तरग॥

क़ता

मेरा बाहरी रूप दुनियाँ वालो की नज़रो मे सुदर्शन है।
और भीतरी दोषो से मैं शर्म से सिर झुकाये हूँ॥
मोर की, उसके रूपरग के कारण—जो वह रखता है—लोग।
प्रशसा करते हैं और वह लज्जित है अपने सराब पैरो से॥

कथा—९

लुबनान का एक साधु, कि जिसकी महत्ता पश्चिमी देशो मे प्रथित थी—और (वह) चमत्कारो के लिये प्रसिद्ध था, दमिश्क की मस्जिद में आया। वह मस्जिद के कुण्ड के किनारे अग शुद्धि कर रहा था। सहसा उसका पैर फिसला—और वह हौज़ में गिर पडा, और बडी मुश्किल से उस जगह से निकाला गया। जब (वह) नमाज से उठा, एक साथी उससे बोला—'मुझको एक शका है।' शेख ने कहा—'वह क्या है?' बोला—'मुझे याद ह कि एक दिन पश्चिमी सागर पर आप चल रहे थे और आपके चरण नही भीगे। और आज एक आदमी डूबा पानी मे आपके मरने में कोई कसर नही रही। इसमें क्या युक्ति है।' शेख इस फिक़रे पर एक (थोडी) देर सोचता रहा। बहुत विचार के बाद सिर ऊपर उठाया और बोला—'क्या तूने नही सुना कि लोकनायक मुहम्मद मुस्तफा (परमात्मा उन्हें शान्ति और स्वस्ति दे) ने फरमाया है कि—"मेरे लिये परमेश्वर के सान्निध्य का एक ऐसा समय होता है जब उसमें परमात्मा का निकटवर्त्ती फरिश्ता और देवदूत भी मेरे समकक्ष नही होता।" पर यह नही कहा कि—"सदैव।" कभी ऐसा होता था कि

आख्यायितम्—८

कस्यचिन्महाजनस्य सभायां पारिपदास्तमस्ताविषु, तस्य गुणाख्याने चातिशयोक्तिमभाक्षु। अथ महाजनो गाढं विमृश्य शिरश्चोत्थापयामासोवाच च—'कोऽहमस्मीति जानामि।'

श्लोक

अलं श्रमेण हे स्तोतर्! यस्त्वं व्याख्यासि मे गुणम्।
इदं मे वर्तते बाह्यं न त्वं जानासि मेऽन्तरम्॥ ३१॥

पदम्

दर्शनीयं हि मे रूपं बाह्यतश्च मनोरमम्।
आभ्यन्तरेण दोषेण लज्जानतशिरा न्वहम्॥ ३२॥
बर्हिणं सुस्वरूपाच्च रूपाद् रगान्मनोरमात्।
प्रशसन्ति जना स्वे पादौ पश्यन्तं लज्जितं॥ ३३॥

आख्यायितम्—९

लुबनानदेशस्य कश्चित् साधु प्रतीचीप्रथितकीर्तिर्विख्यात चमत्कारश्च दमिश्कपुरस्योपासनामन्दिरमागत। स मन्दिरस्य जलकुण्डतटेऽङ्गशुद्धिं कुर्वन्नास्त। सहसा तस्य पाद प्रस्खलित, स च जलकुण्डे निपतित, महता यत्नेन च तत उद्धृत। यदाऽसौ प्रार्थनानिवृत्तो जातस्तस्यैक सहचारस्तमूचे—'ममैका शङ्का जाता।' सोऽवदत्—'तत् किम्?' स उवाच—'स्मरामि यदा भवान् पश्चिमे सागरे भवन्त सञ्चरिष्यन्ति, चरणौ च भवतामनाविलाविति। इदानी च देहदघ्नेऽपि जले न मरणे कश्चिद् व्यतिकर शेष इति। का तत्र युक्ति?' साधुरेतच्छ्रुत्वा किञ्चित पल यावत् विरराम। बहुशो विचिन्त्य स स्वस्य मूर्धानमुत्थापयामासोवाच च—'किन्न श्रुतवानसि यल्लोकनायको मुहम्मद मुस्तफा (स्वस्त्यस्तु तस्मै सदा) उक्तवानथ—

प्रभुसान्निध्यकालो मे भवतेऽथ कदाचन।
दिवौका देवदूतो वा समकक्षो न मे तदा॥ २॥

न पुनरुक्तवान् "सदेति।" कदाचिज्जबरीलमिकाइलाभ्यामप्यगोचर

پرداختی - و دیگر وقت با جمعی و ریب در ساختی * مشاهدة الابرار بین التجلی و الاستتار - می نماید و می رباید *

بیت

دیدار می نمائی و پرهیز میکنی
بازار خویش و آتش ما تیز میکنی *

شعر

اشاهد من اهوی بغیر وسیلة
فیلحقنی شأن أضل طریقا *
یؤجج نارا ثم یطفی برشة
لذلك ترانی محرقا و غریقا *

مثنوی

یکی پرسید از آن گم کرده فرزند
که ای روشن گهر - پیر خردمند!
ز مصرش بوی پیراهن شنیدی
چرا در چاه کنعانش ندیدی؟
بگفت - احوال ما برق جهانست
دمی پیدا و دیگر دم نهانست *
گهی بر طارم اعلی نشینم
گهی بر پشت پای خود نه بینم *
اگر درویش بر یك حال ماندی
سر دست از دو عالم بر فشاندی *

حکایت ۱۰

در جامع بعلبك کلمهٔ چند از وعظ میگفتم با طائفه افسرده و دل مرده و راه از عالم صورت بمعنی نبرده * دیدم که نفسم در نمی گیرد - و آتشم در هیزم تر اثر نمیکند * دریغ آمدم تربیت ستوران و آئینه داری در

न पर्दाख़्ते व दीगर वक़्त बा जमा व ज़ैनब दर साख़्ते। मुशाहदतु'ल् अबरारे बैन'त्तजल्लियें व'ल् इस्तितारे मी नुमायद व मी रुबायद।

बैत (बहरे मुजारी)

दीदार मी नुमायी ओ परहेज मी कुनी।
बाज़ारे ख़ेश ओ आतिशे मा तेज़ मी कुनी॥

शेर (बहरे तवील)

उशाहिदु मन् अह्वा बिग़ैरि वसीलतिन्।
फ यल्हक़ुनी शानुन् अज़ल्लु तरीक़न्॥
युवज्जिजु नारन् सुम्म युत्फी बि रश्शतिन्।
लि ज़ालिक तरानी मुह्रक़न् व ग़रीक़न्॥

मसनवी (बहरे हज़ज)

यके पुरसीद अज़ाँ गुमकर्दा फ़र्ज़न्द।
कि ऐ रौशन गुहर! पीरे ख़िरदमन्द॥
ज़ि मिसरश् बूए पैराहन शुनीदी।
चिरा दर चाहे किनआनश् न दीदी॥
बिगुफ़्त अहवाले मा बर्क़े जहान'स्त।
दमे पैदा व दीगर दम निहान'स्त॥
गहे बर तारमे आला निशीनम्।
गहे बर पुश्ते पाये ख़ुद नै बीनम्॥
अगर दरवेश बर यक हाल मान्दे।
सरे दस्त अज़ दु आलम बर फ़िशान्दे॥

हिकायत—१०

दर जामिए बालबक कल्माए चन्द अज वाज़ मी गुफ़्तम् बा ताइफ़ाए अफ़सुर्दा व दिलमुर्दा व राह अज़ आलमे सूरत ब मानी न बुर्दा। दीदम् कि नफ़सम् दर न मी गीरद—व आतिशम् दर हैज़मे तर असर न मी कुनद। दरेग़ आमदम् तरबियते सुतूरान् व आईना दारी दर

(वे) जिब्राईल और मीकाइल से भी परे हो जाते थे और दूसरे समय हफ्सा और ज़ैनब से ही सन्तुष्ट रहते थे। साधुओं का चमत्कार व्यक्ताव्यक्त से व्यवहित होता है। दिखाते हैं और छिपाते हैं।'

क्वचिद् हफ्सा जैनबाभ्यामेव सोऽतोषत्।
व्यक्ताव्यक्तव्यवहित दर्शन हि महात्मनाम्।
द्योतन्ते क्वचिदात्मान ह्नुवते च कदाचन ॥ ३ ॥'

बैत

तू दर्शन कराता है और छिप जाता है।
अपनी महिमा और हमारी अग्नि को दीप्त करता है ॥

श्लोक

सन्दर्शयसि चात्मानमन्तर्धि गच्छसि क्वचित्।
युगपत् कान्तता स्वस्य कामाग्नि वर्धयश्च न ॥ ३४ ॥

शेर

मैं देखता हूँ जिसे कि चाहता हूँ विना साधन के।
अत मेरी हालत ऐसी होती है कि जैसे खो गया हूँ रास्ता ॥
(वह) भड़काता है आग फिर बुझाता है फुहार से।
इसलिये (तू) मुझे देखता है झुलसा और भीगा ॥

श्लोक

तमव्यवहित वीक्षे कामये यमहर्निशम्।
भ्रान्तध्वानमिवात्मानमनुपश्यामि सर्वत ॥ ३५ ॥
अग्न्याधान स कुरुते सीकरैश्चोपशाम्यति।
अतो मा प्रेक्षसे प्लुष्ट तथा विप्रुपसिञ्चितम् ॥ ३६ ॥

मसनवी

किसी ने पूछा खोये पुत्र वाले (याकूब) से।
कि हे प्रकाशित कुल वाले! पण्डिता में श्रेष्ठ ॥
तूने मिस्र से उसकी (पुत्र की) कपड़े की गध सूघ ली।
क्यो तू किनआन के कुँए मे उसे नही देख सका ॥
वह बोला—'हमारी अवस्था भौतिक बिजली जैसी है।
जो क्षण में पैदा होती है और दूसरे ही क्षण छिप जाती है ॥
कभी मैं सर्वोच्च स्थान पर बैठता हूँ।
कभी पैर के पिछले भाग को भी स्वय नही देख पाता ॥
यदि साधु एक ही अवस्था में रहे।
तो उसकी अँगुली दोनो लोको से निकल जाय ॥'

गाथा

याकूब नष्टपुत्र च पृष्टवानथ कश्चन।
अहो! ऋषिकुलोत्पन्न! वरेण्य! प्राज्ञसत्तम ॥ ३७ ॥
वासोगन्ध त्वयाऽऽघ्रात मिश्रात्पुत्रस्य चात्मन।
निखातपतित कस्मान्नावेयेथ सुत निजम् ॥ ३८ ॥
उत्तर स ददौ—'तावद्विद्युत्कल्पा स्मृता वयम्।
उत्पद्यते क्षणेऽस्माभि क्षणे च प्रविलीयते ॥ ३९ ॥
क्वचित् सर्वोच्चिमासीन आसन भूयते तत।
क्वचिच् चरणपृष्ठञ्च स्वस्य न ज्ञायते क्वचित् ॥ ४० ॥
सिद्धावस्था हि साधूनामेकरूपा भवेद् यदि।
कराङ्गुलिरततस्तेषा त्रिलोकादतिरिच्यते ॥ ४१ ॥'

कथा—१०

मैं बालबक की जामा मस्जिद में कुछ शब्द उपदेश के रूप में कह रहा था, एक ऐसी (श्रोतृ) मडली से जो रूखी और मुर्दा दिल थी और जो दुनियादारी के रास्ते से परमार्थ मार्ग को नही पकड़े थी। मैंने देखा कि मेरे शब्द काम नही कर रहे हैं और मेरी आग गीले ईंधन पर असर नही कर रही। मुझे खेद था कि जानवरो को शिक्षा दे

आख्यायितम्—१०

अहमेकदा बालबेकस्योपासनामन्दिरे कानिचिद् वाक्यानि उपदेशरूपेण वक्तुमुपक्रमिषम्। श्रावकास्तावद् रूक्षा हृदयहीनाश्च, सासारिक मार्गमेवानुसरन्तोऽध्यात्ममार्ग न विदुश्च। अहमदर्शमथ न मे वचासि प्रभवन्ति, न च दहति मे हुताशनमार्द्रमिन्धनमिति। परिखिन्न आस पशून् शिक्षयन्नन्धान्दर्पणे दर्शयन्निवाह नितराम्। परन्तु

مجلس کوران - و لیکن در معنی باز بود و سلسلهٔ سخن دراز * در معنی این آیت "وَ نَحْنُ اَقْرَبُ اِلَیْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِیدِ" سخن جائی رسیده بود - که می‌گفتم -

قطعه

دوست نزدیکتر از من بمنست
مشکل این است - من از وی دورم *
چه کنم؟ با که توان گفت؟ که او
در کنار من و من مهجورم *

من از شراب این سخن مست و فضلهٔ قدح در دست - که ناگه روندهٔ در کنار مجلس گذر کرد و دور آخر در وی اثر کرد * نعرهٔ چنان زد که دیگران بموافقت او در خروش آمدند - و خامان مجلس در جوش * گفتم - سُبحانَ الله! دوران با خبر در حضور و نزدیکان بی بصر دور *

قطعه

فهم سخن چون نکند مستمع
قوت طبع از متکلم مجوی *
فسحت میدان ارادت بیار
تا بزند مرد سخن گوی گوی *

حکایت ۱۱

شبی در بیابان مکه از بیخوابی پای رفتنم نماند * سر بنهادم و شتربانرا گفتم - دست از من بدار *

قطعه

پای مسکین پیاده چند رود
کز تحمل ستوه شد بختی *
تا شود جسم فربهی لاغر
لاغری مرده باشد از سختی *

گفت - ای برادر! حرم در پیشست و حرامی در پس * اگر رفتی - جان بسلامت بردی - و اگر خفتی - مردی * نشنیدهٔ که گفته اند؟

मजलिसे सूरान्। व लेकिन दरे मअ़ना बाज़ बूद व सिलसिलए सुख़न दराज़। दर मअ़नाए ईं आयत—'व नह्नु अक़्रबु इलैहि मिन् ह़ब्लिल् वरीदि।' सुख़न बजाये रसीदा बूद कि मी गुफ़्तम्—

क़ता (बहरे रमल)

दोस्त नज़दीकतर अज़ मन् ब मन्'स्त।
मुश्किल ईन'स्त कि मन् अज़ वै दूरम्॥
चि कुनम्? बा कि तवाँ गुफ़्त कि ऊ।
दर किनारे मनो मन् महजूरम्॥

मन् अज़ शराबे ईं सुख़न मस्त व फ़ुज़लए क़दह दर दस्त—कि नागाह रविन्दाए दर किनारे मजलिस गुज़र कर्द व दौरे आख़िर दर वै असर कर्द। नाराए चुनाँ ज़द कि दीगराँ ब मुवाफ़क़ते ऊ दर ख़रोश आमदन्द—व ख़ामाने मजलिस दर जोश। गुफ़्तम्—'सुब्हान अल्लाह! दूराने बा ख़बर दर हुज़ूर, व नज़दीकाने बेबसर दूर।'

क़ता (बहरे सरी)

फ़हमे सुख़न चूँ न कुनद मुस्तमिअ़।
क़ुव्वते तबअ़ अज़ मुतकल्लिम मजोय॥
फ़ुस्हते मैदाने इरादत बियार।
ता बिज़नद मर्दे सुख़नगोये गोय॥

हिकायत—११

शबे दर बयाबाने मक्का अज़ बेख़्वाबी पाय रफ़्तनम् न मान्द। सर बनिहादम् व शुतुर्बान् रा गुफ़्तम्—'दस्त अज़ मन् बिदार।'

क़ता (बहरे ख़फ़ीफ़)

पाये मिस्कीं पियादा चन्द रवद।
कज़ तहम्मुल सुतूह शुद बुख़्ती॥
ता शवद जिस्मे फ़र्बिहे लाग़र।
लाग़रे मुर्दा बाशद अज़ सख़्ती॥

गुफ़्त—'ऐ बिरादर हरम दर पेश'स्तो हरामी दर पस। अगर रफ़्ती—जान ब सलामत बुर्दी—व अगर ख़ुफ़्ती—मुर्दी। न शुनीदई कि गुफ़्ता अन्द—

रहा हूँ और अन्धो की सभा मे दर्पण दिखा रहा हूँ। लेकिन मेरे परमार्थ ज्ञान का द्वार खुल गया था और वाणी का क्रम दीर्घ हो गया था। इस आयत की व्याख्या में—'हम उसके बहुत निकट है—फड़कती हुई नस की अपेक्षा।' व्याख्यान यहाँ तक पहुँचा था कि मैंने कहा—

कता

मित्र, मेरी अपेक्षा मुझ से अधिक निकट है।
मुश्किल यही है कि मैं उससे दूर हूँ।।
क्या करूँ! किससे कहूँ कि वह।
मेरे आलिंगन मे है और मैं उससे वियुक्त हूँ।।

मैं इस सुभाषित की शराब से मस्त था और प्याले की तलछट ही मेरे हाथ में थी—कि सहसा एक रास्ता चलतू सभा के निकट से गुजरा और अन्तिम अवस्था (समाधि) ने उसे अभिभूत कर लिया। उसने ऐसा नारा लगाया कि दूसरे भी उसके अनुकरण में चिल्लाने लगे—और सभा के मूर्ख लोग जोश में आ गये। मैंने कहा—'सुभान अल्लाह! दूर के समझदार सामने है और पास के मूर्ख दूर है।'

कता

सुभाषित की समझ जब नही करता श्रोता।
स्वाभाविक उत्साह की व्याख्याता से आशा मत कर।।
बुद्धि को संकल्प क्षेत्र में ला।
ताकि वक्ता व्याख्यान की गेंद को गतिशील रखे।।

कथा—११

एक रात को मक्का के निर्जन क्षेत्र में न सो पाने के कारण मैं चलने में असमर्थ हो गया। मैंने सिर टेक दिया और ऊँट वाले से कहा—'मुझ से हाथ उठा ला।'

कता

गरीब का पैर पैदल कितना चले।
जब कि भार के कारण ऊँट भी थक गया हो।।
जब तक होगी मोटे की देह दुबली।
तब तक दुबला मर जायगा सख्ती से।।

उसने कहा—'हे भाई! मक्का सामने है, और डाकू पीछे। यदि चलेगा तो प्राण सुरक्षित ले जायगा और यदि सो गया तो मारा जायगा। क्या तूने नही सुना कि कह गये हैं—

मम परमार्थज्ञानद्वारमपावृतमवृतत्, वाग्विस्तरश्च प्रकीर्णः। धर्मसूक्त मेनद् व्याख्यायन्नहमवाचमथ—'धमन्या रक्तवाहिन्या नेदीयान् विद्यते स न ।।४।।' एनद् वाक्यमुदाहरता मयोक्तमथ—

पदम्

मम मित्र तु मत्तोऽपि नेदीयो विद्यते मम।
अहमेव ततो दूरमिति सन्तापकारणम् ।।४२।।
किं करोमि नु केनाह कथयामि कथा निजाम्।
मामाश्लिष्ट स वर्तेत चाहमेव वियुक्तवान् ।।४३।।

अहमेव सुभाषितमदेनामद निपीतशेषप्राय मधुपात्रञ्चैव करे दधान आसम्। अकस्मात् कश्चित् पान्थ श्रोतृमण्डलादाराद् गच्छस्तत्र प्राप्त श्रुत्वा चैनत् तुरीयावस्थाया गत। स तथाऽनन्ददश तमनुसरन्त सर्वे क्रोष्टुमारप्सत, श्रावकाधमाश्चोद्दीपिता। अहमवोचम्—'प्रभोर्माया गरीयसी!

दविष्ठा अप्यभिज्ञाश्च नेदिष्ठा आसते मम।
नेदिष्ठा येऽनभिज्ञास्ते दविष्ठा सर्वतो मम।।५।।

पदम्

यदा हि सूक्तसौन्दर्य श्रावको नावगच्छति।
तदा हि वक्तुरुत्साह मा ध्यासीष्ठा प्रवर्त्स्यति।।४४।।
शुश्रूषया च ध्यानेन वक्तार शृणु श्रद्धया।
यतो वाक्कन्दुक वक्ता गतिशील समाचरेत्।।४५।।

आख्यायितम्—११

एकदा शर्वर्या मक्कामरुभूमौ उन्निद्रतयाऽह गन्तुमशक्तो जात। अह स्वस्य मूर्धान क्षितितले धृत्वोष्ट्रवाहमवोचम्—'हस्त मत्तोऽपसार—मा विसृजेति।'

पदम्

कियद्दूर पदातिस्तु पद्भ्या सयातुमर्हति।
गाम गाम परिश्रान्तिमपि याति क्रमेलक ।।४६।।
स्थवीयान्स्तु पुमान् यावल्लघनेन कृशायते।
अशीयान् पुरपस्तावत् पञ्चत्व भजते भृशम् ।।४७।।

सोऽवदत्—'हे भ्रात!
समक्ष मन्दिर चात पश्चात् तस्करमण्डलम्।
चरन् प्राणास्तु धातासे स्वापशीलो मरिष्यसि।।६।।
किं न श्रुतवानसि यथाहु —

بیت

خوشست زیر مغیلان براه بادیه خفت
شب رحیل - ولی ترک جان باید گفت *

حکایت ۱۲

پارسائی‌را دیدم - که بر کنارهٔ دریا نشسته بود و زخم پلنگ داشت - و هیچ دارو به نمیشد - و مدتها در آن رنجوری شکر خدای عز و جل گفتی * پرسیدندش - که شکر چه می‌گذاری؟ گفت - شکر آنکه - الحمدُ لله! بمصیبتی گرفتارم - نه بمعصیتی *

قطعه

گر مرا زار بکشتن دهد آن یار عزیز
تا نگوئی که در آن دم غم جانم باشد *
گویم - از بندهٔ مسکین چه گنه صادر شد
کو دل آزرده شد از من؟ غم آنم باشد *

حکایت ۱۳

درویشی‌را ضرورتی پیش آمد - گلیمی از خانهٔ یاری بدزدید * حاکم فرمود - که دستش ببرند * صاحب گلیم شفاعت کرد - که من اورا بحل کردم * حاکم گفت - شفاعت تو حد شرع فرو نگذارم * گفت - راست فرمودی - و لیکن هر که از مال وقف چیزی بدزدد قطعش لازم نیاید - که اَلْوَقْفُ لا یُمْلَكُ - و هر چه در ملك درویشانست وقف محتاجانست * حاکم‌را این سخن استوار آمد - دست از وی بداشت و ملامتش کرد - که جهان بر تو تنگ آمده بود - که دزدی نکردی الا از خانهٔ چنین یاری! گفت - ای خداوند! نشنیدهٔ که گفته اند؟ خانهٔ دوستان بروب - و در دشمنان مکوب *

بیت

چون فرو مانی بسختی - تن بعجز اندر مده
دشمنانرا پوست برکن - دوستانرا پوستین *

बैत (बहरे मुज्तश्)

खुश'स्त ज़ेरे मुग़ीलाँ ब राहे बादीया खुफ़्त।
शबे रहील—वले तर्के जाँ बिबायद गुफ़्त॥'

हिकायत—१२

पारसाए रा दीदम् कि बर कनाराए दरिया निशस्ता बूद। व ज़ख़्मे पलंग दाश्त—व ब हेच दारू बिह न मी शुद व मुद्दतहाए दराँ रन्जूरी शुक्रे ख़ुदाय अज़्ज़ व जल्ल गुफ़्ते। पुर्सीदन्दश् कि शुक्र चि मी गुज़ारी?' गुफ़्त—'शुक्र आँ कि अल्हम्दु लिल्लाहि! ब मुसीबते गिरिफ़्तारम्—नै ब मअसीयते।

क़ता (बहरे रमल)

गर मरा ज़ार ब कुश्तन् दिहद आँ यारे अज़ीज़।
ता न गोयी कि दर आँ दम ग़मे जानम् बाशद॥
गोयम्—अज़ बन्दाए मिस्कीं चि गुनह सादिर शुद।
कू दिल आज़ुर्दा शुद अज़ मन्? ग़मे आनम् बाशद॥

हिकायत—१३

दरवेशे रा ज़रूरते पेश आमद—गिलीमे अज़ ख़ानाए यारे बदुज़्दीद। हाकिम फ़रमूद कि दस्तश् बबुरन्द। साहिबे गिलीम शफ़ाअत कर्द—कि मन ऊरा बिहिल कर्दम्। हाकिम गुफ़्त—'ब शफ़ाअते तो हद्दे शरअ फ़िरो न गुज़ारम्।' गुफ़्त—'रास्त फ़रमूदी—व लेकिन हर कि अज़ माले वक़्फ़ चीज़े बिदुज़्दद क़तअश् लाज़िम नयायद कि—'अल् वक़्फ़ु ला युम्लकु,' व हर चि दर मिल्के दरवेशानस्त वक़्फ़े मोहताजानस्त।' हाकिम रा ईं सुख़न उस्तुवार आमद—दस्त अज़ वै बिदाश्त व मलामतश् कर्द कि जहाँ बर तो तंग आमदा बूद कि दुज़्दी न कर्दी इल्ला अज़ ख़ानाए चुनीं यारे। गुफ़्त—'ऐ ख़ुदावन्द! न शुनीदई कि गुफ़्ता अन्द? "ख़ानाए दोस्ताँ बिरोब। व दरे दुश्मनाँ मकोब"॥'

बैत (बहरे रमल)

चूँ फ़िरोमानी—ब सख़्ती तन ब इज्ज़ अन्दर मदिह।
दुश्मनाँ रा पोस्त बर कन् दोस्ताँ रा पोस्तीन्॥

बैत

अच्छा है बबूलों के नीचे मरुमार्ग में सोना।
कूच की रात को—पर जान की आशा छोड़ देनी चाहिये ॥'

श्लोक

छायास्वापो बबूलाना मरुमार्गे सुखावह ।
गमनात्प्राच सा निद्रा प्राणपण्येन चाप्यते ॥ ६८ ॥'

कथा—१२

मैंने एक महात्मा को देखा जो कि एक नदी के किनारे बैठा था और उसके शेर का घाव था और वह किसी दवा से ठीक नहीं होता था। बहुत समय तक उस बीमारी में वह भगवान् को धन्यवाद देता रहा। लोगों ने उससे पूछा कि—'धन्यवाद क्यों देता रहता है?' उसने कहा—'धन्यवाद यह कि प्रशंसा है प्रभु के लिये! एक कष्ट में पड़ा हूँ, किसी पाप में नहीं।'

आख्यायितम्—१२

अहमेकदा कञ्चिन्महात्मानमदर्श नदीतटमधिष्ठितम्। स सिंहकृतक्षतमधत्ताभैषज्यमसाध्यञ्च। स बहुकालपर्यन्त स्वस्य रुग्णावस्थाया—हे प्रभो! धन्योऽसि धन्योऽसीति ब्रुवाण कालमतिवाहयन् स्थित। लोकास्त पप्रच्छुरय 'कथमय धन्यवाद?' सोऽवदत्—'तदनेन हेतुनाऽथ—

रोगेण पीडितश्चास्मि न च पापेन केनचित।
अतस्तु धन्यवादार्ह प्रशस्य केवल प्रभु ॥ ७ ॥

क़ता

यदि मुझ अभागे को मरवा दे वह प्यारा मित्र।
तो मत कहना कि उस समय मुझे जान का गम था ॥
मैं कहूँगा कि इस अकिंचन दास से क्या अपराध हुआ।
कि वह मुझ से खिन्न चित्त हुआ—मुझे यही गम है ॥

पदम्

यदि मा निघृण भूत्वा हन्यात् मित्र प्रिय मम।
न वाच्योऽस्मि त्वया तर्हि मृत्युशोकोऽभवन्मम ॥ ४६ ॥
प्रवातास्म्युत दासेन कृतम् किं विप्रिय मया।
खिन्नचित्तो यतो जातो हत एवास्मि चिन्तित ॥ ७० ॥'

कथा—१३

एक साधु को आवश्यकता आ पड़ी—(उसने) एक कम्बल किसी मित्र के घर से चुरा लिया। हाकिम ने आज्ञा दी कि उसके हाथ काट दिये जायें। कम्बल के मालिक ने उसकी सिफारिश की कि मैंने उसको क्षमा कर दिया। हाकिम ने कहा—'तेरी सिफारिश से मैं शास्त्र का उल्लघन नहीं करूँगा।' वह बोला—'तू ठीक कहता है, किन्तु जो वक्फ के माल में से कुछ चुराता है उसके हाथ काटना अनिवार्य नहीं है—क्योंकि 'वक्फ की गयी चीज़ नहीं है मिल्कियत किसी की।' और हर चीज़ जो कि साधुओं की सम्पत्ति में है किया या वक्फ है।' हाकिम को यह बात ठीक लगी—उसे छोड़ दिया और उसकी भर्त्सना की कि 'दुनिया तेरे लिये छोटी पड़ गयी थी कि तूने ऐसे मित्र के घर के अलावा (कहीं और) चोरी नहीं की।' उसने कहा—'हे स्वामी! क्या तूने नहीं सुना कि कह गये हैं?—"दोस्तों का घर लूट ले पर दुश्मनों का दरवाजा मत खटखटा"।'

आख्यायितम्—१३

कश्चित् साधुरर्थाभावेन पीडितो बभूव। स स्वस्य मित्रस्य वेश्मन कम्बलमचूचुरत्। न्यायपालस्तस्य कर छेत्तुमुपादिशत्। कम्बलवानवदनुकम्पयाथाहमेन क्षमे। न्यायाधीशो ब्रूते—'त्वदीयया-नुकम्पया नाह शास्त्रविधानमुल्लघितास्मि।' सोऽवदत्—'सत्य-वादोऽत्रभवान्। परमीश्वरार्पित वस्तु यो मुष्णाति न तस्य पाणिच्छेदोऽऽवश्यकम्। यत —

'न तस्याधिपति कश्चिद् यद्धन हीश्वरार्पितम्।
यच्चापि साधुसत्त्व दीनेभ्यो विहित हि तत् ॥ ८ ॥'

न्यायाधीशस्येदमभिमत बभूव, स त मुमोच भर्त्सयन्नुवाचाथ—'मित्र मुष्णासि हा पाप! इद ते सवृत जगत्।' स ब्रूते—'हे स्वामिन्! किं न श्रुतवानसि यथाहु —"मित्राणागाहरेद् वित्त न द्वार प्रहरेदरे" ॥ ६ ॥'

बैत

जब तू विपत्ति से ग्रस्त हो तो निराश मत हो।
दुश्मनों की खाल खींच ले और दोस्तों का कोट ॥

श्लोक

यदाऽऽपत्तिविपन्न स्यामा भूर्नैराश्यविक्लव ।
शत्रून् कृष्टत्वचो धेहि बान्धवान् कृष्टवासस ॥ ७१ ॥

حکایت ۱۴

پادشاهی پارسائی‌را پرسید - که هیچ از ما یاد می آید؟ گفت - بلی - هر گه که خدای عز و جل‌را فراموش میکنم یادت می آرم *

بیت

هر سو دود آن کش ز در خویش براند
و آنرا که بخواند بدر کس نه دواند *

حکایت ۱۵

یکی از صالحان بخواب دید پادشاهی‌را در بهشت و پارسائی‌را در دوزخ * پرسید که موجب درجات این چیست؟ و سبب درکات آن چه؟ که من بخلاف این همی پنداشتم * ندا آمد - که این پادشاه بارادت درویشان در بهشتست - و این پارسا بتقرب پادشاهان در دوزخ *

قطعه

دلقت بچه کار آید؟ و تسبیح و مرقع؟
خودرا ز عملهای نکوهیده بری دار *
حاجت بکلاه برکی داشتنت نیست
درویش صفت باش و کلاه تتری دار *

حکایت ۱٦

درویشی سر و پا برهنه با کاروان حجاز از کوفه بدر آمد و همراه ما شد - نظر کردم معلومی نداشت * خرامان همی‌رفت و میگفت -

قطعه

نه بر اشتری سوارم - نه چو اشتر زیر بارم
نه خداوند رعیت - نه غلام شهریارم *
غم موجود و پریشانی معدوم ندارم
نفسی میزنم آسوده و عمری بسر آرم *

اشتر سواری گفتش - "ای درویش! کجا میروی؟ باز گرد - که بسختی بمیری" * نشنید - و قدم در بیابان

हिकायत—१४

पादशाहे पारसाए रा पुरसीद—कि हेच अज मा याद मी आयद? गुफ्त—'बले हर गह कि खुदाय अज्ज़ व जल्ल रा फ़रामूश मी कुनम् यादत मी आरम्।'

बैत (बहरे हजज्-मुसम्मन्)

हर सू दवद आँ किश् ज़ि दरे खेश बिरानद।
व् आँरा कि बिख्वानद ब दरे कस नै दवानद॥

हिकायत—१५

यके अज सालिहान् ब ख्वाब दीद पादशाहे रा दर बिहिश्त व पारसाए रा दर दोज़ख़। पुरसीद कि मूजिबे दरजाते ईं चीस्त? व सबबे दरकाते आँ चिह? कि मन् ब ख़िलाफ़े ईं हमी पिन्दाश्तम्। निदा आमद—कि ईं पादशाह ब इरादते दरवेशान् दर बिहिश्त'स्त व ईं पारसा ब तक़र्रुबे पादशाहान् दर दोज़ख़।

क़ता (बहरे हजज्-मुसम्मन्)

दलक़त ब चि कार आयद ओ तस्बीह ओ मुरक़्क़ा?
ख़ुद रा ज़ि अमल हाये निकूहीदा बरी दार॥
हाजत ब कुलाहे बर्की दाश्तनत नीस्त।
दरवेश सिफ़त बाश ओ कुलाहे ततरी दार॥

हिकायत—१६

दरवेशे सर ओ पा बरहना बा कारवाने हिजाज़ अज कूफ़ा बदर आमद व हमराहे मा शुद। नज़र करदम्—मालूमे न दाश्त। ख़रामान् हमी रफ़्त व मी गुफ़्त—

क़ता (बहरे रमल)

नै बर उश्तुरे सवारम् नै चु उश्तुर ज़ेरे बारम्।
नै ख़ुदावन्दे रैयत नै गुलामे शहरयारम्॥
गमे मौजूद व परेशानीए मादूम न दारम्।
नफ़से मी ज़नम् आसूदा आ उम्र बसर आरम्॥

उश्तर सवारे गुफ़्तश्—'ऐ दरवेश! कुजा मी रवी? बाज़ गर्द कि ब सख़्ती बिमीरी।' न शुनीद। व क़दम दर बयाबान्

कथा—१४

एक राजा ने किसी सन्त से पूछा कि—'कभी तुझे हममें से किसी की याद आती है?' उसने कहा—'जब भी मैं परमात्मा को भूल जाता हूं तब याद कर लेता हूं।'

आख्यायितम्—१४

कश्चिद् राजा कञ्चिन्महात्मानं पप्रच्छ—'अपि स्मरसि चास्मासु जनमेकं सदाचन।' सोऽवदत्—'विस्मरामि यदा हीश तदा त्वां नस्मराम्यहम्॥ १०॥'

बैत

हर तरफ दौड़ता है वह जिसे कि 'वह' अपने द्वार से निकाल देता है।
और जिसे कि 'वह' बुलाता है किसी के द्वार नहीं जाता॥

श्लोक

प्रभुद्वारबहिर्भूतो द्वारं द्वारं प्रधावति।
यमाह्वयति विश्वेशो द्वारं याति न कस्यचित्॥ ७२॥

कथा—१५

एक साधु ने स्वप्न में देखा राजा को स्वर्ग में और एक महात्मा को नरक में। उसने पूछा कि—'इसकी (राजा की) उन्नति का क्या कारण है और उसकी अवनति का क्या है? क्योंकि मैं तो इससे उलटा सोचता था।' आकाशवाणी हुई—'कि यह राजा साधुओं के प्रति प्रवृत्ति के कारण स्वर्ग में है, और यह महात्मा राजाओं के सान्निध्य के कारण नरक में।'

आख्यायितम्—१५

केनचित् साधुना स्वप्ने दृष्टमथ राजानं स्वर्गे चैव निरये च तपस्विनम्। स जिज्ञासितवान्—'अस्योन्नतौ तस्यावनतौ च को हेतुः? अहं तु अतो विपरीतममंसि।' आकाशवाणी तेन श्रुता—'अयं राजा तपस्विनः प्रत्यभिमुखत्वात् स्वर्गगोऽसौ तपस्वी च राज्ञां सान्निध्या-दधोलोकं प्रपन्न इति।'

क़ता

तेरी गुदड़ी और माला और मुनिवेश किस काम आयेगा।
अपने आपको हीन कर्मों से मुक्त रख॥
तुझे बर्की टोपी पहनने की जरूरत नहीं है।
साधुवृत्ति वाला हो और भले ही तातारी टोपी पहन॥

पदम्

जीर्णया कन्थया किं वा मालया मुनिवाससा।
आत्मानं नीचकृत्यैश्च विसलग्नं विधीयताम्॥ ७३॥
मुनीनां हि शिरस्त्राणं धारयेरथवा न वा।
मुनिवृत्तिमना भूत्वा तातारोष्णीषकं ध्रिया॥ ७४॥

कथा—१६

एक साधु नंगे सिर और नंगे पैर हिजाज के कारवां के साथ कूफा से बाहर आया और हमारे साथ हो गया। मैंने देखा कि उसके पास एक पैसा भी न था। वह मजे से चलता जाता और कहता जाता—

आख्यायितम्—१६

कश्चित् साधुर्निरुष्णीषो निरुपानच्च हिजाजाभिमुखेन सार्थवाहेन साकं कूफानगरद्वारस्यास्माकं सह यात्रिकं समभवत्। अहमद्राक्षं स पणमपि नाधात्। स [illegible]—

क़ता

न मैं ऊँट पर सवार हूँ न ऊँट की तरह बोझ के नीचे हूँ।
न प्रजा का स्वामी हूँ न राजा का सेवक हूँ॥
वर्तमान की चिन्ता और अतीत की परेशानी नहीं रखता।
सुख से साँस लेता हूँ और जीवनयापन करता हूँ॥

पदम्

उष्ट्रारोही न चैवास्मि उष्ट्रभारं दधे न च।
प्रजानाञ्च प्रभुर्नास्मि न च दासोऽस्मि भूभुजाम्॥ ७५॥
वर्तमानस्य दुश्चिन्ता शोकोऽतीतस्य वा न मे।
सुखं श्वसामि निर्द्वन्द्वो जीवयात्रां सुखं नये॥ ७६॥

एक ऊँट सवार ने उससे कहा—'अरे साधु! कहाँ जा रहा है? वापिस हो जाओ क्योंकि कठिनाई से मर जाओगे।' उसने

कश्चिदुष्ट्रारोही तमुवाच—'हे साधो! क्व गच्छसि? प्रति-निवर्तस्व, अध्वक्लेशान्मरिष्यसि।' स न शुश्राव चरणं च गतो

نهاد و بروت * چون بمحلهٔ بنی محمود برسیدیم - توانگر اهل مرا رسید * درویش سالیش فرار آمد و گفت ''ما بسختی بمردیم و تو بر سختی مردی'' *

بیت

شخصی همه شب بر سر بیمار گریست
چون روز شد آن بمرد و بیمار بزیست *

قطعه

ای بسا اسب تیز رو که بماند
که خر لنگ جان بمنزل برد *
بس که در خاك تندرستانرا
دفن کردند و زخم خورده نمرد *

حکایت ۱۷

عابدی جاهل‌را پادشاهی طلب کرد * عابد اندیشید که داروئی خورم تا ضعیف شوم - مگر حسن ظنی که در حق من دارد زیادت شود * آورده اند که داروی خورد - زهر قاتل بود - بمرد *

قطعه

آن - که چون پسته دیدمش - همه مغز
پوست بر پوست بود همچو پیاز *
پارسایان روی در مخلوق
پشت بر قبله میکنند نماز *

مثنوی

تا راعد عمرو بکر و زیدی
اخلاص طلب مکن - که شیدی *
چون بنده خدای خویش خواند
باید که بجز خدا نداند *

حکایت ۱۸

کاروانی‌را در زمین یونان بزدند و نعمت بیقیاس بردند * بازرگانان گریه و زاری آغاز نهادند - خدا و پیغمبررا شفیع آوردند - سود نداشت *

निहाद व बिरुत। चूँ ब महल्लए बनी महमूद बिरसीदेम्—तवांगर र अहल मरा रसीद। दरवेश सालीश फ़रार आमद व गुफ़्त—'मा ब सख़्ती ब मुर्देम् व तो बर सख़्ती मुर्दी।'

बैत (बहरे हजज़्) शैर सा मुस

शख़्से हमा शब बर सरे बीमार गिरीस्त।
चू रोज़ शुद आँ बुमुर्द ओ बीमार बिज़ीस्त॥

क़ता (बहरे ख़फ़ीफ़)

ऐ! बसा अस्पे तेज़ रौ कि बिमान्द।
कि ख़रे लंग जाँ ब मंज़िल बुर्द॥
बस कि दर ख़ाक तन्दुरुस्तां रा।
दफ़्न करदन्दो ज़ख़्म ख़ुर्दा न मुर्द॥

हिकायत—१७

आबिद जाहिल रा पादशाह तलब कर्द। आबिद अन्देशीद कि दारूए ख़ुरम् ता ज़ईफ़ शवम्। मगर हुस्ने ज़न्ने कि दर हक़्के मन दारद ज़ियादत शवद। आवुर्दा अन्द कि दारूए ख़ुर्द—ज़हरे क़ातिल बूद—बुमुर्द।

क़ता (बहरे ख़फ़ीफ़)

आँ कि चूँ पिस्ता दीदमश् हमा मग्ज़।
पोस्त बर पोस्त बूद हम चु पियाज़॥
पारसायाने रूए दर मख़लूक़।
पुश्त बर क़िब्ला मी कुनन्द नमाज़॥

मसनवी (बहरे हज़ज़्-मुसद्दस)

ता ज़ाहिदे अम्र ओ, बक्र ओ, ज़ैदी।
इख़्लास तलब मकुन कि शैदी॥
चू बन्दा ख़ुदाये ख़ेश ख़्वानद।
बायद कि बजुज़ ख़ुदा न दानद॥

हिकायत—१८

कारवाने रा दर ज़मीने यूनान बिज़दन्द व निअमते बेक़ियास बुर्दन्द। बाज़रगानान् गिरिया व ज़ारी आग़ाज़ निहादन्द—ख़ुदा व पैग़म्बर रा शफ़ीअ आवुर्दन्द—सूद न दाश्त।

न सुना और निर्जन मे पैर रख दिया। जब हमलोग बनी महमूद के नख्ल पर पहुँचे तो धनी को मौत ने आ घेरा। साधु उसके सिरहाने आया और बोला—'हम कठिनाई से नही मरे और तू ऊँट के ऊपर मर गया।'

बैत

एक आदमी सारी रात बीमार के सिरहाने रोया।
जब दिन हुआ, वह मर गया और बीमार जी पडा॥

कता

अरे! बहुतसे वेगवान् घोडे रह गये।
और लगडे गधे अपनी जान मजिल तक ले गये॥
बहुतसे तन्दुरुस्त लोग धरती मे।
दबा दिये गये है, और घायल नही मरे॥

कथा—१७

एक मूर्ख साधु को राजा ने बुलाया। साधु ने सोचा कि कोई दवा खा लूं ताकि निबल लगू—शायद अच्छी राय जो कि मेरे लिये रखता है ज्यादा हो जाय। कहते है (उसने) जो दवा खाई वह घातक विष था, मर गया।

कता

वह जिसको मैने पिस्ता देखा (समझा)—सारा गूदा।
वह छिलके पर छिलका निकला जैसे प्याज॥
वे महात्मा लोग जो दुनिया की तरफ मुंह करते है।
(वे मानो) काबा की तरफ पीठ करके नमाज पढते है॥

मसनवी

जब तक तू अन्न-भक्ष और पीनेवाला है।
(तब तक) मुक्ति की आशा मत कर क्योकि तू धोखेबाज है॥
जब सेवक अपने प्रभु को पुकारे।
तो चाहिये कि सिवा प्रभु के कुछ न जाने॥

कथा—१८

एक कारवॉ को यूनान की जमीन पर डाकुओ ने लूटा और अपार धन ले गये। व्यापारियो ने रोना पीटना शुरू किया। ईश्वर और पैगम्बर का वास्ता दिया (को सिफारिश के लिये लाये—शब्दार्थ) कोई लाभ नही हुआ।

न्यवात्। यदा वय महमूदवशस्य सरकुञ्जमागाम, उष्ट्रारोही मुमूर्षुरभूत्। स साधुस्तमनु प्राप्यावोचत्—'वय नागृणमहि गतान्ता उष्ट्रारूढोऽपि त्व मृत।'

श्लोक

कश्चिदाभ्युदयाद् दोषा ररोदोपातुर क्वचित्।
दिनोदये मृत स्वस्थो मुमूर्षु स्वस्थता गत॥५७॥

पदम्

बहवो वेगिनश्चाश्वा मध्याध्वनि हतास्तथा।
यात्रा सम्पादिता पृष्ठु पङ्गुलेन खरेण च॥५८॥
पृथिव्या हि जना स्वस्था पिहिता शेरते खलु।
तथा गतासव प्राया रक्षिता क्षतविकलवा॥५९॥

आख्यायितम्—१७

कश्चिन्मूढ तपस्वी केनचिद्राज्ञाऽऽकारित। साधुश्चिन्तयामास कथ किञ्चिदौषध भक्षयेय येन कृश प्रतीया, यतो मे सम्मानो वृद्धि यायात्। श्रूयतेऽथ यदौषध तेन गृहीत तद् घातक विषमासीत्। तद् भुक्त्वा स ममार।

पदम्

पिस्ताफलमिवादर्श यच्च मज्जामय समम्।
पलाण्डुमिव तल्लेभे सर्वथा शल्कसवृतम्॥६०॥
ससाराभिमुखा ये स्यु साधुवेशविडम्बिन।
वन्दनायतन पृष्ठ दत्त्वा प्रभुमुपासते॥६१॥

गाथा

यावत् करोषि भोजन यावत् त्वमसि भक्षितासि।
प्रवञ्चकोऽसि दण्डार्हो न तावन्मुक्तिमर्हसि॥६२॥
दासभावेन विश्वेश यस्तु सेवितुमिच्छति।
ऋते विश्वेश्वरात् कञ्चिन्नावेयादिति साम्प्रतम्॥६३॥

आख्यायितम्—१८

कश्चित् सार्थवाहो यवनदेशे दस्युभिर्लुण्ठित, अपार च धन ततो हृतमिति। वणिज क्रोष्टुमारेभिरे। परमात्मने पैगम्बराय च रोषु न च कश्चित् फलोदय।

بیت

چو پیروز شد دزد تیره روان
چه غم دارد از گریهٔ کاروان؟

बैत (बहरे मुतक़ारिब)

चु पीरोज़ शुद दुज़्दे तीरा रवां।
चि ग़म दारद अज़ गिरियाए कारवां।।

لقمان حکیم در آن کاروان بود * یکی از کاروانیان گفتش - کلمهٔ چند از حکمت و موعظت با ایشان بگوی - مگر از مال ما دست دارند - دریغ باشد که چندین نعمت ضائع شود * لقمان گفت - دریغ باشد کلمهٔ حکمت با ایشان گفتن *

लुक़मान हकीम दर आं कारवां बूद। यके अज़ कारवानियान् गुफ़्तश्—'कलमाए चन्द अज़ हिकमत व मौइज़त बा ईशान् बिगोय। मगर अज़ माले मा दस्त दारन्द। दरेग़ बाशद कि चन्दीं निअमत ज़ाया शवद।' लुक़मान गुफ़्त—'दरेग़ बाशद कलमाए हिकमत बा ऐशान् गुफ़्तन्।'

قطعه

آهنی را - که موریانه بخورد
نتوان برد ازو بصیقل زنگ *
با سیه دل چه سود گفتن وعظ؟
نرود میخ آهنین در سنگ -

कता (बहरे ख़फ़ीफ़)

आहनी रा कि मोरियाना बुख़ुर्द।
न तवां बुर्द अज़ू ब सैक़ल ज़ंग।।
बा सियह दिल चि सूद गुफ़्तने वाज़।
न रवद मेख़े आहनी दर संग।।

قطعه

بروزگار سلامت شکستگان دریاب
که جبر خاطر مسکین بلا بگرداند
چو سائل از تو بزاری طلب کند چیزی
بده - و گرنه ستمگر بزور بستاند *

क़ता (बहरे मुज्तस्)

ब रोज़गारे सलामत शिकस्तगां दरयाब।
कि जब्रे ख़ातिरे मिसकीं बला ब गर्दानद।।
चु साइल अज़ तो ब ज़ारी तलब कुनद चीज़े।
बिदे वगरना सितमगर ब ज़ोर बिसितानद।।

حکایت ۱۹

چندانکه مرا شیخ اجل ابو الفرج شمس الدین بن جوزی (رحمةُ الله علیه!) بترک سماع فرمودی - و بخلوت و عزلت اشارت کردی - عنفوان شبابم غالب آمدی و هوا و هوس طالب * ناچار - بخلاف رای مربی - قدمی چند برفتمی و از سماع و مخالطت درویشان حظی بر گرفتمی - و چون نصیحت شیخم یاد آمدی - گفتمی -

हिकायत—१९

चन्दां कि मरा शेख़े अजल्ल अबुल'फ़रज शम्सु'द्दीन बिन जौज़ी (रहमतु'ल्लाह अलैहि) ब तर्के समाअ फ़रमूदे व ब ख़ल्वत व उज़लत इशारत कर्दे—उनफ़ुवाने शबाबम् ग़ालिब आमदे व हवा व हवस तालिब। नाचार ब ख़िलाफ़े राये मुरब्बी—क़दमे चन्द बिरफ़्तमे व अज़ समाअ व मुख़ालतते दरवेशान् हज़्ज़े बर गिरिफ़्तमे—व चू नसीहते शैख़म् याद आमदे—गुफ़्तमे—

بیت

قاضی - ار با ما نشیند - بر فشاند دست را
محتسب - گر می خورد - معذور دارد مست را *

बैत (बहरे रमल)

क़ाज़ी अर बा मा नशीनद बर फ़िशानद दस्त रा।
मुहतसिब गर मै ख़ुरद मअज़ूर दारद मस्त रा।।

تا شبی بمجمع قومی برسیدم و در آن میان مطربی دیدم -

ता शबे ब मज्माए क़ौमे बिरसीदम् व दर आं मियान् मुतरिबे दीदम्।

बैत

जब बलवान् हों काले दिल का डाकू।
क्या चिन्ता करता है कारवाँ के रोने की।।

लुकमान पण्डित भी उस कारवाँ में था। कारवाँ वालों में से एक ने उससे कहा—'पण्डिताई की कुछ बात इनसे कह शायद हमारे माल पर हाथ न डालें। अफसोस होगा कि इतनी सम्पत्ति नष्ट हो जाय।' लुकमान ने कहा—'अफसोस होगा पण्डिताई की बातें इनसे कहना।'

श्लोक

मलीनहृदयो दस्युर्यदा स्याद् बलावरार।
हा हेति क्रोशता पुरा का तस्य परिवेदना।।६४।।

लोकमानो महाप्राज्ञोऽपि तत्र सार्थवाह आसीत्। सार्थवाहानामेकतमस्तमुवाच—'किञ्चित् पाण्डित्यपुरस्सरमेनान् ब्रूहि यदेते नो द्रव्यापहरणाद् विरता भवेयु। बत महत्कष्ट चेदेतावती धनराशिर्नंक्ष्यति।' लोकमानोऽवदत्—'बत महत्कष्ट चेत् किञ्चित् पाण्डित्यपुरस्सरमेनान् ब्रवीमि।'

क़ता

जिस लोहे को ज़ग ने खा लिया है।
नही छुडा सकते उसकी जग माँजने से।।
काले दिल वाले को उपदेश देने से क्या लाभ।
नही घुसती लोहे की कील पत्थर मे।।

पदम्

लोहभक्षेण किट्टेन सङ्क्रान्त स्याद् यदा ह्यय।
न माजनेन ससृष्ट किट्टमस्य व्यपोहति।।६५।।
किम्फल खलु पापानामुपदेशनिवेदनम्।
न च पापाणभित्तौ हि लोहकील प्रविश्यते।।६६।।

कता

अच्छे दिनो में हारे हुओं को याद रख।
कि गरीबों को सहायता विपत्ति को रोकती है।।
जब प्रार्थी तुझ से कोई चीज़ रोकर मागे।
दे दे अन्यथा अत्याचारी शक्ति से ले लेगा।।

पदम्

सम्प्राप्ते सुदिने दिष्ट्या विपत्तिपतितान् स्मर।
विपन्नस्य तु शुश्रूषा विपत्तिं च व्यपोहति।।६७।।
यद् वाष्पमुच्चरन् प्रार्थी किञ्चित् त्वामभियाचते।
देहि स्वतोऽन्यथा शक्त प्रसह्याधिकरिष्यते।।६८।।

कथा—१९

बहुत कुछ मुझे महान् शेख अबुल फज शम्सु'द्दीन बिन् जौज़ी (परमेश्वर की कृपा हो उन पर) गाना सुनना छोडने को कहते थे और एकान्त और वैराग्य का प्रस्ताव करते थे—मुझ पर यौवन के उद्गम का प्रभाव था और कल्पना और लालसा छायी थी। निरुपाय अपने गुरु की सम्मति के प्रतिकूल कुछ कदम आगे चला गया और सगीत और साधुसगत का आनन्द लेने लगा। और जब गुरु की शिक्षा मुझे याद आती तो मै कहता—

आख्यायितम्—१९

बहुधा गुरुवर्य अबुलफर्ज शम्सुद्दीन बिन् जौज़ी (भूयात्तस्मै प्रभो कृपा) मा सङ्गीतप्रसक्तिपरित्यागायमशात्, सङ्गपरित्याग वैराग्यञ्चोपादिशत्, किन्तु यौवनागमप्रभावो मामाक्रान्तवान्, गर्वलोभौ च मामभिभावितवन्तौ। विवशोऽह गुरोरादेशविरुद्धाया दिशि कानिचित् पदानि प्राचलम्, सङ्गीत सत्सङ्ग चास्वादयन्नानन्दमन्वभवम्। यदा यदा गुरोराज्ञामस्मार्षमहमवोचम्—

बैत

काज़ी भी यदि हमारे साथ बैठे तो ताल देने लगे।
चरित्र निरीक्षक यदि पी ले तो क्षमा कर दे मस्त को।।

यहाँ तक कि एक रात को मै एक मण्डली के समूह में पहुँचा और उनके बीच में एक गवैये को देखा।

श्लोक

रन्ताऽस्मत्सनिधौ काजी निविष्टो गीतससदि।
क्षन्तोन्मत्त चरित्री चेदेकवार सुरा पिवेत्।।६९।।

अन्ततो गत्वाऽहमेका गानमण्डली गतस्तत्र कञ्चिद्गायकमपश्यम्—

بیت

کوئی ـ رگ جان میگسلد نغمهٔ نا سازش
نا خوشتر از آوازهٔ مرگ پدر آوازش ٭

گاهی انگشت حریفان در گوش و گاهی بر لب ـ که "خاموش"، چنانکه عرب گوید ـ

شعر

نُهَاجُ اِلَی صَوْتِ الْاَغَانِی بِطِیبِهَا
وَ اَنْتَ مُغَنٍّ اِنْ سَکَتَّ نُطِیبُهَا ٭

بیت

نه بیند کسی در سماعت خوشی
مگر وقت رفتن ـ که دم در کشی ٭

مثنوی

چون در آواز آمد آن بربط سرای
کد خدارا گفتم ـ از بهر خدای ـ
پنبه ام در گوش کن ـ تا نشنوم
یا درم بگشای ـ تا بیرون روم ٭

فی الجمله پاس خاطر درویشان را موافقت کردم و شبی بمدتی مجاهده بروز آوردم و گفتم ـ

قطعه

مؤذن بانگ بی هنگام بر داشت
نمیداند که چند از شب گذشتست ٭
درازی شب از مژگان من پرس
که یکدم خواب در چشمم نه گشتست ٭

بامدادان بحکم تبرک دستاری از سر و دیناری از کمر بگشادم و پیش مغنی نهادم و در کنارش گرفتم و بسی شکر گفتم ٭ یاران ارادت من در حق وی بر خلاف عادت دیدند ـ و بر خفت عقلم حمله کردند ٭ یکی از آن میان زبان تعرض دراز کرد و ملامت کردن آغاز ـ

वैत (वहरे हजज्-मुसम्मन्)

गोयी—रगे जाँ मी गुसिलद नग्मए नासाजश् ।
नाखुशतर अज़ आवाज़ए मर्गे पिदर आवाजश् ॥

गाहे अंगुश्ते हरीफ़ाँ दर गोश व गाहे बर लब—कि 'ख़ामुश' चुनाँ कि अरब गोयद—

शेर (वहरे तवील)

नुहाजु इला सौति'ल् अग़ानी बितीबिहा ।
व अन्त मुगन्नी इन् सकत्त नुतीबुहा ॥

वैत (वहरे मुतक़ारिब)

नै बीनद कसे दर समाअत खुशी ।
मगर वक़्ते रफ़्तन् कि दम दर कशी ॥

मसनवी (वहरे रमल-मुसद्दस)

चू व आवाज आमद आँ बरबत सराय ।
कद खुदा रा गुफ़्तम् अज वहरे खुदाय ॥
पम्बा अम् दर गोश कुन् ता नशनवम् ।
या दरम् व कुशाय ता बेरूँ रवम् ॥

फ़िल् जुमला पासे ख़ातिरे दरवेशान् रा मुवाफ़िक़त करदम् व शबे व मुद्दते मुजाहिदा व रोज़ आवुर्दम् व गुफ़्तम् ।

क़ता (वहरे हजज्)

मुअज़्ज़िन बाँग बेहंगाम बर दाश्त ।
न मी दानद कि चन्द अज़ शब गुज़श्तस्त ॥
दराज़ी-ए शब अज मिज़गाने मन पुर्स ।
कि यकदम ख़्वाब दर चश्मम् नै गश्तस्त ॥

बामदादान् ब हुक्मे तबर्रुक दस्तारे अज सर व दीनारे अज़ कमर कुशादम् व पेशे मुगन्नी निहादम् व दर किनारश् गिरिफ़्तम् व बसे शुक्र गुफ़्तम् । यारान इरादते मन् दर हक़्क़े वै बर ख़िलाफ़े आदत दीदन्द—व बर ख़िफ़्फ़ते अक़्लम् हमला करदन्द । यके अज़ आँ मियाँ ज़बाने तअर्रुज़ दराज़ कर्द व मलामत करदन् आग़ाज़—

बैत

यह कहो—कि प्राणशिरा को काटता था उसका बेसुरा राग।
ज्यादा बुरी आवाज थी बाप की मौत पर आवाज से उसकी आवाज।।

कभी साथी कान में उँगली रखते थे और कभी होंठों पर कि 'चुप रहो'। जैसा कि अरब सूक्तिकार कहता है—

शेर

खुश होते हैं गाने की अच्छी आवाज से।
और तू ऐसा गवैया है यदि तू चुप हो जाय तो अच्छा।।

बैत

नहीं दिखा कोई आदमी तेरे गाने से प्रसन्न।
सिवा जाने के समय कि जब तू चुप हो जायगा।।

मसनवी

जब गाने लगा यह कर्कश बजाने वाला।
गृहपति से मैंने कहा—भगवान के लिये।।
रुई मेरे कानों में भर दे ताकि न सुनूं।
या दरवाजा खोल दे ताकि बाहर चला जाऊँ।।

संक्षेप में, साथियों की खातिर मैं उनके अनुसार करता रहा और रात को जैसे-तैसे काटकर सवेरा किया।

क़ता

मुअज्ज़िन ने आवाज असमय में दी।
नहीं जानता कि कितनी रात बीत गयी।।
रात के विस्तार का मेरी पलकों से पूछ।
कि एक पल भी नींद मेरी आँखों में नहीं आई।।

सवेरा होने पर मैंने प्रसाद के रूप में अपने सिर से पगड़ी और कमर से एक दीनार खोली और गवैये के सामने रखी और उसका आलिंगन किया और बहुत बहुत शुक्र अदा किया। मित्रों ने उसके प्रति मेरा इरादा आदत के खिलाफ देखा और मेरी अक्ल की कमी पर चुपके चुपके हँसने लगे। उनमें से एक ने ऐतराज़ की भाषा को

श्लोक

कर्णभेदेन रागेण कृन्तन्निव महाशिराम्।
रुदन्निव पितुर्मृत्यौ स्वरस्तस्य विगर्हित ।।७०।।

मम सहासीनाः क्वचिदङ्गुलिपिहितकर्णाः क्वचिद्धृतोष्ठाङ्गुलय आसन्नथ—'मौनं धत्स्व।' यथाहारब्य कवि—

श्लोक

प्रसीदाम सुकण्ठानां गायनैश्च सदा वयम्।
गायकोऽसि त्वमेतावान् मौनेनास्मान् विनन्दसि ।।७१।।

श्लोक

न पश्यामि प्रसीदन्तं तव रागेण कञ्चन।
ऋते गमनवेलायां दृष्ट्वा त्वां गमनोद्यतम् ।।७२।।

गाथा

यदा सुदुर्गायकोऽयं स गानकर्मोपचक्रमे।
त्राहि मां त्राहि पाहीति ह्यवोचं गृहमेधिनम् ।।७३।।
श्रोत्रे पिधेहि मे येन न स्युर्मा श्रुतिगोचरम्।
अनावृतकपाटं वा द्वारं देहि यतस्त्वयाम् ।।७४।।

संक्षेपेण, साधूनां सन्तोषार्थं कृते यथाविहितमनुसारं शर्वरी च यथा तथा नीत्वा प्रभातमुपयातं।

पदम्

आवाहकोऽयमाह्वानमस्थाने कृतवानथ।
न जानाति वियद्रात्रिरपनीता हि विद्यते ।।७५।।
दीर्घां रजनीततां पृच्छ मदीये चाक्षिपक्ष्मणी।
नास्वाप क्षणमात्रं चागमता चक्षुषी मम ।।७६।।

दिवसोदये जाते प्रसादरूपेणाहं स्वस्य मूर्ध्नः उष्णीषं कट्याश्च दीनारमुद्घाट्य गायकस्य समक्षं धृतवान् तं गाढञ्चोपगूह्य धन्यवादान् व्यज्ञापयम्। मित्राणि मे व्यापारं प्रथाविरुद्धमपश्यन्। मन्मन्दबुद्धिं चाहसन् गूढभावेनेति। तेषामेकतम आक्षेपं कर्तुमारभत मां भर्त्सयंश्च ब्रूते—'नेदं चेष्टितं नाम बुद्धिमतामनुमोदितमथ

बढ़ाया और मेरी भर्त्सना करनी आरम्भ कर दी कि यह चेष्टा बुद्धिमानों की सम्मति के अनुकूल नहीं थी कि सन्तों का वस्त्र ऐसे गवैये को दे दिया कि सारी आयु जिसको एक दिरम हाथ पर न हुआ और न एक सोने का सिक्का ढोल पर।

मसनवी

ऐसा गवैया इस आनन्द भवन से दूर हो।
किसी ने जिसे नहीं देखा दुबारा एक ही जगह में॥
जैसे ही उसका आलाप मुंह से निकला।
लोगों के रोंगटे शरीर पर खड़े हो गये॥
घर के पक्षी उसके डर से उड़ गये।
वह हमारा भेजा ले गया और अपना गला फाड़ गया॥

मैंने कहा—'ताने की भाषा छोटी करना ही ठीक होगा। क्योंकि मुझ पर इस आदमी का चमत्कार प्रकट हो गया है।' उसने कहा—'मुझको भी उसके विवरण से परिचित करा ताकि मैं भी ऐसा ही प्रेम दिखाऊँ और जो अवज्ञा हुई है उसके लिये क्षमा याचना करूँ।' मैंने कहा—'इस कारण कि मेरे महान् गुरु ने अनेक बार मुझ से गाना त्यागने को कहा था और बहुत उपदेश दिये थे। और वह मेरे कानों को स्वीकार नहीं हुआ आज की रात तक—कि मेरे मूर्त्तिमान् भाग्य और प्रसन्न सौभाग्य ने इस जगह मेरा पथ निर्देश किया है और इस गायक के कारण (हाथों) मैं तोबा करता हूँ कि फिर कभी अपने शेष जीवन भर गान मण्डली के पास नहीं फटकूंगा।'

क़ता

अच्छी आवाज़ गले और मुँह और मीठे ओठों से निकली हुई।
चाहे गाये या न गाये चित्त को हरती है॥
लेकिन चाहे प्रेम गीत हो या नुहावन्द और इराक़ का गीत।
खराब गवैये के कण्ठ से शोभा नहीं देता॥

कथा—२०

लुक़मान पण्डित से लोगों ने पूछा—'शिष्टाचार किससे सीखा?' उसने कहा—'अशिष्टों से, क्योंकि उनकी हर वह बात जो कि मुझे नापसन्द दिखाई पड़ती थी उससे मैंने परहेज़ किया।'

साधूनां वासांसि चैतादृशे गायकाय दीयन्ते यो न च यावज्जीवं रजतखण्डं करतलगतं लेभे न वा धातुखण्डं भेर्यां लेभ इति।'

गाथा

आसीद्धि गायकः कश्चिद् (दूरं भवतु दुर्भगः)।
न कश्चिद् दृष्टवानेनं द्विवारं चैकराश्रये॥७७॥
आलापो वदनादस्य यथा हि खलु निर्गतः।
लोमहर्षस्तु सर्वेषां जनानामभ्यजायत॥७८॥
उत्पतितास्ततो भीताः समस्ता गृहपक्षिणः।
तेन नीर्णं शिरोऽस्माकं दीर्णं कण्ठं तथात्मनः॥७९॥

अहमवोचम्—'अलमनेनाक्षेपवाक्येन। यतो ह्यनेन ह्यस्य जनस्य गुणो मयि।' सोऽवदत्—'मामपि प्रबोधय, येनाहमपि तादृगेव प्रेम प्रदर्शये, या चावज्ञा सञ्जाता तत्कृते क्षमां याचेयमिति।' अहमवोचम्—'मम गुरुर्बहुधा मामगात् सङ्गीतत्यागार्थं, बहुवश्चोपदेशा समादिष्टवान्। न च ते मम श्रुतिगता अभवन्। यावदिदानीं दोषा साकारसौभाग्यं प्रसन्नसौभाग्यञ्च मे पथनिर्देशं कृतवदिति। अत प्रभृति चास्मै गायकाय शपे न पुनरवशिष्टजीवितं गानमण्डलमियामिति।'

पदम्

सुस्वरं श्रेष्ठकण्ठोष्ठवदनाच्च विनिर्गतम्।
चित्तं हरति लोकस्य सगायेद् यदि वा न वा॥८०॥
अपि चेत् प्रेमगीतं च 'नुहावन्द'-'इराकि' यत्।
कुकण्ठे तु दुर्गीतं कस्मैचिन्न च रोचते॥८१॥

आख्यायितम्—२०

लोकमानं पण्डितं केचन पृष्टवन्तोऽथ—'शिष्टाचारं कस्मादधिगतवानसि?' स उवाच—'अशिष्टेभ्यो, यतस्तेषां यद् यदनभिमतं प्रतीतं तत् तन् मया निराकृतम्।'

قطعه

نگویند از سر بازیچه حرفی
کزان پندی نگیرد صاحب هوش ٭
و گر صد باب حکمت پیش نادان
بخوانند ـ آیدش بازیچه در گوش ٭

क़ता (बहरे हज़ज्)

न गोयन्द अज़ सरे बाज़ीचे हरफ़े।
कज़ाँ पन्दे न गीरद साहिबे होश॥
वगर सद बाबे हिकमत पेशे नादाँ।
बिख़्वानन्द—आयदश् बाज़ीचे दरगोश॥

حکایت ۲۱

عابدی‌را حکایت کنند ـ که شبی ده من طعام بخوردی ـ و تا سحر در نماز استادی ٭ صاحبدلی بشنید و گفت ـ اگر نیم نان بخوردی و بخفتی ـ بسیار از این فاضلتر بودی ٭

हिकायत—२१

आबिदे रा हिकायत कुनन्द कि शबे दह मन तआम ख़ुर्दे—व ता सहर दर नमाज़ ऐस्तादे। साहिबदिले बिशुनीद—व गुफ़्त—'अगर नीम नान बुख़ुर्दे व बुख़ुफ़्ते—बिस्यार अज़ ईं फ़ाज़िलतर बूदे।

قطعه

اندرون از طعام خالی دار
تا در آن نور معرفت بینی ٭
تهی از حکمتی ـ بعلت آن
که ـ پری از طعام تا بینی ٭

क़ता (बहरे ख़फ़ीफ़)

अन्दरूँ'ज़ तआम ख़ाली दार।
ता दर आँ नूरे मारिफ़त बीनी॥
तिही अज़ हिकमते ब इल्लते आँ।
कि पुरी अज़ तआम ता बीनी॥

حکایت ۲۲

بخشایش الهی گم شده‌را در مناهی چراغ توفیق فرا راه داشت ـ تا حلقهٔ اهل تحقیق در آمد ٭ بیمن قدم درویشان و صدق نفس ایشان ذمائم اخلاقش بحمائد مبدل گشت ٭ دست از هوا و هوس کوتاه کرد و زبان طاعنان در حق وی دراز ـ که بر قاعدهٔ اولست و زهد و صلاحش نامعمول ٭

हिकायत—२२

बख़्शायशे इलाही गुमशुदाए रा दर मनाही चिराग़े तौफ़ीक़ फ़रा राह दाश्त। ता ब हल्क़ाए अहले तहक़ीक़ दर आमद। व युम्ने क़दमे दरवेशान् व सिद्क़े नफ़से ईशान् ज़मायमे अख़्लाक़श् ब महामिद मुबद्दल गश्त। दस्त अज़ हवा व हवस कोताह कर्द व ज़बाने ताअनाँ दर हक़्क़े वै दराज़ कि बर क़ायदाए अव्वल'स्त व ज़ुहद व सलाहश् नामुअव्वल।

بیت

بعذر و توبه توان رستن از عذاب خدای
ولیک می نتوان از زبان مردم رست ٭

बैत (बहरे मुज्तस्)

ब उज़्रो तौबह् तवाँ रस्तन अज़ अज़ाबे ख़ुदाय।
वले नमी न तवान'ज़ ज़बाने मर्दुम् रस्त॥

طاقت جور زبانها نیاورد ـ و شکایت این حال پیش پیر طریقت برد و گفت ـ از جور زبان مردم برنج اندرم ٭ شیخ بگریست و گفت ـ "شکر این نعمت چه گونه گزاری که بهتر از آنی که می پندارندت"

ताक़ते जौरे ज़बानहा न यावुर्द व शिकायते ईं हाल पेशे पीरे तरीक़त बुर्द व गुफ़्त—अज़ जौरे ज़बाने मर्दुम दर रंजम्। शैख़ बिगिरीस्त व गुफ़्त—'शुक्रे ईं निअ़मत चिगूना गुज़ारी कि बेहतर अज़ आनी कि मी पिंदारन्दत?'

कता

लोग नहीं कहते खेल में भी ऐसा शब्द।
कि जिससे उपदेश नहीं ले ले चैतन्यशील ।।
लेकिन बुद्धिमत्ता के सौ अध्याय भी नादान के सामने।
पढ़ें, तो उसके कानों को खेल ही लगते हैं।।

पदम्

न जातु सूक्तय सन्ति क्रीडाकालेऽपि व्याहृता ।
न या गृह्णाति शिक्षायै नरो बुद्धि समन्वित ।। ८२ ।।
ग्रन्थो यदि शताध्यायो मूर्खाग्रे परिपाठ्यते।
सोऽपि हासकर कृत्स्नस्तेनैव खलु मन्यते ।। ८३ ।।

कथा—२१

एक महात्मा के विषय में कहा करते हैं कि रात को वह दस मन (मन ईरान में १२ छटांक का तोल है) भोजन खाता था—और सवेरे तक प्रार्थना में खड़ा रहता था। एक भक्त ने सुना और कहा—'यदि वह आधी रोटी खाता और सो जाता तो इससे अधिक पुण्य होता।'

आख्यायितम्—२१

कस्यचिन्महात्मन कथाऽनुश्रूयतेऽथ स दशमनपरिमितमन्न भुङ्क्ते स्मादिनोदयात्प्रार्थनायामुत्तिष्ठते च। कश्चिद्भक्त एतच्छ्रुत्वोवाच—'यद्यसौ नैमा कर्पटिका भुञ्जीत, स्वप्याच्च तर्हि अतोऽधिक पुण्यभाग्भवेदिति।'

क़ता

पेट को भोजन से खाली रख।
ताकि उसमें तू ईश्वर की ज्योति देख सके।।
तू इसीलिये बुद्धि से हीन है।
कि भोजन से नाक तक ठुसा हुआ है।।

पदम्

अन्नेन चोदर सर्वं सर्वथा नैव पूरये।
रिक्तकोष्ठे यत पश्येर्ज्योतिश्च पारमेश्वरम् ।। ८४ ।।
बुद्धिहीनोऽस्यनेनैव कारणेन तु केवलम्।
आनासिकाद् भृतश्चान्नैर्भोजनैरथ वर्तसे ।। ८५ ।।

कथा—२२

परमात्मा की कृपा ने एक पथभ्रष्ट को मनाही में दया का दीपक मार्ग पर रख दिया जिससे कि वह विवेकियों की सगति मे आ गया। साधुओं के चरणों के आशीर्वाद से और उनके सद्वचनो से उसके चरित्र के दोष गुणो में बदल गये। उसने काम और वासना से हाथ खींच लिया। पर तानेबाजों की ज़बान उसके प्रति लम्बी ही रही—कि यह तो पहले जैसा ही है और इसका सयम और भलाई अविश्वसनीय है।

आख्यायितम्—२२

भगवान् कृपया कञ्चित् पथभ्रष्ट निरोद्धु तस्य मार्गे दयादीपो निहितवान्। फलत स विवेकिना सङ्गति प्राप। महात्मना चरणानुग्रहात् तेषा पुण्यवचसा प्रभावाच्च तस्य कुवृत्तानि सुचरितानि जातानि। स काम लोभ च तत्याज, तथापि आक्षेपकाणा जिह्वा तथैव प्रवादपरा स्थिता जाता, 'अथाऽय यथापूर्व एवास्ति तथा चास्य तपश्च साधुत्व चाविश्वसनीयमिति।'

बैत

प्रार्थना और पश्चात्ताप से ईश्वर के दण्ड से छूटा जा सकता है।
लेकिन लोगों की ज़बान से नहीं छूटा जा सकता।।

श्लोक

तितिक्षाप्रार्थनाभ्या ना दैवदण्डात्प्रमुच्यते।
छिद्रान्वेषणशीलाना पुसा वाचो न मुच्यते ।। ८६ ।।

वह जुबानो के अत्याचार की सहनशक्ति न लाया और इस हाल की शिकायत अपने अध्यात्म मार्ग के गुरु के पास ले गया और बोला—'लोगों की ज़बान के अत्याचार से मुझे दु ख होता है।' गुरु रो पड़ा और बोला—'इस कृपा का धन्यवाद कैसे करेगा कि तू उससे बहतर है कि जितना लोग तुझे समझते हैं।'

स प्रवाद सोढु न शशाक, आत्मनो दु खाख्यान च स्वस्य गुरोरग्रे ख्यापितवान् ब्रूते स्म च—'पुसा प्रवादादभिभूतोऽस्मि।' तस्य गुरुरेतच्छ्रुत्वा रुरोदोवाच च—'त्व कथमेतस्यानुग्रहस्य परमात्मनो धन्यवाद कर्तुमर्हसि यत्त्वं सुवृत्ततरोऽसि यावन्त पुमासस्त्वा मन्यन्ते।'

قطعه

چند گوئی که بد اندیش و حسود
عیب جویان من مسکینند؟
گه بد خواستنم بر خیزند
گه بخون ریختنم بنشینند.
نیک باشی و بدت گوید خلق
به که بد باشی و نیکت گویند.

اما حسن ظن بزرگان در حق من بکمالست و نیکمردی من در عین نقصان - روا باشد اندیشه بردن و تیمار خوردن.

بیت

گر آنها که میگفتمی کردمی
نکو سیرت و پارسا بودمی.

شعر

انّی لَمُستَتِرٌ مِن عَینِ جیرانی
وَ اللهُ یَعلَمُ اَسراری وَ اَعلانی.

قطعه

در بسته بروی خود ز مردم
تا عیب نگسترند ما را.
در بسته چه سود؟ عالم الغیب
دانای نهان و آشکارا.

حکایت ۲۳

گله کردم پیش یکی از مشایخ که فلان بفساد من گواهی داد. گفت - "بصلاحش خجل کن".

نظم

تو نیکو روش باش - تا بد سگال
بنقص تو گفتن نیابد مجال.
چو آهنگ بربط بود مستقیم
کی از دست مطرب خورد گوشمال.

क़ता (बहरे रमल)

चन्द गोयी कि बद अन्देशो हुसूद।
ऐब जोयाने मने मिस्कीनन्द॥
गह ब बद ख़्वास्तनम् बर ख़ेज़न्द।
गह ब ख़ूँ रेख़्तनम् बिनशीनन्द॥
नेक बाशी व बदत गोयद ख़ल्क़।
बिह् कि बद बाशी ओ नेकत गोयन्द॥

अम्मा हुस्ने ज़न्ने बुज़ुर्गान दर हक़्क़े मन् ब कमाल'स्त व नेक मर्दीए मन् दर ऐने नुक़्सान—रवा बाशद अन्देशा बुर्दन् व तीमार ख़ुर्दन्।

बैत (बहरे मुतक़ारिब)

गर आँहा कि मी गुफ़्तमी कर्दमे।
निकू सीरतो पारसा बूदमे॥

शेर (बहरे बसीत)

इन्नी लमुस्ततिरन् मिन् ऐने जीरानी।
व'ल्लाहु यालमु इस्रारी व इअ्लानी॥

क़ता (बहरे हज़ज्-मुसद्दस)

दर बस्ता ब रूए ख़ुद ज़ि मर्दुम।
ता ऐब न गुस्तरन्द मारा॥
दर बस्ता चि सूद आलिमु'ल् ग़ैब।
दानाए निहाँ ओ आशकारा॥

हिकायत—२३

गिला कर्दम् पेशे यके अज़ मशाइख़ कि फ़लाँ ब फ़सादे मन् गवाही दाद। गुफ़्त—'ब सलाहश् ख़जिल कुन।'

नज़्म (बहरे मुतक़ारिब)

तो नेको रविश बाश ता बद सिगाल।
ब नक़्से तो गुफ़्तन न याबद मजाल॥
चु आहंगे बरबत बुवद मुस्तक़ीम।
कै अज़ दस्ते मुतरिब ख़ुरद गोशमाल॥

क़ता

कब तक तू कहेगा कि अशुभचिन्तक और ईर्ष्यक लोग।
ऐब ढूंढनेवाले वाले हैं मुझ दीन के॥
कभी मेरे अशुभ चीतने के लिये वे खडे हो जाते हैं।
कभी मेरा खून बहाने को (घात में) बैठे रहते हैं॥
तू भला हो और तुझे बुरा कहें।
(यह) अच्छा है (न) कि तू बुरा हो और तुझे भला कहें॥

किन्तु यदि बडे आदमियों की मेरे बारे में अच्छी राय पूर्णता के लिये है और मेरी भलमनसाहत के लिये हानिकर है तो मुझे डरना और धूल झडवाना चाहिये।

पदम्

वर्तितासे ब्रुवाणस्त्व कियत्कालमथेर्ष्यका।
छिद्रमन्वीक्षमाणा मा वराक वितुदन्ति हि॥ ८७॥
सन्नद्धास्ते समायान्तु क्वचिदेतेऽशुभेच्छया।
उपविष्टा समुन्नद्धा कदाचिन्मे जिघासया॥ ८८॥
अथ सद्वृत्तसम्पन्न सर्वतस्त्व विनिन्दित।
वर न चैव दुर्वृत्त स्तुतोऽसि यदि भूरिश॥ ८९॥

परन्तु यदि महतामभिमतोऽस्मि तस्माच्च यदि मे कल्याण विरुद्ध्यते तर्हि तत्र भयकारणमस्ति रजोहरणञ्चार्हामीति।

बैंत

यदि जो बाते मैं जानता हूँ उन पर अमल करता।
तो सदाचारी और महात्मा हो जाता॥

श्लोक

यद् यज् जानामि तत्सर्वमाचरिष्य तथा तथा।
साधु सवगुणोपेतोऽभविष्यन्तर्हि सर्वथा॥ ९०॥

शेर

बेदाग में छिपा हुआ हूँ मेरे पडोसी की निगाह से।
और (पर) प्रभु जानता है मेरे गुह्य और घोषित (प्रकट) को॥

श्लोक

असशय निगूढोऽस्मि नेत्रेभ्यश्चान्तिकस्य हि।
प्रभुर्मे किन्तु जानीते गूहितञ्चाप्यगूहितम्॥ ९१॥

क़ता

हमने द्वार बन्द कर लिये है मनुष्यो से।
ताकि (वे) ऐब न देखें हमारे॥
द्वार बन्द करने से क्या लाभ? अन्तर्यामी।
जानने वाला है छिपे और प्रकट को॥

पदम्

वय कृतार्गल द्वार दध्महे जनवारितम्।
नागन्तुका यतोऽस्माक कुर्वीरश्छिद्रविस्तरम्॥ ९२॥
कृतार्गलेन द्वारेण का सिद्धि? परमेश्वर।
व्यक्ताव्यक्त विजानीते सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान्॥ ९३॥

कथा—२३

मैंने एक धर्मगुरु के सामने शिकायत की कि अमुक ने मेरी असाज्जनता की साक्षी दी है। उसने कहा—'अपनी सज्जनता से (उसे) लज्जित कर।'

आख्यायितम्—२३

अहमेकदात्मनो गुरूणामेकतमस्याग्रे निजखेद ज्ञापितवानथा-मुकेन 'अहमसज्जनोऽस्मीति प्रचारितम्' सोऽवदत्—'स्वीयया सज्जनतया त लज्जित विधेहि।'

नज़्म

तू अच्छे मार्ग पर रह ताकि बुरा चीतने वाला।
तेरी बुराई करने का अवसर न पाये॥
जब वीणा का स्वर सिद्ध होता है।
कब संगीतज्ञ के हाथ से कान उमेठवाती है॥

प्रबन्ध

सता मार्गानुयायी स्या यत पैशुन्यवृत्तय।
त्वामाक्षेप्तु च दोषेणावसर नैव चाप्नुयु॥ ९४॥
यदा सिद्धस्वरारूढा वीणा रागुणतिष्ठते।
वीणाकार प्रवीणोऽस्या क कर्णमभिमर्दयेत्॥ ९५॥

حکایت ۲۴

یکی از مشائخ شام را پرسیدند - که حقیقت تصوف چیست؟ گفت - از ین پیش طائفهٔ بودند در جهان بظاهر پراگنده بصورت و بمعنی جمع - و امروز خلقی بظاهر جمع و باطن پراگنده ۔

हिकायत—२४

यके अज मशाइखे शाम रा पुरसीदन्द—'कि हक़ीक़ते तसव्वुफ़ चीस्त?' गुफ़्त—'अज़ी पेश ताइफ़ाए बूदन्द दर जहाँ परागन्दा ब सूरत व ब मअ़ना जमअ़—व इमरोज़ ख़ल्क़े ब ज़ाहिर जमअ़ व ब बातिन परागन्दा।'

قطعه

چو هر ساعت از تو بجای رود دل
بتنهائی اندر صفائی نه بینی ؛
ورت مال و جاهست و زرع و تجارت
چو دل با خدایست ـ خلوت نشینی ۔

क़ता (बह्‌रे मुतक़ारिब)

चु हर साअ़त अज तो ब जाए रवद दिल।
ब तनहाई अन्दर सफ़ाई नै बीनी।।
वरत मालो जाह'स्तो जरअ़ ओ तिजारत।
चु दिल बा ख़ुदाय'स्त ख़ल्वत नशीनी।।

حکایت ۲۵

یاد دارم که شبی در کاروانی همه شب رفته بودم و سحر بر کنار بیشه خفته ۔ شوریدهٔ ـ که در آن سفر همراه ما بود ـ نعره برد و راه بیابان گرفت و یک نفس آرام نیافت ۔ چون روز شد ـ گفتمش ـ ''این چه حال بود؟'' گفت ـ ''بلبلانرا دیدم ـ که بناله در آمده بودند از درخت ـ و کبکان در کوه ـ و غوکان در آب ـ و بهائم در بیشه ـ اندیشه کردم که مروت نباشد همه در تسبیح و من بغفلت خفته'' ۔

हिकायत—२५

याद दारम् कि शबे दर कारवाने हमा शब रफ़्ता बूदम् व सहर बर किनारे बीशाए ख़ुफ़्ता। शोरीदाए कि दरीं सफ़र हमराहे मा बूद—नारा बिज़द व राहे बियाबान् गिरिफ़्त व यक नफ़स आराम न याफ़्त। चू रोज़ शुद—गुफ़्तमश्—'ईं चि हाल बूद?' गुफ़्त—'बुलबुलाँ रा दीदम् कि ब नाला दरामदा बूदन्द अज़ दरख़्त—व कबकाँ दर कोह—व ग़ोकान् दर आब व बहाइम् दर बीशा—अन्देशा कर्दम् कि मुरव्वत न बाशद हमा दर तसबीह व मन ब ग़फ़्लत ख़ुफ़्ता।

قطعه

دوش مرغی بصبح می‌نالید
عقل و صبرم ببرد و طاقت و هوش ؛
یکی از دوستان مخلص را
(مگر آواز من رسید بگوش)
گفت ـ باور نداشتم که ترا
بانگ مرغی چنین کند مدهوش ؛
گفتم ـ این شرط آدمیت نیست
مرغ تسبیح خوان و من خاموش ۔

क़ता (बह्‌रे ख़फ़ीफ़),

दोश मुर्ग़ी ब सुब्ह मी नालीद।
अक़्ल ओ सब्रम् बुबुर्दो ताक़तो होश।।
यके अज दोस्ताने मुख़्लिस रा।
(मगर आवाज़े मन् रसीद ब गोश)।।
गुफ़्त बावर न दाश्तम् कि तुरा।
बांगे मुर्ग़े चुनीं कुनद मदहोश।।
गुफ़्तम् ईं शर्ते आदमीय्यत नेस्त।
मुर्ग़ तसबीह ख़्वां व मन् ख़ामोश।।

कथा—२४

शाम देश के एक शेख से पूछा गया—'कि सूफी धर्म का तत्व क्या है?' उसने कहा—'इसके पूर्व सूफी मण्डली संसार में ऐसी थी कि बाहर से चंचल और भीतर से स्थिर, और आजकल बाहर से स्थिर और भीतर से चंचल है।'

आख्यायितम्—२४

शामदेशस्य धर्मगुरूणामेकतमो लोकैः पृष्टो—'अथ किं तत्त्वं सूफी-धर्मस्येति।' सोऽवदत्—'अतः प्राक् सूफिनो बहिश्चञ्चला अन्तः-स्थिराश्च। इदानीं बहिः स्थिरा अन्तश्चञ्चलाश्चेति।'

कता

जब हर समय तेरा चित्त कहीं और चला जाता है।
एकान्त में भी तुझे शान्ति नहीं मिलेगी॥
और यदि तेरे (पास) धन, पद, खेती और व्यापार है।
जब दिल प्रभु से लगा है तो तू एकान्तवासी है॥

पदम्

चित्तं चलायमानञ्चेद् वर्तते ते प्रतिक्षणम्।
निभृतेऽपि गते स्थाने मनः शान्तिं न चाप्स्यसि॥ ९६॥
भुञ्जानः पदवीं भोगं व्यापारं द्रविणं यदि।
भगवल्लग्नचित्तोऽसि निभृतस्थोऽसि तत्त्वतः॥ ९७॥

कथा—२५

मुझे याद है कि एक रात मैं एक कारवां के साथ सारी रात चलता रहा और सवेरे एक जंगल के किनारे सो गया। एक अशान्त व्यक्ति ने जो कि उस यात्रा में हमारा सहयात्री था—नारा (अल्लाहो अकबर) लगाया और जंगल की राह पर दौड़ पड़ा और एक पल को भी न सोया। जब सवेरा हुआ—तो मैंने उससे कहा—'यह क्या बात थी?' उसने कहा—'मैंने बुलबुलों को देखा कि पेड़ों से बोल रही हैं, पर्वतों में तीतर, पानी में मेंढक और जंगल में पशु बोल रहे हैं। मैंने सोचा कि यह कृतज्ञता नहीं होगी कि सब प्रार्थना कर रहे हैं और मैं प्रमाद में सोया पड़ा रहूँ।'

आख्यायितम्—२५

स्मरामि अथैकदा शर्वर्यां सार्थवाहेन सार्धं सम शर्वरीं गच्छन्नासम्। प्रभाते च वनोपान्तमस्वपम्। कश्चिदशान्तचेता अप्यस्माकं सह-यात्रिक आसीत्। स 'महतो महीयान् प्रभुः' इति क्रोशं क्रोशं गहनं वनं न्यविशत, क्षणमात्रमपि न शिश्ये। यदा दिनकर उदगादहं तमुक्तवान्—'इदं ते किं जातम्?' सोऽवदत्—'अहं पिक-कुलमदर्शं वृक्षेषु क्ष्वेडितं, पर्वतेषु तित्तिरकुलं, अप्सु च भेककुलं, कान्तारे च जाङ्गलपशुकुलमिति। ततोऽहं विमृष्टवान्—नैतत् कृतज्ञत्वमथ सर्वे तु प्रार्थनारता अहं पुनर्निद्रारतः स्याम्।'

कता

पिछली रात एक चिड़िया बड़े सवेरे बोली।
वह मेरी बुद्धि, धैर्य, शक्ति, और चेतना ले गयी॥
मेरे परम मित्रों में से एक ने।
(शायद मेरी आवाज उसके कान में पड़ी)॥
कहा—मैं नहीं समझता था कि तुझे।
पक्षी का चहचहाना ऐसा मत्त कर देगा॥
मैंने कहा—यह मनुष्यता की शर्त नहीं है।
कि पक्षी प्रार्थना उचारे और मैं चुप रहूँ॥

पदम्

प्रभाते विहगोऽरावीत् पूर्वेऽह्नि दिवसोदये।
प्रज्ञा धृतिञ्च सामर्थ्यं जह्रे सज्ञां तथापि च॥ ९८॥
अथ किञ्चित् सुहृन्मित्रं मामेव विभ्रमान्वितम्।
दृष्ट्वा श्रुत्वा च चीत्कारं मदीयमुखनिर्गतम्॥ ९९॥
अब्रवीदथ मामेव नाज्ञासीति कदाचन।
एवं विहगमारावो विमज्ञं त्वां विधास्यति॥ १००॥
अवोचे—'नोचितं चैतत् कदाचिन्नरजन्मने।
प्रार्थनामुखरः पक्षी मौनश्च मनुजस्तथा॥' १०१॥

कथा—२६

एक समय हिजाज की यात्रा में मैं भक्तजनो की मण्डली का साथी और सहयात्री था। अनेक बार वे गीत उठाते और ईश्वरभक्ति के बोल गाते। एक साधु ऐसा था जो सन्तो के हाल से असहमत था और उनके दर्द से अनभिज्ञ था। जब हम बनी हिलाल के मरु-कुज पर पहुँचे तो अरब जाति का एक लडका बाहर आया और उसने ऐसी टेर लगाई कि पक्षी भी हवा में से उतर आये। उस साधु का ऊँट मैंने देखा कि नाचने लगा और उसने साधु को गिरा दिया और जगल की राह् पकडी। मैंने कहा—'अरे शेख! सगीत ने पशु पर भी प्रभाव डाला और तुझको कोई अन्तर नही पडा।'

आख्यायितम्—२६

एकदा हिजाजस्य यात्रायामह् भक्ताना सतीर्थ सहयात्रिकश्चासम्। अनेकधा ते गीतमगायन्, भगवद्भक्तिपद चापठन्। कश्चित् साधुस्तत्र भक्तिमार्गादपरिचितो भक्तिजुपा पीडाया अनभिज्ञश्चासीत्। यदा वय हिलालकुलशाद्वलमाप्नुम तदा कश्चिदारव्य किशोरो बहिरायात एव चागासीद् यत् पतत्त्रिणोऽपि नभसोऽवागच्छन्। तस्य साधुकस्योष्ट्रोऽपि नर्तितुमारभत् साधुकञ्चापातयत् कान्तारे च न्यविशत। अहमवोचम्—'हे साधो! सङ्गीत पशोरपि प्रभवति न पुनस्त्वा स्पृशतीति।'

नज्म

जानता है कि क्या कहा मुझसे प्रभात की श्यामा ने।
'तू कैसा आदमी है कि प्रेम से अनभिज्ञ है॥'
ऊँट अरब के गीत से मगन हो जाता है।
यदि तुझ में प्रेम नही है तो तू दुर्मनस्क पशु है॥

प्रबन्ध

अपि जानासि किं श्यामा प्रभाते मामवोचत।
कीदृशोऽसि मनुष्यस्त्व प्रीतिसास्पर्शवर्जित ॥ १०२॥
उष्ट्रोऽपि प्रेमगीतेन परमानन्दितो भवेत्।
प्रेमभावो न चेत् स्यात्ते दुर्मनास्त्व पशुस्तत ॥ १०३॥

शेर

और जब चलती है हवा मैदान पर।
झुक जाती हैं शाखाएँ वाण (सरकडे) की न कि कठोर पत्थर॥

श्लोक

वातो वाति यदा तीव्रो तृणक्षेत्रस्य मध्यग।
नमन्ति वाणकाण्डानि न चाश्मानो हि शैलजा ॥ १०४॥

मसनवी

उसके गुणगान में तू जो जो देखता है मुखर है।
इस रहस्य को वही दिल जानता है जो चैतन्य है॥
न (केवल) बुलबुल ही फूल पर प्रभुगुण गा रही है।
बल्कि हर काँटा उसकी प्रार्थना में जीभ निकाले हुए है॥

गाथा

य य पश्यसि त सर्वमवेहि मुखर स्तुती।
स चैन वेत्ति यो धत्ते चित्त श्रोत्र सचेतनम्॥ १०५॥
पुष्पस्था कोकिला स्तोत्र न च गायति केवलम्।
कण्ट निधाय जिह्वाग्र प्रभु स्तौति निरन्तरम्॥ १०६॥

कथा—२७

अरब के एक राजा की आयु की सीमा समाप्त हो रही थी और उसका उत्तराधिकारी न था। उसने वसीयत की कि सवेरे पहला आदमी जो कि शहर में अन्दर आये राजमुकुट उसके सिर पर पहना दें और देश का शासन उसे सौप दें। सयोग से, पहला आदमी जो कि अन्दर आया एक भिखारी था जिसने कि सारी आयु टुकडा टुकडा इकट्ठा किया था और थेगली पर थेगली सिई थी। राज्य के दरबारियो

आख्यायितम्—२७

अरबदेशस्य कस्यचिद् राज्ञ आयुष्य समाप्तिमाप। उत्तराधिकारिण च न दधे। सोऽन्त्यादेश ददावथ महति प्रत्यूषे य प्रथम पुमान् पुर प्रविशेत् तस्य मूर्धनि राजमुकुट निदध्युर्विषयस्य च सर्वाधिकार तस्मै दद्युरिति। अथ दिष्ट्या प्रथम पुमान् यश्च पुर प्रविवेश कश्चिद् भिक्षुरासीत्, येन यावज्जीवन ग्रास ग्रास चित छेद छेद च वस्त्र स्यूतमिति। राज्ञ सामन्ता पारिषदाश्च यथानिर्दिष्टमादेश

حضرت وصیت ملک را بجا آوردند ـ و تسلیم مفاتیح قلاع و خزائن بدو کردند ، مدتی ملک راند ـ بعضی از امرای دولت گردن از مطاوعت او بپیچیدند ـ و ملوک دیار از هر طرف بمنازعت برخاستند و بمقاومت لشکر آراستند ، فی الجمله سپاه و لشکر بهم بر آمدند ـ و برخی از اطراف بلاد از تصرف او بدر رفت ، درویش ازین واقعه پریشان و خسته خاطر همی بود ـ تا یکی از دوستان قدیمش ـ که در حالت درویشی قرین او بود ـ از سفر باز آمد ، و چنان مرتبتی دیدش ـ گفت ـ منت خدایرا عز و جل که بخت بلندت یاوری کرد و اقبال رهبری ـ گلت از خار و خارت از پای بدر آمد ـ تا بدین پایه رسیدی ـ

"إِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا" ،

بیت

شکوفه گاه شکفتست و گاه خوشیده
درخت گاه برهنه ست و گاه پوشیده ،

گفت ـ ای یار عزیز تعزیتم کن ـ که نه جای تهنیتست ، آنگه که تو دیدی غم نانی داشتم ـ و امروز تشویش جهانی ،

مثنوی

اگر دنیا نباشد ـ دردمندیم
و گر باشد ـ بمهرش پای بندیم ،
بلائی زین جهان آشوبتر نیست
که رنج خاطرست ار هست ور نیست ،

قطعه

مطلب ـ گر توانگری خواهی
جز قناعت ـ که دولتست هنی ،
گر غنی زر بدامن افشاند
تا نظر در ثواب او نکنی ،
کز بزرگان شنیده ام بسیار
صبر درویش به که بذل غنی ،

हज़रत वसीयते मलिक रा बजा आवुर्दन्द व तसलीमे मफ़ातीहे क़िलाअ व ख़ज़ायन बदू कर्दन्द। मुद्दते मुल्क रान्द—बाज़े अज़ उमराये दौलत गर्दन अज़ मुताबअ़ते ऊ बिपेचीदन्द व मुलूके दयार अज़ हर तरफ़ ब मुनाज़अ़त बर ख़ास्तन्द व ब मक़ावमत लश्कर आरास्तन्द। फ़िल् जुमला सिपाह व लश्कर बहम बर आमदन्द व बिरख़े अज़ अतराफ़े बिलाद अज़ तसर्रुफ़े ऊ बदर रफ़्त। दरवेश अज़ीं वाक़िआ परेशान व ख़स्ता ख़ातिर हमी बूद। ता यके अज़ दोस्ताने क़दीमश् कि दर हालते दरवेशी क़रीने ऊ बूद—अज़ सफ़र बाज़ आमद। व चुनाँ मर्तबते दीदश्—गुफ़्त—'मिन्नत ख़ुदाय रा अज़्ज़ व जल्ल कि बख़्ते बुलन्दत यावरी कर्द व इक़बाल रहबरी। गुलत अज़ ख़ार व ख़ारत अज़ पाय बदर आमद—ता बदीं पाया रसीदी।'

'इन्न मअ़'ल् उस्रे युस्रा।'

बैत (बहरे मुज्तस्)

शिगूफ़ा गाह शिगुफ़्त'स्तो गाह ख़ोशीदा।
दरख़्त गाह बरह्न'स्तो गाह पोशीदा॥

गुफ़्त—'ऐ यारे अज़ीज़ ताज़ीयतम् कुन्—कि न जाए तह्नियत'स्त। आँगह कि तो दीदी ग़मे नाने दाश्तम्—व इमरोज़ तश्वीशे जहाने।'

मसनवी (बहरे हज़ज्)

अगर दुनिया न बाशद दर्दमन्दीम्।
व गर बाशद ब मिह्रश् पायबन्दीम्॥
बलाये ज़ीं जहाँ आशोबतर नेस्त।
कि रंजे ख़ातिर'स्त अर हस्त वर नेस्त॥

क़ता (बहरे ख़फ़ीफ़)

म तलब गर तवांगरी ख़्वाही।
जुज़ क़नाअ़त कि दौलते'स्त हनी॥
गर ग़नी ज़र ब दामन अफ़्शानद।
ता नज़र दर सवाबे ऊ न कुनी॥
कज़ बुज़ुर्गां शुनीदा अम् बिस्यार।
सब्रे दरवेश बिह कि बज़्ले ग़नी॥

और सामन्तो ने राजा की वरीयत पूरी की और दुर्ग और कोष की चाभियाँ उसे सौंप दी। (उसने) कुछ समय शासन किया। फिर कुछ सरदारो ने उसकी आज्ञापालन से गर्दन मोड ली और कई देशो के राजा हर तरफ से लडने को खडे हो गये और युद्ध के लिये फौजें सजा दी। सक्षेप मे सेना और सैनिक भी उसके विरुद्ध हो गये और कुछ दूरवर्त्ती प्रदेश उसके अधिकार से निकल गया। साधु इस घटना से चिन्तित और भग्नचित्त हो गया। इतने मे उसका एक पुराना मित्र जो कि भिखारी अवस्था में उसका साथी था, यात्रा से वापिस आया। उसका ऐसा मतरबा देखा तो बोला—'परमेश्वर की कृपा है कि (उसने) तेरा भाग्य इतना ऊँचा किया और प्रताप ऐसा बढाया। तेरा गुलाब काँटे से और काँटा तेरे पैर से निकल गया—कि इतना ऊँचा पद तूने पाया।'

'निश्चय दु ख के साथ सुख है।'

निरवहन्, कोषस्य दुर्गस्य च कुञ्चिकास्तस्मै ददु। स किञ्चित् काल यावत् शासनमकरोत्, तत केचन सामन्तास्ततो पराङमुखा बभूवु, कतिपयदेशीयाश्च राजानस्तेन सार्धं योद्धुमुद्यता सङ्गरार्थं च पृतना सज्जितवन्त। समासतस्तस्य सेना सैन्याश्चापि ततो विमुखा, दूरसस्था केचन प्रदेशाश्च तस्याधिकारान्मुक्ता। भिक्षु-राजोऽनेन घटनाक्रमेण भग्नचित्तश्च जात। तदानीमेव तस्य कश्चित् प्राक्तन सुहृद् यश्च भिक्षुकावस्थाया तस्य सहचार आसीत् यात्राया प्रत्यागत। यदा तमेतावन्तमुन्नत ददर्श, तदा स उवाच—'भगवत्कृपया ते सौभाग्य वृद्धिमगमत्, कुसुम ते कण्टकजालान्निर्गत कण्टक च पादान्निर्गत—येनैतावन्तमुच्चपद त्वमवाप इति।'

'सुखदु खे सहासाते।'

बैत

कली कभी खिलती है कभी मुरझा जाती है।
वृक्ष कभी नगा हो जाता है कभी ढक जाता है॥

श्लोक

कदाचित् कुसुम फुल्लेत् कदाचिद्धि विशीयते।
चितपत्रा क्वचिद्वृक्षा धृतपर्णाच्छदा क्वचित्॥ १०७॥

वह बोला—'हे प्रिय मित्र! मुझसे सहानुभूति कर—बधाई का अवसर नही है। तब जब कि तूने देखा था मुझे एक रोटी की चिन्ता थी—और आज एक दुनिया की चिन्ता है।'

स उवाच—'हे सखे! अनुकम्पार्होऽस्मि नायमवसरो हर्षस्य। आसीत्पुरा मे दृष्टपूर्वस्य पिण्डैकचिन्ता, इदानी जगतश्चिन्ताप्रवर्तितेति।'

मसनवी

यदि ससार (के भोग) न हो तो हम दु खी रहते है।
और यदि हो तो उसके प्रेम से हमारे पैर बँध जाते है॥
इसकी अपेक्षा दुनिया मे अशुभतर और नही है।
कि यह (ससार) दु ख का कारण होता ही है चाहे हो या न हो॥

गाथा

लब्धैश्वर्या न चेत् स्याम सतत दु खिता वयम्।
ऐश्वर्यं लब्धवन्तश्चेत् पाशपादास्ततो वयम्॥ १०८॥
दु खस्य कारण लोके न चैवास्ति तत परम्।
क्लेशहेतुर्भवत्येव लब्धालब्ध च वैभवम्॥ १०९॥

क़ता

मत माँग यदि तू सम्पन्नता चाहे।
सिवा सन्तोष के कि यही पूर्णधन है॥
यदि मालदार सोने से दामन भर दे।
तो उसके पुण्य पर निगाह मत कर॥
क्योकि बडो से मैने प्राय सुना है।
साधु का सन्तोष दाता के दान से बडा है॥

पदम्

मा याचिष्ठा क्वचित् कञ्चिदिच्छेश्चेद् वैभव परम्।
परितोषमृते किञ्चिन्न चास्ति निखिल धनम्॥ ११०॥
धनी धत्ते यदि क्रोडे कस्यचिद्धि हिरण्मयम्।
महिम्ना तेन मा भूस्त्वमभिभूत कदाचन॥ १११॥
बहुधा श्रुतवानस्मि चैतद्धि ज्यायसा मुखात्।
सन्तोषो मुनिवृत्तीना दातुर्दानाद् विशिष्यते॥ ११२॥

फर्द

यदि वहराम गोर विरयानी बनायें।
चींटी के लिये वह टिड्डे की टाँग जैसी भी नहीं है॥

श्लोक

आटोपसहित राजा वृहद् भोज व्यवस्यति।
पिपीलिका न मन्यन्ते शिलात् स्वादुतर च तम्॥ ११३॥

कथा—२८

एक आदमी का एक मित्र था जो कि दीवान का काम करता था। उसे काफी दिनो से उसके देखने का अवसर न मिला। किसी ने कहा—'अमुक को बहुत दिनो से तूने नही देखा।' उसने कहा—'मैं उसे नही चाहता कि देखूं।' सयोग से (वहाँ) दीवान का कोई आदमी उपस्थित था॥ वह बोला—'उसने क्या अपराध किया है कि तू उसे देखने से विरत है?' उसने कहा—'कोई अपराध नही है—लेकिन एक दीवान दोस्त को बर्खास्त होते समय भी देखा जा सकता है।'

आख्यायितम्—२८

कस्यचित् कश्चित् सुहृदासीद् यश्चामात्यकर्मणि नियुक्त आसीत्। स बहुदिन यावत् त नादर्शत्। केनचिदभिहितम्—'अमानुष चिरान्न दृष्टवानसि।' सोऽवदत्—'न तमह द्रष्टुकाम।' सयोगवशात् तत्रामात्यपरिकर कश्चित् पुमानुपस्थित आसीत्। स ब्रूते—'को न्वपराध सवृत्तो ह्यमात्येनाथ त द्रष्टुमुपरतोऽसीति?' सोऽवदत्—'नापराध कश्चित्, किन्तु अमात्यमित्रन्तु भ्रष्टाधिकार पदच्युतमपि द्रष्टु शक्यते।'

क़ता

बड़प्पन, लाभ और शासन के समय में।
लोग अपने मित्रो से मुक्ति चाहते है॥
अपने दुख और बरखास्तगी के समय।
दिल का दुःख मित्रो के सामने लाते है॥

पदम्

महत्त्व वैभवैश्वर्य प्रभुत्व प्रापिता जना।
पूर्वप्रीतिमवशाय मित्रेभ्यो मुक्तिमीप्सते॥ ११४॥
त एवार्तिसमापन्ने वापकर्षे समन्तत।
गाम गाम च मित्राणि ब्रुवते दुखमात्मन॥ ११५॥

कथा—२९

एक बड़े आदमी के पेट में विरुद्धवायु (अपानवायु) घुमडने लगी। उसको रोकने की शक्ति वह नही रखता था। विवश वह निसृत हो गयी। कहने लगा—'हे मित्रो! जो मैंने किया है उस पर मेरा अख्तियार नही था। और फरिश्ते इसे मेरे पापो में नही लिखेंगे। मुझे शान्ति मिली, आपलोग भी कृपया मुझे क्षमा करें।'

आख्यायितम्—२९

कस्यचिन् महाजनस्य कोष्ठेऽपानवायुराटोप कृतवान्। तस्य निग्रहसामर्थ्यं स न दधौ। निरुपाय स एन निसारितवान्। उवाच—'हे मित्राणि! यन्मया कृत न तस्मिन् मेऽधिकार। परलोकसगणका अपि न चैनत् पापमिति मस्यन्ते। मया शान्तिलब्धा, भवन्तोऽपि मयि क्षमा बुद्ध्यैव वतन्ताम्।'

मसनवी

हे बुद्धिमान्! पेट हवा का कारागार है।
नहीं रखता कोई बुद्धिमान् हवा को रोककर॥
जब हवा पेट में घुमडती है—उसे नीचे निकाल दे।
क्योंकि हवा पेट के अन्दर दिल का बोझ है॥

गाथा

कोष्ठ कारागृह प्रोक्त ह्यपानस्य तु मारुत।
न जातु धारयेद् धीमानपानस्य गति क्वचित्॥ ११६॥
आटोप कुरुते कोष्ठे प्रवाहेया अधोगतम्।
यत कोष्ठगतो वातो भारभूतो हृद मत॥ ११७॥

फर्द

कोई अपार मित्र मुंह बिगाड़कर।
यदि जाना चाहे तो उसके आगे (रोकने को) हाथ मत बढ़ा॥

श्लोक

भ्रात्यपेष्टां विधुर्वाणो यदि कश्चन सुहृत्।
यातुमिच्छेत् ततस्तस्य गच्छन्त त न वारयेत्॥ ११८॥

कथा—३०

अबू हुरैरा (उन पर परमात्मा की कृपा हो) प्रतिदिन मुहम्मद मुस्तफा (उन पर परमात्मा की शान्ति और स्वस्ति हो) की सेवा में आते थे। एक दिन रसूल (उन पर शान्ति हो) ने कहा—'हे अबू हुरैरा! मेरी जियारत एक दिन छोडकर कर तो प्रेम बढ़ेगा?' अर्थात् प्रतिदिन मत आ—ताकि मैत्री अधिक हो।

एक भक्त ने कहा—'इतनी खूबी सूर्य में है (पर) मैंने नही सुना कि उसका कोई दोस्त बना है—इस कारण से कि उसे प्रतिदिन देखते है—सिवा जाडो के जब कि वह पर्दे में होता है इसलिये वह प्रीति-भाजन होता है।'

आख्यायितम्—३०

अबू हुरैरा (प्रभोरनुग्रहस्तस्मै) प्रत्यह मुहम्मदस्य सेवाया (स्वस्त्यस्तु तस्मै सदा) गच्छति स्म।

एकदा मुहम्मद (स्वस्त्यस्तु तस्मै सदा) उवाच—'हे अबूहुरैरा! अन्येद्युर्मां प्रपत्स्व। यत प्रेम्णा वर्धसे।' 'अर्थात् प्रत्यह मागच्छ, यतो मैत्री वर्धते।'

केनचिन्महात्मनोक्तमथ—'सर्वगुणसम्पन्नोऽयमादित्य, न च श्रुतवानस्मि कोऽप्यनेन मैत्रीसम्बन्ध व्यवस्यति। कस्मात्—प्रत्यह दृष्टत्वादिति, ऋते शिशिराद् यदासाववगुण्ठितो भवति, अतएवास्य तस्मिन्नृतौ प्रियपात्रता।'

क़ता

आदमी को देखने जाने में ऐब नही है।
लेकिन इतना नही कि लोग कहें—'बस'॥
यदि तू अपनी भर्त्सना स्वय करेगा।
(तो) फटकार सुननी नही पड़ेगी किसी आदमी से॥

पदम्

द्रष्टु समागमे नैव दोष कश्चन विद्यते।
नातिमात्र यत कश्चिदलमुक्त्वा निवारयेत्॥ ११९॥
शोद्धासि यदि चात्मान स्वत एव निरन्तरम्।
नाधिगिष्यन्ति लोकास्त्वा शोधनव्यवसायिन॥ १२०॥

कथा—३१

एक समय मैं दमिश्क के मित्रो की सगति से ऊब गया। मैं पवित्र वन में जा बैठा और पशुओ से प्रेम करने लगा। यहाँ तक कि फिरंगियो (Franc—फ्रासीसियो—गोरो) की कैद में बन्दी बन गया और तारापोलिस की खान में यहूदियो के साथ मिट्टी उठाने में (उन्होने) लगा दिया। हलब देश का एक रईस—कि पुराना परिचय हम दोनो के बीच म था—उधर स गुजरा और उसने (मुझे) पहचान लिया। बोला—'यह क्या हालत है और तू कैसे निर्वाह कर रहा है?' मैंने कहा—

आख्यायितम्—३१

एकदाऽह दमिश्कस्थाना मित्राणा सङ्गत्या उपरतोऽगमम्। अह पुनीतकान्तारे (यरूसलमे), निविष्टो वन्यजन्तुभि सहारसि। ततोऽह फिरगाना बन्धनेऽपतम्। तरावुलूसस्य खाते यहूदिभि सह मृत्तिकाखनने नियुक्तश्च। कश्चिद् हलबदेशीयो धनिको येन साकमह पुरा मैत्रीसम्बन्धमधायि, ततो गच्छन् मामभिज्ञासीत्। सोऽवदत्—'इय का तेऽवस्था? कथमिह निर्वाह करोषि?' अहमवोचम्—

क़ता

मैं भाग रहा था आदमियो से पहाडो और जगलो में।
कि सिवा ईश्वर के मेरा दूसरे से ससर्ग न हो॥
कल्पना करो कि क्या हालत हुई होगी उस समय।
कि जब गैर इन्सानो के पाशबन्धन में रहना पडा॥

पदम्

विरक्तो लोकससर्गात् प्राप्तोऽह वनदुर्गमम्।
ईशादृते न पश्येय यतोऽहमितराञ्जनान्॥ १२१॥
अनुमन्यस्व काऽवस्था जायते स्म ततो मम।
अमानुषाणा पाशे च विवशेन मयोष्यत॥ १२२॥

बैत

पैर में जजीर (डाले) मित्रो के साथ।
(रहना) ठीक है, परायो के साथ बाग में रहने से॥

श्लोक

पाशेन बद्धपादोऽपि निवसेन् मित्रसन्निधौ।
अज्ञातजनसम्पर्के न च नन्दनकानने॥ १२३॥

उसे मेरी अवस्था पर दया आ गयी और (उसने) दस दीनार में मुझे फिरंगी की कैद से छुड़ा लिया। और अपने साथ हलब को ले गया। (उसके) एक लड़की थी—उससे मेरा विवाह कर दिया—सौ दीनार का दहेज देकर। कुछ समय बीता। वह लड़की बुरे स्वभाव की और कर्कशा थी। वह मुझसे झगड़ा करने और मेरे सुख को नष्ट करने लगी।

स मदीयायामवस्थाया दयार्द्रः सञ्जातः दशदीनारेण च मां फिरङ्ग-बन्धनादमोचयत्। आत्मना साधञ्च मां हलबदेशमनयत्। तस्यैका दुहिता कुमारिकाऽऽसीत्, तया मामूढवांश्च, शतमात्रं दीनारं प्रदायेति। एवं कञ्चित् कालं नीतवन्तावावाम्। सा दुहिता दुःशीला कुवृत्ता कर्कशत्वञ्चापन्ना मम क्षेमं प्राणश्यच्च।

मसनवी

बुरी पत्नी भले पति के घर में।
इसी दुनिया में उसके लिये नरक है॥
सावधान! बुरे संसर्ग से सावधान!
हमें बचाना, हमारे भगवान्, नरक की अग्नि से॥

गाथा

सज्जनस्य गृहस्थे या कर्कशा हि कुटुम्बिनी।
ज्ञेया रौरवरूपा सा पत्युरत्रैव सर्वथा॥ १२४॥
सावधानं प्रयतेथा दुष्टसंसर्गवर्जितः।
त्राहि त्राहि प्रभो चास्मान् नारकीयाग्नियातनात्॥ १२५॥

एक बार उसने ताना मारा और कहा—'क्या तू वही नहीं है कि जिसे मेरे बाप ने दस दीनार में वापिस खरीदा था?' मैंने कहा—'हाँ! दस दीनार में फिरंगी की कैद से मुझे छुड़ाया था और सौ दीनार में तेरे हाथों में कैद करा दिया।'

अथैकदा सा मामाक्षिप्तवती—'न चासि किं त्वं स एव मम तातेन दशदीनारैर्यः क्रीतः?' अहमवोचम्—'आम्! दशदीनारैस्तेनाहं मोचितः, शतदीनारैश्च त्वयि पुनर्निरुद्धः।'

मसनवी

मैंने सुना है कि एक भेड़ को किसी बड़े आदमी ने।
छुड़ाया एक भेड़िये के मुँह और हाथों से॥
रात के समय छुरी उसके गले पर फेर दी।
जाती हुई भेड़ ने उससे रोकर कहा॥
भेड़िये के हाथों से मुझे तूने छीना।
जब देखा तो अन्त में मेरा भेड़िया तू ही निकला॥

गाथा

श्रूयते ह्येडका काञ्चित् पुरुषश्चादरास्पदः।
वृकदंष्ट्रानखग्रस्तामुद्दधार कथञ्चन॥ १२६॥
नक्तं कृन्तेन चैतस्याः कण्ठच्छेदं चकार सः।
निघ्नानं म्रियमाणैडा रोदं रोदमवोचत॥ १२७॥
वृकदंष्ट्रास्वनुप्राप्ता मोचिताऽस्मि त्वया ननु।
पश्यामि चान्ततो गत्वा त्वमेवासि वृको मम॥ १२८॥

कथा—३२

एक राजा ने एक सन्त से जिसके कि बालबच्चे बहुत थे पूछा—'कि अपना अमूल्य समय कैसे बिताते हो?' उसने कहा—'रात नमाज़ पढ़ने में, प्रभात आवश्यकताओं की पूर्त्ति की प्रार्थना करने में और दिन खर्च की चिन्ता करने में।'

राजा को सन्त का संकेत ज्ञात हो गया। आज्ञा दी कि उसकी जीविका का प्रबन्ध निश्चित कर दिया जाय ताकि परिवार की चिन्ता का बोझ उसके चित्त से उठ जाय।

आख्यायितम्—३२

कश्चिद् राजा कञ्चिद् विपुलपरिवारं महात्मानं पृष्टवान्—'कथं भवता प्रेष्ठः कालो नीयते?' सोऽवदत्—'शर्वरीमुपासितेन, प्रभातं प्रभोरग्रे देहीति याचितेन, समं दिनञ्च कुतो लभ्यमिति विचारितेन कालं नये।'

राजा महात्मनः इङ्गितमवगतवान्। उपादिशच्च—'एतस्य प्राणयात्रा प्रबन्धो विधेयो यतः परिवारभरणपोषणचिन्ता मनोभारभृता न स्यादिति।'

मसनवी

हे परिवार के वन्धन से पैर जकडे हुए।
दूसरी स्वतन्त्रता का खयाल भी मत करना॥
वेटे की चिन्ता और रोटी और कपडे और जीविका की।
तुझको पीछे रखती है फरिश्तो के गुणो से॥
सारे दिन में सकल्प वाँधता हूँ।
कि रात को ईश्वर की उपासना करूँगा॥
रात को जव नमाज का अक्द वाँधता हूँ।
क्या खायेंगे सवेरे मेरे वच्चे॥

गाथा

कुटुम्वभरणोद्वेगगृहीतचरणा निशम्।
इदानी स्वैरसञ्चारे मा चित्त धेहि कञ्चन॥१२९॥
सुतचिन्ताऽन्नचिन्ता च वासश्चिन्ता तथैव च।
दैवीयगुणसंसिद्धौ वाधते त्वा पदे पदे॥१३०॥
दिवा दधामि सकल्प नित्य हि दिवसोदये।
करिष्ये भगवत्सेवामद्य नक्तमुपासनाम्॥१३१॥
शार्वर्यामीशसेवाया यथापूर्वमुपक्रमम्।
तथैवार्भा किमत्तार इति चिन्ता प्रवर्तते॥१३२॥

कथा—३३

एक महात्मा जगल में जीवन यापन करता था और पेडो की पत्तियाँ खाता था। राजा जियारत करने उसके पास गया और कहा—'यदि उचित समझें तो नगर में चलिये ताकि मैं आपके लिये स्थान की व्यवस्था करूँ, जिसके कि प्रार्थना का अवसर इससे अधिक हो सके और दूसरे लोग भी आपके भाषणो के आशीर्वाद से लाभान्वित हो। और आपके चरित्र से शिक्षा लें।' महात्मा को यह वात स्वीकार नही हुई और (उसने) मुँह मोड लिया। एक राज्य मन्त्री ने कहा—'राजा की सम्मान रक्षा के लिये उचित है कि कुछ दिन नगर में रहिये और स्थान देख लीजिये। अत यदि वहुमूल्य समय की पवित्रता में विघ्न हो तो आपको अधिकार है।'

महात्मा ने स्वीकृति दे दी और नगर में आ गया। उसके लिये राजा का खास उद्यानघर सजाया गया। उसने वह स्थान देखा चित्त प्रसन्न कर, और आत्मा को आह्लादित करने वाला।

आख्यायितम्—३३

कश्चिन्महात्मा कान्तारे जीवनयापनमकरोत् पर्णं चाभुक्त। राजा तीर्थवुद्ध्या तमगमदवदच्च—'यदि समीचीन मन्यसे, नगरगेहि, यतस्त्वा निधान व्यवस्यामि, येनातोधिकस्ते प्रार्थनावसर स्यादन्येऽपि त्वत् पुण्यवचोभिर्लाभान्विता स्यु। त्वच्चरित्राच्च स्व स्व चरित्र शिक्षेरन् पौरजना।' महात्मानमिदमभिमत न जात मुख चासौ प्रतिववृते।

कश्चिदमात्य ऊचे—'राज्ञ सम्मानरक्षार्थमिद युज्यतेऽथ कतिपय दिन यावत् पुरवासमनुष्ठीयता निधानञ्च दृश्यताम्। ततश्चे-दुपासनाया कश्चिद् विघ्न स्यात्तर्हि प्रभवति यथाभिमतस्यात्र भवानिति।' महात्मा ततोऽनुमति ददौ। नगरञ्चागत। तस्मै राजकीयमुद्यान सज्जितम्। स तत् चित्तप्रसादमात्माह्लाद च प्रासाद ददर्श।

मसनवी

उसके लाल फूल, जैसे सुन्दरियो के गाल।
उसकी सुम्बुल, जैसे प्रेयसियो का केशजाल॥
ऐसे थे मानो शीतपूतना के भय से।
धाय का अनपिये दूध वालक हो अव तक॥

गाथा

रेजेऽरुणानि पुष्पाणि कपोलमिवयोषिताम्।
कवरीव प्रियायाश्च सुम्वुलस्तवकस्तथा॥१३३॥
पूतनाशीतपूर्वाया सन्त्रासात् किल भीरुका।
दुग्धाध्मातस्तनी धात्रीमपीत इव वालका॥१३४॥

बैत

और शाखाएँ जिन पर अनार के फूल।
लटकी हो हरे पेड से जैसे आग॥

राजा ने इस हालत मे एक सुन्दरी कन्या उसके सामने भेजी।

श्लोक

शाखासु तत्र पुष्पाणि दाडिमीयानि रेजिरे।
यथा हरित वृक्षेषु परिलग्न इवानल ॥ १३५॥

राजा तत परमेका सुन्दरी सेवादासी तस्य पुरत प्राहिणोत्।

नज्म

इस चाँद के टुकडे, मुनिमन मोहिनी।
अप्सरा मृगी, मयूर परवशोभिता को॥
देखने के बाद कोई सूरत नही बाती।
कि तपस्वी जनो का धैर्य बचा रह जाय॥

इसी प्रकार इसके पीछे दुर्लभ सौन्दर्य से युक्त एक सुडौल दास भेजा।

प्रबन्ध

इय चन्द्रमुखी बाला सुरूपा मुनिमोहिनी।
दिव्य देवाङ्गनाकारा बर्हि पिच्छ सुशोभिता॥ १३६॥
दृष्टमात्रेण चैवैना न चैतत् प्रतिभाव्यते।
तप सर्वस्व साधूना धैर्यमुत्तिष्ठतेऽच्युतम्॥ १३७॥

एव ह्यत पर दुर्लभसौन्दर्य युक्त सुदर्शनञ्च दासमेक तत्सकाश प्राहिणोत्।

बैत

मरते हैं लोग उसके चारो ओर प्यास से।
और वह साकी देखता है और नही पिलाता॥
आख उसको देखने मे तृप्त नही होती।
जैसे कि फरात (के जल) से तृषा रोगी तृप्त नही होता॥

महात्मा ने स्वादिष्ट भोजन करना, कोमल वस्त्र पहनना और सुगन्धित फलो को सूँघना और दास और दासी की सुन्दरता पर दृष्टिपात करना शुरू कर दिया। और विद्वान् लोग कह गये है कि—'सुन्दरियो की लटें बुद्धि के पैरो की जजीर है और ज्ञानरूपी पक्षी के लिये जाल है।'

पदम्

म्रियन्ते परितो ह्येन लोका खलु तृषातुरा।
पश्यन्नपि प्रपावान् स पानीय न च पाययेत्॥ १३८॥
दृष्टिर्नाप्यायते तस्य दर्शनेन कदाचन।
पाय पाय यथा तोय तृषारोगी न तृप्यति॥ १३९॥

महात्माऽथ स्वाद्वन्नभोजन, मसृण च परिधान, सुगन्ध-फलानामाघ्राण, दासस्य दास्याश्च सौन्दर्ये दृष्टिपातमारेभे। बुद्धिमन्तश्चाहु—'सुन्दरीणा केशकलापो हि नाम प्रज्ञापददाम, ज्ञानपक्षिणो वागुरा चेति।'

बैत

तुझ पर मैने दिल, धर्म और सारा ज्ञान वार दिया।
मैं ज्ञानरूपी पछी हूँ और तू आज मेरा जाल है॥

सक्षेप में, महात्मा के चिरकालार्जित कोप का क्षय हो गया।

श्लोक

हृदय धर्म विद्वारो ज्ञानञ्च त्वार्पित मम।
मन्ये विहगमात्मान जाल त्वा चैव चेतस ॥ १४०॥

समासतस्तपस्विनश्चिरादर्जितस्य तपोधनस्य क्षय सञ्जात।

क़ता

वह चाहे जो भी हो धर्मशास्त्री गुरु, शिष्य।
चाहे पवित्रात्मा महोपदेशक हो॥
जब इस अधमलोक में अवतीर्ण होता है।
तो मक्खी की तरह शहद में लिपटकर रह जाता है॥

पदम्

धर्मज्ञो वा महात्मा वा शास्ता शिष्यस्तथापि वा।
उपदेष्टा महान् वाऽथ पवित्रात्मास्तु वा क्वचित्॥ १४१॥
यदा ह्यस्मिन्नधोलोकेऽवतीर्णो खलु जायते।
जायते मधुलीढाङ्गो लिप्तपक्षेव मक्षिका॥ १४२॥

एक बार राजा ने उसको देखने की कामना की। महात्मा को देखा कि पहले जीवन से बदला हुआ है और गोरा और लाल हो गया है। और मुटा गया है, अच्छे कपडे पहने हुए है और रेशमी तकिये पर विश्राम कर रहा है और किन्नर मुख दास मोरपख लेकर उसके सिरहाने खडा हुआ है। (राजा ने) उसकी कुशलावस्था पर बडा हर्ष मनाया और (पास) बैठ गया। हर विषय पर बात छेडी और अन्त में कहा—'मैं दुनिया में इन दो वर्गो को अपना मित्र मानता हूँ—विद्वानो को और सन्त महात्माओ को।' तत्वज्ञ और अनुभवी मत्री उपस्थित था। वह बोला—'हे स्वामी! मित्रता की शर्त यह है कि आप दोनो वर्गो के साथ भलाई करे। विद्वानो को धन दें जिससे कि औरो को पढाएँ और सन्तो को कुछ मत दीजिये ताकि (वे) भक्ति से विमुख न हो जायें।'

अथैकदा राजा त द्रष्टुमैच्छत्। महात्मानमपश्यत् पूर्वावस्थात परिवर्त्तित गौरारुणाङ्ग, पीनावयव, सुवाससाच्छन्न, कौशेयशिरोवान स्थितमूर्धान, पृष्ठभागस्थितकिन्नरमुखदासदोलायमानमयूरपिच्छ चमरञ्च। राजा तस्य सुखावस्था विज्ञाय प्रमुदित उपनिविष्ट बहून् विषयान् परिक्रम्यान्तत उवाच—'अहमेतौ द्वौ जनौ मित्रकल्पौ मन्ये। विदुषोऽथ तपस्विनश्च।' तत्त्वज्ञो बहुश्रुतश्चामात्योऽपि तत्रास्ते। स ब्रूते—'हे स्वामिन्! उपकाराश्रयो हि मैत्रीसम्बन्ध। विद्वद्भ्यो धन देहि यस्मादेते वटूनध्यापयेयुस्तपस्विभ्यश्च किञ्चिच्चापि मा देहि यस्मादेते भक्तिविरता न स्युरिति।'

फर्द

न भक्त को दिरम चाहिये न दीनार।
यदि वह ले ले तो दूसरे सन्त का समागम कर॥

श्लोक

दिरम न च दीनारमिष्यते त्यागवृत्तिभि।
यदीष्यते वृणुष्वान्य महात्मान तपोधनम्॥ १४३॥

क़ता

सुन्दरी और पवित्र मुखवाली नारी को।
कहो कि—शृङ्गार साधन और फिरोज़ा की अँगूठी को रहने दे॥
सच्चरित्र और उत्तम स्वभाव वाले साधु को।
कहो कि—दान की रोटी और भीख के टुकडे रहने दे॥
जिसके गुण अच्छे है और जो परमात्मा का अन्तरग है।
वह बिना दान की रोटी और भीख के टुकडो के भी साधु है॥
सुन्दरी की अँगुली और चित्तमोहिनी के कान की पाली।
बिना कुण्डल और फीरोजा की अँगूठी के भी प्रिय हैं॥

पदम्

रूपयौवनसम्पन्ना पवित्रमुखमण्डलाम्।
कामयानामलकारमूर्मिका ब्रूहि—'मा शुच'॥ १४४॥
साधु चैव गुणोपेत शुभवृत्तिसमन्वितम्।
मधूकरी कामयान भैक्ष्यञ्च ब्रूहि—'मा शुच'॥ १४५॥
यस्य चास्तीह सद्वृत्त भक्तिश्चैवेश्वर प्रति।
मधूकरी च भिक्षान्नमृतेऽपि साधुरेव स॥ १४६॥
सर्वाण्यङ्गानि सुन्दर्या श्रोत्रेऽङ्गुल्यस्तथापि च।
नानाकेयूरमुद्राभ्न्य मण्डितानीव सर्वदा॥ १४७॥

बैत

जब तक मेरे पास है और मुझे और चाहिये।
(तो) यदि मुझे ज़ाहिद न कहें तो उचित ही है॥

श्लोक

यावदस्ति हि मे वित्त मयान्यच्चापि गृध्यते।
तावन्माञ्चेन्न मन्यन्ते साधु लोकास्तु तद् वरम्॥ १४८॥

कथा—३४

इसी प्रसग के अनुसरण में, एक राजा को एक समस्या आ पडी। उसने कहा—'यदि इस काम का परिणाम मेरी अभिलाषा के अनुकूल हुआ—तो कुछ दिरम सन्तो को बाँटूंगा।' जब उसकी अभिलाषा

आख्यायितम्—३४

पुनश्च प्रसङ्गेन विस्तृणीमहे। अथ कस्यचिद् राज्ञ किञ्चिद्भयकारणमुपस्थितम्। सोऽवदत्—'यदि कार्यस्यास्य फल मे मनोऽनुकूल स्यात् तर्हि कतिचिद् दिरमानि साधुभ्यो वितरिष्यामीति।'

حکایت ۳

جوانی خردمند از فنون فضائل حظی وافر داشت و طبعی نافر - چندانکه در محافل دانشمندان نشستی زبان از گفتن ببستی * باری پدر گفتش - ای پسر! تو نیز از آنچه دانی چرا نگوئی؟ گفت - ترسم که از آنچه ندانم پرسند و شرمسار گردم *

قطعه

آن شنیدی؟ که صوفی میکوفت
زیر نعلین خویش میخی چند -
آستینش گرفت سرهنگی
که بیا - نعل بر ستورم بند *

بیت

نگفته - ندارد کسی با تو کار
ولی - چون بگفتی - دلیلش بیار *

حکایت ۴

یکی‌را از علمای معتبر مناظره افتاد با یکی از ملاحده لَعَنَةُ اللهِ عَلَی حِدَه * بحجت با او بر نیامد * سپر بینداخت و بر گشت * کسی گفتش - ترا - با چندین علم و ادب که داری - با بی‌دینی بر نیامدی؟ گفت - علم من قرآنست و حدیث و گفتار مشائخ - و او بدینها معتقد نیست و نمیشنود - مرا شنیدن کفر او بچه کار آید؟

بیت

آن کس که بقرآن و خبر زو نرهی
آنست جوابش - که جوابش ندهی *

حکایت ۵

جالینوس حکیم ابلهی‌را دید - دست در گریبان دانشمندی زده بود و بی‌حرمتی میکرد * گفت - اگر این دانا بودی کار او با نادان بدینجا نرسیدی - که گفته اند -

हिकायत—३

जवाने ख़िरदमन्द अज़ फ़ुनूने फ़ज़ाइल हज़्ज़े वाफ़िर दाश्त व तबाए नाफ़िज़। चन्दाँकि दर महाफ़िले दानिशमन्दान् निशस्ते ज़बान अज़ गुफ़्तन् व बस्ते। बारे पिदर गुफ़्तश्—'ऐ पिसर! तो नीज़ अज़ आँचि दानी चिरा न गोयी?' गुफ़्त—'तरसम् कि अज़ आँचि न दानम् पुर्सन्द व शर्मसार गर्दम्।'

क़ता (बहरे ख़फ़ीफ़)

आ शुनीदी कि सूफ़िये मी कोफ़्त।
ज़ेरे नालैने ख़ेश मेख़े चन्द॥
आस्तीनश् गिरिफ़्त सरहंगे।
कि बिया नाल बर सुतूरम् बन्द॥

बैत (बहरे मुतक़ारिब)

न गुफ़्ता—न दारद कसे बा तो कार।
वले चू बिगुफ़्ती दलीलश् बियार॥

हिकायत—४

यके रा अज़ उलमाय मोतबिर मनाज़िरा उफ़्ताद बा यके अज़ मुलाहिदा (लानतु'ल्लाहि अला हिदहि)। व हुज्जत बा ऊ बर नयामद। सिपर बियन्दाख़्त व बर गश्त। कसे गुफ़्तश्—'तुरा बा चन्दी इल्मो अदब कि दारी—बा बेदीने बर नयामदी?' गुफ़्त—'इल्मे मन् क़ुरान'स्त व हदीस व गुफ़्तारे मशाइख़ व ऊ बदी हा मोतक़िद नेस्त व नमी शिनवद—मरा शुनीदने कुफ़्रे ऊ ब चि कार आयद?'

बैत (बहरे हज़ज्)

आँ कस कि ब क़ुरआनो ख़बर ज़ू न रिही।
आन'स्त जवाबश् कि जवाबश् न दिही॥

हिकायत—५

जालीनूस हकीम अबलहाये रा दीद—दस्त दर गिरेबाने दानिशमन्दे ज़दा बूद व बेहुरमती मी कर्द। गुफ़्त—'अगर ईं दाना बूदे कारे ऊ बा नादान बदी जा न रसीदे—कि गुफ़्ता अन्द—

कथा—३

एक बुद्धिमान् युवक अनेक विद्याओं और गुणों से युक्त, सम्पूर्ण सुखी था और सुसंस्कृत स्वभाव वाला था। जब कभी विद्वानों की सभा में बैठता था, ज़बान को खोलने से बन्द रखता था। एक बार उसके पिता ने उससे कहा—'हे पुत्र! तू भी, जो जानता है क्यों नहीं कहता?' पुत्र ने कहा—'मैं डरता हूँ कि जो मैं नहीं जानता, वह न पूछ बैठे और मैं लज्जित होऊँ।'

आख्यायितम्—३

कश्चिद्बुद्धिमान् युवा बहुविधविद्यासमन्वितो गुणगुम्फितः, सर्वसुखी, संस्कृतस्वभावश्चासीत्। यदाऽसौ विद्वत्परिषदि निविशते स्म तदा वाक्संयमं कुरुते स्म। एकदा तस्य पिता तमब्रवीत्—'हे पुत्र! त्वमपि यज्जानासि कथं न ब्रूषे?' सोऽवदत्—'बिभेमि यन्न तत् कोऽपि मा पृच्छेद् यन्न जानीयाम्, येन लज्जितः स्यामिति।'

क़ता

क्या तू ने यह सुना है कि एक सूफ़ी ठोक रहा था।
अपने जूतों के नीचे कुछ कीलें।।
एक सिपाही ने उसकी बाँह पकड़ी।
कि—आ, मेरे घोड़े की भी नाल बाँध दे।।

पदम्

श्रुतवानसि कश्चिद्धि सूफी सकीलयन् स्थितः।
पादत्रयोरधस्ताच्च स्वस्य कीलानि कञ्चन।। ५।।
उत्तरीये च जग्राह सूफिनं सैनिकः क्वचित्।
इत एहि ममाश्वोऽपि सुरत्रेण विधीयताम्।। ६।।

बैत

न बोलने पर—नहीं लगेगा कोई तुझ से काम।
लेकिन जब तू बोले तो उसकी युक्ति ला।।

श्लोक

धृतमौनं हि दोषेण न त्वां क्षेप्स्यति सदा नरः।
युक्त्याऽनुमोदितं ब्रूया अथ चेद्धि विवक्षसि।। ७।।

कथा—४

एक प्रसिद्ध विद्वान् का विवाद एक नास्तिक से हो गया (भगवान् की लानत उनमें से हर एक पर)। तर्क में वह उससे पार न पा सका। उसने ढाल (हथियार) डाल दिये और चला गया। किसी ने उससे पूछा—'तुझे इतना ज्ञान और साहित्य आता है और एक धर्महीन से नहीं जीत सका?' वह बोला—'मेरा ज्ञान कुरान, हदीस और धर्माचार्यों के वचनों में है और वह इनका विश्वासी नहीं है और उनकी बात नहीं सुनता। मुझे ही उसका कुफ़्र सुनना किस काम आता?'

आख्यायितम्—४

कश्चिदुद्भटो विद्वान् केनचिन् नास्तिकेन सार्धं शास्त्रार्थे प्रवृत्तः (धिक्कारपात्रौ च तौ)। तर्केणासौ नास्तिकं जेतुं न शशाक। अतः पराजयमङ्गीकृत्य ततो गतः। कश्चित् पृष्टवान्—'त्वमेतावद् विद्या, साहित्यसम्पन्नोऽपि सन् नास्तिकं कथं न जितवानसि?' सोऽवदत्—'मदीयं ज्ञानं तु कुरान-हदीस-धर्माचार्याणां प्रतिपत्ति-मूलकमस्ति। स च नेमानि विश्वसिति न च श्रोतुमिच्छति चैतानि। ममैव पुनः कोऽर्थः श्रुतेनैतस्य नास्तिक्येनेति?'

बैत

वह जिससे कि कुरान और हदीस के द्वारा तू न छूटे।
उसका जवाब यही है कि उसे जवाब न दे।।

श्लोक

शास्त्रेण च पुराणेन येन पिण्डं न मुच्यते।
अर्थतस्य श्रुतास्य मौनमेवोत्तरं वरम्।। ८।।

कथा—५

जालीनूस पण्डित ने एक मूर्ख को देखा कि एक विद्वान् की गर्दन पर हाथ लगा रहा है और अपमान कर रहा है। उसने कहा—'यदि यह विद्वान् होता तो इसका झगड़ा मूर्ख के साथ इस हद तक न पहुँचता—क्योंकि कहा गया है—

आख्यापितम्—५

जालीनूसपण्डितः कञ्चिन्मूर्खमपश्यत्। विदुष उत्तरीयं गृहीत-वन्तमपमानं प्रकुर्वन्तञ्च। सोऽवदत्—'यद्ययमयं विद्वानभविष्यत् तर्हि मूर्खेण सार्धमेतावत् कलहो नाभविष्यदिति। यतः—

مثنوی

دو عاقل‌را نباشد کین و پیکار
نه دانائی ستیزد با سبکسار *
اگر نادان بوحشت سخت گوید
خردمندش بنرمی دل بجوید *
دو صاحب دل نگه دارند موئی
همیدون سرکش و آزرم جوئی *
و گر از هر دو جانب جاهلانند
اگر زنجیر باشد - بگسلانند *
یکی‌را زشت خوئی داد دشنام
تحمل کرد و گفت - ای نیك فرجام!
بتر زانم که خواهی گفت ”آنی“
که دانم عیب من چون من ندانی *

حکایت ۶

سحبان وائل‌را در فصاحت بی‌نظیر نهاده اند بحکم آنکه بر سر جمع سالی سخن گفتی و لفظی مکرر نکردی - و اگر همان سخن اتفاق افتادی بعبارتی دیگر بگفتی - و از جملهٔ آداب ندمای حضرت پادشاهان یکی اینست *

مثنوی

سخن - گر چه دلبند و شیرین بود -
سزاوار تصدیق و تحسین بود -
چو یاری بگفتی - مگو بار - پس
که حلوا چو یکبار خوردند و بس *

حکایت ۷

یکی‌را از حکما شنیدم - که میگفت - هرگز کسی بجهل خویش اقرار نکرده است - مگر آن کس که چون دیگری در سخن باشد - همچنان تمام نا گفته - سخن آغاز کند *

مثنوی

سخن‌را سرست - ای خردمند! و بن
میاور سخن در میان سخن *

मसनवी (वहरे हज़ज्)

दु आक़िल रा न वाशद कीनो पैगार।
न दानाए सतेज़द वा सुबुकसार॥
अगर नादाँ व वह्शत सख़्त गोयद।
ख़िरदमन्दश् व नर्मी दिल व जोयद॥
दु साहिव दिल निगह दारन्द मूये।
हमीदूँ सरकशो-ओ-आज़रम जूये॥
व गर अज़ हर दु जानिव जाहिलानन्द।
अगर ज़न्जीर वाशद वगुसलानन्द॥
यके रा ज़िश्त ख़ूये दाद दुश्नाम।
तहम्मुल कर्दो गुफ़्त—ऐ नेक फ़रजाम॥
वतर ज़ानम् कि ख़्वाही गुफ़्त—'आनी'।
कि दानम् ऐबे मन् चू मन न दानी॥'

हिकायत—६

सहबाने वायल रा दर फ़साहत बेनज़ीर निहादा अन्द व हुक्म आँकि बर सरे जमअ साले सुख़ुन गुफ़्ते व लफ़्ज़े मुकर्रर न कर्दे—व अगर हमाँ सुख़ुन इत्तिफ़ाक़ उफ़तादे व इबारते दीगर व गुफ़्ते—व अज़ जुमलाए आदावे नुदमाय हज़रते पादशाहान् यके ईन'स्त।

मसनवी (वहरे मुतक़ारिब)

सुख़ुन गर्चे दिलवन्दो शीरीं वुवद।
सज़ावार तसदीक़ा तहसीं वुवद॥
चु वारे विगुफ़्ती—मगो वाज़ पस।
कि हलवा चु यक वार ख़ुरदन्दो वस॥

हिकायत—७

यके रा अज़ हुकमा शुनीदम् कि मी गुफ़्त—'हरगिज़ कसे व जहले ख़ेश इक़रार न कर्दा अस्त—मगर आँ कस कि चूँ दीगरे दर सुख़ुन वाशद—हमचुनाँ तमाम ना गुफ़्ता—सुख़ुन आग़ाज़ कुनद।'

मसनवी (वहरे मुतक़ारिब)

सुख़ुन रा सर'स्त ऐ ख़िरदमन्द ओ बुन।
मयावर सुख़ुन दर मियाने सुख़ुन॥

طبعی
نان ار
ملاحده
سپر
چندین
گفت -
ندیمها
او بچه
گرسان
اگر این
نته اند -

मसनवी

दो बुद्धिमानों में नहीं होता द्वेष और झगड़ा।
और न एक बुद्धिमान् ही अज्ञानी से लडता है॥
यदि अज्ञानी उत्तेजना में कड़ी बात कह दे।
तो बुद्धिमान् उसकी, नरमी से, दिल जोयी करता है॥
दो सहृदय व्यक्ति एक बाल की भी रक्षा करते हैं।
इसी प्रकार असज्जन और सज्जन भी॥
और यदि दोनों ओर जाहिल हों।
यदि जंजीर भी हो तो तोड़ देते हैं॥
किसी को एक दुष्ट ने गाली दी।
(उसने) सह लिया और कहा—हे भले आदमी॥
मैं उससे भी बदतर हूँ जो तू कहना चाहता है "कि तू यह है"।
क्योंकि मैं जानता हूँ मेरे दोष, मेरी तरह तू नहीं जानता॥'

गाथा

द्वयोर्बुद्धिमतोर्मध्ये न वैरावसरः क्वचित्।
न चापि कलहं कुर्यात् प्राज्ञश्चाज्ञेन कश्चन॥ ९॥
क्रोधाविष्टोऽथ चेन्मूर्खः कुर्वीत कटुभाषणम्।
आर्जवेन च तं प्राज्ञो मनोज्ञवचसा व्रजेत्॥ १०॥
द्वौ सज्जनौ तु रक्षेतां रोमखण्डमपि परस्परम्।
सज्जनासज्जनौ स्यातां व्यवहारे तथैव च॥ ११॥
उभयोः पक्षयोः किन्तु यदि स्यातामसज्जनौ।
अपि चेत् शृङ्खला नूनं छिन्द्यातामचिरेण तौ॥ १२॥
कश्चित् प्राज्ञः कुवृत्तेन चापशब्दैरुदीरितः।
स सेहे प्राब्रवीच्चैनमस्त्येवमयि! पुण्यवाक्॥ १३॥
दुराशयतरश्चाहं यथा मामत्र विवक्षसि।
यन्मे दोषांश्च जानामि न त्वं जानासि तांस्तथा॥ १४॥

कथा—६

सहबाने वायल को वाग्मिता में अनुपम माना गया है क्योंकि वह एक सभा में एक वर्ष व्याख्यान देता रहा और एक भी शब्द दुबारा नहीं बोला, और यदि उसी बात का संयोग पड़ा तो दूसरी तरह कहा, और राजाओं के सभासदों के गुणों में से यह भी एक है।

आख्यायितम्—६

वायलीयः सहबानो वाग्मितायामद्वितीय आसीत्। यतः स एकस्यां सभायामेकदा वर्षैकपर्यन्ताद् व्याख्यापयन् स्थितो न जानु शब्दमेकञ्चापि पुनरुक्तवान्। अथ च पुनरुक्तौ सति स वाक्यं प्रकारान्तरेणोवाच। राज्ञां सभासदामन्यतमोऽयं गुणः प्रकीर्तितः।

मसनवी

बात भले ही चित्ताकर्षक और मधुर हो।
समर्थन और प्रशंसा के योग्य हो॥
जब एक बार तू कह चुके तो फिर मत कह।
क्योंकि हलवा जब एक बार लोग खा चुके तो बस है॥

गाथा

सुभाषितं चेन् मधुरं मनोहरमुदाहृतम्।
समर्थनाहमाशंसापात्रञ्चापि भवेत् पुनः॥ १५॥
सकृदाऽऽख्यातवांश्चेत् त्वं पुनरुक्तौ मा भज।
स्वाद्वन्नमेकदा भुक्तं प्रीणनाय भवत्यलम्॥ १६॥

कथा—७

किसी पण्डित को मैंने सुना कि कह रहा था—'कभी भी कोई आदमी अपनी मूर्खता का इकरार नहीं करता, सिवा उस आदमी के कि जब दूसरा बोलता हो, और बात पूरी न कर चुका हो तो अपनी बात शुरू कर देता है।'

आख्यायितम्—७

अहं कञ्चित् पण्डितं ब्रुवन्तमश्रौषमयं—'न जातु केनचित् पुंसा स्वस्य मौर्ख्यं तथा प्रमाणीक्रियते यथा च, येन परार्धे व्याहरति वाक्यं छित्त्वा चान्तरा वक्तुमुत्सहते स्वयमेवेति मूर्खराट्।'

मसनवी

बात का सिर होता है, हे पण्डित! और दुम भी।
मत ला बात को बात के बीच में॥

गाथा

वचसो वर्तते मुण्डं तथा पुच्छं च वाग्मिन्।
मा वादिष्ठाः कथा स्वीयां तन्माद् वार्ता मध्यतः॥ १७॥

حداوند تدبیر و فرهنگ و هوش
نگوید سخن تا نه بیند خموش *

حکایت ۸

تنی چند از ندیمان سلطان محمود حسن میمندی‌را گفتند - که سلطان امروز چه گفت ترا در فلان مصلحت؟ گفت - بر شما هم پوشیده نماند * گفتند - آنچه با تو گوید - که ظهیر سریر سلطنتی و مشیر تدبیر مملکت - بامثال ما گفتن روا ندارد * گفت - باعتماد آن کی داند که با کسی نگویم - پس چرا همی پرسید؟

بیت

نه هر سخن که بر آید نگوید اهل شناخت
بسر شاه سر خویش در نشاید باخت *

حکایت ۹

در عقد بیع سرائی متردد بودم * جهودی گفت - آخر بخر - که من از کدخدایان قدیم این محلتم - وصف اگر این خانه - چنانکه هست - از من بپرس - که هیچ عیبی و ار ندارد * گفتم - بخر این که تو همسایهٔ من باشی *

قطعه

خانهٔرا - که چون تو همسایه است
ده درم سیم کم عیار ارزد
لیکن امیدوار باید بود
که پس از مرگ تو هزار ارزد *

حکایت ۱۰

یکی از شعرا پیش امیر دزدان رفت و ثنا بگفت * بفرمود تا جامه ازو بدر کردند * سگان در قفا افتادند * خواست تا سنگی بر دارد - زمین یخ بسته بود - عاجز شد * گفت - این چه حرامزاده مردمانند! که سگ‌را گشاده و سنگ‌را بسته * امیر از غرفه می‌دید - بشنید - بخندید و گفت - ای حکیم! چیزی بخواه * گفت - جامهٔ خود میخواهم - اگر انعام فرمائی -

खुदावन्दे तदबीरो फरहगो होश।
न गोयद सुखुन ता न बीनद खमोश॥

हिकायत—८

तनी चन्द अज नदीमाने सुल्तान महमूद हसन मैमन्दीरा गुफ्तन्द—'कि सुल्तान इमरोज़ चि गुफ्त तुरा दर फलाँ मस्लहत?' गुफ्त—'वर शुमा हम पोशीदा न मानद।' गुफ्तन्द—'आँ चि वा तु गोयद कि ज़हीरे सरीरे सल्तनती व मुशीरे तदवीरे ममलुकत व अमसाले मा गुफ्तन् रवा न दारद।' गुफ्त—'व ऐतमादे आँकि दानद कि वा कसे न गोयम्—पस चिरा हमे पुरसेद?'

वैत (वहरे मुज्तश्)

नै हर सुखुन कि वर आयद वगोयद अहूले शनाख्त।
व सिरे शाह सरे खेश दर न शायद बाख्त॥

हिकायत—९

दर उक्दे बैऐ सराय मुतरद्दिद बूदम। जहूदे गुफ्त—'बिखर—कि मन् अज़ कदखुदायाने कदीमे ईं मुहल्लतम्—वस्फे ईं खाना चुनांकि हस्त—अज मन् विपुर्स—कि हेच ऐबे न दारद।' गुफ्तम्—'वजुज़ ईं कि तो हमसायाए मन् बाशद।'

कता (वहरे खफीफ)

खानाए रा कि चूं तो हम साया'स्त।
दह दिरम सीम कम अयार अर्ज़द॥
लेकिन उम्मीदवार बायद बूद।
कि पस अज मर्गे तो हज़ार अर्ज़द॥

हिकायत—१०

यके अज शुअरा पेशे अमीरे दुज़्दान् रफ्त व सना बगुफ्त। फरमूद ता जामा अज़ू बदर कर्दन्द। सगान् दर कफा उफ्तादन्द। ख्वास्त ता सगे वर दारद—ज़मीन यख बस्ता बूद—आजिज़ शुद। गुफ्त—'ईं चि हरामज़ादा मर्दुमानन्द! कि सग रा कुशादा व सग रा बस्ता।' अमीर अज़ गुरफा मीदीद—बशुनीद—बिखन्दीद व गुफ्त—'ऐ हकीम चीज़े बिख्वाह।' गुफ्त—'जामाए खुद मी ख्वाहम् अगर इनआम फरमाई।'

युक्ति, बुद्धि और विवेक का स्वामी।
नहीं बोलता बात जब तक कि चुप नहीं देखता॥

कथा—८

सुल्तान महमूद के कुछ निकटवर्ती लोगों ने हसन मैमन्दी से कहा कि 'सुल्तान ने आज आपसे अमुक विषय में क्या कहा?' उसने कहा—'आप लोगों पर भी अविदित न रहेगा।' लोगों ने कहा—'वह जो कि तुमसे कहेगा जो कि राज्य के स्तम्भ हो और राज्यकार्यों के परामर्शदाता हो, उसे हमारे जैसों से कहना उचित न समझेगा।' वह बोला—'इस विश्वास से कि (राजा) जानता है कि मैं किसी से नहीं कहूँगा—सो आप लोग क्या पूछते हो?'

बैत

नहीं हर बात को जो कि कही जाती है कहता है विवेकी।
राजा के रहस्य के साथ अपने सिर की बाजी लगाना उचित नहीं है॥

कथा—९

मैं एक घर के बैनामे की समस्या के अगमजग में था। एक यहूदी ने कहा—'खरीद लो—क्योंकि मैं इस मुहल्ले का पुराना गृहस्वामी हूँ, इस घर के जो गुण हैं—वे मुझ से पूछो कि कोई दोष ही नहीं है।' मैंने कहा—'सिवा इसके कि तू मेरा पडोसी हो जायगा।'

क़ता

उस घर का कि जिसका तेरे जैसा पडोसी हो।
वह दस खोटे दिरम के योग्य है॥
लेकिन उम्मीदवार होना उचित है।
कि तेरे मरने के बाद यह हज़ार के योग्य होगा॥

कथा—१०

एक कवि डाकुओं के सरदार के पास गया और उसकी प्रशस्ति कहने लगा। सरदार ने आज्ञा दी कि इसके कपडे उतार लो। कुत्तों को उसके पीछे लगा दिया। कवि ने चाहा कि एक पत्थर उठा ले। जमीन बर्फ से कटी हो गयी थी—घबरा गया। बोला—'ये कैसे हरामजादे लोग हैं! कि कुत्तों को खोलकर और पत्थरों को बाँधकर रखते हैं।' सरदार छज्जे से देख रहा था वह सुनकर हँसा और बोला—'अरे पण्डित! कुछ माँग।' कवि ने कहा—'अपना कपडा चाहता हूँ यदि इनाम फरमाएँ तो।'

युक्तेस्तु बुद्धिमत्ताया विवेकस्य च यः पतिः।
वक्तुं न रमते यावद् वाग्निवृत्तं न पश्यति॥ १८॥

आख्यायितम्—८

राज्ञो महमूदस्य केचन निकटवर्तिनो हसनमैमन्दिमपृच्छन्—'राजाऽद्य त्वाममुकविषये किमुक्तवान्?' सोऽवदत्—'युष्मास्वपि तदनवगतं न भवितेति।' ते ऊचुः—'यत् स त्वामुक्तवान् न पुनरस्मादृक्षु कथयिष्यति, यतस्त्वं राज्यस्य धुरि नियुक्तः, राज्यकार्येषु परामर्शदाता चासि।' सोऽवदत्—'तदीयं हेतुमाश्रित्य राजा सुप्रतीतोऽस्ति यत्तेनोक्तमहं कस्मैचिन्न वक्तास्मि। अतः किं पृच्छथ?'

श्लोक

न तत् सर्वमतिब्रूते यदवेति हि पण्डितः।
न च राजरहस्येन स्वमुण्डं दीव्यतात् पुमान्॥ १९॥

आख्यायितम्—९

अहमेकदा कस्मिंश्चिद् गृहं केतुमसमञ्जसं गतः। कश्चिद् यहूदी-ऽवोचत्—'क्रीणीष्व तावत्। अहमेतस्या वीथ्यां प्राचीनो वास्तव्यो-ऽस्मि। गृहस्यास्य गुणान्मे निबोध। अत्र तु न कश्चिद्दोषो विभाव्यत इति।' अहमवदमृतेऽस्मादथ त्वं ममान्तिके वसिष्यसीति।

पदम्

त्वादृशश्चान्तिके यस्य वास्तव्यः स्याद्धि वेश्मनः।
राजतं दशमुद्रां चार्हति राजबहिष्कृताम्॥ २०॥
आशान्वितोऽपि किन्तु भवितुं तत्र साम्प्रतम्।
पञ्चत्वे त्वय्यनुप्राप्ते सहस्रं स्यप्यमर्हति॥ २१॥

आख्यायितम्—१०

कश्चित् कविः कञ्चिद् दस्युपतिं गत्वा तस्य प्रशस्तिमकरोत्। दस्युपतिरादिदेश—'अस्य वासांसि हरन्तु।' शुनश्च तमनुधावयामास। कविर्मार्गस्थशैलजानुत्थातुमुपचक्रमे। भूमिस्तु तुषारपाषाणीनाऽऽसीत्। वराकः पर्याकुलो जातोऽवोचत्—'कीदृशा पापात्मा हीमे पुमांसो ये च शुनोऽबद्धान्प्रस्तरान् बद्धान् धारयन्ति।' दस्युपतिर्गवाक्षादेन पश्यति स्म, स एतच्छ्रुत्वाऽहसदवोचत्—'अयि पण्डित! किञ्चिद् याचस्व!' स ब्रूते—'वासांसि मे पुनर्देहि दास्यसि यदि ते स्पृहा।'

مصرع

رَضِینَا مِنْ نَوَالِكَ بِالرَّحِیلِ

بیت

امیدوار بود آدمی بخیر کسان
مرا بخیر تو امید نیست ـ بد مرسان!

سالار دزدان‌را برو رحمت آمد ـ جامه اورا باز فرمود ـ و قبای پوستینی بر آن مزید کرد ـ و درمی چند بداد *

حکایت ۱۱

منجمی بخانه در آمد ـ یکی مرد بیگانه دید با زن او بهم نشسته * دشنام داد و سقط گفت * فتنه و آشوب برخاست * صاحب دلی برین حال واقف شد و گفت ـ

بیت

تو بر اوج فلك چه دانی چیست
چون ندانی که در سرای تو کیست؟

حکایت ۱۲

خطیبی کریه الصوت خودرا خوش آواز پنداشتی و فریاد بیهوده برداشتی * گفتی نَعِیقُ غُرَابِ البَیْنِ در پردهٔ الحان اوست ـ یا آیت "اِنَّ اَنْکَرَ الْاَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِیرِ" در شان او *

بیت

اِذَا نَهَقَ الْخَطِیبُ اَبُو الْفَوَارِسِ
لَهُ صَوْتٌ یَهُدُّ اِصْطَخْرَ فَارِسِ *

مردم قریه ـ بعلت جاهی که داشت ـ بلیتش همیکشیدند و اذیتش مصلحت نمی‌دیدند ـ تا یکی از خطبای آن اقلیم ـ که با او عداوت نهانی داشت ـ باری بپرسش آمده بودش ـ گفت ـ "ترا خوابی دیده ام" *

मिसरा (बहरे वाफिर)

रिज़ीना मिन् नवालिक बि'र्रहीलि ।'

बैत (बहरे मुज्तस्)

उमीदवार बुवद आदमी ब ख़ैरे कसां ।
मरा ब ख़ैरे तो उम्मेद नेस्त बद म रसां ॥

सालारे दुज़्दां रा बरू रहमत आमद—जामा ऊरा बाज़ फ़र्मूद—व क़बाये पोस्तीनी बर आं मज़ीद कर्द—व दिरम चन्द बिदाद ।

हिकायत—११

मुनज्जिमे ब ख़ाना दर आमद—यके मर्दे बेगाना दीद बा ज़ने ऊ बहम निशस्ता । दुश्नाम दाद व सक़त गुफ़्त । फ़ित्ना ओ आशूब बरख़ास्त । साहिब दिले बर ईं हाल वाक़िफ़ शुद व गुफ़्त—

बैत (बहरे ख़फ़ीफ़)

तो बर औजे फ़लक चि दानी चीस्त ।
चूं न दानी कि दर सराय तो कीस्त ॥

हिकायत—१२

ख़तीबे करीहु'स्सौत ख़ुद रा ख़ुश आवाज़ पन्दाश्ते व फ़रियादे बेहूदा बर दाश्ते । गुफ़्ती—'नईक़ु ग़ुराबि'ल् बैने दर पर्दाए इल्हाने ऊस्त—या आयते—"इन्न अन्करु'ल् अस्वाति ल सौति'ल हमीरि" दर शाने ऊ ।'

बैत (बहरे वाफिर)

इज़ा नहक़'ल् ख़तीबु अबु'ल फ़वारिस ।
लहू सौतुन् यहुद्दु'स्तख़्र फ़ारिस ॥

मर्दुमे क़रिया ब इल्लते जाहे कि दाश्त बलीय्यतश् हमी कशीदन्द व अज़ीय्यतश् मस्लहत न मी दीदन्द ता यके अज़ ख़ुतबाए आं इक़्लीम कि बा ऊ अदावते निहानी दाश्त—बारे ब पुर्सिश् आमदा बूदश्—गुफ़्त—'तुरा ख़्वाबे दीदा अम् ।'

मिसरा

हम राज़ी हैं तेरे जाने देने की बख़्शीश से।

अर्धाली

गन्तुमाज्ञापयेश्चेन्नस्तुष्यामो तेन वै वयम् ॥ २२ ॥

बैत

उम्मीदवार होता है आदमी भलाई का आदमियों से।
मुझे तुझ से भलाई की आशा नहीं है हम से बुराई मत कर ॥

श्लोक

आशान्वितस्तु क्षेमेण पुम्भिरेव भवेत् पुमान्।
त्वत्तो नाशास्महे क्षेम मा नोऽभद्रेण कल्पताम् ॥ २३ ॥

डाकुओं के सरदार को उस पर दया आ गयी—उसको कपड़ा वापस दिलवा दिया—और उसको खाल का एक लबादा भी दिया और कुछ दिरम भी दिये।

दस्युपतिस्तत करुणार्द्र सञ्जात, तस्मै वासासि पुनर्दत्तवान्। तस्मै चर्ममय निचोल कतिचिद् दिरमान्यपि ददौ।

कथा—११

एक नजूमी घर में आया—एक परपुरुष को अपनी पत्नी के साथ बैठे देखा। (उसने) गाली दी और (इसने) कटुवचन कहे। झगड़ा और टण्टा उठ खड़ा हुआ। एक भक्त को यह हाल मालूम हुआ तो वह बोला—

आख्यायितम्—११

कश्चिद् दैवज्ञोऽसमय स्वस्य गृह प्रविवेश। असौ कञ्चन परपुरुष पत्न्या अर्धासनमधिष्ठित ददर्श। अपशब्दमसावुदीरितवान् परुषवाक्य चायम्। कलहाक्रोशौ च समुत्थितौ। कश्चिद् भक्त एव विज्ञायावोचत्—

बैत

तू आकाश की ऊँचाई पर क्या जाने कि क्या है।
जब कि तू नहीं जानता कि तेरे घर में क्या हो रहा है ॥

श्लोक

व्योम्नो मूर्ध्नि प्रपन्न त्व कथ विज्ञातुमर्हसि।
न त्व जानासि ते गेहे व्यापृत किं प्रपद्यते ॥ २४ ॥

कथा—१२

एक कर्कश स्वर वाला उपदेशक अपने आपको अच्छी आवाज़ वाला समझता था और बेहूदा शोर मचाया करता था। यह कहो कि—वियोगकारी कौवे की कांव कांव उसकी आवाज के पर्दे में थी, अथवा (कहना चाहिए कि) यह आयत उसी की शान में कही गयी थी—'बेशक सब से बुरी आवाज़, आवाज़ों में, गधे की है।'

आख्यायितम्—१२

कश्चित् खरस्वर उपदेशक आत्मान सुस्वर मन्यते स्म। वृथा कोलाहल च कुरुते स्म। वक्ष्यसि यद्—वियोगसूचकस्य काकस्य रत तस्य कण्ठारूढमासीत्। अथवैतच्छास्त्रवाक्य तमेवोद्दिश्य चोदीरितमासीत्—'कण्ठस्वरेषु सर्वेषु निकृष्टो हि खरस्वर ॥ २ ॥'

बैत

जब चीखता है उपदेशक अबु'ल् फवारिस।
उसकी आवाज़ से इस्तखर फारस शहर गिरता है ॥

श्लोक

अबुल् फवारिसो वक्तु यदारेभेऽतिकर्कशम्।
तेनास्तखरफारस्य पत्तन पतित भुवि ॥ २५ ॥

गाँव के लोग उसके पद के कारण जो कि वह रखता था—उस बला को ढोते थे और उसको चिढ़ाना उचित नहीं समझते थे। यहाँ तक कि उस देश का एक उपदेशक जो कि उससे गुप्त द्वेष रखता था—एक बार उसकी कुशल पूछने आया।

उससे बोला—'मैंने तुझे सपने में देखा था।'

उसने कहा—'भला हो! क्या देखा।'

ग्रामवासिनस्तस्य पदगौरवात् त दुर्दैवमिव वहन्ति स्म। त च खेदयितु समीचीन न मेनिरे। अथैकदा तत्रत्य कश्चिदपर उपदेशको द्वेषगुप्तस्तस्य कुशलप्रश्नार्थं त प्राप्त—उक्तवानथ—'मया त्व स्वप्ने दृष्ट।' सोऽवदत्—'कल्याण भवतु! त्वया किं दृष्टम्?'

گفت - "خیر باد - چه دیده‌ای؟" گفت - "چنان دیدم که آواز خوش داشتی و مردم از انفاس تو در راحت بودند" * خطیب لختی اندیشید و گفت - "مبارک خوابست که دیدی - که مرا بر عیب خود واقف گردانیدی * معلوم شد که آواز ناخوش دارم - و خلق از من در رنجند * عهد کردم که پس ازین خطبه نخوانم

गुफ्त—'ख़ैर बाद! चि दीदई?' गुफ्त—'चुनाँ दीदम् कि आवाज़े ख़ुश दाश्ती व मर्दुम अज़ अनफ़ासे तो दर राहत बूदन्द।' ख़तीब लख़्ते अन्देशीद व गुफ्त—'मुबारक ख़्वाब'स्त कि दीदी कि मरा बर ऐबे ख़ुद वाक़िफ़ गर्दानीदी। मालूम शुद कि आवाज़े नाख़ुश दारम्—व ख़ल्क़ अज़ मन् दर रंजन्द। अह्द करदम् कि पस अज़ीं ख़ुत्बा न ख़्वानम्।'

قطعه

از صحبت دوستان برنجم
کاخلاق بدم حسن نمایند
عیبم هنر و کمال بینند
خارم گل و یاسمن نمایند *
کو دشمن شوخ چشم بی‌باک
تا عیب مرا بمن نماید؟

क़ता (बहरे हज़ज)

अज़ सुह्बते दोस्ताँ बिरंजम्।
काख़लाक़े बदम् हुस्न नुमायन्द॥
ऐबम् हुनर व कमाल बीनन्द।
ख़ारम् गुलो यासमिन् नुमायन्द॥
कू दुश्मने शोख़ चश्मे बेबाक।
ता ऐबे मरा ब मन नुमायद॥

حکایت ۱۳

یکی در مسجد سنجار بانگ نماز گفتی بآوازی که مستمعان را ازو نفرت آمدی - و صاحب آن مسجد امیری بود عادل و نیک سیرت - نخواستش که دل آزرده گردد - گفت - "ای جوانمرد! این مسجد را موذنان قدیمند که هر یکی را پنج دینار مرسوم مقرر داشته ام - اکنون ترا ده دینار میدهم تا بجای دیگر بروی" * برین اتفاق افتاد و برفت * بعد از مدتی در گذری پیش امیر باز آمد و گفت - "ای خداوند! بر من حیف کردی - که از آن بقعه ام بده دینار بیرون کردی * آنجا که اکنون رفته ام بیست دینارم میدهند تا جای دیگر روم - قبول نمی کنم" * امیر بخندید و گفت - "زنهار نستانی - که بود باشد که به پنجاه دینار راضی گردند" *

हिकायत—१३

यके दर मस्जिदे सन्जार बांगे नमाज़ गुफ्ते बावाज़े कि मुस्तमिआन रा अज़ू नफ़रत आमदे व साहिबे आँ मस्जिद अमीरे बूद आदिल व नेक सीरत—न ख़्वास्तश् कि दिल आज़ुर्दा गर्दद—गुफ्त—'ऐ जवाँमर्द! ईं मस्जिद रा मुअज़्ज़िनाने क़दीम'न्द कि हर यके रा पंज दीनार मरसूम मुक़र्रर दाश्ता अम्—अकनूँ तुरा दह दीनार मी दिहम् ता ब जाये दीगर बिरवी।' बर ईं इत्तिफ़ाक़ उफ़्ताद व बिरफ़्त। बाद अज़ मुद्दते दर गुज़रे पेशे अमीर बाज़ आमद व गुफ्त—'ऐ ख़ुदावन्द! बर मन् हैफ़ करदी कि अज़ आँ बुक़्आ अम् ब दह दीनार बेरूँ करदी। आँजा कि अकनूँ रफ़्ताअम् बीस्त दीनारम् मी दिहन्द ता जाये दीगर रवम्—क़बूल न मी कुनम्।' अमीर बिख़न्दीद व गुफ्त—'ज़ीन्हार न सितानी! कि बूद बाशद कि ब पंजाह दीनार राज़ी गर्दन्द।'

بیت

به تیشه کس نخراشد ز روی خارا گل
چنانکه بانگ درشت تو میخراشد دل *

बैत (बहरे मुज्तस)

ब तेशा कस न ख़राशद ज़ि रूए ख़ारा गिल।
चुनांकि बांगे दुरुश्ते तो मी ख़राशद दिल॥

बोला—'ऐसा देखा कि तेरी आवाज़ अच्छी हो गयी है और लोग तेरे व्याख्यानो से बडे सुख में है।'

उपदेशक थोडी देर सोचता रहा और (फिर) बोला—'अच्छा शुभ स्वप्न है जो कि तू ने देखा क्यो कि (तू ने) मुझको मेरे दोप से परिचित करा दिया है। मुझे मालूम हो गया कि मैं खराब आवाज रखता हूँ और लोग मुझसे दु:खी है। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि इसके बाद खुत्बा नही पढूँगा।'

स ब्रूते—'अहमेव ददर्शाथ ते स्वर सुस्वरतामवाप, पुमासस्तावकीनेन व्याख्यानश्रवणेन लब्धानन्दाश्चेति।' उपदेशक क्षण विमृश्य ब्रूते—'अय सुस्वप्नो यस्त्वया सदृष्ट। त्वमनेन मम दोप दर्शितवानसि। अहमिदानी विज्ञातवानस्मि यदह परुपस्वर दधे, पौरजनाश्च मत्तो दूयमानाश्च। इदानी प्रतिजानामि—नात प्रभृति व्याख्यायिष्यते मयेति।'

कता

उन मित्रों की सगति से मैं खिन्न हूँ।
कि जिन्हें मेरा बुरा चरित्र भी अच्छा दिखता है।।
मेरे दोप को गुण और चमत्कार समझते है।
मेरे काँटे गुलाब और चमेली प्रतीत होते है।।
कहाँ है वह शत्रु धृप्ट और भयरहित।
जो मेरे दोप को मुझे दिखला दे।।

पदम्

मित्राणा च समित्याऽह प्रसीदामि न किञ्चन।
दुर्वृत्त मम चैतैस्तु सद्वृत्तमनुमीयते।। २६।।
दोपेपु गुणबुद्ध्यैते सदा पश्यन्ति साधुताम्।
कण्टक मामिमे कुन्द भावयन्ति च पाटलम्।। २७।।
क्वास्ति द्वेप्टा स निर्घृप्टश्चक्षुलज्जाविवर्जित।
विख्यापयेद्धि यो दोपान् मदीयानय मा प्रति।। २८।।

कथा—१३

एक आदमी सजार की मस्जिद में नमाज़ की बाँग ऐसी आवाज से देता था कि सुनने वालो को उससे नफरत होती थी और उस मस्जिद का स्वामी एक प्रधान था, न्यायकारी और सद्‌गुणी। उसने नही चाहा कि उसका दिल दुखे। (अत उसने) कहा—'हे नौजवान! इस मस्जिद के अज़ान देने वाले पुराने हैं कि जिनमें से हर एक को पाँच दीनार की वृत्ति देता हूँ। अब तुझे दस दीनार देता हूँ ताकि तू दूसरी जगह चला जाय।' इस पर वह सहमत हो गया और चला गया। कुछ समय पश्चात् प्रधान के सामने सडक पर मिल गया और बोला—'हे स्वामी! मुझ पर अन्याय किया कि उस स्थान से दस दीनार में मुझे हटा दिया। उस जगह कि जहाँ अब गया हूँ बीस दीनार दे रहे है ताकि मैं और दूसरी जगह चला जाऊँ—पर मैं स्वीकार नही कर रहा।' प्रधान हँसा और बोला—'सावधान! मत लेना! जल्दी ही होगा कि पचास दीनार में तुझे मनायेंगे।'

आख्यायितम्—१३

कश्चित् पुमान् सञ्जारस्योपासनामन्दिरे एतावत्या खरस्वरेणाह्वयति स्म उपासकान्, यच्छ्रोतारस्ततो विरक्ता भवन्ति स्म। तस्योपासनामन्दिरस्य प्रधान कश्चिन्न्यायशील सद्वृत्तरामन्वितश्चासीत्। स त खेदयितु नैच्छत्। अतोऽवदत्—'हे युवन्! अस्मिन्नुपासनामन्दिरे ये चाबाहका प्राचीना नियुक्तास्तानह पञ्च पञ्च दीनाराणि ददामि। इदानी तुभ्य दशदीनार ददामि यतस्त्वमन्यत्र गच्छे।' स एन मत्वा विनिर्गत। किञ्चित् कालानन्तर स प्रधान रथ्याया मिलितवान् उवाच च—'हे स्वामिन्, त्व मय्यन्याय कृतवानसि—यन्मा दशभिर्दीनारैरितो बहिष्कृतवान्। इदानी यत् स्थानमधिकृत्य अधिष्ठितोऽह ततो मामन्यत्र गमयितु विशतिदीनाराणि ददते न च स्वीक्रियते मया।' प्रधानो विहस्याह—'मा मैवम्! अचिरादेव ते पञ्चाशद् दीनाराणि दत्त्वा त्वामनुनेष्यन्ति।'

बैत

कोई फायदे से भी नही छीलता पत्थर मिट्टी को।
जैसे कि तेरी कर्कश बाँग दिल को खराशती है।।

श्लोक

न तथा दृपदो मृत्स्ना कमकारो विनिर्लिखेत्।
अक्रचेनेव चीत्कारो यथा ते हृदय मम।। २९।।

حکایت ۱۴

ناخوش آوازی بانگ بلند قرآن می‌خواند * صاحب دلی برو بگذشت و گفت - ''ترا مشاهره چندست''؟ گفت - ''هیچ'' * گفت - ''پس چرا این همه خودرا زحمت میدهی''؟ گفت - ''از برای خدا میخوانم'' * گفت - ''از بهر خدا مخوان''!

हिकायत—१४

नाखुश आवाज़े व बांगे बलन्द कुरआं मी' ख्वांद। साहिब दिले बरू बुगुज़श्त व गुफ्त—'तुरा मुशाहिदा चन्द'स्त?' गुफ्त—'हेच।' गुफ्त—'पस चिरा ईं हमा खुद रा ज़ह्मत मी दिही?' गुफ्त—'अज़ बराय खुदा मी ख्वानम्।' गुफ्त—'अज़ बहरे खुदा म ख्वां।'

بیت

گر تو قرآن بدین نمط خوانی
ببری رونق مسلمانی *

बैत (बहरे खफीफ)

गर तु कुरआं बदीं नमत ख्वानी।
बिबरी रौनक़े मुसलमानी॥

कथा—१४

एक भद्दी आवाज़ वाला ऊँची आवाज़ से कुरान पढा करता था। एक भक्त उधर से निकला और कहने लगा—'तेरा वेतन कितना है?'

उसने कहा—'कुछ नहीं।'

भक्त ने कहा—'तो क्यों इतना अपने आपको कष्ट देता है?'

उसने कहा—'ईश्वर के लिये पढता हूँ।'

भक्त ने कहा—'ईश्वर के लिये मत पढ।'

बैत

यदि तू कुरान को इसी प्रकार पढता रहा।
तो तू मुसलमानी की रौनक को नष्ट कर देगा॥

आख्यायितम्—१४

कश्चित् खरस्वर पुरुष उच्चैस्तरा कुरान पपाठ। एकदा कश्चिद् भक्तस्ततो गच्छन्नवदत्—'कियन्मान हि ते वेतनम्?' स ब्रूते—'न कियदपि।' भक्तोऽवदत्—'तत् किमर्थमेतावत्कष्ट सहमानो वर्तसे?' स ब्रूते—'परमात्मने।' साधुरुवाच—'ईश्वरार्थं मा पठेति।'

श्लोक

रीत्याऽनया कुरानस्य यदि पाठ करिष्यसि।
ज्योतिरिस्लामधर्मस्य धूमिल च करिष्यसि॥३०॥

باب پنجم

در عشق و جوانی

حکایت ۱

حسن میمندی‌را گفتند - ''که سلطان محمود چندین صاحب جمال دارد که هریك بدیع جهانی اند - چه است که با هیچ کدام آن میل خاطر ندارد که با ایاز با وجود آنکه زیاده حسن ندارد''؟ گفت - نشنیده‌ای؟ هر چه در دل آید در دیده نکو نماید *

قطعه

کسی بدیدهٔ انکار گر نگاه کند
نشان صورت یوسف دهد بناخوبی *
و گر بچشم ارادت نظر کنی در دیو
فرشته ات بنماید بچشم کروبی *

مثنوی

هر که سلطان مرید او باشد
گر همه بد کند - نکو باشد *
و آن که را پادشه بیندازد
کسش از خیل خانه ننوازد *

حکایت ۲

گویند - خواجهٔ‌را بندهٔ نادر الحسن بود * با وی بسبیل مودت و دیانت نظری داشت * با یکی از دوستان گفت ''دریغ! این بندهٔ من - با حسن شمائلی که دارد - اگر زبان دراز و بی‌ادب نبودی - چه خوش بودی''! گفت ''ای برادر! چون اقرار دوستی کردی - توقع خدمت مدار - که چون عاشقی و معشوقی در میان آمد - مالک و مملوکی برخاست'' *

बाबे पंजम्

दर इश्को जवानी

हिकायत—१

हसन मैमन्दी रा गुफ्तन्द—'कि सुलताने महमूद चन्दी बन्दाए साहिब जमाल दारद कि हर यक बदीअे जहाने अन्द। चिगूना अस्त कि बा हेच कुदाम आँ मैले ख़ातिर न दारद कि बा अयाज़—बा वुजूदे आँ कि ज़ियादा हुस्न न दारद?' गुफ्त—'न शुनीदई कि हर चि दर दिल आयद दर दीदा निकू नुमायद।'

क़ता (बहरे मुज्तश्)

कसे ब दीदाए इन्कार गर निगाह कुनद।
निशाने सूरते यूसुफ दिहद ब नाख़ूबी॥
व गर ब चश्मे इरादत नज़र कुनी दर देव।
फिरिश्ता अत ब नुमायद ब चश्मो करूबी॥

मसनवी (बहरे खफीफ)

हर कि सुल्ताँ मुरीदे ऊ बाशद।
गर हमा बद कुनद—निकू बाशद॥
व् आँ कि रा पादशह बियन्दाज़द।
कसश् अज़ ख़ेलख़ाना न नवाज़द॥

हिकायत—२

गोयन्द—ख़्वाजाये रा बन्दाये नादिरु'ल हुस्न बूद। बा वै ब सबीले मवद्दतो दियानत नज़रे दाश्त। बा यके अज़ दोस्तान् गुफ्त—'दिरेग़! ईं बन्दाए मन्—बा हुस्ने शुमायले कि दारद—अगर ज़बान दराज़ व बेअदब न बूदे—चि ख़ुश बूदे।' गुफ्त—'ऐ बिरादर! चूँ इक़रारे दोस्ती कर्दी—तवक़्क़ोए ख़िदमत मदार—कि चूँ आशिक़ी व माशूक़ी दर मियाँ आमद मालिकी व ममलूकी बरख़ास्त।'

पाँचवाँ अध्याय

प्रेम और यौवन के विषय मे

कथा—१

हसन मैमन्दी से लोगों ने पूछा कि 'सुलतान महमूद के इतने सुन्दर दास हैं कि उनमें से प्रत्येक ससार के आश्चर्यों में से एक है। ऐसा क्यो है कि किसी के प्रति चित्त का झुकाव नही रखता जितना कि अयाज के प्रति—बावजूद इसके कि वह अधिक सौन्दर्य नही रखता ?' उसने कहा—'क्या तू ने नही सुना कि जो चीज दिल में उतर जाती है, आँखो को अच्छी लगती है।'

कता

यदि कोई व्यक्ति इनकार की आँखों से देखे।
तो यूसुफ का रूप भी कुरूप लगेगा॥
और यदि कामना की दृष्टि से तू राक्षस को भी देखे।
तो वह तुझे देवता और गन्धर्व जैसा दिखेगा॥

मसनवी

हर वह व्यक्ति जिसका कि राजा मुरीद हो।
यदि वह सब कुछ बुरा करे तो भी ठीक है॥
और वह जिसको कि राजा हटा देता है।
भृत्यवर्ग में कोई भी उसको नही पूछता॥

कथा—२

कहते हैं—एक सज्जन का एक सेवक विरल सौन्दय वाला था। उसके साथ वह प्रेम और कृपा भाव रखता था। उसने एक मित्र से कहा—'अफसोस यह मेरा दास जितना गुण सौन्दय रखता है यदि ज़बानदराज़ और अशिष्ट न होता—तो कितना अच्छा होता।' उसने कहा—'अरे भाई! जब तूने मैत्री का इक़रार किया है तो सेवा की अपेक्षा मत कर। क्योंकि जब दो के बीच में प्रेमी-प्रेमिका सम्बन्ध आता है तो स्वामी-सेवक भाव उठ जाता है।'

पंचमोऽध्यायः

प्रेम्णि कामे च यौवने

आख्यायितम्—१

हसनमैमन्दिन केचन पृष्टवन्त—'राजा महमूदस्य बहव सुदर्शना दासा सन्ति एवैकस्तेषु जगतो विस्मयहेतु। कथ तर्हि स अन्यान् प्रति न तथा स्निग्धो भवति यथा च "अयाज" प्रति वर्तते यश्च सौन्दयमपि विशेष न धत्ते।' सोऽवदत्—'न किं श्रुतवानसि—यद्धि चित्तनिविष्ट स्याद् विशिष्ट तत्प्रतीयते।'

पदम्

वीप्सारहितया दृष्ट्या दृश्यते यदि केनचित्।
जनो यूसुफकल्पोऽपि रूपहीन प्रतीयते॥ १॥
परन्तु स्निग्धया दृष्ट्या वीक्ष्यते यदि राक्षस।
दिवौका उत गन्धर्वो लक्ष्यते यदि प्रीतिभाक्॥ २॥

गाथा

राजा भक्तानुरक्तश्च जने यस्मिन् प्रजायते।
सर्वं हि दुष्कृत चास्य सुकृत्यमिति कल्प्यते॥ ३॥
यराकं वञ्चित यञ्च तिरस्कुर्वीत भूपति।
भृत्यवर्गे न त कोऽपि स्नेहभावेन पश्यति॥ ४॥

आख्यायितम्—२

श्रूयतेऽथ कस्यचिद् गृहमेधिनो दासोऽपूर्वसौन्दर्ययुक्त आसीत्। स त प्रेम्णा, कृपया च व्यवहरति स्म। स किञ्चन मित्रमब्रवीत्—'अहो! ममाय दासो यथा रूपाढ्यो विद्यते तथैव यदि गुणाढ्योऽपि चाभवेत्स्यत, प्रगल्भश्चाशिष्टश्च नाभविष्यत्तर्हि कियत्सुष्ठु प्रत्यैष्यदिति।' मित्रमवदत्—'हे भ्रातर्! यदा त्वमनेन मैत्रीभाव गतोऽसि तदा सेवाभाव ततो मा व्यपेक्षेथा। यत प्रेमिक-प्रेमपात्रसम्बन्धे जाते स्वामि-दासभावो प्रणश्यति।'

قطعه

خواجه با بندهٔ پری رخسار
چون در آید بیاری و خنده
چه عجب گر چو خواجه حکم کند
وین کشد بار ناز چون بنده؟

क़ता (बहरे खफ़ीफ़)

ख्वाजा बा बन्दाए परी रुख़सार।
चू दर आयद ब यारी ओ ख़न्दा॥
चि अजब गर चु ख्वाजा हुक्म कुनद।
वी कशद बारे नाज़ चूँ बन्दा॥

بیت

غلام آبکش باید و خشت زن
بود بندهٔ نازنین مشت زن *

बैत (बहरे मुतक़ारिब)

ग़ुलाम आबकश बायदो ख़िश्तज़न।
बुवद बन्दये नाज़नी मुश्तज़न॥

حکایت ۳

پارسائی‌را دیدم بمحبت شخصی گرفتار آمده و رازش از پرده بیرون فتاده * چندان که غرامت و ملامت کشیدی - ترک اتصال او نکردی و گفتی -

हिकायत—३

पारसाये रा दीदम् ब मुहब्बते शख़्से गिरिफ़्तार आमदा व राज़श् अज़ पर्दा बेरूँ फुतादा। चन्दाँ कि ग़रामत व मलामत कशीदे तर्के इत्तिसाले ऊ न कर्दे व गुफ़्ते—

قطعه

کوته نکنم ز دامنت دست
ور خود بزنی بتیغ تیزم *
غیر از تو ملاذ و ملجا ام نیست
هم در تو گریزم از گریزم *

क़ता (बहरे हज़ज्-मुसद्दस)

कोताह न कुनम् ज़ि दामनत दस्त।
वर ख़ुद बिज़नी ब तेग़े तेज़म्॥
ग़ैर अज़ तो मलाज़ो मलजाअम् नेस्त।
हम दर तु गुरेज़म् अर गुरेज़म्॥

باری ملامتش کردم و گفتم - "که عقل نفیست‌را چه بردهٔ شد که نفس خسیست برو غالب آمد"؟ زمانی بتفکر فرو رفت و گفت -

बारे मलामतश् कर्दम् व गुफ़्तम्—'कि अक़्ले नफ़ीसत रा चि शुद कि नफ़्से ख़सीसत बर्र ग़ालिब आमद?' ज़माने ब तफ़क्कुर फ़रो रफ़्त व गुफ़्त—

قطعه

هر کجا سلطان عشق آمد - نماند
قوت بازوی تقوی‌را محل *
پاک دامن چون زید بیچارهٔ
اوفتاده تا گریبان در وحل؟

क़ता (बहरे रमल)

हर कुजा सुल्ताने इश्क़ आमद—न मान्द।
क़ुव्वते बाज़ूए तक़वा रा महल॥
पाक दामन चू ज़ियद बेचाराए।
ऊफ़्तादा ता गरेबाँ दर वहल॥

حکایت ۴

یکی‌را دل از دست رفته بود و ترک جان گفته - و مطمح نظرش جای خطرناک و در ورطهٔ هلاک - نه لقمهٔ که باری متصور شدی که بکام آید - و یا مرغی که بدام افتد *

हिकायत—४

यके रा दिल अज़ दस्त रफ़्ता बूद व तर्के जान गुफ़्ता—व मतमहे नज़रश् जाये ख़तरनाक व दर वरताए हलाक। नै लुक़माए कि मुतसव्वर शुदे कि ब काम आयद—व या मुर्ग़े कि ब दाम उफ़्तद।

بیت

جو در چشم شاهد نیاید زرت
زر و خاك يكساں نمايد برت *

یاران بطریق نصیحتش گفتند - که ازیں خیال محال تجنب کن - که خلقی هم بدیں هوس که تو داری اسیرند و پای در زنجیر * بنالید و گفت -

قطعه

دوستاں گو - نصیحتم مکنید
که مرا دیده بر ارادت اوست *
جنگ جویاں بزور پنجه و کتف
دشمناں‌را کشند - و خوباں دوست *

شرط مودت نباشد باندیشهٔ جان دل از مهر جاناں بر داشتن -

مثنوی

تو که در بند خویشتن باشی
عشق باری دروغ‌زن باشی *
گر نیابی بدوست ره بردن
شرط عشقست در طلب مردن *

بیت

گر دست دهد که آستینش گیرم
ور نه بروم بر آستانش میرم *

متعلقاں‌را - که نظر در کار او بود و شفقت بروزگار او - پندش دادند و بندش نهادند - سودی نکرد *

بیت

پند ارچه هزار سودمندست
چوں عشق آمد - چه جای پندست؟

ایضاً

دردا - که طبیب صبر میفرماید
وین نفس حریص‌را شکر می‌باید *

वैत (वहरे मुतक़ारिव)

चु दर चश्मे शाहिद नयायद ज़रत।
ज़रो खाक यकसाँ नुमायद वरत॥

यारां व तरीक़े नसीहतश् गुफ़्तन्द—कि अज़ ईं ख़याले मुहाल तजन्नुव कुन्—कि ख़ल्के हम वदी हवस कि तु दारी असीर'न्द व पाय दर ज़न्जीर। विनालीद व गुफ़्त—

क़ता (वहरे ख़फ़ीफ़)

दोस्ताँ गो—नसीहतम् म कुनेद।
कि मरा दीदा वर इरादत ओस्त॥
जग जूयाँ व ज़ोरे पजा ओ किन्फ।
दुश्मनाँ रा कुशन्द ओ ख़ूवाँ दोस्त॥

शर्त्ते मवद्दत न वाशद व अन्देशए जान दिल अज़ मिह्रे जानाँ वरदाश्तन्।

मसनवी (वहरे ख़फ़ीफ़)

तो कि दर वन्दे ख़ेशतन वाशी।
इश्क़वाज़ी दरोगज़न वाशी॥
गर न यावी व दोस्त रह वुदन्।
शर्ते इश्क़'स्त दर तलव मुर्दन्॥

वैत (वहरे हज़ज्)

गर दस्त दिहद कि आस्तीनश् गीरम्।
वरना विरवम् वर आस्तानश् मीरम्॥

मुतअल्लिक़ाँ रा—कि नज़र दर कारे ऊ वूद व शफ़कत व रोज़गारे ऊ—पन्दश् दादन्द व वन्दिश् निहादन्द—सूदे न करद।

वैत (वहरे हज़ज्)

पन्द अर्चे हज़ार सूदमन्द'स्त।
चूँ इश्क़ आमद चि जाये पन्द'स्त॥

ऐज़न (वहरे हज़ज्)

दरदा कि तवीवे सब्र मी फ़रमायद।
वीं नफ़्से हरीस रा शकर मी वायद॥

مثنوی

آن شنیدی؟ که شاهدی بنهفت
با دل از دست رفته می‌گفت ـ
تا ترا قدر خویشتن باشد
پیش چشمت چه قدر من باشد؟

آورده اند که مر آن پادشاه زاده‌را که مطمح نظر او بود خبر کردند که جوانی بر سر این کوی مداومت میکند خوش طبع و شیرین زبان ـ سخنان غریب و نکتهای لطیف از وی میشنوند ـ چنین مینماید که شوری در سر دارد و دل آشفته است * پسر دانست که دل آویختهٔ اوست و این گرد بلا انگیختهٔ او ـ مرکب جانب او راند * چون دید که نزدیك او می‌آید ـ بگریست و گفت ـ

بیت

آن کس که مرا بکشت باز آمد پیش
مانا که دلش بسوخت بر کشتهٔ خویش *

چندانکه ملاطفت کرد و پرسید ـ که از کجائی؟ و چه نام داری؟ و چه صنعت دانی؟ مسکین در قعر محبت چنان مستغرق بود که مجال دم زدن نداشت ـ و لطیفان گفته اند ـ

شعر

اگر خود هفت سبع از بر بخوانی
چو آشفتی ـ الف بی تی ندانی *

گفتش ـ چرا با من سخن نگوئی؟ که از حلقهٔ درویشانم ـ بلکه حلقه بگوش ایشانم ـ آنگه بقوت استیناس محبوب از میان تلاطم امواج محبت سر بر آورد و گفت ـ

بیت

عجبست با وجودت که وجود من بماند
تو بگفتن اندر آئی و مرا سخن بماند *

این بگفت و نعرهٔ زد و جان بحق تسلیم کرد *

मसनवी (बहरे ख़फ़ीफ़)

आँ शुनीदी कि शाहिदे बिनिहुफ्त।
बा दिल—अज़ दस्त—रफ्ताए मीगुफ्त।।
ता तुरा क़द्रे खेशतन बाशद।
पेशे चश्मत चि क़द्रे मन् बाशद।।

आवुर्दा अन्द कि मर आँ पादशाह ज़ादा रा कि मतमहे नज़रे ऊ बूद ख़बर करदन्द कि जवाने बर सरे ईं कूए मुदावमत मी कुनद ख़ुश तबअ व शीरीं ज़ुबान—सुख़ुनाने ग़रीब व नुक्तहाये लतीफ़ अज़ वै मी शिनवन्द—चुनीं मी नुमायद कि शोरे दर सर दारद व दिल आशुफ्ता अस्त। पिसर दानस्त कि दिल आवेख्ताए ऊस्त व ईं गर्दे बला अंगेख्ताए ऊ—मरकब ब जानिबे ऊ रान्द। चूँ दीद कि ब नज़दीके ऊ मी आयद—बिगिरीस्त व गुफ्त—

बैत (बहरे हज़ज्-मुसम्मन्)

आँ कस कि मरा बुकुश्त बाज़ आमद पेश।
माना कि दिलश् ब सोख़्त बर कुश्ताए ख़ेश।।

चन्दाकि मुलातफ़त कर्द व पुरसीद कि अज़ कुजायी? व चि नाम दारी? व चि सनअत दानी? मिसकीन दर क़अरे मुहब्बत चुनाँ मुस्तग़रक़ बूद कि मजाले दम ज़दन न दाश्त— व लतीफ़ान् गुफ्ता अन्द—

शेर (बहरे हज़ज्)

अगर ख़ुद हफ्त सबअ'ज़ बर बख़्वानी।
चु आशुफ्ती अलिफ़-बे-ते न दानी।।

गुफ्तश्—'चिरा बा मन् सुख़ुन न गोयी? कि अज़ हल्क़ाए दरवेशानम्—बल्कि हल्क़ा ब गोशे ईशानम्।' आँगह ब कुव्वते इस्तेनासे महबूब अज़ मियाने तलातुमे अम्वाजे मुहब्बत सर बर आवुर्द व गुफ्त—

बैत (बहरे रमल)

अजबस्त बा वुजूदत कि वुजूदे मन बिमानद।
तो बिगुफ्तन् अन्दर आयी व मरा सुख़ुन बिमानद।।

ईं बुगुफ्त व नाराए बि ज़द व जान ब हक़ तसलीम कर्द।

بیت

عجب از کشته نباشد بدر خیمهٔ دوست
عجب از زنده - که چون جان بدر آورد سلیم *

حکایت ٥

یکی از متعلمان کمال بهجتی داشت و طیب لهجتی - و معلم‌را از آنجاکه حس بشریتست با حسن بشرهٔ او میل تمام بود - تا حدی که غالب اوقاتش دریں بودی که گفتی -

قطعه

نه آنچنان بتو مشغولم - ای بهشتی روی!
که یاد خویشتنم در ضمیر می‌آید *
ز دیدنت نتوانم که دیده بر بندم
و گر مقابله بینم - که تیر می‌آید *

باری پسر گفتش - ''آنچنان که در آداب درس من نظر می‌فرمائی - در آداب نفس من نیز تامل فرمای - تا اگر در اخلاق من ناپسندی باشد - بر آن مطلع گردان - تا بدفع آن بکوشم'' * گفت - ''این از دیگری پرس - که آن نظر که با تو مراست - جز هنر نمی‌بینم'' *

قطعه

چشم بداندیش - که بر کنده باد!
عیب نماید هنرش در نظر -
ور هنری داری و هفتاد عیب
دوست نبیند بجز آن یك هنر *

حکایت ٦

شبی یاد دارم که یار عزیزم از در در آمد - چنان بیخود از جای بر جستم که چراغم باستیں کشته شد *

شعر

سَرىٰ طَيفُ مَن يَجلُو بِطَلْعَتِهِ الدُّجىٰ
حَيَالاً يُرَاقِبِي عَلَى اللَّيلِ هَادِيًا *

वैत (वहरे रमल)

अजव अज़ कुश्ता न वाशद व दरे खेमाए दोस्त ।
अजव अज़ ज़िन्दा कि चूं जाँ व दर आवुद सलीम ।।

हिकायत—५

यके अज़ मुतअल्लिमां कमाल वहजते दाश्त व तीव लहजते—व मुअल्लिम रा अज़ आजा कि हिस्से वशरय्यत'स्त वा हुस्ने वुशरये ऊ मैले तमाम वूद ता हद्दे कि ग़ालिव औक़ातश् दर ईं वूदे कि गुफ्ते—

क़ता (वहरे मुज्तश्)

नै आ चुनाँ व तु मशगूलम्—ऐ विहिश्ते रू ।
कि यादे खेशतनम् दर ज़मीर मी आयद ।।
ज़ि दीदनत न तवानम् कि दीदा वर वन्दम् ।
व गर मुकावला वीनम् कि तीर मी आयद ।।

वारे पिसर गुफ्तश्—'आँ चुनाँ कि दर आदावे दर्से मन नज़र मी फरमाई—दर आदावे नफ्से मन् नीज़ तअम्मुल फरमाई—ता अगर दर अख़्लाके मन् नापसन्दी वाशद—वर आँ मुत्तला गरदान्—ता व दफ़ए आँ विकोशम् ।' गुफ्त—'ईं अज़ दीगरे पुस कि आँ नज़र कि वा तु मरा'स्त जुज़ हुनर न मी वीनम् ।'

क़ता (वहरे सरी)

चश्मे वद'न्देश कि वर कन्दा वाद ।
ऐव नुमायद हुनरश् दर नज़र ।।
वर हुनरे दारी ओ हफ्ताद ऐव ।
दोस्त न वीनद व जुज़ आँ यक हुनर ।।

हिकायत—६

शवे याद दारम् कि यारे अज़ीज़म् अज़ दर दरामद—चुनाँ वेखुद अज़ जाए वर जस्तम् कि चिरागम् व आस्तीन् कुश्ता शुद ।

शेर (वहरे तवील)

सरा तैफु मन् यज्लू वि त'ल अतिहि'दुजा ।
खयाला युरा फिजुी अल'लैलि हादियन् ।।

اَتَانِی الَّذِی اَهْوَاهُ فِی غَلَسِ الدُّجَی
فَقُلْتُ لَهُ اَهْلاً و سَهْلاً و مَرْحَباً

अतानि'ल्लज़ी अह्वाहु फ़ि'ग़िस'द्दुजा।
फ क़ुल्तु लहु अहलन् ओ सहलन् व मरहबन्॥

شگفت آمد از بختم - که این دولت از کجا ؟ پس بنشست و عتاب آغاز نهاد - که چرا در حال که مرا دیدی چراغ نکشتی؟ گفتم - گمان بردم که آفتاب بر آمد - و دیگر آنکه ظریفان گفته اند -

शिगिफ्त आमद अज बख़्तम्—कि ईं दौलत अज़ कुजा? पस बनिशस्त व इताब आगाज़ निहाद—'कि चिरा दर हाल कि मरा दीदी चिराग बुकुश्ती?' गुफ़्तम्—'गुमान् बुर्दम् कि आफ़ताब बरआमद—व दीगर आं कि ज़रीफ़ान् गुफ़्ता अन्द—

قطعه

چون گرانی به پیش شمع آید
خیزش اندر میان جمع بکش -
ور شکر خنده ایست شیرین لب
آستینش بگیر و شمع بکش *

क़ता (बहरे खफ़ीफ़)

चूँ गिराने ब पेशे शमअ आयद।
खेज़श् अन्दर मियाने जमअ बिकुश॥
वर शकर खन्दा ऐस्त शीरीं लब।
आस्तीनश् बिगीरो शमअ बिकुश॥'

حکایت ۷

دوستی داشتم و مدتها ندیده بودم - روزی مرا پیش آمد * گفتم - ''کجائی؟ که مشتاق بودم'' * گفت - ''مشتاقی به که ملولی'' *

हिकायत—७

दोस्ते दाश्तम् व मुद्दतहा न दीदा बूदम्—रोज़े मरा पेश आमद। गुफ़्तम्—'कुजाई कि मुश्ताक़ बूदम्।' गुफ़्त—'मुश्ताक़ी बिह् कि मलूली?'

مثنوی

دیر آمدی - ای نگار سرمست!
زودت ندهم ز دامنت دست *
معشوقه که دیر دیر بیند
آخر نه از آنکه سیر بیند *

मसनवी (बहरे हज़ज्-मुसद्दस)

देर आमदी ऐ निगारे सर मस्त।
ज़ूदत न दिहम् ज़ि दामनत दस्त॥
माशूक़ा कि देर देर बीनद।
आखिर बिह् अज़ आं कि सेर बीनद॥

شاهد که با رفیقان آید جفا کردن آمده است - حکم آنکه از غیرت و مضادت خالی نباشد *

शाहिद कि बा रफ़ीक़ान् आयद ब जफ़ा कर्दन् आमदा अस्त व हुक्मे आं कि अज़ ग़ैरतो मुज़ाद्दत ख़ाली न बाशद।

بیت

اِذَا جِئْتَنِی فِی رُفْقَةٍ لِتَزُورَنِی
وَ اِنْ جِئْتَ فِی صُلْحٍ فَاَنْتَ مُحَارِبٌ *

बैत (बहरे तवील)

इज़ा जेतनी फी रुफ़्क़तिन् लि तज़ूरनी।
व इन् जेत फी सुल्हिन् फ अन्त मुहारिबुन्॥

قطعه

بیك نفس که در آمیخت یار با اغیار
بسی نماند که غیرت وجود من بکشد *

क़ता (बहरे मुज्तस्)

ब यक नफ़स कि दर आमेख़्त यार बा अग़यार।
ब से न मांद कि ग़ैरत वुजूदे मन् बिकुशद॥

हँसकर वह बोली—हे सादी ! मैं महफ़िल की शमा हूँ।
मुझको इससे क्या कि कोई परवाना अपने आपको जला ले।।

विहस्य साह हे सादि ! सभाज्वाला च विद्धि माम्।
किं मे दुःख पतङ्गेन स्वदेहो यदि हूयते ।। ३८ ।।

कथा—८

मुझे स्मरण आता है कि पुराने दिनों में मैं और एक मित्र बादाम की दो गिरियों की तरह एक छिलके में रहते थे। सहसा वियोग का अवसर आ पड़ा। कुछ काल के उपरान्त जब वह वापस लौटा तो आक्षेप लगाने लगा और क्षुब्ध होने लगा कि इतनी अवधि में एक पत्रवाहक भी नहीं भेजा। मैंने कहा—'मुझे यह भय हो गया कि पत्रवाहक की आँखें तेरे सौन्दर्य से प्रकाशित होंगी और मैं वंचित रह जाऊँगा।'

आख्यायिकम्—८

अभिजानाम्येतदहं यद्गतकालेऽहं मित्रेण सार्धं वातादमज्जेव त्वगेकमाश्रित्य प्रतिवसिष्यामि। सहसावयोर्विप्रयोगावसरः समज्जात। अतः चिरकालानन्तरं यदा स मां पुनरुपागात्, स मामाक्षेप्तुमारेभे, क्षोभं च व्यञ्जित स्मार्थतावत्या कालावधावपि पत्रवाहकं न मां प्राहिणोरिति। अहमवोचम्—'अहमशङ्कयं सारागथ पत्रवाहकस्य चक्षुषी तव रूपेणाऽप्यायिते भविष्यतो मदीये च वञ्चित इति।'

कता

मेरे पुराने मित्र से कह दे—कि जोश से मुझ से तोबा न करायें।
क्योंकि मुझ से तलवार से भी तौबा नहीं करवाई जा सकती।।
मुझे ईर्ष्या होती है कि कोई आदमी तुझे तृप्त होकर देखे।
मैं फिर कहता हूँ कि (तुझे देखने से) कोई तृप्त नहीं होगा।।

पदम्

मित्रं पुरातनं ब्रूहि मा मां शास्तु सराक्षरैः।
असिनाऽपि न मां कश्चिदयं शासितुमर्हति ।। ३९ ।।
यदि त्वां वीक्षते कश्चिद् ईर्ष्या सम्भूयते मया।
वदान्ते तृप्तता दृष्ट्वा न तृप्तं कुरुते क्वचित् ।। ४० ।।

कथा—९

मैंने एक बुद्धिमान् को देखा जो किसी व्यक्ति के प्रेम में पड़ा था और जो कि बातचीत में ठीक था। वह बड़ा अत्याचार सहता और जमीन धैर्य दिखाता। एक बार उपदेश के ढंग से मैंने उससे कहा—'मैं जानता हूँ कि तुझे इस प्रेम में कोई इल्लत मंजूर नहीं है और इस प्रेम का आधार जिल्लत पर है, यह विद्वानों की गरिमा के योग्य नहीं है—अपने आपको तिरस्कार्य बनाना और अशिष्टों का अत्याचार सहना।' वह बोला—'हे मित्र ! अपनी भर्त्सना का हाथ मेरे दुर्दिनों के दामन से हटा ले, क्योंकि अनेक बार इसके गुणावगुण पर जो तू देखता है मैंने विचार किया है और सोचा है। उसके अत्याचार पर सब्र करना, उससे सब्र करने की अपेक्षा सरलतर है।'

आख्यायिकम्—९

मयैको विद्वान् दृष्टो यश्च कस्याश्चित् प्रेम्णि निबद्ध आसीत्। वाग्व्यवहारे स नितरां पटुरासीत्। स महनीयमत्याचारं सेहे महतीञ्च धृतिं दधे। एकदोपदेशरीत्याऽहं तमवोचम्—'अहं जाने, न त्वमस्मिन् प्रेम्णि इलमां सोढुमर्हसि, किञ्च प्रेम्णोऽस्य आधारो ह्यपमानमूलं। न पुनरिदं विद्वत्सूपपद्यते यदात्मानं शङ्काभाजनं विदध्युरशिष्टानां च कृतापमानं सहेरन्निति।' सोऽवदत्—'हे मित्र ! उपालम्भेन भर्त्सनापाणिप्रसारेण, मम दुर्दिनविपन्नस्योत्तरीये। यतोऽनेकधा यथा मामनुशास्सि तथा मया विमृष्टमिति।' ननु—'कष्टानि सुसह मन्ये वैमुख्यं हि सुदुःसहम्।'

मसनवी

जो कि अपना दिल प्रेमिका को देता है।
वह अपनी दाढ़ी दूसरे के हाथ में थमाता है।।
एक हिरन जिसकी गर्दन पर सिंह हो।
नहीं सकता अपने आप चल।।

और पण्डितों ने कहा है—'समर्पण में हृदय डाल देना सरल है, उस सुन्दरी की ओर से आँखें फेर लेने से।'

गाथा

यश्चापि हृदयं स्वस्य कान्तायै परियच्छति।
स कूर्चं स्वस्य मन्यस्ते परहस्तगतं किल ।। ४१ ।।
सिंहगृहीतग्रीवस्तु क्वापि नेच्छपलो मृगः।
न च सिंहगतिक्रम्य प्रपलायितुमर्हति ।। ४२ ।। श

यत्र च पण्डिता आहुः—
साटे स्वस्य चित्तस्य निक्षेपः सुकरः स्मृतः।
कान्तामुखोन्मुखी दृष्टिमपाकर्तुं सुदुष्करम् ।। ३ ।।

مثنوی

روزی از دوست گفتمش - زنهار
چند از آن روز کردم استغفار *
نکند دوست زینهار از دوست
دل نهادم بر آنچه خاطر اوست *
آنکه بی او بسر نشاید برد
گر جفائی کند - بباید برد *
گر بلطفم برد خود خواند
ور بقهرم براند - او داند *

मसनवी (बहरे खफीफ)

रोज़े अज़ दोस्त गुफ्तमश् ज़िन्हार।
चन्द अज़ाँ रोज़ करदम् इस्तिग़फ़ार॥
न कुनद दोस्त ज़ीनहार अज़ दोस्त।
दिल निहादम् बर आँचि ख़ातिरे ओस्त॥
आँ कि बे ऊ बसर न शायद बुर्द।
गर जफ़ाए कुनद बबायद बुर्द॥
गर ब लुत्फ़म् ब निज़्दे ख़ुद ख़्वानद।
वर ब कहरम् बरानद ऊ दानद॥

حکایت ۱

در عنفوان جوانی - چنان که افتد و دانی - با شاهد پسری سری داشتم بحکم آن که حلقی داشت طیبُ الادا - و خلقی داشت کالبدرِ اذا بدا *

हिकायत—१०

दर उनफ़ुवाने जवानी चुनाँ कि उफ़्तद व दानी बा शाहिद पिसरे सिर्रे दाश्तम् ब हुक्मे आँ कि हल्क़े दाश्त 'तैबु'ल् अदा' व ख़ुल्क़े दाश्त—'क'ल्बद्रि इज़ा बदा।'

بیت

آنکه نبات عارضش آب حیات میخورد
در شکرش نگه کند هر که نبات میخورد *

बैत (बहरे हज़ज्)

आँ कि नबाते आरिज़श् आबेहयात मी ख़ुरद।
दर शकरश् निगह कुनद हर कि नबात मीख़ुरद॥

اتفاقاً بخلاف طبع از وی حرکتی دیدم - نپسندیدم - دامن از صحبت وی درکشیدم - و مهرهٔ مهر او بر چیدم و گفتم -

इत्तिफ़ाक़न् व ख़िलाफ़े तबअ अज़ वै हरकते दीदम्—नपसन्दीदम्—दामन् अज़ सुहबते वै दर कशीदम् व मुहरए मिहरे ऊ बर चीदम् व गुफ़्तम्—

بیت

برو - هرچه میبایدت پیش گیر
سر ما نداری - سر خویش گیر *

बैत (बहरे मुतकारिब)

बिरौ, हर चि मी बायदत पेश गीर।
सरे मा न दारी सरे ख़ेश गीर॥

شنیدم که میرفت و میگفت -

शुनीदम् कि मीरफ़्त व मीगुफ़्त।

بیت

شپره گر وصل آفتاب نخواهد
رونق بازار آفتاب نکاهد *

बैत (बहरे मुसरिह)

शबपरा गर वस्ले आफ़ताब न ख़्वाहद।
रौनक़े बाज़ारे आफ़ताब न काहद॥

این بگفت و سفر کرد - و پریشانی او در دل من اثر کرد *

ईं बिगुफ़्तो सफ़र कर्द—व परेशानिए ऊ दर दिले मन् असर कर्द।

मसनवी

एक दिन मैंने उससे कहा कि मित्र से सावधान।
उसी दिन से मैं करता हूँ दोष की क्षमा याचना।।
नही करता मित्र सावधान मित्र से।
मैंने चित्त उस पर रख दिया है, जो उसकी इच्छा हो।।
वह जिसके बिना निर्वाह नही हो सकता।
यदि अत्याचार करे तो सहना ही उचित है।।
चाहे वह कृपा करके मुझे अपने निकट बुला ले।
और चाहे तो वह मुझे क्रोध से निकाल दे—वह जाने।।

गाथा

अथैकदा सुहृन्मित्र मित्र प्रति न्यबोधयम्।
तस्य दोषस्य चाद्यापि पश्चात्तापो दहेन्मम।।४३।।
न मित्रमुत मित्रेण प्रतिबोध समाचरेत्।
मया तस्या धृत चित्त यथैवास्यै नु रोचते।।४४।।
विना य प्राणनिर्वाहो जातु कर्तुं न शक्यते।
शाठ्येन यदि वर्तेत सहन चैव साम्प्रतम्।।४५।।
स्नेहभावेन चेदस्मानावाहयतु वा पुन।
तिरस्करोतु वा कोपादिति तस्य विचारणा।।४६।।

कथा—१०

यौवन काल मे, जैसा कि होता है, आप जानते ही हैं, मैं एक सुन्दर किशोर के प्रति आसक्त था, क्योकि उसका कण्ठ मधुर था और आकार ऐसा जैसा उदीयमान चन्द्रमा।

आख्यायितम्—१०

यौवनारम्भे यथा हि भवति, अह कञ्चन रूपाढ्य किशोर प्रति अनुरक्त आसम्। यत —

कण्ठोऽस्य मधुरो रूपमुदेष्यन्निव चन्द्रमा।।४।।

बैत

वह जिसका मिश्री जैसा गाल अमृत नहाया हुआ।
जो उस खाँड़ के पुतले को देखे उसके मुँह में भी मिश्री घुल जाय।।

सयोग से मैंने उसकी कोई हरकत रुचि के प्रतिकूल देख ली, वह मुझे पसन्द न आयी। मैंने उसकी सगति से दामन खीच लिया और प्रेम के मोहरे उस पर से चुन लिये और कहा—

श्लोक

सितोपलोज्ज्वलो गण्डो धौतश्चामृतवारिभि।
वीक्षेत खण्डखण्ड यस्तस्यास्य मधुरायते।।४७।।

सयोगवशात्, मया तस्य किञ्चित् चेष्टितमनभिमत दृष्ट यच्चारुचिर मे जातम्। अह तस्य सङ्गाद् विरक्तो भूत्वा मम हृदयवेश्मनस्त बहिष्कृतवान्।

बैत

जा, जो कुछ तू चाहे वह कर।
तू हमारी बुद्धि से काम नही लेता, अपनी बुद्धि से चल।।

मैंने सुना कि चलते चलते वह कह गया—

श्लोक

याहि तावद् यथाकाम कुरु यत्तेऽभिरोचते।
अस्मद् धिया न वर्तेथा धिय स्वीयामनुस्मर।।४८।।

अश्रौषमथ गच्छता तेनाहमुक्त।

बैत

चमगादड यदि सूर्य से मिलन नही चाहता।
तो सूर्य की गरिमा उससे कम नही होगी।।

श्लोक

जतूको यदि नैवेच्छेत् सवित्रा सह सङ्गमम्।
न जातु सवितु कश्चिद् गरिमा तेन हीयते।।४९।।

यह कहकर वह चला गया और उसके उखड़ेपन ने मेरे मन पर बड़ा असर किया।

इदमुक्त्वा सोऽगमत्, तस्य खेदो मामपि खिन्न व्यदधात्।

शेर (बहरे तवील)

فَقَدتُّ زَمَانَ الوَصلِ وَ المَرءُ جَاهِلٌ
بِقَدرِ لَذِیذِ العَیشِ قَبلَ المَصَائِبِ

फ़क़'त्तु ज़मान'ल् वस्लि व'ल् मर्उ जाहिलुन्।
बिक़द्रि लज़ीज़ि'ल् ऐशि क़ब्लि'ल् मसाइबि॥

بیت

باز آی و مرا بکش ـ که پیشت مردن
خوشتر که پس از تو زندگانی بردن

बैत (बहरे हज़ज)

बाज़ आय व मरा बुकुश—कि पेशत मुर्दन्।
ख़ुशतर कि पस अज़ तु ज़िन्दगानी बुर्दन्॥

بعد از مدتی باز آمد آن حلق داؤدی متغیر شده و جمال یوسفی بزیان آمده و بر سیب زنخدانش چون بهی گردی نشسته و رونق بازار حسنش شکسته ـ متوقع که در کنارش گیرم ـ کناره گرفتم و گفتم ـ

बाद अज़ मुद्दते-बाज़ आमद आं हल्क़े दाऊदी मुतग़य्यर शुदा व जमाले यूसुफी ब ज़ियां आमदा व बर सेबे ज़नख़्दानश् चू बिही गर्दे निशस्ता व रौनक़े बाज़ारे हुस्नश् शिकस्ता—मुतवक़्क़ेअ कि दर किनारश् गीरम्—किनारा गिरफ़्तम् व गुफ़्तम्।

مثنوی

تازه بهار تو کنون زرد شد
دیگ منه ـ کاتش ما سرد شد
چند خرامی و تکبر کنی؟
دولت پارینه تصور کنی؟
پیش کسی رو که طلبگار تست
ناز بر آن کن که خریدار تست

मसनवी (बहरे सरी)

ताज़ा बहारे तो कुनूं ज़र्द शुद।
देग मनिह्—कातिशे मा सर्द शुद॥
चन्द ख़रामी व तकब्बुर कुनी।
दौल्ते पारीना तसव्वुर कुनी॥
पेशे कसे रौ कि तलबगारे तुस्त।
नाज़ बरां कुन कि ख़रीदारे तुस्त॥

قطعه

سبزه در باغ ـ گفته اند ـ خوشست
داند آن کس که این سخن گوید ـ
یعنی از روی نیکوان خط سبز
دل عشاق بیشتر جوید
بوستان تو گندنا زاریست
بس که بر میکنی و میروید

क़ता (बहरे ख़फ़ीफ़)

सब्ज़ा दर बाग़—गुफ़्ता अन्द—ख़ुश'स्त।
दानद आं कस कि ईं सुख़ुन गोयद॥
यानी अज़ रूए नेकवां ख़ते सब्ज़।
दिले उश्शाक़ बेशतर जोयद॥
बोस्ताने तो गन्दना ज़ारे'स्त।
बस कि बर मी कनी व मी रोयद॥

ایضاً

گر صبر کنی ور نکنی ـ موی بناگوش
وین دولت ایام نکوئی ـ بسر آید
گر دست بجان داشتمی ـ همچو تو بر ریش
نگذاشتمی تا بقیامت که بر آید

ऐज़न् (बहरे हज़ज-मुसम्मन्)

गर सब्र कुनी व गर न कुनी मूए बुनागोश।
वीं दौल्ते अय्यामे निकूई बसर आयद॥
गर दस्त ब जां दाश्तमे हमचु तो बर रीश।
न गुज़ाश्तमे ता ब क़यामत कि बर आयद॥

शेर

मैंने खो दिया मिलन का समय और मनुष्य जाहिल है।
कद्र करने में लज़ीज़ सुखों की विपत्ति से पूर्व॥

बैत

वापिस आ ! और मुझे मार डाल—क्योंकि तेरे सामने मरना।
अच्छा है तेरे उपरान्त जीवन यापन करने से॥

कुछ समय पश्चात्—वह लौटा। वह दाऊद का सा कण्ठ बदल चुका था और यूसुफ जैसा सौन्दर्य क्षीण हो चुका था और उसकी सेब जैसी चिबुक पर विही के समान धूल जम गयी थी और उसके रूप का बाज़ार नष्ट हो चुका था। उसने मुझ से अपेक्षा की कि मैं उसका आलिंगन करूँ। मैं कन्नी काट गया और मैंने कहा—

मसनवी

तेरी ताजा बहार अब पीली पड़ गयी।
देग मत रख कि हमारी आग ठण्डी हो गयी॥
कब तक तू लचक कर चलता रहेगा और गर्व करेगा।
प्राचीन वैभव की कल्पना करता रहेगा॥
उसके आगे जा कि जो तेरा चाहने वाला हो।
नाज उस पर कर जो तेरा खरीदार हो॥

क़ता

बाग में हरियाली, कहते हैं, अच्छी होती है।
वही जानता है जिसने कि यह कहा है॥
अर्थात् सुन्दर (किशोरों) के मुँह पर कोमल बालों की।
प्रेमियों का हृदय अधिकाधिक कामना करता है॥
तेरा मुखरूपी उद्यान लहसुन का बाग है।
जितना ज्यादा कि तू नोचता है, वह और उगता है॥

ऐज़न

चाहे तू उखाड़े या न उखाड़े गालों के बाल।
और वह अच्छे दिनों का वैभव बीत चुका॥
यदि हाथ अपनी जान पर मैं रख पाता जैसा कि तेरी दाढ़ी पर तेरा है।
तो न हटाता कि यह प्रलय तक उगर आ सकती॥

श्लोक

सयोगावसरो नष्टो यन्मनुष्यो हि मूर्खधीः।
विपत्ति-पतनात् पूर्वं न सुखं मन्यते सुखम्॥ ५० ॥

श्लोक

प्रत्यावर्तस्व मां हन्या मरणं तव सम्मुखम्।
वरं न त्वद्विहीनस्य मामकीनं तु जीवितम्॥ ५१ ॥

किञ्चित्कालानन्तरं स प्रतिवर्तते। तस्य दाऊदकल्पः कण्ठस्वरः परिवर्तित आसीत्। यूसुफकल्पञ्च सौन्दर्यं म्लानमगात्। सेब-फलकल्पमिवास्य चिबुकं विहीफलमिव धूलिधूसरितं सञ्जातम्। रूप-प्रभास्तमिता चेति। स मामपेक्षितवानयं—'मा मालिङ्ग्य वर्तेथाः।' अहमुपेक्षां कृत्वावोचम्—

गाथा

प्रसन्न-विकचरूपं तेऽद्य पाण्डुरतां गतम्।
मा स्म दत्ताद् हविर्मोघं शान्तं मेऽद्य हुताशनम्॥ ५२ ॥
कदा प्रभृति सोत्सेकं लीलाचालं चलिष्यसि।
प्राचीनमथ सौन्दर्यं स्मारं स्मारं प्रवत्स्यसि॥ ५३ ॥
पुरस्तात् कस्यचिज्जन्तोर्याहि यस्त्वाभिकामयेत्।
प्रीतिं ततो व्यपेक्षेथा यस्ते क्रेता भवेत् क्वचित्॥ ५४ ॥

पदम्

हरीतिमा वनक्षेत्रे मनोज्ञतर उच्यते।
य इदमुक्तवान् सूक्तं तं विजानीहि पण्डितम्॥ ५५ ॥
अथ रूपवतामास्ये रोमराज्युद्गमो भृशम्।
चित्तं च कामजुष्टानां प्रकर्षेण प्रकर्षयेत्॥ ५६ ॥
लशुनक्षेत्रकल्पं ते जातं हि मुखमण्डलम्।
यावानुत्पाट्यते तावान् कूर्चश्मश्रुसमुच्चय॥ ५७ ॥

अपरञ्च

गण्डस्थरोमराजिं चोत्पाटयेरथवा न वा।
इदानीं सुदिनानां सा सम्पत्तिर्व्ययमागता॥ ५८ ॥
कूर्चोच्छेदक्षमं हस्तं विन्यस्यति यथा त्वम्।
तथाऽधास्ये यदि प्राणे तर्हि मृत्युं न यापयेत्॥ ५९ ॥

قطعه

سؤال کردم و گفتم - جمال رویت را
چه شد؟ که مورچه بر گرد ماه جوشیدست ؛
جواب داد - ندانم چه بود رویم را
مگر بماتم حسنم سیاه پوشیدست ؛

حکایت ۱۱

یکی از علما را پرسیدند - که کسی با ماه روئی در خلوت نشسته و درها بسته و رقیبان خفته و نفس طالب و شهوت غالب - چنان که عرب گوید - التَّمرُ یانعٌ و النّاطورُ غیرُ مانعٍ - هیچ کس باشد که بقوت بازوی پرهیزگاری سلامت ماند؟ گفت - اگر از ماه رویان بسلامت ماند - از زبان بد گویان بسلامت نماند ؛

شعر

وَ اِن سَلِمَ الانسانُ مِن سُوءِ نَفسِهِ
فَمِن سُوءِ ظَنِّ المُدَّعی لَیسَ یَسلَمُ ؛

بیت

شاید پس کار خویشتن بنشستن
لیکن نتوان زبان مردم بستن ؛

حکایت ۱۲

طوطی را با زاغی در قفص کردند ؛ طوطی از قبح مشاهدهٔ او مجاهده میبرد و میگفت - این چه طلعت مکروهست و هیأت ممقوت و منظر ملعون و شمائل ناموزون ! یا غرابَ البَینِ یا لَیتَ بَینی و بَینَکَ بُعدَ المَشرِقَینِ !

قطعه

علی الصباح بروی تو هر که برخیزد
صباح روز سلامت برو مسا باشد ؛
بد اختری چو تو در صحبت تو بایستی
ولی - چنانکه توئی - در جهان کجا باشد ؛

कता (वहरे मुज्तश्)

सवाल कर्दमो गुफ्तम् जमाले रूयत रा।
चि शुद कि मोर्चा वर गिर्दे माह जोशीद'स्त।।
जवाब दाद न दानम् चि वूद रूयम् रा।
मगर व मातमे हुस्नम् सियाह पोशीद'स्त।।

हिकायत—११

यके अज़ उलमा रा पुरसीदन्द—कि कसे वा माह रूए दर ख़लवत निशस्ता व दरहा वस्ता व रक़ीबान् ख़ुफ़्ता व नफ़्स तालिब व शह्वत ग़ालिब—चुनां कि अरब गोयद—'अत्तम्रु यानिउन् व'न्नातूरु ग़ैरु मानीइन्।' हेच कस बाशद कि व कुव्वते वाज़ुए परहेज़गारी व सलामत मानद? गुफ्त—'अगर अज़ महरूयान् व सलामत मानद—अज़ ज़ुबाने वद गोयान् वेसलामत न मानद।'

शेर (वहरे तवील)

व इन् सलिम'ल् इन्सानु मिन् सूये नफ़्सिही।
फ़ मिन् सूये ज़न्नि'ल् मुद्दई लैस यस्लमु।।

वैत (वहरे हजज्)

शायद पसे कारे ख़ेशतन् वनिशस्तन्।
लेकिन न तवाँ ज़बाने मर्दुम् वस्तन्।।

हिकायत—१२

तूती रा वा ज़ागे दर क़फ़स करदन्द। तूती अज़ क़ुब्हे मुशाहिदाए ऊ मुजाहिदा मी बुर्द व मी गुफ़्त—'ईं चि तलअते मकरूह'स्त व हयअते ममक़ूत व मन्ज़रे मलऊन व शमाइले नामौज़ूँ! या गुराब'ल् बैनि—या लैत! बैनी व बैनक बुअद'ल मश्रिक़ैन्!'

कता (वहरे मुज्तश्)

अला'स्सबाह् व रूये तो हर कि वर ख़ेज़द।
सबाह रोज़े सलामत वरू मसा वाशद।।
बद अख़्तरे चु तु दर सुह्वते तो बायस्ते।
वले चुनांकि तुई दर जहाँ कुजा वाशद।।

क़ता

मैंने प्रश्न किया और कहा कि तेरे मुख के रूप को।
क्या हुआ जो चांद को चारों ओर से चींटियों ने घेर लिया ॥
उसने उत्तर दिया कि—'मैं नहीं जानता कि क्या हुआ मेरे मुख को।
शायद मेरे रूप के शोक में उसने काला कपड़ा पहन रखा है ॥'

पदम्

तमप्राक्षं कुतस्तावत् तव रूपं पलायितम्।
चन्द्रमण्डलमलिट्कीर्णं कुतोऽय कृष्णप्रच्छद ॥ ६० ॥
प्रत्युत्तरमदात्—'जाने नायमजनि किं मुखे।
नष्टसौन्दर्यशोकाय मन्येऽयं कृष्णपच्छद ॥ ६१ ॥

कथा—११

किसी विद्वान् से लोगों ने पूछा—'कि कोई किसी चन्द्रमुखी के साथ एकान्त में बैठा हो, द्वार बन्द हो, परिजन सोये हों, कामना जाग्रत हो और वासना उत्तेजित। जैसी कि अरबी कहावत है—"खजूर पके है और रख वाला रोकता नहीं।" कौनसा व्यक्ति होगा जो अपने संयम के बाहुबल से सुरक्षित रह जायगा?' उसने कहा—'यदि चन्द्रमुखियों से भी सुरक्षित रह जायगा तो बुरा बोलने वालों की जबान से बिना धिक्कार न रहेगा।'

आख्यायितम्—११

कश्चिद् विद्वान् लोकैः पृष्टोऽयं—'यदि कश्चित् पुमान् कयाचिच्चन्द्राननया सार्धं निभृतस्थित स्यात् द्वार कीवाटावृतम्, परिजना सुप्ता, कामना चालयता, रिरसा चोद्दीपिता स्यात्। यथाहुरारब्या—"खर्जूराणि सुपक्वानि, रक्षको न च वर्जयेत्।" क खलु संयमबलेनात्मान संयम्य सुरक्षित स्यात् समर्थ इति?' विद्वानुवाच—
'ननु चन्द्राननाभ्यश्च रक्षितो यदि तिष्ठति।
पिशुनाना प्रवादाच्चाभर्त्सितो न हि तिष्ठति ॥ ५ ॥'

शेर

और यदि सुरक्षित रह गया मानव अपनी प्रकृति की दुष्टता से।
तो विरोधी के दुर्विचार से नहीं सुरक्षित हो पायगा ॥

श्लोकः

अपि चेन्मानव स्वस्य दुष्प्रवृत्या प्रमुच्यते।
विरोद्धुर्दुर्विचारैस्तु परित्राणं न चाप्नुते ॥ ६२ ॥

बैत

उचित हो सकता है अपने काम में लगकर बैठ जाना।
लेकिन नहीं हो सकता आदमी की जुबान बांधना ॥

श्लोक

शक्यते हि परिस्थातु स्वव्यापारेषु व्यापृत।
प्रवादप्रसरा वाणी पिशुनाना न रुध्यते ॥ ६३ ॥

कथा—१२

एक तोती को कौए के साथ लोगों ने पिंजरे में कर दिया। तोती उसकी कुरूपता देखकर खीझने लगी और बोली—'यह कैसा घृणित दृश्य है, कैसी निन्द्य आकृति है, और धिक्कार के योग्य नजर है और अनुपयुक्त आकार है। हे वियोग के कौए! काश! मेरे और तेरे बीच में दूरी होती दो मशरिकों की पूर्व और पश्चिम की।'

आख्यायितम्—१२

एकदा काचिच्छुकी काकेन सह पञ्जरिता। शुकी तस्य कुरूपता दृष्ट्वा नितरां निर्विण्णा जाता। अवदच्च—'अहो! बत, कीदृगिद घृण्य दृश्यम्, को नु कदर्थिताकार, धिक्काराहो नेत्र दृष्टिमाला, अनुपपन्नश्चाकार। अरे वियोग वायस! 'अवर्त्स्यावि तथा दूर यथा-पूर्वोऽस्ति पश्चिमात्' ॥ ६ ॥

क़ता

सवेरे तुझे देखकर जो कोई उठता है।
क्षेमकर प्रभात उसके लिये सन्ध्या हो जाता है ॥
अभागा तेरे जैसा तेरे संगति में उपयुक्त होता।
पर तेरे जैसा संसार में है कहां ॥

पदम्

प्रभाते यदा दृष्ट्वा त्वामुत्तिष्ठेद् भाग्यवञ्चित।
प्रसन्नाह्नसमारम्भस्तस्य दोषेव दुष्कर ॥ ६४ ॥
सङ्गच्छते त्वया सार्धं त्वादृश गतु दुर्भग।
परन्तु दुर्भगस्त्वादृग् लभ्यते न कुतो भुवि ॥ ६५ ॥

عجب‌تر آں که غراب هم از مجاورت طوطی بجاں آمده بود و ملول شده ـ لا حول کناں از گردش گیتی همی‌نالید ـ و دستهای تغابن بر یکدیگر همی‌مالید و میگفت ـ ''این چه بخت نگونست و طالع دوں و ایام بو قلموں؟ لائق قدر من آنستی که با زاغی بر دیوار باغی خراماں همی‌رفتمی *

بیت

پارسا را بس این قدر زنداں
که بود در طویلهٔ رنداں *

تا چه گنه کردم که روزگارم بعقوبت آں در سلک صحبت چنیں ابلهی خود رای و نا جنس خیره روی بچنیں بند و بلا مبتلا گردانیده است؟

قطعه

کس نیاید بپای دیواری
که بر آں صورتت نگار کنند *
گر ترا در بهشت باشد جای
دیگراں دوزخ اختیار کنند'' *

این مثل بداں آورده ام تا بدانی ـ که چنداں که دانا را از ناداں نفرتست ـ ناداں را نیز از صحبت دانا وحشتست *

قطعه

زاهدی در میان رنداں بود
زاں میاں گفت شاهدی بلخی *
گر ملولی زما ـ ترش منشیں
که تو هم در میان ما تلخی *

رباعی

جمعی چو گل و لاله بهم پیوسته
تو هیزم خشک در میان شاں رسته ـ
چوں باد مخالف و چو سرما ناخوش
چوں برف نشسته و چو یخ بر بسته ـ

अजबतर आँकि गुराब हम अज़ मुजावरते तूती ब जाँ आमदा बूद व मलूल शुदा—'लाहोल' कुनाँ अज़ गर्दिशे गेती हमी नालीद—व दस्त हाये तगाबुन बर यक दीगर हमी मालीद व मीगुफ्त—'ईं चि बख़्ते निगून'स्त व तालिए दून व अय्यामे बू कलमून? लायक़े क़द्रे मन् आनस्ते कि बा ज़ाग़े बर दीवारे बाग़े ख़रामाँ हमी रफ़्तमे।'

बैत (बहरे खफ़ीफ़)

पारसा रा बस ईं क़दर ज़िन्दान।
कि बुवद दर तवेलए रिन्दान॥

ता चि गुनह कर्दम् कि रोज़गारम् ब उक़ूबते आँ दर सिल्के सुहबते चुनी अबल्हे ख़ुदराय व नाजिन्से ख़ीरारूय ब चुनीं बन्द व बला मुब्तिला गर्दानीदा अस्त?

क़ता (बहरे खफ़ीफ़)

कस नयायद ब पाये दीवारे।
कि बर आँ सूरतत निगार कुनन्द॥
गर तुरा दर बिहिश्त बाशद जाय।
दीगराँ दोज़ख़ इख़्तियार कुनन्द॥

ईं मसल बदाँ आवुर्दा अम् ता बिदानी—कि चन्दाँ कि दाना रा अज़ नादान नफ़रत'स्त—नादान रा नीज़ अज़ सुहबते दाना वहशत'स्त।

क़ता (बहरे खफ़ीफ़)

ज़ाहिदे दर मियाने रिन्दाँ बूद।
ज़ाँ मियाँ गुफ़्त शाहिदे बल्ख़ी॥
गर मलूली ज़ि मा तुरुश म नशीं।
कि तु हम दरमियाने मा तल्ख़ी॥

रुबाई (बहरे हज़ज)

जमए चु गुलो लाला बहम पैवस्ता।
तु हैज़में ख़ुश्क दरमियाने शाँ रुस्ता॥
चू बादे मुख़ालिफ़ व चु सरमा नाख़ुश।
चू बर्फ़ निशस्ता व चु यख़ बर बस्ता॥

इससे भी आश्चर्यजनक यह हुआ कि कौआ भी तोती के पडोस से कण्ठगत प्राण हो गया और विषण्ण हो उठा—लाहौल करता हुआ भाग्यचक्र को कोसने लगा, और पश्चात्ताप के हाथों को एक दूसरे पर मलने लगा और कहने लगा—'यह कैसा दुर्भाग्य है, हीन प्रारब्ध है और बुरे दिन हैं! मेरी कद्र के लायक यह होना कि किसी कौए के साथ किसी उद्यान की दीवार पर उछल उछल कर चलता।'

ततोऽपि विचित्रमिद समापन्नमथ काकोऽपि शुकीमङ्गतौ खिन्न, कण्ठगतप्राणश्च बभूव। 'त्राहि मामिति' ब्रुवाणो भाग्यविपर्यय च क्रोष्टुमारेभे। पश्चात्तापपुरस्सर हस्त हस्तेन सघट्टयन्नुवाच—'अहो धिगेतद् दौर्भाग्यम्! अहो हीनप्रारब्धम्! अहो दुर्दिनोदय! काकेनापरेण केनचिदुद्यानप्राचीरस्कुर्दयगानस्य मम।'

बैत

साधु के लिये यही कारावास बहुत है।
कि वह हो शराबियों के बाडे में॥

श्लोक

कारावासो हि साधूनामयमेव भविष्यति।
यदेते मद्यपै सार्धं भवेयु सहवासिन॥ ६६॥

मैंने क्या पाप किया था कि जिसके दण्ड स्वरूप ऐसे मूर्ख, आत्माभिमानी, अकिंचन, और कुरूप की सन्निधि में इस प्रकार बन्दी और आपत्ति में ग्रस्त कर दिया गया है!

हा! किं पाप व्यवसित मया यदस्य दण्डस्वरूप मम जीवितमेतावत्या मूर्खया, अहकारिण्या, अकिञ्चनया, कुरूपया सार्धं प्रतिबद्ध विपन्नञ्चेति।

क़ता

कोई नही आयेगा उस दीवार के तले।
जिस पर कि तेरी छवि निरूपित होगी॥
यदि तेरी स्वर्ग मे हो जगह।
दूसरे लोग नरक को स्वीकार कर लेंगे॥

पदम्

भित्तिमूल न तत् कोऽपि समाश्रयति वै पुमान्।
यत्र चित्राङ्किता भित्तौ त्वदीया वर्तते छवि॥ ६७॥
भविता यदि ते धाम स्वर्गे लोके कदाचन।
यास्यन्ति स्वेच्छया सर्वे सङ्गभीतास्तु रौरवम्॥ ६८॥

यह दृष्टान्त मैंने इसलिये उद्धृत किया है ताकि तू जान ले कि जितनी विद्वान् को मूर्ख से घृणा होती है, मूर्ख को भी विद्वान् से उतनी ही वहशत होती है।

इद दृष्टान्त मयानेन हेतुनोद्धत यद् विद्धि अथ यावती विरक्तिर्मूढे विदुषो भवति तावती हि विदुषि मूढस्यास्तीति।

क़ता

एक सयमी शराबियो के बीच मे था।
उनमें से एक बाह्लीक सुन्दरी बोली॥
यदि तू खिन्न है हमसे तो मुँह बिगाड कर मत बैठ।
क्योंकि तू भी हमारे बीच में कडवा है॥

पदम्

आसीद्धि धार्मिक कश्चिन् मद्यपाना च सत्रवे।
त तथा विह्वल दृष्ट्वाऽब्रवीद् बाह्लीकसुन्दरी॥ ६९॥
अस्मासु यदि खिन्नोऽसि मा स्म निष्ठा असूयक।
त्वञ्चाप्येकपदेऽस्मासु वैरस्य जनयेस्तथा॥ ७०॥

रुबाई

गुलाब और लाला जैसी गुथी हुई सगति में।
तू सूखा काठ है उनके बीच में उगा हुआ॥
मानो विरुद्ध-वात है दु सह तुषार है।
मानो बर्फ जमा है, और मानो पाला मारा हुआ है॥

चतुष्पदीयम्

सेवती फुल्लपुष्पाणा कोरकाणा समुच्चये।
शुष्ककाष्ठमिवैतेषु प्ररूढ सश्च विद्यसे॥ ७१॥
विरुद्ध इव सवातस्तुषार इव दु सह।
हिमानीव पर शीतो हिमानद्ध इवोपलम्॥ ७२॥

حکایت ۱۳

رفیقی داشتم - که سالها با هم سفر کرده بودیم و نمک خورده و حقوق صحبت ثابت شده * آخر بسبب اندک نفعی آزار خاطر من روا داشت و دوستی سپری شد - و با این همه از هر دو طرف دلبستگی بود - بحکم آن که شنیدم که روزی دو بیت از سخنان من در جمعی می‌خواند -

قطعه

نگار من چو در آید بخندهٔ نمکین
نمک زیاده کند بر جراحت ریشان *
چه بودی - از سر زلفش بدستم افتادی
چو آستین کریمان بدست درویشان *

طائفهٔ از دوستان بر لطف این سخن - نه که بر حسن سیرت خویش - گواهی داده بودند و آفرین کرده - و او هم در آن جمله مبالغه نموده و بر فوت صحبت دیرین تاسف خورده و بخطای خویش معترف شده * معلوم کردم که از طرف او هم رغبتی هست - این چند بیت نوشتم و صلح کردم *

قطعه

نه ما را در میان عهد وفا بود؟
جفا کردی و بد عهدی نمودی *
بیکبار از جهان دل در تو بستم
ندانستم که بر گردی بزودی *
هنوزت گر سر صلحست - باز آی
کز آن مقبولتر باشی که بودی *

حکایت ۱۴

یکی را زنی صاحب جمال در گذشت - و مادر زن پیر فرتوت بعلت کابین در خانه او بماند * مرد از مجاورت او بجان آمده بود و چارهٔ نداشت * یکی از دوستان پرسیدش - "که چه گونهٔ در فراق یار عزیز"؟ گفت - "نا دیدن زن بر من چنان دشوار نمی‌آید که دیدن مادر زن" *

हिकायत—१३

रफ़ीक़े दाश्तम्—कि सालहा बाहम—सफ़र कर्दा बूदेम् व नमक ख़ुर्दा व हुक़ूक़े सुहबत साबित शुदा। आख़िर ब सबबे अन्दक नफ़ए आज़ारे ख़ातिरे मन् रवा दाश्त व दोस्ती सिपरी शुद—व बा ईं हमा अज़ हर दू तरफ़ दिलबस्तगी बूद ब हुक्मे आँकि शुनीदम् कि रोज़े दू बैत अज़ सुख़नाने मन् दर मजमए मी ख़्वान्द।

क़ता (बहरे मुज्तस्)

निगारे मन् चु दर आयद ब ख़न्दए नमकीन।
नमक ज़ियादा कुनद बर जिराहते रेशाँ॥
चि बूदे अर सरे ज़ुल्फ़श् ब दस्तम् उफ़्तादे।
चु आस्तीने करीमाँ ब दस्ते दरवेशाँ॥

तायफ़ाए अज़ दोस्ताँ बर लुत्फ़े ईं सुख़न—नै कि बर हुस्ने सीरते ख़ेश—गवाही दादा बूदन्द व आफ़रीं कर्दा—व ऊ हम दर आँ जुमला मुबालग़ा नमूदा व बर फ़ौते सुहबते देरीन तास्सुफ़ ख़ुर्दा व ब ख़ताये ख़ेश मुअतरिफ़ शुदा। मअलूम कर्दम् कि अज़ तरफ़े ऊ हम रग़बते हस्त—ईं चन्द बैत नविश्तम् व सुल्ह कर्दम्।

क़ता (बहरे हज़ज्)

नै मारा दर मियाँ अह्दे वफ़ा बूद।
जफ़ा कर्दी व बद अह्दी नमूदी॥
ब यकबार अज़ जहाँ दिल दर तो बस्तम्।
न दानिस्तम् कि बरगर्दी ब ज़ूदी॥
हनोज़त गर सरे सुल्ह'स्त बाज़ आय्।
कज़ाँ मक़बूलतर बाशी कि बूदी॥

हिकायत—१४

यके रा ज़ने साहिब जमाल दर गुज़श्त—व मादरे ज़न पीरे फ़र्तूत ब इल्लते कावीन दर ख़ानाए ऊ बमांद। मर्द अज़ मुजावरते ऊ ब जाँ आमदा बूद व चाराए न दाश्त। यके अज़ दोस्तान् पुरसीदश्—'कि चि गूनाई दर फ़िराक़े यार अज़ीज़?' गुफ़्त—'ना दीदने ज़न बर मन् चुनाँ दुश्वार न मी आयद कि दीदने मादरे ज़न।'

कथा—१३,

मेरा एक मित्र था। जिसके साथ कि अनेक वर्षो तक हमने सफर किया था, नमक खाया था, और सगति के अधिकारो को सिद्ध किया था। अन्तत थोडे से लाभ के लिये मेरा चित्त दुखाना उसने उचित समझा और मैत्री समाप्त हो गयी। इतने पर भी दोनो ओर से प्रेम बना रहा। क्योकि मैंने सुना कि एक दिन उसने मेरी कविताओं मे से दो दोहे सभा मे पढे।

आख्यायितम्—१३

आसीन् ममैको सुहृद्, येन सार्धमह बहुवर्षपर्यन्ताद् देशाटनमकरवम्, सहैवावामभुञ्ज्वहि, सहैव सङ्गतिलाभानन्वभवाव च। अथैकदाल्पीयसे लाभायासौ मम चित्तस्य दुवन विहितमस्त। तत आवयोर्मैत्री समाप्तिङ्गता। तथा सत्यपि चावयो प्रेमसम्बन्ध पूर्ववत् स्थित। अह केनचिद् विज्ञापितोऽथासौ मदीये द्वे पद्ये सभाया पठितवान्।

क़ता

मेरी प्रिया जब आती है लावण्यमयी मुस्कुराहट लेकर।
तो ज्यादा नमक बुरकती है घायलो के घाव पर॥
क्या अच्छा होता यदि उसकी लटो के सिरे मेरे हाथ पर पडे होते।
जैसे दाताओ की आस्तीनें याचको के हाथ पर पडती है॥

मेरे मित्रो में से कुछ ने इस सुभापित की कोमलता की अथवा अपने विचार सौन्दर्य की दाद दी, और धन्य धन्य किया। और उसने भी उस सभा में प्रशसा की और पुरानी मैत्री की समाप्ति पर दु ख किया और अपनी भूल पर खिन्न हुआ। मुझे ज्ञात हुआ कि उसकी ओर से भी प्रेम है। मैंने ये कुछ पद्य लिख भेजे और उससे मैत्री कर ली।

पदम्

यदैति मे प्रिया दिष्ट्या मम गेहे स्मितानना।
स्मितया लवणनिक्षेप मर्मच्छेदे करोति सा॥ ७३॥
धन्योऽस्मि मत्कराश्लिष्टा भूपन्त्वस्यास्तु मूर्वजा।
यथोत्तरीय दातॄणामाश्लिष्टञ्चार्थिना करम्॥ ७४॥

मम मित्राणि स्वान् गुणान् ख्यापयन्तश्चास्य सुभापितस्यार्थगौरवमनुमोदितवन्त साधु सा धुरिति चाब्रुवन्। सोऽपि सभायामससभाजत् पुरातनमैत्री च स्मार स्मारमुपातपत् स्वस्यापराद्धे चाखिद्यत। ततोऽहमजान्यथ सोऽपि मामभिमुख प्रीतोऽस्ति। मयेमे कतिपया श्लोका लिखित्वा प्रहिता सन्धिश्च सम्पादितेति।

क़ता

मया हमारे बीच मे प्रेम बन्धन नही था।
जो तूने जफा की और वद अहदी दिखाई॥
मैंने एक वार दुनिया से दिल तुझ में लगाया था।
मै नही जानता था कि तू इतनी जल्दी फिर जायगा॥
आज भी यदि तू सन्धि के लिये वापिस आये।
तो उससे भी अधिक स्वीकार्य होगा कि जितना था॥

पदम्

नासीत् किमावयोर्मध्ये सुदृढ प्रेमबन्धनम्।
किं कारण त्वयेदानी विच्छिन्न प्रीतिबन्धनम्॥ ७५॥
सर्वतस्तु मयाकृष्य चित्त त्वयि नियोजितम्।
नाजानि ह्यचिरेणैव मत्तस्त्व परिवत्स्यसि॥ ७६॥
अद्यापि सन्धिबुद्ध्या मा प्रत्यावर्तिष्यसे यदि।
पूर्वस्यापेक्षया नून प्रीतिभाक्त्व भविष्यसि॥ ७७॥

कथा—१४

किसी की रूपवती पत्नी मर गयी। और पत्नी की माँ बुड्ढी खुर्राट दहेज के रूप में उसके घर में रह गयी। वह आदमी उसकी सगति से कण्ठगत प्राण हो उठा और उपाय कोई नही था। उसके मित्रो में से एक ने उससे पूछा कि—'तू कैसे है प्रिया के वियोग में?' उसने कहा—'मेरी प्रिया का अदर्शन मुझे इतना दुर्वह नही लगता जितना कि पत्नी की माता का दर्शन।'

आख्यायितम्—१४

कस्यचित् पुमासो रूपवती भार्या दिवङ्गता। वर्षीयसी च जरठा श्वश्रू कन्यादायोपस्कर स्वरूपा गृहेऽवशिष्टा च। गृहपतिस्तस्या सान्निध्ये कण्ठगतप्राणो बभूव निरुपायश्च। तस्य मित्रेष्वेकतमस्त पप्रच्छ—'अथ कथमसि प्रियाविप्रयोगे?' सोऽवदत्—
'अदर्शन च जायाया न तथा दुर्वह मम।
अनिश च यथा श्वश्र्वा अनभीप्सितदर्शनम्॥ ७॥'

مثنوی

گل بتاراج رفت و خار بماند
گنج برداشتند و مار بماند
دیده بر تارک سنان دیدن
خوشتر از روی دشمنان دیدن
واجبست از هزار دوست برید
تا یکی دشمنت نباید دید

मसनवी (वहरे खफीफ)

गुल व ताराज रफ्तो खार विमांद।
गज वर दाश्तदो मार विमाद॥
दीदा वर तारके सिनां दीदन्।
खुशतर अज रूए दुश्मनां दीदन्॥
वाजिब'स्त अज़ हज़ार दोस्त बुरीद।
ता यके दुश्मनत न वायद दीद॥

حکایت ۱۵

یاد دارم که در ایام جوانی گذر داشتم بکوئی و نظر داشتم بماه روئی در تموزی - که حرورش دهان بخوشانیدی و سمومش مغز استخوان بجوشانیدی * از ضعف بشریت تاب آفتاب نیاوردم - و التجا بسایهٔ دیواری بردم - مترقب که کسی حرارت مرا به برف آبی فرو نشاند * ناگاه از تاریکی دهلیز خانه روشنائی بتافت - یعنی - جمالی که زبان فصاحت از بیان صباحت آن عاجز آید - چنانکه در شب تاریک صبح بر آید - یا آب‌حیات از ظلمات بدر آید - قدحی برف آب در دست گرفته و شکر در آن ریخته و بعرق بر آمیخته * ندانم بگلابش مطیب کرده بود - یا قطرهٔ چند از گل رویش در آن چکیده * فی الجمله شربت از دست نگارینش بر گرفتم و بخوردم و عمر از سر گرفتم و گفتم -

हिकायत—१५

याद दारम् कि दर अय्यामे जवानी गुजर दाश्तमे व कूए व नज़र दाश्तम् व माहरूए। दर तमूज़े कि हरूरश् दहान व खुशानीदे व समूमश् मग्जे उस्तुख्वान व जोशानीदे। अज़ ज़ौफ़े वशरीय्यत तावे आफताव नयावुदम्—व इल्तिजा व सायाए दीवारे वुदम् मुतरक्किब कि कसे हरारते मरा व वर्फावे फरो नशानद। नागाह अज़ तारीकिए दहलीज खाना रोशनायी बिताफ्त—यानी जमाले कि जुवाने फसाहत अज़ वयाने सवाहते आं आजिज़ आयद—चुनांकि दर शबे तारीक सुब्ह वर आयद—या आवे हयात अज़ ज़ुल्मात व दर आयद—कदहे वर्फाव दर दस्त गिरिफ्ता व शकर दर आं रेख्ता व व अर्क वर आमेख्ता। न दानम् व गुलावश् मुतय्यव कर्दा वूद—या कतरए चन्द अज़ गुले रूयश् दर आं चकीदा। फि'ल् जुमला शर्वत अज़ दस्ते निगारीनश् वर गिरफ्तम् व वखुर्दम् व उम्र अज़ सर गिरिफ्तम् व गुफ्तम्—

شعر

ظَمَأٌ بِقَلْبِي لَا يَكَادُ يُسِيغُهُ
رَشْفُ الزُّلَالِ وَ لَوْ شَرِبْتُ بُحُورًا

शेर (वहरे कामिल)

ज़मउन् वि क़ल्बी ला यकादु युसीगुहू।
रश्फु'ज़्ज़ुलालि व लौ शरिब्तु बुहूरा॥

قطعه

خرم آن فرخنده طالع را - که چشم
بر چنین روئی فتد هر بامداد -
مست می بیدار گردد نیم شب
مست ساقی روز حشر بامداد *

क़ता (वहरे रमल-मुसद्दस)

खुर्रम आं फर्खुन्दा ताले रा कि चश्म।
वर चुनीं रूए फितद हर वामदाद॥
मस्ते मय वेदार गर्दद नीमशब।
मस्ते साकी रोज़े महशर वामदाद॥

मसनवी

फूल नष्ट हो गया और काँटा रह गया।
खजाना उठ गया और साप रह गया॥
आख से भाले को देखते रहना।
ज्यादा अच्छा है शत्रुओ का मुंह देखने से॥
हजार दोस्तो से बिछुड जाना अच्छा।
ताकि तेरा एक दुश्मन न देखना पडे॥

गाथा

विनष्ट कुसुम चैव परिशिष्ट च कण्टकम्।
मुषितो रक्षित कोषो रक्षासर्पो ह्यशीशिषत्॥ ७८॥
अजस्र निशिते शूले भृश दृष्टिनिवद्धता।
वर न च पुनस्तावद् द्विषता मुखदर्शनम्॥ ७९॥
सहस्रबन्धुवान्धव्यैर्विच्छेदश्चापि साम्प्रतम्।
एकस्यापि यतो न स्याच्छ्त्रोस्तु मुखदर्शनम्॥ ८०॥

कथा—१५

मुझे याद है कि युवावस्था में मैं एक गली से गुजरा करता था और एक चन्द्रमुखी पर नजर रखता था। निदाघ में जब कि उसकी गर्मी मुंह की लार सुखाये देती थी और उसकी लू हड्डियों की मज्जा को उबाले देती थी। अपनी शारीरिक दुर्बलता के कारण मैं धूप नही सह सका और दीवार की छाया में जाकर इस आशा से खडा हो गया कि कोई मेरी गर्मी ठण्डे पानी से शान्त करेगा। सहसा दहलीज के अँधेरे में से एक प्रकाश चमक उठा, अर्थात् एक ऐसी रूपसी निकली कि वाग्मिता की वाणी उसकी सुन्दरता का वर्णन करने में अक्षम है—जैसे कि काली रात में सवेरा हो जाय—या अन्धकार में से अमृत का स्रोत निकल पडे, ठण्डे पानी का पात्र हाथ में पकडे हुए प्रकट हुई और जिसमें शक्कर पडी हुई और उस में सुगन्ध पडी हुई। मैं नही जानता कि उसको गुलाब जल से सुगन्धित किया गया था या उसके मुखरूपी गुलाब से कुछ बूँदें उसमे गिर गयी थी। सक्षेपत मैने वह शर्बत उसके सुन्दर हाथ से ले लिया और पी गया और नये सिरे से जीवन पा गया और बोला—

आख्यायितम्—१५

अभिजानाम्यर्थैकदा युवावस्थाया कस्याचिद् वीथिरथ्याया जङ्गम्ये स्म, तत्र वास्तव्या काञ्चिद् विधुमुखी भृश पश्यामि स्म च। अथैकदा घोरे ग्रीष्मे यदा निदाघताप आस्यलालाञ्चापि शोषयन् वाति स्म, तप्तमारुतश्चास्थिगुप्तामपि मज्जा श्रापयति स्म, आत्मनो देहदौर्बल्याद्दह सूर्यताप सोढुमसमर्था भित्तिच्छायामाश्रित्योदस्थाम्, कामयानोऽथ कश्चिन्मम दाह शीतलेन जलेन शमयेत्। सहसा गृहस्यान्त पुरो विद्युतेव विद्योतित। अर्थात् काचिद् रूपसी आविरभूत्, यस्य रूपाख्याने वाग्देव्या वागप्यसमर्था, यथा ह्यमावस्यायामुषस आविर्भाव स्यात्। अथवा तमोगर्भादमृतोद्भव स्यादिति। सा शिशिरजलपूर्ण पात्र करे दधाना, यत्र खण्ड निक्षिप्त सुगन्ध च प्रक्षिप्तमासीत्। न जानामि सा तत्पानीय कमलगन्धेनाक्त कृतवती, मुखकमलाद् वा कतिचिद् बिन्दवस्तस्मिन् पानीये वा पपात।

समासतोऽह तत् साखण्ड तस्या कमलाकरादादाय पीत्वा च नवजीवनञ्चाप्यवमवोचञ्च—

शेर

प्यास मेरे हृदय की नही मिटा सकती है।
ठण्डे पानी की घूँटें भले ही मैं पी जाऊँ सागरो को॥

श्लोक

तृषातुरस्य चित्तस्य तृषा नैतत् प्रशाम्यति।
शीतोदक सम चापि पिबामि यदि सागरम्॥ ८१॥

क़ता

धन्य वह सौभाग्यशाली कि जिसकी आँखें।
ऐसे मुख पर पडती है हर सुबह को॥
शराब का मस्त आधी रात को जाग जाता है।
लेकिन मधुबाला का मस्त प्रलय के प्रभात को ही जागेगा॥

पदम्

सौभाग्यसुप्रसन्नोऽस्ति धन्योऽस्ति यस्य चक्षुषी।
पश्येतामीदृश रूप दिवारम्भे तु नित्यश॥ ८२॥
पुरुपस्तु सुरापीतो जागृयादपरेऽह्नि।
न चाप्रलयपर्यन्तान् मधुबालामदोन्मद॥ ८३॥

حکایت ۱۶

سالی محمد خوارزم شاه با ختا از برای مصلحتی صلح اختیار کرد * بجامع کاشغر در آمدم - پسری‌را دیدم در خوبی بغایت اعتدال و نهایت جمال - چنانکه در امثال او گویند -

نظم

معلّمش همه شوخی و دلبری آموخت
جفا و ناز و عتاب و ستمگری آموخت *
من آدمی بچنین شکل و خوی و قد و روش
ندیده ام - مگر این شیوه از پری آموخت *

مقدمهٔ نحو زمخشری در دست - همی خواند ''ضَرَبَ زَیْدٌ عَمْرواً کان مُتَعَدِّیاً،، * گفتم - ای پسر! خوارزم و ختا صلح کردند و زید و عمرورا همچنان خصومت باقیست * بخندید و مولدم پرسید * گفتم - ''خاك شیراز،، * گفت - ''هیچ از سخنان سعدی یاد داری،،؟ گفتم -

نظم

بُلِیتُ بِنَحْوِیٍّ یَصُولُ مُغَاضِباً
عَلَیَّ کَزَیْدٍ فِی مُقَابَلَةِ عَمْرو *
عَلَیٰ جَرِّ ذَیْلٍ لَیْسَ یَرْفَعُ رَاسَهُ
وَ هَلْ یَسْتَقِیمُ الرَّفْعُ مِنْ عَامِلِ الجَرِّ *

لختی باندیشه فرو رفت و گفت - غالب اشعار او درین زبان پارسیست - اگر بگوئی - بفهم نزدیکتر باشد - کَلِّمِ النَّاسَ عَلیٰ قَدْرِ عُقُولِهِم * گفتم -

مثنوی

طبع ترا تا هوس نحو کرد
صورت عقل از دل ما محو کرد *

हिकायत—१६

साले मुहम्मद ख़्वारिज़्मशाह बा ख़ता अज़ बराय मस्लहते सुल्ह अख़्तियार कर्द। ब जामिए काशग़र दर आमदम्–पिसरे रा दीदम् दर ख़ूबी ब ग़ायते ऐतिदाल व निहायते जमाल—चुनांकि दर अमसाले ऊ गोयन्द।

नज़्म (बहरे मुज्तस्)

मुअल्लिमश् हमा शोख़ी व दिलबरी आमोख़्त।
जफ़ा ओ नाज़ो इताबो सितमगरी आमोख़्त॥
मन् आदमी ब चुनीं शक्लो ख़ूयो क़द्दो रविश्।
न दीदाअम् मगर ईं शेवा अज़ परी आमोख़्त॥

मुक़द्दमाए नह्वे ज़मख़्शरी दर दस्त हमी ख़्वांद—'ज़रब ज़ैद अम्रन् कान मुतअद्दियन्।' गुफ़्तम्—'ऐ पिसर! ख़्वारिज़्म व ख़ता सुल्ह करदन्द व ज़ैद व अम्रू रा हमचुनां ख़ुसूमत बाक़ी'स्त?' बिख़न्दीद व मौलदम् पुरसीद। गुफ़्तम्—'ख़ाके ख़ाके शीराज़।' गुफ़्त—'हेच अज़ सुख़नाने सादी याद दारी?' गुफ़्तम्—

नज़्म (बहरे तवील)

बुलीतु बि नह्विय्यिन् यसूलु मुग़ाज़िबन्।
अलय्य क ज़ैदिन् फी मुक़ाबिलति अम्रिन्॥
अला जर्रि ज़ैलिन् लैस यरफ़उ रासहू।
व हल् यस्तक़ीमु'र्रफ़उ मिन् आमिलि'ल् जर्रि॥

लख़्ते ब अन्देशा फ़िरो रफ़्त व गुफ़्त—'ग़ालिबे अशआरे ऊ व ज़ुबाने फ़ारसी'स्त। अगर ब गोयी ब फ़हम नज़दीकतर बाशद।' 'कल्लिमि'न्नास अला क़द्रि उक़ूलिहिम्।' गुफ़्तम्—

मसनवी (बहरे सरी)

तबए तुरा ता हवसे नह्व कर्द।
सूरते अक़्ल अज़ दिले मा मह्व कर्द॥

कथा—१६

एक साल ख्वारेज़म के राजा महमूद ने चीन के सम्राट् से किसी मस्लहत से सन्धि कर ली। मैं काशगर की जामा मस्जिद में पहुँचा, और एक लड़के को देखा सौन्दर्य में अतीव सुन्दर और बहुत ही छविमान्—जैसा कि उसके दृष्टान्तों में कहते हैं—

आख्यायितम्—१६

अथैकदा ख्वारेज्मनरेशो महमूदश्चीननरेशेन सार्धं सन्धिं विदधौ। तदानीमहं काशगरनगरस्य प्रधानमन्दिरं सम्प्राप्तः। तत्र च कञ्चिदतीवरूपाढ्यं किशोरमपश्यं यथा हि दृष्टान्तेषु चाचक्षते—

नज़्म

शिक्षक ने उसे सारी शोखी और दिलवरी सिखायी।
जफा और नाज़ और इताब और अत्याचार सिखाये॥
मैंने कोई व्यक्ति ऐसी आकृति, स्वभाव, कद और चाल वाला।
नहीं देखा, शायद ये गुण उसने परियों से सीखे हों॥

प्रबन्ध

शास्ता चैनामशिक्षिष्ट चाञ्चल्यं चित्तहारिताम्।
श्रौर्यं लास्यं च सन्त्रासमत्याचारं तथैव च॥८४॥
न चैव दृष्टवानस्मि रूपं शीलाकृतिं गतिम्।
जने ह्येकपदे जातु मन्ये तां यक्षशासिताम्॥८५॥

वह ज़मख्शहरी की व्याकरण की प्रस्तावना हाथ में लिये पढ़ रहा था—'मारा ज़ैद ने अम्र को और हुआ कर्त्ता।' मैंने कहा—'हे लड़के! ख्वारेज़म और चीन ने सन्धि कर ली और ज़ैद और अम्र का झगड़ा अभी बाकी है?' वह हँसा और मेरा जन्मस्थान पूछने लगा। मैंने कहा—'शीराज़ की पवित्रभूमि।' वह बोला—'कुछ सादी के पद याद हैं?' मैंने कहा—

स यमाक्षरीया व्याकरणप्रवेशिकां हस्ते धृत्वा पठन्नास्ते। 'ताडयत्यमरं जैदस्ततः कर्ताभिधीयते।' मयोक्तमथ—'हे पुत्र! ख्वारेज्मचीनौ सन्धिबद्धावभूतां, किं जैदामरयोः कलहोऽद्यापि तथैव वर्तते?' स विहस्य मम जन्मस्थानमप्राक्षीत्। मयाभिहितम्—'पवित्रं सद्मशीराजम्।' सोऽवदत्—'अपि कतिचित् सादिनः पदान्यपि जानीषे?' अहमवोचम्—

नज़्म

मैं सताया हुआ हूँ एक वैयाकरण के द्वारा, वह हमला करता है भय करता सो।
मुझ पर, ज़ैद की तरह विरोध में अम्र के॥
झुकने पर ज़ैद अपना सर नहीं उठाता।
और कैसे कायम रह सकता है आमिल झुकाने वाला॥

आमिल में श्लेष है—(अमल करने वाला और कर्त्ता)

वह थोड़ी देर विचार में खोया रहा और बोला—'उसके (सादी के) अधिकांश पद फारसी भाषा में हैं, यदि तुम (उस में) कहोगे तो बुद्धि के निकटतर होगा।'

'कहो लोगों से उनकी बुद्धियों के अनुसार।'

मैंने कहा—

प्रबन्ध

वैयाकरणभीतोऽस्मि यो मामाक्रमते भृशम्।
उदाहृतो यथा जैदश्चामरं प्रति निष्ठुरः॥८६॥
नतशीर्षो यदा जैदो नोत्थापयति मस्तकम्।
ओद्धत्यं स कथं कुर्याद् येन नम्रं धृतं शिरः॥८७॥

स क्षणं विचिन्त्यावदत्—'प्रायेण तस्य पदानि पारसीकभाषायां निबद्धानि वर्तन्ते, यदि भवांस्तया ब्रूते तर्हि बुद्धिगम्यानि भवन्ति।' यथा हि—'पुंसां धियमभिज्ञाय शाधि यस्य यथा मतिः॥८॥' अहमवोचम्—

मसनवी

तेरी चित्तवृत्ति ने तुझे व्याकरण में प्रवृत्त कर रखा है।
और उसने बुद्धि को हमारे हृदय से विहीन कर दिया है॥

गाथा

सम्प्रेरयति वृत्तिस्ते त्वां च व्याकरणं प्रति।
समागमपति धारणां च हृदो बुद्धिविवेचनाम्॥८८॥

ای دل عشاق بدام تو صید!
ما بتو مشغول ـ تو با عمرو و زید ٭

ऐ दिले उश्शाक व दामे तो सैद।
मा व तो मशग़ूल तो वा अम्रो ज़ैद।।

بامدادان ـ که عزم سفر کردم ـ کسی گفتش ـ که فلان سعدیست ٭ دوان آمد و تلطف نمود و تأسف خورد که چندین مدت بگفتی ـ که سعدی منم ـ تا شکر قدوم بزرگوارت را میان بخدمت بستمی ٭ گفتم ـ

बामदादान् कि अज़्मे सफर करदम्—कसे गुफ्तश् कि फलां सादी अस्त। दवां आमद व तलत्तुफ नमूद व तास्सुफ खुर्द कि 'चन्दीं मुद्दत न गुफ्ती कि सादी मनम्—ता शुक्रे क़ुदूमे बुज़ुर्गवारत रा मियान व ख़िदमत बस्तमे।' गुफ्तम्—

مصرع
با وجودت ز من آواز نیامد که منم ٭

मिसरा (बह्रे रमल)
बावुजूदत ज़ि मन् आवाज़ नयामद कि मनम्।

گفتا ـ ''چه شود اگر چند روز بیاسائی تا بخدمت مستفید گردیم'' ؟ گفتم ـ نتوانم بحکم این حکایت ـ

गुफ्ता—'चि शवद अगर चन्द रोज़ बियासायी ता ब ख़िदमत मुस्तफीद गर्दम्।' गुफ्तम्—'न तवानम् ब हुक्मे ईं हिकायत।'

مثنوی
بزرگی دیدم اندر کوهساری
قناعت کرده از دنیا بغاری ٭
چرا ـ گفتم ـ بشهر اندر نیائی
که باری بندی از دل برگشائی؟
بگفت ـ آنجا پری رویان نغزند
چو گل بسیار شد ـ پیلان بلغزند ٭

मसनवी (बह्रे हज्ज़्)
बुज़ुर्गे दीदम् अन्दर कोहसारे।
क़नाअत कर्दा अज़ दुनिया ब ग़ारे।।
चिरा—गुफ्तम्—ब शह्र अन्दर नयायी।
कि बारे बन्दे अज़ दिल बर कुशायी।।
बिगुफ्त—आं जा परी रूयाने नग़्ज़न्द।
चु गिल बिस्यार शुद पीलां बिलग़्ज़न्द।।

این بگفتم و بوسه چند بر روی یکدیگر دادیم و وداع کردیم ٭

ईं बिगुफ्तम् व बोसाये चन्द बर रूये यक दीगर दादेम् व विदाअ कर्देम्।

مثنوی
بوسه دادن بروی یار چه سود
هم در آن لحظه کردنش بدرود!
سیب ـ گوئی ـ وداع یاران کرد
روی ازین سوی سرخ و زان سو زرد ٭

मसनवी (बह्रे ख़फीफ)
बोसा दादन् ब रूये यार चि सूद।
हम दरां लहज़ा करदनश् बिदरूद।।
सेब गोयी—विदाअ यारां कर्द।
रूए ज़ीं सूये सुर्ख़ ज़ां सू ज़र्द।।

شعر
اِن لَم اَمُت یَومَ الوَداعِ تَاَسُّفاً
لا تَحسَبونی فی المَوَدَّةِ مُنصِفاً ٭

शेर (बह्रे कामिल)
इन् लम् अमुत् यौमल् वदाइ तअस्सुफ़न्।
ला तह्सबूनी फ़िल् मवद्दति मुन्सिफ़न्।।

अरे! प्रेमिया के हृदय तेरे जाल मे वन्दी है।
हम तुझ में अनुरक्त है और तू अम्र और ज़ैद मे ॥

अगली सुवह—जव मैंने यात्रा का सकल्प कर लिया, किसी ने उससे कहा कि 'अमुक सादी है।' वह दौडा आया और शिष्टाचार दिखाकर खेद प्रकाश करने लगा कि 'इतने समय तक आपने नही वताया कि मैं सादी हूँ। जिससे कि आप जैसे बडे आदमी के धन्यवाद के लिये सेवा में मैं कमर कस लेता।' मैंने कहा—

अरे! प्रेमिजनाना च चेतासि तव दामनि।
वय त्वय्यनुरक्ता स्म त्वमम्रे जैदके तथा ॥ ८९ ॥

अथापरेऽहनि यदा मया यात्रासकल्पो निर्णीत, कश्चित् तमवदत्—'अय सादीति।' स धावमान आगत उपचार चादर्शयत्, खेद च व्यज्ञापयत्—'अथ कथ नात्मानमत प्राक् प्रादर्शयोऽथो अह सादीति? येन भवादृश ज्यायान्समागत विज्ञाय स्वागतार्थं कटिवद्धोऽभविष्यमिति।' अहमवोचम्—

मिसरा

तेरी उपस्थिति में मेरे अन्दर से आवाज नही आती कि मैं हूँ।

वह वोला—'क्या हो जायगा यदि कुछ दिन यहाँ ठहर जांय ताकि आपकी सेवा कर के हम लाभान्वित हो।' मैंने कहा—'नही (रुक) सकता इस कथा के अनुरोध से।'

पदार्धम्

'एषोऽस्म्यह' न च ब्रूते चित्त मे तव सन्निधौ।

सोऽवदत्—'किं भविष्यति, यदि कतिपयदिनानि अत्रैव वाहयिष्यन्ति भवन्तो येन भवत सेव्यमाना लाभान्विता भवेम!' अहमवोचम्—'न शक्नोमीति कथानुरोधात्'

मसनवी

मैंने एक वुज़ुर्ग को देखा पर्वत प्रदेश में।
जिसने सन्तोष कर लिया था ससार से एक गुफा में ॥
मैंने कहा—'क्यो तुम नगर में नही आते हो?
जिससे कि हृदय के भार को निर्बन्ध करके खोल सको ॥'
वह वोला—'वहाँ अप्सरा-मुखी (रूपमियां) है।
जहाँ कीचड वहुत होती है वहाँ हाथी भी फिसल जाते हैं ॥'

मैंने यह कहा और कुछ चुम्बन एक दूसरे के मुंह पर लिये और विदा हो गये।

गाथा

वृद्ध कञ्चिददर्श च प्रदेशे पार्वतीयके।
विश्वतश्च निरासक्त सन्निविष्टो गुहा तथा ॥ ९० ॥
उक्त मया—'किमर्थं त्व नगरे न च गच्छसि।
हृदय येन निवन्ध कृत्वा तत्र समाचरे ॥ ९१ ॥'
स ब्रूते—'तत्र सुन्दर्यो विहरन्ति हि लीलया।
यत्र जम्बालवाहुल्य गजाना पदप्रस्खल ॥ ९२ ॥'

मयी युक्ते सति अन्योऽन्यस्य मुख परिचुम्ब्यावामापृष्टवन्ताविति।

मसनवी

मित्र का मुंह चूमने से भी क्या लाभ।
यदि उसी क्षण उससे विछुडना हो ॥
कहना चाहिये कि मित्रो की विदाई सेव जैसी है।
इस तरफ से लाल और उस तरफ से पीला ॥

गाथा

चुम्बनेनापि मित्रस्य सुहृदो लभ्यते नु किम्?
तत्कालमेव चेद् भावी विप्रयोग सुदारुण ॥ ९३ ॥
वियुक्तो वन्धुभिर्वन्धु प्रोच्यते सेवसन्निभ।
इतश्च रोदनाद्रक्त पीताभ पाण्डुरस्तत ॥ ९४ ॥

शेर

यदि नही मर जाता मैं वियोग के दिन दुख से।
मत गिन मुझे प्रेम में सच्चा ॥

श्लोक

वियोगदिवसे नो चेन् म्रियेय विरहेण ते।
मा मा गणय वै प्रेम्णि सत्यप्रीतिपरायणम् ॥ ९५ ॥

حکایت ۱۷

خرقه پوشی در کاروان حجاز همراه ما بود * یکی از امرای عرب مر اورا صد دینار بخشید تا نفقه کند - دزدان خفاجه ناگاه بر کاروان زدند و اموال ببردند * بازرگانان گریه و زاری کردن گرفتند و فریاد بی‌فائده برداشتند -

بیت

گر تضرع کنی و گر فریاد
دزد زر باز پس نخواهد داد

مگر آن درویش - که بر قرار خویش مانده بود و متغیر نشده * گفتم - مگر آن معلوم ترا دزد نبرد؟ گفت - بلی بردند - ولیکن مرا بدان چندان الفت نبود که بوقت مفارقت خسته خاطر باشم *

بیت

نباید بستن اندر چیز و کس دل
که دل بر داشتن کاریست مشکل *

گفتم - مناسب حال منست آنچه گفتی - که مرا در عهد جوانی با جوانی اتفاق مخالطت بود و صدق مودت تا بجائی که قبلهٔ چشمم جمال او بودی - و سود سرمایهٔ عمرم وصال او *

قطعه

مگر ملائکه بر آسمان - وگرنه بشر
بحسن صورت او در زمی نخواهد بود *
بدوستی[1] که حرامست بعد ازو صحبت
که هیچ نطفه چو او آدمی نخواهد بود *

ناگاه پای وجودش بگل اجل فرو رفت و دود فراق از دودمانش بر آمد - روزها بر سر خاکش مجاورت کردم - و از جملهٔ یکی کز فراق او گفتم اینست -

قطعه

کاش آن روز که در پای تو شد خار اجل
دست گیتی بزدی تیغ هلاکم بر سرا

हिकायत—१७

खिरका पोशे दर कारवाने हिजाज हमराहे मा बूद। यके अज उमराये अरब मर ऊरा सद दीनार बख्शीद ता नफका कुनद—दुज़दाने खफाजा नागाह् बर कारवाँ ज़दन्द व अमवाल बबुर्दन्द। बाज़रगानान् गिरिया व ज़ारी कर्दन् गिरिफ्तन्द व फरियाद बेफायदा बर दाश्तन्द।

बैत (बहरे खफीफ)

गर तज़र्रुअ कुनी वगर फरियाद।
दुज़्द ज़र बाज पस न ख्वाहद दाद॥

मगर आँ दरवेश कि बरकरारे ख़ेश मान्दा बूद व मुतग़य्यिर न शुदा। गुफ्तम्—'मगर आँ मालूमे तुरा दुज़्द न बुर्द?' गुफ्त—'बले बुर्दन्द—व लेकिन मरा बदाँ चन्दाँ उल्फत न बूद कि ब वक्ते मुफारक़त खस्ता खातिर बाशम्।'

बैत (बहरे हज़ज्)

न बायद बस्तन् अन्दर चीज़ो कस दिल।
कि दिल बर दाश्तन् कारे'स्त मुश्किल॥

गुफ्तम्—'मुनासिबे हाले मन'स्त आँचि गुफ्ती—कि मरा दर अहदे जवानी बा जवाने इत्तिफाक़े मुखालतत बूद व सिद्क़े मवद्दत ता बजाये कि क़िबलाए चश्मम् जमाले ऊ बूदे—व सूद सरमायाए उम्रम् विसाले ऊ।'

क़ता (बहरे मुज्तस्)

मगर मलायके बर आसमाँ वगर नै बशर।
ब हुस्ने सूरते ऊ दर ज़िमी न ख्वाहद बूद॥
ब दोस्ती[1] कि हराम'स्त बाद अज़ू सुहबत।
कि हेच नुत्फा चु ऊ आदमी न ख्वाहद बूद॥

नागाह् पाये वुजूदश् ब गिले अजल फ़रो रफ्त व दूदे फिराक़ अज़ दूदमानश् बर आमद—रोज़हा बर सरे ख़ाकश् मुजावरत कर्दम्—व अज़ जुमलाए यके कि बर फिराक़े ऊ गुफ्तम्, ईं'स्त—

क़ता (बहरे रमल)

काश आँ रोज़ कि दर पाये तो शुद ख़ारे अजल।
दस्ते गेती बज़दे तेगे हलाकम् बर सर॥

कथा—१७

एक गुदडीधारी (साधु) हिजाज़ के कारवाँ में हमारा सहयात्री था। एक अरववासी धनिक ने उसे सौ दीनार दिये ताकि वह निर्वाह करे। खफाजा के डाकुओ ने सहसा कारवाँ पर हमला किया और सारा माल लूट लिया। व्यापारी लोग रोने पीटने लगे और निरथक प्रार्थनाएँ करने लगे।

वैत

चाहे रो पीट या फरियाद कर।
डाकू सोना वापिस नहीं देगा॥

मगर वह साधु ज्यो-का-त्यो था और वदला न था। मैंने कहा—'शायद उन डाकुओ ने तेरा धन नही लूटा?' वह बोला—'हाँ लूटा है—पर मुझको उस से (धन से) इतना प्रेम नही था कि उससे विछुडते समय खिन्नचित्त हो जाऊँ।'

वैत

नही चाहिये बाँधना पदार्थ या व्यक्ति से अपना दिल।
क्योंकि दिल को सँभालना कठिन कार्य है॥

मैंने कहा—'यह मेरी अवस्था के अनुरूप है जो कि तूने कहा है—क्योकि मुझको युवावस्था में एक युवक से सच्चाप्रेम और घनिष्ठता हो गयी थी। यहाँ तक कि उसका रूप मेरी दृष्टि में किब्ला हो गया था। और मेरे जीवन की प्रधान उपलब्धि उसकी सगति वन गयी थी।'

क़ता

सिवाय फरिश्तो के आकाश पर, कोई भी आदमी।
सौन्दय में उस जैसा धरती पर न हुआ होगा॥
दोस्ती की कसम जिसके विना सगति हराम है।
कोई भी वीर्य (से) उस जैसा आदमी नही होगा॥

सहसा उसके जीवन का पैर मौत की कीचड में डूब गया और वियोग का चीत्कार उसके कुटुम्ब से निकला। अनेक दिन उसकी समाघि के ऊपर मैं सगति करता रहा—और उसके वियोग में मेरे लिखे अनेक पदो मे से एक पद यह है—

क़ता

काश! कि जिस दिन तेरे पैर में मौत का काँटा लगा।
स्वर्ग का हाथ मेरे सिर पर घातक तलवार दे मारता॥

आख्यायितम्—१७

एकदा कश्चित् कन्थाधारी हिजाजस्य यात्रायामस्माक सहयात्रिक आसीत्। केनचिद् आरव्यराजपुरुषेण तस्मै दीनारशत दत्त येन स यात्रानिर्वाह कुर्वीत। खफाजा दस्यव सहसास्माक सार्थवाहमुदाकुवत, समस्त च धन प्रसह्य हृतवन्तश्च। वणिजश्चाक्रन्दितु, निष्फलानि च प्रार्थनानि कर्तुमारेभिरे।

श्लोक

अपि चेद् रोदन कुर्या अथवा ब्रूहि—'त्राहि माम्।'
दस्युर्नापहृत द्रव्य प्रतिदत्ते कदाचन॥ ९६॥

किन्तु स कन्थाधारी तथैव प्रकृतिस्थ आसीत्, अविकृतश्च। अहमवोचम्—'प्रतीयसेऽमुषितोऽसि दस्युभिरिति।' सोऽवदत्—

'आम्! मुषितोऽस्मि यथा सर्वे सार्थवाहाश्च लुण्टिता।
न मे किन्तु तथा सङ्गोऽभवद् यत् खिद्यते मया॥ ९॥'

श्लोक

न वस्तुनि जने वाऽथ दत्तचित्तो भवेत् क्वचित्।
दत्त चित्तमपाकर्तुं दु साध्यतरमुच्यते॥ ९७॥

मयाऽभिहितम्—'यथा त्व ब्रूपे तन्मदीयामवस्थामनुहरति। यतो युवावस्थाया केनचिद् यूना सार्धं मम घनिष्ठत्वमुपपन्नम्। अन्ततस्तस्य रूपमेव ममैकान्तध्येयमजायत। ममायुपदत्र एक एव लक्ष्यस्तेन सार्धं मैत्रीसमागमोऽभूदिति।'

पदम्

देवलोकभव कश्चिद् दिवौका न च पार्थिव।
नाकृतौ रूपवत्ताया पृथिव्यामभवत् क्वचित्॥ ९८॥
मैत्र्यै शपे! विना यस्मादवैघ प्रेमवन्धनम्।
रजोवीर्यभव कश्चिन्न तत्तुल्य भविष्यति॥ ९९॥

सहसामुष्यायुप पादो मृत्युकर्दमे निलीन सञ्जात। हाहाकारश्चास्य कुटुम्बान्निर्वृत्त। बहुदिनानि यावदह तस्य समाघिमसेविपि। तस्य विप्रयोगे लिखिताना पदानामेकतमश्चोदाह्रियते।

पदम्

हा हा! यदा निविष्ट ते चरणे मृत्युकण्टकम्।
नावधीत् किं कृतान्तो मा तीक्ष्णेन वत चासिना॥ १००॥

تا دریں روز جہاں بی تو ندیدی چشمم
ای بسم بر سر خاک تو ۔ کہ خاکم بر سر *

قطعه

آنکه قرارش نگرفتی و خواب
تا گل و نسرین نفشاندی نخست ۔
گردش گیتی گل رویش بریخت
خاربناں بر سر خاکش برست *

بعد از مفارقت او عزم کردم و نیت جزم کہ بقیت عمر فرش ہوس در نوردم و گرد مجالست نگردم *

قطعه

سود دریا نیک بودی ۔ گر نبودی بیم موج
صحبت گل خوش بودی ۔ گر نیستی تشویش خار *
دوش ۔ چوں طاؤس ۔ می‌نازیدم اندر باغ وصل
دیگر امروز از فراق یار می‌پیچم چو مار *

حکایت ۱۸

یکی از ملوک عرب‌را حکایت لیلی و مجنوں بگفتند و شورش احوال او ۔ کہ با کمال فضل و بلاغت سر در بیاباں نہادہ است و زمام اختیار از دست دادہ و با حیوانات انس گرفته * بفرمود تا حاضرش آوردند و ملامت کردن گرفت ۔ کہ در شرف نفس انسان چہ خلل دیدی کہ خوی بہائم گرفتی و ترک عشرت مردم گفتی؟ مجنوں نالید و گفت ۔

شعر

وَ رُبَّ صَدِیقٍ لَامَنِی فِی وِدَادِهَا
اَلَمْ یَرَهَا یَوْمًا فَیُوضِحَ لِی عُذْرِی *

قطعه

کاش آناں کہ عیب من جستند
رویت ۔ ای دلستاں! بدیدندی!
تا بجای ترنج در نظرت
بیخبر دستہا بریدندی *

ता दरी रोज़ जहाँ बे तो न दीदे चश्मम्।
ऐ मनम् बर सरे खाके तो—कि खाकम् बरसर॥

क़ता (बहरे सरी)

आँ कि क़रारश् न गिरिफ्ते ओ ख्वाब।
ता गुलो नसरी न फिशान्दे नुखुस्त॥
गर्दिशे गेती गुले रूयश् बिरेख़्त।
खारो बूनाँ बर सरे खाकश् बरुस्त॥

बाद अज़ मफ़ारक़ते ऊ अज़्म करदम् व नीयते जज़्म कि बक़ीय्यते उम्र फ़र्शे हवस दर नवर्दम् व गिर्दे मजालिसत न गिर्दम्।

क़ता (बहरे रमल)

सूदे दरिया नेक बूदे गर न बूदे बीमे मौज।
सुहबते गुल खुश् बुदे गर नेस्ते तशवीशे खार॥
दोश चूँ ताऊस मी नाज़ीदम् अन्दर बाग़े वस्ल।
दीगर इमरोज़ अज़ फ़िराक़े यार मी पेचम् चु मार॥

हिकायत—१८

यके अज़ मुलूके अरब रा हिकायते लैला व मजनू बगुफ्तन्द व शोरिशे अहवाले ऊ—कि बा कमाले फ़ज़्लो बलाग़त सर दर बयाबान निहादा अस्त व ज़िमामे इख़्तियार अज़ दस्त दादा व बा हैवानात उन्स गिरिफ्ता। बिफ़रमूद ता हाज़िरश् आवुर्दन्द व मलामत करदन् गिरिफ्त कि—'दर शरफ़े नफ़्से इन्सान चि ख़लल दीदी कि खूये बहायम गिरिफ्ती व तर्के इशरते मर्दुम गुफ्ती?' मजनूँ बनालीद व गुफ्त—

शेर (बहरे तवील)

व रुब्ब सदीक़िन लामनी फ़ी विदादिहा।

अलम् यरहा यौमन् फ़ यूज़िहु लि उज़्री॥

क़ता (बहरे ख़फ़ीफ़)

काश आनान् कि ऐबे मन जुस्तन्द।
रूयत ऐ दिलसिताँ ब दीदन्दे॥
ता बजाये तुरुंज दर नज़रत।
बेख़बर दस्तहा बुरीदन्दे॥

ताकि आज मजार को तेरे बिना न देखती मेरी आँखें।
यह जो मैं हूँ तेरी खाक पर काश यह खाक मेरे सिर पर होती ।।

क़ता

जिसे कि चैन और नींद नहीं आती थी।
जब तक कि गुलाब और नसरीन नहीं बिछा लेता था पहले ।।
संसार-चक्र ने उसके मुख के गुलाब को बिखेर दिया।
काँटे और कँटीली जड़ें उसकी समाधि के सिरहाने उगी हैं ।।

उसके वियोग होने के उपरान्त मैंने संकल्प और निश्चय कर लिया कि शेष आयु भर कामना का बिस्तर लपेटे रहूँगा और सभा सम्पर्क नहीं करूँगा।

कता

समुद्र से लाभ अच्छे होते यदि लहरों का भय न होता।
गुलाब की संगति अच्छी होती यदि न होता काँटे का भय ।।
पिछली रात, मोर की तरह मैं नाचता फिरता था संयोग के उपवन में।
और आज मित्र के वियोग में मैं साँप की तरह बल खा रहा हूँ ।।

कथा—१८

अरब के एक राजा को लैला और मजनूँ की प्रेमकथा लोगों ने बताई और उसके उन्माद की बात बताई कि विद्या और वाग्मिता होते हुए भी वह जंगल में रहता है और संयम की बागडोर हाथ से छोड़ दी है और पशुओं से प्रेम करने लगा है। उसने आज्ञा दी कि उसे उपस्थित करें और उसकी भर्त्सना शुरू कर दी कि—'मनुष्यों की श्रेष्ठता में तूने क्या कमी देखी जो कि पशुओं का स्वभाव धारण किया और मनुष्यों की संगति को छोड़ दिया?' मजनूँ रो पड़ा और बोला—

शेर

और बहुत से मित्रों ने मुझ पर आक्षेप लगाया
उसको प्रेम करने के लिये।
हाय! उन्होंने नहीं देखा उसको किसी दिन अन्यथा
स्पष्ट हो जाता मेरा उज्र ।।

कता

काश, वे लोग जो कि मेरे दोष देखते हैं।
तेरा मुख, हे मनोहरे! देख पाते ।।
ताकि नीबू की बजाय तुझे देखते देखते।
बेसुध होकर अपने हाथ काट डालते ।।

नाद्रक्ष्यता यता विश्व नाना त्वा चक्षुषी मम।
अयमस्मि समाधौ ते कामयानश्च ते गतिम् ।। १०१ ।।

पदम्

न लेभे यस्तु सन्तोष न च निद्रा कदाचन।
न यावत् स्वस्य शय्याया समार कुसुमोच्चयम् ।। १०२ ।।
कालेनावर्तमानेन समाहारि मुखाम्बुजम्।
उत्पन्नश्चैतस्ततस्तस्य समाधौ गुल्मकण्टकम् ।। १०३ ।।

तस्य वियोगमनु मया सनत्नृप्त निर्णीतञ्चाथावशिष्ट आयुषि कामनाविष्टर संवृत्त विधास्यामि, सभासेवन च न करिष्यामीति।

पदम्

श्रेयोवह सदा सिन्धुर्नोचेत् तारास्तरङ्गज।
श्रेष्ठ प्रसूनसस्पर्शो नोचेत् कण्टकज भयम् ।। १०४ ।।
उच्छ्रितस्कन्धरो बर्हीवास तु प्रियसन्निधौ।
इदानीं प्रियहीनोऽस्मि छिन्नशीर्ष इवोरग ।। १०५ ।।

आख्यायितम्—१८

अरबदेशीय कश्चिन्नृप लैलामजनूनस्य च कथा पुम्भिर्निवेदिता, तस्य प्रेमोन्मादस्याख्यायिका चाभिहिता—यद्विद्या-वाग्मिता-विभूषितोऽपि सन् मजनूनो निजनवनमभिनिविशते, संयमवल्गा च परित्यज्य वनपशूनुपतिष्ठते। राजोपादिशदथ मजनून प्रस्तुवीरन्। अनन्तर स त भर्त्सितुमारेभे—'मनुजाना श्रेष्ठत्वे का न्यूनता दृष्टा यत् पशूना स्वभावस्त्वयाङ्गीकृत पुरा च सग परित्यात इति।' मजनूना रोद रोदमुवाच—

श्लोक

बहूनि मम मित्राणि चाक्षिपन् मामहर्निशम्।
न तैरालोकिता कान्ता दृष्टवद्भि गव क्षिप्यते ।। १०६ ।।

पदम्

ये दोषाननुपश्यन्ति मदीयान् यत्नतो जना।
मुखाब्ज यदि वीक्षेरन् मनोहारिणि ते क्वचित् ।। १०७ ।।
गुरूप यूसुफ दृष्ट्वा मोहिता इव योषित।
निम्बुहस्तजना सर्वे छेत्तारो हि निजान् करान् ।। १०८ ।।

यह कहा और न्यायपीठ पर वापिस आ गया। न्यायकारियो मे से कुछ व्यक्ति जो कि उसकी सभा मे थे, सेवाभूमि को चूमकर बोले कि यदि आज्ञा हो तो कुछ शब्द हम कहें—यद्यपि यह शिष्टता के विरुद्ध है और बडो ने कहा है—

बैत

हर बात में बहस करना उचित नही है।
बडों की ग़लती पकडना ग़लत है।।

किन्तु इस कारण से कि स्वामी की पहली कृपाएँ सेवको पर है, यदि वे भलाई जो देखे और सूचित न करे तो यह विश्वासघात की कोटि में होगा। पुण्य मार्ग यह है कि इस लडके के लिये लालच का चक्कर मत लगा और कामना का फर्श लपेट ले—और काज़ी का पद सर्वोच्च पद है। ताकि एक घृणित अपराध में तू लिप्त न हो जाय क्योकि जो तूने देखा है वह तेरा शत्रु है और जो तूने (हम से) सुना है वह शास्त्र है।

मसनवी

जो बहुत सी निर्लज्जता कर चुका है।
वह क्या चिन्ता करेगा किसी की आवरू की।।
बहुतो की पचास साल की प्रतिष्ठा।
एक अपकीर्ति से नष्ट हो गयी है।।

काज़ी को सुहृत् मित्रों का उपदेश रुचिकर लगा—और लोगो की सद्बुद्धि की उसने सराहा और कहा—'मित्रो का दृष्टिकोण मेरे कल्याण के लिये सर्वथा उपयुक्त है और उनका मसला बेजवाब है, किन्तु—

बैत

मुझे उपदेश कर जितना तू चाहे।
क्योकि नही धुल सकता हबशी से कालापन।।'

ऐज़न

तेरी याद से कोई चीज मुझे ग़ाफिल नही कर सकती।
मैं सिर कुचला साँप हूँ मैं मुड नही सकता।।

यह कहा और लोगो को उसकी पूछताछ के लिये भेजा और अटूट सम्पत्ति लुटा दी, क्योकि कहा है—'जिसके सोना तराजू में है उसके जोर बाजू में है। और जो कि ससार की काम्य वस्तुएँ नही रखता, सारे ससार में कोई आदमी नही रखता।'

एवमुक्त्वा न्यायाधीशो न्यायासन सम्प्राप्त। न्यायाधिकरणेषु केचन सभासदा सेवाभूमि चुचुम्बुरथ—'आज्ञापयन्तु भवन्तस्तर्हि किञ्चिद्-वक्तुमुत्सहामहे, यद्यपीद शिष्टजनाविहित यथाहु पण्डिताश्च—

श्लोक

वादे वादे विवादाना समारम्भो न साम्प्रतम्।
दोषापन्न समाख्यात ज्यायसा दोषदर्शनम्।। १२२।।

तथापि भवता प्राक्तनानुग्रहानुरोधाद् यदि कल्याण पश्यन्तोऽपि न सूचयिष्यामस्तर्हि विश्वासघातस्य दोषभाजो वयम्। इदानी पुण्य-पन्थास्तावदय यदेन किशोर प्रति मा गृधन्, कामनाविष्टर न सवृणुताम्। अथ महनीय हि नाम न्यायाधीशपदम्। न पुनरागस ग्रासो भवितुमर्हन्ति भवन्तो यत—'शत्रुस्ते यत्त्वया दृष्ट शास्त्र यच्छ्रूयते त्वया।। ११।।'

गाथा

लज्जा हीनानि कर्माणि कुर्वाणो वर्तते हि य।
परेषा कीर्तिभङ्गस्य का चिन्ता तस्य जायते।। १२३।।
पञ्चाशद्वपदेशीया भृश कीर्तिपरम्परा।
प्रस्खलनेन चैकेन जायते भुवि लुण्ठिता।। १२४।।

काजिन सुहृन्मित्राणामुपदेशोऽभिमतो बभूव। स मित्रमण्डलस्य प्रशस्तधिय प्रशस्योवाच—'सर्वथा हितकरो हि मह्य भवादृशा सुहृदा विचार, अतकर्यश्च युक्तिक्रम, परन्तु—

श्लोक

श्रावयेदुपदेश मा यथाकाम यथारुचि।
धौतेन श्यामपुसस्तु श्यामता नापनीयते।। १२५।।'

अपरञ्च

त्वा विस्मारयितु मत्त शक्नुयान्न हि कश्चन।
पन्नगश्छिन्नमस्तोऽह प्रत्यावर्तुं न शक्नुयाम्।। १२६।।

एवमुक्त्वाऽन्मनश्चरास्तस्य सम्प्रश्नार्थं प्राहिणोत्, अपार च धन विकीर्णवान्। यथाहु —

'स्वर्ण यस्य तुलाया स्याद् बाहोस्तस्य बल बलम्।'

तथा च—

'अलब्धजगदैश्वर्यो मित्र न लभते क्वचित्।। १२।।'

बैत

जो भी सोना देखता है सिर झुका लेता है।
चाहे उसके कन्धे लोहे की तराजू जैसे हों॥

सक्षेप में, उसे एकान्त रात्रि प्राप्त हुई। और उसी रात कोतवाल को खबर हो गयी। काजी के सारी रात शराब सिर में चढ़ी रही, सुन्दर छाती मे लगा रहा, प्रसन्नता के मारे वह नही सोया और गा गा कर कहता रहा—

नज्म

आज रात शायद समय पर नही बोला यह मुर्गा।
कामियो ने बस नही की आलिंगन और चुबन से॥
मेरे यार के गाल चमकीली लटो के गुच्छो में।
मानो हाथी दाँत की गेंद आबनूस के डडे के नीचे हो॥
एक क्षण के लिये भी उपद्रव की आँख सोयी नही है, सावधान!
जागता रह, ताकि उम्र अफसोस करते न जाय॥
जब तक तू न सुन ले शुक्रवार की मस्जिद से सुबह का आह्वान।
या अताबक के महल के द्वार से नगाडे का शब्द॥
मुर्गे की आँखों जैसे—ओठ से लगे होठो को, मूर्खता है।
हटाना, बोल पडने से एक मूर्ख मुर्गे के॥

काजी इस अवस्था में था कि उसका एक सेवक दरवाजे से अन्दर आया और बोला—'क्या बैठा है? खडा हो। और जहाँ तक तेरे पैर ले जायें भाग जा। क्योंकि ईर्ष्यालुओ ने तुझ पर पाप लगा दिया है। ताकि उपद्रव की आग जो कि अभी तक थोडी ही है, उपाय के जल से हम बुझा देंगे। मत हो (भगवान् न करे) कि कल को जब प्रचण्ड हो जायगी तो सारी दुनिया को नष्ट कर देगी।' काजी ने मुस्कुराकर उसकी ओर देखा और कहा—

क़ता

शिकार पर पजा रखे हुए शेर।
क्या चिन्ता करता है कि सियार आ गया॥
मुँह मित्र के मुँह पर रख ले—और जाने दे।
अगर दुश्मन अपना हाथ चबा जाय॥

राजा को भी उसी रात को लोगों ने सूचना दे दी कि तेरे राज्य मे ऐसा अधर्म घटित हो रहा है। वह बोला—'मैं उसको विद्वानो

श्लोक

सुवर्णं दृष्ट्वान् सर्वो नतशीर्षो भवेत् पुमान्।
भूरिभारनतस्कन्धस्तुलादण्डायस यथा॥ १२७॥

अलमतिविस्तरेण, अन्तत स एकान्तरात्रिमवाप। तस्यामेव रात्रौ पिशुनैर्दण्डपालो विज्ञापित। काजी निखिला रात्रिं मदिराघूर्णित-शिर, किशोराश्लिष्टवक्ष, हर्षातिशयान्न शयित्वा गाय गाय चोवाह—

प्रबन्ध

शर्वर्यामद्य प्रागेव रुतवानेष कुक्कुट।
चुम्बितालिङ्गितेनात परितृप्ता न कामिन॥ १२८॥
गण्डस्थल च प्रेयस्या केशलम्बेषु गूहितम्।
कन्दुको नागदन्तस्य कृष्णदण्डान्तिके यथा॥ १२९॥
क्षणार्धमपि कालेन दारुणेन न सुप्यते।
मा निद्राविवशो भूर्यद् यावज्जीव न वै दहे॥ १३०॥
प्रभातोपासनाह्वान न यावच्छ्रूयते किल।
न यावद् राजहर्म्येषु श्रूयते पटहध्वनि॥ १३१॥
ओष्ठावलम्बिनावोष्ठौ विप्रयोग न चार्हत।
अपि चेच्छतधा क्रोशेत् कुक्कुटो बुद्धिवर्जित॥ १३२॥

काजी एतादृश्यामवस्थायामासीत्। तदैव तस्य सेवकेष्वेकतमो द्वारमार्गादन्त प्रविश्योवाच—'किमर्थं स्थीयते? उत्तिष्ठ! यावद्दूर ते चरणौ नयेता धाव। पिशुनैस्त्वमाक्षिप्तोऽसि, कदर्थितश्च। अपि तु विज्ञापितश्चाप्यसि। वयमिम विरोधाग्नि योऽद्य क्षोदीयान् विद्यते, उपायजलेन निर्वापयिष्याम। मा भूद् यदि श्वोऽय प्रचण्डो भविष्यति तर्हि कृत्स्न विश्व दहिष्यति।' काजी ईषद् विहस्य त ददर्श उवाच च—

पदम्

व्यापादिते पशौ सिंहो हस्तन्यस्तो भयकर।
का चिन्ता कुरुते तावच्छृगालो ह्येति याति वा॥ १३३॥
मुखाश्रितमुख न्यस्य काल मित्रेण यापये।
यत प्रवृद्धकोपेन स्वहस्त भक्षयेदरि॥ १३४॥

तस्यामेव शर्वर्यां राजाऽपि विज्ञापितोऽर्थतादृगधर्मोऽनुष्ठीयते तव राज्ये। राजोवाच—'अह त विदुषा मुकुटमणिमिति जानामि

में सर्वश्रेष्ठ जानता हूँ और अपने युग का अद्वितीय व्यक्ति गिनता हूँ। हो सकता है कि शत्रुओ ने उसके लिये एक षड्यन्त्र रचा हो। यह बात मेरे कानो को स्वीकार्य नही हो सकती—सिवा तब कि जब कि मैं मुआयना कर लूं। क्योकि पण्डितो ने कहा है—

बैत

तीव्रता से, हल्के हाथ से तलवार चला देने वाला।
दाँतो से काटता है अफसोस के हाथ की पीठ को ॥'

मैंने सुना कि सवेरे के समय अपने विशिष्ट व्यक्तियो के साथ (राजा) काज़ी के सिरहाने आ खडा हुआ। शमा को देखा खडी हुई, सुन्दर का देखा बैठे हुए, शराब को फैली हुई और प्याले को टूटा हुआ, और काज़ी को (देखा) नशे की नीद मे अस्तित्व के लोक से बेसुध। कोमलता से उसे (काज़ी को) जगाया और कहा—'उठ! सूरज निकल आया।' काज़ी ने देखा कि हाल क्या है। बोला—'कौनसी दिशा से?' कहा—'पूर्व दिशा से।' बोला—'प्रशसा है प्रभु की, कि आज भी प्रायश्चित्त का द्वार खुला है। हदीस की इस आज्ञा के अनुसार कि "नही बन्द किया जायगा प्रायश्चित्त का द्वार उपासको के लिये जब तक कि नही निकलेगा सूर्य पश्चिम से। मैं क्षमा चाहता हूँ तुझ से हे प्रभु, और तौबा करता हूँ तुझ से (तेरे सामने)"।'

स्वस्य युगस्याद्वितीय नरपुगवमिति गणयामि। भाव्यते न्वसौ शत्रुभि षड्यन्त्रविडम्बित स्यात्। नैतच्छ्रवणगतमात्रेण प्रत्येतुमर्हामि यावन्नाक्षिप्रत्यक्ष करोमि। यत पण्डिता आहु—

श्लोक

त्वरमाणेन हस्तेन निघ्नानो ह्यसिनाऽचिरात्।
आत्मन करपृष्ठ च दद्भिर्दशति दु खित ॥ १३५ ॥'

श्रूयतेऽथ प्रभातकाले पारिषदविशिष्टै परिवृतो राजा काजिन-मुपतल्पमगात्। तत्र ददर्श दीपमुन्मुख, किशोरमधोमुख, मद्य लुण्ठित, मद्यपात्र निभिण्ण च, काजिन च मदनिद्राविस्मृत-सर्वलोक च। स अतीव मार्दवेन त जागरयामास उवाच च—'उत्तिष्ठ! सूर्य उदगात्।' काजी उत्थाय वस्तुस्थितिमज्ञास्त। ब्रूते—'अय कतमस्या दिश?' राजाऽवदत्—'पूर्वस्या दिश।' काजी ब्रूते—'धन्योऽसि प्रभो! यदद्यापि पश्चात्तापद्वार विवृत विधृतवानसि। यथाहि शास्त्रप्रमाणम्—

"प्राचीवर्ज प्रतीच्या च यावन्नोदेति भास्कर।
प्रायश्चित्तस्य भक्तेभ्यस्तावद् द्वार मनावृतम्" ॥ १३ ॥'
प्रभो! त्राहि! शपे तुभ्य दोषत्याग करोम्यहम्।

क़ता

इन दो चीज़ो ने मुझे पाप पर प्रेरित किया।
प्रतिकूल भाग्य ने और अपूर्ण बुद्धि ने ॥
यदि तू मुझे गिरिफ्तार करे—तो मै उसके योग्य हूँ।
और यदि क्षमा कर दे तो क्षमा प्रतिशोध से अच्छी है ॥

राजा ने कहा—'तौबा—इस हालत मे जब कि तू अपने मरने की सूचना पा चुका है—कोई लाभ नही करेगी।' भगवान् का वचन है—'तब नही हुआ लाभप्रद उनको उनका ईमान जब देखा हमारा कोप।'

पदम्

द्वौ हेतू माञ्च पापाय प्रेरयामासतु किल।
समय प्रतिकूलश्च बुद्धिश्च विपरीतगा ॥ १३६ ॥
अथ मा प्रतिबध्नासि दण्डनीयोऽस्मि सर्वथा।
क्षन्तासि यदि मा तर्हि क्षमा दण्डाद् गरीयसी ॥ १३७ ॥

राजाऽवदत्—'एतादृश्यामवस्थाया यदाऽऽत्ममरण पश्यसि प्राय-श्चित्तोऽपि निष्फल।' भगवद्वचनम्—
'दैवदण्डभयोद्भूतमास्तिक्य न फल ददौ ॥ १४ ॥'

क़ता

क्या लाभ है तब चोरी से तौबा करने से।
जब कि नही फेंक सकता रस्सी छज्जे पर ॥

पदम्

अस्तेयव्रतदीक्षाया किं फल नु भवेत्तदा।
दामोत्क्षेपस्य सामर्थ्य सौधे यदि न वर्तते ॥ १३८ ॥

मे सर्वश्रेष्ठ जानता हूँ और अपने युग,का अद्वितीय व्यक्ति गिनता हूँ। हो सकता है कि शत्रुओ ने उसके लिये एक पड्यन्त्र रचा हो। यह वात मेरे कानो को स्वीकाय नही हो सकती—सिवा तव कि जव कि मैं मुआयना कर लूं। क्योकि पण्डितो ने कहा है—

स्वस्य युगस्याद्वितीय नरपुगवमिति गणयामि। भाव्यते न्वसौ शत्रुभि पड्यन्त्रविडम्वित स्यात्। नैतच्छ्रवणगतमात्रेण प्रत्येतुमर्हामि यावन्नाक्षिप्रत्यक्ष करोमि। यत पण्डिता आहु —

वैत

तीव्रता से, हल्के हाथ से तलवार चला देने वाला।
दांतो से काटता है अफसोस के हाथ की पीठ को॥'

श्लोक

त्वरमाणेन हस्तेन निघ्नानो ह्यसिनाऽचिरात्।
आत्मन करपृष्ठ च दद्भिर्दशति दु खित ॥ १३५॥'

मैंने सुना कि सवेरे के समय अपने विशिष्ट व्यक्तियो के साथ (राजा) काज़ी के सिरहाने आ खडा हुआ। शमा को देखा खडी हुई, सुन्दर को देखा वैठे हुए, शराव को फैली हुई और प्याले को टूटा हुआ, और काज़ी को (देखा) नशे की नीद मे अस्तित्व के लोक से वेसुध। कोमलता से उसे (काज़ी को) जगाया और कहा—'उठ! सूरज निकल आया।' काज़ी ने देखा कि हाल क्या है। वोला—'कौनसी दिशा से?' कहा—'पूर्व दिशा से।' वोला—'प्रशसा है प्रभु की, कि आज भी प्रायश्चित्त का द्वार खुला है। हदीस की इस आज्ञा के अनुसार कि "नही वन्द किया जायगा प्रायश्चित्त का द्वार उपासको के लिये जव तक कि नही निकलेगा सूर्य पश्चिम से। मैं क्षमा चाहता हूँ तुझ से हे प्रभु, और तौवा करता हूँ तुझ से (तेरे सामने)"।'

श्रूयतेऽथ प्रभातकाले पारिषदविशिष्टै परिवृतो राजा काजिन-मुपतल्पमगात्। तत्र ददर्श दीपमुन्मुख, किशोरमधोमुख, मद्य लुण्ठितं, मद्यपात्र निर्भिण्ण च, काजिन च मदनिद्राविस्मृत-सर्वलोक च। स अतीव मार्दवेन त जागरयामास उवाच च—'उत्तिष्ठ! सूर्य उदगात्।' काजी उत्थाय वस्तुस्थितिमज्ञास्त। ब्रूते—'अथ कतमस्या दिश?' राजाऽवदत्—'पूर्वस्या दिश।' काजी ब्रूते—'धन्योऽसि प्रभो! यदद्यापि पश्चात्तापद्वार विवृत विधृतवानसि। यथाहि शास्त्रप्रमाणम्—

"प्राचीवर्जं प्रतीच्या च यावन्नोदेति भास्कर।
प्रायश्चित्तस्य भक्तेभ्यस्तावद् द्वार मनावृतम्"॥ १३॥'
प्रभो! त्राहि! शपे तुभ्य दोपत्याग करोम्यहम्।

क़ता

इन दो चीज़ो ने मुझे पाप पर प्रेरित किया।
प्रतिकूल भाग्य ने और अपूर्ण वुद्धि ने॥
यदि तू मुझे गिरिफ्तार करे—तो मैं उसके योग्य हूँ।
और यदि क्षमा कर दे तो क्षमा प्रतिशोध से अच्छी है॥

पदम्

द्वौ हेतू माञ्च पापाय प्रेरयामासतु किल।
समय प्रतिकूलश्च वुद्धिश्च विपरीतगा॥ १३६॥
अथ मा प्रतिवध्नासि दण्डनीयोऽस्मि सर्वथा।
क्षन्तासि यदि मा तर्हि क्षमा दण्डाद् गरीयसी॥ १३७॥

राजा ने कहा—'तौवा—इस हालत में जव कि तू अपने मरने की सूचना पा चुका है—कोई लाभ नही करेगी।' भगवान् का वचन है—'तव नही हुआ लाभप्रद उनको उनका ईमान जव देखा हमारा कोप।'

राजाऽवदत्—'एतादृश्यामवस्थाया यदाऽऽत्ममरण पश्यसि प्राय-श्चित्तोऽपि निष्फल।' भगवद्वचनम्—
'दैवदण्डभयोद्भूतमास्तिक्य न फल ददौ॥ १४॥'

क़ता

क्या लाभ है तव चोरी से तौवा करने से।
जव कि नही फेंक सकता रस्सी छज्जे पर॥

पदम्

अस्तेयव्रतदीक्षाया किं फल नु भवेत्तदा।
दामोत्क्षेपस्य सामर्थ्यं सौधे यदि न वर्तते॥ १३८॥

लम्बे को कह कि फल से हाथ नीचे रख।
क्योकि ठिगना तो स्वय ही शाखा पर हाथ नही डाल सकता ।।

प्राशु प्रशाधि—'लोभेनोद्वाहुर्मा भू फल प्रति ।
वामनेन स्वतो हस्तमनुशाख न नीयते ।। १३६ ।।

'तेरे ऐसे पाप के होते हुए जो कि प्रकट हो गया है मुक्ति की कोई सूरत नही बनती।' यह कहते ही दण्ड के अधिकारियो ने उसको पकड लिया। काज़ी बोला—'मुझ को राजा की सेवा में एक वाक्य और शेष है।' राजा ने सुना और कहा—'वह क्या?' वह बोला—

तव चोद्घाटितापराधस्य मोक्षसम्भावना नास्त्येव। राज्ञि चैतदुक्ते दण्डाधिकारिण काजिन जगृहु। काजी ब्रूते—'मया राजसेवाया वाक्यमेक निवेदितव्यमस्ति।' राजैतच्छ्रुत्वाऽवदत्—'तत्किम्?' स ब्रूते—

कता

मोच की आस्तीन से जो तू मुझ पर हिला रहा है।
मत सोच कि तेरे दामन से मै हाथ हटा लूगा ।।
यदि मुक्ति कठिन है इस पाप से जो कि मेरा है।
उस कृपा से जो तू रखता है मुझे आशा है।।

पदम्

क्रोधक्षुब्धेन हस्तेन तर्जयेथा यथारुचि।
माऽपेक्षस्वोत्तरीय ते प्रमोक्तास्मि कदाचन ।। १४० ।।
मोक्ष मे यद्यसाध्य स्यात् पाप्मनो यन्मया कृतम्।
दयया यद् विदध्यास्त्व तयैवाशान्वितोऽस्म्यहम् ।। १४१ ।।

राजा ने कहा—'यह चुटकुला तू अपूर्व लाया है और यह नुक्ता विचित्र कहा है। किन्तु यह बद्धि के प्रतिकूल है और शास्त्र के विरुद्ध है कि तुझको विद्वत्ता और वाग्मिता आज मेरे दण्ड के चगुल से छुडा दे। मैं भलाई इसी मे देखता हूँ कि तुझे किले से नीचे फिकवा दूँ ताकि दूसरे शिक्षा ले।' वह बोला—'हे पृथ्वीनाथ! मैं पला हुआ हूँ कृपाओ से इस वश की। और यह अपराध अकेले मैंने ही नही किया है। किसी दूसरे को फिकवा जिससे मै शिक्षा लू।' राजा को हँसी आ गयी और क्षमा पूर्वक उसके सिर से जुर्म हटा लिया। और सेवको से जो कि काज़ी के वध के इच्छुक थे, कहा—

राजाऽब्रवीत्—'अपूर्वमेतत् सुभाषितम्। ऊहा किल विचित्रोक्ता। परन्तु बुद्धिविरुद्धमिद शास्त्रविपरीतञ्च, यत् त्वदीया विद्वत्ता वाग्मिता चाद्य त्वा मम दण्डात्प्रमोचयेत्। एतदेव हि कल्याणमूल पश्यामि यत्त्वा दुर्गपरिखाया पातयेयम्, येनेतरे शिक्षा गृह्णीयु।' काजी ब्रूते—'हे पृथ्वीनाथ! अह तवास्य वशस्य कृपाजीवी चास्मि। न चाहमेवैकान्ततोऽस्यागस कर्तेति। कञ्चिदितर तत पातय येनाह शिक्षा गृह्णीयामीति।' राजा विहसितवान्, त च कृपया दोषमुक्त विदधौ। सेवकाश्चाब्रवीद् ये च काजिनो वधाय समुत्सुकाश्चासन्स्तथ—

बैत

अरे! जो कि ढो रहे हो अपने पापों को।
दूसरो के पापो पर ताना मत मारो।।

श्लोक

अयि! दोषभराक्रान्ता! श्रूयतामनुशासनम्।
वर्तमानास्तथा सन्त किमाक्षिपथ हीतरान् ।। १४२ ।।

कथा—२०

मज़मा

एक जवान पवित्रात्मा और पवित्रमुख था।
जो कि एक पवित्र कन्या से प्रेमबद्ध हो गया।।
मैने ऐसा पढा है कि महासागर में।
वे एक भँवर में गिर पडे परस्पर।।

आख्यायितम्—२०

गाथा

सुवृत्तश्च सुरूपश्च कश्चिदासीन्नरो युवा।
पवित्रया कयाचित् स निबद्ध प्रेमबन्धने ।। १४३ ।।
श्रूयतेऽथ कदाचित्तावुत्तरन्तौ महार्णवम्।
तरङ्गावर्तके घोरे चार्णवे पतितावुभौ ।। १४४ ।।

जब मल्लाह आया कि उसका हाथ पकडे।
मत हो कि उस अवस्था में मर जाय॥
उसने कहा—प्रचण्ड लहर के बीच में से।
मुझे जाने दे और मेरी प्रिया का हाथ पकड॥
इतना कहने में एक ससार उस पर टूट पडा।
लोगो ने सुना कि उसने प्राण दे दिये और कहा॥
प्रीति की रीति उस अभागे से मत सुन।
जो कि कठिन काल में मित्र को भूल जाय॥
इस प्रकार समाप्त कर दी दोनो मित्रो ने जीवनयात्रा।
काम में पडे हुए (अनुभवी) से सुन ताकि तू समझ ले॥
क्योकि सादी इश्कबाज़ी की राह रस्म।
ऐसे जानता है जैसे कि बगदाद में अरबी॥
जो प्रेमिका तू रखता है उस पर दिल लगा।
और दृष्टि सारे ससार से मूंद ले॥
यदि मजनूं और लैला जीवित होते।
तो प्रेम की पद्धति इस पुस्तक से ही लिखते॥

इयाय नाविक कश्चिद् गृहीतु त करे यत ।
नो म्रियेत यतश्चैवमवस्थाया कथचन ॥ १४५ ॥
उक्तवान् स पुमाश्चैन क्षोभगर्जत्सु वीचिषु ।
मा विहाय च मे सख्या द्रागेव करमुद्धर ॥ १४६ ॥
एवमुक्तवतस्तस्य विश्व वभ्राम सर्वत ।
तया च श्रूयते प्राणास्तत्याजैवमुवाच स ॥ १४७ ॥
'मा श्रौषी पद्धति प्रेम्णो दुराचाराच्च कर्हिचित् ।
विपन्न वत यो मित्र कृच्छ्रास्वापत्सु विस्मरेत् ॥ १४८ ॥'
एव जीवनयात्राया अवसानकृतावुभौ ।
त शुश्रूपस्व यो वेद, यतो जानीहि पद्धतिम् ॥ १४९ ॥
सादी तु प्रेममार्गस्य जानीते निखिला गतिम् ।
यथा जानन्ति ताजीया वग्दादपुरवासिन ॥ १५० ॥
प्रेमिकामनु चात्मीया निवद्धहृदयो भव ।
निमील चक्षुषी स्वस्य सर्वतो जगतस्तथा ॥ १५१ ॥
लैला च मजनूनश्चावर्तिष्येता हि जीवितौ ।
अनया प्रेमपद्धत्या चानेष्येता निजा कथाम् ॥ १५२ ॥

छठा अध्याय

दुर्वलता और बुढापे के विषय मे

कथा—१

विद्वानो की एक मण्डली के साथ, दमिश्क की जामा मस्जिद में मै शास्त्रचर्चा कर रहा था। सहसा एक युवक द्वार से आया और वोला—'क्या इस सभा मे कोई है जो कि फारसी भाषा जानता हो?' लोगो ने मेरी ओर इशारा कर दिया। मैंने कहा—'कुशल तो है?' उसने कहा—'एक सौ पचास साल का एक वृद्ध मरणासन्न है और फारसी मे कुछ कह रहा है जो कि हमारी समझ मे नही आ रहा। यदि कृपया पैरो को कष्ट दे तो पुण्य मिलेगा—हो सकता है कि वह वसीयत करे।'

जब मैं उसके सिरहाने आया तो (वह) यह कह रहा था—

क़ता

मैंने (स्वगत) कहा था कि कुछ क्षण अपनी कामना पूरी करूँगा।
अफसोस! कि इतने में मेरा श्वासमार्ग ही रुक गया॥
अफसोस! कि जीवन के बहुविध पदार्थो के दस्तरखान पर।
हम क्षण भर ही खा पाये थे कि हमसे कहा गया—'बस'॥

इस बात का अरवी अर्थ मैंने शामियो को वता दिया। उन्होंने आश्चर्य किया इतनी लम्बी आयु पर और जीवन के लिये उसके शोक पर। मैंने कहा—'कैसे हो इस अवस्था में?' वह वोला—'क्या कहूँ?'

क़ता

क्या तूने नही देखा कि कितना कष्ट होता है आदमी की जान को।
जब कि मुँह से निकालते है एक दाँत॥
अनुमान कर कि क्या हालत होगी उस समय।
कि जब प्यारी देह से जान निकलती है॥

मैंने कहा—'मृत्यु की कल्पना, विचार से निकाल दो और वहम को अपनी प्रकृति पर हावी मत होने दो क्योकि यूनान के दार्शनिको ने कहा है कि "यदि मिज़ाज स्थिर भी हो (तो भी) अमरता का विश्वास नही करना चाहिये—और रोग यदि प्रवल भी हो (तो भी) वह पूर्ण रूप से अरिष्ट नही होता।" यदि तुम कहो तो एक चिकित्सक को वुलवा लूँ ताकि वह चिकित्सा कर दे।' उसने आँखें खोली और हँसकर वोला—

षष्ठोऽध्यायः

असामर्थ्ये च वार्धक्ये

आख्यायितम्—१

विद्वन्मण्डलेन सार्धं दमिश्कस्योपासनामन्दिरे अहं शास्त्रचर्चानिरत आसम्। अकस्मात् कश्चिद् युवा द्वारमार्गादन्तः प्रविश्याब्रवीत्—'अस्ति कश्चिदेतस्यां परिषदि यः पारसीकभाषां जानाति?' लोका इङ्गितेन मां दर्शितवन्तः। अहमवोचम्—'अपि कुशलम्?' सोऽवदत्—'पञ्चाशदुत्तरशतवर्षदेशीयः कश्चित् स्थविरो मरणासन्नोऽस्ति। पारसीकभाषायां किञ्चिद् ब्रूते यच्चाबुद्धिगम्यमस्माकम्। यदि भवान् कृपया पादसञ्चारं कुर्यात् पुण्यभाक् च भविष्यति। सम्भाव्यते स मृत्युपत्रं लेखिष्यति।'

यदाऽहं तमुपगतः स एवं ब्रुवन्नवस्थितः—

पदम्

किञ्चित्पूर्वं मया चोक्तं कामान् भोक्ष्येऽचिरेण ह।
इति मे चिन्त्यमानस्य श्वासमार्गो ह्यरुद्ध ह॥१॥
आयुषो विविधैर्भोगैः क्षणं सार्धं स्थितोऽभवम्।
यावत् क्षणं व्यतीतं मे ते ऊचुः 'भुक्तवानसि'॥२॥

मयास्य वाक्यस्यारव्यार्थं शामीयाननूदितं। ते तस्यैतावद् दीर्घायुष्यमायुष्यान्ते चैतावन्तमुद्वेगं दृष्ट्वा विस्मिताः सञ्जाताः। अहं तमोवचम्—'कथमसि अस्यामवस्थायाम्?' सोऽब्रवीत्—'किमहं ब्रूयाम्?'

पदम्

किं न जानासि प्राणेषु कीदृक्पीडाऽभिजायते।
यथा हि दन्तमाकृष्योत्पाटयन्ति मुखाद् बहिः॥३॥
अनुमन्यस्व कावस्था तदानीमभिभाव्यते।
यदा हि प्रेयसो देहात् जीवो यातुमुपक्रमेत्॥४॥

अहमवोचम्—'मरणभयं तावन्मनसोऽपनय भ्रमाक्रान्तचेतोवृत्तिर्मा भू। यतो यवनदार्शनिकैरुक्तमयम्—"स्वस्थेऽपि चित्ते शश्वज्जीवनस्य प्रतीतिर्न कर्तव्या, तथैव प्रचण्डेऽपि रोगेऽरिष्टं न च निश्चितम्।" यद्यादिशेः कञ्चन भिषजमावाहयेयं येन स चिकित्सोपक्रमं कुर्वीत।' स चक्षुषी ह्युन्मील्य विहस्य चाह—

मसनवी

हाथ पर हाथ मारेगा चतुर चिकित्सक।
जब चित्त पड़ा देखेगा अपने पुराने प्रतिद्वन्द्वी को।।
गृहपति तो भीत रँगने में लगा हुआ है।
और घर की नींव पोली हो चुकी है।।
बुड्ढा मरणवेदना से चीख रहा है।
और बुड्ढी उसके चन्दन का लेप कर रही है।।
जब प्रकृति का समन्वय बिखर जाता है।
तो न तन्त्र-मन्त्र असर करते हैं न इलाज।।

गाथा

हस्त हस्तेन सन्वुक्षन्वीक्षते कुशलो भिषक्।
यदा मरणशय्याया शीर्णशत्रु च पश्यति।। ५।।
गृहस्थो भित्तिभूषाया तल्लीन सम्प्रवर्तते।
गृह तत्र जराजीर्णमाधारेण च पित्सति।। ६।।
वृद्धो मरणपीडायामस्फुटेनाथ क्रन्दति।
वृद्धा चन्दनलेपेन दिग्धाङ्ग त बुभूषति।। ७।।
समन्वयश्च प्रकृतेरस्तव्यस्त भवेद्यदा।
न तदा तन्त्रमन्त्रश्च न च सिद्ध्यत्युपक्रम ।। ८।।

कथा—२

एक वृद्ध की कथा कहा करते हैं—कि उसने एक लडकी से शादी की और (वह) कमरे को फूलो से सजाता, एकान्त में उसके साथ बैठा रहता और आँखें और दिल उस पर लगाये हुए लम्बी रातो को जागता रहता और दिल्लगी की बातें और चुटकुले उसे सुनाता रहता—ताकि उसकी अन्तरगता प्राप्त करे और लज्जा न करे। सक्षेप में, एक रात को कहने लगा—'तेरा सौभाग्य अनुकूल था और भाग्य लक्ष्मी जागृत थी कि एक वृद्ध की सगति में पडी, (जो कि) परिपक्व, पलापलाया, दुनिया देखा हुआ, सुस्थिर, ससार का भला बुरा अनुभव किया हुआ, जमाने का ठडा गर्म चखे हुए, जो कि सगति का कर्तव्य जानता है, और प्रेम के नियमो का पालन करता है, उदार और कृपालु, सुस्वभाव और मधुरभाषी है।'

आख्यायितम्—२

कस्यचिज्जरठस्य कथाऽनुश्रूयतेऽथ स काञ्चिद् युवतीमूढवान्। स वधूकोष्ठ कुसुमोत्खचितमलञ्चक्रे, निभृते च तया सार्धमुवास तस्या न्यस्तदृष्टिर्दत्तचित्तश्च दीर्घयामास्त्रियामा जजागार, हास्यविनोदवार्त्ता च वितस्तार, येन तस्या अन्तरङ्गता लभेत, लज्जाबाधा च जयेदिति। एकदा शर्वर्यां स वक्तुमारेभे—'उच्चसौभाग्य ते मित्रमासीत्' सौभाग्य-लक्ष्मीश्च जागृता येन वृद्धस्य सहवास प्राप्तवती, परिपक्वस्य, प्रपालितस्य, दृष्टजगत, सुस्थिरस्य, ज्ञातभद्राभद्रस्य, लब्धशीतोष्णा-स्वादस्य चेति। यश्च सगतिकर्तव्य जानाति प्रीतिपालन च, यो हि उदारश्च, कृपालुश्च सुस्वभाव, प्रियवदश्चेति।'

मसनवी

जहाँ तक सम्भव होगा तेरा दिल हाथ मे रखूँगा।
और यदि तू मुझे सतायेगी तो मैं तुझे नही सताऊँगा।।
और यदि तोती की तरह शकर हो तेरा आहार।
मेरे मधुर प्राण न्योछावर करके भी तुझे पालूँगा।।

गाथा

यथाशक्ति च ते चित्त रञ्जयामि समन्तत।
त्वया च कष्टमापन्नो न त्वा कष्टेन चाप्नुयाम्।। ९।।
शुकीव यदि ते खाद्य भवेच्चापि सितोपला।
मधुरैश्च मम प्राणैर्लालनीयाऽसि सर्वदा।। १०।।

(अच्छा हुआ) जो नही पडी किसी घमण्डी नौजवान के हाथ, टेढे मुँह वाला, उलटी अक्ल वाला, चपल चरण वाला जो हर समय वासना में डूबा रहता और हर रात नयी जगह सोता और हर रोज़ नयी यारी करता।

न त्व दिष्ट्या गृहीता केनचिद् यूना, आस्यचेष्टा विकुर्वता, विपरीतमतिमता, चपलपादेन, सना वासनादासेन, प्रतिरात्र नवस्थानमधिशयानेन प्रतिदिन नवीना कामिनी कामयानेनेति।

क़ता

युवक लोग कल्पनाशील और सुन्दर होते हैं।
लेकिन वफा में किसी से पाबन्द नही होते।।

पदम्

युवान कल्पनाशीला सुरूपाश्च भवन्त्युत।
न किन्तु सन्ति केनापि स्नेहभावेन निष्ठिता।। ११।।

वफादारी की आशा मत कर तोता चश्मो से।
जो कि हर समय एक फूल से दूसरे फूल पर घर बनाते है।।

वृद्धो के विरुद्ध जो कि वृद्धि और शिष्टता से जीवनयापन करते है न कि जडता और जवानी की मनमानी से।

बैत

अपने से बहतर वृद्ध और वरदान समझ।
अपने जैसो के साथ समय कम बिता।।

कहने लगा—'मै इसी तरह कहता रहा, सोचता था कि उसका हृदय मेरे वश में आ गया है और मेरा शिकार हो गया है।' सहसा एक ठण्डी सॉस दुखे हुए दिल से निकाली और वह बोली—'जो बातें कि तुम कहते हो, मेरे मन की तुला पर उस एक बात के तोल की नही है जो कि किसी समय मैंने अपनी धाय से सुनी थी, कि कहती थी—

युवती के पहलू में यदि एक।
तीर हो तो वह पीर से अच्छा है।।'

रुबाई

जो स्त्री पुरुष के आलिंगन से अतृप्त उठती है।
बहुतसा झगडा और शोर उस घर से उठा करता है।।
वह वृद्ध जो अपनी जगह से नही उठ सकता।
डण्डे के विना, कैसे उसका डण्डा उठ सकता है।।

शेर

जब उस (नारी) ने देखी अपने पति के आगे।
कोई चीज जैसे रोजेदार का सुस्त होठ।।
वह बोली—यह रखता है अपने साथ मुर्दा।
और वेशक तन्त्र-मन्त्र सोने वाले के लिये है (न कि मुर्दे के लिये)।।

सक्षेप में, अनुकूलता की सम्भावना न रही, तलाक हो गया। जब इद्दत का समय बीत गया तो उसका निकाह कर दिया गया एक ऐसे युवक से जो अत्यन्त क्रोधी, मुंह विगाडे रखने वाला, खाली हाथ और दु शील था। उसने जौर और जफा देखी और दु ख और परेशानी भुगती, और फिर भी परमात्मा की कृपा का धन्यवाद करके कहा करती थी कि 'प्रभु! तू धन्य है! कि मैं उस घोर कष्ट से छूटी और उस स्थायी सुख को प्राप्त हुई।'

मा शासिष्ठा शुकाक्षैस्त्वमनन्य स्नेहमक्षरम्।
पुष्प पुष्प समाश्रित्यान्यत् पुष्प यैश्च काम्यते।। १२।।

न पुनरेतद् वृद्धेषु दृश्यते—ये च वुद्ध्या, शिष्टतया च जीवनयापन कुर्वते, न च युवजनोचितेन जाड्येन स्वैराचारेण चेति।

श्लोक

ज्यायासमात्मनोऽन्विष्या अवेहि धन्यभाग्यताम्।
आत्मादृशज... ...५ न्यून काल च यापये।। १३।।

स उवाच—'अहमेव व्रुवाण आसम्, विमर्शयश्च तस्याश्चित्त मया जित वशीकृतञ्च।' सहसा हि तस्या हृद उष्णोच्छ्वासो निर्गत साऽब्रवीच्च—'यत् त्व ब्रूषे न तत् तेन तुल्य भवति मच्चेतसस्तुलाया यदहमेकदा स्वस्या धात्र्या श्रुतवती। या चाह—

युवत्यो यदि शय्याया वाण शेते तु तद्वरम्।
न पुनर्वीतकामस्तु वृद्धश्च धनुरायित।। १।।'

चतुष्पदीयम्

योषा पुरुषशय्याया यत्रोत्तिष्ठेदतोषिता।
तस्माद् गृहान् निवर्तन्ते कलहोपद्रवा भृशम्।। १४।।
विना दण्डेन शक्नोति नोत्थातु यो हि चासनात्।
कदर्पध्वजदण्डश्च कथमस्य प्ररोहयेत्।। १५।।

श्लोक

यदा दृष्टवती भार्या पत्युरग्रे ह्युपस्थितम्।
जीर्णेन्द्रिय पर शीर्णं लघितोष्ठमिव श्लथम्।। १६।।
तदा सोक्तवती—ह्येषो नरो धत्ते मृतेन्द्रियम्।
उत्तिष्ठन्त्युपचारैस्तु सुपुप्ता न गतासव।। १७।।

अन्ततो गत्वा, दम्पत्योरास्यापनस्य सम्भावना नावशिष्टा, ततो विप्रयोगो जात। यदा शास्त्रोक्तावधिर्व्यतीतस्तदा सा केनचिदूढा यो ह्यतीव क्रोधालुरास्यचेष्टा विकुर्वाणो, रिक्तहस्त कुवृत्तश्चासीत्। सा तस्यात्याचारमन्याय च सेहे, कष्ट चिन्ता च दधे, तथापि धन्यवाद ब्रुवाणा कालमुवाहाथ—'हे प्रभो! धन्योऽसि यद् घोरतरात् कष्टात् त्वया मोचितास्मि चैतावन्त सुख च लब्धवतीति।'

कता

सुन्दर मुखड़ा और गोटे के कपड़े।
चन्दन, अगर और रंग, सुगन्ध और उद्दीपन॥
ये सब औरतों के शृङ्गार हैं।
पुरुष के लिये लिंग और अण्डकोष का शृंगार बहुत है॥

पदम्

सुरूपं च मुखञ्चैव वासश्च स्वर्णमण्डितम्।
चन्दनमगुरू रागो गन्धमुद्दीपन तथा॥ १८॥
मण्डनान्यथ सर्वाणि नारीणां कथितानि हि।
शिश्नमुष्कावलंकारौ पुरुषस्य प्रकीर्तितौ॥ १९॥

बैत

होते हुए यह सब जुल्म और स्वभाव की उग्रता।
मैं तेरे नाज़ उठाऊँगी क्योंकि तू प्रिय दर्शन है॥

श्लोक

इम ते सवमुद्रेकं स्वभावस्योग्रता तथा।
विभ्रमं च सहे नित्यं यतस्त्वं प्रियदर्शन॥ २०॥

कता

तेरे साथ मेरा जलना नरक में।
अच्छा है, बजाय जाने के स्वर्ग में दूसरे के साथ॥
एक मुददान के मुंह से प्याज की बास।
अच्छी लगती है, भोंडे आदमी के हाथ से गुलाब की अपेक्षा॥

पदम्

त्वत्सार्धं नरके घोरे दाहः श्रेयस्करो मम।
नान्यत्साधमपि स्वर्गे वासो मे रोचते क्वचित्॥ २१॥
अपि पलाण्डुदुर्गन्धं मनोज्ञमुखनिर्गतम्।
प्रेयः प्रतीयते मह्यं न चाकान्ताच्च सौरभम्॥ २२॥

कथा—३

मैं एक वृद्ध का मेहमान था—दयारबक्र में। जिसके बहुत धन था और एक सुन्दर पुत्र था। एक रात वह कथा सुनाने लगा कि—'मेरे सारी उमर इस लड़के के अतिरिक्त कुछ नहीं हुआ। एक पेड़ इस घाटी में तीर्थ स्थान है—लोग मन्नत मांगने वहाँ जाया करते हैं।

मैंने लम्बी रातों में उस पेड़ के नीचे परमेश्वर से प्रार्थना की, तब मुझ को यह पुत्र मिला।' मैंने सुना कि लड़का अपने दोस्तों से कह रहा था—'कितना अच्छा होता यदि मुझे उस पेड़ का पता लग जाता कि वह कहाँ है ताकि मैं दुआ करता कि मेरा बाप जल्दी से जल्दी मर जाय।'

गृहपति खुशी मना रहा है कि मेरा लड़का बड़ा अक्लमन्द है और बेटा ताना मार रहा है कि मेरा बाप बे अक्ल सठियाया हुआ है।

आख्यायितम्—३

अहं कस्यचिद् वृद्धजनस्यातिथिरास—दयारबक्रपुरे यश्च प्रभूत-वित्तवान्, सुरूपपुत्रवांश्चासीत्। एकदा रात्रौ स कथयितुमारेभेऽस्य—'यावज्जीवमृतेऽमु पुत्र नान्यदपत्यं मे जातम्। कश्चिद् वृक्षोऽस्या-मुपत्यकायां सिद्धतीर्थोऽस्ति यत्र पुमासोऽभिलापुका कामनापूर्त्यर्थं यान्ति। अहमपि बहुकालं यावत् तत्र दीर्घयामा ईश्वरप्रार्थनाया व्यत्यापितवान्। ततोऽहमेनं पुत्रं लब्धवान्।' अन्यदाहं तस्य पुत्रमेव ब्रुवन्तमश्रौषमयं—'अहो! यदि तं सिद्धागम वृक्ष जानीयं। येन तत्र गत्वा प्रार्थयेयाथ मे जरठो जनकोऽचिरादेव पञ्चत्वं यायादिति।'

पिता हृष्यति पुत्रो मे विद्याबुद्धिसमन्वितः।
पुत्रो ब्रूतेऽयं वृद्धोऽयं वृद्धत्वाद् बुद्धिवर्जितः॥ २॥

कता

तुझे कई वर्ष बीत गये कि निकला।
नहीं तू अपने बाप की समाधि की ओर॥
तूने अपने बाप का क्या सत्कार किया है।
जो अपेक्षा करता है अपने बेटे से॥

पदम्

वर्षाणि ते व्यतीतानि बहूनि न पुनस्त्वया।
पितुः समाधिसान्निध्येऽगामि हन्त कदाचन॥ २३॥
त्वया को नाम सत्कारो दर्शितः पितरं प्रति।
यत् पुत्रेण व्यपेक्षेथा सत्कारं ते करिष्यति॥ २४॥

कथा—४

एक दिन यौवन के गर्व में मैंने कठिन यात्रा की और रात के समय थककर श्लथ हो गया। एक दुर्बल वृद्ध व्यक्ति भी कारवाँ के पीछे आ रहा था। वह बोला—'क्यो सो रहा है? कि यह सोने की जगह नही है।' मैंने कहा—'कैसे चलूं? कि चलने के पैर नही रहे।' वह बोला—'क्या तूने नही सुना कि भक्तजन कह गये हैं—

चलना और बैठना अच्छा है।
दौडने और गिरने से।।'

क़ता

अरे मंज़िल के मुश्ताक! जल्दी मत कर।
मेरा उपदेश गाँठ बाँध ले और धीरज सीख।।
अरबी घोडा दो दौड दौडता है जल्दी से।
(पर) ऊँट धीरे धीरे चलता जाता है रात दिन।।

आख्यायितम्—४

एकदा यौवनगर्वादहं कठिना यात्रामकरवम्। रात्रौ चाध्वश्रमश्लथो जात। कश्चिद् वृद्धोऽपि सार्थवाहमनु याति स्म। सोऽब्रवीत्—'कथमिह सुप्तोऽसि? नेदं शयनीयं क्षेत्रम्।' अहमवोचम्—'कथं चलेय, गमनीयौ पादावेव न दधे।' सोऽवदत्—'किं न श्रुतवानसि यथाहुर्भक्ता—

शनैस्तु पादसञ्चारो विश्रामस्तदनन्तरम्।
धावनात् पतनाच्चैव नि श्रेयस्कर उच्यते।। ३।।'

पदम्

उदग्रलक्ष्य! मा मैव त्वरमाण कदाचन।
उपदेशं च गृह्णीया शिक्षेथाश्चाथ धीरताम्।। २५।।
अश्वो विरमति द्वाभ्या धाविताभ्यामल तत।
उष्ट्रश्चैव शनैर्गन्ता शनैर्गच्छेदहर्निशम्।। २६।।

कथा—५

एक युवक बडा चुस्त, दयालु, हँसमुख, सुवक्ता और मधुभाषी हमारी मित्रमण्डली में था जिसके कि दिल में किसी प्रकार का गम नही आता था, और जिसके होठ कभी हँसने से बन्द न होते थे। कुछ समय बीत गया कि उससे मिलने का सयोग नही पडा। जब मैंने उसे देखा था उसके बाद उसका विवाह हो गया और लडके बडे हो गये, और उसके सुख की जड कट गयी और कामना के फूल मुर्झा गये।

बैत

निकाल दिया गगार ने गव उसके सिर से।
कमजोरी सा सिर उसके घुटना पर टिक गया।।

मैंने उससे पूछा—'कैसा है? और यह क्या हालत है?' कहने लगा—'जब से बच्चे हुए तब से बचपन नही करता हूँ।'

शेर

कहाँ है बचपन जब पलित ने बदल डाला मुझे।
और काफी (बडा) गुरु है समय का परिवर्तन।।

बैत

जब तू बुड्ढा हो गया तो बचपन मे हाथ खींच।
क्रीडा और उत्सव जवानों के लिये छोड।।

आख्यायितम्—५

कश्चिद् युवातीव चैतन्य, स्मयमानमुख, सुवक्ता, प्रियवदश्चास्माकं सगतावासीत्। यस्य मनसि न क्वचिद् दु खमवकाशं लेभे, न चास्य सृक्किणी स्मितया उपरेमाते। अथैव कालो जातस्त द्रष्टुमवसरं च नाप्नवम्। यदाहमेन पुनर्दृष्टवान् स कृतदारपरिग्रहो जात पुत्राश्चास्य प्रवृद्धा जाता। तस्य सुखस्य मूल निकृन्तितं जातम्, तस्य कामनाकुरवकाणि च छिन्नवृन्तानि सवृत्तानीति।

श्लोक

कालो विरिक्तवान् सर्वं गर्वं मस्तकविभ्रमम्।
अशक्त स्वस्य मूर्धानं जानुभ्यां धारयन् स्थित।। २७।।

अहं तमपृच्छम्—'अथ कथमसि? इयं का तेऽवस्थेति?' सोऽवदत्—'यतोऽपत्यानि जातानि बालक्रीडा न कुर्महे।'

श्लोक

पलिताक्रान्तशीर्षस्य क्वेदानी शैशवं नु मे।
गुरूणा गुरुरित्युक्त कालस्य परिवर्तनम्।। २८।।

श्लोक

वृद्धे जाते त्यज क्रीडा समस्ता युवकोचिताम्।
साहसं चोत्सवं चैव किशोरेभ्य समुत्सृज।। २९।।

मसनवी

जवानों की उमगों की वृद्धों से आशा मत कर।
क्योंकि दुबारा नहीं आता पानी, नदी से बहा हुआ॥
फसल का जब आता है काटने का समय।
वह नहीं झूमती नयी हरियाली की तरह॥

गाथा

युवकोचितमुल्लास मापेक्षेस्तु जरायुषा।
नद्या विनिर्गतश्चापो नावर्तन्ते पुन क्वचित्॥ ३०॥
पक्वशष्पयुत क्षेत्र वियनार्थं च प्रस्तुतम्।
नैवोजस्वितराक्रीड यथा हि तरुण तृणम्॥ ३१॥

क़ता

जवानी का दौर चला गया मेरे हाथ से।
हाय अफसोस! वह मनोहर काल॥
वह शेर के पजे की ताकत गयी।
अब मैं तेंदुए की तरह पनीर खाकर राजी हूँ॥
एक बुढिया ने अपने बालो में खिजाब लगाया।
मैंने उससे कहा—'हे पुराने दिनो की माता॥
बाल तो तूने नील लगाकर काले कर लिये।
पर सीधी होना नहीं चाहती तेरी कुबडी पीठ॥'

पदम्

यौवन च व्यतीत मे च्यवन्निव करान्मम।
अहो मनोहर काल!' स्मार स्मार भजामि तम्॥ ३२॥
अहो बत गत तद्धि शार्दूलस्येव दोर्बलम्।
किलाटभुगिव द्वीपी ह्यधुना तोषिता वयम्॥ ३३॥
नीलीकर्मप्रपन्ना च वृद्धैका दृष्टवानहम्।
तमवोचमह मात! पुराकल्पानुयायिनि॥ ३४॥
केशा हि साधिता नून नीलीकृत्य त्वया ननु।
वार्धक्यकुब्जपृष्ठ ते न चोच्छ्राय समीहते॥ ३५॥

कथा—६

एक समय अपनी जवानी की जडता में मैं अपनी माँ पर चिल्ला पडा। (वह) दिल में बुरा मानकर एक कोने में बैठ गयी और रोकर कहने लगी—'शायद तू बचपन भूल गया कि कठोरता कर रहा है।'

आख्यायितम्—६

एकदा यौवनसुलभजडतायामह मातरमक्रुशम्। सा मनसि दूयमाना गृहस्य निभृत कोणमुपाविशद् रोद रोद चोक्तवती—'शैशव विस्मृत ते स्याद् यदद्य परुषाक्षर॥ ४॥'

क़ता

कितना अच्छा कहा है जाल ने अपने पुत्र से।
जब देखा उसको सिंहपछाड और हाथी देह वाला॥
यदि तुझे अपना बचपन याद आता।
जब कि तू निरुपाय था मेरी गोद में॥
न करता आज मुझ पर कठोरता।
कि तू सिंहमार है और मैं बुढिया अबला हूँ॥

पदम्

अहो सूक्तमिद सूक्त जालया स्वसुत प्रति।
दृष्ट्वा त सिंहविक्रान्त पुष्टगात्र यथा गज॥ ३६॥
यदि क्षुद्रतरावस्थामस्मरिष्य कदाचन।
निरुपाय स्थितस्त्व यन्मदङ्के च मदाश्रित॥ ३७॥
नाकरिष्योऽतिचार त्वमिदानी मयि पुत्रक।
त्वमद्य सिंहविक्रान्तो जराजीर्णाबलास्म्यहम्॥ ३८॥

कथा—७

एक मालदार कजूस का बेटा बीमार हो गया। शुभचिन्तकों ने उससे कहा—'भलाई इसमें है कि इसके लिये अखण्ड कुरान पाठ कराओ या बलि की न्योछावर करवाओ। हो सकता है कि परमेश्वर इसे स्वास्थ्य प्रदान करे।' (उसने) थोडी देर इस पर विचार किया

आख्यायितम्—७

कस्यचिद् धनाढ्यकृपणस्य पुत्रो रुग्णो जात। शुभैषिणस्त-मुचु—'क्षेमस्तावदय यदि ह्यखण्डपाठ कुरानस्य बलिदान वाऽनुष्ठी-यते। सम्भाव्यतेऽस्य परमेश्वर एन नीरोग कुरुतात्।' कृपण क्षण विचार्यावदत्—'अखण्डकुरानपाठ एव श्रेयस्कर।' कश्चिद्

और कहा—'कुरान पाठ अधिक अच्छा है।' पर भक्त ने सुना और कहा—'इसको कुरान पाठ इसलिये स्वीकार है क्योंकि कुरान इसकी ज़बान पर है और धन इसकी जान के अन्दर।'

भक्त एव श्रुत्वोवाच—'अस्यासत्पाठ सत्यनेन हेतुनाभिमततरोऽयं—जिह्वाग्रेऽस्य कुरानाऽस्ति प्राणेषु निहितं धनम्।'

मसनवी

अफ़सोस! उस प्रार्थना में गर्दन झुकाने में।
यदि उसके साथ दान का हाथ भी बढ़ाना पड़े॥
एक दीनार के लिये कहो, तो कीचड़ में फँसे गधे की तरह अचल हो जाते हैं।
और अगर 'अलहम्दु' के लिये कहो तो सौ बार सुना दे॥

गाथा

अहो धिक्! प्रार्थनाया स्यात् ग्रीवाप्रणमन यदि।
देय तदनु दान स्यात् प्राणानामपकर्षणम्॥ ३९॥
दीनार यच्छ चेत्युक्त पङ्कमग्नो यथा खर।
कीर्तनाय रागादिष्ट शतधा कीर्तयिष्यति॥ ४०॥

कथा—८

एक बूढ़े आदमी से लोगों ने कहा—'क्यों शादी नहीं करता?' उसने कहा—'बूढ़ी स्त्री से मुझे प्यार नहीं होगा।' लोगों ने कहा—'युवती से कर जो तेरी शक्ति में हो।' वह बोला—'मुझको जो कि बूढ़ा हूँ—बुढ़िया से प्रेम नहीं है, वह जो कि जवान होगी मुझ बूढ़े से प्रीति नहीं करेगी।'

आख्यायितम्—८

कश्चिद् वृद्ध पुंसि पृष्ट—'कथ दारपरिग्रह न कुरुषे?' सोऽवदत्—'वृद्धया स्त्रिया न मे प्रीतिप्रादुर्भावो भवितेति।' त ऊचु—'युवती वरय, यथा च ते सामर्थ्यमेति।' सोऽवदत्—

'वृद्धोऽपि सन्नह जातु न वृद्धामभिकामये।
तत्कथ युवती वृद्ध प्रेम्णा मामनुपश्यति॥ ५॥'

तुर्किया

सत्तर साल के बूढ़े को जवानी याद रही है।
तू जग या अन्धा है, ज़रा घूम ले और सो जा॥

ग्राम्यपदम्

सप्ततिवर्षदेशीयो जराजीर्णो युवायते।
अरे जगान्ध! घुम्मित्वा मुदा त्व शयन कुरु॥ ४१॥

बैत

ज़ोर चाहिये न कि ज़र नारी को।
दस मन गोश्त से कठोर लिंग अच्छा है॥

श्लोक

पौरुष काम्यते नार्या न स्वर्णं न धनानि च।
प्रस्याच्छिथिलमासाच्चोपस्थ कठिन इष्यते॥ ४२॥

क़ता

मैंने सुना है कि इन दिनों एक सठियाए हुए बुड्ढे ने।
अपनी बूढ़ी खोपड़ी में विचार किया कि शादी करूँ॥
उसने शादी की एक सुन्दर लड़की से जिसका नाम गौहर था।
मोतियों की पेटी की तरह उसे लोगों से छिपा रखा॥
जैसा कि शादी का क़ायदा है—उसने कामना की।
लेकिन पहले आक्रमण के समय ही शेख का डंडा सो गया॥

पदम्

श्रुतवानस्मि चेदानीमस्य वृद्धेन केनचित्।
प्राचीने शिरसि क्लृप्त—'कुर्यां दारपरिग्रहम्'॥ ४३॥
मुक्तानाम्नी दुहितर रूपाढ्यामेष ऊढवान्।
एना मौक्तिकमञ्जूषामिवान्येभ्यो न्यगोपयत्॥ ४४॥
सम्पन्ने हि वधूकृत्ये त्विष्टे काले ह्युपस्थिते।
प्रथमाक्रमणे चैव शेखोपस्थ प्रसुप्तवान्॥ ४५॥

कमान खींची और लक्ष्य पर चोट नहीं की क्योंकि नहीं सिल सकता।
सिवा फ़ौलाद की सुई के मोटा कपड़ा॥
दोस्तों से उसने शिकायत की और कलह उठ खड़ी हुई।
कि इस धृष्टा ने मेरी गृहस्थी और इज्ज़त लुटा दी॥
पति और पत्नी में लड़ाई और झगड़ा इतना हुआ।
कि कोतवाल और काज़ी ने उसमें सिर डाला और सादी ने कहा॥
इस भर्त्सना और गाली में लड़की का क्या अपराध है।
तुझे, जिसका कि हाथ काँपता है, मोती बींधना कब आता है॥

कृष्टचापोऽपि लक्ष्य स वेधितु न शशाक ह।
सगुम्फवासो लोहस्य विना सूच्या न सीव्यते॥४६॥
उपालम्भ स मित्रेभ्यश्चारेभे कलहोऽभवत्।
मद्गृह च गृहस्थ स्व विनष्ट धृष्टयाऽनया॥४७॥
दम्पत्योश्च तयोर्मध्ये हीदृशोऽभूदुपद्रव।
दण्डन्यायस्थ पाधीशौ प्रवृत्तौ चाहमुक्तवान्॥४८॥
कोऽपराध किशोर्या हि चैषा विनिन्द्यतेऽद्य किम्।
कथ कम्पितहस्तेन त्वया मुक्ताऽभिवेध्यते॥४९॥

सातवाँ अध्याय

शिक्षा के प्रभाव के विषय मे

कथा—१

एक मन्त्री के एक अन्धे दिल वाला पुत्र था। उसने उसे एक विद्वान् के पास भेजा कि इसको पढा—शायद चतुर हो जाय। उसने कुछ दिनो तक उसे पढाया पर फल न हुआ। उसके बाप के पास एक आदमी भिजवाया कि यह लडका तो चतुर नही हुआ और मुझे बावला कर दिया।

कता

जब मूल प्रकृति योग्य हो।
तो शिक्षण का उस पर प्रभाव होता है॥
कोई भी घिसाई अच्छा नही कर सकती।
उस लोहे को जो कि घटिया मूल का हो॥
कुत्ते को सात समुद्रों में नहला दो।
जब भीग जायगा तो और अपवित्र होगा॥
ईसा का गधा यदि मक्का जाय।
जब लौटेगा तो फिर भी गधा रहेगा॥

सप्तमोऽध्याय:

शिक्षादीक्षामाहात्म्ये

आख्यायितम्—१

कस्यचिद् राजमन्त्रिण कश्चिज् जडमति पुत्र आसीत्। स त कञ्चिद् विद्वास प्रहितवानयैनमध्यापय। कदाचिदेप वैदुष्यमुपयायात्। स एन कतिचिद् दिनानि यावदध्यापयत् फलोदयो न जात। स तस्य पितर सन्देशहर प्राहिणोदथ—'नासौ वैदुष्यसम्पन्नो मा च मूढ व्यधादुत।'

पदम्

यदा भवति वै मूलप्रकृति शिक्षणाक्षमा।
शिक्षणस्य तदैवास्य प्रभाव सम्प्रजायते॥ १॥
न मार्जनपटु कश्चिदुज्ज्वल कर्तुमर्हति।
अयोमय च तद् भाण्ड यच्च हीनकुलोद्भवम्॥ २॥
श्वान सप्तसमुद्रेषु ह्यपि चेदवमज्जये।
स्नात्वा यदि विनिष्क्रान्तो मलीनतर एव स॥ ३॥
ईसाखरश्च मक्कायामथ चेत् तीर्थयात्रिक।
प्रत्यावर्तित एवासौ खर स्यात् पूर्ववत् खर॥ ४॥

कथा—२

एक पण्डित ने पुत्रों को उपदेश दिया कि—'हे पिता के प्राण! तुमलोग हुनर सीखो। क्योकि राज्य और वैभव का कोई ठिकाना नही है। और सोना चाँदी यात्रा मे सकट भूमि होने हैं—कि चोर एक बार में ही चुरा ले या स्वामी क्रमश खा डाले, लेकिन हुनर एक प्रवहमान स्रोत है और स्थायी धन है। यदि हुनरमन्द सम्पत्ति से च्युत हो जाय तो ग़म नही होता—क्योकि हुनर अपने आप में सम्पत्ति है। वह जहाँ कही भी जाता है अपना सत्कार देखता है और प्रधान (बनकर) बैठता है—और बेहुनर टुकडे बीनता है और दुर्दशा देखता है।'

बैत

बडा कठिन है पदच्युत होने के पश्चात् हुक्म उठाना।
नाज की आदत होने पर लोगों के अत्याचार सहना॥

आख्यायितम्—२

कश्चित् पण्डित पुत्रानेव शशास—'हे पितुर्जीवितानि! शिल्प शिक्षध्वम्, यत —'अविश्वस्यमथो राज्यमविश्वस्य च वैभवम्'॥ १॥ रजत काञ्चन वा यात्राया निलसकटरभाग सञ्जत् चौरहार्यत्वात्, क्रमशो वा भोक्तुर्व्ययक्षयविषयत्वाच्चेति। परन्तु—

शिल्प स्रोतस्सदानीर तथा चैवाव्यय धनम्।
शिल्पज्ञानसमायुक्तो धनेन रहितोऽपि चेत्॥ २॥
तस्य नो जायते चिन्ता शिल्प चावितथ धनम्।
शिल्पी यत्रापि सगच्छेत् सम्भ्रम तत्र पश्यति॥ ३॥
नि शिल्प उञ्छति ग्रास दुर्दशाञ्चाधिगच्छति।

श्लोक

कष्ट स्थानपरिभ्रशानन्तर प्रेष्यता सदा।
चाटूकलालनाभ्यस्तेऽत्याचार खलु दु सह॥ ५॥

قطعه

وقتی افتاد فتنهٔ در شام
هر کسی گوشهٔ فرا رفتند *
روستا زادگان دانشمند
بوزیری پادشاه رفتند *
پسران وزیر ناقص عقل
بگدائی بروستا رفتند *

क़ता (बहरे ख़फ़ीफ़)

वक़्ते उफ़्ताद फ़ित्नाए दर शाम।
हर कसे गोशाए फ़रा रफ़्तन्द॥
रूस्ताज़ादगाने दानिशमन्द।
ब वज़ीरीए पादशाह् रफ़्तन्द॥
पिसराने वज़ीर नाक़िस अक़्ल।
ब गदायी ब रूस्ता रफ़्तन्द॥

بیت

میراث پدر خواهی ـ علم پدر آموز
کین مال پدر خرج توان کرد بده روز *

बैत (बहरे हज़ज्)

मीरासे पिदर ख़्वाही इल्मे पिदर आमोज़।
की माले पिदर ख़र्च तवाँ कद ब दह् रोज़॥

حکایت ۳

یکی از فضلای عصر تعلیم ملک‌زادهٔ همی کرد ـ ضرب بی‌محابا زدی و زجر بی‌قیاس کردی * باری پسر از بی‌طاقتی شکایت پیش پدر آورد و جامه از تن دردمند برداشت * پدررا دل بهم بر آمد ـ استادرا بخواند و گفت ـ ''پسران آحادرا چنین جفا و توبیخ روا نداری که فرزند مرا ـ سبب چیست؟'' گفت ـ ''سبب آن که سخن اندیشید گفتن و حرکت پسندیده کردن همه‌خلق را علی العموم باید و پادشاهان‌را علی الخصوص ـ موجب آن که از دست و زبان ایشان هرچه رود هرآئینه بافواه بگویند ـ و قول و فعل عوام الناس‌را چندان اعتبار نباشد *

हिकायत—३

यके अज़ फ़ुज़लाये अस्र तालीमे मलिक ज़ादाए हमीकद—ज़र्बे बेमुहाबा ज़दे व ज़ज्रे बेक़यास कर्दे। बारे पिसर अज़ बेताक़ती शिकायत पेशे पिदर आवुर्द व जामा अज़ तने दर्दमन्द बरदाश्त। पिदर रा दिल बहम बर आमद—उस्ताद रा बिख़्वान्द व गुफ़्त—'पिसराने आहाद रा चुनी जफ़ा ओ तौबीख़ रवा न दारी कि फ़र्ज़न्दे मरा—सबब चीस्त?' गुफ़्त—'सबब आँ कि सुख़ुने अन्देशीदा गुफ़्तन् व हरकते पसन्दीदा करदन् हमा ख़ल्क़ रा अल'ल् उमूम् बायद व पादशाहाँ रा अल'ल् ख़ुसूस—मूजिबे आँकि अज़ *दस्तो ज़बाने ऐशान् हर चि रवद हर आईना ब अफ़वाह बिगोयन्द*—व क़ौलो फ़ैले अवामु'न्नास रा चन्दाँ ऐतबार न बाशद।'

قطعه

اگر صد نا پسند آید ز درویش
رفیقانش یکی از صد ندانند *
و گر یك نا پسند آید ز سلطان
ز اقلیمی باقلیمی رسانند *

क़ता (बहरे हज़ज्)

अगर सद नापसन्द आयद ज़ि दरवेश।
रफ़ीक़ानश् यके अज़ सद न दानन्द॥
वगर यक नापसन्द आयद ज़ि सुल्तान।
ज़ि इक़्लीमे ब इक़्लीमे रसानन्द॥

پس واجب آمد معلم پادشاه‌زاده‌را در تهذیب اخلاق خداوندزادگان ''اَنْبَتَهُمُ اللهُ نَبَاتاً حَسَناً'' اجتهاد از آن بیشتر کردن که در حق عوام *

पस वाजिब आमद मुअल्लिमे पादशाहज़ादा रा दर तह्ज़ीबे इख़लाक़े ख़ुदावन्दज़ादगान्—'अम्बत हुमु'ल्लाहु नबातन् हसनन्' इज्तिहाद अज़ आँ बेशतर करदन् कि दर हक़्क़े अवाम।

क़ता

एक समय उपद्रव हो गया शाम देश में।
हर आदमी कोने में छिप गया।।
किसानो के बेटे जो चतुर थे।
मन्त्रित्व के लिये राजा के पास पहुँच गये।।
मन्त्रियो के बेटे जो हीनमति थे।
भीख माँगने को गाँवो में पहुँच गये।।

बैत

यदि बाप का उत्तराधिकार चाहिये तो बाप की विद्या सीख।
क्योकि बाप का यह माल दस दिन में खर्च हो जायगा।।

कथा—३

एक विद्वान् एक राजकुमार को पढ़ाता था। उसे निर्दयतापूर्वक पीटता था और बहुत फटकारता था। एक बार राजकुमार सहने में असमर्थ होकर बाप के पास शिकायत ले गया और घायल शरीर से कपडा हटा दिया। पिता का हृदय विचलित हो गया—शिक्षक को बुलाया और कहा—'तू प्रजा के बच्चों पर इतनी निर्दयता और डाँट नहीं रखता, जितनी कि मेरे पुत्र पर—इसका क्या कारण है?' बोला—'कारण यह है कि विचार कर बोलना और लोक रुचि को पसन्द आने वाले काम करना सभी लोगो का सामान्य कर्त्तव्य है और राजाओ का विशेष कर्त्तव्य है, क्योकि इनके हाथ और ज़बान से जो निकलता है उस हर चीज़ को लोग अफवाह के रूप में कहा करते हैं। और सामान्य जनो के वचन और काय पर इतना ध्यान नही जाता।'

क़ता

यदि सौ अनुचित काम फकीर से हो जाँय।
तो उसके मित्र सौ में से एक भी नही जान पाते।।
और यदि एक अप्रिय काम राजा से हो जाय।
तो लोग उसे एक देश से दूसरे देश तक फैला देते हैं।।

अत उचित होता है कि राजकुमार के शिक्षक को राजकुमारोचित शिष्टाचार और सदाचार सिखाने में (भगवान् उसे सुन्दर वृक्ष बनाये) अधिक परिश्रम करना, जितना कि सामान्य जनो के लिये (उचित है)।

पदम्

एकदा शामके देशे ह्युपप्लुतमभून्महत्।
भयातुरा जना सर्वे तिरोधानमवाप्नुवन्।। ६।।
ग्रामीणाना च ये पुत्रा विद्याबुद्धिसमन्विता।
स्वगुणै राजमन्त्रित्व ग्रामीणास्त उपागमन्।। ७।।
अमात्याना च ये पुत्रा विद्याबुद्धिविवर्जिता।
ग्रामाद् ग्राम च भिक्षार्थं पर्यटन्त समास्थिता।। ८।।

श्लोक

इच्छेश्चेत् त्व पितुर्दाय पितुर्विद्या समाहर।
यतो वित्त पितुर्लब्ध यावद् दश दिन व्रजेत्।। ९।।

आख्यायितम्—३

कश्चिद् विद्वान् कञ्चिद् राजपुत्रमध्यापायमास। स निर्घृण-तया त ताडयति स्म भूयो भूयश्च निर्भर्त्सयते स्म च। एकदा राज-पुत्र एतत् सोढुमसमर्थ आत्मन पितरमुपाललम्भत् क्षताक्त च देह मनावृतमकरोत्। पितुर्हृदय दयया विगलितम्। स उपाध्याय-माहूयोवाच—'न त्व प्रजाना पुत्रेषु तथा तर्जनपरोऽसि यथा च मामके पुत्रे, कोऽत्र हेतुरिति?' उपाध्यायो ब्रूते—'तदनेन हेतुनाथ वचनोप-क्रमश्च सविचार, सर्वजनरञ्जनश्च कार्यव्यवहार, प्रजानां कर्तव्य सामान्यमस्ति, राज्ञाञ्च विशिष्ट कर्तव्यमस्ति। यतो यद् राज्ञा पाणिभ्या जिह्वाया वा निर्वर्तते तच्छ्रुतिपरम्परया सर्वैरुदीर्यते, तथा च लोकसामान्याना वाक्यानामथ कार्याणा न तथा प्रसरो भवेदिति।'

पदम्

अवाञ्छितशत कृत्य कुरुते यदि भिक्षुक।
न चैक तस्य मित्राणि शतेभ्यो जातु जानते।। १०।।
एकमात्र हि चेद् राजा ह्ययुक्त कुरुते क्वचित्।
देशादेशान्तरे तद्धि जायते लोकविश्रुतम्।। ११।

अत प्रजाना कृते उपाध्यायेन यदध्यापनाध्यवसाय क्रियते ततोऽपि राजपुत्राणां युवराजोचित शिष्टाचार सद्वृत्तस्य च शिक्षण परिश्रम-विशेषमर्हति, विहिततरञ्चेति।

قطعه

هر که در خردیش ادب نکند
در بزرگی فلاح ازو برخاست *
چوب تر را چنانکه خواهی پیچ
نشود خشک جز بآتش راست *

ملک‌را حسن تدبیر فقیه و تقریر جواب او موافق آمد ـ خلعت و نعمت بخشید و پایه و منصب او بلند گردانید *

حکایت ۴ ـ

معلم کتابی‌را دیدم در دیار مغرب ـ ترش روی و تلخ گفتار ـ بدخوی و مردم‌آزار گدا طبع و ناپرهیزگار ـ که عیش مسلمانان بدیدن او تبه گشتی ـ و خواندن قرآنش دل مردم سیه کردی * جمعی پسران پاکیزه و دختران دوشیزه بدست جفای او گرفتار ـ نه زهرهٔ خنده و نه یارای گفتار ـ که عارض سیمین یکی‌را طپانچه زدی و ساق بلورین دیگری‌را در شکنجه نهادی * القصه ـ شنیدم که طرفی از خباثت نفس او معلوم کردند ـ بزدند و براندند * پس آنگه مکتب‌را بمصلحی دادند ـ پارسائی سلیم و نیک مردی حلیم ـ که جز بحکم ضرورت سخن نگفتی ـ و موجب آزار کس بر زبان او نرفتی * کودکان‌را هیبت استاد نخستین از سر بدر رفت ـ معلم دومی‌را باخلاق ملکی دیدند ـ دیو صفت یك یك بریدند ـ و باعتماد حلم او ترك علم گرفتند * همچنین اغلب اوقات بازیچه فراهم نشستندی و لوح نا درست کرده نشستندی ـ و بر سر همدیگر شکستندی *

بیت

استاد معلم چو بود کم آزار
خرسك بازند کودکان در بازار *

بعد از دو هفته بر در آن مکتب گذر کردم ـ معلم اولین را دیدم ـ دل خوش کرده بودند و بمقام خویش باز آورده * از بی‌انصافی برنجیدم و ”لا حول،، گفتم ـ

क़ता (बहरे ख़फ़ीफ़)

हर कि दर ख़ुर्दीयश् अदब न कुनद।
दर बुज़ुर्गी फ़लाह अज़ू बरख़ास्त॥
चोबे तर रा चुनाँकि ख़्वाही पेच।
न शवद ख़ुश्क जुज़ ब आतिश रास्त॥

मलिक रा हुस्ने तदबीरे फ़क़ीह व तक़रीरे जवाबे ऊ मुवाफ़िक़ आमद—ख़िलअतो निअमत बख़्शीद व पाया व मन्सबे ऊ बलन्द गर्दानीद।

हिकायत—४

मुअल्लिमे कुत्ताबे रा दीदम् दर दयारे मग़रिब—तुर्श रूयो तल्ख़ गुफ़्तार—बदख़ूयो मर्दुम आज़ार—गदा तबअ व नापरहेज़गार कि ऐशे मुसलमानान् ब दीदने ऊ तबह गश्ते—व ख़्वान्दने क़ुरानश् दिले मर्दुम सियाह कर्दे। जमए पिसराने पाकीज़ा व दुख़्तराने दोशीज़ा ब दस्ते जफ़ाए ऊ गिरिफ़्तार—नै ज़ह्राए ख़न्दा व नै याराए गुफ़्तार—कि आरिज़े सीमीन यके रा तपान्चा ज़दे व साक़े बिल्लौरीने दीगरे रा दर शिकन्जा निहादे। अल् क़िस्सा शुनीदम् कि तरफ़े अज़ ख़बासते नफ़्से ऊ मालूम कर्दन्द—बज़दन्द व बरान्दन्द पस आँगह मकतब रा ब मुस्लिहे दादन्द—पारसाये सलीम व नेकमर्दे हलीम—कि जुज़ ब हुक्मे ज़रूरत सुख़न न गुफ़्ते व मूजिबे आज़ारे कस बर ज़बाने ऊ न रफ़्ते। कूदकान रा हैबते उस्तादे नुख़ुस्तीन अज़ सर बदर रफ़्त। मुअल्लिमे दोयमी रा ब अख़लाक़े मलकी दीदन्द—देव सिफ़त यक यक बरमीदन्द—व ब एतमादे हिल्मे ऊ तर्के इल्म गिरिफ़्तन्द। हमचुनीं अग़लबे औक़ात ब बाज़ीचा फ़राहम निशस्तन्दे व लौहे ना दुरुस्त कर्दा बिशुस्तन्दे—व बर सरे हम दीगर शिकस्तन्दे।

बैत (बहरे हज़ज्)

उस्तादे मुअल्लिम चु बुवद कम आज़ार।
ख़िरसक बाज़न्द कूदकाँ दर बाज़ार॥

बाद अज़ दु हफ़्ता बर दर आँ मकतब गुज़र कर्दम्—मुअल्लिमे अव्वली रा दीदम्—दिलख़ुश कर्दा बूदन्द व ब मुक़ामे ख़ेश बाज़ आवुर्दा। अज़ बेइन्साफ़ी बरन्जीदम् व 'लाहौल' गुफ़्तम्—

कता

जो कि छुटपन में अदब नहीं करता।
बड़े होने पर लक्ष्मी उससे चली जाती है॥
गीली लकड़ी को जिस तरह चाहे मोड़ ले।
सूखी लकड़ी सिवाय आग के सीधी नहीं होती॥

राजा को धर्मशास्त्री के उपाय की सुन्दरता और उत्तर में उसकी व्याख्या उचित लगी। उसको वस्त्रोपहार और सम्पत्ति दी और उसके पद का पाया ऊँचा कर दिया।

पदम्

यश्चापि शैशवे काले शिष्टाचारं न शिक्षते।
वयःप्राप्तः पुरुषः स श्रिया स्याद्धि विडम्बितः॥ १२॥
आर्द्रकाष्ठं यथाकामं सर्वथोन्नन्तुमर्हसि।
नाना त्वनलसन्तापं शुष्कं काष्ठं न सिध्यति॥ १३॥

उपाध्यायस्य वाग्वैशिष्ट्यं प्रत्युत्तरप्रकरणञ्च राज्ञोऽभिमतं बभूव। तस्मै वस्त्रोपहारं सम्पत्तिं च ददौ तं पदोन्नतं च विदधाविति।

कथा—४

(मैंने) पश्चिमी देश में एक लेखशाला में उपाध्याय को देखा—बदजबान और कटु भाषी—दुःशील और नृशंस-लालची और असंयमी ऐसा कि उसके देखने से ही मुसलमानों (सज्जनों) का सुख नष्ट होता था। और उसका कुरान पाठ लोगों के चित्त को काला (खिन्न) कर देता था। बहुत सारे पवित्र बालक और कुमारिकाएँ उसके जालिम हाथों की पकड़ में थे। न उन्हें हँसने का साहस था और न बोलने की हिम्मत। (वह) किसी के रजत कपोलों पर थप्पड़ मारता तो किसी के स्फटिक चरणों को शिकञ्जे में डालता।

संक्षेप में, मैंने सुना कि लोगों को उसके चित्त की दुष्टता ज्ञात हो गयी। उसे मारा और निकाल दिया। तदुपरान्त लोगों ने शाला एक ऐसे उपाध्याय को सौंप दी-जो भोला-भाला और विनम्र-सज्जन था—जो कि बिना जरूरत बात नहीं करता था और किसी के लिये क्लेशकर शब्द उसकी जबान पर नहीं आता था। लड़कों के—पहले उपाध्याय का डर—सिर से निकल गया। उन्होंने (इस) दूसरे उपाध्याय को फरिश्तों के चरित्र वाला देख लिया। राक्षस स्वभाव के होकर वे एक एक करके भागने लगे और उसकी सज्जनता के भरोसे पर विद्या का त्याग कर बैठे। ऐसे ही अधिकांश समय वे खेलकूद में बिताते बैठे रहते और अशोधित लेख वाली पट्टियों को धोते रहते और एक दूसरे के सिर पर उन्हें तोड़ते रहते।

आख्यायितम्—४

अहं पाश्चात्ये देशे (अफ्रीकायां) कञ्चन पट्टोपाध्यायं दृष्टवान् यश्च नितरां दुर्वचनः, क्रूरवाक्, दुःशीलो, नृशंसो, लोलुपोऽसंयतात्मा चासीत्। दर्शनमात्रेण भगवद्भक्तानामानन्दं क्षयमुपैति स्म। तस्य कुरानपाठः श्रोतृषु चित्तखेदं जनयति स्म। बहवः पवित्रात्मानो बालका बह्व्यश्च कुमारिकाः कन्यास्तस्य पीडनपरायणकरस्यान्तर्गता आसन्। न ते हसितुमुत्सहन्ते न चोच्चैर्वक्तुमिति। स कस्यचिद्रजतोज्ज्वलकपोले चपेटिकां ददाति स्म कस्यचित् स्फटिकशुभ्रौ चरणौ यन्त्रे प्रपीडयति स्म। संक्षेपेण, मया श्रुतमथ पुंसामस्तस्य दौरात्म्यं ज्ञात्वा तं ताडयामासुर्निष्कासितवन्तश्च। तदनन्तरं ते पाठशालां कस्मैचिदुपाध्यायाय ददौ यश्चासीत् सरलहृदयः, विनीतः, सदयश्च, प्रयोजनादृते वाचो व्ययं न कुरुते क्वचित्। पूर्वोपाध्यायस्य भयं बालानां चित्तात् निर्गतम्। तैर्नूतनोपाध्यायो दिवौका इव प्रेक्षितः। ततस्ते राक्षसबाला बभूवुः। तस्य सदाशयतायां प्रतीताः सन्तो विद्याभ्यासं तत्यजुः। एवं हि बहुधा कालं क्रीडया यापयन्त आसते स्म। अशोधितलेखा लेखपट्टिकाः क्षालयन्तश्चासतेऽन्योऽन्येषां शिरःसु च ताः पट्टिका बभञ्जुरिति।

बैत

उपाध्याय गुरु जब कम दण्ड देने वाला हो।
रीछ-कुत्ता खेलते हैं बच्चे बाजार में॥

दो सप्ताह के उपरान्त मैं उस शाला के द्वार से होकर गुजरा। पहले उपाध्याय को देखा—लोग उसे मना लाये थे और वह अपनी जगह वापिस आ गया था। इस अन्याय से मुझे कष्ट दुःख हुआ

श्लोक

उपाध्यायो यदा तिष्ठेत् त्यक्तदण्डपरिग्रहः।
ग्रामवीथीषु क्रीडन्ति बालकाः स्वार्क्षिकं तदा॥ १४॥

पक्षान्तरमहं शालाद्वारादारान्निर्गतः। तत्राहमद्राक्षं पूर्वोपाध्यायं यश्च बहुमानपुरस्सरं पूर्वाधिष्ठानमानीतः। अनेनान्यायेनाहं नितरां खिन्न आसम्। 'हा धिग्!' इत्युक्त्वा—'कथं पुनरपि

که دیگر بار ابلیس‌را معلم ملائکه چرا کردند؟
پیر مردی ظریف جهان دیده بشنید - بخندید و گفت -

مثنوی

پادشاهی پسر بمکتب داد
لوح سیمینش در کنار نهاد -
بر سر لوح او نبشته بزر
جور استاد به ز مهر پدر *

حکایت ۵

پارسا زاده‌را نعمت بی‌کران از ترکهٔ عم بدست افتاد *
فسق و فجور آغاز کرد و مبذری پیش گرفت * فی الجمله
نماند از سائر معاصی و منکری که نکرد و مسکری که
نخورد * باری به نصیحتش گفتم - ''ای فرزند! دخل
آب رواست - و عیش آسیای گردان - یعنی خرج فراوان
کردن مسلم کسی‌را باشد که دخل معین دارد'' *

قطعه

چو دخلت نیست - خرج آهسته تر کن
که می‌گویند ملاحان سرودی *
اگر باران بکوهستان نبارد
سالی - دجله گردد خشک رودی *

عقل و ادب پیش گیر و لهو و لعب بگذار - کی چون
نعمت سپری شود - سختی بری و پشیمانی خوری * پسر
از لذت نای و نوش این سخن در گوش نیاورد و بر قول
من اعتراض کرد - ''که راحت عاجل بمحنت آجل منغص
کردن خلاف رای خردمندانست *

مثنوی

خداوندان کام و نیکبختی
چرا سختی کشند از بیم سختی؟
برو - شادی کن - ای یار دل افروز!
غم فردا نشاید خورد امروز *

فکیف مرا - که در صدر مروت نشسته‌ام - و عقد
فتوت بسته - و ذکر انعام در افواه عوام افگنده!

कि दीगर बार इबलीस रा मुअल्लिमे मलायका चिरा कर्दन्द ?
पीरमर्दे ज़रीफ जहांदीदा बिशुनीद—बिख़न्दीद व गुफ्त—

मसनवी (बहरे खफीफ)

पादशाहे पिसर ब मकतब दाद।
लौहे सीमीनश् दर किनार निहाद।।
बर सरे लौहे ऊ नविश्ता ब ज़र।
जौरे उस्ताद बिह् ज़ि मिहरे पिदर।।

हिकायत—५

पारसा ज़ादाए रा निअमते बेकरां अज़ तर्कए अम्म ब दस्त उफ्ताद। फ़िस्क़ो फुजूर आग़ाज़ कर्द व मुबज़्ज़िरी पेश गिरिफ्त। फ़िल् जुमला न मान्द अज़ साइरे मआसी व मुनकिरी कि न कर्द व मुस्किरे कि न ख़ुर्द। बारे ब नसीहतश् गुफ्तम्—'ऐ फ़र्ज़न्द! दख़्ल आबे रवा रस्त—व ऐश आसियाये गर्दां—यानी ख़र्जे फ़रावान कर्दन् मुसल्लम कसे रा बाशद कि दख़्ले मुअय्यन दारद।

क़ता (बहरे हज़ज्)

चु दख़्लत नेस्त ख़र्ज आहिस्तातर कुन।
कि मीगोयन्द मल्लाहां सुरूदे।।
अगर बारां ब कोहिस्तां न बारद।
ब साले—दज्ला गिर्दद ख़ुश्करूदे।।

अक़्लो अदब पेशगीर व लह्वो लअब बिगुज़ार—चू निअमत सिपरी शवद—सख़्ती बुरी व पशेमानी ख़ुरी।' पिसर अज़ लज़्ज़ते नै ओ नोश ईं सुख़ुन दर गोश नयावुर्द व बर क़ौले मन् ऐतिराज़ कर्द—कि राहते आजिल ब मिह्नते आजिल मुनग्ग़स कर्दन् ख़िलाफ़े राये ख़िरदमन्दान'स्त।

मसनवी (बहरे हज़ज्)

ख़ुदावन्दाने कामो नेकबख़्ती।
चिरा सख़्ती कशन्द अज़ बीमे सख़्ती।।
बिरौ शादी कुन ऐ यारे दिल अफ़रोज़।
ग़मे फ़र्दा नशायद ख़ुर्द इमरोज़।।

फ़ कैफ़ मरा—कि दर सद्रे मुरव्वत निशस्ता अम् व अक़्दे फ़ुतुव्वत बस्ता व ज़िक्रे इनआम दर अफ़वाहे अवाम अफ़गन्दा।

और मैंने लाहौल कहा कि दूसरी बार शैतान को फरिश्तों का उपाध्याय क्यों किया? एक वृद्ध पुरुष ने जो अनुभवी और दुनिया देखे था यह सुना और हँसकर बोला—

मसनवी

एक राजा ने अपना बेटा पाठशाला में दिया।
चाँदी की पट्टी उसकी गोद में रखी॥
उस पट्टी के सिरे पर सोने से लिखवाया।
'उपाध्याय की मार पिता के दुलार से अच्छी है॥'

दिवौकसामुपाध्यायपदवी दैत्याय दीयते' इति वितर्कितं मया। तत्र कश्चिद् बहुश्रुतो वृद्धो मामेवं ब्रुवन्तं श्रुत्वा विहस्योवाच—

गाथा

कश्चिद् राजा स्वकं पुत्रं प्रददौ गुरुसन्निधौ।
राजतं लेखपट्टं च तस्य क्रोडे न्यधापयत्॥ १५॥
शीर्षके लेखपट्टस्यालिखद्धैमयाक्षरैः।
'ताडनं हि गुरोः श्रेयो लालनं न च पैतृकम्'॥ १६॥

कथा—५

एक साधु के पुत्र को चाचा की वसीयत से अपार धन प्राप्त हुआ। (उसने) दुराचार और दुर्व्यसन शुरू कर दिये और अपव्यय करने लगा। संक्षेप में, न बचा सारे पापों में से कोई पाप या निषिद्ध कर्म जो उसने न किया हो और न कोई नशा जो न खाया हो। एक बार उसके उपदेश के लिये मैंने कहा—'हे पुत्र! आय बहता हुआ पानी है और भोग घूमती चक्की है—अर्थात् उदारता से खर्च करना उसी आदमी का विहित है जो कि निश्चित आय रखता है।

आख्यायिकम्—५

कश्चित् साधुपुत्रः स्वस्य पितृव्यस्य रिक्थोत्तराधिकारयोगेणागणितं धनं प्राप। स दुराचारं दुर्व्यसनञ्चारेभेऽपव्ययञ्च। संक्षेपतो न चास्ति पापं न निषिद्धकर्म नानुष्ठितं वा न मदो न सेवित इति। एकदा तस्योपदेशायैतोऽहमवोचमयं—'हे पुत्र! आय आप इव प्रोतो, घरट्ट इव वै व्ययः—अर्थात् मुक्तहस्तव्ययस्तस्य यस्याय खलु निश्चितः॥४॥

कता

जब तुझे आय न हो तो खर्च धीरे कर।
क्योंकि कहा करते हैं मल्लाह एक गीत में॥
यदि वर्षा पहाड़ों पर न बरसे।
एक साल, तो दजला सूखा जाए॥

बुद्धि और अदब से काम ले और खेल और गिलन्दरपन छोड़—जब धन बीत जायेगा तो कष्ट उठायेगा और क्लेश पायेगा।'

छोकरे ने संगीत और शराब के मजे के कारण इस बात पर ध्यान नहीं दिया और मेरे कथन पर आपत्ति करने लगा कि वर्तमान सुख को भविष्यत् दुःख की कल्पना से गँदला करना बुद्धिमानों के मत के प्रतिकूल है।

पदम्

यद्यायत्ताधनं न स्यात् व्ययं कुरु शनैः शनैः।
यथा नौजीविनः प्रायो गायन्त्युक्तिं सुविश्रुताम्॥ १७॥
"वर्षं यावन्न चेद् वर्षेत् पर्वतेषु हि वारिदः।
आपगा दजला तर्हि शुष्कतां यास्यति ध्रुवम्॥ १८॥"

सद्बुद्धिं सद्वृत्तञ्चानुसर, क्रीडां क्रीडावृत्तिं च त्यज। यतो यदा धनं व्येष्यति, कष्टं लप्स्यसि क्लेशं च द्रक्ष्यसि।' असौ बालिशो बालः सङ्गीतसुरापिहितकर्णमार्गो न ममोपदेशमाकर्णितवान्, मम वाक्यमाक्षिपन् ब्रूते च—

लब्धं सुखमलब्धेन दुःखेन ग्लापितं किल।
नैतद् बुद्धिमतां पुंसां सम्मतं परिकीर्तितम्॥ ५॥

मसनवी

लब्ध काम और सौभाग्यशाली स्वामी लोग।
क्यों कष्ट पायें कष्ट के भय से॥
चल, सुखी मना ऐ प्रियमित्र!
कल का दुःख आज उठाना उचित नहीं है॥

मुझे तो और भी कम—क्योंकि मैं उदारता के मुख्य स्थान पर बैठा हूँ और परोपकार के लिये प्रतिज्ञाबद्ध हूँ और मेरे पुरस्कारों के जिक्र की लोगों में धूम मची है।

गाथा

प्रभवो लब्धकामाश्च सौभाग्येन समन्विताः।
अप्राप्तात् खलु सन्तापात् तापयेयुः कथं मुधा॥ १९॥
एहि, हन्त! सुहृन्मित्र! प्रसन्नः सुमना भव।
श्वस्तनादस्य सन्तापादद्य क्लेशो ह्यसाम्प्रतम्॥ २०॥

नैव पुनरापद्यते मयि—यतः औदार्यमुख्यस्थानमधिष्ठितोऽहं, प्रतिज्ञातश्च परोपकाराय दानप्रथितकीर्तिश्च लोकसामान्येष्विति।

مثنوی

هر که علم شد بسخا و کرم
بند نشاید که نهد بر درم *
نام نکوئی چو برون شد ز کوی
در نتوانی که ببندی بروی *

मसनवी (बहरे सरी)

हर कि अलम शुद ब सख़ा ओ करम।
बन्द न शायद कि निहद बर दिरम॥
नामे निकूई चु बेरूँ शुद ज़ि कूए।
दर न तवानी कि बबन्दी ब रूए॥

دیدم - که نصیحت نمی‌پذیرد و دم گرم من در آهن سرد او اثر نمیکند - ترک مناصحت گرفتم - و روی از مصاحبت او بگردانیدم - و قول حکمارا کار بستم - که گفته اند -

دीदम् कि नसीहत न मी पिज़ीरद व दमे गर्मे मन् दर आहने सर्दे ऊ असर न मी कुनद—तर्के मुनासिहत गिरिफ्तम्—व रूय अज़ मुसाहबते ऊ बिगर्दानीदम्—व कौले हुकमा रा कार बस्तम्—कि गुफ्ता अन्द—

بَلِّغْ مَا عَلَيْكَ - فَإِنْ لَمْ يَقْبَلُوا - فَمَا عَلَيْكَ *

'बल्लिग् मा अलैक—फ इल्लम् यक़्बलू—फ मा अलैक।'

قطعه

گرچه دانی که نشنوند - بگوی
هر چه دانی تو از نصیحت و پند *
زود باشد که خیره سر بینی
بدو پا اوفتاده اندر بند *
دست بر دست میزند - که - دریغ!
نشنیدم حدیث دانشمند!

क़ता (बहरे खफीफ)

गर चि दानी कि न शनवन्द बिगो।
हर चि दानी तु अज़ नसीहतो पन्द॥
ज़ूद बाशद कि ख़ीरासर बीनी।
ब दु पा ऊफ़्तादा अन्दर बन्द॥
दस्त बर दस्त मी ज़नद कि दिरेग़।
न शुनीदम् हदीसे दानिशमन्द॥

تا پس از مدتی آنچه از نکبت حالش می‌اندیشیدم - بصورت بدیدم - که پاره پاره میدوخت و لقمه لقمه می‌اندوخت * دلم ز ضعف حالش بهم برآمد - مروت ندیدم در چنین حالی ریش درویش‌را بملامت خراشیدن و نمک پاشیدن - با خود گفتم *

ता पस अज़ मुद्दते आँचि अज़ नक्बते हालश् मी अन्देशीदम्—ब सूरत बदीदम्—कि पारा पारा मी दोख़्त व लुक्मा लुक्मा मी अन्दोख़्त। दिलम् ज़ि ज़ौफ़े हालश् बहम बर आमद—मुरव्वत न दीदम् दर चुनी हाले रेशे दरवेश रा ब मलामत ख़राशीदन् व नमक पाशीदन्—बा ख़ुद गुफ़्तम्—

مثنوی

حریف سفله در پایان مستی
نه اندیشد ز روز تنگدستی *
درخت اندر بهاران بر فشاند
زمستان لا جرم بی‌برگ ماند *

मसनवी (बहरे हज़ज्)

हरीफ़े सिफ़ला दर पायाने मस्ती।
नै अन्देशद ज़ि रोज़े तंगदस्ती॥
दरख़्त अन्दर बहाराँ बर फ़शानद।
ज़मस्ताँ ला जरम बेबर्ग मानद॥

حکایت ٦

हिकायत—६

پادشاهی پسری با ادیبی داد و گفت - "این فرزند تست - تربیتش همچنان کن که یکی از فرزندان خویش" * گفت -

पादशाहे पिसरे ब अदीबे दाद व गुफ़्त—'ईं फ़र्ज़न्दे तुस्त—तरबियतश् हमचुनाँ कुन कि यके अज़ फ़र्ज़न्दाने ख़ेश।' गुफ़्त—

मसनवी

जो कि प्रसिद्ध हो जाय उदारता और दान के लिये।
उसे अपने दिरम पर रोक नहीं लगानी चाहिये॥
जब यश बाहर चला जाय महल्ले में।
तो तू किसी के मुँह पर द्वार बन्द नहीं कर सकता॥

गाथा

यश्चापि विश्रुतो गच्छेदौदार्ये दानकर्मणि।
अयुक्तं यदि बध्नीयात् निर्गमं दिरमस्य सः॥२१॥
यशो वीथीमतिक्रम्य दिगन्तं यदि व्याप्नुयात्।
न त्वं दत्तार्गलं द्वारं चार्थिभ्यो दातुमर्हसि॥२२॥

मैंने देखा कि वह मेरा उपदेश नहीं लेता और मेरी गर्म साँस उसके ठण्डे लोहे पर असर नहीं करती, मैंने उसे शिक्षा देना छोड दिया और उसकी संगति से मुँह मोड लिया। और पण्डितों की वाणी का अनुसरण किया जैसा कि कह गये हैं—'पहुँचा दे जो है तेरे पास, और यदि नहीं कबूल करें तो नहीं है तुझ पर।'

मयालोकितं नायं ममोपदेशं ग्रहीतुमर्हति न च मे तप्तोच्छ्वासस्तस्य हिमानद्धमायसं हृदयं प्रतापयितुं क्षमः। ततोऽहमेनं शास्तुमत्याक्षं, तस्य संगते पराङ्मुखश्च सञ्जातः। तथा च विदुषां वाक्यमन्वसरं यथाहुः—

शाधि यच्चापि जानासि यद् भद्रं यच्च सत्तमम्।
अथ चेत् ते न शृण्वन्ति न त्वं पापेन लिप्यसे॥६॥

कता

यद्यपि तू जानता है कि नहीं सुनेंगे (फिर भी) कह।
तू जो भी जानता हो शिक्षा और उपदेश॥
जल्दी ही होगा कि तू उन बुद्धिहीन को देखेगा।
दोनों पैरों से बँधा हुआ बन्दी घर में॥
हाथ से हाथ मलेगा कि हाय अफसोस।
मैंने नहीं सुना बुद्धिमानों का उपदेश॥

पदम्

शाधि यद्यपि जानीषे न शुश्रूषिष्यसे क्वचित्।
दृष्टान्तेनोपदेशो यच्चापि ज्ञायते त्वया॥२३॥
अचिरेण त्वमेनं च बुद्धिहीनं च द्रक्ष्यसि।
बद्धपादं निगडितं विपत्तिपतितं ध्रुवम्॥२४॥
हस्तं हस्तेन घर्षन्तं वदन्तं—'हन्त हन्त हा।
नाश्रौषं यत् समादिष्टं पण्डितैश्च बहुश्रुतैः'॥२५॥

उसके थोडे दिन पीछे मैं उसके जिस अवस्था विपर्यय से डरता था—उसे प्रत्यक्ष देख लिया कि थेगली पर थेगली सी रहा था और टुकडा टुकडा जमा कर रहा था। मेरा दिल उसकी दुरवस्था पर भर आया। मैंने धनहीन के घाव को फटकार से कुरेदना और नमक छिड़कना मनुष्यता न समझा। मैंने अपने आप से कहा—

किञ्चित् कालानन्तरं यस्मादवस्थाविपर्ययादभैषं तं प्रत्यक्षमपश्यम्। स स्यूतमप्यसेवीद् ग्रासं ग्रासमौञ्छच्चासिप्ट। मम हृदयं तस्य दुरवस्थां दृष्ट्वा करुणार्द्रं सञ्जातम्। अहं तस्य वीतवित्तस्य मर्मक्षतं भर्त्सनेनैदृश्यागवरवाया व्यथनं गृष्ठुं नागमि। स्वगतमवोचं च—

मसनवी

यह घोर नीच अपनी चरम मस्ती में।
नहीं डरता था विपत्ति के दिन में॥
वह पेड जो वसन्त में पत्ते झडाता रहता है।
जाडों में निःसन्देह पर्णहीन रह जाता है॥

गाथा

जघन्योऽसौ महानीचः सम्पत्तौ च मदात्यये।
नाचिचिन्तत् सुदुष्कालं प्रागेव यद्ध्यनागतम्॥२६॥
वसन्तकाले यो वृक्षः पर्णभारं च पातयेत्।
हेमन्ते चितपत्रश्चैवावश्यं स भविष्यति॥२७॥

कथा—६

एक राजा ने अपना पुत्र एक शिक्षक को सौंप कर कहा—'यह आपका ही पुत्र है—इसकी ऐसी शिक्षा कीजिये जैसी कि अपने पुत्रों

आख्यायितम्—६

कश्चिद् राजा स्वीयं पुत्रं कस्यचिदुपाध्यायस्य ददावुवाच च—'अयं पुत्र इदानीं तावकीनः, एनमेव शाधि यथा स्वकं पुत्रमिति।' स ब्रूते—

"فرمان بردارم"* سالی چند در پی او رنج برد و سعی کرد - بجائی نرسید - و پسران ادیب در فضل و بلاغت منتهی شدند * ملک دانشمندرا مؤاخذت کرد و معاتبت فرمود - که وعده خلاف کردی - و شرط وفا بجا نیاوردی * گفت - "بر رای عالم آرای خداوند روی زمین پوشیده نماند که تربیت یکسانست و لیکن طبائع مختلف" *

قطعه

گرچه سیم و زر ز سنگ آید همی
در همه سنگی نباشد زر و سیم *
بر همه عالم همی‌تابد سهیل
جائی انبان میکند - جائی ادیم *

حکایت ۷

یکی‌را شنیدم از پیران مربی که مریدی‌را میگفت - "ای پسر! چندانکه خاطر آدمی بر روزیست اگر بروزی‌ده بودی - بمقام از ملائکه در گذشتی" *

قطعه

فراموشت نکرد ایزد در آن حال
که بودی نطفهٔ مدفون و مدهوش *
روانت داد و عقل و طبع و ادراک
جمال و نطق و رای و فکرت و هوش -
ده انگشتت مرتب ساخت بر کف
دو بازویت مرتب کرد بر دوش *
کنون پنداری - ای ناچیز همت!
که خواهد کردنت روزی فراموش *

حکایت ۸

اعرابی‌را دیدم که پسررا میگفت - "یا بُنَیَّ! اِنَّكَ مَسْئُولٌ یَوْمَ الْقِیَامَةِ - ما ذَا اکْتَسَبْتَ؟ و لَا یُقَالُ - بِمَنِ انْتَسَبْتَ"؟ یعنی - ای پسر! ترا پرسند روز قیامت - که هنرت چیست؟ و نگویند - که پدرت کیست؟

'फ़रमाँ बर दारम्।' साले चन्द दर पये ऊ रंज बुर्द व सई कर्द—व जाये न रसीद—व पिसराने अदीब दर फ़ज़्लो बलाग़त मुन्तही शुदन्द। मलिक दानिशमन्द रा मुवाख़ज़त कर्द व मुआतबत फ़र्मूद—कि वादा ख़िलाफ़ कर्दी व शर्ते वफ़ा ब जा नयावुर्दी। गुफ़्त—'बर राये आलम आराय ख़ुदावन्दे रूये ज़मीन पोशीदा न मानद कि तरबियत यकसान'स्त व लेकिन तबाए मुख़्तलिफ़।'

कता (बहरे रमल-मुसद्दस)

गर्चे सीमो ज़र ज़ि संग आयद हमे।
दर हमा संगे न बाशद ज़र व सीम॥
बर हमा आलम हमी ताबद सुहैल।
जाये अम्बा मी कुनद—जाये अदीम॥

हिकायत—७

यके रा शुनीदम् अज़ पीराने मुरब्बी कि मुरीदे रा मी गुफ़्त—'ऐ पिसर! चन्दाँ कि ख़ातिरे आदमी बर रोज़ी'स्त अगर ब रोज़ीदिह बूदे—ब मुक़ाम—अज़ मलायका दर गुज़श्ते।'

कता (बहरे हज़ज)

फ़रामोशत न कर्द ऐज़द दराँ हाल।
कि बूदी नुत्फ़ाए मदफ़ूनो मदहोश॥
रवानत दादो अक़्लो तबअ ओ इदराक।
जमालो नुत्क़ो रायो फ़िक्रतो होश॥
दह अंगुश्तत मुरत्तब साख़्त बर कफ़।
दु बाज़ूयत मुरत्तब कर्द बर दोश॥
कुनूँ पिन्दारी—ऐ नाचीज़ हिम्मत।
कि ख़्वाहद कर्दनत रोज़ी फ़रामोश॥

हिकायत—८

ओराबी रा दीदम् कि पिसर रा मी गुफ़्त—'या बुनय्य! इन्नक मसऊलुन् यौम'ल् क़यामति मा ज़'क्तसब्त। व ला युक़ालु बिमनि'न्तसब्त?' यानी ऐ पिसर! तुरा पुर्सन्द रोज़े क़यामत—कि हुनरत चीस्त? व न गोयन्द कि पिदरत कीस्त?

की करते है।' वह बोला—'आज्ञा पालक हूँ।' कुछ वर्ष उस पर परिश्रम किया और यत्न किया पर कोई फल न हुआ—और शिक्षक के पुत्र विद्या और पाण्डित्य मे पारगत हो गये। राजा ने शिक्षक को ताडना दी और डाँटा कि—'तू ने प्रतिज्ञा भग की है और वफा की शर्त पूरी नही की।' उसने कहा—'विश्वभूषण पृथ्वीनाथ की बुद्धि से यह अविदित न होगा कि शिक्षा तो एक जैसी होती है परन्तु स्वभाव भिन्न भिन्न होते है।'

'यथाज्ञापयन्ति तथास्तु।' कतिचिद् वर्षाणि यावत् त महता परिश्रमेण चाध्यापयत् फलोदयो न जात। उपाध्यायस्य च पुत्रा विद्याया वैदुष्ये च पारङ्गता बभूवु। राजा तत शिक्षक भर्त्सयामास—'त्वया प्रतिज्ञाभङ्ग कृत, राजभक्तिश्च ग्लापिता।' सोऽवदत्—'हे जगदलकार! पृथ्वीनाथ! न त्वयाऽविदितोऽस्ति यत्—समान शास्ति वै शास्ता शिष्या भिन्नमधीयते॥ ७॥'

कता

यद्यपि चादी सोना पत्थर से मिलते है।
पर हर पत्थर मे सोना चाँदी नही होता॥
सारे ससार पर सुहैल नक्षत्र चमकता है।
कही वह अस्थान रखता है, कही अडीम॥

पदम्

अपि चेद् रजत स्वर्ण प्राप्येते नित्यमश्मन।
शैले शैले न वै लभ्य रौप्य वाऽथ हिरण्मयम्॥ २८॥
सुहैल नाम नक्षत्र कृत्स्न विश्व प्रकाशते।
क्वचित् साधारण चम विशेष कुरुते क्वचित्॥ २९॥

कथा—७

मैंने एक धर्माचार्य को अपने शिष्य से कहते सुना—'हे पुत्र! जितना कि लोगो का चित्त रोजी पर है, अगर राजी देने वाले पर होता तो स्थान में वे फरिश्तो से आगे बढ जाते।'

आख्यायितम्—७

अहमेकदा कश्चिद् धर्माचार्य शिष्यमनुयोगयन्तमश्रौषम्—'रे पुत्र! यावती हि पुसामासक्तिरुदरभरणे भवति तावती चेद् विश्वम्भरेऽभविष्यत्तर्हि महिम्नि स दिवौकसामप्यक्रमिष्यदिति।'

कता

विस्मृत तुझे नही किया प्रभु ने उस हाल में (भी)।
जब कि था बीज रूप में, दफन किया हुआ, अचेतन॥
उसने तुझे गति दी, बुद्धि, प्रकृति और स्वभाव दिया।
रूप, वाणी, विवेक, विचार और चेतना दी॥
तुझको दस उँगलियाँ बनाईं हाथ पर।
दो बाहें तुझको बनाईं कन्धे पर॥
क्या अब तू सोचता है, अकिञ्चन नाहक बातें।
कि वह तुझे रोजी देते समय भूल जायेगा॥

पदम्

प्रभुस्तस्यामवस्थाया न त्व विस्मृतवान् क्वचित्।
यदाऽऽसी बीजरूपेण निगुप्तश्चैव मूर्च्छित॥ ३०॥
जीवन स ददौ तुभ्य बुद्धि च प्रकृतीन्द्रिये।
रूप वाणी विवेक च विचार चेतना तथा॥ ३१॥
दशाङ्गुलीर्ददौ तुभ्य कराग्रे परमेश्वर।
द्वौ बाहू स ददौ तुभ्यमसमूलावलम्बिनौ॥ ३२॥
अथ किं शोचसीदानी निरारम्भ! नराधम!
जीविकासम्प्रदाने ते प्रभुस्त्वा विस्मरिष्यति॥ ३३॥

कथा—८

मैंने एक अरब को देखा जो कि अपने पुत्र से कह रहा था—'हे पुत्र! निश्चय तू पूछा जायगा प्रलय के दिन जो तू ने आचरण किया और नही कहा जायगा कि किस से तेरी उत्पत्ति है?' अर्थात् हे पुत्र! तुझको पूछेंगे प्रलय के दिन कि तेरा गुण क्या है? और नही पूछेंगे कि तेरा पिता कौन है?

आख्यायितम्—८

मया कश्चिदारब्य पुत्रमेव ब्रुवाणो दृष्ट—'हे पुत्र! प्रलयकाले त्व प्रष्टव्योऽसि यत्त्वयाऽनुष्ठित न च कस्ते प्रभव।' अर्थात् (प्रक्ष्यन्ति देवा परलोकमार्गे पुण्य कृत ते न च पितृवशम्।)

قطعه

جامهٔ کعبه‌را که می‌بوسند
او نه از کرم پیله نامی شد *
با عزیزی نشست روزی چند
لا جرم همچو او گرامی شد *

حکایت ۹

در تصانیف حکما آورده اند که کژدم‌را ولادت معهود نیست چنانکه سائر حیوانات‌را - بلکه احشای مادر بخورند - پس شکمش بدرند و راه صحرا گیرند - و آن پوستها که در خانهٔ کژدم بینند - اثر آنست * باری این نکته پیش بزرگی همی گفتم * گفت - ''دل من بر صدق این سخن گواهی میدهد - و جز چنین نتواند بود - چون در حالت خردی با مادر چنان معامله کرده اند - لاجرم در بزرگی نامقبول و نامحبوب اند'' *

قطعه

پسری‌را پدر نصیحت کرد
کای جوانمرد[1] یاد گیر این پند -
هر که با اهل خود وفا نکند
نشود دوست‌روی و دولتمند

مثل

کژدم‌را گفتند - ''چرا زمستان بدر نمی‌آئی''؟
گفت - ''بتابستانم چهٔ حرمتست که بزمستان بیرون آیم''؟

حکایت ۱۰

درویشی زنی حامله داشت - مدت حمل او سر آمد * درویش‌را همه عمر فرزند نیامده بود * گفت - ''اگر خدای تعالیٰ مرا پسری بخشد - جز این خرقهٔ که در بر دارم - هرچه در ملك منست ایثار درویشان کنم'' * اتفاقاً پسر آورد * درویش شادمانی کرد و سفرهٔ یاران بموجب شرط بنهاد * پس از چند سال - که از سفر شام باز آمدم - بمحلت آن دوست بگذشتم و چگونگی حالتش پرسیدم *

क़ता (बहरे खफ़ीफ़)

जामाए काबा रा कि मी बोसन्द।
ऊ नै अज़ किरमे पीला नामी शुद॥
बा अज़ीज़े निशस्त रोज़े चन्द।
ला जरम हम चु ऊ गिरामी शुद॥

हिकायत—९

दर तसानीफ़े हुकमा आवुर्दा अन्द कि कज़्दुम रा विलादते मअ़हूद नेस्त चुनांकि साइरे हैवानात रा—बल्कि अह्शाए मादर बिखुरन्द—पस शिकमश् बिदरन्द व राहे सहरा गीरन्द—व आँ पोस्तहा कि दर ख़ानाए कज़्दुम बीनन्द—असरे आन'स्त। बारे ईं नुक्ता पेशे बुज़ुर्गे हमी गुफ़्तम्—गुफ़्त—'दिले मन् बर सिद्क़े ईं सुख़ुन गवाही मी दिहद—व जुज़ चुनीं न तवानद बूद—चू दर हालते ख़ुर्दी बा मादर चुनाँ मुआमला कर्दा अन्द—ला जरम दर बुज़ुर्गी ना मक़्बूल व ना महबूब अन्द।'

क़ता (बहरे खफ़ीफ़)

पिसरे रा पिदर नसीहत कर्द।
कै जवां मर्द[1] याद गीर ईं पन्द॥
हर कि बा अह्ले ख़ुद वफ़ा न कुनद।
न शवद दोस्त रूयो दौलत मन्द॥

मस्ल

कज़्दुम रा गुफ़्तन्द—'चिरा ब ज़मस्तान् बदर न मी आयी?'
गुफ़्त—'ब ताबस्तानम् चि हुरमत'स्त कि ब ज़मस्तान् बेरूं आयम्।'

हिकायत—१०

दरवेशे ज़ने हामिला दाश्त—मुद्दते हम्ले ऊ बसर आमद। दरवेश रा हमा उम्र फ़र्ज़न्द नयामदा बूद। गुफ़्त—'अगर ख़ुदा तआ़ला मरा पिसरे बख़्शद—जुज़ ईं ख़िरक़ा कि दर बर दारम्—हरचि दर मिल्के मन'स्त ईसारे दरवेशां कुनम्।' इत्तिफ़ाक़न् पिसर आवुर्द। दरवेश शादमानी कर्द व सुफ़्राए यारान् ब मूजिबे शर्त बनिहाद। पस अज़ चन्द साल कि अज़ सफ़रे शाम बाज़ आमदम्—ब महल्लते आँ दोस्त बिगुज़श्तम् व चुगूनगीए हालतश् पुरसीदम्।

क़ता

काबा के पर्दे को जो कि चूमते हैं।
वह नहीं रेशम के पीले कीड़े के कारण प्रसिद्ध हुआ ॥
प्रिय की संगति में रहा कुछ दिन।
इसीलिये उसके समान गरिमा वाला हुआ ॥

पदम्

आच्छादनपट कावातीर्थस्य चुम्ब्यते जनैः।
नात्र कौशेयता हेतु कौशेयकृमिसम्भवा ॥ ३४ ॥
दिन कतिपय यावत् प्रियसगमुपागमत्।
गरिमाणं ततस्तद्वत् प्राप्तवत् सङ्गगौरवात् ॥ ३५ ॥

कथा—९

पण्डितों के ग्रन्थों में लिखा है कि बिच्छू का जन्म सामान्य रीति से नहीं होता—जैसा कि सारे प्राणियों का होता है—बल्कि वे माँ की कोख को खा जाते हैं—तब उसका पेट फाड़ देते हैं और मरुभूमि की ओर चल देते हैं। और वे छिलके जो कि बिच्छू के बिल में दिखते हैं उसी के प्रभाव से हैं। एक बार यह समस्या मैंने एक बड़े आदमी के सामने कही—वह बोला—'मेरा दिल इस बात की सचाई की साक्षी देता है, और इसके अलावा कुछ नहीं हो सकता, जब बचपन की हालत में माँ के साथ ऐसा व्यवहार करते हैं (तभी)—बेटा बड़े होने पर अस्वीकार्य और अप्रिय हो जाते हैं।'

आख्यायितम्—९

पण्डितानां ग्रन्थेषु ग्रथितमथ वृश्चिकस्य प्रसवः साधारणरीत्या न भवति, यथा च भवति जीवसामान्यस्येति। प्रत्युत वृश्चिका मातुरुदरं भक्षयन्ति तच्च विदीर्य मरुभूमिमभिगच्छन्ति। यानि च त्वगस्थीनि वृश्चिकाबिलेषु दृश्यन्ते तानि तस्मादेव कारणादिति। एकदा मयेदं लोकभणितं कस्मिंश्चिज् ज्यायसि निवेदितम्। स आह—'ममापि चेतोऽस्यावितथ्यं समर्थयते। न च किञ्चिदतोऽन्यथा भवितुमर्हति। यतस्ते शैशवावस्थायां मातरं प्रति एवं व्यवहरन्ति तत एव यौवने खलु तया विप्रियाणि भवन्तीति।'

क़ता

एक पुत्र को पिता ने शिक्षा दी।
कि हे पुत्र! याद रखना यह उपदेश ॥
वह जो कि अपनों से वफ़ा नहीं करता।
नहीं होता मित्रवान् और धनवान् ॥

पदम्

औरस जनकः कश्चिच्छशासैतैर्महाक्षरैः।
युवन्नेन समादेशमभीक्ष्णमवधारये ॥ ३६ ॥
यश्चापि स्वजनैः सुष्ठु व्यवहारं न चाचरेत्।
न तस्यास्तु सुहृल्लाभो धनलाभो न वा क्वचित् ॥ ३७ ॥

मस्ल

बिच्छू से लोगों ने पूछा—'तू जाड़े में बाहर क्यों नहीं निकलता?' कहने लगा—'गर्मियों में ही (मेरी) कौनसी इज्ज़त होती है कि जाड़ों में बाहर निकलूँ।'

दृष्टान्तम्

कश्चिद् वृश्चिकं पुमान् पप्रच्छ—'कथं त्वं शीततौ बहिर्नायासि?' स ब्रूते—'ग्रीष्मर्तौ मम को मानो बहिरेमि यतो हिमे' ॥ ८ ॥

कथा—१०

एक फ़क़ीर की स्त्री गर्भवती थी, उसकी गर्भ की अवधि पूरी हो चुकी थी। फ़कीर के सारी उम्र बेटा नहीं हुआ था। उसने कहा—'यदि भगवान् मुझे बेटा दे तो सिवा इस गुदड़ी के जो कि मैं पहने हुए हूँ—जो कुछ मेरे अधिकार में है फ़कीरों को बाँट दूँगा।' संयोग से बेटा हो गया। फ़कीर ने खुशी मनाई और मित्रों की ज्योनार प्रतिज्ञा के अनुसार की। कुछ वर्षों के पश्चात् जब कि मैं शाम देश की यात्रा से लौटा—उस मित्र के मुहल्ले से गुजरा उसके

आख्यायितम्—१०

कस्यचिद् भिक्षाजीविनो भार्या गर्भवती बभूव। सा आसन्नप्रसवा जाता। भिक्षुर्यावज्जीवमपुत्र आसीत्। स उवाच—'यदि परमात्मा मह्यं पुत्रं दद्यात्तर्हि परिहितकन्थावर्जं सर्वस्वं भिक्षुकेभ्यो दास्यामि।' दैवयोगेन पुत्रो जातः। भिक्षुकः प्रहृष्टमना भूत्वा मित्राणि चाहूय भोजं व्यवसितवान्। कतिचिद् वर्षानन्तरं यदाहं शामदेशात् परावृत्तस्तस्य मित्रस्य वीथिमार्गात् सन्निकृष्टस्तस्य सुखप्रश्नं तत्राप्राक्षम्। लोका अब्रुवन्—'नगराध्यक्षस्य कारायां बद्धोऽस्ति।'

گفتند - "دربندان شحنه درست" * گفتم - "سبب چیست"؟ گفتند - "پسرش خمر خورده است و عربده کرده و خون کسی ریخته و از شهر گریخته - پدررا بعلت آن سلسله در نای ست و بند بر پای" * گفتم - "این بلارا او بحاجت از خدا خواسته است *

قطعه

زنان باردار - ای مرد هشیار!
اگر وقت ولادت مار زایند *
از آن بهتر بنزدیك خردمند
که فرزندان ناهموار زایند *

حکایت ۱۱

طفل بودم که بزرگی‌را پرسیدم از بلوغ * گفت - "در کتب مسطورست که بلاغت سه نشان دارد - یکی پانزده سالگی - دوم احتلام - سیوم بر آمدن موی زهار - اما در حقیقت یك نشان دارد - که در بند رضای حق جل و علا بیش از آن باشی که در بند نفس خویش - و هر آنکه درو این صفت موجود نیست - نزد محققان بالغ نیست" *

قطعه

بصورت آدمی شد قطرهٔ آب
که چل روزش قرار اندر رحم ماند *
وگر چل‌ساله‌را عقل و ادب نیست
بتحقیقش نباید آدمی خواند *

ایضاً

جوانمردی و لطف و آدمیت
همین نقش هیولانی مپندار *
هنر باید که صورت میتوان کرد
بایوانها در از شنگرف و زنگار *
چو انسان‌را نباشد فضل و احسان
چه فرق از آدمی تا نقش دیوار؟
بدست آوردن دنیا هنر نیست
یکی‌را - گر توانی - دل بدست آر *

गुफ़्तन्द—'व ज़िन्दाने शहना दर'स्त।' गुफ़्तम्—'सबब चीस्त ?' गुफ़्तन्द—'पिसरश् ख़म्र ख़ुर्दा अस्त व अरबदा कर्दा व ख़ूने कसे रेख़्ता व अज़ शहर गुरेख़्ता—पिदर रा व इल्लते आँ सिलसिला दर नाय'स्त व बन्द बर पाय।' गुफ़्तम्—'ईं बला रा ऊ व हाजत अज़ ख़ुदा ख़्वास्ता अस्त।'

क़ता (बहरे हज़ज्)

ज़नाने बारदार—ऐ मर्दे हुशियार।
अगर वक़्ते विलादत मार ज़ायन्द॥
अज़ाँ बहतर ब नज़दीके ख़िरदमन्द।
कि फ़र्ज़न्दाने नाहमवार ज़ायन्द॥

हिकायत—११

तिफ़्ल बूदम्—कि बुज़ुर्गे रा पुरसीदम् अज़ बुलूग़। गुफ़्त—'दर कुतुब मस्तूर'स्त कि बलाग़त सिह निशान दारद। यके—पाँज़दह सालगी। दोयम्-ऐहतिलाम। सियुम्-बर आमदन् मूये ज़िहार। अम्मा दर हक़ीक़त यक निशान दारद—कि दर बन्दे रिज़ाय हक़ जल्लो अला बेश अज़ाँ बाशी कि दर बन्दे नफ़्से ख़ेश—व हर आँकि दरू ईं सिफ़त मौजूद नेस्त—नज़्दे मुहक़्क़िक़ाँ बालिग़ नेस्त।'

क़ता (बहरे हज़ज्)

ब सूरत आदमी शुद क़तरए आब।
कि चिल् रोज़श् क़रार अन्दर रहिम मांद॥
वगर चिल साल रा अक़्लो अदब नेस्त।
ब तहक़ीक़श् न बायद आदमी ख़्वांद॥

ऐज़न (बहरे हज़ज्)

जवाँ मर्दी व लुत्फ़ो आदमीयत।
हमी नक़्शे हयूलानी मपिन्दार॥
हुनर बायद कि सूरत मीतवाँ कर्द।
ब ऐवाँहा दर अज़ शिंगरफ़ व ज़ंगार॥
चु इन्साँ रा न बाशद फ़ज़्लो ऐहसान।
चि फ़र्क़ अज़ आदमी ता नक़्शे दीवार॥
ब दस्त आवुर्दने दुनिया हुनर नेस्त।
यके रा गर तवानी—दिल ब दस्त आर॥

हाल के बारे में पूछताछ की। लोगों ने बताया—'कोतवाल की जेल में बंद है।' मैंने पूछा—'क्या कारण है?' कहने लगे—'उसके पुत्र ने शराब पी और उपद्रव किया और एक आदमी का खून बहाया और शहर से भाग गया। बाप के, इसी कारण से, जंजीर गले में है और बेड़ी पैर में।' मैंने कहा—'इस विपत्ति को उसने आकांक्षापूर्वक परमात्मा से प्रार्थना की थी।'

कता

गर्भवती स्त्रियाँ—हे चतुर मनुष्य!
यदि प्रसव काल में साँप जनें॥
तो यह अच्छा होगा बुद्धिमान् के निकट।
कि अयोग्य पुत्र पैदा हो॥

कथा—११

मैं बालक था—एक बड़े आदमी से मैंने वयस्कता के विषय में पूछा—उसने कहा—'पुस्तकों में लिखा है कि वयस्कता के तीन लक्षण होते हैं। पहला—पन्द्रह वर्ष का होना, दूसरा—स्वप्नदोष होने लगना, तीसरा—गुप्तांगों पर बाल आना। किन्तु वास्तव में एक लक्षण होता है—कि अपनी कामना के आधीन होने की अपेक्षा प्रभु की इच्छा के अधिक आधीन हुआ जाय—और जो भी इस गुण में वर्तमान नहीं है—वह विवेकियों के निकट वयस्क नहीं है।'

कता

पुरुषाकार हो जाता है वीर्य का बिन्दु।
जब कि वह चालीस दिन गर्भ में रह जाता है॥
और यदि चालीस वर्ष वाले को बुद्धि और शिष्टता न हो।
तो उसे वास्तव में आदमी नहीं कहना चाहिये॥

ऐज़न

मर्दानगी, उदारता और मानवता।
इन्हें पार्थिव गुण मत जान॥
(जरासा) हुनर ही तो चाहिये कि चित्र बन जाता है।
महल की दीवारों पर हिंगुल और जंगार से॥
जब आदमी में न हो उदारता और कृतज्ञता।
तो क्या फर्क है मनुष्य से, भित्ति चित्र में॥
संसार (के भोगों) को उपलब्ध करने में कोई हुनर नहीं है।
किसी का अगर कर सके तो दिल वश में कर॥

अहमवोचम्—'कस्मात् कारणात्?' लोका अब्रुवन्—'तस्य पुत्रेण मद्य पीत, उपप्लुत च कृतम्, जनश्चैको हत। ततोऽसौ नगराच्च पलायित। अनेनैव हेतुना पितुर्गले शृङ्खलाऽस्ति पादयोश्च मेखलेति।' अहमवोचम्—'परमेश स साकाक्ष ययाचे विपद स्वयम्।'

पदम्

गर्भभारालसा नार्य पुत्रसन्दर्शनोत्सुका।
प्राप्ते प्रसवकाले चेज्जनयेयुर्भुजङ्गमान्॥ ३८॥
एतद् वरतर प्राहुस्तावन्मतिमता मतौ।
न चापत्यान्ययोग्यानि जनितानि कदाचन॥ ३९॥

आख्यायितम्—११

एकदा बाल्यावस्थाया मया कश्चिज्ज्यायान् पृष्टोऽथ—'का नाम वयस्कता?' सोऽवदत्—

'अथ ग्रन्थेषु निर्दिष्टस्त्रिलिङ्गो यौवनागम॥ ९॥
आदौ षोडशवर्षत्व स्वप्नपातस्तथापर।
वदने चैव गुप्ताङ्गे रोमराज्युद्गमस्तथा॥ १०॥'

किन्तु, वस्तुतो वयस्कताया एकमेव लिङ्गमस्ति, तच्च यथा—

'प्रभोराज्ञावशीभूतो यश्चैव वर्तते पुमान्।
न चात्मकामनाधीनो जनो स स युवायते॥ ११॥'
अतोऽन्यथाऽवयस्कत्व मन्यन्ते प्राज्ञसत्तमा।

पदम्

बिन्दुगर्भस्थित वीर्यं पुरुषाकारमाप्नुयात्।
यद्येतत् तिष्ठतात् कुक्षौ चत्वारिंशन्मित दिनम्॥ ४०॥
चत्वारिंशत् समा यावद् विद्याबुद्धिविवर्जित।
जनस्तु वस्तुतो नून पुसज्ञा नैव चार्हति॥ ४१॥

अपरञ्च

पुरुषोचितशूरत्वमौदार्यं मानवीयता।
मा जीगणद् गुणानेतान् सामान्यानथ पार्थिवान्॥ ४२॥
कलाकौशलयोगेन चित्रीकर्तुं नराकृतिम्।
हर्म्यभित्तिषु तुत्थेन हिङ्गुलेन समन्तत॥ ४३॥
पुरुषे यदि नो भूयादौदार्यं च कृतज्ञता।
भित्तिचित्रात् ततस्तस्मिन् मनुष्ये का विशेषता॥ ४४॥
भोगान् सासारिकाँल्लब्धु न च काचिद् विशेषता।
कस्याप्येकस्य हृदय लभेथा यदि शक्नुया॥ ४५॥

حکایت ۱۲

سالی نزاعی در میان پیادگان حجاج افتاده بود ـ و داعی هم در آن سفر پیاده بود * از بی‌انصافی در سر و روی یکدیگر افتادیم ـ و داد فسوق و جدال بدادیم * کجاوه نشینی‌را شنیدم که با عدیل خود میگفت ـ ''یا العجب کاری! که پیادگان عاج ـ چون عرصهٔ شطرنج بسر همی‌برند ـ فرزین می‌شوند ـ یعنی ـ بهتر از آن میگردند که بودند ـ و پیادگان حاج بادیه بسر بردند و بتر شدند *

قطعه

از من بگوی حاجی مردم گزای‌را
کو پوستین خلق بآزار می‌درد *
حاجی تو نیستی ـ شترست ـ از برای آنکه
بیچاره خار میخورد و بار می‌برد *

حکایت ۱۳

مردی‌را چشم درد خاست * پیش بیطاری رفت ـ که مرا دوا کن * بیطار از آنچه در چشم چهارپایان میکرد در دیدهٔ او کشید ـ کور شد * حکومت بر داور بردند * گفت ـ ''برو هیچ تاوان نیست ـ اگر این خر نبودی ـ پیش بیطار نرفتی'' * مقصود ازین سخن آنست ـ تا بدانی که هر که نا آزموده‌را کار بزرگ می‌فرماید ـ ندامت برد و بنزدیک خردمندان بخفت عقل منسوب گردد *

قطعه

ندهد هوشمند روشن‌رای
با فرومایه کارهای خطیر *
بوریا باف گرچه بافنده است
نبرندش بکارگاه حریر *

حکایت ۱۴

یکی از بزرگان ائمه‌را پسری وفات یافت * پرسیدندش ـ ''که بر صندوق گورش چه نویسیم''؟ گفت ـ ''آیات کتاب مجیدرا عزت و شرف بیش از آنست که روا باشد بر

हिकायत—१२

साले निज़ाए दर मियाने पियादगाने हुज्जाज उफ़तादा बूद—व दाओ हम दराँ सफर पियादा बूद। अज़ बेइन्साफ़ी दर सरो रूये यक दीगर उफ़तादेम्—व दादे फ़ुसूक़ व जिदाल विदादेम्। कजावा नशीने रा शुनीदम् कि वा अदीले खुद मीगुफ्त—'यु'ल अजब कारे! कि पियादगाने आज चू अरसाए शतरंज बसर हमी बुरन्द—फ़र्ज़ी मीशवन्द—यानी वहतर अज़ाँ मीगदन्द कि बूदन्द—व पियादगाने हाज वादिया बसर बुर्दन्द व बदतर शुदन्द।'

क़ता (वहरे मुज़ारी)

अज़ मन् वगोय हाजिये मदमगिज़ाय रा।
कू पोस्तीने ख़ल्क़ व आज़ार मी दरद॥
हाजी तो नेस्ती—शुतुर'स्त अज़ बराये आँकि।
वेचारा ख़ार मी ख़ुरदो बार मी बुरद॥

हिकायत—१३

मर्दे रा चश्म दर्द ख़ास्त। पेशे वैतारे रफ्त कि मरा दवा कुन। वैतार अज़ आँचि दर चश्मे चहारपायान् मी कद दर दीदाए ऊ कशीद—कूर शुद। हुकूमत वरे दावर बुदन्द। गुफ्त—'वरू हेच तावान नेस्त—अगर ईं ख़र न बूदे—पेशे वैतार न रफ्ते।' मक़सूद अज़ी सुख़ुन आन'स्त—ता वदानी कि हर कि नाआज़मूदाए रा कारे बुज़ुर्ग मी फ़रमायद—नदामत बुरद व व नज़दीके ख़िरदमन्दान् व ख़िफ़्फ़ते अक़्ल मन्सूब गदद।

क़ता (वहरे ख़फ़ीफ़)

न दिहद होशमन्द रौशनराय।
वा फ़रोमाया कारहाय ख़तीर॥
वारिया वाफ़ गर्चे वाफ़न्दा'स्त।
न बुरन्दश् व कारगाहे हरीर॥

हिकायत—१४

यके अज़ बुज़ुर्गाने अइम्मा रा पिसरे वफ़ात याफ्त। पुर्सीदन्दश्—'कि वर सन्दूक़े गोरश् चि नवीसेम्?' गुफ्त—'आयाते किताबे मजीद रा इज़्ज़तो शरफ बेश अज़ आन'स्त कि रवा बाशद वर

कथा—१२

एक साल एक झगडा हज के यात्रियो में हो पडा। यह लेखक भी उन यात्रा में पैदल यात्री था। अन्यायपूर्वक हम एक दूसरे के मुंह और सिर पर झपट पडे और डटकर लडे। मैंने एक ऊँट के कजावे पर बैठे हुए को कहते सुना जो कि वह अपने सहारोही से कह रहा था—'अजीब बात है! कि हाथी दाँत के पियादे जब शतरंज की यात्रा पूरी कर लेते हैं तो फर्ज़ीन् बन जाते हैं अर्थात् उससे ज्यादा अच्छे हो जाते हैं कि जितने होते हैं और हाज के पियादे जब रेगिस्तान को पार कर लेते हैं तो ज्यादा बुरे हो जाते हैं।'

आख्यायितम्—१२

एकदा हजतीर्थयात्रिकेषु कलहो जात। अहमपि तस्या यात्राया पदयात्रिक आसम्। अनीतिप्रेरिता वयमन्योऽन्यस्य मुख च मूर्धानमतीतडाम दुर्धर्षतया चायुत्स्महि। मया कश्चिदुष्ट्रासनमासीन सहासीनमेव ब्रुवाण श्रुत—'अहो महदाश्चर्यम्! गजदन्तमयाश्चतुरङ्गपदातिका यदोत्तीर्णक्षेत्रास्तदा महीयास प्रपद्यन्तेऽर्थात् पूर्वापेक्षया श्रेयासो जायन्ते, तथा च हजपदातयो यदोत्तीर्णकान्तारा सम्पद्यन्ते तर्हि कुत्सिततरा भवन्तीति।'

क़ता

मेरी ओर से कह दे नृशस हाजी से।
जो कि लोगों के कपडे कलह में फाड देता है॥
तू हाजी नही है—ऊँट (हाजी) है क्योंकि।
बेचारा काँटे खाता है और बोझा ढोता है॥

पद्यम्

वाच्यो मद् वचनाद् हाजी नृशसस्तीर्थयात्रिक।
कलहोपक्रमे यश्च दृणीयात् परवाससम्॥४६॥
'न त्व तीर्थी' त्वसौ वाच्य, 'तीर्थी किल क्रमेलक।
यश्च कण्टकमश्नीयाद् भार चैव वहेत्सदा'॥४७॥

कथा—१३

एक आदमी की आँख में दर्द उठा। वह एक पशु चिकित्सक के पास गया कि मेरी दवा कर। पशु चिकित्सक ने उस में से, जो कि वह जानवरो की आँखों में डालता था उनकी आँख में डाल दिया। (रोगी) अधा हो गया। लोग न्यायाधीश के सामने मामला ले गये। उसने कहा—'उस पर कोई दण्ड नही होगा। यदि यह गधा न होता तो पशुचिकित्सक के पास न जाता।' यह कहने का अभिप्राय यह है ताकि तू समझ ले कि जो कोई अपरीक्षित को बडा काम सौंपता है—वह शर्म उठाता है और बुद्धिमानो के निकट नासमझ सिद्ध होता है।

आख्यायितम्—१३

कस्यचिज्जनस्य चक्षुष्पीडा जाता। स कञ्चित् पशुभिषज मगादय—'कुरुतान्मे क्रियाक्रमम्।' पशुभिषग् यदौषध पशूनामक्ष्णो प्रयुङ्क्ते तदस्याक्ष्णोराश्च्योतितवान्। अतश्चक्षुर्भ्या स अन्धो जात। लोका न्यायाधीश न्यवेदयन्। स उवाच—'न भिषग्दण्डमर्हति। नाभविष्यत् खरश्चेष नैष्यत् पशुचिकित्सकम्॥१२॥'

अनेनायमभिप्रायो निदृश्यतेऽय यथा जानीया यदपरीक्षितेषु यो गुरुकार्यभार ददाति, स लज्जास्पदो भवति, बुद्धिमतामग्रे च बालिशो भाति।

कता

नही सौंपता समझदार प्रतिभाशाली व्यक्ति।
नीच को महत्वपूर्ण काय।
चटाई बुनने वाला भी यद्यपि बुनने वाला है।
पर लोग उसे रेशम के कारखाने में नही ले जाते॥

पदम्

न ददाति कदाचिद्धि पण्डित प्रतिभानवान्।
कार्यभार महत्त्वस्य कदाचिन्नीचजन्तुने॥४८॥
कटवायोऽपि कर्तैव वयनस्य तु कर्मण।
न त नयन्ते कौशेयकर्मागारे कदाचन॥४९॥

कथा—१४

एक वृद्ध धर्मगुरु का पुत्र मर गया। लोगों ने उससे पूछा—'कि इसकी समाधि पर क्या लिखवायें?' उसने कहा—'कुरान के पद उससे अधिक सम्मान के पात्र हैं कि ऐसी जगहो पर लिखने के

आख्यायितम्—१४

कस्यचिद् वृद्धधर्माचार्यस्य युवा पुत्रो मृत। लोकास्त पप्रच्छु-'स्त्वकिमस्य समाधिशिलाया लिखाम?' स उवाच—'कुरानवाक्यानि खलु तत श्रेयासि यदेवविधेषु स्थानेषु लिख्यन्ते, यत

چنین جایها نوشتی که بروزگاری سوده گردد و خلائق برو بگذرند و سگان برو نشاشند ـ و اگر بضرورت چیزی همی‌نویسند ـ این دو بیت کفایتست،» *

चुनीं जायहा नविश्तन् कि ब रोज़गारे सूदा गरदद व ख़लायक़ बरू गुज़रन्द व सगाँ बर ऊ न शाशन्द—व अगर ब ज़रूरत चीज़े हमी नवीसन्द—ईं दु बैत किफ़ायत'स्त।'

قطعه

آه! هرگاه سبزه در بستان
بدمیدی ـ چه خوش شدی دل من!
بگذر ـ ای دوست! تا بوقت بهار
سبزه بینی دمیده بر گل من *

क़ता (बहरे ख़फ़ीफ़)

आह! हरगाह सब्ज़ा दर बुस्तान।
बदमीदे चि ख़ुश शुदे दिले मन्॥
बिगुज़र ऐ दोस्त! ता ब वक़्ते बहार।
सब्ज़ा बीनी दमीदा बर गिले मन्॥

حکایت ۱۵

پارسائی بر یکی از خداوندان نعمت گذر کرد که بنده‌را دست و پای بسته بود و عقوبت همی‌کرد * گفت ـ «ای پسر! همچو تو مخلوق‌را خدای عز و جل اسیر حکم تو گردانیده‌است ـ و ترا بر وی فضیلت داده ـ شکر نعمت باری تعالی بجا آر ـ و چندین جفا بر وی روا مدار ـ که فردا به از تو باشد و شرمساری بری» *

हिकायत—१५

पारसाये बर यके अज़ ख़ुदावन्दाने निअमत गुज़र कर्द कि बन्दाये रा दस्तो पाय बस्ता बूद व उक़ूबत हमीकर्द। गुफ़्त—'ऐ पिसर! हमचु तो मख़लूक़े रा ख़ुदा अज़्ज़ व जल्ल असीरे हुक्मे तो गर्दानीदा'स्त—व तुरा बर वै फ़ज़ीलत दादा—शुक्रे निअमते बारे तआला बजा आर—व चन्दीं जफ़ा बर वै रवा मदार—कि फ़र्दा बिह् अज़ तो बाशद व शर्मसारी बुरी।'

مثنوی

بر بنده مگیر خشم بسیار
جورش مکن و دلش میازار!
او را تو بده درم خریدی
آخر نه بقدرت آفریدی *
این حکم و غرور و خشم تا چند؟
هست از تو بزرگتر خداوند *
ای خواجهٔ ارسلان و آغوش!
فرمان‌ده خود مکن فراموش!

मसनवी (बहरे हज़ज्-मुसद्दस)

बर बन्दा मगीर ख़िश्मे बिस्यार।
जौरश् मकुन् व दिलश् मयाज़ार॥
ऊरा तो ब दह् दिरम ख़रीदी।
आख़िर नै ब क़ुदरत आफ़रीदी॥
ईं हुक्मो ग़ुरूरो ख़िश्म ता चन्द।
हस्त अज़ तो बुज़ुर्गतर ख़ुदावन्द॥
ऐ ख़्वाजाए अरसलानो आग़ोश।
फ़रमाँ दिहे ख़ुद मकुन फ़रामोश॥

در خبرست از خواجهٔ عالم و سرور بنی آدم (صلی الله علیه و سلم!) که گفت ـ «بزرگتر حسرتی در روز قیامت آن بود ـ که بندهٔ صالح‌را بهشت برند و خداوند فاسق‌را بدوزخ» *

दर ख़बर स्त अज़ ख़्वाजाए आलम व सरवरे बनी आदम (सल्ल'ल्लाहु अलैहि व सल्लम्) कि गुफ़्त—'बुज़ुर्गतर हसरते दर रोज़े क़यामत आँ बुवद कि बन्दाए सालिह रा ब बिहिश्त बुरन्द व ख़ुदावन्दे फ़ासिक़रा ब दोज़ख़।'

योग्य होते हैं। क्योंकि ये दिनो के साथ धुंधला जाते हैं और लोग उन पर से आते जाते रहते हैं और कुत्ते उन पर मूतते रहते हैं। और यदि कोई चीज लिखना जरूरी हो तो ये दो श्लोक काफी हैं।'

कता

आह! (यदि) हर समय हरियाली उपवन में।
रहती (तो) कितना खुश होता मेरा मन॥
जाओ हे मित्र वसन्त काल के रहते।
ताकि तुझे हरियाली ही दिखे मेरी मिट्टी पर॥

कथा—१५

एक महात्मा एक सम्पन्न व्यक्ति के पास से गुजरा जिसने कि अपने दास के हाथ पैर बाँध रखे थे और दण्ड दे रहा था। महात्मा ने कहा—'हे पुत्र! तेरे ही जैसे प्राणी को परमेश्वर ने तेरी आज्ञा का वशवर्ती कर रखा है और तुझको उस पर प्रधानता दी गयी है। परमात्मा का धन्यवाद कर और ऐसा अत्याचार उस पर मत कर कि कल को यह तुझसे अच्छा हो तो तुझे लज्जा उठानी पड़े।'

मसनवी

दास पर अत्यन्त क्रोध मत कर।
उस पर बल प्रयोग मत कर और उसका चित्त मत दुखा॥
उसको तूने दस दिरम में खरीदा है।
आखिर, तूने उसे अपनी शक्ति से बनाया तो नहीं॥
यह प्रभुता, गर्व और क्रोध कब तक?
तुझ से बड़ा परमात्मा मौजूद है॥
अरे अर्सलान और आगोश के स्वामी।
अपने स्वामी को मत भूल॥

इस्लाम की परम्परा में उल्लेख आता है कि लोकनायक तथा मानव वंश के प्रधान मुहम्मद मुस्तफा (उन पर प्रभु की कृपा हो) ने कहा था—'सबसे बड़ी दुःख की बात, प्रलय के दिन यह होगी कि ईश्वर-भक्त गुलाम को स्वर्ग ले जायेंगे और पापी स्वामी को नरक में।'

दिनानुदिन धूमायन्तेऽक्षराणि, पद्भ्यां पस्पृश्यन्ते लोका, गोमूत्र्यन्ते च कुक्कुरा। यदि किञ्चिदवश्य लेखनीय स्यात् तर्हि कृतमाभ्यां पदाभ्यामिति।'

पदम्

आरामे सर्वदा हन्त! ह्यस्यास्यच्चेद्धरीतिमा।
कियान् प्रसन्नचित्तोऽहमजनिष्यञ्च सर्वदा॥५०॥
याहि मित्र! वसन्तस्य यावन्नात्येति चावधि।
यावदत्रानुपश्येस्त्वं मन्मृत्स्ना वीरुधोपिताम्॥५१॥

आख्यायितम्—१५

कश्चिन्महात्मा कस्यचिद् धनाढ्यस्य सकाशात् सक्रान्तो यश्च स्वस्य दासस्य हस्तपादौ निगड्य त दण्डयन्नास्ते स्म। महात्माऽब्रवीत्—'हे पुत्र! त्वद्विधस्य जीवस्येशस्त्वं वशवृत्त परमात्मना, त्वा च ततो विशिनष्टीति। परमात्मनः कृपाया कृतज्ञो भव, मा तयात्याचारमनुष्ठा यच्छ्वोऽसौ त्वत्तो गरीयान् स्यात्, त्व च लज्जास्पदस्तथा।'

गाथा

सेवके तु स्वकीयेऽस्मिन् मा भू क्रोधेन विह्वल।
माऽत्याचारमगुम्फिरत्व चित्तरय व्यथन कृथा॥५२॥
दशमुद्राप्रदानेन त्वमेन क्रीतवानसि।
न चैन चात्मसामर्थ्यात्त्वमुत्पादितवानसि॥५३॥
प्रभुत्व गौरव चैतद् यावत्कतिदिन तव।
त्वत्तो ज्यायान् हि विद्येत परमात्मा जगत्पति॥५४॥
अहो दासपते! ख्वाजा! आगोशस्यासलानयो।
न त्व स्वामिनमात्मान विस्मारयितुमर्हसि॥५५॥

इस्लामधर्मस्य परम्पराया निर्दिश्यतेऽयं लोकनायक, मानववंशमुख्यश्च (स्वस्त्यस्तु तस्मै सदा) मुहम्मद मुस्तफः कदाऽब्रवीत्—

'अय गुरुतर क्लेश प्रालेये भविता दिने।
धर्मी दासो व्रजेत् स्वर्गं पापीशो निरय तथा॥१३॥'

قطعه

بر غلامی که طوق خدمت تست
خشم بی‌حد مران و طیره مگیر *
که فضیحت بود بروز شمار
بنده آزاد و خواجه در زنجیر *

حکایت ۱۶

سالی از بلخ با شامیانم سفر بود و راه از حرامیان پر خطر * جوانی بدرقه همراه ما شد - سپرباز و چرخ انداز - سلحشور - بیش‌زور - که ده مرد توانا کمان اورا زه نکردندی - زور آوران روی زمین پشت او بر زمین نیاوردندی - ولیکن متنعم بود و سایه پرورده - نه جهان دیده و سفر کرده - رعد کوس دلاوران بگوش او نرسیده - و برق شمشیر سواران بچشم ندیده *

بیت

نیفتاده در دست دشمن اسیر
بگردش نباریده باران تیر *

اتفاقاً من و آن جوان هر دو در پی هم دوان - هر دیوار قدیمش که پیش آمدی بقوت بازو بیفگندی - و هر درخت عظیم که دیدی بزور پنجه بر کندی - و تفاخر کنان گفتی -

بیت

پیل کو؟ تا کتف و بازوی گردان بیند
شیر کو؟ تا کف و سر پنجهٔ مردان بیند *

ما درین حالت که دو هندو از پس سنگی سر بر آوردند و قصد قتال ما کردند * بدست یکی چوبی - و در بغل دیگری کلوخ کوبی * جوانرا گفتم - "اکنون چه پائی؟

بیت

بیار آنچه داری ز مردی و زور
که دشمن بپای خود آمد بگور" *

تیر و کمان دیدم از دست جوان افتاده و لرزه بر استخوان *

क़ता (बहरे खफ़ीफ़)

बर गुलामे कि तौक़े खिदमते तुस्त।
खिश्मे वेहद मरां व तीरा मगीर।।
कि फ़ज़ीहत बुवद ब रोज़े शुमार।
बन्दा आज़ाद ओ ख्वाजा दर ज़ंजीर।।

हिकायत—१६

साले अज़ बल्ख़ बा शामीयानम् सफ़र बूद व राह अज़ हरामियान् पुर खतर। जवाने ब बद्रका हमराहे मा शुद—नेज़ाबाज़ व चर्ख़ अन्दाज़—सिल्हशोर—बेशज़ोर—कि दह मर्दे तवाना कमाने ऊरा ज़िह न कर्दन्दे—ज़ोरावराने रूए ज़मीन पुश्ते ऊ बर ज़मीन नयावुर्दन्दे—वलेकिन मुतनइम बूद व साया पर्वरदा—नै जहाँ दीदा व सफ़र कर्दा—रादे कोसे दिलावरान् ब गोशे ऊ न रसीदा—व बर्क़े शमशीरे सवारान् ब चश्मे न दीदा।

बैत (बहरे मुतक़ारिब)

नयुफ़्तादा दर दस्ते दुश्मन असीर।
ब गिर्दश् न बारीदा बाराने तीर।।

इत्तिफ़ाक़न् मन् व आँ जवान हर दु दर पये हम दवान्—हर दीवारे क़दीमश् कि पेश आमदे ब कुव्वते बाज़ू बियफ़्गन्दे—व हर दरख़्ते अज़ीम कि दीदे ब ज़ोरे पंजा बर कन्दे—व तफ़ाख़ुर कुनाँ गुफ़्ते—

बैत (बहरे रमल)

पील कू ता कतफ़ो बाज़ुए गुर्दां बीनद।
शेर कू ता कफ़ो सर पंजाए मर्दां बीनद।।

मा दरीं हालत कि दू हिन्दू अज़ पसे सगे सर बर आवुर्दन्द व क़स्दे क़िताले मा कर्दन्द। ब दस्ते यके चोबे—व दर बग़्ले दीगरे कलूख़ कोबे। जवाँ रा गुफ़्तम्—'अकनूं चि पायी?'

बैत (बहरे मुतक़ारिब)

बियार आँचि दारी ज़ि मर्दी ओ ज़ोर।
कि दुश्मन ब पाये ख़ुद आमद ब गोर।।

तीरो कमाँ दीदम् अज़ दस्ते जवाँ उफ़्तादा व लरज़ा बर उस्तुख़्वान्।

कता

उस दास पर जो कि तेरी सेवा में नियुक्त है।
अत्यन्त क्रोध मत कर और लज्जित मत हो॥
कि तेरी फज़ीहत हो गणना के दिन।
दास स्वतन्त्र हो और स्वामी जंजीर में बँधा हो॥

कथा—१६

एक साल मैं वल्ख से शामवासियों के साथ यात्रा कर रहा था और मार्ग डाकुओं के कारण संकटापन्न था। एक नवयुवक रक्षक के रूप में हमारे साथ था। वह भालाबाज, चक्र फेंकने में पटु, शस्त्र सज्जित और इतना अधिक बली कि दस पुरुष भी उसकी प्रत्यंचा नहीं चढ़ा सकते थे। पृथ्वी का कोई भी पहलवान उसकी पीठ जमीन पर नहीं टिका सकता था। किन्तु वह सम्पन्न था और छाया में पला था। न उसने दुनिया देखी थी और न यात्रा की थी। योद्धाओं का भेरी निर्घोष उसके कान में नहीं गया था और न घुड़सवारों की तलवारों की बिजली उसकी आँखों में कौंधी थी।

बैत

नहीं पड़ा दुश्मन के हाथों में बंदी।
उसके चारों ओर नहीं बरसी बाणवृष्टि॥

संयोग से, मैं और वह नवयुवक दोनों पैदल पैदल आगे आगे दौड़ रहे थे। जो भी पुरानी दीवार उसके सामने आती उसे वह अपने भुजबल से गिरा देता। और जो भी बड़ा पेड़ वह देखता, अपने पंजों के बल से उखाड़ लेता और डींग मारता हुआ रहता—

बैत

वह हाथी कहाँ है जो शूर वीरों के कन्धों और भुजाओं का बल देखे।
वह शेर कहाँ है जो मर्दों के हाथ और पंजे देखे॥

हम इसी हालत में थे कि दो हिन्दुओं (पठान डाकुओं) ने पत्थरों के पीछे से सिर निकाला और हमें मारने का उपक्रम किया एक के हाथ में लट्ठ था और दूसरे की बगल में गोफन। मैंने जवान से कहा—'अब क्या खड़ा है?'

बैत

ला, जो भी तू रखता है पौरुष और बल।
कि शत्रु स्वयं पैरों चल कर अपनी मृत्यु तक आया है॥

धनुष और बाण, मैंने देखा कि, जवान के हाथ से गिर पड़े और उसकी हड्डियों पर कम्प चढ़ा था।

पदम्

प्रेष्यस्ते यश्च सेवायां त्वदीयायां समुद्यतः।
मा तस्मै कुपितो भूस्त्वं मा स्म लज्जा विडम्बितः॥ ५६॥
अनर्थो गणनाकाले प्रालेये भविता यदि।
दासः स्वातन्त्र्यमापन्नः स्वामी निगडितस्तथा॥ ५७॥

आख्यायितम्—१६

एकदाऽहं वाह्लीकात् शामीयैः सार्धं पर्यटन्नासम्। पन्थास्तत्र दस्युसङ्घातः। कश्चिद् युवाऽस्माकं रक्षितृभावेन सहयात्रिक आसीत्। स शक्तिप्रक्षेपपटुः, शरसन्धाननिपुणः, शस्त्रसज्जितः, बलदुर्मदः, दशपुभिरप्यनधिरूढं चापं दधानः न च पृथ्वीतलवासिनो मल्लास्तस्य पृष्ठं क्षमास्पृष्टं कर्तुमशक्नुवन्। परन्तु स समृद्धो गेहे च सुखैधित आसीत्, न च दृष्टसंसारः, न च कृताध्वा, न च श्रुतिनिष्पीतयुद्धभेरीनिनादः, न चाश्वारूढानां चञ्चदसिविद्युल्लताविलासिताक्ष इति।

श्लोक

न जातु शत्रुभिर्वद्धः कारागारेऽपतत् पुरा।
न चैनं परितो युद्धे ह्यभवच्छरवर्षणम्॥ ५८॥

दैवयोगादावां पद्भ्यामग्रेऽग्रे धावन्तावास्व। यां चापि प्राचीनां भित्तिस्तमभितस्तस्थौ तां स दोर्बलेन पातयति स्म। यञ्चापि विशालवृक्षं स पश्यति तं भुजबलेनोत्पाटयति विकत्थनं च कुर्वाणो ब्रूते—

श्लोक

क्व तत्र गजराजो यः प्रपश्येन्माम दोर्बलम्।
क्व स सिंहोऽस्ति यः पश्येद् वीराणां हस्तयोर्बलम्॥ ५६॥

आवामेतादृश्यामवस्थायामास्व, तदैव द्वौ दस्यू शिलाया ऊर्ध्वं दर्शितमूर्धानौ नौ हन्तुमुपक्रमिष्टाम्। तत्रैको दण्डधरोऽन्यश्च कुक्षिनिहितगोफण आसीत्। मया युवाऽभिहितः—'किमिदानीं स्थीयते?'

श्लोक

पौरुषं च बलं यच्च दधासि तदिहानय।
कालेन प्रेरितः शत्रुः स्वयमेव त्विहागतः॥ ६०॥

सशरं धनुर्यून कराद् विसृष्टं, वेपमानान्यस्थीनि चास्य जातानि।

بیت

به هر که موی شکافد ز تیر جوشن خای
بروز حملهٔ جنگ‌آوران ندارد پای *

چاره جز این ندیدیم که رخت و سلاح و جامه رها کردیم - و جان سلامت بدر آوردیم *

قطعه

بکارهای گران مرد کار دیده فرست
که شیر شرزه در آرد بزیر خم کمند *
جوان - اگرچه قوی‌بال و پیلتن باشد
بجنگ دشمنش از هول بگسلد پیوند *
نبرد پیش مصاف آزموده معلومست
چنانکه مسئله شرع پیش دانشمند *

حکایت ۱۷

توانگر زاده‌را دیدم - بر سر گور پدر نشسته بود و با درویش بچه مناظره در پیوسته - که صندوق تربت پدرم سنگیست - و کتابهٔ رنگین - و فرش رخام انداخته و خشت فیروزه بکار برده - بگور پدرت چه ماند؟ خشتی دو فراهم آورده - و مشتی خاك بر آن پاشیده * درویش پسر بشنید و گفت - ''تا پدرت از زیر آن سنگ گران بر خود بجنبد - پدرم به بهشت رسیده باشد'' *

بیت

خر که بر وی نهند کمتر بار
بره آسوده‌تر کند رفتار *

و در خبرست - که مَوْتُ الْفُقَرَاءِ رَاحَةٌ * درویش چیزی ندارد که بحسرت بگذارد *

قطعه

مرد درویش - که بار ستم فاقه کشید
بدر مرگ همانا که سبکبار آید *

वैत (वहरे मुज्तश्)

ै हर कि मूग शिगाफद जि तीरे जोशा साय।
व रोजे हमलाए जगावरा विदारद पाय॥

चारा जुज़ ईं न दीदैम् कि रख़्तो सिलाहो जामा रिहा करदैम् व जान व सलामत वदर आवुर्दैम्।

क़ता (वहरे मुज्तश्)

व कार हाये गिराँ मर्दे कार दीदा फ़िरिस्त।
कि शेरे शर्ज़ा दर आरद व ज़ेरे ख़म्मे कमन्द॥
जवाँ अगर्चे क़वीवालो पीलतन वाशद।
व जगे दुश्मनश् अज़ होल विगुस्लद पैवन्द॥
नवद पेशे मुसाफ आज़मूदा मालूम'स्त।
चुनाँकि मसअला शरअ पेशे दानिशमन्द॥

हिकायत—१७

तवागर जादाए रा दीदम्—वर सरे गोरे पिदर निशस्ता वूद व वा दरवेश वचाए मनाज़रा दर पैवस्ता—कि सन्दूक़े तुरवते पिदरम् सगीन स्त—व किताबाए रगीन व फर्शे रुख़ाम अन्दाख़्ता व ख़िश्ते फीरोज़ा वकार वुर्दा—व गोरे पिदरत चि मानद? ख़िश्ते दू फ़राहम आवुर्दा—व मुश्ते ख़ाक वर आँ पाशीदा। दरवेश पिसार विशुनीद व गुफ्त—'ता पिदरत अज़ ज़ेरे आँ सगे गिराँ वर ख़ुद विजुम्वद—पिदरम् व विहिश्त रसीदा वाशद।'

वैत (वहरे खफीफ)

ख़र कि वर वै निहन्द कमतर वार।
व रह आसूदातर कुनद रफ़्तार॥

व दर ख़बरस्त—कि मौतु'ल् फ़ुक़राय राहतुन्। दरवेश चीज़े न दारद कि व हसरत विगुज़ारद।

क़ता (वहरे रमल)

मर्दे दरवेश कि वारे सितमे फ़ाक़ा कशीद।
व दरे मर्ग हमाना कि सुबुक वार आयद॥

बैत

जरूरी नहीं कि जो बाल को चीर दे कवच फोड तीर से।
वह योद्धाओं के आक्रमण के दिन पैरों पर खडा रह जाय॥

हमने इस के सिवा चारा न देखा कि सारा सामान और शस्त्र और कपडे उतार दें और जान बचा लाएँ।

श्लोक

वर्मभेदक्षमैर्बाणैश्छिदन्नपि शिरोरुहम्।
सम्प्राप्ते युद्धकाले तु विरलो हि युधिष्ठिर॥ ६१॥

नातोऽन्यथावामुपायमदर्शावाय समस्त सम्भार शस्त्रभार वासासि च विहाय प्राणान् रक्षेवेति।

क़ता

बडे कामो के लिये अनुभवी आदमी भेज।
जो कि भयकर शेर को भी अपने रस्से के फन्दे में ले आयेगा॥
नौजवान भले ही मोटे कन्धो और हाथी की देह वाला हो।
दुश्मन के साथ लडाई में डर के मारे उसके जोड ढीले हो जाते हैं॥
सग्राम, युद्ध देखे हुए को, अपने सामने ऐसा मालूम होता है।
जैसे धर्मव्यवस्था, पण्डित को अपने सामने॥

पदम्

गुरुताप्लुतकार्येषु योजयेत् पुरुष पटुम्।
दामवद्ध समानीयाद् यो हि सिंह भयकरम्॥ ६२॥
व्यूढस्कन्ध सुपुष्टोऽपि युवा चेद् गजसन्निभ।
सग्रामे स्याद् भयादेष छिन्नास्थिसन्धिबधन॥ ६३॥
समर समराभ्यस्तजनायैव प्रतीयते।
धर्माधिकरण यद् वद् धर्माचार्य समीहते॥ ६४॥

कथा—१७

मैंने एक साहूकार के बेटे को देखा, अपने बाप की क़ब्र के सिरहाने बैठा था और एक फ़कीर के बेटे से बहस कर रहा था—'कि मेरे बाप की समाधि पत्थर की है, और उसका शिलालेख रगीन है, और फ़र्श सग मर्मर का और उसकी ईंटें फ़ीरोज़े के जैसी हैं। तेरे बाप की क़ब्र में क्या रखा है? दो ईंटें जुटा ली है और उन पर मुट्ठी भर धूल छिडक दी है।' फ़कीर के बेटे ने सुना और कहा—'जब तक तेरा बाप इस भारी पत्थर के नीचे से स्वय हिलेगा डुलेगा—तब तक मेरा बाप स्वर्ग पहुँच चुकेगा।'

आख्यायितम्—१७

मया कश्चिद् धनिकपुत्र स्वस्य पितु समाधि निकषासीनो दृष्ट, केनचिन्निर्धनस्य पुत्रेण सार्ध विवदमानोऽथ—'मम तातस्य समाधिस्तावद् दृषद्वती, विविधवर्णाच्छटोऽस्या शिलालेख, स्फटिकमयोऽस्यास्तलपट, इष्टिकाश्चास्या रक्तमणिसन्निभा। किं तत्रास्ति तावत् तव पितु समाधौ? द्विवा इष्टिका समानीता, मुष्टिमात्रमस्या उपरिष्टाद् धूलिर्निक्षिप्तेति।' निर्धनपुत्र एतच्छ्रुत्वाऽऽह—'यावत् ते तातोऽस्माद् ग्रावागुरुभारात् स्पन्दते, तावन्मे तात स्वर्गे लोके प्रविष्टो भवितेति।'

बैत

वह गधा कि जिस पर रखते हैं थोडा बोझ।
राह में सुगमतर यात्रा करता है॥

और इस्लाम की परम्परा में आता है कि निधन की मृत्यु सुगमतर होती है। निर्धन के पास कोई चीज़ नही होती कि जिसे छोडने में हसरत हो।

श्लोक

स्तोक भार दधत् पृष्ठे भारवाही हि य खर।
मार्गे सुगमगत्या सोऽध्वान यापयति ध्रुवम्॥ ६५॥

यथा हीस्लामपरम्परायाम्—

मरण धनहीनस्य सर्वतो हि सुखावहम्।
न च किञ्चन तस्यास्ति हातु यद्दुःखमश्नुते॥ १४॥

क़ता

वह फकीर जो लघन के कष्ट का भार उठाता है।
मृत्यु के द्वार पर भी हलके भार का होता है॥

पदम्

लघनस्य तु कष्टानि भिक्षुको यस्तितिक्षते।
यमद्वारे स्थित प्रेत्य स्वल्पभार स तिष्ठति॥ ६६॥

و آنکه در دولت و در نعمت و آسانی زیست
مردنش زین همه شك نیست - که دشوار آید *
همه حال اسیری که ز بندی برهد
خوشترش دان ز امیری که گرفتار آید *

حکایت ۱۸

بزرگی‌را پرسیدم از معنی این حدیث - که - أَعْدَى عَدُوِّكَ نَفْسُكَ الَّتِي بَيْنَ جَنْبَيْكَ * گفت - ''بحکم آنکه هر آن دشمن که با وی احسان کنی دوست گردد - مگر نفس - که چندان که مدارا بیش کنی مخالفت زیاده کند *

قطعه

فرشته‌خوی شود آدمی بکم‌خوردن
و گر خورد چو بهائم - بیوفتد چو جماد *
مراد هر که بر آری مطیع امر تو گشت
خلاف نفس - که گردن کشد چو یافت مراد *

حکایت ۱۹

مناظرهٔ سعدی با مدعی در بیان
توانگری و درویشی

یکی‌را دیدم در صورت درویشان - نه بر سیرت ایشان - در محفلی نشسته و شنعتی در پیوسته - و دفتر شکایت باز کرده - و مذمت توانگران آغاز نهاده - و سخن بدینجا رسانیده - که درویشان‌را دست قدرت بسته‌است و توانگران‌را پای ارادت شکسته *

بیت

کریمان‌را بدست اندر درم نیست
خداوندان نعمت‌را کرم نیست *

مرا که پروردهٔ نعمت بزرگانم این سخن سخت آمد * گفتم - ''ای یار! توانگران دخل مسکینانند - و ذخیره گوشه‌نشینان - و مقصد زائران - و کهف مسافران -

वाँकि दर दौलतो दर निअमतो आसानी ज़ीस्त।
मुर्दनश् ज़ीं हमा शक नेस्त कि दुश्वार आयद॥
व हमा हाल असीरे कि ज़ि बन्दी बिरिहद।
ख़ुशतरश् दाँ ज़ि अमीरे कि गिरिफ्तार आयद॥

हिकायत—१८

बुज़ुर्गे रा पुर्सीदम् अज़ माना ईं हदीस—कि 'आदा उदुव्विक नफ़्सुक'ल्लति बैन जम्बैक।' गुफ्त—'व हुक्मे आँकि हर आँ दुश्मन कि बा वै अह्सान कुनी दोस्त गर्दद—मगर नफ़्स कि चन्दाँ कि मुदारा बेश कुनी मुख़ालफ़त ज़ियादा कुनद।'

क़ता (बहरे मुज्तश्)

फ़रिश्ता ख़ूय शवद आदमी व कम ख़ुर्दन्।
वगर ख़ुरद चु बहायम् बियूफ़्तद चु जमाद॥
मुराद हर कि बर आरी मुतीए अम्रे तु गश्त।
ख़िलाफ़े नफ़्स—कि गर्दन कशद चु याफ़्त मुराद॥

हिकायत—१९

मनाज़िरए सादी बा मुद्दई दर बयाने
तवांगरी व दरवेशी

यके रा दीदम् दर सूरते दरवेशान् नै बर सीरते ऐशान्—दर महफ़िले निशस्ता व शुनअते दर पैवस्ता—व दफ़्तरे शिकायत बाज़ कर्दा व मज़म्मते तवांगरान् आगाज़ निहादा व सुख़ुन बदीं जा रसानीदा कि दरवेशाँ रा दस्ते क़ुदरत बस्ता अस्त व तवांगराँ रा पाये इरादत शिकस्ता।

बैत (बहरे हज़ज्)

करीमाँ रा ब दस्त अन्दर दिरम नेस्त।
ख़ुदावन्दाने निअमत रा करम नेस्त॥

मरा कि परवर्दाए निअमते बुज़ुर्गानम् ईं सुख़ुन सख़्त आमद। गुफ़्तम्—'ऐ यार! तवांगरान् दख़्ले मिस्कीनानन्द—व ज़ख़ीराये गोशा नशीनाँ—व मक़्सदे ज़ाइराँ—व कह्फ़े मुसाफ़िराँ—

और जो सम्पन्नता, वैभव और सुखी जीवन मे रहता है।
उसका मरना, इस में शक नही कि मुश्किल होता है॥
प्रत्येक हाल में, वह वन्दी जो कारा से मुक्त हो रहा है।
उसे उस अमीर से प्रसन्नतर समझ जो कि कैद में लाया जाता है॥

कथा—१८

एक वडे आदमी से मैंने इस हदीस का अथ पूछा—'तेरा घोरतम शत्रु, तेरा मन है, वह जो कि तेरे दोनो पहलुओ के वीच में है।' वह वोला—'यह इसलिये कि हर वह शत्रु कि जिस पर तू उपकार करे, मित्र वन जाता है। गियाग गा गे कि जितनी तू गज्जाता अधिक करे वह अधिक विरोध करता है।'

क़ता

दैवी गुण युक्त हो जाता है आदमी कम खाने से।
और यदि खाता है पशु की तरह तो पत्थर की तरह पडा रहता है॥
जिस किसी की कामना तू पूरी करता है वह तेरा वशवर्त्ती हो जाता है।
मन के सिवा—जो कि और सरकश हो जाता है जव कि अपना काम्य
पा जाता है॥

कथा—१९

सादी का झगडा विरोधी के साथ सम्पन्नता और दरिद्रता के विषय में

मैंने एक आदमी को देखा जो साधुओ के वेश मे था, आचार मे नही। सभा में वैठकर वह कलह कर रहा था और शिकायतो का दफ्तर खोल रखा था, और धनिकों की भर्त्सना कर रहा था और वात यहाँ तक पहुँची कि गरीवो की सामर्थ्य के हाथ वँधे हुए है और धनियो की (दान की) प्रवृत्ति की टाँग टूटी हुई है।

वैत

उदारो के हाथ में दिरम नही होते।
सम्पन्नो में उदारता नही होती॥

मुझ को, जो कि वडे आदमियो की कृपा से पला हूँ यह वात कडी लगी। मैंने कहा—'हे मित्र! सम्पन्न लोग दरिद्रो की आय के निमित्त हैं, और एकान्तवासियो के लिये कोष स्वरूप हैं, यात्रियो के ध्येय हैं और पथिको के शरण स्थल हैं और दूसरो की राहत के लिये

विभवेषु च भोगेषु निर्विघ्न यस्य जीवितम्।
तस्य चैतान् परित्यज्य मृत्यु कष्टतर परम्॥ ६७॥
वन्दी सर्वास्ववस्थासु वन्धनाद्य प्रमुच्यते।
श्रेयास धनिनो विद्धि वन्धन यश्च नीयते॥ ६८॥

आख्यायितम्—१८

कञ्चिज्ज्यायासमहमप्रच्छम्–'कोऽभिप्रायोऽस्य शास्त्रवाक्यस्याथ–"मनस्ते कुक्षिमध्यस्थ वर्तते ते महान् रिपु"।'
सोऽवदत्—'तदनेन हेतुनाऽथ—

उपकारकृत शत्रुर्मित्रत्व समुपैति हि।
परन्तु लालित चित्त ततोऽपि विपथ व्रजेत्॥ १५॥'

पदम्

दैवीयगुणसम्पत्ति याति ना सूक्ष्मभोजनात्।
पशुवद् यदि भुञ्जीत ग्रावावत् स्यात्स निश्चल॥ ६९॥
लब्धकाम दधीया य स ते याति वशवद।
लब्धकामस्य चित्तस्य भूय एव प्रतीपता॥ ७०॥

आख्यायितम्—१९

सादिनो विरोधिना सार्धं सम्पन्नत्वे दरिद्रत्वे च शास्त्रार्थ

मया कश्चित् साधुर्दृष्टो मुनिवेश दधानो न चैतेषा गुणलेशम्। सभाया स कलह कुर्वन्नास्ते। आक्षेपजाल तन्वश्चासौ धनिकानवभर्त्सत। अन्ततो गत्वा सोऽब्रवीदथ—

दीनाना पाणिसामर्थ्यं नि स्वत्वाच्छृखलायितम्।
दा न वृ त्ति र्ध ना ढ्या ना मु रु भ ग प रि मल वा॥ १६॥

श्लोक

प्रायेण धनहीना स्युरुदाराश्च महाशया।
आढ्याश्च धनसम्पन्ना औदार्येण विवर्जिता॥ ७१॥

अह पुनर्महाजनाना कृपैधित इद वाक्य क्रूर मत्वाऽवोचमथ—'हे मित्र! धनाढ्या खलु निधनानामायनिमित्ता, पुञ्जस्वरूपा हि सन्यासिनाम्, ध्येयास्तु पथिकानाम्, शरण्या हि यात्रिकाणा, परेषा

و متحمل بار گران از بهر راحت دیگران * دست طعام آنگه برند که متعلقان و زیردستان بخورند - و فضله مکارم ایشان بارامل و ایتام و پیران و اقارب و جیران برسد *

व मुतहम्मिले बारे गरां—अज़ बहरे राहते दीगरां। दस्त व तआम आनगह बुरन्द कि मुतअल्लिक़ान् व ज़ेरदस्तान् बिखुरन्द—व फुज़लाए मकारिमे ऐशान् ब अरामिल व ऐताम व पीरान् व अक़ारिब व जीरान् बिरसद।'

نظم

توانگرانرا وقفست و نذر و مهمانی
زکوٰة و فطره و اعتاق و هدی و قربانی *
تو کی بدولت ایشان رسی - که نتوانی
جز این دو رکعت؟ و آن هم بصد پریشانی *

नज़्म (बहरे मुज्तस्)

तवांगरान् रा वक़्फ़'स्तो नज़्रो महमानी।
ज़कातो फ़ितरा ओ ऐताक़ो हदीओ क़ुरबानी॥
तु के ब दौलते ऐशां रसी कि न तवानी।
जुज़ीं दु रकअतो आं हम ब सद परेशानी॥

اگر قدرت جودست و اگر قوت سجود - توانگرانرا به میسر میشود - که مال مزکی دارند و جامه پاك و عرض مصون و دل فارغ - و قوت طاعت در لقمهٔ لطیفست - و صحت عبادت در کسوت نظیف * پیداست - از معدهٔ خالی چه قوت آید؟ و از دست تهی چه مروت زاید؟ و از پای بسته چه سیر آید؟ و از دست گرسنه چه خیر؟

'अगर क़ुदरते जूद'स्त व अगर क़ुव्वते सुजूद—तवांगरां रा बिह मुयस्सर मी शवद—कि माले मुज़क्का दारन्द व जामाए पाक व अर्ज़े मसऊन व दिले फ़ारिग़—व क़ुव्वते ताअत दर लुक़माए लतीफ़'स्त—व सिह्हते इबादत दर किस्वते नज़ीफ़। पैदा'स्त—अज़ मैदाए ख़ाली चि क़ुव्वत आयद? व अज़ दस्ते तिही चि मुरव्वत ज़ायद? व अज़ पाये बस्ता चि सैर आयद? व अज़ दस्ते गुरुस्ना चि ख़ैर?'

قطعه

شب پراگنده خسپد آنکه پدید
نبود وجه بامدادانش *
مور گرد آورد بتابستان
تا فراغت بود زمستانش *

क़ता (बहरे ख़फ़ीफ़)

शब परागन्दा ख़ुस्पद आं कि पिदीद।
न बुवद वज्हे बामदादानश्॥
मोर गिर्द आवरद ब ताबिस्तां।
ता फ़राग़त बुवद ज़मिस्तानश्॥

فراغت با فاقه نمی‌پیوندد - و جمعیت با تنگدستی صورت نه بندد * یکی تحریمهٔ عشا بسته - و دیگری منتظر عشا نشسته - این بدان کی ماند؟

'फ़राग़त बा फ़ाक़ा न मी पैवन्दद—व जमइय्यत बा तंग दस्ती सूरत नै बन्दद। यके तहरीमाए इशा बस्ता—व दीगरे मुन्तज़िरे इशा निशस्ता—ईं बदां कै मानद?'

بیت

خداوند مکنت بحق مشتغل
پراگنده روزی پراگنده دل *

बैत (बहरे मुतक़ारिब)

ख़ुदावन्दे मुकनत ब हक़ मुश्तग़िल।
परागन्दा रोज़ी परागन्दा दिल॥

پس عبادت ایشان بقبول اولیتر - که جمعند و حاضر - نه پریشان و پراگنده‌خاطر - اسباب معیشت ساخته و باوراد

पस इबादते ऐशान् ब क़बूल औलातर—कि जमअ'न्द व हाज़िर—नै परेशानो परागन्दा ख़ातिर—असबाबे मईशत साख़्ता व ब औराद

भारी बोझ उठाने वाले हैं। (वे) हाथ, भोजन की ओर तब ले जाते हैं जब कि उनके सम्बन्धी और सेवक खा चुकते हैं, और उनके दान का अतिरिक्त भाग विधवाओं, अनाथों, वृद्धों, सबंधियों और पड़ोसियों को पहुँचता है।'

हिताय च वोढारो गुरुभाराणाम्, भुक्तवत्स्वेव सम्बन्धि-सेवकेषु नाहारं भुञ्जते, तेषां दानभाजो भवन्ति विधवा, अनाथा, वृद्धा सम्बन्धिन, अन्तिकाश्चेति।'

नज़्म

धनियों को (करणीय) यही वक्फ़ है, कहीं नज़्र, कहीं मिहमानी।
यही ज़कात, यही फ़ितरा, यही ऐताक़, यही हदिया, यही कुर्बानी॥
तू कैसे उनकी समता करेगा जो कि कुछ नहीं कर सकता।
सिवा दो पदों के पाठ के और वह भी सौ परेशानी के साथ॥

प्रबन्ध

आढ्यानां नित्यकर्तव्यं दानमातिथ्यप्राभृतम्।
दायो दासविनिर्मोक्षो दक्षिणा विकरा बलि ॥ ७२ ॥
कथमेषां धनेशानां तुलनां कर्तुमर्हसि।
यस्य नित्यक्रिया चापि शतविघ्नोपबाधिता ॥ ७३ ॥

चाहे उदारता की सामर्थ्य हो, चाहे उपासना की क्षमता, वह धनियों के लिये ही सम्भव है जो सापूत धन रखते हैं और पवित्र वस्त्र, सुरक्षित प्रतिष्ठा, और निश्चिन्त चित्त रखते हैं—और उपासना की सामर्थ्य पवित्र भोजन में निहित है और शुद्ध प्रार्थना पवित्र वस्त्रों में। स्पष्ट है कि खाली पेट से क्या सामर्थ्य आ सकती है और खाली हाथ से क्या प्रेम उत्पन्न होगा? बँधे पैर से क्या सैर होगी और भूखे के हाथ से क्या कल्याण होगा?

भवत्वौदार्यसामर्थ्यं भवतु वोपासनाक्षमत्वं, तत् खलु धनिकजनानुकूलमेव। ते तु दानपूतं धनं दधते, वासांसि च पवित्राणि, प्रतिष्ठा च यत्नरक्षिता चित्तं च चिन्तामुक्तमिति। उपासना हि शुद्धान्ननिहिता, शुद्धप्रार्थना च शुचिवस्त्रविहितेति।

अत स्पष्टमथ—

किं बलं रिक्तकोष्ठस्य रिक्तहस्तस्य का रति।
का गतिर्बद्धपादस्य क्षुधापन्नस्य का मति ॥ १७ ॥

क़ता

रात को बेचैन सोना है जिसको कि स्पष्ट हो।
नहीं होगा सहारा सवेरे का॥
चींटी सञ्चय कर लेती हैं गर्मियों में।
ताकि निश्चिन्तता हो उसे जाड़े में॥

पदम्

रात्रौ चिन्ताकुल शेते जन सविग्नमानस।
आगामिन प्रभातस्य यस्य नान्नं व्यवस्थितम् ॥ ७४ ॥
पिपीलिकाऽपि ग्रीष्मर्तौ कुरुते ह्यन्नसञ्चयम्।
यतो निश्चिन्तता भयाच्छिशिरे चान्नदुर्लभे ॥ ७५ ॥

'निश्चिन्तता का उपवास से जोड़ नहीं बैठता—और चित्त की स्थिरता भी निर्धनता से सुरक्षित नहीं बनती। एक सायं उपासना में बैठा है और दूसरा सन्ध्या के भोजन की प्रतीक्षा में बैठा है। यह उसके बराबर कैसे होगा?'

नोपपद्यते हि लघनेन चित्तस्थैर्यम्, निर्धनतया च स्थितप्रज्ञता। तत्रैक सान्ध्योपासनासलग्नोऽस्ति, तथाऽपरश्च सान्ध्यभोजनचिन्तामग्न आस्ते। कथमस्य तेन तुलालेश।

बैत

जो साधनसम्पन्न है वह परमात्मा की पूजा में तत्पर होता है।
अनिश्चित रोज़ी वाला अनिश्चित चित्त होता है॥

श्लोक

यो हि साधनसम्पन्न ईशोपासनतत्पर।
य स्यादस्थिरवृत्तिस्त्वास्थिरचित्त स तिष्ठति ॥ ७६ ॥

अत इनकी (धनिकों की) प्रार्थना अधिक स्वीकार होती है क्योंकि वे स्थिर और तत्पर होते हैं चिन्ताकुल और अस्थिर चित्त नहीं होते। जीविका के साधनों से युक्त होते हैं और प्रार्थना पाठ में लीन रहते हैं।

अत एवैषां प्रार्थना प्रभुणा विशेषतया स्वीक्रियते यतस्ते स्थिरास्तत्पराश्च भवन्ति, न च चिन्ताकुला अस्थिरचित्ताश्च। ते हि व्यवस्थितजीविकासम्भारा प्रार्थनापाठतल्लीनाश्च भवन्ति।

عبادت پرداخته * عرب گوید - اَعُوذُ بِاللهِ مِنَ الفَقْرِ المُکِبِّ وَ جِوارِ مَنْ لا یُحِبُّ - و در خبرست - کَ الفَقْرُ سَوادُ الوَجْهِ فِی الدّارَیْنِ * گفت - ''آن نشنیدهٔ که فرمود خواجهٔ عالم (عَلَیهِ اَفْضَلُ الصَّلَواتِ وَ اَکْمَلُ التَّحِیّاتِ) ''اَلفَقْرُ فَخْری'' * گفتم - ''خاموش! که اشارت خواجهٔ عالم (عَلَیهِ السَّلام) بفقر طائفه ایست که مرد میدان رضا اند و تسلیم تیر قضا - نه اینان که خرقهٔ ابرار پوشند و لقمهٔ ادرار فروشند *

رباعی

ای طبل بلند بانگ و در باطن هیچ!
بی‌توشه چه تدبیر کنی وقت بسیچ *
روی طمع از خلق بپیچ - ار مردی
تسبیح هزار دانه بر دست مپیچ *

درویش بی معرفت نیارامد تا فقرش بکفر انجامد - که ''کادَ الفَقْرُ اَنْ یَکُونَ کُفْراً'' * نشاید جز بوجود نعمت برهنهٔرا پوشیدن - یا در استخلاص گرفتاری کوشیدن - و ابنای جنس مارا بمراتب ایشان که رساند؟ و یَدِ عُلْیا بِید سُفْلیٰ چه ماند؟ نه بینی که حق جل و علا در محکم تنزیل از نعیم اهل بهشت خبر میدهد - که - ''اُولٰئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَعْلُوم'' - تا بدانی که مشغول کفاف از دولت عفاف محرومست و ملك فراغت زیر نگین رزق مقسوم'' *

بیت

تشنگان‌را نماید اندر خواب
همه عالم بچشم چشمه آب *

इबादत परदाख्ता। अरब गोयद—'अऊजु बि'ल्लाहि मिन'ल् फक़्रि'ल् मुकिब्बि व जवारि मन् ला युहिब्बु।' व दर ख़बरस्त—'अल्फ़क्रु सवादु'ल् वजूहि फि'द्दारैन्।' गुफ्त—'आँ न शुनीदई कि फ़रमूद ख़्वाजाए आलम् (अलैहि अफज़लु'स्सलवाति व अक्मलु'त्तहीयाति)—अल् फ़क्रु फ़ख़्री।' गुफ़्तम्—'ख़ामोश! कि इशारते ख़्वाजाए आलम (अलैहि'स्सलाम्) ब फ़क्रे ताइफ़ाए ईस्त कि मर्दे मैदाने रज़ा अन्द व तस्लीमे तीरे क़ज़ा—नै ईना कि ख़िरक़ाए अबरार पोशन्द व लुक़्माए इदरार फ़रोशन्द।'

रुबाई (बहरे हजज़्)

ऐ तब्ले बलन्द बाँग व दर बातिन हेच।
बे तोशा चि तदबीर कुनी वक़्ते बसीच॥
रूए तमअ अज ख़ल्क़ बिपेच अर मर्दी।
तस्बीह हज़ार दाना बर दस्त मपेच॥

दरवेशे बेमारिफ़त नयारामद ता फ़क्रश् ब कुफ्र न अंजामद कि—'कादल् फ़क़्रु अन् यकून कुफ़्रन्।' न शायद जुज़ ब वुजूदे निअमत बरहनाए रा पोशीदन्—या दर इस्तिख़्लासे गिरिफ़्तारे कोशीदन्—व अबनाए जिन्स मारा ब मरातिबे ईशान् कि रसानद? व यदे उल्या ब यदे सुफ़्ला कि मानद? नै बीनी कि हक़ जल्ल व अला दर मुह्कमे तंज़ील अज नईमे अह्ले बिहिश्त ख़बर मी दिहद कि 'उलाइक लहुम् रिज़्क़ुम् मालूम्।' ता बिदानी कि मशगूले कफ़ाफ़ अज दौलते अफ़ाफ़ महरूम'स्त व मुल्के फ़राग़त ज़ेरे नगीने रिज़्क़े मक़सूम।

बैत (बहरे ख़फ़ीफ़)

तिश्नगाँ रा नुमायद अन्दर ख़्वाब।
हमा आलम ब चश्म चश्माए आब॥

حالی که من این بگفتم ـ عنان طاقت ـ درویش از دست تحمل برفت ـ و تیغ زبان برکشید ـ و اسب فصاحت در میدان وقاحت جهانید و بر من دوانید و گفت ـ "چندان مبالغه در وصف ایشان بکردی و سخنهای پریشان بگفتی ـ که وهم تصور کند که تریاقند یا کلید خزانهٔ ارزاق ـ مشتی متکبر ـ مغرور ـ معجب ـ نفور ـ مشتغل مال و نعمت ـ و مفتتن جاه و ثروت ٭ سخن نگویند الا بسفاهت ـ و نظر نکنند الا بکراهت ٭ علمارا بگدائی منسوب کنند ـ و فقرارا به بی سر و پائی معیوب گردانند ٭ بعزت مالی که دارند و غیرت جاهی که پندارند برتر از همه نشینند و خودرا بهتر از همه شناسند ٭ نه آن در سر دارند که سر بکسی فرو آرند ـ بیخبر از قول حکما ـ که گفته اند ـ هر که بطاعت از دیگران کمست و بنعمت بیش ـ بصورت توانگرست و بمعنی درویش ٭

हाले कि मन् ईं बि गुफ्तम्—इनाने ताक़ते दरवेश अज़ दस्ते तहम्मुल बरफ़्त—व तेग़े ज़बान बर कशीद—व अस्पे फ़साहत दर मैदाने वक़ाहत जहानीद व बर मन् दवानीद व गुफ़्त—'चन्दाँ मुबालग़ा दर वस्फ़े ऐशान बिकर्दी व सुख़ुनहाय परेशान बुगुफ़्ती—कि वहम तसव्वुर कुनद कि तिरियाक़'न्द या कलीदे ख़ज़ानाए अरज़ाक़—मुश्ते मुतकब्बिर—मग़रूर—मोअजिब—नुफ़ूर—मुश्तग़िले माल व निअमत—व मुफ़्तनिने जाह व सरवत। सुख़ुन न गोयन्द इल्ला ब सफ़ाहत—व नज़र न कुनन्द इल्ला ब कराहत। उलमा रा ब गदायी मन्सूब कुनन्द व फ़ुक़रा रा ब बेसरो पायी मायूब गर्दानन्द। ब इज़्ज़ते माले कि दारन्द व ग़ैरते जाहे कि पिन्दारन्द बरतर अज़ हमा नशीनन्द व ख़ुद रा बिहतर अज़ हमा शनासन्द। नै आँ दर सर दारन्द कि सर ब कसे फ़रो आरन्द—बेख़बर अज़ क़ौले हुकमा कि गुफ़्ता अन्द—"हर कि ब ताअत अज़ दीगराँ कम'स्त व ब निअमत बेश। ब सूरत तवाँगर'स्त व ब मानी दरवेश।"

بیت

گر بی‌هنر بمال کند کبر بر حکیم
کون خرش شمار اگر گاو عنبرست" ٭

बैत (बहरे मुज़ारी)

गर बे हुनर ब माल कुनद किब्र बर हकीम।
कूने ख़रश् शुमार अगर गावे अम्बर'स्त॥'

گفتم ـ "مذمت ایشان روا مدار ـ که خداوندان کرم اند" ٭ گفت ـ "غلط کردی ـ که بندگان درمند ٭ چه فائده که چون ابر آذارند و بر کس نمی‌بارند ـ و چشمهٔ آفتابند و بر کس نمی‌تابند و بر مرکب استطاعت سوارند و نمی‌رانند ـ و قدمی بهر خدا ننهند ـ و درمی بی من و اذی ندهند ٭ مالی بمشقت فراهم آرند و بخست نگه دارند و بحسرت بگذارند ـ چنانکه بزرگان گفته اند ٭

سیم بخیل وقتی از خاک بر آید
که بخیل خاک در آید ٭

गुफ़्तम्—'मज़म्मते ऐशान् रवा मदार कि ख़ुदावन्दाने करम अन्द।' गुफ़्त—'ग़लत करदी कि बन्दगाने दिरम'न्द। चि फ़ायदा कि चूँ अब्रे आज़ार'न्द व बर कस न मी बारन्द—व चश्माए आफ़्ताब'न्द व बर कस न मी ताबन्द व बर मरकबे इस्तताअत सवार'न्द व न मी रानन्द व क़दमे बहरे ख़ुदा नै निहन्द—व दिरमे बे मन्न व अज़ा न दिहन्द। माले ब मशक़्क़त फ़राहम आरन्द व ब ख़िस्सत निगह दारन्द व ब हसरत बिगुज़ारन्द—चुनाँकि बुज़ुर्गाँ गुफ़्ता अन्द—

सीमि बख़ील वक़्ते अज़ ख़ाक बर आयद,
कि बख़ील ब ख़ाक दर आयद।'

بیت

برنج و سعی کسی نعمتی بچنگ آرد
دگر کس آید و بی رنج و سعی بردارد" ٭

बैत (बहरे मुज्तस्)

ब रंज आ सइ कसे निअमते ब चंग आरद।
दिगर कस आयद आ बेरंजो सइ बर दारद॥

जैसे ही मैंने यह कहा—फकीर की दानि की लगाम सहनशक्ति के हाथों से निकल गयी, उसने जीभ की कटार ली और वह व्याख्यान के घोडे को धृष्टता के मैदान में ले आया और मुझ पर झपट पडा और बोला—'इतनी अत्युक्ति उनकी प्रशंसा में तूने की है और उलटी पुलटी बातें की हैं कि मेरा वहम यह कल्पना करता है कि वे सारे रोगों की एकमात्र औषध हैं, या समस्त जीविकाओं के कोष की चाभी हैं। (वस्तुत) वे मुट्ठी भर दम्भी, घमण्डी, आत्मप्रशंसक, घृणी, धनधान्य में डूबे हुए और पद और वैभव मे मोहित लोग हैं। बात नहीं करते सिवा मूर्खता के, और देखते नहीं सिवा घृणा के। विद्वानों को भिखारी समझते हैं और फकीरों को बिना सिर-पैर का (जन्तु) होने का ऐब लगाते हैं। अपने धन के गर्व से और काल्पनिक प्रतिष्ठा से सब से ऊपर बैठते हैं और अपने आपको सब से अच्छा समझते हैं। उनकी खोपडी में यह तो कभी आता ही नहीं कि वे किसी को सिर झुकायें—पण्डितों के इस वचन से अनभिज्ञ हैं कि जैसा कि वह कहते हैं—"जो कि दूसरा से उपासना में कम है और सम्पत्ति में अधिक है, वह प्रकटत धनी है और वस्तुत निर्धन है।"

यथा हि मयेदमुदाहृतम्—भिक्षुरस्य सहनशक्तिविच्युता। स जिह्वाखड्गमनावृत्य व्याख्यानसप्ति प्रलापक्षेत्रमनैषीत्, माम- वोचच्च—त्वया एतावती चातिशयोक्तिस्तेषा प्रशस्तौ समुदीरिता, बहून्यसगतानि च वाक्यानि प्रोक्तानि यदह तानगदकल्पान्, विश्व- कोषार्गलानिव वा मन्ये। वस्तुतस्तु ते मुष्टिपरिमिता दम्भिनोऽहङ्कारिण, आत्मप्रशसका, घृणिनो, धनधान्यदत्तचित्ता, पदवैभवलुब्धाश्च सन्ति। मौर्ख्यादृते ते न च किञ्चिदाहु, पश्यन्ति लोक न घृणा विना वा। विदुषो भिक्षून् मन्यन्ते, भिक्षुकाश्च पुच्छविषाणहीनान् पशूनिति। स्वस्य धनगर्वाद्, स्वत सम्मतपदगौरवाच्च सर्वोपर्यासते, आत्मन सर्वश्रेष्ठान् जानते। अपि कश्चिन् नमस्यो भवतीति न सगच्छते तेषा शिर सु। तेऽनभिज्ञाश्च विद्वद्वचसो यथाहु —

> "यदन्याप्युपासनान्यूनो धनेनाढ्यतरश्च य।
> वाह्यत स धनाढ्योऽपि वस्तुतो नि स्व एव स ॥२१॥"

बैत

> यदि कोई मूर्ख धन के कारण किसी पण्डित से गर्व करता है।
> उसे गधे का गुण समझ चाहे वह अम्बर-गौ क्यों न हो॥'

श्लोक

> मूर्खश्चेद् धनगर्वेण विद्वासमवमन्यते।
> मन्ये खरगुणोपेत यदि कामदुघाऽपि गौ ॥८०॥'

मैंने कहा—'उनकी भर्त्सना को उचित मत समझ क्योंकि वे कृपानाथ हैं।' वह बोला—'गलत कहता है—वे तो दिरमदास हैं, उनसे क्या लाभ है जो कि वसन्त के मेघ के समान हैं और किसी पर नहीं बरसते। सूर्य के समान प्रकाश के स्रोत हैं और किसी को प्रकाशित नहीं करते, बलवान् घोड़े पर सवार हैं और उस से सग नहीं होते, एक कदम भी ईश्वर के नाम पर नहीं रखते, और एक दिरम भी बिना ऐहसान और अपमान के नहीं देते। धन को बडे कष्ट से जोडते हैं, बडे लालच से रक्षा करते हैं और बडी हसरत से छोडते हैं। जैसा कि बडे आदमियों ने कहा है—

> कञ्जूस की चाँदी उस समय ज़मीन से बाहर आती है,
> जब कि कञ्जूस ज़मीन के अन्दर चला जाता है।'

अहमवोचम्—'मा तान् भर्त्सय, ननु कृपानाथास्ते।' सो- ऽवदत्—'न च, दिरमदासास्ते। कोऽर्थो वसन्तमेघेन यो न वर्षति कुत्रचित्। ते सूर्य इव प्रकाशस्रोता न च कञ्चन प्रकाशन्ते, बलीयासमश्वमारूढा अपि पादमेक न सचरन्ति, पादमेकञ्चापि परमेश्वराय न दधते, दिरममेकञ्चापि विनोत्तोलकगणना न ददते महत्कष्टपुरस्सर धनस्य सञ्चय कुर्वन्ति। अतीव लोभपूर्व तद- भिरक्षन्ति, हाहेति कुर्वाणाश्चान्ते त्यजन्ति। यथाहुर्महाजना —

> कृपणस्यैति वै रौप्य धरागर्भात्तदा बहि।
> धरागर्भे यदा याति कृपणो मृत्युनेरित ॥२२॥'

बैत

> कष्ट और यत्न से एक आदमी धन जोडता है।
> दूसरा आदमी आता है और बिना कष्ट और यत्न के ले जाता है॥

श्लोक

> कष्टेनाथ श्रमेणैक कुरुते धनसञ्चयम्।
> विना कष्टमनायास कश्चिदन्यो नयेद्धि तत् ॥८१॥

گفتمش - ''در محل خداوندان نعمت وقوف نیافتهٔ الا بعلت گدائی - و گر نه - هر که طمع یکسو نهاده کریم و بخیلش یکی نماید * محک داند که زر چیست - و گدا داند که ممسک کیست'' * گفتا - ''بتجربت آن میگویم - که متعلقان بر در دارند - و غلیظان شدیدرا بر گمارند - تا بار عزیزان ندهند - و دست بر سینهٔ صاحب تمیزان نهند و گویند ''اینجا کس نیست'' - و بحقیقت راست گویند *

بیت

آن‌را که عقل و همت و تدبیر و رای نیست
خوش گفت پرده دار - که کس در سرای نیست'' *

گفتم - بعلت آن که از دست متوقعان بجان آمده‌اند - و از رقعه گدایان بفغان * محال عقلست که اگر ریگ بیابان در شود چشم گدایان پر شود *

بیت

دیدهٔ اهل طمع بنعمت دنیا
پر نشود - همچنان که چاه بشبنم *

هر کجا سختی کشیدهٔ و تلخی چشیدهٔ‌را بینی - خودرا بشره در کارهای مخوف اندازد - و از توابع آن نپرهیزد - و از عقوبت آن نهراسد - و حلال از حرام نشناسد *

قطعه

سگی‌را - گر کلوخی بر سر آید
ز شادی بر جهد - کین استخوانست *
و گر نعشی دو کس بر دوش گیرند
لئیم الطبع پندارد که خوانست *

اما صاحب دنیا بعین عنایت حق ملحوظست - و بحلال از حرام محفوظ * من - همانا که تقریر این سخن نکردم و دلیل و برهان نیاوردم - اکنون انصاف از تو توقع دارم * هرگز دیدهٔ دست دغائی بر کتف بسته - یا بعلت بی‌نوائی در زندان نشسته - یا پردهٔ معصومی

गुफ़्तमश्—'बर महल्ले ख़ुदावन्दाने निअमत वुक़ूफ़ नयाफ़्ताई इल्ला ब इल्लते गदायी—वगरना हर कि तमअ यक्सू निहादा करीम व बख़ीलश् यके नुमायद। मिहक्क दानद कि ज़र चीस्त व गदा दानद कि मुम्सिक कीस्त।' गुफ़्ता—'ब तजुरिबते आँ मी गोयम् कि मुतअल्लिक़ान् बर दर बदारन्द—व ग़लीज़ाने शदीद रा बर गुमारन्द—ता बारे अज़ीज़ान् न दिहन्द—व दस्त बर सीनाए साहिब तमीज़ान् निहन्द व गोयन्द—"ईं जा कस नेस्त"—व ब हक़ीक़त रास्त गोयन्द।'

बैत (बहरे मुज़ारी)

आँरा कि अक़्लो हिम्मतो तदबीरो राय नेस्त।
ख़ुश गुफ़्त पर्दादार—कि कस दर सराय नेस्त॥

गुफ़्तम्-'ब इल्लते आँ कि अज़ दस्ते मुतवक़्क़िआन् बजाँ आमदा अन्द-व अज़ रुक़आए गदायान् ब फ़ुग़ान्। मुहाले अक़्ल'स्त कि अगर रेगे बयाबाँ दुर शवद। चश्मे गदायान् पुर शवद।'

बैत (बहरे मुन्सरिह)

दीदाए अह्ले तमअ ब निअमते दुनिया।
पुर न शवद हम चुनाँ कि चाह ब शबनम्॥

हर कुजा सख़्ती कशीदाए व तल्ख़ी चशीदाए रा बीनी—ख़ुद रा ब शरह दर कारहाये मुख़ौवफ़ अन्दाज़द व अज़ तवाबिए आँ न परहेज़द—व अज़ उक़ूबते आँ न हिरासद—व हलाल अज़ हराम न शनासद।

क़ता (बहरे हज़ज्)

सगे रा गर कुलूख़े बर सर आयद।
ज़ि शादी बर जिहद—कीं उस्तुख़्वान'स्त॥
वगर नाशे दु कस बर दोश गीरन्द।
लईमु'त्तबअ पिन्दारद कि ख़्वान'स्त॥

अम्मा साहिबे दुनिया ब ऐने इनायते हक़ मल्हूज़'स्त व ब हलाल अज़ हराम महफ़ूज़। मन् हमाना कि तक़रीरे ईं सुख़न न कर्दम् व दलील व बुरहान बयावुर्दम्—अकनूँ इन्साफ़ अज़ तो तवक़्क़ो दारम्। हरगिज़ दीदई दस्ते दग़ाई बर किफ़्त बस्ता—या ब इल्लते बेनवाई दर ज़िन्दाँ निशस्ता—या पर्दाए मासूमे

دریده ـ یا کفی از معصم بریده ـ الا بعلت درویشی؟ شیر مردان‌را حکم ضرورت در نقبها گرفته‌اند و کعبها سفته ـ محتملست که یکی از درویشان‌را نفس اماره مطالبه کند ـ چون قوت احصانش نباشد ـ بعصیان مبتلا گردد ـ که بطن و فرج توأمانند ـ یعنی دو فرزندان اند از یك شکم ـ مادام که این یکی بر جاست ـ آن دیگری برپاست * شنیدم ـ که درویشی‌را با حدثی بر خبثی بگرفتند ـ با آنکه شرمساری برد ـ سزای سنگساری شد * گفت ـ 'ای مسلمانان! قوت ندارم که زن کنم ـ و طاقت ندارم که صبر کنم ـ لا رَهْبانِیَّةَ فِی الاسلام' *

و از جملهٔ مواجب سکون و جمعیت درون که توانگران راست یکی آن ـ که هر شب صنمی در بر گیرند و هر روز جوانی از سر ـ صنمی که صبح تابان‌را دست از صباحت او بر دل ـ و سرو خرامان‌را پای از خجالت او در گل *

بیت

بخون عزیزان فرو برده چنگ
سر انگشتها کرده عناب رنگ *

محالست که با وجود حسن طلعت او گرد مناهی گردد و یا رای تباهی زند *

بیت

دلی که حور بهشتی ربود و یغما کرد
کی التفات کند بر بتان یغمائی؟

شعر

مَنْ کانَ بَیْنَ یَدَیْهِ ما اشْتَهَی رُطَبٌ
یُغْنِیهِ ذٰلِكَ عَنْ رَجْمِ العَناقِیدِ *

اغلب تهیدستان دامن عصمت بمعصیت آلایند ـ و گرسنگان نان مردم ربایند *

दरीदा—या कफ़े अज़ मिसम बुरीदा—इल्ला ब इल्लते दरवेशी? शेरमर्दां रा ब हुक्मे ज़रूरत दर नक़बहा गिरिफ्ता अन्द व कअबहा सुफ्ता—मुहतमल'स्त कि यके अज़ दरवेशाँ रा नफ़्से अम्मारह मुतालबा कुनद—चू कुव्वते अहसानश् न बाशद—ब इसियाँ मुब्तिला गर्दद—कि बत्न-ओ-फ़र्ज तवामान'न्द-यानी दु फ़र्ज़न्दान् अन्द अज़ यक शिकम—मा दाम कि ईं यके बर जास्त—आँ दीगरे बर पास्त। शुनीदम् कि दरवेशे रा बा हदसे बर खुब्से बगिरिफ्तन्द—बा आँकि शर्मसारी बुर्द—सज़ाए संगसारी शुद। गुफ्त—'ऐ मुसलमानान्! कुव्वत न दारम् कि ज़न कुनम्—व ताक़त न दारम् कि सब्र कुनम्। ला रहबानिय्यत फ़िल् इस्लामि।'

व अज़ जुमलाए मवाजिबे सुकूनो जमीय्यते दरूँ कि तवांगरान् रा अस्त यके आँ—कि हर शब सनमे दर बर गीरन्द व हर रोज़ जवाने अज़ सर। सनमे कि सुब्हे ताबाँ रा दस्त अज़ सबाहते ऊ बर दिल—व सर्वे ख़रामाँ रा पाय अज़ ख़िजालते ऊ दर गिल।

बैत (बहरे मुतक़ारिब)

ब खूने अज़ीज़ाँ फ़रो बुर्दा चंग।
सर अंगुश्तहा कर्दा उन्नाब रंग॥

मुहाल'स्त कि बावुजूदे हुस्ने तलअते ऊ गिर्दे मनाही गर्दद व या राये तबाही ज़नद।

बैत (बहरे मुज्तस्)

दिले कि हूरे बिहिश्ती रबूदो यग़मा कर्द।
कै इल्तिफ़ाते कुनद बर बुताने यग़माई॥

शेर (बहरे बसीत)

मन् काना बैना यदैहि मश्तहा रुतबुन्।
युग़्नीहि ज़ालिक अन् रज्मिल् अनाक़ीदि॥

अग़्लबे तिही दस्तान् दामने इस्मत ब मअसियत आलायन्द—व गुरसनगान् नाने मर्दुम रुबायन्द।

पर्दा फटा देता है, या हाथ कुहनी से कटा देता है ? वीरो को मजबूर होने पर सेंघ लगाते पकडा गया है और उनकी एडियाँ छेदी गयी हैं। बहुत सम्भव है कि एक फकीर का कुमार्गगामी मन उससे कामना करे, और जब उसे सयम की सामर्थ्य न रहे, तो वह पापमग्न हो जाय, क्योंकि उदर और शिश्न सहोदर हैं अर्थात एक ही उदर से जनमे दो पुत्र हैं। जैसे ही इनमें से एक सतक होता है, वह दूसरा भी उत्तेजित हो जाता है। मैंने सुना है कि एक साधु को एक किशोर के साथ कुकर्म करते पकड लिया—शर्मिन्दगी उठाने के साथ साथ उसे पत्थर मारकर मार डालने की सजा हो गयी। उसने कहा—'हे मुसलमानो! मेरी सामर्थ्य नही है कि मैं विवाह कर लूँ और मेरी क्षमता नही है कि सन्तोप कर लूँ। नही है ब्रह्मचर्य (की आज्ञा) इस्लाम में।' और धनिकों की तृप्ति और स्थिरता के अनेक कारणो में से एक यह है कि वे हर रात को एक प्रेयसी का आलिंगन करते हैं और हर रोज एक जवान का ध्यान कर सकते हैं, ऐसा सुरूप कि उषा को भी अपना हाथ उसकी सुन्दरता के कारण दिल पर रख लेना पडे और चलते फिरते सरो के वृक्ष को भी लज्जा के कारण मिट्टी में पैर छुपाना पडे।

विवशा नरकेसरिणो भित्तिच्छेद कुर्वाणा गृहीताश्च, पार्ष्णिच्छेद-दण्डिताश्च। प्रायशस्सम्भाव्यतेऽय कदाचिद् भिक्षाजीविन कुमार्गाभिमुख मनस्त कुमार्गं प्रेरयति। तथा च यदाऽसौ सयमसामर्थ्यं न धत्ते स पापमग्नो भवेत्। यत—'कोष्ठोपस्थौ सहोदरौ।' अर्थात् एक एव प्रभव एनयोरिति। यथा ह्यनयोरेकतर प्रीणाति तथा ह्यन्यतर उद्बुध्यते। श्रूयतेऽय कश्चित् साधु केनचित् किशोरेण सार्धं कुकर्म कुर्वाणो राजपुरुषैर्गृहीत। स लज्जा सहमानो उपलघात मृत्युदण्ड लेभे। तदनु स उच्चैस्तरा ब्रूते—'हे मुसलमाना!

सामर्थ्यं च विवाहस्य सयमस्य च धीरताम्।
न दधे, ब्रह्मचर्यन्त्वैवेस्लामे न विधीयते॥ २५॥'

तथा च धनाढ्याना तृप्ते स्थैर्यस्य च हेतुषु तत्रान्यतमस्तावदयमथ प्रतिरात्रमेते नवोढा जिघृक्षन्ति, प्रतिदिन च नवयुवान कामयाना। नवोढा कीदृशी—या दृष्ट्वा उप प्रभाऽपि धृतहृदयहस्ता स्यात्। युवा पुन कीदृश—य दृष्ट्वा चलन्नपि देवदारुतरुरपि लज्जाया-मृत्स्नानिहितपादो जडितश्च सजायते।

बैत

(मानो) अपने प्यारो के खून मे हाथ डुबोए हुए।
उँगलियो के सिरो को उन्नावी रगे हुए॥

यह असम्भव है कि ऐसी सौन्दर्य प्रतिमाओं के होते हुए वह निषिद्धो का चक्कर काटे अथवा विनाश की ओर प्रवृत्त हो।

श्लोक

स्वहस्तौ कामयानाना शोणिते मज्जयन्निव।
पर्वाग्रमङ्गुलीना च कृतराग विधाययन्॥ ८६॥

नाय सम्भाव्यतेऽय रूपवद्भार्य सन्नपि सोऽविहित कर्म कुर्वीत, विनाशमार्गोन्मुखो वा स्यात्।

बैत

यह दिल जो स्वर्ग की अप्सराओ ने छीन और लूट लिया हो।
वह क्यो झुकेगा यग्मा की रूपसियो पर॥

श्लोक

यन्मनो दिव्यबालाना विभ्रमैरय गोहितम्।
कथ नु तन्मनो हर्तुमल दाराश्च यग्मिया॥ ८७॥

शेर

वह जो रखता है अपने दोनो हाथो में अभीप्सित खजूर।
उसे परवाह नही होती पत्थर मारने की पेडो के गुच्छो पर॥

श्लोक

सुपक्वानि खजूराणि धत्ते सन्निहितानि य।
नोत्क्षिपेज्जातु पाषाण फलवृक्षेषु स क्वचित्॥ ८८॥

प्राय रिक्त हस्त लोग ही पवित्रता के दामन को पाप में सानते हैं और भूखे लोग ही लोगों की रोटी छीनते हैं।

प्रायेण रिक्तहस्ता एव पवित्रचरित्रपरिधान वृजिनकलुप विदधते। बुभुक्षिता एव पुसा ग्रास प्रसह्य भक्षयन्तीति।

بیت

چون سگ درنده گوشت یافت نپرسد
کین شتر صالحست یا خر دجال *

वैत (बहरे मुन्सरिह)

चूँ सगे दरिन्दा गोश्त याफ्त न पुर्सद।
कीं शुतुरे सालेह'स्त या खरे दज्जाल॥

چه مایهٔ مستوران بعلت مفلسی در عین فساد افتاده اند و عرض گرامی در زشت نامی بر باد داده *

चि मायाए मस्तूरां ब इल्लते मुफलिसी दर ऐने फसाद उफ्तादा अन्द व अर्ज़े गरामी दर ज़िश्तनामी बरबाद दादा।

بیت

با گرسنگی قوت پرهیز نماند
افلاس عنان از کف تقوی بستاند *

वैत (बहरे हज्ज-मुसम्मन्)

बा गुरुसनगी कुव्वते परहेज़ न मानद।
इफ्लास इनान'ज़ कफ़े तक़्वा बसितानद॥

حاتم طائی - که بیابان نشین بود - اگر در شهری بودی - از جوش گدایان بیچاره شدی و جامه بر وی پاره کردندی - چنانکه آمده است -

हातिमे ताई कि बियाबान् नशीन बूद—अगर दर शहरे बूदे—अज़ जोशे गदायान् बेचारा शुदे व जामाए बर वै पारा करदे—चुनांकि आमदा अस्त—

بیت

در من منگر تا دگران چشم ندارند
کز دست گدایان نتوان کرد ثوابی" *

वैत (बहरे हज्ज-मुसम्मन्)

दर मन् म निगर ता दिगरां चश्म न दारन्द।
कज़ दस्ते गदायां न तवां कर्द सवाबे॥

گفتا - "نه - که من بر حال ایشان رحمت میبرم" * گفتم - "نه - که بر مال ایشان حسرت میخوری" * ما درین گفتار و هر دو بهم گرفتار - هر بیدقی که براندی من بدفع آن کوشیدمی - و هر شاهی که بخواندی بفرزین بپوشیدمی - تا نقد کیسهٔ همت درباخت و تیر جعبهٔ حجت همه بینداخت *

गुफ्ता—'नै—कि मन् बर हाले ऐशान् रहमत मी बुरम्।' गुफ्तम्—'नै कि बर माले ऐशान् हसरत मीखुरी।' मा दर ईं गुफ्तार व हर दु बहम गिरिफ्तार—हर बैदक़े कि बरान्दे मन् ब दफ़ए आं कोशीदमे—व हर शाहे कि बिख्वान्दे ब फर्ज़ीं बपोशीदमे—ता नक़्दे कीसाए हिम्मत दर बाख्त व तीरे जाबाए हुज्जत हमा बयन्दाख्त।

قطعه

هان! تا سپر نیفکنی از حملهٔ فصیح
کورا جز آن مبالغهٔ مستعار نیست!
دین ورز و معرفت - که سخندان سجع گوی
بر در سلاح دارد و کس در حصار نیست *

क़ता (बहरे मुज़ारी)

हां! ता सिपर नयफ्गनी अज़ हमलाए फ़सीह।
कूरा जुज़ आं मुबालग़ाए मुस्तआर नेस्त॥
दीं वर्ज़ ओ मारिफत कि सुखन्दाने सज्अ गोय।
बर दर सिलाह दारद ओ कस दर हिसार नेस्त॥

عاقبة الامر دلیلش نماند - ذلیلش کردم - دست تعدی دراز کرد و بیهوده گفتن آغاز * و سنت جاهلانست - که چون بدلیل از خصم فرو مانند - سلسلهٔ خصومت بجنبانند - چون آزر بت‌تراش - که بحجت با پسر بر نیامد -

आक़िबतुल् अम्र दलीलश् न मांद—ज़लीलश् करदम्—दस्ते तअद्दी दराज़ कर्द व बेहूदा गुफ्तन् आगाज़। व सुन्नते जाहिलान'स्त—कि चूं ब दलील अज़ ख़स्म फ़रो मानन्द—सिलसिलाए ख़ुसूमत बजुम्बानन्द—चूं आज़रे बुततराश—कि ब हुज्जत बा पिसर बर नयामद

बैत

जब दरिन्दा मुर्दा गोश्त पाता है।
नहीं पूछता कि यह सालेह के ऊँट का है या दज्जाल के गधे का।।

कितनी सारी महिलायें निर्धनता के कारण उपद्रव की दृष्टि मे पड़ गयी हैं और (उन्होंने) अपने प्रथित यश को अपकीर्त्ति में बरबाद कर डाला है।

बैत

भूख में सयम की क्षमता नही रहती।
मुफलिसी पवित्रता के हाथ से लगाम छीन लेती है।।

हातिम ताई जो कि बियाबान में बैठा था, यदि नगर में होता, तो भिक्षुको की भीड के कारण निरुपाय हो जाता और उसके कपडे चीर चीर हो जाते, जैसा कि कहा गया है—

बैत

मुझ पर दृष्टि मत लगा ताकि दूसरे अपेक्षा न करें।
क्योकि भिखारियो के हाथो से छूटना असभव है।।

वह बोला—'नही, मैं उनकी हालत पर दया करता हूँ।' मैंने कहा—'नहीं, तू उनके धन से ईर्ष्या करता है।' हम इस विवाद में दोनों परस्पर उलझ गये, वह जो प्यादा बढाता, मैं उसकी काट करता, और जब वह शाह को पीटना चाहता, मैं उसे फर्ज़ी से बचाता—यहाँ तक कि उसकी हिम्मत की थैली की नक्दी बीत गई और तर्क के तरकस के सब तीर छूट गये।

क़ता

हाँ! ढाल मत छोड़ना वावदूक के आक्रमण से।
उसके पास उधार की अत्युक्ति के सिवा कुछ नही है।।
धर्म और अध्यात्म का अनुसरण कर क्योंकि सदुपदेश बोलने वाला।
दरवाज़े पर हथियार रखता है भले ही दुर्ग में कुछ न हो।।

अन्ततोगत्वा उसके पास कोई युक्ति न बची—मैंने उसे पराजित कर दिया। उसने अन्याय का हाथ बढाया और असगत बोलना शुरू किया। और मूर्खों की रीति है कि जब दलील में विरोधी से हार जाते हैं—तो झगडे की जजीर हिलाने लगते हैं। जैसे कि मूर्तिकार आज़र था कि जब बेटे (इब्राहीम) से बहस में पार नही

श्लोक

कुक्कुरो मासभोजी हि यदा प्राप्नोति चामिषम्।
न स जिज्ञासते मासमौष्ट्र किमुत रासभम्।। ८९।।

कियत्य एव स्त्रियो दारिद्र्यदु खात् कुमार्गमुपद्रुता विपुलकुलकीर्ति किलापकीर्तौ मज्जयित्वा चेति।

श्लोक

बुभुक्षाया तु सामर्थ्यं सयमस्य न विद्यते।
वागुरा सद्विचाराणा नेनीयेत दरिद्रता।। ९०।।

हातिमताई यश्च निर्जनाधिष्ठित आसीत् यदि नगरवास्तव्योऽभविष्यत्तर्हि भिक्षुजनसकुलत्वान्निरुपायोऽजनिष्यत, तस्य वासासि च भिक्षुका अच्छेत्स्यन्त। यथाह्न —

श्लोक

मा मा पश्य यतश्चान्ये पश्येयुर्मां व्यपेक्षया।
याचमानैर्गृहीतस्य जीवन्मुक्तिर्न विद्यते।। ९१।।

सोऽवदत्—'ननु तेषा दुरवस्थायामनुकम्प्यते मया।' अहमवोचम्—'न च तेषा सम्पन्नतायायसूयते त्वया।' आवा परस्परममु विवादाभिनिविष्टौ, स यदा पदातिमग्रे नयति, तदाह त हातु प्रायतिषि, स यदा मम राजानमुदाकुरुते तदाह मन्त्रिमुख्येन तमरक्षिषम्। अन्ततो गत्वा तस्य साहसमस्त गत, तर्ककार्मुकस्य सर्वे शराश्च विसृष्टा।

पदम्

पुरतो वावदूकस्य रक्षावर्म न चोत्सृजे।
स धत्ते नान्यतो वाणी परोच्छिष्टामलकृताम्।। ९२।।
धर्म भर तथाऽध्यात्म यतो वादविशारद।
दर्शयन् द्वारि शस्त्राण्यध्यास्ते दुर्गमरक्षितम्।। ९३।।

अगत्या, असौ वीततर्को जात, अह त पराजयिषि। स धार्ष्ट्यकर प्रासरदसगत च वक्तुमरब्ध। यथा हि मूर्खाणा परम्परा, यदा तर्केण प्रतिपक्षात् पराजयन्ते, कलहश्रृखलामुपक्रमन्ते। यथा पुरा मूर्तिकार आजर पुत्रेण सार्धं विवदमानो न त पराजिग्ये तदा स

قطعه

[illegible] و س [illegible] و [illegible]
[illegible] از [illegible] ما [illegible] و [illegible] •
[illegible] تعجب [illegible]
از گفت و شنود ما بخندان •

التصه ـ مرافعهٔ این سخن پیش قاضی بردیم و بحکومت عدل راضی شدیم ـ تا حاکم مسلمانان مصلحتی جوید ـ و میان توانگران و درویشان فرقی بگوید • قاضی ـ چون حیلت ما بدید و منطق ما بشنید ـ سر بگریبان تفکر فرو برد ـ و پس از تامل بسیار سر بر آورد و گفت ـ «ای آن که توانگران‌را ثنا گفتی و بر درویشان جفا روا داشتی! بدان ـ که هرجا که گلست خارست ـ و با خمر خمار ـ و بر سر گنج مار ـ و آنجا که در شهوارست نهنگ مردم‌خوار ـ لذت عیش دنیارا لدغهٔ اجل در پست ـ و نعیم بهشت‌را دیوار مکاره در پیش •

بیت

جور دشمن چه کند گر نکشد طالب دوست؟
گنج و مار و گل و خار و غم و شادی بهمند •

نظر نکنی در بستان که بید مشکست و چوب خشک؟ همچنین در زمرهٔ توانگران شاکرند و کفور ـ و در حلقهٔ درویشان صابرند و ضجور •

بیت

اگر ژاله هر قطرهٔ در شدی
چو خرمهره بازارها پر شدی •

مقربان حضرت حق جل و علا توانگرانند درویش سیرت و درویشانند توانگر همت • مهین توانگران آنست که غم درویشان خورد ـ و بهین درویشان آن که کم

[illegible] (बहरे हजज-मुसद्दस)
[illegible] फिनारा।
[illegible] पै मा [illegible] गन्दी॥
[illegible] जहाने।
अज़ गुफ़्ते मुनीदे मा व दन्दी॥

अल् [illegible] मुराफ़आए ईं मुख़न पेशे क़ाज़ी बुर्दैम् व व हुकूमते [illegible] राज़ी शुदैम्—ता हाकिमे मुसल्मानान् मस्लहते बजोयद व मियाने तवांगरान् व दरवेशान् फ़र्क़ विगोयद। क़ाज़ी चूं हीलते मा बिदीद व मन्तिक़े मा बिशुनीद सर व गिरेबाने तफ़क्कुर फ़रो बुर्द—व पस अज़ ताम्मुले बिस्यार सर बर आवुर्द व गुफ़्त—'ऐ आं कि तवांगरां रा सना गुफ़्ती व बर दरवेशान् जफ़ा रवा दाश्ती! बिदां कि हर जा कि गुल'स्त ख़ार'स्त व बा ख़म्र ख़ुमार व बर सरे गंज मार—व आंजा कि दुरे शहवार'स्त निहंगे मर्दुमख़्वार—लज़्ज़ते ऐशे दुनिया रा लद्ग़ये अजल दर पस'स्त व नईमे बहिश्त रा दीवारे मकारिह दर पेश।'

बैत (बहरे रमल)

जौरे दुश्मन चि कुनद गर न कशद तालिबे दोस्त।
गंजो मारो गुलो ख़ारो ग़मो शादी बहम'न्द॥

नज़र न कुनी दर बोस्तान् कि बेदमुश्क'स्त व चोबे ख़ुश्क! हमचुनीं दर ज़ुमरए तवांगरान् शाकिर'न्द व कफ़ूर—व दर हल्क़ए दरवेशान् साबिर'न्द व ज़जूर।

बैत (बहरे मुतक़ारिब)

अगर [illegible] हर [illegible] [illegible] [illegible]।
चु [illegible] बाज़ारहा पुर [illegible]॥

मुक़र्रबाने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] तवांगरा[illegible] [illegible] [illegible] व दरवेशानन्द तवांगर हिम्मत। मिहीने तवांगरां आ[illegible] कि ग़म [illegible] [illegible] व बिहीने दरवेशान् आं कि कम

पाता था उससे लडने को खडा हो जाता था कि—'बेशक अगर नहीं मानेगा तू (तो) बेशक पत्थर मारूँगा तुझे।' उसने मुझे गाली दी—मैंने उसे कटुवचन कहे, उसने मेरा गरेबान फाड दिया, मैंने उसकी ठुड्डी तोड दी।

योद्धुमुपचक्रमेऽथ—'उपलेन हनिष्यामि नो चेत् त्व मस्यसे किल ।। २६ ।।' स मामपशब्दैरुदीरितवान् तमह कटुवाक्यैश्च। तेन ममोत्तरीय विदीर्ण मया च तस्य चिबुकञ्च।

कता

वह मुझ पर और मैं उस पर टूट पडा।
लोग हमारे पीछे दौड रहे थे और हँस रहे थे ।।
दुनिया के आश्चर्य की अँगुली।
हमारे कहने सुनने से—दाँतो में थी ।।

पदम्

स मामाक्रान्तवाँस्तावत् ततोऽहमपि त तथा।
आवयोरनुश पौरा धावमाना अथाहसन् ।। ६४ ।।
दधौ विस्मयमापन्नो लोकस्तु दत्सु चाङ्गुलिम्।
आवयो कलह दृष्ट्वा श्रुतमुक्त तयाऽऽवयो ।। ६५ ।।

सक्षेप में, हम यह विवाद काज़ी के सामने ले गये और उसकी न्याय व्यवस्था मानने को सहमत हो गये ताकि मुसलमानों का हाकिम मस्लहत ढूँढे और धनियो और निर्धनो के अन्तर की व्याख्या कर दे। काज़ी ने जब हमारी युक्तियाँ देख ली और हमारे तक सुन लिये, (तो) अपना सिर चिन्तन के गिरेबान मे छुपा लिया और बडे चिन्तन के उपरान्त सिर ऊपर उठाया और बोला—'अर तू जो कि धनियो की प्रशस्ति करता है और फकीरो को कटुवचन कहना उचित समझता है। समझ ले कि जहाँ फूल है वहाँ काँटा भी है, शराब के साथ नशा भी है, खज़ाने के ऊपर साँप भी है, जहाँ राजाओं के योग्य मोती है वहाँ नरभक्षी मगर भी है, ससार के भोगो के पीछे मौत का डक है और स्वर्ग के आनन्द के चतुर्दिक् (ऐराफ नामक) घृणित दीवार भी है।'

सक्षेपत आवामिम विवाद न्यायाधीशस्य पुरतोऽनैष्वहि तस्य व्यवस्था मन्तु सहमतौ च येन मुसलमानाना धर्माधिकारी भद्र समपश्यता, सम्पन्नानां निर्धनानामन्तर च विशिनष्टु। न्यायाधीशो यदाऽऽवयोर्युक्ती समपश्यत तकञ्चाश्रृणोत् तदा स स्वस्य मूर्धान विचारोत्तरीयेणाच्छादितवान्। बहुविचारपुरस्सर स्वस्य शिर उन्नमय्य स वक्तुमारेभेऽथ—'अयि भो ! यश्च धनिना प्रशस्ति कुरुते, निधनांश्च कटुवाक्यैरभिधातु विहित मन्यते। अवेहि यत्—

'यत्र पुष्पप्ररोह स्यात् कण्टक तत्र वै ध्रुवम्।
यत्र कोपो ह्यहिस्तत्र वारुणीमनुगो मद ।। २७ ।।'
राजार्हं मौक्तिक यत्र नृशसस्तत्र वै झप ।
तथा च
ससारभोगाननुयाति मृत्युस्।
तथा च नाके नरकस्य भित्ति ।। २८ ।।

बैत

शत्रु का क्लेश क्यो न होगा यदि कोई प्रिय का खोजी होगा।
कोष और सप, फूल और काँटा, सुख और दु ख साथ साथ होते है ।।

श्लोक

शत्रुक्लेश कथ न स्यात् काम्यते यदि वा प्रिया।
कोषसर्पौ, पुष्पशूले, सुखदु खे सहासते ।। ६६ ।।

क्या तू नही देखता—बाग में बेदमुश्क भी है और सूखी लकडी भी। इसी प्रकार धनिक वर्ग में कृतज्ञ भी है और कृतघ्न भी। और भिक्षु मण्डली में सन्तोषी भी है और अधीर भी।

न कि पश्यसि चोद्यानेऽथ देवदार्वप्यस्ति शुष्कतरुरपि। एव हि धनिकवर्गे कृतज्ञा अपि विद्यन्ते कृतघ्नाश्चापि। तथैव भिक्षु-मण्डले सन्तोषसर्वस्वा अपि भवन्ति अधीरा अपीति।

बैत

यदि ओले की हर बूद मोती बन जाती।
तो कौडियो की तरह (उनसे) सारे बाजार भर जाते ।।

श्लोक

स्वातेस्तु बिन्दव सर्वे भवेयुर्मौक्तिकानि चेत्।
वराटैस्तुल्यमूल्यैस्तु तैरेवाच्छाद्यते जगत् ।। ६७ ।।

परमात्मा के उपासक, साधुओं के गुणो से युक्त, धनिक भी है, और धनियो की हिम्मत वाले निर्धन भी है। धनियो में महान् वह है जो कि गरीबो का दु ख बँटाये और निर्धनो में श्रेष्ठ वह है जो कि धनिकों की आस्तीन नही पकडता। 'और जिसने भरोसा किया

परमात्मन उपासकास्तावत् साधुगुणोपेता आढ्या अपि सन्ति, धनिजनोचितौदार्यसम्पन्ना साधवोऽपि सन्ति। धनिकेषु महत्तम-स्तावदसौ भवति यश्च दीनाना दु खमपनुदति। निघनेषु विशिष्टतम

توانگران نگیرد - وَ مَنْ یَتَوَکَّلْ عَلَی اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهُ،، ٭

پس روی عتاب از من بدرویش آورد و گفت - ''ای که گفتی توانگران مشتغل اند بمناهی و مست ملاهی! نعم - طائفۀ هستند بدین صفت که بیان کردی - قاصر همت و کافر نعمت - که ببرند و بنهند و نخورند و ندهند ٭ اگر بمثل باران نبارد و یا طوفان جهان‌را بردارد - باعتماد مکنت خود از محنت درویش نپرسند - و از خدای تعالی نترسند و گویند -

بیت

گر از نیستی دیگری شد هلاک
مرا هست - بط را ز طوفان چه باک؟

شعر

وَ رَاکِبَاتِ نِیَاقٍ فِی هَوَادِجِهَا
لَمْ یَلْتَفِتْنَ اِلَی مَنْ غَاصَ فِی الْکُثُبِ ٭

بیت

دونان - چو گلیم خویش بیرون بردند
گویند - چه غم گر همه عالم مردند؟

قومی برین نمط که شنیدی و طائفه که خوان نعمت نهاده و صلای کرم در داده و میان خدمت بسته و ابرو تواضع گشاده ٭ طالب نامند و مغفرت و صاحب دنیا و آخرت - چون بندگان حضرت پادشاه عالم عادل مؤید و منصور - مالک ازمۀ انام - حامی ثغور اسلام - وارث ملک سلیمان - اعدل ملوک زمان - مظفر الدنیا و الدین - ابو بکر بن سعد بن زنگی اَدَامَ اللّٰهُ اَیَّامَهُ وَ نَصَرَ اَعْلَامَهُ ٭

قطعه

پدر بجای پسر هرگز این کرم نکند
که دست جود تو با خاندان آدم کرد ٭
خدای خواست که بر عالمی ببخشاید
بفضل خویش ترا پادشاه عالم کرد،، ٭

तवांगरान् न गीरद,—'व मन् यतवक्कलु अलल्लाहि फ़हुव हस्बुहू।'

पस रूए इताब अज़ मन् ब दरवेश आवुर्द व गुफ़्त—'ऐ कि गुफ़्ती तवांगरान् मुश्तगिल अंद ब मनाही व मस्ते मलाही! नअम ताइफ़ाए हस्तन्द बदीं सिफ़त कि बयान कर्दी क़ासिरे हिम्मत व काफ़िरे नेअमत कि बिबुरन्द व बिनिहन्द व निख़ुरन्द व न दिहन्द। अगर ब मसल बारान् न बारद व या तूफ़ान जहान रा बर दारद—बा ऐतमादे मुक्नते ख़ुद अज़ मिहनते दरवेश न पुर्सन्द—व अज़ ख़ुदाय तआला न तर्सन्द व गोयन्द—

बैत (बहरे मुतक़ारिब)

गर अज़ नेस्ती दीगरे शुद हलाक।
मरा हस्त—बत् रा ज़ि तूफ़ाँ चि बाक॥'

शेर (बहरे बसीत)

व राकिबातिन् नियाक़न् फ़ी हवादिजिहा।

लम् यल्तफ़िल्न इला मन् ग़ास फ़िल् कुसुबि॥

बैत (बहरे हज़ज)

दूनाँ चु गलीमे ख़ेश बेरूँ बुर्दन्द।
गोयन्द—चि ग़म गर हमा आलम मुर्दन्द॥

क़ौमे बर ईं नमत कि शुनीदी व ताइफ़ाए कि ख़्वाने निअमत निहादा व सिलाए करम दर दादा व मियान ब ख़िदमत बस्ता व अब्रू ब तवाज़ो कुशादा। तालिबे नाम अंद व मग़फ़िरत, व साहिबे दुनिया व आख़िरत—चूँ बन्दगाने हज़रते पादशाहे आलम आदिले मुअय्यद व मन्सूर, मालिके अज़िम्मए अनाम—हामीए सुग़ूरे इस्लाम—वारिसे मुल्के सुलैमान—आदले मुलूके ज़मान—मुज़फ़्फ़रुद्दुनिया वद्दीन—अबू बक्र बिन् सअद बिन् ज़ंगी—अदाम ल्लाहु अय्यामहू व नसर आलामहू।

क़ता (बहरे मुज्तस)

पिदर बजाये पिसर हर्गिज़ ईं करम न कुनद।
कि दस्ते जूदे तू बा ख़ानदाने आदम कर्द॥
ख़ुदाय ख़्वास्त कि बर आलमे बबख़्शायद।
ब फ़ज़्ले ख़ेश तुरा पादशाहे आलम कर्द॥

परमात्मा पर तो वह उसके लिये काफी है।' इसके बाद फटकारने वाला मुंह मेरी ओर से (हटाकर) उस साधु की ओर ले गया और बोला—'अरे, तू जो कहता है कि धनी लोग निषिद्ध कर्मों में लिप्त और भोगों में मग्न रहते हैं! ठीक है, कुछ लोग हैं इस तरह के कि जैसा तूने बयान किया है जो उदारता से रहित हैं और प्रभु-कृपा के कृतघ्न हैं, जो कमाते हैं, जोडते हैं, भोग करते हैं और देते नही हैं। यदि, उदाहरण के लिये, वर्षा न बरसे अथवा बाढ दुनिया को डुबो दे, तो अपनी सम्पत्ति के विश्वास के कारण वे दीनों के कष्टों को नही पूछते, भगवान् से नहीं डरते और कहते हैं—

स यदच धनिनागुत्तरीय न गृह्णाति। 'परमात्मप्रतीतस्य परमात्मा पर धनम्।' अतोऽनन्तर स भर्त्सनामुख तमभिमुख कृत्वावोचत्—'अयि भो! यश्च ब्रूते धनिनो निषिद्धकर्मरता भोग मोहिताश्चेति! तत्तथा! सन्त्येके यथा त्वमुदाहरसि, औदार्य-विवर्जिता, प्रभुकृपाकृतघ्नाश्च। ये चार्जयन्ति, सञ्चिन्वन्ति-भुञ्जते, ददते न च। उदाहरणाय—निदृश्यते, देवा न वर्षेयुरति-वृष्ट्या वा जगद् विदीयते तर्हि स्वस्माद् धनमदाद् दीनाना कष्ट न पृच्छन्ति। परमात्मनो न बिभ्यति तथा चाहु—

बैत

यदि अभाव के कारण कोई मर जाय।
तो मेरे पास तो है, बतख को बाढ़ से क्या डर है॥'

श्लोक

अभावे यदि धान्यस्य म्रियेरन्नितरे जना।
मद्गृहे चास्ति हसाना वीचिक्षोभात् कुतो भयम्॥ ९८॥'

शेर

और सवार होने वालियाँ, ऊँटनियों से अपने हौदों से।
नही ध्यान देती उसकी ओर जो डूब रहा है रेत में॥

श्लोक

उष्ट्रीपृष्ठे सुखासीना आसाद्य विष्टर स्त्रिय।
पश्यन्त्योऽपि न पश्यन्ति मरुगीर्णान् जनान् क्वचित्॥ ९९॥

बैत

नीच लोग जब अपने कम्बल को बाहर निकाल लेते हैं।
कहते हैं—क्या चिन्ता यदि सारा ससार मर जाय॥

श्लोक

कम्बल लभमानास्तु सन्तुष्टा नीचवृत्तय।
आहु—'सम्प्रति का चिन्ता नष्टे चेन् निखिल जगत्'॥ १००॥

एक वर्ग इस प्रकार का है जैसा कि तूने सुना है और ऐसा भी एक वर्ग है जो कि अपनी कृपाओं का दस्तरखान बिछाये रखता है, दया-पूर्वक भोजन का निमन्त्रण देकर घर में बुलाता है, सेवा के लिये कटिबद्ध रहता है, विनय से भौं खुली रखता है, (वे) सुयश और मुक्ति के इच्छुक हैं, इस लोक और परलोक के स्वामी हैं, जैसे कि सेवक हैं महाराजाधिराज, पृथ्वीनाथ, न्यायकारी, प्रभुसहाय, जेता, मानवों की बागडोर के स्वामी, इस्लाम के सीमारक्षक, सुलेमान के राज्य के उत्तराधिकारी, युग के नरेशों के न्यायकारी, ससार और धर्म के विजेता, अबूबक्र बिन् साद बिन् जगी के, प्रभु उनके दिन बढाये और उनके झण्डो को फहराता रखे।

धनिना सन्ति तावदेके तथा, यथा च भवाञ्छ्रुतवान् किन्तु सन्त्येके ये च स्वस्य सदावर्तमपावृत ददते, सानुरोधमतिथिमाहूय भोजयन्ति, सेवार्थं कटिबद्धा वर्तन्ते, विनयेन भ्रुवमकुञ्चित च ददते, सुकीर्ति-मुक्ति चापेक्षन्ते। त एवेहलोकपरलोकयो स्वामिन सन्ति। यथा हि सन्ति सेवका महाराजस्य, पृथ्वीनाथस्य, न्यायकारिण, प्रभु-सहायस्य, जेतु, मानवतावल्गाधुरीणस्य, इस्लामधर्मसीमान्त रक्षकस्य, सुलेमानस्योत्तराधिकारिण, स्वस्य कालवर्तिना नरेशाना न्यायकारिण, विश्वविजेतुर्धर्मजेतुरबूबक्र बिन् साद बिन् जगिन (तस्य राज्य चिर कुर्यात् केतुमुच्चतर प्रभु)।

क़ता

बाप भी पुत्र पर कभी इतनी कृपा नही करता।
कि तेरी उदारता के हाथ ने जितनी आदम के वश पर की है॥
प्रभु ने चाहा कि ससार पर अनुग्रह करे।
(अत) अपनी कृपा से तुझे दुनिया का राजा बना दिया॥

पदम्

पितापि स्वौरस पुत्र न चोपकुरुते तथा।
त्वया वरदहस्तेनोपकृता ह्यादिमप्रजा॥ १०१॥
उपकार च लोकेषु कर्तुमैच्छज्जगत्पति।
स्वीयया कृपया स त्वा विश्वराजमकल्पयत्॥ १०२॥

क़ाज़ी चूं सुख़न बदीं ग़ायत रसानीद व अज़ हद्दे क़यास मुबालिग़त नमूद मा नीज़ ब मुक़्तज़ाए हुक्मे क़ज़ा रज़ा दादेम् व अज़ माज़ी दर गुज़श्तेम्—व बाद अज़ मुहाबा तरीक़े मुदारा पेश गिरिफ़्तेम्—व सर ब तदारुक बर क़दमे यक दीगर निहादेम्—व बोसा बर सरो रूय दादेम् व ख़त्मे सुख़ुन बरीं बूद—

قاضی چوں سخن بدیں غایت رسانید و از حد قیاس مبالغت نمود ـ ما نیز بمقتضای حکم قضا رضا دادیم و از ماضی در گذشتیم ـ و بعد از محابا طریق مدارا پیش گرفتیم ـ و سر بتدارك بر قدم یکدگر نهادیم ـ و بوسه بر سر و روی دادیم ـ و ختم سخن بریں بود ـ

क़ता (बहरे मुज्तस़्)

मकुन ज़ि गर्दिशे गेती शिकायत ऐ दरवेश।
कि तीराबख़्ती अगर हमबरीं नसक़ मुर्दी॥
तवांगरा! चु दिलो दस्त कामरानत हस्त।
बिख़ुर—बबख़्श—कि दुनिया ओ आख़िरत बुर्दी॥

قطعه

مکن ز گردش گیتی شکایت ـ ای درویش!
که تیره‌بختی اگر هم بریں نسق مردی *
توانگرا! چو دل و دست کامرانت هست ـ
بخور ـ به بخش ـ که دنیا و آخرت بردی *

काज़ी जब वाणी को इस सीमा तक पहुँचा चुका और अनुमानातीत अत्युक्ति प्रदर्शित कर चुका तो हमने भी स्वेच्छा से नियति के आदेश को मान लिया और अतीत को भूल गये और विवाद के उपरान्त सन्धि का मार्ग पकड लिया और सिर को क्षमायाचना के रूप मे एक दूसरे के चरणो में रख दिया। और सिर और गालो पर चुम्बन दिये और कथन की समाप्ति इस (पद) पर हुई—

न्यायाधीशो यदेवमुक्तवान्, अनुमानातीतामतिशयोक्ति च दर्शितवांस्तर्हि आवामपि स्वेच्छया न्यायाधीशस्यादेश शिरोधार्यमकरवाव। अतीतञ्च विस्मृत्य विग्रहानुग सन्धिमार्गमगृह्णीवावयोश्च शिरसी क्षमायाच्ञयमन्योऽन्यस्य पादयोर्निक्षिप्य कपोलांश्च परिचुम्ब्य विवाद समाप्तिमनेष्वहीति।

क़ता

मत कर ससार के चक्कर की शिकायत हे साधु।
कि तेरा दुर्भाग्य होगा यदि ऐसी मन स्थिति में तू मर गया।।
हे धनी! जब तेरा हृदय और हाथ सफल है।
भोग कर और दान दे ताकि तू इस लोक और परलोक को प्राप्त करे।।

पदम्

विपर्यस्तस्य कालस्य साधो! मा भूरसूयक।
हा हन्त यदि मुञ्चेथा प्राणानेव मन स्थितौ।। १०३।।
आढ्य! त्वमाप्तकामोऽसि प्रकाम द्रविणैर्युत।
भुज्यता दीयता येन धन्योऽसि प्रेत्य चेह च।। १०४।।

باب هشتم

در آداب صحبت

نصیحت ۱

مال از برای آسایش عمرست - نه عمر از بهر گرد کردن مال * عاقلی را پرسیدند - "که نیکبخت کیست؟ و بدبخت کدام"؟ گفت - "نیکبخت آنکه خورد و کشت - و بدبخت آنکه مرد و هشت" *

بیت

مکن نماز بر آن هیچکس که هیچ نکرد
که عمر در سر تحصیل مال کرد و نخورد *

حکمت ۲

موسی (علیه السلام) قارون را نصیحت کرد - که "أَحْسِنْ كَمَا أَحْسَنَ اللهُ إِلَيْكَ" * نشنید - و عاقبتش شنیدی که چه دید *

قطعه

آنکس که بدینار و درم خیر نیندوخت
سر عاقبت اندر سر دینار و درم کرد *
خواهی متمتع شوی از نعمت دنیا
با خلق کرم کن که خدا با تو کرم کرد *

عرب گوید - خُذْ وَ لَا تَمُنَّ لِأَنَّ الْفَائِدَةَ إِلَيْكَ عَائِدَةٌ - یعنی - ببخش و منت منه - که نفع آن بتو باز گردد *

قطعه

درخت کرم هر کجا بیخ کرد
گذشت از فلک شاخ و بالای او *
گر امیدواری کزو بر خوری
بمنت منه اره بر پای او *

बाबे हश्तम्

दर आदावे सुहबत

नसीहत—१

माल अज़ बराय आसायशे उम्र'स्त—नै उम्र अज़ बहरे गिर्द करदन् माल। आक़िले रा पुरसीदन्द—'कि नेकबख़्त कीस्त? व बदबख़्त कुदाम?' गुफ़्त—'नेकबख़्त आँकि ख़ुर्द व किश्त—व बदबख़्त आँकि मुर्द व हिश्त।'

बैत (बहरे मुज्तस्)

मकुन नमाज़ बर आँ हेचकस कि हेच न कर्द।
कि उम्र दर सरे तहसीले माल कर्दो न ख़ुर्द॥

हिकमत—२

मूसा (अलैहि'स्सलाम) क़ारूँ रा नसीहत कर्द—कि—'अह्सिन कमा अह्सनल्लाहु इलैक।' न शुनीद—व आक़िबतश् शुनीदी कि चि दीद।

क़ता (बहरे हज्ज़)

आँ कस कि ब दीनारो दिरम ख़ैर नयन्दोख़्त।
सर आक़िबत अन्दर सरे दीनारो दिरम कर्द॥
ख़्वाही कि मुतमत्तिअ शवी अज़ निअमते दुनिया।
बा ख़ल्क़ करम कुन् कि ख़ुदा बा तु करम कर्द॥

अरब गोयद—'ख़ुज़् व ला तमुन्न् लि अन्न'ल् फ़ाइदत इलैक आइदतुन्।' यानी—'बिबख़्श—व मिन्नत मनिह्—कि नफ़ए आँ ब तो बाज़ मी गर्दद।'

क़ता (बहरे मुतक़ारिब)

दरख़्ते करम हर कुजा बेख़ कर्द।
गुज़श्त अज़ फ़लक शाख़ो बालाए ऊ॥
गर उम्मेदवारी कज़ू बर ख़ुरी।
ब मिन्नत मनिह् अर्रा बर पाये ऊ॥

आठवाँ अध्याय

संगति के शिष्टाचार के विषय में

उपदेश—१

धन जीवन की सुविधा के लिये है—जीवन धन जोडने के लिये नहीं है। किसी विद्वान् से लोगो ने पूछा—'कौन सौभाग्यशाली है? और अभागा कौन है?' उसने कहा—'सौभाग्यशाली वह है जो खाता है और बोता है, और अभागा वह है जो मर जाता है और छोड जाता है।'

बैत

मत पढ नमाज उस मुर्दे पर जिसने कुछ नहीं किया।
जिसने जीवन भर माल जोडा पर खाया नहीं॥

युक्ति—२

मूसा (उन पर शान्ति हो) ने कारूँ को उपदेश दिया कि—'उपकार कर जैसा कि उपकार किया परमात्मा ने तुझ पर।' उस ने नहीं सुना—और उसका अन्त तूने सुना ही है कि कैसा हुआ॥

क़ता

वह आदमी जिसने कि दीनार और दिरम से पुण्य नहीं कमाया।
उसने अन्त के सिरे को दीनार और दिरम में डाल दिया॥
यदि तू चाहता है कि लाभान्वित हो दुनिया की सम्पत्ति से।
लोगों पर कृपा कर जिससे कि परमात्मा तुझ पर कृपा करे॥

अरबी कहावत है—'बख्शिश कर और मत जता, इसका लाभ तुझ पर आता है।' अर्थात्—बख्श और अहसान मत जता—कि इसका नफा तुझ पर लौट कर आता है।

क़ता

कृपा का वृक्ष हर कहीं जड जमा लेता है।
गुज़र जाती हैं उसकी शाखाएँ और पत्ते आकाश से भी॥
यदि तू अपेक्षा करता है कि उससे फल खाये।
ऐहसान जता कर मत लगा आरा उसकी जड पर॥

अष्टमोऽध्यायः

लोकाचारे

उपदेश—१

अर्थो हि खलु जीवितस्य सुविधार्थं, न च जीवितं नु सञ्चयार्थं हि धार्यस्य। केचन विद्वांस पृष्टवन्त—'अथ कोऽस्ति सुभग कतमश्च दुर्भग इति?' सोऽब्रवीत्—'येन भुक्तमुप्तञ्च स सुभग यश्चार्थान् हित्वा मृत स दुर्भग इति।'

श्लोक

मा कृथा उत्तर कर्म ह्यकृतार्थस्य जन्मन।
कृपणस्य चितार्थस्यायुषि यो न च भुक्तवान्॥ १॥

युक्ति—२

मूसा (स्वस्त्यस्तु तस्मै सदा) कारून शासितवान् अथ—उपकार तथा कुर्या यथा त्वमुपकारित परमात्मनेति। स न शुश्राव—परिणाम तस्य जानासि यथाऽसौ ददर्शेति।

पदम्

यश्चापि धनधान्यैस्तु नैव पुण्यमुपार्जयेत्।
स स्वस्य परलोकं च दीनारात् प्रतियच्छति॥ २॥
इच्छेश्चेत् त्व धनैर्नित्य पार्थिवैरिह धन्यताम्।
भूतेष्वनुग्रह कुर्या यथाऽसि प्रभुणा कृत॥ ३॥

यथाहारव्यसूक्तिकार—'देहि मा ज्ञापयाय दानविकत्थनम्, ततोऽस्य पुण्य ते पुनरावतते।'

पदम्

मूल धरति सवत्र कृपावृक्षस्तु यत्नत।
भवेयुर्व्योमभेदिन्य शाखाश्चास्य शिखा विराट्॥ ४॥
फल भोक्तुमतो नित्य त्वया हि यदि काम्यते।
विकत्थनेन मा दध्या क्रकच चास्य मूलके॥ ५॥

ایضاً

شکر خدای کن که موفق شدی بخیر
ز انعام فضل او نه معطل گذاشتت *
منت منه که خدمت سلطان همی کنم
منت شناس ازو که بخدمت بداشتت *

ऐज़न (बह्‌रे मुज़ारी)

शुक्रे खुदाय कुन् कि मुवफ़्फ़क़ शुदी ब ख़ैर।
ज़ि इनआमे फ़ज़्ले ऊ नै मुअत्तल गुज़ाश्तत॥
मिन्नत मनिह् कि ख़िदमते सुल्तां हमी कुनम्।
मिन्नत शनास अज़ू कि ब ख़िदमत बिदाश्तत॥

حکمت ۳

دو کس رنج بیهوده بردند و سعی بی فائده کردند ـ یکی آنکه مال اندوخت و نخورد ـ دیگری آن که علم آموخت و عمل نکرد *

हिकमत—३

दु कस रंजे बेहूदा बुर्दन्द व सई बेफ़ायदा कर्दन्द—यके आं कि माल अन्दोख़्त व न ख़ुर्द—व दीगरे आंकि इल्म आमोख़्त व अमल न कर्द।

مثنوی

علم چندانکه بیشتر خوانی
چون عمل در تو نیست ـ نادانی *
نه محقق بود نه دانشمند
چار پائی برو کتابی چند *
آن تہی‌مغز را چه علم و خبر
که برو هیزمست یا دفتر؟

मसनवी (बह्‌रे ख़फ़ीफ़)

इल्म चन्दांकि बेशतर ख़्वानी।
चूं अमल दर तो नेस्त—नादानी॥
नै मुहक़्क़िक़ बुवद न दानिशमन्द।
चारपाए बरू किताबे चन्द॥
आं तिही मग़्ज़ रा चि इल्मो ख़बर।
कि बरू हैज़ुम'स्त या दफ़्तर॥

حکمت ۴

علم از بہر دین پروردنست ـ نه از برای دنیا خوردن *

हिकमत—४

इल्म अज़ बहरे दीन परवर्दन'स्त नै अज़ बराये दुनिया ख़ुर्दन्।

بیت

هر که پرهیز و علم و زهد فروخت
خرمنی گرد کرد و پاك بسوخت *

बैत (बह्‌रे ख़फ़ीफ़)

हर कि परहेज़ो इल्मो ज़ुह्द फ़रोख़्त।
ख़िरमने गिर्द कर्द ओ पाक बसोख़्त॥

پند ۵

عالم ناپرهیزگار کور مشعله دارست ـ یُهْدیٰ بِهٖ وَ هُوَ لا یَہْتَدِی *

पन्द—५

आलिमे ना परहेज़गार कूरे मशअलह् दार'स्त। 'युह्‌दा बिहि व हुव ला यह्‌तदी।'

بیت

بی فائده هر که عمر در باخت
چیزی نخرید و زر بینداخت *

बैत (बह्‌रे हज़ज्)

बे फ़ायदा हर कि उम्र दर बाख़्त।
चीज़े न ख़रीद व ज़र बयन्दाख़्त॥

ऐज़न

परमात्मा का कृतज्ञ हो कि तू उसकी कृपा से सहायता प्राप्त है।
कि उसके पुरस्कार और प्रसाद से उसने तुझे वंचित नहीं किया ।।
ऐहसान मत जता कि मैं राजा की सेवा करता हूँ।
उसका ऐहसान मान कि उसने तुझे सेवा में रखा ।।

अपरञ्च

स्तुवीया ईश्वर यस्य कृपया धनवानसि।
यस्य कृपाप्रसादेन न चासि खलु वञ्चित ।। ६ ।।
अल विकत्थनेनाल 'नरेश सेव्यते मया'।
कृतज्ञो भव यत्तेन सेवाया त्व नियोजित ।। ७ ।।

युक्ति—३

दो आदमी व्यर्थ कष्ट उठाते हैं और निष्फल प्रयत्न करते हैं, एक वह जो कि माल जोड़ता है और नहीं खाता और दूसरा वह जो कि विद्या पढ़ गया और आचरण नहीं किया।

युक्ति —३

द्वौ पुमासावहैतुक कष्ट विषहेतेऽफल च यतेते। तत्र प्रथमो यश्च धन सगृह्णाति न च भुङ्क्ते, अपरो यश्च श्रुतमभ्यास्ते न चाचाराय क्रमते।

मसनवी

विद्या चाहे जितनी ज्यादा से ज्यादा पढ़ ले।
जब आचरण तुझ में नहीं है तो तू नादान है।।
न विवेकी होता है और न बुद्धिमान्।
एक चौपाया कि जिस पर कुछ किताबें लदी हो।।
उस खाली मग़ज़ वाले को क्या ज्ञान और सूचना है।
कि उस पर ईंधन है या पुस्तक भण्डार।।

गाथा

विद्या तावद् यथेच्छस्त्व धारयेथा हृदि ध्रुवम्।
यद्याचारे न विद्येथा कृतविद्यो न प्रोच्यसे ।। ८ ।।
नास्ति विद्वान् न मतिमान् पाठमात्रेण कश्चन।
चतुष्पाद स निर्बुद्धिर्ग्रन्थमात्रस्य वाहन ।। ९ ।।
पशुस्तु रिक्तमस्तिष्को न तद्वेत्ति कथञ्चन।
पुस्तकानि नु वाह्यन्ते पृष्ठे तस्यायवेन्धनम् ।। १० ।।

युक्ति—४

विद्या धर्म के पालन के लिये है, सासारिक भोगो की उपलब्धि के लिये नहीं है।

युक्ति —४

धर्मसाधनार्थं हि श्रुत न च वैभवसञ्चयार्थमिति।

बैत

जो कि सयम, विद्या और तप को बेचता है।
वह अन्नराशि का सञ्चय करके जला देता है।।

श्लोक

यश्चापि सयम विद्या विक्रीणीते तपस्तथा।
स धान्यराशिमाधाय चाग्न्याधान करोति हि ।। ११ ।।

उपदेश—५

असयमी विद्वान् अन्धा मशालदार है।
'हिदायत की जाती है उसके द्वारा और वह नहीं हिदायत लेता।'

उपदेश —५

सयमहीनो विद्वान् उल्मुकधर इवान्ध। प्रदर्शयति सोऽध्वान स्वयमेव न पश्यति। १।

बैत

व्यर्थ ही जो कि उम्र खोता है।
उसने एक भी चीज नहीं खरीदी और सोना फेंक दिया ।।

श्लोक

दुर्लभ स्वस्य चायुष्य यश्च व्यर्थं प्रणाशयति।
क्रीणाति नापणे किञ्चिद् धन व्यर्थं प्रणाशयति ।। १२ ।।

حکمت ٦

ملك از خردمندان جمال گیرد - و دین از پرهیزگاران کمال پذیرد * پادشاهان بصحبت خردمندان از آن محتاج ترند که خردمندان بقربت پادشاهان *

हिकमत—६

मुल्क अज़ ख़िरदमन्दां जमाल गीरद—व दीन अज़ परहेज़गारां कमाल पिज़ीरद। पादशाहान् ब सोहबते ख़िरदमन्दान् अज़ आं मोहताजतर'न्द कि ख़िरदमन्दान् ब क़ुरबते पादशाहान्।

قطعه

پند اگر بشنوی - ای پادشاه!
در همه دفتر به ازین پند نیست -
جز خردمند مفرما عمل
گرچه عمل کار خردمند نیست *

कता (बहरे सरी)

पन्द अगर बिश्‌नवी ऐ पादशाह।
दर हमा दफ़्तर बिह अज़ी पन्द नेस्त॥
जुज़ ब ख़िरदमन्द मफ़रमा अमल।
गर्चे अमल कारे ख़िरदमन्द नेस्त॥

حکمت ٧

سه چیز بی سه چیز پایدار نماند - مال بی تجارت - و علم بی بحث - و ملك بی سیاست *

हिकमत—७

सिह् चीज़ बे सिह् चीज़ पायदार न मानद। माल बे तिजारत, व इल्म बे बहस, व मुल्क बे सियासत।

قطعه

وقتی بلطف گوی و مدارا و مردمی
باشد که در کمند قبول آوری دلی -
وقتی بقهر گوی - که صد کوزهٔ نبات
گه گه چنان بکار نیاید که حنظلی *

कता (बहरे मुज़ारी)

वक़्ते ब लुत्फ़ गोय् ओ मुदारा व मर्दुमी।
बाशद कि दर कमन्द क़बूल आवरी दिले॥
वक़्ते ब क़हर गोय कि सद कूज़ए नबात।
गह गह चुनां ब कार नयायद कि हन्ज़ले॥

حکمت ٨

رحم آوردن بر بدان ستمست بر نیکان - و عفو کردن از ظالمان جورست بر مظلومان *

हिकमत—८

रहम आवुर्दन् बर बदां सितम'स्त बर नेकां—व अफ़्व कर्दन् अज़ ज़ालिमां जौर'स्त बर मज़लूमान्।

بیت

خبیث را چو تعهد کنی و بنوازی
بدولت تو گنه میکند بانبازی *

बैत (बहरे मुज्तस्)

ख़बीस रा चु तअह्हुद कुनी ओ बिनवाज़ी।
ब दौलते तो गुनह मी कुनद ब अम्बाज़ी॥

حکمت ٩

بر دوستی پادشاهان اعتماد نباید کرد - و بر آواز خوش کودکان غره نباید شد - که آن بخیالی متبدل گردد - و آن بخوابی متغیر *

हिकमत—९

बर दोस्तीए पादशाहान् ऐतमाद न बायद कर्द—व बर आवाज़े ख़ुशे कूदकान् ग़र्रा न बायद शुद—कि ईं ब ख़याली मुतबद्दल गर्दद—व आं ब ख़्वाबे मुतग़य्यर।

بیت

معشوق هزار دوست را دل ندهی
ور میدهی آن دل بجدائی بنهی *

बैत (बहरे हजज़्)

माशूके हज़ारदोस्त रा दिल न दिही।
वर मी दिही आं दिल ब जुदाई बनिही॥

युक्ति—६

देश बुद्धिमानो से शोभित होता है—और धर्म सयमियो से पूणता पाता है। राजा लोग बुद्धिमानो के उपदेश के ज्यादा मोहताज हैं जितने कि बुद्धिमान् लोग राजाओ के सामीप्य के हैं।

युक्ति —६

देशो बुद्धिमद्भि शोभते, धर्मश्च सयमवद्भि पूर्णत्व लभते। राजान पण्डितोपदेशाना ततोऽपि मुखापेक्षतरा यतरा हि विद्वासो राजसन्निवेशस्येति।

कता

उपदेश यदि तू सुने हे राजा।
समस्त ग्रन्थो में इससे उत्तम उपदेश नही ह॥
सिवा बुद्धिमान् के मत सौंप राजकाज (किसी को)।
यद्यपि राजकाज बुद्धिमानो के लिये नही है॥

पदम्

शासन श्रोतुमिच्छेश्चेद् राजस्तर्हि ब्रवामहे।
यत्समस्तेपु ग्रन्थेपु लब्धु नार्हस्यतोधिकम्॥ १३॥
प्रज्ञावन्तमतिक्रम्य कस्मैचिन्न च दीयताम्।
राज्यकार्यं तथाप्येतत् पण्डिताय न कल्पितम्॥ १४॥

युक्ति—७

तीन चीजें विना तीन चीजो के स्थिर नही रहती। धन विना व्यापार के, विद्या विना शास्त्राथ के, और देश विना नीति के।

युक्ति —७

व्यापारेण विना वित्त शास्त्रार्थेन विना श्रुतम्।
श्रीण्येतानि न सिध्यन्ति राज्य च सुनय विना॥ २॥

क़ता

कभी कृपापूर्वक, कोमलतापूर्वक और उदारतापूवक वोल।
हो सकता है कि तू एक हृदय को रज्जुवद्ध कर ले॥
कभी क्रोधपूर्वक वोल, क्योकि सौ कूजा मिश्री।
कभी कभी उतना काम नही करती जितना कि ऊँट कटेरी॥

पदम्

कदाचित् करुणासिक्ता, कोमला पुरुपोचिताम्।
वाच वद यतश्चित्त लोकानामनुरञ्जये॥ १५॥
अथातोऽन्यतरे काले क्रुद्धा वाच च व्याहर।
सिता शततुलाऽसिद्धा सुसिद्धा कण्टकी क्वचित्॥ १६॥

युक्ति—८

दया करना बुरो पर, भलो पर अत्याचार है—और क्षमा करना अत्याचारियों को, पीडितो पर अत्याचार है।

युक्ति —८

दयाभाव कुवृत्तेपु अत्याचाराय भवति सज्जनेपु, क्षमाभावश्चाततायिपु हिसाय भवति दीनेष्विति।

वैत

दुरात्मा का यदि तू साथ निभाता है और उसका पालन करता है।
तो वह तेरी सम्पत्ति पर दृष्टिपात करेगा और शासन करेगा॥

श्लोक

दुजन यदि रक्षेस्त्व कुरुपे चास्य पालनम्।
गर्धिप्यति हि ते वित्त कृतघ्न स नराधम॥ १७॥

युक्ति—९

राजाओं की दोस्ती पर विश्वास नही करना चाहिये और वच्चो की मीठी आवाज़ पर गर्व न करना चाहिये। क्योंकि यह (वच्चो की आवाज़) जवानी में वदल जाती है और वह (राजाओं की मैत्री) एक जवाव में वदल जाती है।

युक्ति —९

विश्वास नैव कुर्वीत राज्ञा मैत्र्या कदाचन।
वालकाना सुकण्ठत्वे समुत्सेको न साम्प्रतम्॥ ३॥
यतस्तु यौवनप्राप्ते सुस्वर परिवर्तते।
मैत्री च वाक्यमात्रेण भूभुजा परिवर्तते॥ ४॥

वैत

हज़ार दोस्तो वाली वाला को दिल मत दे।
और यदि दे तो दिल को वियोग के लिये (तैयार) रख॥

श्लोक

सहस्रकाभिभि काम्या कामयस्व न कामिनीम्।
कामयेथा अथैना चेन्नाप्तकामो भविष्यसि॥ १८॥

پند ۱

هر آن سری که داری با دوست در میان منه ـ باشد که وقتی دشمن شود ـ و هر بدی که توانی بدشمن مرسان ـ باشد که روزی دوست گردد ـ و رازی که نهان خواهی با هیچ کس مگوی ـ اگرچه دوست مخلص باشد ـ که مر آن دوست‌را نیز دوستان باشند *

पन्द—१०

हर आँ सिर्रें कि दारी बा दोस्त दरमियाँ मनिह्—बाशद कि वक़्ते दुश्मन शवद—व हर बदी कि तवानी ब दुश्मन मरसाँ—बाशद कि रोज़े दोस्त गर्दद—व राज़े कि निहाँ ख़्वाही बा हेच कस मगोय—अगर्चे दोस्त मुख़्लिस बाशद—कि मर आँ दोस्त रा नीज़ दोस्ताँ बाशद।

قطعه

خامشی به که ضمیر دل خویش
با کسی گفتن ـ و گفتن که مگوی *
ای سلیم! آب ز سر چشمه ببند
که چو پر شد نتوان بستن جوی *

क़ता (बहरे रमल)

ख़ामुशी बिह् कि ज़मीरे दिले ख़ेश।
बा कसे गुफ़्तन्-ओ-गुफ़्तन् कि मगो॥
ऐ सलीम! आब ज़ि सर चश्मा बबन्द।
कि चु पुर शुद न तवाँ बस्तन् जोय्॥

فرد

سخنی در نهان نباید گفت
که بهر انجمن نشاید گفت *

फ़र्द (बहरे खफीफ)

सुख़ने दर निहाँ न बायद गुफ़्त।
कि ब हर अंजुमन न शायद गुफ़्त॥

حکمت ۱۱

دشمن ضعیف که در طاعت آید و دوستی نماید ـ مقصود وی جز آن نیست که دشمن قوی گردد ـ و گفته اند که بر دوستی دوستان اعتماد نیست ـ تا بتملق دشمنان چه رسد؟

हिकमत—११

दुश्मने ज़ईफ़ कि दर ताअत आयद व दोस्ती नुमायद—मक़सूदे वै जुज़ आँ नेस्त कि दुश्मने क़वी गर्दद—व गुफ़्ता अन्द—कि बर दोस्तिए दोस्ताँ ऐतमाद नेस्त—ता ब तमल्लुक़े दुश्मनान् चि रसद?

بیت

دوستانم ز دشمنان بترند
دشمنان خود علامت دگرند *

बैत (बहरे खफीफ)

दोस्तानम् ज़ि दुश्मनाँ बतर'न्द।
दुश्मनाँ ख़ुद अलामते दिगर'न्द॥

پند ۱۲

هر که دشمن کوچک‌را حقیر شمارد بدان می‌ماند که آتش اندک‌را مهمل می‌گذارد *

पन्द—१२

हर कि दुश्मने कूचक रा हक़ीर शुमारद बदाँ मी मानद कि आतिशे अन्दक रा मुहमिल मी गुज़ारद।

قطعه

امروز بکش که میتوان کشت
کاتش که بلند شد جهان سوخت *
مگذار که زه کند کمان‌را
دشمن که به تیر میتوان دوخت *

क़ता (बहरे हजज्-मुसद्दस)

इमरोज़ ब कुश कि मी तवाँ कुश्त।
कातिश कि बुलन्द शुद जहाँ सोख़्त॥
म गुज़ार कि ज़िह कुनद कमाँ रा।
दुश्मन कि ब तीर मी तवाँ दोख़्त॥

उपदेश—१०

हर वह रहस्य जो कि तू रखता है, मित्र के साथ बीच में मत रख (मित्र को मत बता) हो सकता है कि कभी वह शत्रु हो जाय। और हर बुराई जो तू कर सकता है, शत्रु के साथ मत कर—हो सकता है एक दिन वह मित्र बन जाय। और वह भेद जो कि तू छिपा रखना चाहता है किसी से मत कह। यद्यपि मित्र सच्चा है, पर उस मित्र के भी मित्र और हैं।

कता

मौन अच्छा है (बजाय इसके कि) अपने दिल की बात।
किसी से कहना और कहना कि (यह किसी से) मत कहना॥
अरे भोले! पानी को स्रोत के मुँह पर रोक।
क्योंकि जब भर जायगा तो नदी नही रोकी जा सकेगी॥

फर्द

छिपी हुई वह बात कहना उचित नही है।
जो कि हर सभा में नही कही जा सके॥

युक्ति—११

निर्बल शत्रु जो कि विनय करता है और दोस्ती जताता है, उसका उद्देश्य इसके सिवा कुछ नही है कि प्रबल शत्रु बन जाय। और कहा है कि—दोस्तो की दोस्ती का ही भरोसा नही है तो शत्रुओं की खुशामद से ही क्या मिलने वाला है।

बैत

मेरे मित्र शत्रुओ से ज्यादा बुरे हैं।
जो दुश्मन हैं उनकी तो अलामत ही और है॥

उपदेश—१२

वह जो कि छोटे शत्रु को तुच्छ समझता है, उसके तुल्य होता है जो कि थोडी आग को महत्वहीन मानता है।

कता

आज ही बुझा दे कि बुझा सकता है।
क्योंकि आग जब ऊँची हो जाती है दुनिया को जला डालती है॥
मत लापरवाही कर कि (अभी तो) धनुष पर प्रत्यंचा ही चढा रहा है।
शत्रु तीर से छेद सकता है॥

उपदेश—१०

सर्वं यद् रहस्य दधासि तन् मित्र मा ब्रूहि। सम्भाव्यतेऽय कदाचिद-मित्रो भवेत्। न च, तत् कृत्स्नमपकार यत्कर्तुमर्हसि, प्रवर्तेथा द्विषन्त प्रति, सम्भाव्यतेऽय कदाचिदसौ मित्रत्वमुपयाति। अथ च यद् गुह्य निगूहितमिच्छसि मा तत्कञ्चिदपि ब्रूहि।

मित्र सौहार्दयुक्तञ्च सुप्रतीतञ्च वर्तते।
तथापि सुहृदा प्रायो मित्राण्यन्यानि सन्ति हि॥ ५॥

पदम्

'मा वोचथा इद कञ्चिद्' इत्युक्त्वा मन्त्रभेदनात्।
मा वोचथा स्वय चैव मौन श्रेयस्कर परम्॥ १९॥
मूढ! स्रोतोमुख रुन्ध्या, स्रोतसो मुखनिर्गत।
यदा पूरसमुच्छ्राय सयन्तु स न शक्यते॥ २०॥

श्लोक

इङ्गितेनापि तद् गुह्य वक्तु नैवोपयुज्यते।
परिषत्सु च सर्वासु प्रकाश यन्न चार्हति॥ २१॥

युक्ति—११

यो हीनबल शत्रुर्विनय दधाति, मित्रभाव च दर्शयति, नान्यदस्य मन्तव्यमृते प्रबलशत्रुत्वादिति। उक्त हि—

सुहृदामपि सौहार्दं सशयापन्नमेव हि।
द्विषता चाटुवाक्येभ्य का ससिद्धिरपेक्ष्यते॥ ६॥

श्लोक

शत्रूनतीत्य मित्राणि सन्ति कष्टतराणि मे।
ये सन्ति खल्वमित्राणि तेषामन्यतरा गति॥ २२॥

उपदेश—१२

य क्षोदीयान्स शत्रुमकिञ्चनमिति कृत्वा मन्यते स तत्तुल्यो भवति य अणीयास हुताशनमल्पमिति कृत्वा न निर्वापयति।

पदम्

उद्बुद्ध्यनल दाव क्षय्यमद्यैव निर्वपे।
समुद्बुद्धे दवाग्नौ च कृत्स्न विश्व प्रदाह्यते॥ २३॥
धनुषि ज्या प्रकुर्वन्त मा सृजस्त्वाततायिनम्।
ज्यायुक्ताद् धनुष सृष्ट बाण त्वा हन्तुमर्हति॥ २४॥

حکمت ۱۳

سخن درمیان دو دشمن چنان گوی که گر دوست گردند ـ شرمنده نباشی *

مثنوی

میان دو تن جنگ چون آتشست
سخن چین بدبخت هیزم کش ست *
کند این و آن خوش دگر باره دل
وی اندر میان کوربخت و خجل *
میان دو کس آتش افروختن
نه عقلست ـ و خود درمیان سوختن *

قطعه

در سخن با دوستان آهسته باش
تا ندارد دشمن خونخوار گوش *
پیش دیوار آنچه گوئی هوش دار
تا نباشد در پس دیوار گوش *

حکمت ۱۴

هر که با دشمنان صلح میکند سر آزار دوستان دارد *

بیت

بشوی ـ ای خردمند! زآن دوست دست
که با دشمنانت بود هم نشست *

پند ۱۵

چون در امضای کاری متردد باشی ـ آن طرف اختیار کن که بی‌آزار باشد *

بیت

با مردم سهل خوی دشوار مگوی
با آن که در صلح زند جنگ مجوی *

حکمت ۱۶

تا کار بزر کان بر آید جان در خطر افگندن نشاید *

عرب گوید ـ آخِرُ الحِیَلِ السَّیفُ *

पंद—१३

सुख़ुन दर मियाने दु दुश्मन चुनां गोयी कि—अगर दोस्त गदन्द—शर्मिन्दा न बाशी।

मसनवी (बहरे मुतक़ारिब)

मियाने दु तन जग चूं आतिश'स्त।
सुख़ुनचीने बदबख़्त हैज़ुम कश'स्त॥
बुनन्द ईन् ओ आं ख़ुश दिगर बारा दिल।
वे अन्दर मियां कूरबख़्त ओ ख़जिल॥
मियाने दू कस आतिश अफ़रोख़्तन्।
नै अक़्ल'स्त—ओ ख़ुद दरमियां सोख़्तन्॥

क़ता (बहरे रमल-मुसद्दस)

दर सुख़ुन बा दोस्तां आहिस्ता बाश।
ता न दारद दुश्मने ख़ूंख़्वार गोश॥
पेशे दीवार आंचि गोयी होश दार।
ता न बाशद दर पसे दीवार गोश॥

हिकमत—१४

हर कि बा दुश्मनां सुलह मी कुनद सरे आज़ारे दोस्तां दारद।

बैत (बहरे मुतकारिब)

बिशूय ऐ ख़िरदमन्द ज़ां दोस्त दस्त।
कि बा दुश्मनानत बुवद हम निशस्त॥

पंद—१५

चूं दर इम्ज़ाये कारे मुतरद्दिद बाशी—आं तरफ़ इख़्तियार कुन् कि बेआज़ार बाशद।

बैत (बहरे हज़ज)

बा मर्दुमे सहल ख़ूये दुश्वार मगोय्।
बा आंकि दरे सुल्ह ज़नद जंग म जोय्॥

हिकमत—१६

ता कार ब ज़रे कान बर आयद जान दर ख़तर अफ़गन्दन् न शायद।

अरब गोयद—'आख़िरुल् हीयलि'स्सैफ़ु।'

उपदेश—१३

दो वैर करने वालो के बीच मे बात ऐसे कह कि यदि वे मित्र बन जायें तो तू लज्जित न हो।

मसनवी

दो आदमियो के बीच की लडाई आग जैसी है।
चुगलखोर अभागा ईंधन डालने वाला है॥
यदि यह और वह मित्र हो जांय।
वह बीच वाला अभागा और लज्जित होता है॥
दो आदमियो के बीच में आग जलाना।
और स्वय उसमें जल जाना बुद्धिमानी नही है॥

क़ता

बोलते समय मित्रो से धीरे बोल।
ताकि भयकर शत्रु कान न लगाये॥
दीवार के सामने जो तू बोलता है तो सावधान रह।
कही न हो दीवार के पीछे कान (लगे हुए)॥

युक्ति—१४

जो कि दुश्मनो से दोस्ती करता है मित्रो को हानि पहुँचाता है।

बैत

धो ले, हे बुद्धिमान्! उस दोस्त से हाथ।
जो कि तेरे शत्रुओं के साथ उठता बैठता हो॥

उपदेश—१५

जब कार्य की सिद्धि में तुझे संशय हो—तो वह पक्ष ग्रहण कर जो कि हानि रहित हो।

बैत

सरल स्वभाव के व्यक्ति से कठोर वचन मत बोल।
उसके साथ, जो सुल्ह का द्वार खटखटाए, मत लड॥

युक्ति—१६

जब तक कि काम खान के सोने से निकलता हो, प्राण सकट में डालना उचित नही है। अरबी कहावत है—'अन्तिम उपाय तलवार है।'

उपदेश —१३

द्वयो सञ्जातभेदयोर्मध्ये वाचमेव वद यथा तयोर्मित्रत्वे सञ्जाते लज्जितो न स्या ।

गाथा

विग्रहस्तु द्वयोर्मध्ये कृष्णवर्त्मेव भीषण ।
पिशुनो दुर्भगस्तत्र समित्क्षेपकर स्मृत ॥ २५ ॥
अथ विग्रहवन्तौ चेदाचरेताम् हि मित्रताम् ।
पिशुनोऽस्ति तयोर्मध्ये दुर्गतश्चैव लज्जित ॥ २६ ॥
द्वयो पुरुषयोर्मध्ये पैशुन्यादग्निरोपणम् ।
आत्महोम पराग्नौ च नैतत् पण्डितलक्षणम् ॥ २७ ॥

पद्यम्

मन्त्रयान सुहृन्मित्रै कुर्वीथा मन्दभाषणम् ।
यतो नाकर्ण्यसेऽमित्रैरुद्धतै प्राणघातकै ॥ २८ ॥
ब्रुवाणोऽभिमुख भित्ति सन्धत्स्व सावधानताम् ।
मा भूत् तत्र क्वचित् कश्चिद् भित्तिकर्णो निगूहित ॥ २९ ॥

युक्ति —१४

य शत्रुषु मित्रायते स मित्राणि हिनस्ति ।

श्लोक

मा मस्थास्तेन मित्रेणात्मान त्व सुसख खलु ।
यस्ते मित्रायतेऽमित्रै समासीन समासने ॥ ३० ॥

उपदेश —१५

यदि कार्यसिद्धौ सशय स्यात् र्तीह तस्य त पक्षमवलम्बेथा यश्च हानिविवर्जित स्यात् ।

श्लोक

स्वभावसरले मा मा वोचो वाचाऽथ रूक्षया ।
सन्धिद्वार प्रहरता नैव योद्धु त्वमर्हसि ॥ ३१ ॥

युक्ति —१६

यावत् खनिजस्वर्णेन कार्यसिद्धि प्रजायते ।
तावत् सशयमारूढानसून् कर्तुं न युज्यते ॥ ७ ॥
यथाह आरब्य सूक्तिकार —'असिरेवान्तिमा गति ।'

بیت

چو دست از همه حیلتی در گسست
حلالست بردن بشمشیر دست *

حکمت ۱۷

بر عجز دشمن رحمت مکن - که اگر قادر شود بر تو نبخشاید *

بیت

دشمن چو بینی ناتوان - لاف از بروت خود مزن
مغزیست در هر استخوان - مردیست در هر پیرهن *

حکمت ۱۸

هر که بدی‌را بکشد - خلق‌را از بلای بزرگ برهاند - و اورا از عذاب خدای *

قطعه

پسندیده است بخشایش - و لیکن
منه بر ریش خلق آزار مرهم *
ندانست آنکه رحمت کرد بر مار
که این ظلمست بر فرزند آدم؟

حکمت ۱۹

نصیحت از دشمن پذیرفتن خطاست - و لیکن شنیدن رواست تا بخلاف آن کار کنی - و آن عین صواست *

مثنوی

حذر کن زآنچه دشمن گوید "آن کن"
که بر زانو زنی دست تغابن *
گرت راهی نماید راست چون تیر
ازو بر گرد و راه دست چپ گیر *

حکمت ۲۰

خشم بی‌حد وحشت آرد - و لطف بی‌وقت هیبت ببرد *
نه چندان درشتی کن که از تو سیر گردند - و نه چندان نرمی که بر تو دلیر شوند *

बैत (बहरे मुतक़ारिब)

चु दस्त अज़ हमा हीलते दर गुसस्त।
हलाल'स्त बुर्दन् ब शमशीर दस्त॥

हिकमत—१७

बर इज़्ज़े दुश्मन रहमत मकुन—कि अगर क़ादिर शवद बर तो न बख़्शायद।

बैत (बहरे हज़ज्)

दुश्मन चु बीनी नातवाँ लाफ अज़ बुरुते ख़ुद मज़न।
मग्ज़े'स्त दर हर उस्तुख्वाँ मर्दे'स्त दर हर पैरहन॥

हिकमत—१८

हर कि बदे रा बिकुशद—ख़ल्क़ रा अज़ बलाये बुज़ुर्ग बरिहानद—व ऊरा अज़ अज़ाबे ख़ुदाय।

क़ता (बहरे हज़ज्)

पसन्दीदा'स्त बख़्शायश् वलेकिन।
मनिह् बर रेशे ख़ल्क़ आज़ार मरहम॥
न दानिस्त आँकि रहमत कर्द बर मार।
कि ईं ज़ुल्म'स्त बर फ़र्ज़न्दे आदम॥

हिकमत—१९

नसीहत अज़ दुश्मन पिज़ीरफ़्तन् ख़ता'स्त—व लेकिन शुनीदन् रवा'स्त ता ब ख़िलाफ़े आँ कार कुनी—व आँ ऐने सवाब'स्त।

मसनवी (बहरे हज़ज्)

हज़र कुन् ज़ाँ चि दुश्मन गोयद 'आँ कुन्'।
कि बर ज़ानू ज़नी दस्ते तग़ाबुन॥'
गरत राहे नुमायद रास्त चूँ तीर।
अज़ू बर गिर्द ओ राहे दस्ते चप गीर॥

हिकमत—२०

ख़िश्मे बेहद वहशत आरद—व लुत्फ़े बेवक़्त हैबत बिबुरद
नै चन्दाँ दुरुश्ती कुन् कि अज़ तो सेर गर्दन्द—व नै चन्दाँ नरमी कि बर तो दिलेर शवन्द।

बैत

जब हाथ सारे उपायो से गुज़र जाय।
धर्मसम्मत है, उठाना, शस्त्र सहित हाथ॥

श्लोक

सर्वोपाये व्यपगते यदा हस्तमतिष्ठितम्।
धर्मानुमोदित तर्हि प्रोक्त वै शस्त्रधारणम्॥ ३२॥

युक्ति—१७

शत्रु की निर्बलता पर दया मत कर—क्योकि यदि वह प्रबल हो गया तो तुझे नही छोडेगा।

युक्ति —१७

द्विपतोऽसामर्थ्ये कारुण्य मा कार्षी। यद्यसौ समर्थ स्यात् स न त्वा विसहिष्यते।

बैत

शत्रु को जब तू निर्बल देखे तो डीग से मूँछ मत मरोड।
हर हड्डी में गूदा होता है, हर पोशाक में एक मर्द होता है॥

श्लोक

द्विषन्त निबल दृष्ट्वा दर्पात् श्मश्रु न साधये।
शुष्कास्थिनि भवेन्मज्जा शूरश्च जीर्णवाससि॥ ३३॥

युक्ति—१८

जो कोई बुरे आदमी को मार देता है—ससार को बडे सकट से छुडा देता है और उसको परमात्मा के दण्ड से।

युक्ति —१८

यश्चाततायिन हन्यात् त्रासान्मोचयते जगत्।
तथाततायिन चैव दैवदण्डात् स मोचयेत्॥ ८॥

कता

कृपा भाव प्रशमनीय है किन्तु।
मत रख लोक पीडक के घाव पर मरहम॥
क्या नहीं ज्ञात है कि दया करना साँप पर।
अत्याचार है मानव सन्तान पर॥

पदम्

श्रेयोवहा दया नित्य सर्वभूतेषु किन्तु वै।
लोकशल्यस्य शल्येषु मा निधा अगद पुन॥ ३४॥
अथवा किं न जानासि विषदष्ट्रेषु वै दया।
मर्त्येष्वप्रतिकारेषु हिंसायै परिकल्प्यते॥ ३५॥

युक्ति—१९

शत्रु से शिक्षा लेना भूल है। किन्तु (शत्रु की बात) सुनना विहित है। ताकि तू उसके प्रतिकूल आचरण करे, और वह नितान्त उचित है।

युक्ति —१९

द्विषत उपदेशग्रहणमसिद्ध किञ्च श्रवण विहितम्। यतस्तद्-विरुद्धमाचरेस्तच्च सर्वथा युक्तमिति।

मसनवी

सावधान रह उससे जो कि शत्रु कहे कि 'यह कर'।
क्योंकि (अन्यथा) जाँघ पर पीटेगा पश्चात्ताप का हाथ॥
यदि तुझे (वह) राह बताये दाईं ओर, तीर की तरह।
उससे मुड आ, और बाँए हाथ का रास्ता पकड॥

गाथा

'इद कार्यमिति' ब्रूते शत्रुस्तर्हि विचारये।
अन्यथा ताडयञ्जघा रोदितासि प्रतारित॥ ३६॥
अगुल्या निर्दिशन् मार्ग दक्षिण चेत् स यतते।
तमुत्सृज्य धिया नित्य सव्य मार्गमनुस्मर॥ ३७॥

युक्ति—२०

अत्यन्त क्रोध आतक फैलाता है—और असमय की कृपा आदर नष्ट कर देती है। न इतनी कठोरता कर कि लोग तुझ से अघा जाँय—और न इतनी नम्रता कि लोग तुझ पर प्रचण्ड हो जाँय।

युक्ति —२०

क्रोधात्ययो भयमावहति, अकालकृपा च प्रभाव हिनस्ति। न चैतावत्या परुषतया वर्तेथा यथा लोकास्त्वत्तो निर्विण्णा भवेयुर्न चैतावत्या तृपया यथा त्वय्युद्धता स्युरिति।

مثنوی

درشتی و نرمی بهم در بهست
چو رگ‌زن ـ که جراح و مرهم نهست *
درشتی نگیرد خردمند پیش
نه سستی که ناقص کند قدر خویش *
نه مر خویشتن را فزونی نهد
نه یکباره تن در زبونی دهد *

ایضاً

شبانی با پدر گفت ـ ای خردمند!
مرا تعلیم کن پیرانه یك پند *
بگفتا ـ نیك مردی کن ـ نه چندان
که گردد خیره گرگ تیز دندان *

حکمت ۲۱

دو کس دشمن ملك و دینند ـ پادشاه بی‌حلم و زاهد بی‌علم *

بیت

بر سر ملك مباد آن ملك فرمان ده
که خدارا نبود بندهٔ فرمان بردار *

حکمت ۲۲

پادشاه‌را باید که خشم بر دشمنان تا حدی نراند که دوستان‌را برو اعتماد نماند ـ که آتش خشم اول در خداوند خشم افتد ـ پس آنگه زبانه بخصم رسد یا نرسد *

مثنوی

نشاید بنی آدم خاکزاد
که در سر کند کبر و تندی و باد *
ترا با چنین تندی و سرکشی
نپندارم از خاکی ـ از آتشی *

قطعه

در خاك بیلقان برسیدم بعابدی
گفتم ـ مرا بتربیت از جهل پاك کن *

मसनवी (वहरे मुतक़ारिव)

दुरुश्ती व नरमी वहम दर विह्'स्त।
चु रगज़न कि जर्राहो मरहम निह्'स्त॥
दुरुश्ती न गीरद ख़िरदमन्द पेश।
नै सुस्ती कि नाक़िस कुनद क़द्रे ख़ेश॥
नै मर ख़ेशतन रा फ़ुज़ूनी निहद।
नै यक वारा तन दर ज़िवूनी दिहद॥

ऐज़न (वहरे हज़ज)

शवाने वा पिदर गुफ़्त—ऐ ख़िरदमन्द।
मरा तालीम कुन पीराना यक पन्द॥
विगुफ़्ता—नेकमर्दी कुन्—नै चन्दाँ।
कि गर्दद ख़ीरा गुर्गे तेज़ दन्दाँ॥

हिकमत—२१

दु कस दुश्मने मुल्को दीन'न्द—पादशाहे वेहिल्म व ज़ाहिदे वेइल्म।

वैत (वहरे रमल)

वर सरे मुल्क म वाद आँ मलिके फ़रमाँदिह।
कि ख़ुदा रा न वुवद वन्दाए फ़रमाँ वरदार॥

हिकमत—२२

पादशाह रा वायद कि ख़िश्म वर दुश्मनाँ ता व हद्दे न रानद कि दोस्ताँ रा वरू ऐतमाद न मानद—कि आतिशे ख़िश्म अव्वल दर ख़ुदावन्दे ख़िश्म उफ़्तद—पस आँगह ज़ुवाना व ख़स्म रसद या न रसद।

मसनवी (वहरे मुतक़ारिव)

न शायद वनी आदमे ख़ाकज़ाद।
कि दर सर कुनद किब्रो तुन्दी ओ वाद॥
तुरा वा चुनी तुन्दी ओ सरकशी।
न पिन्दारम् अज़ ख़ाकी—अज़ आतिशी॥

क़ता (वहरे मुज़ारी)

दर ख़ाके वेलक़ाँ विरसीदम् व आविदे।
गुफ़्तम्—मरा व तरवियत अज़ जेहल पाक कुन॥

मसनवी

कठोरता और नम्रता एक साथ अच्छी रहती हैं।
जैसे कि शिरामोक्षण करने वाला जो काटता भी है और मरहम भी लगाता है।।
कठोरता नहीं करता बुद्धिमान् काम पडने पर।
न वह आलस्य जो कि क्षीण कर दे अपना मूल्य।।
न अपने को महान् मानता है।
न बिलकुल अपनी अवज्ञा करता है।।

गाथा

काठिन्य मार्दवं चेति युगपच्छ्रेयसी मते।
शिरामोक्षणकृद्वद् यश्छेदे लेपे सम पटु ।। ३८ ।।
काठिन्य नैव गृह्णीयात् पण्डित कार्यसाधने।
नोपेयान्मृदुतालस्य पर्य्येनावमीयते ।। ३९ ।।
नात्मान हि महात्मान दध्यादाध्मातगौरव ।
तथा च सर्वथा हीन कृत्वाऽपि न विडम्वयेत् ।। ४० ।।

ऐज़न

एक ग्वाले ने बाप से कहा—हे बुद्धिमान्।
मुझे शिक्षा दे एक बुजुर्गी भरे उपदेश से।।
उसने कहा—भलाई कर, पर इतनी नहीं।
कि प्रचण्ड हो जाय प्रचण्ड दाँतो वाला भेडिया।।

अपरञ्च

गोपाल पितर कश्चित् पृष्टवानथ पण्डित ।
ज्ञानवृद्धेन चैकेन श्रुतेनाथ प्रशाधि माम् ।। ४१ ।।
उवाच स्थविर —'पुत्र ! दयावास्त्व समाचर।
न तथा तीक्ष्णदंष्ट्रस्तु वृको येनास्तु निर्भय ' ।। ४२ ।।

युक्ति—२१

दो आदमी देश और धर्म के शत्रु हैं—नम्रताहीन राजा और विद्याहीन साधु।

युक्ति —२१

द्वौ जनौ राष्ट्रहन्तारौ विद्वद्भि परिकीर्तितौ।
विनयाद् रहितो राजा साधुर्ज्ञानविवर्जित ।। ६ ।।

बैत

देश के ऊपर मत हो वह आदेश देने वाला राजा।
जो कि भगवान का आज्ञाकारी सेवक न हो।।

श्लोक

मा भूदेव पृथिव्या स भूपतिर्देशपालक ।
ईश्वरस्य तु यो न स्याद् दासश्चादेशपालक ।। ४३ ।।

युक्ति—२२

राजा को चाहिये कि वह शत्रुओ पर इतना क्रोध न करे कि मित्रो का उस पर विश्वास न रहे। क्योकि क्रोध की अग्नि पहले क्रोधी पर पडती है—फिर उसके बाद उसकी लपट शत्रु तक पहुँचे या न पहुँचे।

युक्ति —२२

राजा शत्रुषु तथा कोप न कुर्वीत यथा मित्राणामपि तस्मिन् विश्वासो न स्यात्। यत क्रोधाग्निरर्वाक् क्रुद्ध दहति तदानी तस्यार्चय शत्रून्दहति वा न वा।

मसनवी

नहीं उचित है मिट्टी से बने मनुष्य के लिये।
कि सिर में करे गर्व तेज़ी और अहकार।।
तुझको ऐसी तेज़ी और सरकशी के कारण।
मैं नहीं समझता मिट्टी से उत्पन्न, (बल्कि) अग्नि सम्भव।।

गाथा

पृथ्वीतत्त्वप्रधानेभ्य पुरुषेभ्यो न शोभते।
अभिमानमर्षैर्यञ्च दम्भोत्सेकस्य धारणम् ।। ४४ ।।
एतावान् हि भवान् दृप्तोऽश्रद्दधानश्च वर्तते।
भवन्तमग्निसम्भूत मन्ये न खलु पार्थिवम् ।। ४५ ।।

कता

वेलकान भूमि में मैं एक महात्मा के पास पहुँचा।
मैंने कहा—'मुझे उपदेश के द्वारा जडता से पवित्र कर।।'

पदम्

वेलकानानह गत्वा प्राप्तश्च मुनिसत्तमम्।
उक्तवास्तमह साधो! शाधि मा दोषशान्तये ।। ४६ ।।

گفتا - برو چو خاك تحمل كن - اى فقيه!
يا هرچه خواندهٔ - همه در زير خاك كن *

गुफ्ता—बिरौ चु ख़ाक तहम्मुल कुन ऐ फ़क़ीह ।
या हर चि ख़्वान्दई—हमा दर ज़ेरे ख़ाक कुन ।।

حكمت ۲۳

بد خوى بدست دشمنى گرفتارست كه هر كجا كه رود از چنگ عقوبت او خلاص نيابد *

हिकमत—२३

बदख़ू ब दस्ते दुश्मने गिरिफ्तार'स्त—कि हर कुजा कि रवद अज़ चंगे उक़ूबते ऊ ख़लास न याबद ।

بيت

اگر ز دست بلا بر فلك رود بدخوى
ز دست خوى بد خويش در بلا باشد *

बैत (बहरे मुज्तस्)

अगर ज़ि दस्ते बला बर फ़लक रवद बदख़ू ।
ज़ि दस्ते ख़ूये बदे ख़ेश दर बला बाशद ।।

حكمت ۲۴

چو بينى كه در سپاه دشمن مفارقت افتاد - تو جمع باش - و اگر جمعند - از پريشانى خود انديشه كن *

हिकमत—२४

चु बीनी कि दर सिपाहे दुश्मन मुफ़ारक़त उफ़्ताद—तु जमा बाश—व अगर जमा अन्द—अज़ परेशानिये ख़ुद अन्देशा कुन ।

قطعه

برو - با دوستان آسوده بنشين
چو بينى در ميان دشمنان جنگ -
و گر دانى كه باهم يكزبانند
كمان‌را زه كن و بر باره بر سنگ *

क़ता (बहरे हज़ज्)

बिरौ बा दोस्ताँ आसूदा बिनशीं ।
चु बीनी दर मियाने दुश्मनाँ जंग ।।
व गर दानी कि बाहम यक ज़ुबान'न्द ।
कमाँ रा ज़िह कुन् ओ बर बारा बुर संग ।।

حكمت ۲۵

دشمن چون از همه حيلها در ماند - سلسلهٔ دوستى بجنباند * آنگه بدوستى كارها كند كه هيچ دشمن نتواند *

हिकमत—२५

दुश्मन् चू अज़ हमा हीलहा दर मानद—सिलसिलाए दोस्ती बजुम्बानद । आँगह ब दोस्ती कारहा कुनद कि हेच दुश्मन् न तवानद ।

پند ۲۶

سر مار بدست دشمن بكوب - كه از اِحدَى الحُسنَيَين خالى نباشد - اگر دشمن غالب آمد مار كشتى - و گرنه از دشمن برستى *

पंद—२६

सरे मार ब दस्ते दुश्मन बिकोब—कि अज़—'अह्द'ए हुस्नैन'—ख़ाली न बाशद—अगर दुश्मन ग़ालिब आमद मार कुश्ती—वगरना अज़ दुश्मन बिरस्ती ।

بيت

بروز معركه ايمن مشو ز خصم ضعيف
كه مغز شير بر آرد چو دل ز جان برداشت *

बैत (बहरे मुज्तस्)

ब रोज़े मारका ऐमन मशौ ज़ि ख़स्मे ज़ईफ़ ।
कि मग़्ज़े शेर बर आरद चु दिल ज़ि जाँ बरदाश्त ।।

बोले—'जा! धरती जैसा धीरज रख हे घमश।
या जो कुछ तूने पढा है उस सब को धरती में गाड दे॥'

श्रुते स्मासौ अरे विद्वन्! धीरो भूया धरा यथा।
नो चेत् सर्वं श्रुत ज्ञातमधीत भुवि निक्षिपे॥४७॥

युक्ति—२३

बुरी प्रकृति वाला व्यक्ति एक शत्रु के हाथो में बन्दी है, क्योंकि वह जहाँ कही जायगा, उसके दण्ड के चगुल से मुक्ति नही पा सकता।

युक्ति—२३

दु शील पुरुषो रिपुजुष्ट इव वर्तते। यत्र यत्रासौ गच्छति तत्र तत्रात्मन कुवृत्तिकोपान्न मुच्यते।

बैत

यदि सकट के हाथ से छूट कर आकाश पर चला जाय कुवृत्त।
तो भी अपनी कुवृत्ति के हाथो सकट में रहेगा॥

श्लोक.

दुर्भाग्यपाशमुक्त सन् दुर्वृत्तश्चेद् दिव गत।
दुष्प्रवृत्तिप्रवृत्त स तत्रापि याति दुर्गतिम्॥४८॥

युक्ति—२४

जब तू देखे कि शत्रु की सेना में फूट पड़ी है, तू निर्भय हो जा। और यदि वे सगठित हो तो अपने सकट से सतर्क हो जा।

युक्ति—२४

यदा त्व पश्येरथ शत्रुकटके भेद सञ्जातस्त्व निर्भय विहर। अथ चेत् ते सघबद्धास्तर्हि आत्मभयहेतु विज्ञाय सावधानो भव।

क़ता

जा! अपने मित्रो के साथ सुख से बैठ।
जब तू देखे शत्रुओ में लडाई और झगडा॥
और यदि तू समझे कि वे परस्पर एक स्वर हो गये है।
तो धनुष् पर प्रत्यञ्चा चढा ले और किले पर पत्थर॥

पदम्

याहि मित्रकलत्रैस्तु सुखासीन समास्स्व हि।
यदा पश्यस्यमित्रेषु सगर च प्रवर्तितम्॥४९॥
अथ चेत् तानमित्रास्त्व सन्धिबद्धांश्च पश्यसि।
ज्यासनद्ध धनुर्धेहि दुर्गं सम्भारसञ्चितम्॥५०॥

युक्ति—२५

शत्रु के जब समस्त उपाय व्यर्थ हो जाते है तो वह मैत्री की जजीर हिलाता है। और तब दोस्ती में वह ऐसे काम करता है कि कोई शत्रु भी नहीं कर सकता।

युक्ति—२५

यदा शत्रो सर्वे ह्युपाया निष्फलीभवन्ति तदा स मैत्री रज्जुमवलम्बते। तदानी मित्रछद्मना स तत् कुरुते न यत् प्रभवति शत्रुरपि कर्तुम्।

उपदेश—२६

साँप के सिर को शत्रु के हाथो कुचलवा जिस से कि तू दो में से एक क्षेम से वञ्चित न रहे। यदि शत्रु प्रबल हुआ तो साँप को तू मार लेगा अन्यथा शत्रु से मुक्त हो जायगा।

उपदेश—२६

अहिच्छिन्नमरिहस्तेन तोदय। यतोऽन्यतरक्षेमवञ्चितो न स्या। यदि शत्रु प्रबलो भविष्यति तर्हि त्व सर्पं हन्तासि अतोऽन्यथा शत्रुभयान्मोक्ष्यसे।

बैत

युद्ध के दिन निश्चिन्त मत हो निबल शत्रु से।
क्योंकि शेर का भी मगज निकाल लेता है जब एक दिल जीवन से
निराश होता है॥

श्लोक.

युद्धकाले हि निश्चिन्तो मा भूर्मत्वारिमक्षमम्।
त्यक्ताशेन जनेनाथ सिंहस्योत्पाट्यते शिर॥५१॥

حکمت ۲۷

حبری که دانی که دلی بیازارد - تو خاموش باش - تا دیگری بیارد *

हिकमत—२७

खबरे कि दानी कि दिले बयाजारद—तु खामोश बाश—ता दीगरे बयारद।

بیت

بلبلا! مژدهٔ بهار بیار
خبر بد بیوم باز گذار *

बैत (बहरे खफीफ)

बुलबुला! मुज्दए बहार बयार।
खबरे बद ब बूम बाज़ गुज़ार॥

حکمت ۲۸

پادشاه‌را بر خیانت کسی واقف مگردان مگر آنگه که بر قبول کلی واثق باشی - و گرنه - در هلاک خود می کوشی *

हिकमत—२८

पादशाह रा बर खयानते कसे वाकिफ मगर्दा मगर आं गह कि बर क़ुबूले कुल्लीए वासिक बाशी—वगरना दर हलाके खुद मी कोशी।

بیت

بسیج سخن گفتن آنگاه کن
چو دانی که در کار گیرد سخن *

बैत (बहरे मुतक़ारिब)

बसीजे सुखुन गुफ्तन् आंगाह कुन।
चु दानी कि दरकार गीरद सुखुन॥

حکمت ۲۹

هر که نصیحت خودرائی میکند - او خود نصیحت گری محتاجست *

हिकमत—२९

हर कि नसीहते खुदराय मी कुनद—ऊ खुद ब नसीहतगरे मुहताज'स्त।

پند ۳

فریب دشمن مخور - و غرور مداح مخر - که آن دام زرق نهاده‌است - و این کام طمع کشاده * احمق‌را ستایش خوش آید - چون لاشهٔ - که در کونش دمی - فربه نماید *

पंद—३०

फरेबे दुश्मन मखुर—व गुरूरे मद्दाह मखर—कि आं दामे ज़र्क निहादा'स्त—व ईं कामे तमअ कुशादा। अहमक़ रा सितायश खुश आयद—चू लाशाए—कि दर कूनश् दमी—फरबा नुमायद।

قطعه

الا - تا نشنوی مدح سخن‌گوی
که اندك مایه نفعی از تو دارد *
اگر روزی مرادش بر نیاری
دو صد چندان عیوبت بر شمارد *

क़ता (बहरे हज़ज)

अला ता न शनवी मद्हे सुखुनगो।
कि अन्दक माया नफए अज तो दारद॥
अगर रोज़े मुरादश् बर नयारी।
दु सद चन्दाँ उयूबत बर शुमारद॥

حکمت ۳۱

متکلم‌را - تا کسی عیب نگیرد - سخنش صلاح نپذیرد *

हिकमत—३१

मुतकल्लिम रा—ता कसे ऐब न गीरद सुखुनश् सलाह न पिज़ीरद।

بیت

مشو غره بر حسن گفتار خویش

بتحسین نادان و پندار خویش *

वैत (वहरे मुतक़ारिव)

मशौ गर्रा वर हुस्ने गुफ्तारे ख़ेश।

व तहसीने नादाँ व पिन्दारे ख़ेश॥

حکمت ۳۲

همه کس‌را عقل خود بکمال نماید و فرزند خود بجمال *

हिकमत—३२

हमा कस रा अक़्ले ख़ुद ब कमाल नुमायद व फ़र्ज़न्दे ख़ुद ब जमाल।

قطعه

یکی جهود و مسلمان خلاف می‌جستند

چنانکه خنده گرفت از نزاع ایشانم *

بطیره گفت مسلمان ـ گر این قبالهٔ من

درست نیست ـ خدایا! جهود میرانم *

جهود گفت ـ بتوریت میخورم سوگند

وگر خلاف کنم ـ همچو تو مسلمانم *

گر از بسیط زمین عقل منعدم گردد

بخود گمان نبرد هیچکس ـ که نادانم *

क़ता (वहरे मुज्तश्)

यके जहूद ओ मुसलमाँ ख़िलाफ़ मी जुस्तन्द।

चुनाँकि ख़न्दा गिरिफ्त अज़ निज़ाअ ऐशानम्॥

व तज़ गुफ्त मुसलमाँ गर ईं क़िबालाए मन्।

दुरुस्त नेस्त ख़ुदाया! जहूद मीरानम्॥

जहूद गुफ्त—ब तौरेत मी ख़ुरम् सौगन्द।

वगर ख़िलाफ़ कुनम् हमचु तो मुसलमानम्॥

गर अज़ बसीते ज़मी अक़्ल मुनअदिम गर्दद।

व ख़ुद गुमाँ न बुरद हेच कस कि नादानम्॥

حکمت ۳۳

ده آدمی بر سفرهٔ بخورند و دو سگ بر مرداری باهم بسر نبرند * حریص با جهانی گرسنه‌است ـ و قانع بنانی سیر * حکما گویند ـ درویشی بقناعت به از توانگری ببضاعت *

हिकमत—३३

दह आदमी वर सुफ़राए वख़ुरन्द व दू सग वर मुर्दारे बाहम बसर न बुरन्द। हरीस बा जहाने गुरुसना अस्त व क़ाने व नाने सेर। हुकमा गोयन्द—'दरवेशी व क़नाअत विह् अज़ तवांगरी व विज़ाअत।'

بیت

رودهٔ تنگ بیک گردهٔ نان پر گردد

نعمت روی زمین پر نکند دیدهٔ تنگ *

वैत (वहरे रमल)

रूदए तंग व यक गिर्दाए नाँ पुर गर्दद।

निअमते रूये ज़मी पुर न कुनद दीदाए तंग॥

مثنوی

پدر ـ چون دور عمرش منقضی گشت

مرا این یک نصیحت کرد و بگذشت ـ

که شهوت آتشست ـ ازوی بپرهیز!

بخود بر آتش دوزخ مکن تیز!

در آن آتش نیاری طاقت سوز

بصبر آبی بر این آتش زن امروز *

मसनवी (वहरे हज़ज)

पिदर चूँ दौरे उमरश् मुनक़ज़ी गश्त।

मरा ईं यक नसीहत कद ओ विगुज़श्त॥

कि शहवत आतिश'स्त अज़ वै बिपरहेज़।

व ख़ुद वर आतिशे दोज़ख़ मकुन तेज़॥

दराँ आतिश नयारी ताक़ते सोज़।

व सब्र आबे वर ईं आतिश ज़न इमरोज़॥

बैत

मत कर गव अपने भाषण के सौन्दर्य पर।
मूर्खों की धन्य धन्य से और अपनी समझ के आधार पर ।।

श्लोक

गर्वं मा धा स्वकीयाया वाग्मिताया कदाचन।
अज्ञाना धन्यधन्याच्च तथा चात्मप्रतारणात् ।। ५६ ।।

युक्ति—३२

सब मनुष्यों को अपनी बुद्धि पूर्ण लगती है और अपना पुत्र सुन्दर।

युक्ति —३२

सर्वेभ्य स्वस्य धी प्रकृष्टा सन्ततिश्चोत्कृष्टा भाति।

क़ता

एक यहूदी और एक मुसलमान झगड रहे थे।
यहाँ तक कि मुझे उनके झगडे पर हँसी आ गई।।
ताना देते हुए मुसलमान बोला—'यदि यह मेरा मतव्य।
ठीक न हो, तो हे प्रभु! मुझे यहूदी की मौत मिले।।'
यहूदी बोला—'तौरेत की मैं कसम खाता हूँ।
यदि मैं उसके विरुद्ध होऊँ तो मैं तेरी तरह मुसलमान होऊँ।।'
यदि धरती के तल से बुद्धि लुप्त हो जाय।
अपने आप कोई विचार नही करेगा कि मैं मूर्ख हूँ।।

पदम्

मुस्लिमश्च यहूदश्च कदाचित् कलहायितौ।
दृष्ट्वा विवदमानौ तौ चात्यर्थं हसित मया ।। ५७ ।।
आक्षिपन् मुस्लिमो ब्रूते स्यापनेयमथो मम।
हे प्रभो यद्यसत्य स्याद् यहूदमरण मम ।। ५८ ।।
यहूदश्चाब्रवीत्तर्हि तौरेतशपथ मम।
असत्य यद्यह भूया त्वादृशोऽस्मानि मुस्लिम ।। ५९ ।।
अस्मात् पृथ्वीतलात् सर्वाद् बुद्धिलोपो भवेद् यदि।
तथापि कोऽपि नो वक्ता 'अज्ञोऽस्मीति' वच स्वयम् ।। ६० ।।

युक्ति—३३

दश आदमी एक दस्तरखान पर खा लेते हैं और दो कुत्ते एक लाश पर परस्पर बसर नही करते। लोभी दुनिया लेकर भी भूखा रहता है और सन्तोषी एक रोटी से तृप्त हो जाता है। पण्डित कहते हैं—'सन्तोषी साधु लोभी धनिक से अच्छा।'

युक्ति —३३

दश पुमास पात्रैके भुञ्जते न च द्वौ श्वानौ शवैके भुञ्जाते। लोभी विश्वमप्यवाप्यातृप्त, सन्तोषी ग्रासैकेनापि तृप्यति। यथाहु पण्डिता —'सन्तोषी भिक्षुक श्रेष्ठस्तोषहीनो न चेश्वर।'

बैत

लोभी (भूखा) पेट एक रोटी मे भर जाता है।
(पर) पृथ्वी का समस्त वैभव लोभी आँख को नही भरता ।।

श्लोक

उदरं लोलुप भर्तुं पिण्डमेकमलं भवेत्।
नयन लोलुप भर्तुं न च विश्वस्य वैभवम् ।। ६१ ।।

मसनवी

मेरे पिता ने जब उनकी आयु समाप्त होने को आई।
तो मुझे यह शिक्षा दी और गुज़र गये।।
कि कामना अग्नि है—उससे बचना अच्छा है।
अपने आप नरक की अग्नि को तेज़ मत कर।।
उस आग में जलने की ताकत तू नही रखता।
सन्तोष के द्वारा इस आग पर आज ही पानी डाल दे।।

गाथा

आयुष्यान्ते गतस्तातो द्युलोकगमनोद्यत ।
मामेव प्राक् समादिश्य प्रतस्थे दिव्यसश्रयम् ।। ६२ ।।
कामो हुताशन साक्षादस्पर्शो हि वर तत ।
आत्मने रौरवाग्नि च मोद्बोधय कदाचन ।। ६३ ।।
एतस्मिन् खलु वह्नौ त्व ज्वलितु नैव शक्नुया ।
सन्तोषस्य जलेनैनमग्निमद्यैव शामये ।। ६४ ।।

حکمت ۳۴

هر که در حالت توانائی نیکی نکند در وقت ناتوانی سختی بیند *

हिकमत—३४

हर कि दर हालते तवानाई नेकी न कुनद दर वक़्ते नातवानी सख़्ती बीनद।

بیت

بد اخترتر از مردم‌آزار نیست
که روز مصیبت کسش یار نیست *

बैत (बहरे मुतक़ारिब)

बद अख़्तरतर् अज़ मर्दुम आज़ार नेस्त।
कि रोज़े मुसीबत कसश् यार नेस्त॥

پند ۳۵

هرچه زود بر آید دیر نپاید *

पन्द—३५

हर चि ज़ूद बर आयद देर न पायद।

قطعه

خاك مشرق شنیده ام که کنند
بچهل سال کاسهٔ چینی *
صد بروزی کنند در مردشت
لا جرم قیمتش همی بینی *

क़ता (बहरे ख़फ़ीफ़)

ख़ाके मशरिक शुनीदाअम् कि कुनन्द।
ब चिहल साल कासाए चीनी॥
सद ब रोज़े कुनन्द दर मर्दश्त।
ला जरम क़ीमतश् हमीबीनी॥

قطعه

مرغك از بیضه برون آید و روزی طلبد
آدمی‌زاده ندارد خبر از عقل و تمیز *
آن که ناگاه کسی گشت بچیزی نرسید
وین بتمکین و فضیلت بگذشت از همه چیز *
آبگینه همه جا یابی - از آن قدرش نیست
لعل دشوار بدست آید - از آنست عزیز *

क़ता (बहरे रमल)

मुर्ग़क अज़ बैज़ा बरूँ आयदो रोज़ी तलबद।
आदमी ज़ादा न दारद ख़बर अज़ अक़्लो तमीज़॥
आँ कि नागाह कसे गश्त ब चीज़े न रसीद।
वीं ब तमकीनो फ़ज़ीलत ब गुज़श्त अज़ हमा चीज़॥
आबगीना हमा जा बीनी—अज़ आँ क़द्रश् नेस्त।
लाल दुश्वार ब दस्त आयद अज़ आन'स्त अज़ीज़॥

حکمت ۳۶

کارها بصبر بر آید و مستعجل بسر در آید *

हिकमत—३६

कारहा ब सब्र बर आयद व मुस्तअजिल बसर दर आयद।

مثنوی

بچشم خویش دیدم در بیابان
که مرد آهسته بگذشت از شتابان *
سمند بادپا از تک فرو ماند
شتربان همچنان آهسته میراند *

मसनवी (बहरे हज़ज)

ब चश्मे ख़ेश दीदम् दर बयाबाँ।
कि मर्द आहिस्ता बिगुज़श्त अज़ शिताबाँ॥
समन्दे बाद पा अज़ तग फ़िरो मान्द।
शुतुर्बाँ हमचुनाँ आहिस्ता मीरान्द॥

حکمت ۳۷

نادان‌را بهتر از خاموشی نیست - و اگر این مصلحت بدانستی - نادان نبودی *

हिकमत—३७

नादान रा बहतर अज़ ख़ामोशी नेस्त—व अगर ईं मस्लहत बिदानिस्ते—नादान न बूदे।

युक्ति—३४

जो कि समर्थावस्था मे भलाई नही करता, असमर्थावस्था मे कष्ट उठाता है।

युक्ति —३४

यश्चापि समर्थावस्थायामुपकार न क्षमते सोऽसमर्थावस्थाया विपन्नो भवति।

बैंत

नृशस आदमी से अभागा कोई नही है।
क्योकि सकट के दिन कोई उसका मित्र नही होता॥

श्लोक

लोकानुपीडकात् कोऽस्ति भाग्यहीनतरस्तत।
प्राप्ते व्यसनकाले यो लभते न सहायक॥६५॥

उपदेश—३५

जो जल्दी सम्पन्न होता है, देर तक नही ठहरता।

उपदेश —३५

यच्च सद्य सम्पद्यते चिर न विद्यते।

क़ता

पूव की मिट्टी से, मैंने सुना है कि बनाते हैं।
चालीस वर्ष में चीनी का एक बर्त्तन॥
सौ प्रतिदिन बनाते हैं मदरत में।
बेशक उनकी क़ीमत भी तू जानता है॥

पदम्

श्रुतवानस्मि प्राचीनाश्चीनाश्च कुर्वते मृदा।
चत्वारिंशत् समा यावत् पात्रमेक सुनिर्मितम्॥६६॥
मदस्तनाम्नि नगरे क्रियन्तेऽनुदिन शतम्।
मूल्य तेषा कुभाण्डाना नून जानासि वै स्वयम्॥६७॥

क़ता

चिडिया का बच्चा अण्डे से बाहर आते ही खाना माँगता है।
आदमी के बच्चे को अक्ल और तमीज़ की खबर भी नही होती॥
वह (पक्षी) जो कि सहसा कुछ हो जाता है, कुछ नही पाता।
और यह मानव महत्ता और श्रेष्ठता में सबसे परे हो जाता है॥
काँच सर्वत्र तू देखता है इससे उसका मान नही है।
रत्नमणि कठिनता से हाथ लगती है इसलिये प्रिय होती है॥

पदम्

पतत्रिशावको ह्यण्डात् क्रान्त्वा भोज्य प्रधावति।
मानवस्य शिशु सद्यो जातो वेत्ति न किञ्चन॥६८॥
अण्डज सहसाप्नोति लभतेऽन्ते न किञ्चन।
नृजातस्तु महत्तायामुल्लघयति वै समम्॥६९॥
काच सर्वत्र पश्येस्त्वमत एवास्य नार्घता।
कष्टलभ्य हि माणिक्य तत एव महार्घता॥७०॥

युक्ति—३६

काम धीरज से सम्पन्न होते हैं, और अधीर सिर के बल गिरता है।

युक्ति —३६

धैर्यसाध्यानि कार्याणि चाधीर शिरसापतेत्॥१०॥

मसनवी

मैंने अपनी आँखो से रेगिस्तान में देखा है।
कि धीरे धीरे चलने वाला जल्दी चलने वालों को पार कर गया॥
वायुवेगी घोडा तेज़ दौडने के बाद पिछड गया।
ऊँट वाला फिर भी धीरे धीरे चलाता रहा॥

गाथा

स्वतो हि मरुकान्तारे चक्षुर्भ्यां दृष्टवानहम्।
शनैर्गन्तोल्क्रमेदन्ते त्वरमाण जन सदा॥७१॥
सैन्धवो वायुवेगी च धावनाद् विरराम ह।
उष्ट्रवान् पूर्ववद् गच्छञ्छनैर्वाव्रज्यते स्म ह॥७२॥

युक्ति—३७

अज्ञानी के लिये मौन से श्रेष्ठ कुछ नही है, और यदि वह यह युक्ति, समझ ले तो अज्ञानी न रहे।

युक्ति —३७

अज्ञानिने मौनाच्छ्रेयो न किञ्चिदस्ति। अथ च स चेद् इद रहस्य जानीयादज्ञानी नास्ति।

قطعه

چون نداری کمال فضل ـ آن به
که زبان در دهان نگهداری *
آدمی‌را زبان فضیحت کرد
جوز بی مغزرا سبکساری *

क़ता (वहरे खफीफ)

चूँ न दारी कमाले फज्ल आँ विह्।
कि जुबाँ दर दहाँ निगहदारी॥
आदमी रा जबाँ फ़ज़ीहत कर्द।
जूज़े बेमग्ज़ रा सुबुकसारी॥

ایضاً

خری‌را ابلهی تعلیم میداد
برو بر صرف کرده سعی دائم *
حکیمی گفتش ـ ای نادان! چه کوشی؟
درین سودا بترس از لوم لائم *
نیاموزد بهائم از تو گفتار
تو خاموشی بیاموز از بهائم *

ऐज़न (वहरे हज़ज्)

खरे रा अवलहे तालीम मीदाद।
वरू पुर सर्फ़ कर्दा सई दायम॥
हकीमे गुफ्तश् ऐ नादाँ चि कोशी।
दरीं सौदा बितर्स अज़ लौमे लायम॥
नयामोज़द वहायम अज़ तु गुफ्तार।
तो खामोशी बयामोज़ अज़ वहायम्॥

ایضاً

هر که تامل نکند در جواب
بیشتر آید سخنش نا صواب *
یا سخن آرای چو مردم بهوش
یا بنشین همچو بهائم خموش *

ऐज़न (वहरे सरी)

हर कि ताम्मुल न कुनद दर जवाव।
वेशतर आयद सुखुनश् ना सवाव॥
या सुखुन आराई चु मर्दुम व होश।
या विनिशी हमचु वहायम् खमोश॥

حکمت ۳۸

هر که با داناتر از خود مجادله کند تا بدانند که داناست ـ بدانند که نادانست *

हिकमत—३८

हर कि वा दानातर अज़ खुद मुजादिला कुनद ता विदानन्द कि दाना'स्त—विदानन्द कि नादान'स्त।

بیت

چون در آید به از توئی بسخن
گرچه به دانی ـ اعتراض مکن *

वैत (वहरे खफीफ)

चूँ दर आयद विह् अज तोई व सुखुन।
गर्चे विह् दानी ऐतराज मकुन॥

حکمت ۳۹

هر که با بدان نشیند ـ نیکی نبیند *

हिकमत—३९

हर कि वा बदाँ नशीनद—नेकी न बीनद।

مثنوی

گر نشیند فرشتهٔ با دیو
وحشت آموزد و خیانت و ریو *
از بدان جز بدی نیاموزی
نکند گرگ پوستین دوزی *

मसनवी (वहरे खफीफ)

गर नशीनद फरिश्ताए वा देव।
वहशत आमोजदो खयानतो रेव॥
अज़ वदाँ जुज़ वदी नयामोजी।
न कुनद गुर्ग पोस्ती दाजी॥

क़ता

जब तू न रखता हो विद्या की पूर्णता तो यही ठीक है।
कि जीभ को मुँह में रखवाली करता रह॥
आदमी की जीभ फजीहत कराती है।
बिना गिरी का नारियल हल्का होता है॥

पदम्

ध्रियते चेन्न वैशिष्ट्यमेतच्छ्रेयस्करं हि ते।
जिह्वामास्यनिबद्धाञ्च दध्या विरतभाषण॥७३॥
जिह्वैव पुरुष नूनमापत्सु विनिवेशयेत्।
विमज्जो नारिकेलस्तु भारमानेण हीयते॥७४॥

ऐज़न

एक गधे को एक मूर्ख शिक्षा दे रहा था।
उस पर काम कर रहा था निरन्तर परिश्रम॥
एक पण्डित ने उससे कहा—'अरे नादान तू क्या कर रहा है?'
इस प्रयत्न में डर निन्दक करने वालों की हँसी से॥
नहीं सीखता पशु तुझ से बोलना।
तो तू ही चुप रहना सीख ले पशु से॥

अपरञ्च

कश्चिन्मूर्खं खरं शिक्षयन्नासीदथ कदाचन।
यस्मिन् कार्ये परिश्रान्तो यतते स्म निरन्तरम्॥७५॥
तमूचे पण्डितः कश्चित्—'मूढ किं कुरुषे मुधा।
भयोन्मार्ग विभीतात् त्वं निन्दकानां प्रहासनात्॥७६॥
नोऽधीते पेच्चतुष्पादस्त्वत्तस्त्वत्तुल्यभाषणम्।
त्वमेवैतेन पशुना मौनपाठं समाहर॥७७॥

ऐज़न

जो विचार नहीं करता उत्तर देने में।
प्राय आते हैं उसके शब्द असंगत॥
या तो वाणी को सजा पंडिताऊ पुरुष की तरह।
या बैठा रह पशु की तरह चुपचाप॥

अपरञ्च

सावधानो न वर्तेत प्रश्नवाच्ये य उत्तरे।
ब्रवीति बहुधासौ नासङ्गतं खल्वसाम्प्रतम्॥७८॥
वाग्वैशिष्ट्यं दिशे स्वस्य पंडितपुरुषो यथा।
अथवा पशुवद् गोष्ठ्यां स्थितो मौनं समाचर॥७९॥

युक्ति—३८

जो कोई अपने से ज्यादा ज्ञानी से विवाद करता है ताकि लोग जानें कि वह ज्ञानी है—तो लोग जान जाते हैं कि वह अज्ञानी है।

युक्ति —३८

यस्तावपि स्वतो ज्ञानवृद्धे विवदते यतो लोका जानीयुर् 'ज्ञाताऽय-मिति', साकारतम् 'अज्ञातोऽयमिति' जानते।

बैत

जब आये तुझ से श्रेष्ठ वाणी वाला।
यद्यपि तू अच्छा जानता है पर उस पर आक्षेप मत कर॥

श्लोक

त्वत्तो विद्वत्तरे प्राप्ते वाग्विशिष्टे हि पण्डिते।
विशिष्टमपि जानीषे—मा क्षिपस्तस्य भाषणम्॥८०॥

युक्ति—३९

जो कोई बुरों के साथ बैठता है, भलाई नहीं देखता।

युक्ति —३९

यस्तावपि कुवृत्तानुपतिष्ठते, स भद्रं न पश्यति।

मसनवी

यदि बैठे एक अप्सरा, राक्षस के साथ।
आतंक, विश्वासघात और छल सीखेगा॥
बुरों से सिवा बुराई के तू कुछ नहीं सीखेगा।
नहीं करता भेड़िया पोस्तीन की सिलाई॥

गाथा

रक्षोभिः सहवासं चेत् सम्पत्स्यन्ते दिवौकसः।
शिक्षिष्यन्ते कुवृत्तं च सन्त्रासं कपटं छलम्॥८१॥
शाठ्यादृते न किञ्चित्त्वं शिक्षितासे दुरात्मनः।
छेदनं हि वृको वेत्ति सीवनं न च चर्मणः॥८२॥

حکمت ۴۰

मर्दुमान् रा ऐबे निहानी पैदा मकुन—कि मर ऐशान् रा रुसवा कुनी व खुद रा बे ऐतमाद ।

مردمان را عیب نهانی پیدا مکن - که مر ایشان را رسوا کنی و خود را بی اعتماد *

हिकमत—४०

حکمت ۴۱

हिकमत—४१

هر که علم خواند و عمل نکرد - بدان ماند که گاو راند و تخم نیفشاند *

हर कि इल्म ख्वांद व अमल न कर्द—बदाँ मानद कि गाव रांद व तुख्म नयफशांद ।

حکمت ۴۲

हिकमत—४२

از تن بیدل طاعت نیاید - و پوست بی مغز بضاعت را نشاید *

अज़ तने बेदिल ताअत नयायद—व पोस्ते बेमग्ज़ बिज़ाअत रा न शायद ।

حکمت ۴۳

हिकमत—४३

نه هر که در مجادله چست در معامله درست *

नै हर कि दर मुजादला चुस्त दर मुआमला दुरुस्त ।

بیت

बैत (बहरे हज़ज्)

بس قامت خوش که زیر چادر باشد

چون باز کنی مادر مادر باشد *

बस क़ामते खुश कि ज़ेरे चादर बाशद ।

चूँ बाज़ कुनी मादरे मादर बाशद ।।

حکمت ۴۴

हिकमत—४४

اگر شبها همه شب قدر بودی - شب قدر بی‌قدر بودی *

अगर शबहा हमा शबे क़द्र बूदे—शबे क़द्र बेक़द्र बूदे ।

بیت

बैत (बहरे हज़ज्)

گر سنگ همه لعل بدخشان بودی

پس قیمت لعل و سنگ یکسان بودی *

गर संग हमा लाले बदख्शाँ बूदे ।

पस क़ीमते लालो संग यकसाँ बूदे ।।

حکمت ۴۵

हिकमत—४५

نه هر که بصورت نیکوست سیرت زیبا دروست *

नै हर कि ब सूरते नेकू'स्त सीरते ज़ेबा दरू'स्त ।

قطعه

क़ता (बहरे मुज्तस्)

توان شناخت بیک روز در شمائل مرد

که تا کجاش رسیدست پایگاه علوم *

ولی ز باطنش ایمن مباش و غره مشو

که خبث نفس نگردد بسالها معلوم *

तवाँ शिनाख्त ब यक रोज़ दर शमाइले मर्द ।

कि ता कुजाश रसीद'स्त पायगाहे उलूम ।।

वले ज़ि बातिनश् ऐमन् मबाशो ग़र्रा मशौ ।

कि खुब्से नफ्स न गर्दद ब सालहा मालूम ।।

حکمت ۴۶

हिकमत—४६

هر که با بزرگان ستیزد خون خود بریزد *

हर कि बा बुज़ुर्गान् सतेज़द—खूने खुद बरेज़द ।

सुक्ति—४०

आदमियों के गुप्त दोषों को प्रकट मत कर—क्योंकि तू उन्हें लज्जित ही करेगा, और अपने आपको अविश्वस्त।

सुक्ति—४१

जिसने विद्या पढ़ी और आचरण नहीं किया—वह उसके समान है जिसने बैल जोता और बीज नहीं बखेरा।

सुक्ति—४२

हृदयहीन मनुष्य से उपासना नहीं होती—और बिना गूदे के छिल्के का व्यापार नहीं होता।

सुक्ति—४३

जरूरी नहीं कि जो आदमी काम में चुस्त हो वह काम में भी ठीक हो।

बैत

बहुत बार सुन्दर आकार जो पर्दे में होते हैं।
जब खोलो तो अम्मा की भी अम्मा निकलते हैं॥

सुक्ति—४४

यदि सारी रातें शबे कदर होतीं तो शबे कदर बेकदर हो जाती।

बैत

यदि सारे पत्थर बदख्शाँ के माणिक्य हो जाते।
तो माणिक्य और पत्थर एक जैसे होते॥

सुक्ति—४५

जरूरी नहीं कि जो रूप में ठीक हो वह सद्गुण सम्पन्न भी हो।

कता

पहचानना सम्भव है एक दिन में मनुष्य के गुणों को।
कि कहाँ तक पहुँचा है उसकी विद्या का चरणक्षेप॥
किन्तु उसके अन्तरंग से निश्चिन्त मत हो और गर्व मत कर।
क्योंकि स्वभाव के दोष अनेक वर्षों में भी ज्ञात नहीं होते॥

सुक्ति—४६

जो कि बड़ों पर क्रोध करता है—अपना रक्त स्वयं बहाता है।

सुक्ति—४०

पुंसां निगूहितान् दोषान् मा प्रकाशय, यतस्त्वमेनांल्लज्जितान् विधास्यस्यात्मानञ्चाविश्वासभाजनमिति।

सुक्ति—४१

यश्च श्रुतवान् आचारेण हीन स तद्वद् यश्च बलीवर्दं युयुजे बीजं च नावाप।

सुक्ति—४२

हृदयहीनादुपासना न सम्भवति विमज्जातफलाद् व्यापार च न सम्भवति।

सुक्ति—४३

कार्यार्थे य प्रवीणः स्यात् मार्गेऽपि कुशलो भवेत्, नैतदावश्यकम्।

श्लोक

मनोज्ञं बहुधा रूपमवगुण्ठनसंश्रितम्।
हृतेऽवगुण्ठने मातुर्मातेव प्रादुरायते॥ ८३॥

सुक्ति—४४

अजनिष्यत निट् सर्वा प्रतिष्ठा शर्वरी यदि।
प्रतिष्ठा शर्वरी तर्हि चाप्रतिष्ठाऽजनिष्यत॥ ११॥

श्लोक

सर्वाण्युपलखण्डानि माणिक्यानि भवन्ति चेत्।
मूल्यं रत्नस्य लोष्ठस्य समानं च भविष्यति॥ ८४॥

सुक्ति—४५

न सर्वगुणसम्पन्नो यश्च रूपसमन्वित।

पदम्

क्षमया ज्ञातु गुणा सर्वे दिनैकेन नरस्य च।
विद्यानां च कलानां च का सीमा सोऽस्ति लब्धवान्॥ ८५॥
अन्तरंग परं ज्ञातु न चैवमसि सक्षम।
यश्चापि प्रकृतो दोषो वर्षैरपि न ज्ञायते॥ ८६॥

सुक्ति—४६

ज्यायस्सु य प्रकुपित आत्मघात करोति स॥ १२॥

قطعه

حویشتن را بزرگ می‌بینی
راست گفتند - یك دو بیند لوح •
رود بینی شکسته پیشانی
تو که بازی بسر کنی با قوچ •

क़ता (बहरे खफ़ीफ़)

खेशतन रा बुज़ुर्ग मी बीनी।
रास्त गुफ़्तन्द—यक दुबीनद लूच॥
ज़ूद बीनी शिकस्ता पेशानी।
तो कि बाज़ी बसर कुनी बा क़ूज॥

پند ۴۷

پنجه افگندن با شیر و مشت زدن بر شمشیر کار خردمندان نیست •

पन्द—४७

पंजा अफ़गन्दन बा शेर व मुश्त ज़दन बर शमशेर कारे ख़िरदमन्दाँ नेस्त।

بیت

جنگ و زور آوری مکن با مست
پیش سر پنجه در بغل نه دست •

बैत (बहरे खफ़ीफ़)

जगो ज़ोर आवरी मकुन बा मस्त।
पेशे सर पंजा दर बग़ल निह दस्त॥

حکمت ۴۸

ضعیفی که با قوی دلاوری کند - یار دشمنست در هلاك خویش •

हिकमत—४८

ज़ईफ़े कि बा क़वी दिलावरी कुनद—यारे दुश्मन'स्त दर हलाके ख़ेश।

قطعه

سایه پرورده‌را چه طاقت آن
که رود با مبارزان بقتال؟
سست‌بازو بجهل میفگند
پنجه با مرد آهنین چنگال •

क़ता (बहरे ख़फ़ीफ़)

साया पर्वर्दा रा चि ताक़त आँ।
कि रवद बा मुबारिज़ाँ ब क़ताल॥
सुस्त बाज़ू ब जेहल मी फ़िगनद।
पंजा बा मर्दे आहनीं चंगाल॥

حکایت ۴۹

هر که نصیحت نشنود سر ملامت شنیدن دارد •

हिकमत—४९

हर कि नसीहत न शिनवद सरे मलामत शुनीदन् दारद।

بیت

چون نیاید نصیحتت در گوش
اگرت سرزنش کنم - خاموش •

बैत (बहरे खफ़ीफ़)

चूँ नयायद नसीहतत दर गोश।
अगरत सर ज़निश् कुनम् ख़ामोश॥

حکمت ۵۰

بی هنران هنرمندرا نتوانند دید - چنانکه سگان بازاری سگ صیدرا مشغله بر آرند و پیش آمدن نگذارند • یعنی سفله چون بهنر با کسی بر نیاید - بخبثش در پوستین افتد •

हिकमत—५०

बेहुनराँ हुनर मन्द रा न तवानन्द दीद—चुनाँकि सगाने बाज़ारी सगे सैद रा मशग़ला बर आरन्द व पेश आमदन् न गुज़ारन्द। यानी सिफ़्ला चूँ बिहुनर बा कसे बर नयायद—ब ख़ुब्सश् दर पोस्तीन उफ़्तद।

क़ता

अपने आपको तू बड़ा देखता है।
ठीक कहा है कि—एक को दो देखता है भेंगा ॥
जल्दी ही तू देखेगा फूटा मस्तक।
तू जो कि बाजी लगाता है मेढे से नाग ॥

उपदेश—४७

पंजा लड़ाना शेर से और घूंसा मारना तलवार पर बुद्धिमानों का काम नहीं है।

बैत

लड़ाई और शक्ति परीक्षा उन्मत्त के साथ मत कर।
उसकी उँगलियों के सामने अपने हाथ बगल में रख ले ॥

हिदायत—४८

वह निर्बल जो कि बलवान् से शौर्य करता है, वह अपने नाश के लिये शत्रु का मित्र होता है।

क़ता

छाया में पले हुए को क्या ताक़त है।
कि वह जाय योद्धाओं के साथ रणभूमि में ॥
सुस्त बाज़ू वाला मूर्खता से बढ़ाता है।
अपना पंजा लोहे की मुगदर वाले की ओर ॥

युक्ति—४९

जो कि उपदेश नहीं सुनता उसे भर्त्सना सुननी पड़ती है।

बैत

यदि नहीं आती नसीहत तेरे कान में।
यदि तेरी ताड़ना करूँ तो चुप रहना ॥

युक्ति—५०

गुणहीन लोग गुणवान् को नहीं देख सकते जैसे कि बाज़ारी कुत्ते शिकारी कुत्ते को देखकर भूँकते हैं और उसका सामने आना सहन नहीं करते। अर्थात् नीच जब किसी से श्रेष्ठ नहीं पड़ता, तो अपनी दुष्प्रकृति के अनुसार उसके छिद्र देखता है।

पदम्

आत्मानं हि महात्मानं पूजार्हं चैव पश्यसि।
सत्यमाहुर्निरक्षीन एकार्थे द्वौ हि पश्यति ॥ ८७ ॥
सद्यो दृष्टासि चात्मानं भिन्नशीर्षं मृषा यत।
शीर्षाशीर्षि प्रहरणे त्वया मेषोऽभियुज्यते ॥ ८८ ॥

उपदेश —४७

मुष्टामुष्टि तु सिंहेन मुष्ट्याघातं सिते ह्यसौ।
नैतद् बुद्धिमता कार्यं बुद्धिमद्भिः प्रकीर्त्तितम् ॥ १३ ॥

श्लोक

समरं च बलाहारं मा कार्षीः हि बलीयसा।
स्फीतमाथ करं वीक्ष्य कुक्षिगुप्तौ करौ कुरु ॥ ८९ ॥

युक्ति —४८

युध्यते बलवत्सार्धं बलहीनश्च यः पुमान्।
यतते चात्मघाताय भूत्वा शत्रुसहायकः ॥ १४ ॥

पदम्

गेहे सुसंभृतस्याय सामर्थ्यं विद्यते कुतः।
सागच्छेद् यद् युयुत्सुभ्यः समं चैव रणस्थलम् ॥ ९० ॥
मुष्टियुद्धं प्रकुरुते मोहाद् दोर्भ्यां सुदुर्बलः।
सोऽहमुष्टिजनं सार्धं स श्रेयादात्मघातकम् ॥ ९१ ॥

युक्ति —४९

य उपदेशं न शृणोति स परं धिक्कारमर्हति।

श्लोक

मर्गते हि हितार्थोदिचेन्न ते कर्णौ विशन्ति हि।
यदि त्वां ताडयिष्यामि तर्हि मौनं समाचर ॥ ९२ ॥

युक्ति —५०

गुणैर्विहीना गुणिनं न सहन्ते। यथा वीथिश्वानः आखेटश्वानं भषन्ति सम्मुखमागतं च न सहन्ते अर्थात्—नीचो यदा परस्मादात्मानं प्रकृष्टं न पश्यति तदा स दौरात्म्येन तस्य छिद्राणि पश्यतीति।

بیت

کسے را آمد عیب حسود کوته دست
که در مقابله گنگش بود زبان مقال ٭

बैत (बहरे मुज्तास)

[illegible]।
कि दर मुक़ाबला गुंगश् बुवद जुबाने मक़ाल॥

حکمت ٥١

اگر جور شکم نبودی ـ هیچ مرغ در دام نیفتادی ـ بلکه صیاد خود دام ننهادی ٭

हिकमत—५१

अगर जौरे शिकम न बूदे—हेच मुर्ग दर दाम नयुफ्तादे—बल्कि सय्याद खुद दाम न निहादे।

بیت

شکم بند دستست و زنجیر پای
شکم بنده نادر پرستد خدای ٭

बैत (बहरे मुतक़ारिब)

शिकम बन्दे दस्त'स्तो जजीरे पाय।
शिकम बन्दा नादिर परस्तद खुदाय॥

حکمت ٥٢

حکیمان دیر دیر خورند ـ و عابدان نیم سیر ـ و زاهدان تا سد رمق ـ و جوانان تا طبق بر گیرند ـ و پیران تا عرق کنند ـ اما قلندران چندان خورند که در معده جای نفس نماند و بر سفره روزی کس ٭

हिकमत—५२

हकीमाँ देर देर खुरन्द—व आबिदाँ नीम सेर—व ज़ाहिदाँ ता सद्दे रमक़—व जवानाँ ता तबक़ बर गीरन्द—व पीराँ ता अरक़ कुनन्द—अम्मा क़लन्दराँ चन्दाँ खुरन्द कि दर मेदा जाए नफ़स न मानद व बर सुफ़रा रोज़ीए कस।

بیت

اسیر بند شکم را دو شب نگیرد خواب
شبی ز معده سنگی ـ شبی ز دل تنگی ٭

बैत (बहरे मुज्तस्)

असीरे बन्दे शिकम रा दु शब न गीरद ख़्वाब।
शबे ज़ि मैदाए संगी—शबे ज़ि दिलतंगी॥

وعظ ٥٣

مشورت با زنان تباه است ـ و سخاوت با مفسدان گناه ٭

वाज़—५३

मशवरत बा ज़नान् तबाह अस्त—व सख़ावत बा मुफ़सिदान् गुनाह।

بیت

ترحم بر پلنگ تیز دندان
ستمکاری بود بر گوسفندان ٭

बैत (बहरे हज़ज्)

तरह्हुम बर पलंगे तेज़ दन्दाँ।
सितमगारी बुवद बर गोसफ़न्दाँ॥

حکمت ٥٤

هرکرا دشمن در پیشست ـ گر نکشد دشمن خویشست ٭

हिकमत—५४

हर कि रा दुश्मन दर पेश'स्त—गर न कुशद दुश्मने ख़ेश'स्त।

بیت

سنگ در دست و مار بر سر سنگ
نکند مرد هوشیار درنگ ٭

बैत (बहरे ख़फ़ीफ़)

संग दर दस्तो मार बर सरे संग।
न कुनद मर्दे होशियार दिरंग॥

و گروهی از خلاف این مصلحت دیده اند - و گفته اند - که در کشتن بندیان تامل اولیترست - بحکم آنکه اختیار باقیست - توان کشت و توان بخشید - اما - اگر بی تامل کشته شود - محتملست که مصلحتی فوت گردد که تدارك مثل آن ممتنع باشد *

व गुरोहे बर ख़िलाफ़े ईं मस्लहत दीदा अन्द—व गुफ़्ता अन्द—'कि दर कुश्तने बन्दीगान् ताम्मुल औलातर'स्त—ब हुक्मे आं कि इख़्तियार बाक़ी'स्त—तवान् कुश्त व तवान् बख़्शीद—अम्मा अगर बे ताम्मुल कुश्ता शवद मुहतमिल'स्त कि मस्लहते फ़ौत गरदद कि तदारुके मिस्ले आं मुम्तनअ बाशद।'

مثنوی

نیك سهلست زنده بیجان کرد
کشته‌را باز زنده نتوان کرد *
شرط عقلست صبر تیر انداز
که چو رفت از کمان نیاید باز *

मसनवी (बहरे ख़फ़ीफ़)

नेक सहल'स्त ज़िन्दा बेजां कर्द।
कुश्ता रा बाज़ ज़िन्दा न तवां कर्द॥
शर्ते अक़्ल'स्त सब्रे तीरन्दाज़।
कि चु रफ़्त अज़ कमां नयायद बाज़॥

حکمت ۵۵

حکیمی که با جاهلی در افتد - باید که توقع عزت ندارد * اگر جاهل بزبان آوری بر حکیم غالب آید عجب نیست - که سنگی است که جوهررا همی‌شکند *

हिकमत—५५

हकीमे कि बा जाहिले दर उफ़्तद—बायद कि तवक़्क़ोए इज़्ज़त न दारद। अगर जाहिल ब ज़ुबां आवरी बर हकीम ग़ालिब आयद अजब नेस्त—कि संगे अस्त कि जौहर रा हमी शिकनद।

بیت

نه عجب گر فرو رود نفسش
عندلیبی غراب هم قفسش *

बैत (बहरे ख़फ़ीफ़)

न अजब गर फ़िरो रवद नफ़सश्।
अन्दलीबे ग़ुराब हम क़फ़सश्॥

قطعه

گر هنرمند ز اوباش جفائی بیند
تا دل خویش نیازارد و درهم نشود *
سنگ بد گوهر اگر کاسهٔ زرین شکست
قیمت سنگ نیفزاید و زر کم نشود *

क़ता (बहरे रमल)

गर हुनरमन्द ज़ि औबाश जफ़ाए बीनद।
ता दिले ख़ेश नयाज़ारदो दरहम न शवद॥
संगे बद गौहर अगर कासाए ज़र्रीं बशिकस्त।
क़ीमते संग नयफ़ज़ायदो ज़र कम न शवद॥

حکمت ۵۶

خردمندی که در زمرهٔ اوباش سخن نبندد - شگفت مدار - که آواز بربط از غلبهٔ دهل بر نیاید - و بوی عبیر از بوی گنده فرو ماند *

हिकमत—५६

ख़िरदमन्दे कि दर ज़ुमरए औबाश सुख़ुन बिबन्दद—शिगिफ़्त मदार कि आवाज़े बरबत अज़ ग़ल्बए दुहुल बर नयायद—व बूए अबीर अज़ बूए गन्दा फ़िरो मानद।

شعر

بلند آواز نادان گردن افراخت
که دانارا بی‌شرمی بینداخت -
نمی‌داند که آهنگ حجازی
فرو ماند ز بانگ طبل غازی *

शेर (बहरे हज़ज)

बलन्द आवाज़े नादां गरदन अफ़राश्त।
कि दाना रा ब बेशरमी बयन्दाख़्त॥
न मी दानद कि आहंगे हिजाज़ी।
फ़िरो मानद ज़ि बांगे तब्ले ग़ाज़ी॥

حکمت ۵۷

جوهر اگر در خلاب افتد ـ همان نفیس است ـ و غبار اگر بر فلك رود ـ همچنان خسیس ٭ استعداد بی‌تربیت دریغ ـ و تربیت نا مستعد ضائع ٭ خاکستر نسبتی عالی دارد که آتش جوهر علویست ـ و لیکن چون بنفس خود هنری ندارد ـ با خاك برابرست ٭ قیمت شکر نه از نی است ـ که آن خود خاصیت وی است ٭

हिक्मत—५७

जौहर अगर दर खलाब उफ़तद—हमाँ नफ़ीस स्त—व ग़ुबार अगर बर फ़लक रवद—हमचुनाँ ख़सीस। इस्तअदादे बेतरबियत दरेग़—व तरबियते ना मुस्तइद् जाए। ख़ाकिस्तर निस्बते आली दारद कि आतिश जौहरे उलवीस्त—वलेकिन चू ब नफ़्से ख़ुद हुनरे न दारद बा ख़ाक बराबरस्त। क़ीमते शकर न अज़ नै अस्त—कि आँ ख़ुद ख़ासीयते वै अस्त।

مثنوی

چو کنعان‌را طبیعت بی‌هنر بود
پیمبر زادگی قدرش نیفزود ٭
هنر بنما ـ اگر داری ـ نه گوهر
گل از خارست و ابراهیم از آزر ٭

मसनवी (बहरे हज़ज्)

चु किनआँ रा तबीअत बेहुनर बूद।
पयम्बर जादगी क़दरश् नयफ़ज़ूद॥
हुनर बिनुमा—अगर दारी नै गौहर।
गुल अज़ ख़ार'स्तो इबराहीम अज़् आज़र॥

حکمت ۵۸

مشك آنست که خود ببوید ـ نه آن که عطار بگوید ٭ دانا چون طبله عطارست ـ خاموش و هنر نمای ـ و نادان چون طبل غازیست ـ بلند آواز و میان تهی ٭

हिक्मत—५८

मुश्क आन'स्त कि ख़ुद बिबोयद—नै आँकि अत्तार बिगोयद। दाना चू तब्लए अत्तारस्त—ख़ामोश व हुनर नुमाय—व नादाँ चु तब्ले ग़ाज़ी'स्त—बलन्द आवाज व मियाँ तिही।

قطعه

عالم اندر میانهٔ جهال
مثلی گفته اند صدیقان ـ
شاهدی در میان کورانست
مصحفی در کنشت زندیقان ٭

क़ता (बहरे खफ़ीफ़)

आलिम अन्दर मियानाए जुह्हाल।
मसअले गुफ़्ता अन्द सिद्दीक़ान्॥
शाहिदे दरमियाने कूराँ'स्त।
मसहफ़े दर कुनिश्ते ज़िन्दीक़ान्॥

حکمت ۵۹

دوستی‌را که همه عمر فرا چنگ آرند ـ نشاید که بیك نفس بیازارند ٭

हिक्मत—५९

दोस्ते रा कि हमा उम्र फ़रा चंग आरन्द—नशायद कि ब यक नफ़स बयाज़ारन्द।

بیت

سنگی بچند سال شود لعل پاره
زنهار تا بیك نفسش نشکنی بسنگ!

बैत (बहरे मुज़ारी)

संगे ब चन्द साल शवद लाल पारए।
ज़िन्हार! ता ब यक नफ़सश् नशिकनी ब संग॥

حکمت ۶۰

عقل در دست نفس چنان گرفتارست که مرد عاجز بدست زن گربز ٭

हिक्मत—६०

अक़्ल दर दस्ते नफ़्स चुनाँ गिरिफ़्तार'स्त कि मर्दे आजिज़ ब दस्ते ज़ने गुरबुज़।

بیت

در حرمی بر سرائی سد
که بانگ زن از وی بر آید بلند ٭

حکمت ٦١

رای بی‌قوت مکر و فسوست ـ و قوت بی‌رای جهل و جنون ٭

بیت

تمیز باید و تدبیر و رای و آنگه ملك
که ملك و دولت نادان سلاح جنگ خودست ٭

حکمت ٦٢

جوانمردی که بخورد و بدهد به از عابدی که روزه دارد و بنهد ٭ هر که ترك شهوت از بهر قبول خلق داده است ـ از شهوت حلال در شهوت حرام افتاده است ٭

بیت

عابد که نه از بهر خدا گوشه نشیند
بیچاره در آئینه تاریك چه بیند؟

حکمت ٦٣

اندك اندك خیلی شود و قطره قطره سیلی گردد ـ یعنی آنان که دست قدرت ندارند ـ سنگ خرده نگه دارند ـ تا بوقت فرصت دمار از دماغ خصم بر آرند ٭

شعر

وَ قَطْرٌ عَلَی قَطْرٍ اِذَا اتَّفَقَتْ نَهْرٌ
وَ نَهْرٌ اِلَی نَهْرٍ اِذَا اجْتَمَعَتْ بَحْرٌ ٭

بیت

اندك اندك بهم شود بسیار
دانه دانه است غله در انبار ٭

बैत (बहरे मुतक़ारिब)

द तुर्गी द सराये न मद।
कि बांगे जन अज वै बर आयद बलन्द॥

हिकमत—६१

राये बेकुव्वत मक्रो—फ़ुसूनस्त—व कुव्वते बेराय जेहल व जुनून।

बैत (बहरे मुज्तस्)

तमीज़ बायदो तदबीरो रायो आंगह मुल्क।
कि मुल्को दौलते नादां सिलाह जंग खुदस्त॥

हिकमत—६२

जवां मर्दे कि बिखुरद व बिदिहद बिह अज़ आबिदे कि रोज़ा दारद व बिनिहद। हर कि तर्के शहवत अज बहरे क़बूले ख़ल्क दादा अस्त—अज शहवते हलाल दर शहवते हराम उफ़्तादा अस्त।

बैत (बहरे हज़ज्-मुसम्मन्)

आबिद कि नै अज बहरे खुदा गोशा निशीनद।
बेचारा दर आईनए तारीक चि बीनद॥

हिकमत—६३

अन्दक अन्दक ख़ैले शवद व क़त्रा क़त्रा सैले गर्दद। यानी आनां कि दस्ते क़ुदरत न दारन्द संगे खुर्द निगह दारन्द ता ब वक्ते फ़ुर्सत दिमार अज दिमागे ख़स्म बर आरन्द।

शेर (बहरे तवील)

व क़त्र अला क़त्रिन इज़ा इत्तफ़क़त नह्र।
व नहर इला नह्रिन इज़ा अज्तमअत् बह्र॥

बैत (बहरे ख़फ़ीफ़)

अन्दक अन्दक बहम शवद बिस्यार।
दाना दाना अस्त ग़ल्ला दर अम्बार॥

حکمت ۶۴

عالم‌را نشاید که سفاهت از عامی بحلم در گذارد ـ که هر دو طرف‌را زیان دارد ـ که هیبت این کم شود و جهل آن محکم ٭

بیت

چو با سفله گوئی بلطف و خوشی
فزون گردش کبر و گردن کشی ٭

हिकमत—६४

आलिम रा न शायद कि सफाहत अज आमिये ब हिल्म दर गुज़ारद—कि हर दू तरफ रा ज़ियाँ दारद—कि हैबते ईं कम शवद व जेहले आँ मुहकम।

बैत (बहरे मुतक़ारिब)

चु बा सिफला गोयी ब लुत्फो खुशी।
फुज़ू गरददश् किब्रो गर्दन कशी॥

حکمت ۶۵

معصیت از هر که صادر شود ـ ناپسندیده است ـ و از علما ناخوب‌تر ـ که علم سلاح جنگ شیطانست ـ و خداوند سلاح‌را ـ چون به اسیری برند ـ شرمساری بیش برد ٭

مثنوی

عامی　　نادان　　پریشان‌روزگار
به　ز　دانشمند　ناپرهیزکار ٭
کان　بنابینائی　از　راه　اوفتاد
وین ـ دو چشمش بود ـ و در چاه اوفتاد ٭

हिकमत—६५

मअसीयते अज हर कि सादिर शवद—नापसन्दीदा अस्त—व अज उलमा नाखूबतर—कि इल्म सिलाहे जंगे शैतानस्त—व खुदावन्दे सिलाह रा चू ब असीरी बुरन्द—शर्मसारी बेश बुरद।

मसनवी (बहरे रमल)

आमिये नादाँ परेशाँ रोज़गार।
बिह ज़ि दानिशमन्दे ना परहेज़गार॥
काँ ब नाबीनाई अज राह ऊफ़्तार।
वीं दु चश्मश् बूद ओ दर चाह ऊफ़्तार॥

حکمت ۶۶

جان در حمایت یکدمست ـ و دنیا وجودی میان دو عدم ٭ دین بدنیا فروشان خرند ـ که دین بدنیا فروشان خرند ـ یوسف بفروشند تا چه خرند؟ اَلَمْ اَعْهَدْ اِلَیْکُمْ ـ یا بَنی آدَمَ! اَنْ لا تَعْبُدُوا الشَّیْطَانَ ـ اِنَّهُ لَکُمْ عَدُوٌّ مُبِینٌ ٭

بیت

بقول دشمن پیمان دوست بشکستی
ببین که از که بریدی و با که پیوستی ٭

हिकमत—६६

जान दर हिमायते यकदमस्त—व दुनिया वुजूदे मियाने दू अदम। दीन ब दुनिया फरोशान खरन्द—यूसुफ बिफरोशन्द ता चि खरन्द? 'अलम् आहद् इलैकुम्—या बनी आदम! अल्ला तअबुदुश्शैतान—इन्नहू लकुम् अदुव्वुम् मुबीन।'

बैत (बहरे मुजतस)

ब क़ौले दुश्मने पैमाने दोस्त बिश्कस्ती।
बिबीं कि अज कि बुरीदी व बा कि पैवस्ती॥

حکمت ۶۷

شیطان با مخلصان بر نمی آید و سلطان با مفلسان ٭

हिकमत—६७

शैतान बा मुखलिसान बर न मी आयद व सुल्तान बा मुफ़लिसान।

युक्ति—६४

विद्वान् के लिये उचित नहीं है कि सामान्य जनों की मूर्खता को नम्रता से टाल दे—क्योंकि (इससे) दोनो ओर की हानि है। इसका मान कम हो जायगा और उसकी मूर्खता दृढ़।

युक्ति —६४

विदुषि नोपपद्यते यन्मूर्खस्य मूर्खता नम्रतयागोचर विदध्यात्। तत उभयोर्हानि सञ्जायते। अतो विदुष प्रतिष्ठा हीयते, मूर्खस्य च मूर्खतोपचीयते।

बैत

जब नीच से तू बोलता है नम्रता और आदर से।
बढ़ जाती है उसकी ऐंठ और धृष्टता॥

श्लोक

यदा नीचजनैं सार्धमादरेण ब्रवीपि च।
तेषा गर्वञ्च धार्ष्ट्यञ्च ततो वृद्धिमवाप्नुयात्॥ ११५॥

युक्ति—६५

बगावत चाहे जिससे हो अनुचित है, विद्वान् से और भी अनुचित है क्योंकि विद्या शैतान से लडने का एक हथियार है—और जब शस्त्रधारी को कैद कर लिया जाता है तो अधिक लज्जा उठाता है।

युक्ति —६५

नास्तिक्य खलु सर्वेषु ह्यनुचितम्। पण्डितेषु विशेषेण। यत शास्त्र हि प्रहरणमिव पाप योद्धुम्। अथ च शस्त्रधारी यदा शस्त्र धारयन्नपि शत्रुबन्धने पापतति तदा स विशेषेण लज्जास्पदपदता याति।

मसनवी

सामान्य अज्ञानी जो समय से दुखी है।
अच्छा है उस ज्ञानी से जो असंयमी है॥
क्योंकि वह तो बिना दृष्टि के राह से भटका।
और इसके दो दो आँखें थी और कुँए में पड गया॥

गाथा.

अशश्चाशिक्षितो यो हि कालवैषम्यपीडित।
विदुषोऽसंयतात् सो हि भूरिश श्रेष्ठ उच्यते॥ ११६॥
क्षम्योऽसौ योऽपतन्मार्गाद् वराको ह्यचिपो विना।
विवृताभ्याञ्च नेत्राभ्या प्राज्ञ कूपेऽपतत्कथम्॥ ११७॥

युक्ति—६६

प्राण एक सांस की ओट में है और संसार दो अनवस्थाओं के बीच में। धर्म को संसार के बदले मत बेच, क्योंकि धर्म का संसार के बदले बेचने वाले गधे हैं। वे युसुफ को बेचते हैं तो क्या खरीदते हैं? 'क्या नहीं वचन लिया मैंने तुम लोगों से—हे मनुवंशियो! कि मत उपासना करो शैतान की, वास्तव में वह तुम्हारा शत्रु है प्रकटत।'

युक्ति —६६

प्राणा श्वासैकसश्रया, विश्व चानस्तित्वद्वयसश्रितमिति। धर्मविक्रय संसारार्थं मा कार्षी। धर्मविक्रेतार खरा ये यूसुफ विक्रीणते ते किं लभन्ते? 'किं न निर्दिष्टवानह वो भो मनुवशीया! मोपाध्व पापम्, वस्तुत स युष्माकममित्र एव व्यक्त इति।'

बैत

एक दुश्मन के कहने से तूने मित्र का विश्वास तोड दिया।
देख कि तू किससे वियुक्त हुआ है और किससे जुडा है॥

श्लोक

शत्रुवाक्यप्रतीतेन मित्रविश्वासघातनम्।
त्वया चानुष्ठित पश्य! कुतो भिन्न क्व सश्रित॥ ११८॥

युक्ति—६७

शैतान पवित्रात्माओं से पार नहीं पा सकता और राजा दरिद्रों से।

युक्ति —६७

पाप्मा पवित्राणा न प्रभवति राजा दरिद्राणाञ्चेति।

मसनवी

उसको ऋण मत दे जो उपासनाहीन हो।
भले ही उसका मुँह लघनो से खुल गया हो॥
जो कि ईश्वर के प्रति कर्त्तव्य का निर्वाह नहीं करता।
तेरे ऋण की भी चिन्ता नहीं करेगा॥
आज वह दो आदमियो का भाग अधिक लेगा।
कल (माँगने पर) सब जियेंगे, वह मर जायगा॥

गाथा

ऋण मा दा क्वचित् तस्य य स्याद् भक्तिविवर्जित ।
लघनेनापि चेदेष वतते विवृतानन ॥ ११९ ॥
ईश्वर प्रति कर्तव्य न निवहति यो नर ।
त्वामपि प्रति कर्तव्य नावगन्ता कदाचन ॥ १२० ॥
गृह्णीतेऽद्य द्विपुरुष भागधेय च त्वद्धनम् ।
अपरेऽह्न्यपानेतुमुक्तमात्रो मरिष्यति ॥ १२१ ॥

युक्ति—६८

जिसकी कि लोग जीते जी रोटी नहीं खाते, जब (वह) मर जाता है तो उसका नाम नहीं लेते। अंगूर का स्वाद विधवा जानती है, मेवा वाला नहीं। यूसुफ सिद्दीक (उन पर शांति हो) मिस्र में सूखा पडने पर भर पेट नहीं खाते थे ताकि भूखों को न भुला दें।

युक्ति —६८

यस्य वित्त न भुञ्जते लोकास्तस्य मरणोपरान्त नामोच्चारण न कुर्वते। द्राक्षाऽऽस्वाद विधवा जानाति न च फलप्रचुर उद्यानपति । यूसुफ सत्यवादी (स्वस्त्यस्तु तस्मै सदा) मिस्रस्यानावृष्टिसवत्सरे पूर्णोदरो भूत्वा न बुभुजे यथा स क्षुधार्तान् न विस्मरेदिति।

मसनवी

जो कि सुख और वैभव में जीवन जीता है।
वह क्या जाने कि भूखे की क्या अवस्था है॥
रोगियो की अवस्था वह व्यक्ति जानता है।
जो स्वय रोग की अवस्था में रह चुका है॥

गाथा

यश्चापि सुखभोगेषु विनिर्वहति जीवनम्।
स जन किं विजानीते क्षुधार्तानामवस्थितिम् ॥ १२२ ॥
अवस्था मन्दभाग्याना स एव ज्ञातुमर्हति।
यस्य स्वस्य ह्यवस्थापि कष्टान्मन्दायते तथा ॥ १२३ ॥

कता

अरे! तू जो अरबी घोडे पर सवार है, सावधान।
कि काँटे ढोने वाला बेचारा गधा पानी और कीचड में है॥
आग, निर्धन पडोसी के घर से मत माँग।
क्योंकि वह जो उसके धुँआरे से निकल रहा है उसके दिल का धुआँ है॥

पदम्

आरब्यमश्वमारूढ! सावधानतया चर।
वाहयन् कण्टक चात्र पङ्कमग्न स्थित खर ॥ १२४ ॥
महानसाग्नि मा याचीर्निकटान्नि स्ववेश्मन ।
तद्गेहान्निगतो धूमो दाह सोसूच्यते हृद ॥ १२५ ॥

उपदेश—६९

निबल साधु से सूखा पडने के साल में मत पूछ—'कि तू कैसे है?' सिवा इस शर्त के कि तू उसके घाव पर मरहम रख सके और दिरम उसके सामने।

युक्ति —६९

निबल साधु कुशल मा प्राक्षीरनावृष्टिसवत्सरे 'अथ कथमसि!' अन्यथा तस्य क्षते ह्यालेप दध्या धन चास्य पुरत इति।

क़ता

एक गधे को जब तू देखे भाराक्रान्त कीचड में पडा।
भले ही दिल में तू दया कर ले, पर उसके निकट मत जा॥

पदम्

भाराक्रान्त खर दृष्ट्वा कलले पतित तथा।
स्वगतेन कृपाविष्टो भूत्वा मा गा खर प्रति ॥ १२६ ॥

کنون که رفتی و پرسیدیش ـ که چون افتاد
میان بند و چو مردان بگیر دم خرش •

कुनूँ कि रफ़्ती ओ पुर्सीदियश् कि चूँ उफ़्ताद।
मियाँ ब बन्दो चु मर्दां बिगीर दुम्बे ख़रश॥

حکمت ۷۰

دو چیز محال عقلست ـ خوردن بیش از رزق مقسوم ـ و مردن پیش از وقت معلوم •

हिकमत—७०

दु चीज़ मुहाले अक़्लस्त—ख़ुर्दन् बेश अज़ रिज़्क़े मक़सूम— व मुर्दन् पेश अज़ वक़्ते मालूम।

قطعه

قضا دگر نشود ـ ور هزار ناله و آه
بشکر یا بشکایت بر آید از دهنی •
فرشتهٔ ـ که وکیلست بر خزانهٔ باد
چه غم خورد که بمیرد چراغ بیوه زنی؟

क़ता (वहरे मुज्तश्)

क़ज़ा दिगर न शवद—वर हज़ार नाला ओ आह।
ब शुक्र या ब शिकायत बर आयद'ज दहने॥
फ़रिश्ताए कि वकीलस्त बर ख़िज़ानाए बाद।
चि ग़म ख़ुरद कि बमीरद चिराग़े बेवा ज़ने॥

حکمت ۷۱

ای طالب روزی! بنشین ـ که بخوری ـ و ای مطلوب اجل! مرو ـ که جان نبری •

हिकमत—७१

ऐ तालिबे रोज़ी! बिनशीन—कि बिख़ुरी। व ऐ मतलूबे अजल! मरो कि जाँ न बुरी।

قطعه

جهد رزق ار کنی و گر نکنی
برساند خدای عز و جل •
ور روی در دهان شیر و هزبر
نخورندت ـ مگر بروز اجل •

क़ता (वहरे ख़फ़ीफ़)

जहदे रिज़्क़ अर कुनी वगर न कुनी।
बिरसानद ख़ुदाय अज़्ज़ व जल॥
वर रवी दर दहाने शेरो हिज़ब्र।
न ख़ुरन्दत—मगर ब रोज़े अजल॥

حکمت ۷۲

به نانهاده دست نرسد ـ و نهاده هر کجا که هست برسد •

हिकमत—७२

ब नानिहादा दस्त न रसद—व निहादा हर कुजा कि हस्त बिरसद।

بیت

شنیدهٔ که سکندر برفت در ظلمات
بچند محنت ـ و آنکه نخورد آب حیات •

बैत (वहरे मुज्तश्)

शुनीदई कि सिकन्दर बरफ़्त दर ज़ुल्मात।
ब चन्द मिहनत ओ आँगह न ख़ुर्द आबे हयात॥

حکمت ۷۳

صیاد بی‌روزی در دجله ماهی نگیرد ـ و ماهی بی‌اجل در خشکی نمیرد •

हिकमत—७३

सय्यादे बे रोज़ी दर दज्ला माही न गीरद—व माहीए बे अजल दर ख़ुश्की न मीरद।

بیت

مسکین حریص در همه عالم همی‌رود
او در قفای رزق و اجل در قفای او •

बैत (वहरे मुज़ारी)

मिस्कीं हरीस दर हमा आलम हमी रवद।
ऊ दर क़फ़ाए रिज़्क़ ओ अजल दर क़फ़ाए ऊ॥

और जब कि तू चला ही गया और उससे पूछ लिया कि कैसे गिरा।
तो अगर गिरा और मर्दों की तरह उसके गधे की दुम पकड़।।

अथवा यदि गच्छेस्त्व पृच्छेश्च—'पतितोऽसि किम्।'
कटिं बद्ध्वा यथाशूर गृहाण खरपुच्छकम्।। १२७।।

युक्ति—७०

दो चीज़ें बुद्धि से विपरीत हैं—
भोग—भाग्य से अधिक का, और-
मरण—नियत समय से पूर्व।

कता

मौत कुछ और नहीं हो जायगी, चाहे हज़ार रो पीट।
धन्यवाद से या शिकायत से जो मुँह से निकाले।।
फरिश्ता जो कि पवन के कोष का अधिपति है।
वह क्या चिन्ता करता है कि विधवा का गृह दीपक बुझ जाय।।

युक्ति—७०

द्वौ स्तो बुद्धिविपर्यस्तौ कथितौ हि मनीषिभि ।
भाग्याच्चातिशयो भोगो मृत्युश्च नियतात्पुरा।। १२८।।

पदम्

नान्यथा भविता मृत्यु शतधा यदि क्रुश्यते।
नन्द्यते निन्द्यते वाऽथ सर्वथा विवृताननात्।। १२६।।
प्राणवायुनिधाभर्तुर्देवदूतस्य वा पुन ।
का चिन्ता म्रियते नो वा विधवा कुलदीपक ।। १३०।।

युक्ति—७१

हे रोज़ी के तलब करने वाले, बैठ जा! क्योंकि तू खायेगा। और हे मृत्यु के द्वारा तलब किये गये! मत भाग, क्योंकि तू प्राण नहीं बचा सकता।

क़ता

जीविका के लिये संघर्ष चाहे कर या मत कर।
पहुँचा देगा परमात्मा महान् और प्रतापी।।
और यदि तू चला जाय शेर और चीते के मुँह में भी।
नहीं खायेंगे तुझे सिवा मौत के दिन के।।

युक्ति—७१

हे प्रार्थयिता चान्नस्य! तिष्ठतात्—भोक्ष्यसे! अथ च हे मृत्यु-प्रार्थित! अलं दुद्रूपया, प्राणान्न रक्षितुमर्हसि।

पदम्

क्लान्तो भूया न वा भूया रिक्थस्योपार्जने खलु।
परमेश परब्रह्म विश्वम्भरो भरिष्यति।। १३१।।
गम्यते चेत् त्वया नून सिंहव्याघ्रमुखे ननु।
भक्षितारो न ते किन्तु प्रारब्धमरण विना।। १३२।।

युक्ति—७२

न रखा हुआ हाथ नहीं लगता और रखा हुआ चाहे कहीं हो मिल जाता है।

बैत

क्या तूने सुना है कि सिकन्दर गया था अन्धकार में।
काफी मिहनत के बाद भी वह अमृत पान न कर सका।।

युक्ति—७२

अपूर्वनिहित न लभ्यते—पूर्वनिहितं तु क्वापि स्यात् लभ्यत एवेति।

श्लोक

श्रूयते यदलक्षेन्द्रो ह्यन्धकारमुपाविशत्।
यत्नेन महता चापि नाप्तवानमृत जलम्।। १३३।।

युक्ति—७३

जिसको रोज़ी नहीं मिलती वह शिकारी दज्ला में मछली नहीं पाता, और जिसकी मौत नहीं आई वह मछली सूखे में भी नहीं मरती।

बैत

गरीब लोभी सारी दुनिया में दौड़ता फिरता है।
वह रिज़्क के पीछे दौड़ता है और मौत उसके पीछे।।

युक्ति—७३

अनिर्दिष्टजीविको धीवरो दज्लायामपि मत्स्य न लभतेऽनिर्दिष्ट-मरणश्च मत्स्य भूमावपि न म्रियते।

श्लोक

निर्धनो धनलोभाच्च सम विश्व प्रधावति।
अनुरिक्थ जनो याति चानुरिक्थार्थिन यम ।। १३४।।

حکمت ۷۴

توانگر فاسق کلوخ زر اندودست - و درویش صالح شاهد خاك آلود - این دلق موسی است مرقع - و آن ریش فرعون ست مرصع - ثروت نیکان روی در بلندی دارد و دولت بدان سر در نشیب ۔

قطعه

هر کرا جاه و دولتست - بدان
خاطر خسته در نخواهد یافت ۔
خبرش ده که هیچ دولت و جاه
بسرائی دگر نخواهد یافت ۔

हिक्मत—७४

तवानगरे फ़ासिक़ कुलूख़े ज़र अन्दूदस्त—व दरवेशे सालिह शाहिदे ख़ाक आलूद। ईं दल्के मूसा अस्त मुरक़्क़अ—व आँ रीशे फ़िरऔनस्त मुरस्सअ। सरवते नेकाँ रू दर बलन्दी दारद व दौलते बदान् सर दर नशेब।

क़ता (बहरे ख़फ़ीफ़)

हर किरा जाहो दौलतस्त बदाँ।
ख़ातिरे ख़स्ता दर न ख़्वाहद याफ़्त॥
ख़बरश् दिह् कि हेच दौलतो जाह्।
ब सराये दिगर न ख़्वाहद याफ़्त॥

حکمت ۷۵

حسود از نعمت حق بخیلست - و بندهٔ بی گناه را دشمن ۔

قطعه

مردکی خشك مغز را دیدم
رفته در پوستین صاحب جاه ۔
گفتم - ای خواجه! گر تو بدبختی
مردم نیك بخت را چه گناه؟

قطعه

الا - تا نخواهی بلا بر حسود!
که آن بخت بر گشته خود در بلاست ۔
چه حاجت که با وی کنی دشمنی؟
که وی را چنین دشمنی در قفاست ۔

हिक्मत—७५

हसूद अज़ निअमते हक़ बख़ील'स्त व बन्दाए बेगुनाह् रा दुश्मन।

क़ता (बहरे ख़फ़ीफ़)

मर्दके ख़ुश्क मग़्ज़ रा दीदम्।
रफ़्ता दर पोस्तीने साहिबे जाह॥
गुफ़्तम्—ऐ ख़्वाजा गर तो बदबख़्ती।
मर्दुमे नेक बख़्त रा चि गुनाह!

क़ता (बहरे मुतक़ारिब)

अला ता न ख़्वाही बला बर हसूद।
कि आँ बख़्त बरगश्ता ख़ुद दर बलास्त॥
चि हाजत कि बा वै कुनी दुश्मनी।
कि वैरा चुनीं दुश्मने दर क़फ़ास्त॥

حکمت ۷۶

تلمیذ بی‌ارادت عاشق بی زرست - و روندهٔ بی‌معرفت مرغ بی‌پر - و عالم بی‌عمل درخت بی‌بر - و زاهد بی‌علم خانهٔ بی‌در ۔ مراد از نزول قرآن تحصیل سیرت خوبست - نه ترتیل سورهٔ مکتوب ۔ عامی متعبد پیادهٔ رفته است و عالم متهاون سوار خفته ۔ عاصی که دست بر دارد به از عابدی که عجب در سر دارد ۔

हिक्मत—७६

तिल्मीज़े बे इरादत आशिक़े बेज़रस्त—व रवन्दाए बेमअरिफ़त मुर्ग़े बेपर—व आलिमे बेअमल दरख़्ते बेबर—व ज़ाहिदे बेइल्म ख़ानाए बेदर। मुराद अज़ नुज़ूले क़ुरआन तहसीले सीरते ख़ूबस्त—न तरतीले सूरए मक्तूब। आमिये मुतअब्बिद पियादा रफ़्ता अस्त—व आलिमे मुतहाविन सवारे ख़ुफ़्ता। आसिये कि दस्त बर दारद बिह् अज़ आबिदे कि उज्ब दर सर दारद।

युक्ति—७४

दुराचारी धनवान् सोने का मुलम्मा चढा ढेला है और निर्धन भक्त धूल सना प्रियतम है। यह (भक्त) मूसा की थेगली लगी गुदडी है—और वह (दुराचारी) फिरऔन की रत्नजटित दाढी है। भलो का प्रताप मस्तक को ऊँचाई पर रखाता है और बुरो का वैभव सिर को नीचा कराता है।

क़ता

जिसके पास कि पदवी और धन है, और उससे।
जो दीन हीनो की सहायता नही करना चाहता॥
उसे खबर कर दे कि कोई भी सम्पत्ति या पदवी।
परलोक के घर में वह नही पायेगा॥

युक्ति—७५

ईर्ष्यालु व्यक्ति परमात्मा के धन का कृपण है और निरपराध व्यक्ति का शत्रु।

क़ता

मैंने एक सूखी खोपडी वाले (मूर्ख) पुरुष को देखा।
जो निन्दा कर रहा था किसी श्रीमन्त की॥
मैंने कहा—'अरे भले आदमी! यदि तू अभागा है।
तो सौभाग्यशाली व्यक्ति का इसमे क्या अपराध है॥

कता

सावधान! ताकि तू न चाहे सकट ईर्ष्यालु के लिये।
क्योंकि वह अभागा तो स्वय सकट में है॥
क्या जरूरत है कि तू उससे शत्रुता करे।
क्योंकि उसके जैसा शत्रु उसके पीछे लगा है॥'

युक्ति—७६

सकल्पहीन विद्वान् निर्धन कामुक है, और लक्ष्यहीन यात्री विना पंख की चिडिया है, और आचरण रहित विद्वान् विना जड का पेड है, और शास्त्रहीन साधु विना द्वार का घर है। कुरान के अवतरण का प्रयोजन सद्गुणों की प्राप्ति था, न कि लिखे हुए अध्यायो का पाठ। अशिक्षित साधु पैदल यात्री है और प्रमादी विद्वान् सोया हुआ सवार है। एक पापी जो कि हाथ प्रार्थना में उठाता है, उस भक्त से अच्छा है जो अपने सिर में घमण्ड रखता है।

युक्ति—७४

धनवान् दुराचार स्वर्णमण्डित लोष्टमिव निर्धनश्च भक्तो धूलिधूसरित प्रिय इव। असौ मूसो जीर्णकन्थेव, स च प्रयोनस्य (फिरऔनस्य) रत्नग्रथितानि श्मश्रूणीव। सता प्रतापो ह्युन्नत-शिरस्कताहेतुरसता च सम्पत्तिरवनतशिरोहेतुश्चेति।

पदम्

यश्चापि धनधान्येन सयुक्त सश्च वर्तते।
धनेनानेन स्वस्ताना कुरुते न सहायताम्॥१३५॥
उदन्त तमनु ब्रूहि—'न चैश्वर्यं न वा पदम्।
कर्मणैतावता प्रेत्य परलोके स प्राप्स्यति'॥१३६॥

युक्ति—७५

असूयक परमात्मनो द्रविणकृपण, निरपराधस्य लोकस्य च द्वेष्टा।

पदम्

शुष्कमज्ज महामूढ कञ्चिच्च दृष्टवानहम्।
कुवाच्यैर्भर्त्सयन्त च श्रीमन्तमपर जनम्॥१३७॥
मया चाभिहित-'भद्र! यदि त्वमसि दुर्भग।
तत प्रसन्नभाग्याना कोऽत्र दोषो नु भाव्यते॥१३८॥

पदम्

ईर्ष्यामयविपन्नस्य विपद काम्यतेऽथकिम्।
असौ भाग्यविपर्यस्तो दूयते भृशमात्मना॥१३९॥
का चिकीर्षा तमीर्ष्यालु शत्रुभावेन यद् भजे।
यस्यात्मसदृश शत्रुरनुयातीव सर्वदा॥१४०॥'

युक्ति—७६

सकल्परहितो विद्वानर्थहीन कामुक इव, लक्ष्यहीनश्च यात्रिको लूनपक्ष पक्षीव, आचारहीनश्च पण्डितो निर्मूलवृक्ष इव, ज्ञानहीनश्च तपस्वी निष्कपाट वेश्मेव। कुरानावतरणस्य प्रयोजन सद्गुण-लाभोऽस्ति न च लिखितस्यानुपाठ एव। अशिक्षित साधु पदातिरिव, प्रमादी च विद्वान् सुषुप्त इवाश्वारूढ। प्राथनापरायण पापी यश्च प्रार्थनायामूर्ध्वहस्त उपास्ते गर्वोद्धतशिरसो भक्ताच्छ्रेयान्।

बैत

एक सैनिक जो अच्छे स्वभाव का और सहृदय हो।
उस धर्माचार्य से अच्छा है जो नृशंस है॥

श्लोक

सुस्वभाव सहृदय सैनिक शस्त्रजीविक।
धर्माचार्यात् स वै श्रेयान् नृशंसाच्छास्त्रजीविन ॥ १४१ ॥

युक्ति—७७

किसी से लोगो ने पूछा—'कि आचारहीन पण्डित किसके समान है?' उसने कहा—'मधुहीन ततैये के समान।'

युक्ति —७७

कश्चित् पृष्टोऽऽप्याचारहीन पण्डित केन तुल्य ?' स ब्रूते—'मधुहीनेन वरटेनेति।'

बैत

उदारताहीन कठोर ततैये से कह दो।
'भले ही शहद मत दे—डंक मत मार॥'

श्लोक

दुर्दंश वरट ब्रूया स्नेहभावविवर्जितम्।
माक्षिक जातु नो देहि मा त्वमस्मान् ददशया ॥ १४२ ॥

युक्ति—७८

उदारतारहित पुरुष जनाना है—और लोभी साधु राजमार्ग का डकैत।

युक्ति —७८

औदार्येण रहित पुमान् पुस्त्वहीन, लोलुपश्च साधु राजमार्ग-तस्कर।

कता

अरे! तूने दिखाने के लिये कपडे सफेद कर लिये।
लोगो को जताने के लिये, और तेरी आचार पुस्तक काली है॥
हाथ छोटा होना चाहिये गमार से।
आस्तीन भले ही लम्बी हो या छोटी॥

पदम्

श्वेतवासासि धायन्ते साधुभावेन वै त्वया।
केवल लोकमानार्थं, पापा ते वृत्तपुस्तिका ॥ १४३ ॥
उदग्रवाहुता भोगैर्नून सयन्तुमर्हसि।
वाहुच्छदोऽस्तु द्राघीयान् ह्रसीयानथवा न वा ॥ १४४ ॥

युक्ति—७९

दो आदमियों के हसरत दिल से नहीं जाती और पश्चात्ताप का पैर कीचड से नहीं निकलता। नाव टूटा वणिक, और साधुओं की संगति पडे हुए उत्तराधिकारी वाला।

युक्ति —७९

द्वयो पुसोश्चित्तक्लेशो नापनीयते, खेदस्य पादश्च कललान्न निवर्तते। 'भग्ननौकवणिज, साधुसंसगशीलपुत्रस्य पितुश्चेति।'

कता

साधुओं के लिये तेरा खून करना भी विहित होगा।
यदि न होगी तेरे माल मे उनकी मदद (पहुँच)॥
या तो नील वस्त्र धारियों (साधुओं) के साथ मत जा।
या खींच दे अपने घर और सम्मान पर नीली अँगुली॥
या तो मत कर हाथी वालो से दोस्ती।
या तलाश कर हाथी घुमने लायक घर॥

पदम्

निहत विहित मृत्वा भिक्षुकैस्त्व हनिष्यसे।
न भुक्ते सविभज्यैते स्वकीय यदि वा धनम् ॥ १४५ ॥
अथवा नीलवस्त्रैस्तु मित्रता न समाचरे।
अन्यथा धनसम्पत्ति नीलाङ्गुल्या विनिर्दिशे ॥ १४६ ॥
अथवा गजपालैस्तु मित्रता न समाचरे।
गजोच्चमन्यथागेह भवान्वेषणतत्पर ॥ १४७ ॥

युक्ति—८०

राजा की खिलअत यद्यपि प्रिय है, पर अपना स्वय का पुराना लबादा उससे भी अधिक आदरास्पद है और बडे लोगों की दावत यद्यपि स्वादु है, अपने थैले के टुकडे उससे भी अधिक स्वादु है।

युक्ति —८०

राजप्राभृतवस्त्र प्रिय किञ्च स्वस्य जीर्णवासस्ततोऽपि प्रियतरम्। महाजनाना महानमान्न मधुर, ननु स्वस्य पाथेयभक्ष्यान्न ततोऽपि मधुरतरमिति।

بیت

هر که از دست رنج خویش و تره
بهتر از نان دهخدای و بره •

बैत (बह्‌रे ख़फ़ीफ़)

गन्दना अज़ दस्ते रंजे ख़ेश ओ तरा।
बिहतर अज़ नाने दिहख़ुदाय ओ बरा॥

حکمت ۸۱

خلاف رای صوابست و نقض عهد اولو الالباب دارو بگمان خوردن و راه نادیده بی‌کاروان رفتن • امام مرشد الغزالی‌را (رحمة الله علیه) پرسیدند - ''که چگونه رسیدی بدین مرتبهٔ علوم''؟ گفت - ''هرچه ندانستم بپرسیدن آن ننگ نداشتم'' •

हिक्मत—८१

ख़िलाफ़े राये सवाबस्त व नक़्ज़े अह्‌दे ऊलुल्‌ अलबाब दारू ब गुमान ख़ुर्दन् व राहे नादीदा बे कारवाँ रफ़्तन्। इमामे मुर्शिद अल्‌ ग़ज़्ज़ाली रा (रह्‌मतुल्लाह अलैहि) पुरसीदन्द—कि—'चिगूना रसीदी बदीं मरतबाए उलूम?' गुफ़्त—'हर चि न दानिस्तम् ब पुर्सीदने आँ नंग न दाश्तम्।'

قطعه

امید عافیت آنگه بود موافق عقل
که نبض‌را به طبیعت شناس بنمائی •
بپرس هرچه ندانی - که ذل پرسیدن
دلیل راه تو باشد بعز دانائی •

क़ता (बह्‌रे मुज्तस्)

उमीदे आफ़ियत आँगह बुवद मुवाफ़िक़े अक़्ल।
कि नब्ज़ रा ब तबीअत शनास बनुमायी॥
बिपुर्स हर चि न दानी—कि ज़िल्ले पुर्सीदन्।
दलीले राह तो बाशद ब इज़्ज़े दानायी॥

حکایت ۸۲

هر آنچه دانی که هرآینه معلوم تو خواهد شد - بپرسیدن آن تعجیل مکن - که هیبت سلطنت‌را زیان دارد •

हिक्मत—८२

हर आँ चि दानी कि हर आईना मालूम तो ख़्वाहद शुद—ब पुर्सीदने आँ ताजील मकुन—कि हैबते सल्तनत रा ज़ियाँ दारद।

قطعه

چو لقمان دید کاندر دست داؤد
همی آهن بمعجز موم گردد -
نپرسیدش - چه می‌سازی؟ که دانست
که بی پرسیدنش معلوم گردد •

क़ता (बह्‌रे हज़ज्)

चु लुक़माँ दीद कान्दर दस्ते दाऊद।
हमी आहन ब मोअजिज़ मोम गर्दद॥
न पुर्सीदश् कि मी साज़ी? कि दानस्त।
कि बेपुर्सीदनश् मालूम गर्दद॥

حکمت ۸۳

یکی از لوازم صحبت آنست که خانه بپردازی یا با خانه‌خدا در سازی •

हिक्मत—८३

यके अज़ लवाज़िमे सुहबत आनस्त कि ख़ाना बिपरदाज़ी या बा ख़ानाख़ुदा दर साज़ी।

قطعه

حکایت بر مزاج مستمع گوی
اگر دانی که دارد با تو میلی •
هر آن عاقل که با مجنون نشیند
نگوید جز حدیث حسن لیلی •

क़ता (बह्‌रे हज़ज्)

हिकायत बर मिज़ाजे मुस्तमिअ गोय।
अगर दानी कि दारद बा तो मैले॥
हर आँ आक़िल कि बा मजनूँ नशीनद।
न गोयद जुज़ हदीसे हुस्ने लैले॥

बैत

सिरका अपने हाथ की मेहनत से और सागपात।
अच्छा है गाँव के मुखिया की रोटी और भेड के मास से॥

श्लोक

चुक्रं स्वोपार्जितं चैव वन्यशाकं तथैव च।
ग्रामणीगृहपक्वान्नाच्चाविमासात् सदा वरम्॥ १४८॥

युक्ति—८१

यह औचित्य-बुद्धि के विरुद्ध है और पण्डितों की प्रतिज्ञा के प्रतिकूल है—'अनुमान से औषध खाना और अनदेखी राह पर बिना कारवाँ चल पडना।' इमाम मुर्शिद अल् गज्जाली (उन पर भगवत्कृपा हो) से लोगों ने पूछा कि—'किस प्रकार पहुँचे आप विद्या की इस कोटि तक?'

तो बोले—'जो कुछ मैं नहीं जानता था उसे पूछने में लज्जा नहीं करता था।'

युक्ति—८१

औचित्यबुद्धिविरुद्धमिदं विदुषां प्रतिज्ञाविपरीतञ्चाथ—'स्वत प्रमाणेन भैषज्यग्रहणम्, अदृष्टमार्गे पदमुद्धरणमसार्थवाहसहायञ्चेति।' मम गुरुर्गज्जाली (भगवत्करुणा तस्मै) पृष्टोऽयं—'केनोपायेन चैना कृतविद्यता लब्धवानसि?' सोऽवदत्—'यदहं न वेद तत्प्रष्टु लज्जा नाकारषम्।'

क़ता

स्वास्थ्य की आशा तब है—बुद्धि के अनुकूल।
जब कि नब्ज को तू किसी तबीअत शनास को दिखाये॥
पूछ—जो कुछ तू नहीं जानता, क्योंकि पूछने की जिल्लत।
तेरी ज्ञानगरिमा के मार्ग की सूचक होगी॥

पदम्

सम्भाव्यते चिकित्सा ते बुद्ध्यादिष्टेन वर्त्मना।
भिषजं प्रकृतिज्ञं च नाडीं यदि निवेदये॥ १४९॥
पृच्छ यत्त्वं न जानासि पृच्छाक्लेशो यतः सदा।
सूचयिष्यति ते मार्गं दाता च ज्ञानगौरवम्॥ १५०॥

युक्ति—८२

जिसको कि तू समझे कि निश्चितत तुझे मालूम हो जायगा उसको पूछने की जल्दी मत कर—क्योंकि इससे शक्ति की प्रतिष्ठा का क्षय होता है।

युक्ति—८२

यत् त्वमभिजानासि 'अवश्यं विज्ञेयं भविता' तत् प्रष्टुं त्वरमाणो मा भू, यतोऽनेन प्रतिष्ठाहानिर्भवति।

क़ता

जब लुकमान ने देखा कि दाऊद के हाथ में।
सख्त लोहा चमत्कार से मोम बनता जा रहा है॥
तो पूछा उससे—'कि क्या कर रहे हो?' क्योंकि जानता था।
कि उसमें बिना पूछे उसे मालूम हो जायगा॥

पदम्

लोकमानो यदाऽदशद् दाऊदस्य करगतम्।
अयःपिण्डं चमत्कारात् सहसा सिक्थतां गतम्॥ १५१॥
नापृष्टं तेन 'किं चैतत् क्रियते' ज्ञासीत् स निश्चयम्।
अपृष्टमपि ज्ञास्यामि रहस्यमचिरं किल॥ १५२॥

युक्ति—८३

सामाजिक आवश्यकताओं में से एक यह है कि तू अपना घर सँभाल और भगवन्मन्दिर की भी सँभाल कर।

युक्ति—८३

समाजकर्तव्येष्वेकतमोऽथ गृहं चिन्तयेर्भगवन्मन्दिरं चापि चिन्तये।

क़ता

अपनी कथा श्रोता की रुचि के अनुसार कह।
यदि तू समझे कि तेरी ओर वह उन्मुख है॥
हर वह बुद्धिमान् जो कि मजनूँ के साथ बैठता है।
कुछ नहीं कहता सिवा लैला के सौन्दर्य वर्णन के॥

पदम्

श्रोतृवृत्तिमभिज्ञायारभेथा सवथा कथा।
अथ चेत् त्वं विजानीया श्रोतारमुन्मुखं त्वयि॥ १५३॥
सर्व प्राज्ञ उपास्ते यो मजनूनस्य सन्निधिम्।
न किञ्चिदाह लैलाया रूपास्यानादृते क्वचित्॥ १५४॥

युक्ति—८४

जो कोई बुरों के साथ बैठता है, भले ही उस पर उनकी प्रकृति का प्रभाव न हो, उनके आचरणों से वह भी संदेहास्पद हो जाता है। जैसे कि कोई व्यक्ति शराबखाने में जाए, नमाज पढने, तो वह मन्सूब होता है शराब पीने से (कि शराब पीने गया होगा)।

मसनवी

मूल्य अपने ऊपर मूर्खता से तूने लिख लिया है।
क्योंकि तूने अज्ञानी को संगति के लिये चुना है॥
मैंने माँगा ज्ञानियों से एक उपदेश।
उन्होंने मुझ से कहा—अज्ञानियों से संगम मत कर॥
क्योंकि यदि तू विवेकी है तो गधा दिखेगा।
और यदि अज्ञानी है तो और बड़ा मूर्ख दिखेगा॥

युक्ति —८४

यश्चापि कुवृत्तानुपतिष्ठते, यद्यपि न ततोऽस्य स्वभावविपरिणामस्तथापि तेषाम् आचरणदोषात् सोऽपि शङ्कास्पदो भवति। यथा हि कश्चित् पुमान् यदि मधुशाला याति परमेश्वरोपासनार्थं तथापि सुरापानार्थं गतोऽयमित्येवानुमीयते।

गाथा

मूल्य निर्धारित चैव ह्यज्ञानादात्मनात्मन।
यतो बुद्धिविरुद्धानां त्वया सङ्गोऽभिसज्यते॥ १५५॥
एकदा प्राप्य विदुष उपदेशमयाचिषम्।
एकस्वरेण मामूचु'र्माऽस्तु ते मूढसङ्गम॥ १५६॥
मूर्खै सार्धमपि प्राज्ञ खर साक्षात् प्रतीयसे।
यदि त्वमनभिज्ञ स्या दृश्यसे हि ततोऽधिक॥' १५७॥

युक्ति—८५

ऊँट की नम्रता जैसी कि सर्वविदित है—यदि बालक भी उसकी नकेल पकड़ ले और सौ कोस ले जाये तो गर्दन उसकी आज्ञापालन से नहीं मोड़ता—किन्तु यदि भयंकर मार्ग सामने आये—जो कि विनाश का कारण हो और बालक वहाँ नादानी से जाना ही चाहे तो रस्सी उसके हाथ से झटक लेता है और अधिक आज्ञापालन नहीं करता। क्योंकि कभी कभी संकट के समय दुलार आपत्तिजनक होता है। और कहते हैं—'दुश्मन दुलार से मित्र नहीं बनता, बल्कि लालच ज्यादा करता है।'

युक्ति —८५

उष्ट्रस्य नम्रता हि सर्वविदिता—यदि बालोऽपि तस्य वागुरा गृह्णीयाच्छतक्रोशपर्यन्त त नयेच्च नायमाज्ञापालनात् पराङ्मुखो भवति। किन्तु यदि मार्गो भयङ्कर स्याद् विनाशहेतुश्च, बालश्च बालिश्यात् पुनरपि तत्रैव गन्तुकामस्तर्हि स वागुरा तस्य करात् प्रसह्यादत्ते, आदेशपालन च न कुरुते। यत सकटकाले लालन हि दोषावहम्। यथाहु —

न शत्रुर्लालनान् मित्र साम्नो वा जायते क्वचित्।
प्रवृद्धलालसो भूत्वाऽधिकाधिकमपेक्षते॥ १७॥

कता

जो आदमी तुझ से कोमलता बरते उसके पैर की धूल हो जा।
और यदि क्रोध करे उसकी दोनों आँखों में धूल झोंक दे॥
वचन कोमलता और दयापूर्वक दुर्जन से मत बोल।
क्योंकि जंग खाया (लोहा) नहीं होता सिवा रेती के साफ॥

पदम्

कृपया योऽनुवर्तेत भव तस्य पदो रज।
अथ चेद् दर्शयेन्मन्यु क्षिप तस्याक्षिपो रज॥ १५८॥
कृपया दयया वाच मा वोचो दुर्जनै सह।
अथ किट्टार्दित लौह विना पत्र न शुद्ध्यति॥ १५९॥

युक्ति—८६

जो कि दूसरों की बात के बीच में कूदता है—ताकि लोग उसकी विद्वत्ता के परिमाण को जानें, लोग उसकी मूर्खता का पैर (थाह) जान जाते हैं।

क़ता

नहीं देता होशमन्द मर्द जवाब।
सिवा उस समय के जब कि उससे प्रश्न करते हैं॥

युक्ति —८६

यश्च लोकाना कथामन्तरा व्युपयुङ्क्ते यत पुमासस्तस्य वैदुष्य जानीयु, सर्वे तस्याज्ञान जानते।

पदम्

चैतन्यपुरुषोऽपृष्टो न च किञ्चन भाषते।
न यावत् प्रार्थयन्ते त लोका शुश्रूषया क्वचित्॥ १६०॥

گرچه بر حق بود فراخ سخن
حمل دعویش بر محال کنند ۔

गर्चे बर हक़ बुवद फ़राख़ सुख़न।
हम्ले दावीश बर मुहाल कुनन्द॥

حکمت ۸۷

ریشی درون جامه داشتم ۔ شیخ (رحمة الله علیه) هر روز پرسیدی ۔ "که ریشت چونست؟" و نپرسیدی ۔ که کجاست؟ دانستم که از آن احتراز میکند ۔ که ذکر هر عضوی روا نباشد ۔ و خردمندان گفته اند ۔ هر که سخن نسنجد ۔ از جوابش برنجد ۔

हिकमत—८७

रेशे दरूने जामा दाश्तम्। शेख़ (रहमतुल्लाह अलैहि) हर रोज़ पुर्सीदि 'कि रेशत चूनस्त?' व न पुर्सीदि कि—'कुजास्त?' दानिस्तम् कि अज़ आँ एहतिराज़ मी कुनद। कि ज़िक्रे हर उज़्वे रवा न बाशद। व ख़िरदमन्दाँ गुफ़्ता अन्द—'हर कि सुख़न न संजद—अज़ जवाबश बरंजद।'

قطعه

تا نیک ندانی که سخن عین صوابست
باید که بگفتن دهن از هم نگشائی ۔
گر راست سخن باشی و در بند بمانی
به زآن که دروغت دهد از بند رهائی ۔

क़ता (बहरे हज़ज)

ता नेक न दानी कि सुख़न ऐने सवाबस्त।
बायद कि बगुफ़्तन दहन अज़ हम न कुशाई॥
गर रास्त सुख़न बाशी व दर बन्द बमानी।
बिह ज़ाँ कि दरोग़त दिहद अज़ बन्द रिहाई॥

حکمت ۸۸

دروغ گفتن بضربت لازب ماند ۔ اگرچه جراحت درست شود ۔ نشان بماند ۔ چون برادران یوسف (علیه السلام) بدروغ گفتن موسوم شدند ۔ بدروا بر راست گفتن ایشان اعتماد نماند ۔

हिकमत—८८

दरोग़ गुफ़्तन् ब ज़र्बते लाज़िब मानद—अगर्चे जराहत दुरुस्त शवद—निशान ब मानद। चूँ बिरादराने यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) ब दरोग़ गुफ़्तन् मौसूम शुदन्द बिदरवा बर रास्त गुफ़्तने ईशान् एतिमाद न मान्द।

قَالَ—بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ
أَنفُسُكُمْ أَمْرًا ۔
فَصَبْرٌ جَمِيلٌ ۔

क़ाल—बल् सव्वलत् लकुम्
अन्फ़ुसुकुम् अम्रा—
फ़ सब्रुन् जमील।

قطعه

دروغی نگیرند صاحب دلان
بر آن کس که پیوسته گفتست راست ۔
اگر مشتهر شد کسی در دروغ
اگر راست گوید ۔ تو گوئی ۔ خطاست ۔

क़ता (बहरे मुतक़ारिब)

दरोग़े न गीरन्द साहिब दिलाँ।
बर आँ कस कि पैवस्ता गुफ़्तस्त रास्त॥
अगर मुश्तहिर शुद कसे दर दरोग़।
अगर रास्त गोयद—तो गोई ख़तास्त॥

भले ही सचाई पर हो बातून।
पर लोग उसका दावा असम्भव मानते हैं॥

यद्यप्यातिष्ठते सत्य बहुभाषी प्रयत्नत ।
तदीया स्थापना किन्तूदाहरन्ति ह्यसम्भवाम्॥ १६१॥

युक्ति—८७

मेरे एक घाव कपड़ों के अन्दर था। मेरे गुरु (उन पर भगवत्कृपा हो) प्रतिदिन पूछते कि—'तेरा घाव कैसा है?' और यह नही पूछते कि—'कहाँ है?' मैं समझ गया कि इससे वे बचते थे क्योंकि प्रत्येक अंग का उल्लेख उचित नहीं है। और बुद्धिमानों ने कहा है कि 'जो वचन तोलकर बोलता है—वह उत्तर पाकर दुखी नही होता।'

युक्ति —८७

एकदा गुह्यव्रणपीडित आसम्। मम गुरु (भगवत् करुणा तस्मै) प्रतिदिन पृच्छति स्माय 'कथ ते व्रण?' न च पृच्छति स्माय 'क्वास्ति ते व्रण?' अहमज्ञासिषमयानेन सकोच कुरुते। यत सर्वाङ्गोपाङ्गाना वर्णन न साम्प्रतमिति। यथाहु पण्डिता — 'विचार्य ब्रूते यो वाच नोत्तरेण स खेदभाक्।'

कता

जब तक तू ठीक ठीक न जाने कि बात कल्याणकर है।
उचित है कि बोलने को मुँह न खोल॥
यदि तू सत्य कहना होकर कारावास भोगे।
यह अच्छा है उससे, कि झूठ तुझे कारा से मुक्ति दिला दे॥

पदम्

यावत् सम्यङ्ङ न जानीया श्रेयोमूल हि ते वच ।
न तावन् मुखमुद्घाट्य युक्तमुक्त हि किञ्चन॥ १६२॥
ब्रुवति त्वयि सत्य चेत् कारायामनुरुध्यसे।
तद्धि श्रेयोऽनृताद् यस्मान् मुच्यसे खलु बन्धनात्॥ १६३॥

युक्ति—८८

असत्य भाषण ठोस चोट के समान है। यद्यपि चोट ठीक हो जाती है—चिह्न रह जाता है। चूंकि यूसुफ़ (उन पर शान्ति हो) के भाई झूठ बोलने के लिये प्रसिद्ध हो गये थे, बाप को उनके सच बोलने पर भी विश्वास नहीं रहा।

कहा—'बल्कि बहकाया तुमलोगों को
तुम्हारे चित्तों ने कर्म से—
अत सन्तोष ही ठीक है।'

युक्ति —८८

अभिघातकल्प हि असत्यभाषणम्। अभिघातजो व्रणो रोप्यते, चिह्नमवशिष्यते। यतो यूसुफस्य (स्वस्त्यस्तु तस्मै सदा) भ्रातरोऽसत्यभाषणे विश्रुता बभूवु, अत पिता तेषा सत्यवचनेऽपि न प्रतीयाय। उवाच च—

'युष्माक चित्तेन यूय भ्रान्तवन्त ।
अत सन्तोष एव श्रेयस्कर इति।'

कता

एक झूठ को उदार लोग नहीं गिनते।
उसकी जो कि सदा सत्य बोलता है॥
यदि कोई प्रसिद्ध हो जाय झूठ के लिये।
यदि वह सच भी बोले तो तू कहेगा कि यह झूठ है॥

पदम्

असत्यमेकदा प्रोक्त गण्यते न हि सज्जनै ।
सर्वदासत्यभाषाणा सत्यव्रत-तपस्विनाम्॥ १६४॥
परन्तु यदि विख्यातोऽसत्यवक्ता भवेत् क्वचित्।
अपि सत्य ब्रुवन्त त तिरस्कुर्वन्ति मानवा॥ १६५॥

जिस आदमी को सच की आदत हो।
वह एक भूल करे तो लोग उसको क्षमा कर देते हैं ।।
और यदि वह नामवर हो जाय झूठ के लिये।
दूसरी बार उसकी सचाई भी नही मानते ।।

य सदा सत्यवादी स्याद् यस्य वाणी ऋतम्भरा।
एकदा यदि जायेत स्खलन क्षम्यते तत ।। १६६ ।।
असत्यभाषणे यश्च प्रथितो यदि जायते।
सत्यञ्चाभिहित तस्य न सत्य जानते जना ।। १६७ ।।

युक्ति—८९

सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ, व्यक्तो में मनुष्य है और निकृष्टतम कुत्ता—और बुद्धिमानो के एकमत से कृतज्ञ कुत्ता अच्छा है कृतघ्न आदमी से।

युक्ति —८९

सृष्टेषु सर्वश्रेष्ठो हि मनुष्य । निकृष्टतमश्च श्वा। तथा च बुद्धिमन्तो मन्यन्तेऽथ कृतज्ञ श्वा कृतघ्नात् पुस श्रेयान्।

क़ता

कुत्ते को एक टुकडा कभी नहीं भूलता।
भले ही तू उसे मारे सौ बार पत्थर ।।
और यदि सारी उम्र पाले तू एक नीच को।
थोडी सी चीज़ के लिये तुझ से लडने को आ जायगा ।।

पदम्

शुना दत्तस्तु ग्रासैको नैव विस्मार्यते क्वचित्।
अपिचेत् ताडयेश्चैन श्वान हि शतशोऽश्मना ।। १६८ ।।
यदि वाऽऽजीवन नीच पुरुष प्रतिपालये।
वस्तुनेऽल्पीयसेऽसौ हि त्वया साक युयुत्सते ।। १६९ ।।

युक्ति—९०

वासनापूजक में गुणग्राहकता नही मिलती—और गुणहीन उच्च पद का पात्र नही होता।

युक्ति —९०

स्वार्थिनि गुणग्राहकता नोपलभ्यते, गुणैर्विहीनश्चेश्वरता नार्हतीति।

मसनवी

मत कर दया बहुभोजी बैल पर।
क्योंकि बहुत खाने वाला बहुत अपमानित होता है ।।
यदि बैल की तरह तू मोटा होना चाहे।
तो गधे की तरह लोगो के अत्याचार सहने होंगे ।।

गाथा

बहुभोजिनि भारीये गवि मा भूर्दयाद्रुत ।
यश्चापि बहुभोजी स्यात् बहुदु खी भवेद्धि स ।। १७० ।।
त्व महोक्षमिव स्थौल्य प्रकाम च यदीच्छसि।
अत्याचारमयो पुरा सहितासे यथा खर ।। १७१ ।।

युक्ति—९१

इञ्जील में आया है कि—'हे आदम के पुत्र! यदि मैं तुझे सम्पन्नता देता हूँ तो तू मग्न हो जाता है माल में मुझ से (दूर), और यदि मैं तुझे दरिद्र बनाता हूँ तो तू तग दिल होकर बैठ जाता है, तो मेरे भजन की मधुरिमा तू कब पायेगा? और मेरी उपासना में तू कब तत्पर होगा?'

युक्ति —९१

इञ्जील शास्त्रे लिखितमस्ति—'हे आदिमीय! यद्यह तुभ्य वैभव ददामि त्व मत्तो परावृत्त्य धनासक्तो भवसि, अथचेत् त्वा निर्धन विदधामि त्व विषीदसि। तर्हि मद्भजनमधुरिमाण कदा सेविष्यसे, मदुपासनाया कथ प्रसितो भविष्यसीति।'

क़ता

यदि तू सम्पन्न है तो घमण्डी और प्रमादी हो जाता है।
और यदि निर्धन है तो दीन-हीन हो जाता है ।।
जब सम्पत्ति और विपत्ति में तेरा हाल यह है।
मैं नही जानता—कैसे तू भगवान् की सेवा करेगा ।।

पदम्

यदि त्वमसि सम्पन्नो गर्वग्रस्तोऽसि मोहित ।
अथ चेत् त्व विपन्नोऽसि त्रस्त क्षोभेन चार्दित ।। १७२ ।।
सम्पत्तौ च विपत्तौ च यथाऽनुष्ठीयते त्वया।
न जानीमो हि सर्वेश त्वमुपासिष्यसे कथम् ।। १७३ ।।

युक्ति—९२

परमेश्वर की इच्छा एक को राज्य सिंहासन से नीचे उतार देती है और दूसरे को मछली के पेट मे भी सुरक्षित रखती है।

बैत

उसका समय धन्य है जो तेरा भजन करता है।
भले ही वह स्वय मछली के पेट में यूनिस की तरह हो ।।

युक्ति—९३

यदि वह क्रोध की तलवार खींच ले तो नबी और वली सिर झुका लेते हैं और यदि वह कृपा कटाक्ष करे तो बुरो को भी अच्छा बना देता है।

कता

'यदि प्रलयकाल में वह क्रोध से बोले।
तो नबियो के लिये भी क्षमा की जगह कहां है?'
वह कहो—कि अपनी कृपा के मुंह से कपड़ा हटा ले।
ताकि पापियों को भी क्षमा की आशा रहे।।

युक्ति—९४

जो कोई संसार से प्रेम के कारण पुण्यमार्ग ग्रहण नहीं करता वह परलोक में दण्ड में पड़ेगा। 'कहा परमेश्वर ने—और अवश्य हम चखायेंगे उनको छोटा सा दण्ड और परलोक मे महादण्ड।'

बैत

उपदेश बड़ा या सम्बोधन है, तब बन्दी बनाते हैं।
जब वे उपदेश दे और तू न सुने तो वे बन्दी बनायेंगे।।

युक्ति—९५

सौभाग्यशाली लोग पूर्ववर्त्तियों के दृष्टान्तों और उदाहरणों से शिक्षा लेते हैं इससे पहले कि परवर्ती लोग उनकी घटनाओं से शिक्षा लें। डाकू अपने हाथ छोटे नहीं करते जब तक कि उनके हाथ (काट कर) छोटे न कर दिये जायें।

कता

नहीं जाती चिड़िया फैले हुए दाने की ओर।
जब वह दूसरी चिड़िया का अन्दर बन्द देखती है।।
दूसरो के दृष्टान्त से शिक्षा ग्रहण कर।
ताकि दूसरे तेरे दृष्टान्त से शिक्षा न लें।।

युक्ति —९२

ईश्वरेच्छा हि जनैक राज्यसिंहासनाद् भ्रंशयति, अन्य च मत्स्योदरेऽपि सुरक्षितमावहति।

श्लोक

सुनीत समयस्तस्य य स्तौति त्वामहर्निशम्।
यूनिसेव भवेदन्तर्ग्रासितो यदि मृत्युना ।। १७४ ।।

युक्ति —९३

यदि स प्रभु कोपखड्गगनावृत विधत्ते, तर्हि देवदूता अपि शिरसावनता स्यु। अथचेत् स कृपाकटाक्ष कुरुते दुर्वृत्ता अपि सद्वृत्तसमन्विता भवन्ति।

पदम्

न्यायकाल जगन्नाथो यदि वा कोपमाचरेत्।
ऋषयो देवदूताश्च प्राप्नुवन्ति कथ क्षमाम् ।। १७५ ।।
प्रार्थयस्व—'कृपाद्वार प्रभो देहि ह्यनावृतम्।
आगसागरग्रस्ताना त्वमेवैक क्षमाश्रय' ।। १७६ ।।

युक्ति —९४

यश्चापीहलोकप्रेम्णि पुण्यपन्थान न गृह्णाति स परलोके दण्डार्हो भविता। यथाह भगवान् स्वयम्—'अवश्यमेव वय दण्डयिष्यामस्तानिह लघुदण्डेन परलोके च महादण्डेनेति।'

श्लोक

आदौ यच्छन्त्युपादेश निग्रह तदनन्तरम्।
उपदेश न वा श्रूया वध्नीयुस्त्वापरेऽहनि ।। १७७ ।।

युक्ति —९५

सौभाग्यशालिन पूर्ववर्तिना दृष्टान्ताद् उदाहरणाच्च शिक्षते प्रागेव यावत् परवर्तिनस्तेषा परिणामाच्च शिक्षा गृह्णन्ति। दस्यव स्वत एव सयत हस्तता न दधते यावदेतेषु हस्तच्छेदपुरस्सर सयत हस्तता न विधीयते।

पदम्

विहगो नानुयातीह प्रकीर्ण धान्यकं कणम्।
विहगमितर बद्ध पञ्जरस्य च पश्यति ।। १७८ ।।
अन्येषा परिणामाच्च गृहाण शिक्षण ननु।
यतस्त्वत्तो न गृह्णन्ति जनाश्चान्ये हि शिक्षणम् ।। १७९ ।।

حکمت ۹۶

آن‌را که گوش ارادت گران آفریده اند - چون کند که بشنود؟ و آنرا که کمند سعادت کشان می‌برد - چه کند که نرود؟

हिकमत—९६

आँरा कि गोशे इरादत गिराँ आफ़रीदा अन्द—चूँ कुनद कि विशिनवद? व आँरा कि कमन्दे सआदत कशाँ मी वुरद—चि कुनद कि न रवद?

قطعه

شب تاریك دوستان خدای
می‌تابد چو روز رخشنده *
وین سعادت بزور بازو نیست
تا نبخشد خدای بخشنده *

क़ता (वहरे खफीफ)

शवे तारीके दोस्ताने खुदाय।
मी वितावद चु रोज़े रख्शिन्दा॥
वीं सआदत व ज़ोरे वाज़ू नेस्त।
ता न वख्शद खुदाय वख्शिन्दा॥

رباعی

از تو بکه نالم؟ که دگر داور نیست
وز دست تو هیچ دست بالاتر نیست *
آن‌را که تو رهبری کنی - گم نشود
و آن‌را که تو گم کنی - کسی رهبر نیست *

रुवाई (वहरे हज़ज्)

अज़ तो व कि नालम्? कि दिगर दावर नेस्त।
व ज़ि दस्ते तो हेच दस्त वालातर नेस्त॥
आँरा कि तो रहवरी कुनी गुम न शवद।
वाँरा कि तो गुम कुनी—कसे रहवर नेस्त॥

حکمت ۹۷

گدائی نیك سرانجام به از پادشاهی بد فرجام *

हिकमत—९७

गदाये नेक सरंजाम विह् अज़ पादशाहे वद फर्जाम।

بیت

غمی کز پیش شادمانی بری
به از شادیی کز پسش غم خوری *

वैत (वहरे मुतकारिव)

गमे कज़ पयश् शादमानी वुरी।
विह् अज़ शादिये कज़ पसश् गम खुरी॥

حکمت ۹۸

زمین را از آسمان نثارست - و آسمان‌را از زمین غبار - کُلُّ اِنَاءٍ یَتَرَشَّحُ بِمَا فِیهِ *

हिकमत—९८

ज़मीन रा अज़ आसमान नुसार'स्त—व आस्माँ रा अज ज़मीन गुबार—
'कुल्लु इनाइन् यतरश्शहु वि मा फीहि।'

بیت

گرت خوی من آمد ناسزاوار
تو خوی نیك خود از دست مگذار *

वैत (वहरे हज़ज्)

गरत खूये मन् आमद नासज़ावार।
तो खूये नेके खुद अज़ दस्त मगुज़ार॥

حکمت ۹۹

خدای عز و جل می‌بیند و می‌پوشد - و همسایه نمی‌بیند و می‌خروشد *

हिकमत—९९

खुदाय अज़्ज़ व जल्ल मी वीनद व मी पोशद—व हमसाया न मी वीनद व मी खरोशद।

युक्ति—९६

जिसका कि सकल्प का कान पैदायशी ठस है—क्या करके (कैसे) वह सुन सकता है ? और जिसको कि सुखो की रस्सी खीचे ले जाती हो वह क्या करके (कैसे) न जाय ?

युक्ति —९६

यस्य च श्रुतिसकल्पो जन्मना मन्दो भवति स कथ श्रोतु समर्थ, यञ्च विलासवागुरा प्रसह्य कर्षेत् स कथ न तत्रानुयायात् ।

क़ता

अँधेरी रात भी परमात्मा के भक्तो के लिये ।
चमकती है जैसे प्रकाशमान् दिन ।।
और यह सिद्धि बाहुबल से नही मिलती ।
जब तक नही बख्शता बख्शने वाला प्रभु ।।

पदम्

अन्धकारावृता यामा भक्तेभ्यो परमात्मन ।
विभावरीव वै भाति भास्वती च प्रकाशिता ।। १८० ।।
नेय सिद्धिरथो लभ्या पुरुषार्थेन केवलम् ।
यावन्नैना परब्रह्म परमात्मा हि दित्सति ।। १८१ ।।

रुबाई

तुझे छोडकर मै किससे रोऊँ कि दूसरा न्यायकारी नही है ।
और तेरे हाथ से ऊँचा किसी का हाथ नही है ।।
जिसका कि तू पथ प्रदर्शन करे वह नही खोता ।
और जिसको तू खो दे उसका कोई पथप्रदर्शक नही है ।।

चतुष्पदीयम्

निवेदयाम्यह कस्मै प्रभुरन्यो न विद्यते ।
ऋते त्वदस्ति कस्यापि न हस्त बलवत्तरम् ।। १८२ ।।
पथ प्रदर्शन यस्य कुरुषे न स लुप्यते ।
य लुम्पसि जन तस्य न कोऽपि पथदर्शक ।। १८३ ।।

युक्ति—९७

अच्छे परिणाम वाला भिखारी बुरे अन्त वाले राजा से अच्छा है ।

युक्ति —९७

सुगतो दरिद्रो दुर्गताद् राज्ञ श्रेयान् ।

बैत

वह दु ख कि जिसके पीछे तू प्रसन्नता उठाये ।
अच्छा है उस प्रसन्नता से जिसके पीछे तू दु ख भोगे ।।

श्लोक

सुखारम्भाच्च कार्याच्च यस्यान्ते दु खमाप्नुयात् ।
आदौ दु ख वर यस्य विपाके सुखमश्नुते ।। १८४ ।।

युक्ति—९८

पृथ्वी को आकाश से वर्षा मिलती है, और आकाश को धरती से धूल। 'हर बरतन टपकाता है वह जो उसमें होता है।'

युक्ति —९८

धरित्र्या नभसो वर्षा, नभसि च पृथिव्यो रजो लभ्यते ।
'सर्वस्माद् भाजनादेति बहिर्यच्चास्ति भाजने ।। १८ ।।'

बैत

यदि मेरी प्रवृत्ति तुझे अयोग्य लगती हो ।
तो तू अपनी सद्वृत्ति मत छोड ।।

श्लोक

मदीया दुष्प्रवृत्तिश्च तुभ्य न यदि रोचते ।
प्रवृत्ति श्रेयसी स्वीया न त्व लघितुमर्हसि ।। १८५ ।।

युक्ति—९९

परमेश्वर देखता है और छुपाता है और पडोसी देखता नही और चिल्लाता है ।

युक्ति —९९

प्रभुर्द्रष्टा गोप्ता च, अन्तिको न च पश्यति जुगुप्सते च ।

بیت

نعود باللہ! اگر خلق غیب‌دان بودی
کسی بحال خود از دست کس نیاسودی *

बैत (बह्‌रे मुज्तश्)

नऊज़ु बि'ल्लाह् ! अगर ख़ल्क़ ग़ैबदाँ बूदे।
कसे ब हाले ख़ुद अज़ दस्ते कस नयासूदे।।

حکمت ۱۰۰

زر از معدن بکان کندن بدر آید - و از دست بخیل بجان کندن *

हिकमत—१००

ज़र अज़ मअदन् ब कान कन्दन् बदर आयद—व अज़ दस्ते बख़ील ब जान कन्दन्।

قطعه

دونان نخورند و گوشه دارند
گویند - امید به که خورده *
فردا بینی بکام دشمن
زر مانده و خاکسار مرده *

क़ता (बह्‌रे हज़ज्)

दूनाँ न ख़ुरन्दो गोशा दारन्द।
गोयन्द—उमेद बिह् कि ख़ुर्दा।।
फ़र्दा बीनी ब कामे दुश्मन्।
ज़र मांदा ओ ख़ाकसार मुर्दा।।

حکمت ۱۰۱

هر که بر زیردستان نبخشاید بجفای زبردستان گرفتار آید *

हिकमत—१०१

हर कि बर ज़ेर दस्तान् न बख़्शायद ब जफ़ाये ज़बरदस्तान् गिरिफ़्तार आयद।

مثنوی

نه هر بازو که در وی قوتی هست
بمردی عاجزان‌را بشکند دست *
ضعیفان‌را مکن بر دل گزندی
که درمانی بجور زورمندی *

मसनवी (बह्‌रे हज़ज्)

नै हर बाज़ू कि दर वै क़ुव्वते हस्त।
ब मर्दी आजिज़ाँ रा ब शिकनद दस्त।।
ज़ईफ़ाँ रा मकुन बर दिल गज़न्दे।
कि दरमानी ब जौरे ज़ोरमन्दे।।

حکمت ۱۰۲

عاقل - چون خلاف در میان آید - بجهد - و چون صلح بیند - لنگر بنهد که آنجا سلامت بر کرانست - و اینجا حلاوت در میان *

हिकमत—१०२

आक़िल—चू ख़िलाफ़ दरमियान आयद—बिजिहद—व चू सुल्ह बीनद—लंगर बिनिहद। कि आँजा सलामत बर किरान'स्त—व ईंजा हलावत दरमियान।

حکمت ۱۰۳

مقامررا سه شش می‌باید - و لیکن سه یک می‌آید *

हिकमत—१०३

मुक़ामिर रा सिह् शश् मी बायद—व लेकिन सिह् यक मी आयद।

بیت

هزار بار چراگاه خوشتر از میدان
ولیك اسپ ندارد بدست خویش عنان *

बैत (बह्‌रे मुज्तश्)

हज़ार बार चरागाह ख़ुशतर अज़ मैदान।
वलेक अस्प न दारद ब दस्ते ख़ेश इनान।।

बैंत

हमारी शरण भगवान्! यदि लोग परोक्षश होते।
कोई किसी के हाथ से चैन न पाता॥

श्लोक

प्रभोऽस्मास्त्राहि! यद्येतदज्ञास्यद् गूहित जगत्।
अन्योन्यचञ्चुपातेन शान्तिमाप्स्यन्न कश्चन॥ १८६॥

युक्ति—१००

सोना खान खोदने से निकलता है और कजूस के हाथ से उसकी जान खोदने से।

युक्ति —१००

स्वर्णं खनि खननात् सम्भवति कृपणस्य प्राणखननाच्च।

क़ता

नीच लोग खाते नहीं और कोने में रखते जाते हैं।
कहते हैं कि खाने से उमकी आशा अच्छी है॥
कल तू देखेगा कि दुश्मनों की कामना के अनुसार।
धन रह गया है और कजूस मर चुका है॥

पदम्

नीचा न भुञ्जते वित्त परिचिन्वन्ति केवलम्।
ब्रुवते भोगसामर्थ्यं किल भोगाद् वर मतम्॥ १८७॥
श्वस्त्व द्रष्टासि सम्पाद्य सर्वा सम्बन्धिकामना।
वित्त हित्वा तु भण्डारे श्मशाने कृपणो गत॥ १८८॥

युक्ति—१०१

जो कोई अपने से कमज़ोरों को नहीं बख्शता अपने से प्रबलों के अत्याचार से पीडित होता है।

युक्ति —१०१

यश्चापि हीनबलान्न क्षाम्यति स्वत प्रबलानामत्याचारेण पीडितो भवति।

मसनवी

जो कोई भी हाथ शक्ति रखता है।
ताकत से कमज़ोरों का हाथ नहीं तोडता फिरता॥
निर्बलों का दिल मत सता।
कि तू भी सताया जायगा बलवान् के बल से॥

गाथा

बलमात्रेण नो कश्चित् पाणिभ्या बलवत्तर।
प्रसह्य दुर्बलाङ्ग च परिमर्दितुमर्हति॥ १८९॥
आर्तेषु मा निधा किञ्चिद् वैक्लव्य हृदयतुदम्।
भवितासि बलान्नोचेद् बलवद्बलमर्दित॥ १९०॥

युक्ति—१०२

बुद्धिमान्—जब झगडा होता है—तो (वहाँ से) हट जाता है, और जब शान्ति देखता है वहाँ लगर डाल देता है। क्योंकि वहाँ (झगडे में) शान्ति किनारे पर होती है और यहाँ आनद बीच में है।

युक्ति —१०२

पण्डितो यदा कलह पश्यति तदा ततोऽन्यत्र सञ्चरति। अथ यदा शान्ति पश्यति तत्र दृढमुपतिष्ठते। 'कलहे कूलगा स्वस्ति शान्तौ सा मध्यधारगा।'

युक्ति—१०३

जुआरी को तीन छक्के चाहिये पर तीन इक्के आते हैं।

युक्ति —१०३

आक्षिको षट्कत्रय वीप्सति एककत्रयञ्चाप्नोतीति।

बैंत

हज़ार बार चरागाह लडाई के मैदान से अच्छा है।
लेकिन घोडा अपने हाथ में लगाम नहीं रखता॥

श्लोक

रणक्षेत्रात् तृणक्षेत्र शत कृत्वा मनोरमम्।
अनीश किन्तु सवृत्तो वल्गाया सैन्धव स्वयम्॥ १९१॥

حکمت ۱۰۴

درویشی در مناجات میگفت - "یا رب! رحمت کن بر بدان - که بر نیکان خود رحمت کردهٔ - که ایشانرا نیک آفریدهٔ" *

हिकमत—१०४

दरवेशे दर मुनाजात मीगुफ़्त—'या रब्ब! रहमत कुन वर वदाँ—कि वर नेकाँ ख़ुद रहमत कर्दई कि ऐशान् रा नेक आफ़रीदई।'

حکمت ۱۰۵

گویند اول کسی که علم بر جامه کرد و انگشتری در دست نهاد جمشید بود * گفتندش - "چرا زینت بچپ دادی و فضیلت مر راست‌را ست"؟ "گفت - راست‌را راستی تمامست" *

हिकमत—१०५

गोयन्द अव्वल कसे कि अलम वर जामा कर्द व अंगुश्तरी दर दस्त निहाद जमशेद वूद। गुफ़्तन्दश्—'चिरा ज़ीनत व चप दादी व फ़ज़ीलत मर रास्त रा'स्त?' गुफ़्त— 'रास्त रा रास्ती तमाम'स्त।'

قطعه

فریدون گفت نقاشان چین را
که پیرامون خرگاهش بدوزند -
"بدانرا نیک دار - ای مرد هشیار
که نیکان خود بزرگ و نیک‌روزند" *

क़ता (वहरे हजज़्)

फ़रीदूँ गुफ़्त—नक़्क़ाशाने चीं रा।
'कि पीरामूने ख़िरगाहश् वदोज़न्द॥
'वदाँ रा नेक दार ऐ मर्दे हुशियार।
कि नेकाँ ख़ुद वुज़ुर्गो नेकरोज़'न्द॥'

حکمت ۱۰۶

بزرگی‌را پرسیدند - "که چندین فضیلت که دست راست‌را ست - خاتم در انگشت چپ چرا میکنند"؟ گفت - "نشنیدهٔ که اهل فضل همیشه محرومند"؟

हिकमत—१०६

वुज़ुर्गे रा पुर्सीदन्द—'कि चन्दीं फ़ज़ीलत कि दस्ते रास्त रा'स्त ख़ातिम दर अंगुश्ते चप चिरा मी कुनन्द?' गुफ़्त—'न शुनीदई कि अहले फ़ज़्ल हमेशा महरूम'न्द।'

بیت

آن که شخص آفرید و روزی و بخت
یا فضیلت همیدهد یا تخت *

वैत (वहरे ख़फ़ीफ़)

आँ कि शख़्स आफ़रीद ओ रोज़ी ओ वख़्त।
या फ़ज़ीलत हमी दिहद या तख़्त॥

حکمت ۱۰۷

نصیحت پادشاهان گفتن کسی‌را مسلمست که بیم سر ندارد و امید زر *

हिकमत—१०७

नसीहते पादशाहान् गुफ़्तन् कसे रा मुसल्लम'स्त कि वीम सर न दारद व उमीदे ज़र।

مثنوی

موحد چه در پای ریزی زرش
چه شمشیر هندی نهی بر سرش *
امید و هراسش نباشد ز کس
برینست بنیاد توحید و بس *

मसनवी (वहरे मुतक़ारिव)

मुवह्हिद चि दर पाय रेज़ी ज़रश्।
चि शमशेर हिन्दी निही वर सरश्॥
उमीदो हिरासश् न वाशद ज़ि कस।
वरीन'स्त वुनियादे तौहीदो वस॥

युक्ति—१०४

एक साधु ने प्रार्थना में कहा—'हे प्रभु! बुरों पर दया कर, क्योंकि भलों पर तू ने स्वयं ही दया कर रखी है कि इनको तू ने भला बनाया है।'

युक्ति —१०४

कश्चित् साधुरेव प्रार्तयत—'हे प्रभो! दुर्जनेषु कृपालुर्भव। यतः सज्जनेषु प्रागेव कृपा कृतवानसि यदेनान् सज्जनान् व्यदधाः।'

युक्ति—१०५

कहते हैं कि पहला आदमी कि जिसने वस्त्रों को मण्डित किया और अँगूठी हाथ में पहनी वह जमशेद था। लोगों ने उससे पूछा—'क्यों शृंगार शोभा बाँए हाथ को दी जब कि महत्ता दाँए की है?' उसने कहा—'दक्षिण हस्त के लिये दक्षिणता ही काफी है।'

युक्ति —१०५

श्रूयतेऽथ प्रथमो जनो यश्च पटमण्डन व्यवसितवान्, मुद्रिकाञ्चाङ्गुल्या दध्रे स जमशेद आसीत्। जनास्तमूचु—'कथं मण्डयसि सव्यं करं, महिमास्ति तावद् दक्षिणकरस्येति।' सोऽवदत्—'दक्षिणाय तु दाक्षिण्यमेवालमिति।'

क़ता

फरीदूं ने चीन देश के चित्रकारों से कहा।
कि मेरे तम्बू के चारों ओर यह लिख दो॥
'बुरों को भला बना हे चतुर मनुष्य।'
क्योंकि भले तो खुद ही बड़े और भाग्यवान् हैं॥'

पदम्

प्रद्युम्न उक्तवांश्चीनान् सूचीकर्मविशारदान्।
'उल्लिखेयुरिदं वाक्यं भवन्तो मम मण्डपे॥ १६२॥'
'सस्कार दुर्जनानां च धीमस्त्वं कर्त्तुमर्हसि।
सज्जनास्तु स्वतः सन्ति पूजार्हा भाग्यभूमयः॥ १६३॥'

युक्ति—१०६

एक बुजुर्ग से लोगों ने पूछा कि—'इतनी महिमा दाँए हाथ की है, तो अँगूठी बाईं उँगली में क्यों पहनते हैं?' उसने कहा—'क्या तूने नहीं सुना कि गुणी जन सदा वंचित रहते हैं।'

युक्ति —१०६

कश्चिन्महाजनः पृष्टोऽथ—'एतावान् महिमाऽस्ति दक्षिणकर-निहितस्तर्हि कथं मुद्रिका खलु सव्याङ्गुल्या ध्रियते?' स उवाच—'किं न श्रुतवानसि?' 'वंचिता गुणिनः सदा।'

बैत

जिसने कि आकार दिया जीविका और भाग्य बनाया।
वह या तो विद्या ही देता है या राज्य ही॥'

श्लोक

येनोपकल्पितं देहं ह्यन्नं भाग्यं तथैव सः।
ज्ञानोत्कर्षेण, वा युङ्क्ते भाग्योत्कर्षेण वा पुनः॥ १६४॥

युक्ति—१०७

राजाओं को उपदेश देना उसी आदमी को उचित है जो न अपने सिर जाने का डर रखता है और न धन की अपेक्षा।

युक्ति —१०७

नरेशाणामुपादेशस्तेनैव प्रतिपद्यते।
नास्ति प्राणभयं यस्य न लोभः काञ्चनस्य च॥ १६॥

मसनवी

एकेश्वरवादी के पैरों में चाहे तू सोना बिखेर।
चाहे हिन्दुस्तानी तलवार उसके सिर पर तान॥
आशा और निराशा उसे नहीं होती किसी से।
इसी पर उसके धर्म का आधार है और बस॥

गाथा

एकेश्वरप्रतीतस्य पादयोरर्चयेर्धनम्।
खड्गं वा भारतीयञ्च निदध्यास्तस्यमूर्धनि॥ १६५॥
न तस्याशा न नैराश्यं कस्माच्चिन्न कुतोभयम्।
एनं चाश्रित्य वर्तेत तस्यैका धर्मसाधना॥ १६६॥

حکمت ۱۰۸

پادشاه از بهر دفع ستمکاراست - و شحنه برای دفع خون خواران - و قاضی مصلحت جوئی طراران - هرگز دو خصم بحق راضی نشوند الا پیش قاضی *

हिकमत—१०८

पादशाह अज़ बहरे दफ़ए सितमगारान'स्त—व शहना बराये दफ़ए ख़ूख़्वारां—व क़ाज़ी मस्लहत जोयीए तर्रारां—हरगिज़ दू ख़स्म ब हक़ राज़ी न शवन्द इल्ला पेशे क़ाज़ी।

قطعه

چو حق معاینه بینی که میباید داد
بلطف به که بجنگ آوری و دلتنگی *
خراج گر نگزارد کسی بطیب نفس
بقهر رو بستانند و مزد سرهنگی *

क़ता (बहरे मुज्तश्)

चु हक़ मुआयना बीनी कि मी बबायद दाद।
ब लुत्फ़ विह् कि ब जंग आवरी व दिलतंगी॥
ख़िराज गर न गुज़ारद कसे ब तीबे नफ़्स।
ब कहर'जू बसितानन्दो मुज़्दे सरहंगी॥

حکمت ۱۰۹

همه کس‌را دندان بترشی کند گردد - مگر قاضیانرا بشیرینی *

हिकमत—१०९

हमा कस रा दन्दां ब तुर्शी कुन्द गदद—मगर क़ाज़ियान् रा ब शीरीनी।

بیت

قاضی که برشوت بخورد پنج خیار
ثابت کند از بهر تو صد خربزه زار *

बैत (बहरे हजज़्-गं सा मुस)

क़ाज़ी कि ब रिश्वत बिख़ुरद पंज ख़ियार।
साबित कुनद अज़ बहरे तो सद ख़रबूज़ा ज़ार॥

حکمت ۱۱۰

قحبهٔ پیر چه کند که توبه نکند از نابکاری - و شحنهٔ معزول از مردم‌آزاری ؟

हिकमत—११०

कहबाए पीर चि कुनद कि तौबा न कुनद अज़ नाबकारी—व शहनाए माज़ूल अज़ मर्दुम आज़ारी ?

بیت

جوانی سخت‌می باید که از شهوت بپرهیزد
که پیر سست رغبت‌را خود آلت بر نمی‌خیزد *

बैत (बहरे हज़ज़्)

जवाने सख़्त मे बायद कि अज शहवत बिपरहेज़द।
कि पीरे सुस्त रग़बत रा ख़ुद आलत बर न मी ख़ेज़द॥

بیت

جوان گوشه نشین شیرمرد راه خداست
که پیر خود نتواند زگوشه برخاست *

बैत (बहरे मुज्तश्)

जवाने गोशा नशीं शेरमर्दे राहे ख़ुदा'स्त।
कि पीर ख़ुद न तवानद ज़ि गोशाए बरख़ास्त॥

حکمت ۱۱۱

حکیمی‌را پرسیدند - ''که چندین درخت نامور که خدای تعالی آفریده است و برومند گردانیده - هیچ یکی‌را آزاد نخوانند مگر سرورا - درین چه حکمتست،،؟ گفت - ''هر

हिकमत—१११

हकीमे रा पुर्सीदन्द—'कि चन्दीं दरख़्ते नामवर कि ख़ुदाय तआला आफ़रीदा अस्त व बरूमन्द गर्दानीदा—हेच यके रा आज़ाद न ख़्वानन्द मगर सव रा—दरी चि हिकमत'स्त ?' गुफ़्त—'हर

युक्ति—१०८

राजा अत्याचारियों को दबाने के लिये है और कोतवाल हत्यारों को दबाने के लिये है—और क़ाज़ी चोरों को ठीक करने के लिये है। कभी भी दो विरोधी उचित बात पर राज़ी नहीं होते सिवा क़ाज़ी के सामने के।

कता

जब किसी का हक तू देखे कि दे देना उचित है।
तो प्रसन्नतापूर्वक देना ठीक है न कि लडकर और दिल छोटा करके ।।
जो आदमी स्वेच्छा से राज-कर नहीं देता।
तो बलात्कार पूर्वक उससे लेते हैं और कोपग्राह का शुल्क भी ।।

युक्ति—१०९

सब आदमियों के दाँत खटाई से कुण्ठित होते हैं पर काज़ियों के मिठाई से।

बैत

जो क़ाज़ी कि रिश्वत में पाँच ककडी लेता है।
वह प्रमाणित कर देता है तेरे लिये सौ खरबूजे के खेत ।।

युक्ति—११०

वृद्धा वेश्या क्या करे अगर तौबा न करे दुराचार से—और पदच्युत कोतवाल लोगों को सताने से (तौबा न करे तो क्या करे)।

बैत

वह नौजवान दृढ चरण होता है जो कि उत्तेजनाओं से बचे।
क्योंकि क्षीणकाय वृद्ध की तो इन्द्रिय स्वयं ही खडी नहीं होती ।।

बैत

जो युवक कोने में बैठ जाय वह प्रभुमार्ग का वीर है।
क्योंकि वृद्ध तो स्वयं ही कोने से नहीं उठ सकता ।।

युक्ति—१११

एक पण्डित से लोगों ने पूछा कि 'इतने प्रसिद्ध वृक्ष जो कि ईश्वर ने बनाये हैं और फलदार पैदा किये हैं किसी को भी "आज़ाद" नहीं कहते सिवा सर्व के। इसमें क्या युक्ति है?' उसने कहा—'हर एक (वृक्ष) का ऋतुकाल नियत समय पर है, कभी उसके आने

युक्ति —१०८

लोकशल्यानि सयन्तु हि नियतो राजा, नृशसान् परिहर्त्तुं हि नाम नगरपाल, तस्कराणा कुशल प्रष्टु हि न्यायाधीश, द्वौ विवदमानौ न जातु ऐकमत्य व्रजेता नाना न्यायाधीशसम्मुख गत्वेति।

पदम्

बलि चेत् किल दातव्य पश्येस्त्व धर्मसम्मतम्।
प्रसन्नमनसा देहि तत् क्षोभात् कलहाद् वरम् ।। १९७ ।।
राजकोपबलि यो ना स्वेच्छया न च दित्सति।
बलाददते तस्मात् कोपोद्ग्राहबलि तथा ।। १९८ ।।

युक्ति —१०९

सर्वेषा जम्भहर्षोऽम्लेन जायते, किन्तु न्यायाधीशाना मधुरेणोत्कोचेनेति।

श्लोक

न्यायाधीशो य आदत्ते ह्युत्कोचे पञ्चचिर्भटी।
प्रमाणीकुरुते तुभ्य दशक्षेत्र दशाङ्गुलम् ।। १९९ ।।

युक्ति —११०

ब्रह्मचर्यव्रत धत्ते वृद्धा वेश्यातपस्विनी।
दण्डपाल पदभ्रष्टो ह्यहिंसाव्रतदीक्षित ।। २० ।।

श्लोक

युवा यो दृढसकल्प स धन्यो विजितेन्द्रिय।
जीर्णेन्द्रियस्य वृद्धस्य ध्वजोच्छ्रायो न वै भवेत् ।। २०० ।।

श्लोक

यौवने ब्रह्मनिष्ठश्च य आस्ते सुसमाहित।
नृसिह त विजानीयाद् वृद्धश्चास्ते जराहत ।। २०१ ।।

युक्ति —१११

अथैकदा केचन जना कञ्चन पण्डित पृष्टवन्तोऽथ कियन्तो हि वृक्षा परमात्मना सृष्टा फलवन्तश्चोपपन्नास्तेषु कोऽपि स्वतन्त्र इति नाम्ना नाभिधीयते, ऋते देवतरुम्। तत्र का युक्ति?' सोऽब्रवत्—

یکی‌را ثمره است بوقت معین - گاهی بوجود آن تازه - و گاهی بعدم آن پژمرده - و سرورا هیچ ازینها نیست - همه وقت خوش و تازه است - و این صفت آزادگانست،، *

यके रा समरा अस्त व वक्ते मुअय्यन—गाहे व वुजूदे आँ ताज़ा व गाहे व अदमे आँ पज़मुर्दा—व सव रा हेच अज़ींहा नेस्त—हमा वक्त खुश व ताजा अस्त व इ सिफ़ते आजादगान'स्त।'

قطعه

بدانچه میگذرد دل منه - که دجله بسی
پس از خلیفه بخواهد گذشت در بغداد *
گرت ز دست بر آید - چو نخل باش کریم
ورت ز دست نیاید - چو سرو باش آزاد *

क़ता (बहरे मुज्तस्)

वदाँ चि मी गुज़रद दिल मनिह्—कि दज्ला बसे।
पस अज़ ख़लीफ़ा बिख़्वाहद गुज़श्त दर बग़दाद॥
गरत ज़ि दस्त बर आयद—चु नख़्ल बाश करीम।
वरत ज़ि दस्त नयायद चु सव बाश आज़ाद॥

حکمت ۱۱۲

دو کس مردند و حسرت بی‌فائده بردند - یکی آن که داشت و نخورد - دیگر آنکه دانست و نکرد *

हिकमत—११२

दू कस मुदन्द व हसरते बेफ़ायदा बुदन्द—यके आँकि दाश्त व न खुद—दीगर आँकि दानिस्त व न कद।

قطعه

کس نداند بخیل فاضل‌را
که نه در عیب گفتنش کوشد *
ور کریمی دو صد گنه دارد
کرمش عیبها فرو پوشد *

क़ता (बहरे खफ़ीफ़)

कस न दानद बख़ीले फ़ाज़िल रा।
कि नै देर ऐब गुफ्तनश् कोशद॥
वर करीमे दु सद गुनह दारद।
करमश् ऐबहा फ़िरो पोशद॥

पर वृक्ष ताजा हो जाते हैं और सभी उसकी समाप्ति पर मुर्झा जाते हैं। और सव को यह कुछ नहीं है, वह सारे समय प्रसन्न और लहलहाता रहता है, और यही गुण आज़ादो (जीवन्मुक्तो) का भी है।'

'तेषु सर्वेषामृतुकालो नियतश्च। कदाचित् ततो हरितपर्णा हृतपर्णा वा काले काले भवन्ति। देवतरुश्च सर्वातीत सदाप्रसन्न नित्य हरितश्च विद्यते। अयमेव च गुणस्तत्र स्वतन्त्राणामिति।'

कता

उसमें, जो कि नश्वर है, दिल मत लगा क्योंकि दज्ला नदी।
वहुत से खलीफाओ के वाद भी वगदाद में वहती रहेगी।।
यदि तेरे हाथ से हो सके तो खजूर के पेड की तरह कृपालु वन।
और यदि तेरे हाथ से न हो सके तो सव की तरह आजाद वन।।

पदम्

न जातु विषयेऽनित्ये विघत्स्व हृदय तव।
गते खलीफि वग्दादे दज्ला वहति पूर्ववत्।। २०२।।
खर्जूरतरुवद् भूयाश्चोदारो यदि शक्यते।
सदामुक्त सदाहृष्टश्चान्यथा सुरदारुवत्।। २०३।।

युक्ति—११२

दो आदमी मर जाते हैं और व्यर्थ हसरत करते जाते है। एक वह जो (धन) रखता था और नहीं भोगा, दूसरा वह जो जानता था और नही किया। (हिकायत ३ की पुनरुक्ति)।

युक्ति —११२

द्वौ जनौ म्रियेते निरर्थक शोक च कुर्वाते, प्रथमस्तत्र—यो दधे न च वुभुजे। अपरश्च—यो जज्ञे न च चक्रे।

कता

कोई नही जानता विद्वान् कजूस को।
जिसको कि ऐव लगा कर लोग न वोलते हो।।
और यदि एक उदार व्यक्ति दो सौ गुनाह कर चुका हो।
तो भी उसकी उदारता सारे ऐवो को छिपा लेती है।।

पदम्

विद्वासमप्यदातार तस्यमित्राणि सर्वदा।
दोषदर्शन वुद्ध्यैवोदाहरन्ति परस्परम्।। २०४।।
किन्तूदारस्य दातुश्च शतद्वयमतिक्रमम्।
दानमेकमतिक्रम्य दोषान् सर्वानपोहति।। २०५।।

خاتمة الكتاب

खातमतु'ल् किताब

تمام شد گلستان و الله المستعان ـ و بتوفیق باری عزّ اسمه و جلّ ثناؤه دریں جمله ـ چناں که رسم مؤلفانست ـ از اشعار متقدمان بطریق استعارت تلفیقی نرفت *

तमाम शुद गुलिस्तां व'ल्लाहु'ल् मुस्तआनु—व ब तौफीके बारी अज्ज इस्मुहू व जल्ल सनाउहू—दरीं जुमला, चुनां कि रस्मे मुअल्लिफान'स्त—अज़ अशआरे मुतक़द्दिमान् व तरीके इस्तआरत तलफीके न रफ्त।

بیت

کهن جامهٔ خویش پیراستن

به از جامهٔ عاریت خواستن *

बैत (बहरे मुतक़ारिब)

कुहन जामाए खेश पैरास्तन्।

बिह अज़ जामाए आरियत ख्वास्तन्॥

غالب گفتار سعدی طرب انگیزست و طیب آمیز ـ و کوته نظران را بدیں علت زبان طعنه دراز ـ که مغز دماغ بیهوده بردن و دود چراغ بیفائده خوردن کار خردمنداں نیست ـ و لیکن بر رای روشن صاحب‌دلاں ـ که روی سخن در ایشانست ـ پوشیده نماند ـ که در موعظتهای شافی در سلک عبارت کشیده است ـ و داروی تلخ نصیحت بشهد ظرافت بر آمیخته ـ تا طبع ملول انسان از دولت قبول محروم نماند *

ग़ालिब गुफ्तारे सादी तरब अंगेज़'स्त व तीब आमेज़—व कोताह नज़रां रा बदीं इल्लत ज़बाने तअना दराज़—कि मग़्ज़े दिमाग़ बेहूदा बुदन् व दूदे चिराग़ बेफायदा खुर्दन कारे ख़िरदमन्दां नेस्त—वलेकिन बर राये रौशने साहिब दिलां कि रूए सुखुन दर ऐशान'स्त—पोशीदा न मानद कि दुर्रे मौइज़तहाये शाफी दर सिल्के इबारत कशीदा अस्त—व दारुए तल्खे नसीहत ब शहदे ज़राफ़त बर आमेख़्ता—ता तबए मलूले इन्सान अज़ दौलते क़बूल महरूम न मानद।

الحمدُ لله ربّ العلمین *

अलहम्दु लि'ल्लाहि रब्बि'ल् आलमीन।

مثنوی

ما نصیحت بجای خود کردیم

روزگاری دریں بسر بردیم *

چوں نیاید بگوش رغبت کس

بر رسولاں بلاغ باشد و بس *

मसनवी (बहरे खफीफ)

मा नसीहत बजाय ख़ुद कर्दैम्।

रोज़गारे दरीं बसर बुर्दैम्॥

चू नयायद ब गोशे रग़बते कस।

बर रसूलां बलाग़ बाशदो बस॥

गुलिस्ताँ का उपसंहार

समाप्त हो गया गुलिस्ताँ और परमात्मा से सहायता आई—और सर्वशक्तिमान् की महिमा से, उसका नाम आदृत हो और प्रशंसित हो। इस समूची पुस्तक में, जैसी कि लेखकों की प्रथा है—प्राचीनों के श्लोकों में से उधार लेकर कुछ भी नहीं संगृहीत किया गया है।

बैत

अपना पुराना कपड़ा सी लेना।
अच्छा है उधार कपड़े माँगने से॥

सादी की अधिकांश उक्तियाँ आनन्दमय और माधुर्यपूर्ण हैं। और संकीर्ण दृष्टि वालों की इसी कारण ज़बान ताना देती है कि दिमाग का भेजा पचाना और चिराग का धुँआ व्यर्थ पीना बुद्धिमानों का काम नहीं है, किन्तु श्रेष्ठ जनों की श्रेष्ठमति से कि मेरी वाणी का मुख जिनकी ओर है—यह छिपा न रहेगा कि (इसमें) पवित्र शिक्षाओं के मोती, वर्णन के धागे में पिरोये गये हैं और उपदेश की कटु औषधि विनोद के मधु में मिश्रित की गयी है, ताकि मनुष्यों का थकने वाला स्वभाव उसकी स्वीकृति की सम्पत्ति से वंचित न रहे।

प्रशंसा के योग्य है परमेश्वर दोनों लोकों का प्रभु।

मसनवी

हमने उपदेश अपने पद के अनुसार किया है।
एक लम्बा समय इसमें बिताया है॥
यदि यह न लगे किसी की प्रवृत्ति को रुचिकर।
तो सन्देशवाहकों पर सन्देश पहुँचाने का ही भार है और बस॥

पुष्पलोकस्योपसंहारः

समाप्तोऽयं पुष्पलोकः साहाय्येन परमात्मनः, सर्वशक्तिमतो महिम्ना च। भूयात्तस्यादृतं नाम प्रशंसितञ्च। सम्पूर्णेऽस्मिन् ग्रन्थे यथाहि ग्रन्थकाराणां प्रथा, प्राचीनानां सुभाषितेभ्यो न किञ्चिदाहृतं मयेति।

श्लोक

सूचीकर्मपरिष्कारश्चात्मनो जीर्णवाससः।
वरं न च पुनस्तावदृणवस्त्रेण मण्डनम्॥ २०६॥

सादिनो भूयांसि सुभाषितानि ह्यानन्ददायीनि माधुर्यपूर्णानि। संकीर्णचित्तानामथाधिक्षेपकरी हि वाग्यथाकारणं मनोव्यथनं, निशीथप्रदीपधूम्रपानञ्च बुद्धिमतामसंगतम्। परन्तु महात्मनां महीयस्यां मतौ—यानुद्दिश्य प्रवर्तते हि मे वाङ्—नैतदपह्नुतं स्यादिह पवित्रोपदेशानां मुक्ताफलानि वर्णनव्यपदेशसूत्रग्रथितानि, उपदेशकटुकमौषधं च विनोदमधुमिश्रितमिति। यतः पुंसामस्थिरः स्वभावो ह्येतस्याः सम्पत्तेरङ्गीकरणात् पराङ्मुखो न स्यादिति।

अथ लोकद्वयाधीशः प्रशस्यः केवलं प्रभुः॥ २१॥

गाथा

कृतवन्तो वयं चैतानुपदेशानिह स्वतः।
एतस्मिन् लेखने कालं नीतवन्तो वयं चिरम्॥ २०७॥
यद्येष कस्यचिज्जन्तोः श्रुत्यै न खलु रोचते।
अथ दौत्यवहा दूता उक्तवन्तः स्म इत्यलम्॥ २०८॥

شعر

يَا نَاظِراً فِيهِ! سَلْ بِاللهِ مَرْحَمَةً
عَلَى الْمُصَنِّفِ - وَ اسْتَغْفِرْ لِصَاحِبِهِ *
وَ اطْلُبْ لِنَفْسِكَ مِنْ خَيْرٍ تُرِيدُ بِهَا
مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ غُفْرَاناً لِكَاتِبِهِ *

تَمَّ الْكِتَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ *

शेर (बहरे बसीत)

या नाज़िरा ! फीहि मल् बि'ल्लाहि मर्‌हमतन् ।
अलल् मुसन्निफि—वस्तग़फ़िर् लि साहिबिहि ॥
व'त्लुब् लि नफ्सिक मिन् खैरिन् तुरीदु बिहा ।
मिम् बादे ज़ालिक गुफ़रानल् लि कातिबिहि ॥

तम्म'ल् किताबु बिऔनि'ल् मलिकि'ल् वह्हाब ।

गुलिस्तां का उपसहार

शेर

हे पाठक ! इसमें मांग प्रभु से कृपा।
लेखक के लिये और क्षमा उसके स्वामी के लिये ।।
और मांग अपनी आत्मा के लिये खैर, जो तू चाहे।
इसके पश्चात् क्षमा मांग इसके कातिव के लिये ।।

समाप्त हुई पुस्तक दयालु प्रभु की सहायता से।

पुष्पलोकस्योपसहार

श्लोक

अध्येतस्त्वमधीष्वपुस्तकमिद सम्प्रार्थयस्व प्रभुम्
क्षम्यात् सोऽस्य निबन्धकस्य निखिल दोष च तत्स्वामिन ।
अन्विष्यास्त्वममुत्र सर्वमनिश नि श्रेयस चात्मन
तत्पश्चात् प्रतिकामयस्व करुणा विश्वात्मनो लेखकम् ।। २०६ ।।

समाप्तोऽय ग्रन्थ साहाय्येन परमात्मन परमोदारस्येति ।

(ا—अ)

अज्रहु (अ) = उसका पुरस्कार
उज्रत (अ) = पुरस्कार, पारिश्रमिक, वेतन
आजिल (अ) = विलम्बित, आगामी विश्व का
अजल (अ) = मृत्यु, नियति
अजल्ला (अ) = भगवान् प्रकाश दे
अजल्लु (अ) = ज्यादा शानदार, सबसे ज्यादा भव्य
अजलाफ (अ) = गँवार, मूर्ख
इज्लाल (अ) = आदर, मान
इज्लाल हुमा (अ) = दोनों का आदर
आहाद (अ) = (अहद का बहुवचन) इकाइयाँ
उहाद (अ) = अकेले, एकान्त रूप से
उहिब्बु (अ) = मैं प्यार करता हूँ
इहतिराज़ (अ) = सावधानी, देखभाल
इह्तिलाम (अ) = स्वप्नदोष
इहतिमाल (अ) = पोषण, धारण
अहद (फा) = एक, इकाई
अहदुहुम (अ) = अन्यतम, बहुतों में से एक
इह्दा (अ) = एक (अहद का स्त्रीलिंग)
इहद'ल् हसनैन (अ) = दो भलाइयों में एक
एहसान (अ) = उपकार, भलाई
अहसन् (अ) = सुन्दरतर, सुन्दरतम
अहसन (अ) = वह भला करे
अहसन'ल्लाहु ख़लासहु (अ) = भगवान् उसे मुक्ति दे
अहसिन (अ) = भला कर
अहशाय (अ) = (हशा का बहुवचन) अवयव
इहसान (अ) = पवित्रता की प्रेरणा
इहफ़ज़ (अ) = रक्षा कर
व'हफ़ज़ वलदहु (अ) = और रक्षा कर उसके पुत्र की
अहमद (अ) = मुहम्मद साहब का एक नाम
अहमक़ (अ) = मूर्ख
अहमक़तर (अ फा) = ज्यादा बडा मूर्ख
अहवाल (अ) = (हाल का बहुवचन) = अवस्थाएँ
अहयाय (अ) = (हय्य का बहुवचन) = कबीले
अहयाय अरब (अ फा) = अरब क़बीले
अख़ (अ) = भाई
अख़ु'ल् अदावती (अ) = शत्रुता से भाई, दुश्मन
अख़ु'ल् बलीय्यती (अ) = विपत्ति में पडा हुआ
अख़ाज़ (अ) = (उसने) घुसाया
अख़ाज़क (अ) = (उसने) घुसाया तुझे
अख़्तर (फा) = तारा, सितारा (वैदिक सं०—स्तार)
इख़्तिसार (अ) = सक्षेप
इख़्तिसार करदन् (अ फा) = सक्षेप में कहना
इख़्तियार (अ) = अधिकार

(ا—अ)

अख़ज़ (अ) = उसने लिया
अख़ज़तहु'ल् इज़्ज़तहु (अ) = गर्व ने उसे ग्रस लिया
आख़िर (अ) = अन्त, अन्त में
आख़र (अ) = अन्तिम, दूसरा
आख़िर'ल् हियालि'स्सैफु (अ) = अन्तिम उपाय तलवार है
इख़राजात (अ) = खर्च, व्यय
आख़िरत (अ) = परलोक, भविष्य दशा
उख़रा (अ) = अन्तिमा (आख़र का स्त्रीलिंग)
अख़ज़र (अ) = हरा रग
अखगर (फा) = चिनगारी
इख़लास (अ) = सचाई, अन्तरगता
अख़लाक़ (अ) = (खुल्क का बहुवचन) चालचलन
अख़ु (अ) = भाई
इख़वान (अ) = (अख़ु का बहुवचन) बान्धवजन
इख़वानु'श्शयातीन (अ) = शैतानों के भाई, दुरात्मा लोग
इख़वानु'स्साफ़ा (अ) = पवित्रता के भाई, साधुजन
उख़ुव्वत (अ) = भाईचारा
अवा (फा) = उच्चारण, स्वर
अदाअ (अ) = चुकारा, चुकाना
आदाब (अ) = नियम, आचार (अदब का बहुवचन)
अदाम (अ) = वह जीवित रहे
अदाम'ल्लाहु अय्यामहु (अ) = परमात्मा उसके दिन लबे करे
अदब (अ) = विनय, आचार
इदरार (अ) = वेतन
इदरारे (अ फा) = एक वेतन, एक वृत्ति
इदराक (अ) = उपलब्धि, प्राप्ति
अद्रक (अ) = (उसने) लिया
अद्रकहु'ल् ग़र्क़ु (अ) = डूबना (उसे) ले बैठा
आदम (अ) = आदि पुरुष (स०—आदिम)
बनी आदम (अ) = आदम की प्रजा, मनुष्यजाति
आदमी (अ फा) = मानव, तू मानव है
आदमियान् (अ फा) = (आदमी का बहुवचन)
आदमी बच्चा (अ फा) = नर शिशु
आदमियत (अ) = मनुष्यता
आदमी जादा (अ फा) = मनुष्य की सन्तान
आदमीयी (अ फा) = तू आदमी है
अद्ना (अ) = तुच्छ, अकिञ्चन
अदीब (अ) = विनीत, विनय सिखानेवाला, उपाध्याय
अदबुल अदीब (अ) = गुरु की शिक्षा
अदीम (अ) = धरातल या आकाशतल
अदीमु'स्समा (अ) = आकाश का बाह्यभाग, आकाश
आदीना (फा) = मुसलमानों का पवित्र दिन, शुक्रवार
अज़ा (अ) = नुक़सान, हानि

(। —अ)

अज सर (फा) = सिरे से, नये सिरे से
अज़िम्मा (अ) = (ज़िमाम का बहुवचन) बल्गा, लगाम
आज़मूदन् (फा) = परीक्षा करना
अज़ू (फा) = (अज़+ऊ) उससे
अज़ू बर (फा) = उससे ऊपर, उसके ऊपर
अज वै (फा) = उससे
अज हर दरे (फा) = हर द्वार से, हर ओर से
अज ईं (फा) = इससे
अज इनान् (फा) = इनमे
अज़ीं बेश (फा) = इससे अधिक
अज़ीं पेश (फा) = इससे पूर्व
अज़ीं जा (फा) = इस जगह से, यहाँ से
असाअ (अ) = उसने अपराध किया
मन् असाअ (अ) = जो पाप करता है
आसान (फा) = सरल
आसानी (फा) = सरलता
आसाइश् (फा) = (ऐश का बहुवचन) सुख, साधन, शान्ति
असबाब (अ) = (सबब का बहुवचन) सामान
अस्प (फ़ा) = घोडा (स०—अश्व)
अस्त (फा) = है (स०—अस्ति)
उस्ताद (फा) = अध्यापक (स०—उपाध्याय)
आस्ताँ (फा) = आस्ताना, देहली
इस्तबरक़ (अ) = रेशम और सोने का बुना कपडा
इस्तिबसार (अ) = ज्ञान
इस्तिहक़ार (अ) = घृणा
इस्तिहक़ाक़ (अ) = गुण, योग्यता
इस्तिहयातु (अ) = मैं लज्जित हूँ
इस्तिख़फ़ाफ़ (अ) = छोटा मानना, अनादर करना
इस्तिख़लास (अ) = स्वतन्त्रता
उस्तुख्वान् (फा) = हड्डी, गुठली (स०—अस्थि)
अस्तर (फा) = खच्चर (स०—अश्वतर)
इस्तिताअत (अ) = शक्ति, सामर्थ्य
इस्तिज़हार (अ) = मदद, सहायता, पृष्ठबल
इस्तिआरत, इस्तिआरअ (अ) = उधार लेना, ऋण लेना
इस्तिदाद (अ) = क्षमता, योग्यता, चतुरता
इस्तिग़फ़ार (अ) = क्षमा याचना
अस्तग़फ़िरु (अ) = मैं क्षमा चाहता हूँ
अस्तग़फ़िरु'ल्लाह (अ) = मैं परमात्मा से क्षमा चाहता हूँ
अस्तग़्फ़िरुक (अ) = मैं आपसे क्षमा चाहता हूँ
इस्तग़्फ़िर (अ) = क्षमा माँग
इस्तिक़बाल (अ) = स्वागत के लिये आगे बढना
इस्तिक़रार (अ) = पुष्टि, समझौता
इस्तिफ़साअ (अ) = जिज्ञासा

(। —अ)

उस्तुवार (फा) = दृढ, स्थिर (स०—स्थविर)
आस्तीन (फा) = बाह
इस्तिनास (अ) = अन्तरङ्गता
इसरार (अ) = छुपाव, गोपनीयता
इसरारी (अ) = मेरे गुह्य कृत्य
इसराफ (अ) = अतिव्ययता, फिज़ूल ख़र्ची
असआ (अ) = मैं जूझूगा, प्रयत्न करूँगा
असआ ल कुम् (अ) = मैं तुम्हारे लिये प्रयत्न करूँगा
इस्कन्दर (अ) = सिकन्दर, अलेक्जेंडर, अलक्षेन्द्र
इस्कन्दरिया (अ) = सिकन्दर के नाम पर बसी नगरी
इस्लाम (अ) = इस्लाम धर्म
इस्म (अ) = नाम
इस्मुहु (अ) = उसका नाम
आस्मान (फ़ा) = स्वर्ग, आकाश
आस्मानी (फ़ा) = स्वर्गिक
अस्मअ (अ) = श्रोत्र रसायन, सुनने योग्य
आसूदन् (फा) = शान्त, सुखी होना
आसूदा (फा) = सन्तुष्ट, सुखी
आसूदातर (फा) = अधिक सन्तुष्ट
आसिया (फा) = चक्की
आसियाये गर्दान् (फा) = घूमता हुआ चक्का, चलती चक्की
आसियाये संग (फ़ा) = चक्की का पत्थर
आसीब (फा) = दुर्भाग्य, विपत्ति
असीर (फा) = बन्दी, क़ैदी
असीरी (फा) = क़ैद, बन्दी जीवन
असीरे (फा) = कोई बन्दी
अश् (फ़ा) = उसको, उसका
इशारत (अ) = संकेत
आशामीदन् (फ़ा) = घूट लेना, पीना
उशाहिदु (अ) = मैं देखता हूँ
उशाहिदु मन अह्वा (अ) = मैं देखता हूँ जिसे मैं प्यार करता हूँ
इश्तद् (अ) = उसको मालिश की
इश्तद् साइदुहु (अ) = (और जब) उसकी बाँह की मालिश हो गई
उश्तर (फा) = ऊँट (स०—उष्ट्र)
उश्तर सवार (फा) = उष्ट्रारोही
इश्तिहा (अ) = भूख, कामना (स०—इष्ट)
इश्तहिया (अ) = उसने कामना की
मन कान बैन यदैहि म'श्तहा रुतबन् (अ) = वह जिसके सामने ताज़
  खजूर थे जिनकी उसने कामना की थी
अशर्र (अ) = बहुत ज्यादा दुष्ट
इश्रबू (अ) = (तू) पी
अशआर (अ) = (शेर का बहुवचन) पद्य, कविताएँ
आशुफ्तन् (फ़ा) = सँवलाना, भ्रान्त होना

(ا — अ)

उल्फत (अ) = मैत्री, प्रेम, बन्धुत्व
अल् क़िस्सा (अ) = सार यह कि, सक्षेप में कथा यह है कि
अल्लाह् (अ) = (अल्+इलाह्) परमात्मा
अल्लाह् अल्लाह् (अ) = हे परमात्मा
अल्लाह् तआला (अ) = सर्वोच्च परमात्मा
अल्लाहुम्म (अ) = हे अनन्तनामवाले परमात्मा
अल्मास (अ) = हीरा
अलवान (अ) = (लउन का बहुवचन) विविधताऍं, किस्में, जीवन के उत्तम पदार्थो के प्रकार
अलविदा (अ) = विदा
आलूदन् (फा) = लिथडना, सन जाना, मलीन होना
अलवन्द (फा) = इस्फहान से ५० मील दूर हमदान मे एक पर्वत
अलवियत (अ) = (लिवा का बहुवचन) झण्डे
बि अलयियति'न्नसरी (अ) = विजय पताकाओं सहित
इलाह् (अ) = परमात्मा
इलाही (अ फा) = परमात्मा सम्बन्धी, दिव्य
अला (अ) = की ओर
अलामन् (अ) = उसकी ओर जो कि
अलय्य (अ) = मुझको
अलैक (अ) = तुझको
इलैकुम् (अ) = तुमको, तुम्हारे लिये
अलीम (अ) = कष्टपूर्ण
अलैहि (अ) = उसको, उसके लिये
अम्मा (अ) = लेकिन, जहाँ तक कि
आमाज (फा) = लक्ष्यवेध
इमाम (अ) = नेता, धर्मगुरु
अमान (अ) = रक्षा, सुरक्षा
अमानत (अ) = आन्तरिकता, विश्वास (विश्वासदत्त वस्तु)
उम्मत (अ) = धर्म, अनुयायीजन, प्रजा, राष्ट्र
अमुत (अ) = मैं मरता हूँ
इन् लम् अमुत (अ) = यदि मैं न मर जाऊँ
इम्तिनाअ (अ) = मनाही, निषेध
अमसाल (अ) = (ममल का बहुवचन) के जैसे, के समान
आमद'स्त (फा) = आगमन हुआ है
आमदन् (फा) = आना (स०—आगमन)
अम्र (अ) = आज्ञा, विषय, मामला
अम्रो नही (अ फ़ा) = आज्ञा और निषेध, पूर्ण अधिकार
उमराअ (अ) = (अमीर का बहुवचन) मालिक लोग
अमरद (अ) = अजातश्मश्रु, किशोर
इमरोज (फा) = आज, अब (स०—इदम्+रोचस्)
अम्री (अ) = मेरा मामला
इमशब (फा) = आज रात, यह रात (स०—इयम्+शवरी)
इम्जाअ (अ) = भेजना, ले जाना, प्रेषण

(ا — अ)

इमआन (अ) = भीतर तक घुसते हुए
इमआने नजर (अ फा) = ध्यान से देखना, ध्यान करना
इमकान (अ) = सम्भावना, सामर्थ्य
अमलउ (अ) = मैं भरता हूँ, मैं भरता रहूँ
इमला (अ) = भरना
अमलाक (अ) = (मुल्क का बहुवचन) देश, सामान, धन
उमम् (अ) = (उम्मत का बहुवचन) जातियाँ, कौमें
आमिन् (अ) = तू रक्षा कर, सुरक्षित रख, त्राहि
आमिन् बलदहू (अ) = रक्षा कर उसके देश की
अमवाज (अ) = (मौज का बहुवचन) लहरें
अमवाल (अ) = (माल का बहुवचन) सम्पत्तियाँ
आमोख्तन् (फा) = सीखना, सिखाना
उमूर (अ) = (अम्र का बहुवचन) मामले, चीजें
आमेख्तन् (फा) = मिलाना
उमेद (फा) = आशा, अपेक्षा
उमेदवार (फा) = प्रत्याशी
उम्मेदवारी (फा) = तू प्रत्याशी है, प्रत्याशिता
अमीर (अ) = प्रधान
अमीरे कबीर (अ फा) = बडा प्रधान
अमीरजादा (अ फा) = राजकुमार, प्रधानपुत्र
आमेज (फा) = मिश्रित
आँ (फा) = वह, जो कि
अन् (अ) = वह जो कि
इन् (अ) = यदि
इन् लम् (अ) = यदि नही
इन् लम् अकुम् (अ) = यदि नही होऊँ मैं
अन्न (अ) = वह
इन्न (अ) = सच ही
अन (अ) = मैं
इन (अ) = पात्र
इनावत (अ) = परमात्माभिमुखता, पश्चात्ताप
अनार (अ) = वह ज्योतित हुआ, वह ज्योतित हो
अनार'ल्लाहु (अ) = परमात्मा ज्योतित हो (करे)
अनाम (अ) = मानवता, मनुष्य
आनाँ (फा) = (आँ का बहुवचन) वे
आनाँकि (फा) = वे जो कि
अम्बार (फा) = ढेर, भण्डार, शस्यसञ्चय
अम्बाज (फा) = साझेदार, साथी, भागीदार
अम्बाजी (फा) = भागीदारी
अम्बाक (अ) = (उसने) तुझे सूचित किया
फ मन् अम्बाक (अ) = तो किसने तुझे बताया
अम्बान (फा) = पकाई हुई भेड की खाल, चर्म, चर्ममय वस्तु
अम्बत (अ) = उसने पैदा किया, वह बढाये

(। — अ)

अम्वतहुमल्लाहु (अ) = परमात्मा ने उन्हें बढ़ाया, उन्हें उठाये
इम्बिसात (अ) = प्रसन्नता, हर्ष
अम्बोह (फा) = भीड
आँ बिह (फा) = वह अच्छा है
अम्बिया (अ) = (नबी का बहुवचन) ईश्वर के दूत
अन्त (अ) = तू
इन्तसब्त (अ) = तू सम्बन्धित है
बि मनिन्तसब्त (अ) = तू किससे सम्बन्धित है
इन्तजार (अ) = प्रतीक्षा
इन्तक़ाम (अ) = बदला, प्रतिशोध
इन्तक़ाम कशीदन (अ फा) = बदला लेना
आँ जा (फा) = वह जगह
अंजाम (फा) = परिणाम
अन्जामीदन् (फा) = परिणत होना, समाप्त होना
अन्जुमन (फा) = सभा
इंजील (अ) = बाइबिल
आँ चुनाँ (फ़ा) = उस तरह
आँ चुनाँकि (फा) = वैसे ही
आँ चि (फ़ा) = जो भी
अन्द (फा) = हैं (वे)
अंदाख़्तन् (फा) = फेंकना, लिटाना
अंदाज (फा) = नापतोल, यथोचित सख्या परिमाण
अंदाम (फा) = शरीर, अवयव (स०—अगम्)
अंदर (फा) = भीतर, पेट
व शुक्र अन्दरश् (फा) = उसकी कृतज्ञता में
अंदर आँ (फा) = उसके अन्दर
अंदरम् (फा) = मैं अन्दर हूँ
अंदरून (फा) = भीतरी भाग
अन्दर ईं (फा) = इसके भीतर
अंदक (फ़ा) = थोडासा
अंदके (फ़ा) = एक जरासा
अंदोख़्तन् (फा) = प्राप्त करना, सञ्चय करना,
अंदूह-अंदोह (फा) = दुःख
अंदेशनाक (फ़ा) = भयाक्रान्त
अंदेशनाकतर (फा) = भयाक्रान्ततर
अंदेशनाकतरम (फा) = मैं बहुत भयभीत हूँ
अंदेशा (फा) = विचार, सन्देह, भय, चिन्ता, परवाह
अंदेशीदन् (फा) = सोचना, चिन्ता करना
उन्स (अ) = घुलना मिलना, निकटता
इंसान (अ) = मनुष्य
अल् इंसान (अ) = मनुष्य
आनस्त (फा) = वह है
आनस्ते (फ़ा) = वह होता

(। — अ)

इंशा अल्ला (अ) = यदि परमात्मा ने चाहा
इंसाफ (अ) = न्याय
इनआम (अ) = उपहार, कृपा
अनफास (अ) = (नफस का बहुवचन) साँसें, निमिष
अन्फ़ुस (अ) = (नफ्स का बहुवचन) चित्त (ने)
अन्फ़ुसुकुम् (अ) = तुम्हारे चित्तों ने (कर्तृवाच्य)
अन्फ़ुसकुम् (अ) = तुम्हारे चित्त (कर्मवाच्य)
अन्नक (अ) = वह तू, जो कि तू
इन्नक (अ) = तू ही है
इन्नक इब्नुद्दिजवन (अ) = निश्चय तू भेड़िये की औलाद है
इन्नक मसऊलुन् (अ) = निश्चय तू पूछा जायगा
इन्कार (अ) = मनाही
अन्कर (अ) = बहुत अधिक आक्रामक
आँ कस (फा) = वह व्यक्ति
आँ कि (फा) = जो कि
अंगारीदन (फा) = गिनना (स०—अङ्क गणितम्)
अंगाश्तन् (फा) = गिनना (स०—अंगुलि गणनम्)
आंगाह-आँगह-अगह (फा) = उस समय, तब, वहाँ
आँगाह कि (फा) = जब कि
अंगुश्त (फा) = उँगली
अंगुश्तेनील कर्दन् (फा) = किसी चीज पर उँगली से नीला निशान करना, (नीला निशान मृत्यु, शोक, जब्ती दिखाने को लगाया जाता था)
अंगुश्तरी (फा) = अँगूठी
अंगेख़्तन् (फा) = उठाना, उत्तेजित करना
अंगेज़ (फा) = उत्तेजनापूर्ण
इन् लम् (अ) = नोचेत्, यदि नहीं
आनम् (फा) = मझको उसका है
इन्नमा (अ) = सिर्फ़, केवल
अनवार (अ) = (नूर का बहुवचन) ज्योतियाँ
अनवाअ (अ) = (नौअ का बहुवचन) क़िस्में
अनवरी (फा) = प्रसिद्ध ईरानी कवि जो सन् १२०० में मरा
इन्नहु (अ) = निश्चितत वह
इन्नहु लकुम् अदुव्वुन् मुबीन (अ) = निश्चय वह तुम्हारा प्रकट शत्रु है
आँ हा (फा) = वे चीजें
आनी (फा) = तू ऐसा है, तू वह
इन्नी (अ) = निश्चितत मैं
इन्नी लमुस्ततिरुन् (अ) = निश्चितत मैं अपने आपको छिपाता हूँ
अनीस (अ) = मित्र, घनिष्ठ
औ (अ) = या, अथवा
ऊ (फ़ा) = वह
आवाज़ (अ) = ध्वनि
आवाज़ा (फा) = अफ़वाह, समाचार
आवान (अ) = (आन का बहुवचन) काल, ऋतुएँ

(। — अ)

औबाश (अ) = (वबश का बहुवचन) अनाचारित नीच
औज (अ) = सर्वोच्च, ऊँचाई, शिखर (सं०—ओजस्)
औलिया (अ) = (वली का बहुवचन) राजकुमार, सर्वजन राज्यगार
औलियाइल्लाह (अ) = उसके भाग्यगण
ऊरा (फा) = उसका, उसे
औराद (अ) = (विद का बहुवचन) पुराण के जप जो भिन्न भिन्न समय में प्राप्त हुए
औराक (अ) = (वर्क का बहुवचन) पृष्ठ
आवुर्दन (फा) = लाना, जन्म देना
ऊरत (फा) = वह है
उस्ताद (फा) = अध्यापक
औसाफ (अ) = (वस्फ का बहुवचन) गुणगण
औकात (अ) = (वक्त का बहुवचन) समय, घटे
अव्वल (अ) = प्रथम
औला (अ) — अधिकतर, श्रेष्ठतर
उलिल अल्बाब (अ) = बुद्धिमान्
औलातर (अ फा) = श्रेष्ठतर
उलायक (अ) = वे
अव्वलीन (अ) = (अव्वल का बहुवचन) प्रथम
आवेख्तन् (अ फा) = लटकाने जाना, फाँसी जाना
ऊई (फा) = वह है
आहिस्तगी (फा) = धीमापन
आहिस्ता (फा) = शनै शनै
आहक (फा) = चूना, सीमेन्ट, गारा
आहके तपता (फा) = तपाया हुआ चूना (सं०—तप्त हाटक)
अहल (अ) = व्यक्ति (वाला), परिवार, योग्य
अहले अदब * (अ) = साहित्यवाले लोग, विनीत जन
अहले तहकीक (अ फा) = विवेकवाले, दार्शनिक जन
अहले खिरद (अ फा) = बुद्धिवाले, बुद्धिमान लोग
अहले दिल (अ फा) = दिलवाले, सहृदय लोग
अहले जमीन (अ फा) = धरती पर रहनेवाले
अहले शिनाख्त (अ फा) = विवेकी जन
अहले सफा (अ फा) = शुद्ध जन, भक्त जन
अहले तरीक़ (अ फा) = भक्त जन
अहले तमअ (अ फा) = लालुप जन
अहले फज्ल (अ फा) = गुणी जन
अहलन् (अ) = स्वागत, बन्धु जन
अहलन् व सहलन् व मरहबन् (अ) = (स्वागत है) मित्र के पास उदार स्थान में
अहलुहू (अ) = उसके योग्य

---

* इसमें दोनों शब्द अरबी होने पर भी इसे फारसी के ढंग से समस्त किया गया है अत इसे 'फारसी' या 'अरबी-फ़ारसी' मानना चाहिये।

(। — अ)

वि अहलिहि (अ) = उसके पात्र
अहलियत (अ) = कावलियत, पात्रता
इहमाल (अ) = प्रमाद, उपेक्षा
आहन (फा) = लोहा
आहन (फा) = लोहा
आहनी (फा) = लोहे का
आहने (फा) = लोहे का एक टुकड़ा
आहनीन (फा) = लोहे से बना
आहनी चंगाल (फा) = कठोर पंजा
आहनी दाम (फा) = कठोर जाल
आहू (फा) = हिरन (सं०—आगु—अपभ्रंश से प्राप्त)
अहब्बा (अ) = मैं प्यार करता हूँ
अहब्बाहु (अ) = मैं उसे प्यार करता हूँ
आहे (फा) = एक निश्वास
ऐ (फा) = हे अय (सं०—अयि)
आयात (अ) = (आयत का बहुवचन) चिह्न, वाक्य
अयादी (अ) = (यदी का बहुवचन) हाथ, उपकार, कृपा
अयाज़ (अ) = महमूद के एक दास का नाम
अय्याम (अ) = (याम का बहुवचन) दिन
ऐताम (अ) = (यतीम का बहुवचन) अनाथ जन
ईसार (अ) = त्याग, लाभ, दान
ईजाज़ (अ) = संक्षेप
अय्यद (अ) = भगवान सहायता करे
अय्यदहु'ल् मौला (अ) = परमात्मा उसकी सहायता करे
ईज़द-ऐज़द (फ़ा) = भगवान् (शुद्ध रूप यज्द)
इस्तादन् (फा) = खड़े होना (सं०—स्थातुम्)
इस्तादा-एस्तादा (फा) = खड़ा हुआ (सं०—स्थित)
ऐशान् (फा) = वे, उन्होंने
ऐज़न (अ) = भी, वही, वैसा ही (सं०—अपरञ्च)
ऐस्त (फा) = (इस्त) है (सं०—अस्ति)
ईमान (अ) = धर्मविश्वास, निष्ठा
ऐम्मा (अ) = (इमाम का बहुवचन) इमाम जन, नेता लोग
ऐमन (फा) = सुरक्षित, निश्चिन्त
ई (फा) = यह
ईनान् (फा) = (ई का बहुवचन) ये, ये लोग
ईजा (फ़ा) = यह जगह, इस जगह
ईनक (फा) = देखो, इस
आईना (फा) = दर्पण
ऐवान् (फा) = दरबार, बड़ा प्रकोष्ठ, महल
आईन (फा) = कानून की धारा
आईना (फा) = दर्पण
आईनादार (फा) = दर्पणधर (दार=सं०—धर)
आईनादारी (फा) = दर्पणधारी की नौकरी

ب — ब

ब (फा) = का, के लिये, में, के अनुसार
बि बु (फा) = ईरानी भाषा में कुछ क्रियाओं से पूर्व लगनेवाला और जोर तथा सुन्दरता प्रदान करनेवाला आगम
बि (अ) = द्वारा, के साथ, को
बा (फा) = सहित, तथापि, तथासति
बा आंकि (फा) = तथापि, वैसा होने पर भी, यद्यपि
बाब (अ) = द्वार
बाबुं'त्तौबती (अ) = प्रायश्चित्त का द्वार
बाखबर (फा अ) = सूचित, जानकार
बाख्तन् (फा) = खेलना, क्रीडा करना, खेल में हारना
ब आखिर (फा अ) = अन्त में
ब खुशूनत (फा अ) = कठोरता से
बाद (फा) = हवा, दप, पेट की अपानवायु (स०—वात)
बाद (फा) = हो (स०—भूयात्)
बादे मुखालिफ (फा अ) = विरुद्ध पवन, विरुद्ध वातावरण
बादाम (फा) = मेवा बादाम
बाद पा (फा) = (शब्दार्थ—पवनपाद) तीव्र गतिवाला
बाद पा ए (फा) = चपल अश्व
बादशाह (फा) = सम्राट्, राजा
बादगिर्द (फा) = चक्रवात
बादे (फा) = पाद, अपानवायु, पद
बादिया (अ) = मरु, रेगिस्तान
बार (फा) = बोझा (स०—भार)
बारे खातिर (फा) = मन का बोझा, चित्त क्लेश
बार आवुर्दन् (फा) = फलभार से लदना (स०—भार-आवरणम्)
बारे दिगर (फा) = दूसरी बार
बारान्-बारां (फा) = वर्षा, फुहार
बारबर (फा) = भारवाही मनुष्य या पशु (स०—भारधर)
बार बर दार (फा) = भारवाही, गर्भिणी, गोद में बच्चा उठानेवाली
बारे खुदा (फा) = महान् परमात्मा
बारदार (फा) = भारवाही (स०—भारधर)
बारगाह (फा) = दरबार, प्रार्थना सुनने का स्थान
बारा (फा) = दीवाल, प्राकार (हिन्दी—बाड़ा)
बारहा (फा) = अनेक बार (हा = स०—जस्-अस)
बारी (अ) = उत्पन्न कर्त्ता
बारी तआला (अ) = परमात्मा
बारे (फा) = एक बार
बारे चन्द (फा) = कई बार
बारीदन् (फा) = मेह बरसाना (स०—वपण)
बारीक (फा) = महीन
बाज (फा) = पुनः लौटना, पीछे, मुड़ना, बाजपक्षी

(ب — ब)

बाजार (फा) = आपण स्थान
बाजारहा (फा) = अनेक क्रयविक्रय स्थान
बाजारी (फा) = बाजार सम्बन्धी
सगे बाजारी (फा) = बाजार का कुत्ता
बाज आमदन (फा) = वापिस आना, लौटना
बाज आवुर्दन् (फा) = वापिस लाना
बाज बूदन (फा) = खुला होना (स०—भू)
बाज पस (फा) = पुनः प्राप्ति (हिन्दी का वापिस = फा का बाज पस)
बाज पस दादन् (फा) = वापिस देना
बाज खरीदन् (फा) = वापिस खरीदना
बाज दादन् (फा) = वापिस देना
बाज दाश्तन् (फा) = वापिस लेना, वापिस रखना
बाजरगान (फा) = व्यापारी, सौदागर
बाजरगाने (फा) = एक व्यापारी
बाज जदन् (फा) = लौटकर चोट करना
बाज अस्त (फा) = खुला है
बाज करदन (फा) = खोलना
बाज कशीदन् (फा) = वापिस खींचना
बाज गुजाश्तन् (फा) = वापिस लौट जाना, त्यागना
बाज गर्दीदन (फा) = वापिस मुड़कर आना
बाज गश्तन् (फा) = वापिस जाना या आना
बाज गुफ्तन् (फा) = पलटकर बोलना
बाज मांदन् (फा) = पीछे रहना, अनिच्छा प्रकट करना
बाजू (फा) = हाथ (स०—बाहु)
बाजी (फा) = खेलना (बाख्तन् से)
बाजीचा (फा) = खेलना, खेल
बाजीदन् (फा) = खेलना, शर्त बदना
बा'स (अ) = शक्ति, कठोर दण्ड
बसना (अ) = हमारा कठोर दण्ड
बासिक़ (अ) = लम्बा ताड़ का पेड़
बाश (फा) = तू हो (बूदन् का आज्ञार्थक)
बाशद (फा) = (वह) होता है
बातिल (अ) = अनर्गल शब्द, अपशब्द
बातिन (अ) = आन्तरिक, गुप्त
बातिनी (अ) = मेरा अन्तरंग रहस्य, मेरा अन्तर्मन
बाग (फा) = उद्यान
बागबां (फा) = माली, उद्यानपाल
बाफिन्दा'स्त (फा) = बुननेवाला है
बाफिन्दा (फा) = बुननेवाला (स०—वयन्त)
बाक़ी (अ) = शेष
बाक (फा) = भय, खतरा
बाल (फा) = बाहु, डैना, शरीर
बाला (फा) = उच्च, चोटी

(ب — ब)

बाला गिरिफ्तन् (फा) = उचना, पकड़ना, भभक उठना
बि'ल् इस्मी (अ) = पाप में
बि'ल् बिर्रि (अ) = धर्मात्मा होना
बि'ल् बनान (अ) = उगलियो के पोरो पर
बि'ल् जुमला (अ) = एक वाक्य में, सक्षेप में
बि'ल् रहि्ली (अ) = जाने के साथ साथ
बालिश (फ़ा) = तकिया, गद्दा
बि'श्शजरि'ल् अखज़रि (अ) = हरे पेड पर
बालिग़ (अ) = वयस्क, वय प्राप्त
बि'ल् ग़ावी (अ) = मूर्खता से
बि'ल्'लाही (अ) = परमात्मा के साथ
बि'ल् वरा (अ) = मनुष्यो के बीच
बालीन (फा) = सिरहाना, तकिया
बाम (फा) = छत, छज्जा
बामदाद, बामदादान् (फा) = सुबह् को, प्रभात मे
बा मनश (फा) = मेरे और उसके साथ
बान (अ) = एक प्रकार का वृक्ष, सरकण्डा (स०—बाण)
बाग (फा) = उद्धृत वाक्य या शब्द, पुकार
बांग बर दाश्तन् (फा) = प्रार्थना या आह्वान, आवाज लगाना
बांगे सुब्ह् (फा) = प्रभात प्रार्थना का आह्वान
बांगे नमाज़ (फा) = प्रार्थना का आह्वान
बानू (फा) = वधू, पत्नी (स०—वधू)
ब आवाज़ आमदन् (फा) = गुनगुनाना, गीत गाना
बावुजूद (फा अ) = तथा सत्यपि
बा वर करदन्, बावर दाश्तन (फा) = विश्वास करना
बाहिर (अ) = उत्तम, प्रकट
बाहम (फा) = परस्पर, आपस मे
बाहम आमदन् (फा) = क्रोध में आना, युद्ध होना
बायद (फा) = उचित है कि ऐसा हो (स०—भूयात्)
बायदत (फा) = तुझे-तेरे लिये उचित है
बायस्ते (फा) = यह उचित होता
बिबर (फा) = तू ले चल
बुत (फा) = मूर्त्ति (स०—बुद्धप्रतिमा-बुद्ध)
ब तह्क़ीक़ (फा अ) = निश्चितत , न्यायत
बदतर-बत्तर (फा) = ज्यादा बुरा
बुत तराश (फा) = मूर्त्ति बनानेवाला
बितर्स (फा) = तू भय खा, तू डर मान (तर्स
बत्तर'न्द (फा) = ज्यादा बुरे हैं
ब जा (फा) = स्थान पर
ता ब जाए कि (फा) = उस स्थान तक, एक
ब जा आवुदन् (फ़ा) = जगह पर लाना यानी ब

(ب — ब)

ब जाए आवुदन (फा) = जगह पर लाना यानी कायरूप मे परिणत करना
ब जा रसीदन् (फा) = स्थान पर पहुँचाना, सफल होना
ब जां आमदन् (फा) = प्राणभय होना, मरणासन्न होना, जीवन से अजीर्ण होना
ब जां परवरदन् (फा) = प्राणो के पण से पालना
ब जां रसीदन् (फा) = प्राणमात्र धारण करना, भूखो मरना
ब जां रजीदन (फा) = प्राणो पर चोट खाना
ब जानिब (फा अ) = की ओर
ब जुज़ (फा) = सिवा, अतिरिक्त
बि जमालिहि (अ) = उसके सौन्दर्य के द्वारा
बच्चा (फा) = बालक (स०—वत्स)
ब चि (फा) = किस से, किसके द्वारा
बह्स (अ) = विवाद, पृच्छा
बह्स करदन् (अ फा) = वाद विवाद करना
बह्र (अ) = समुद्र
ब हुज़ूर (फा अ) = उपस्थिति में
ब हक़ीकत (फा अ) = वास्तव में
ब हुक्मे (फा अ) = कारण से
ब हुक्मे आंकि (फा अ) = इस कारण से कि
ब हुक्मे ज़रूरत (फ अ) = आवश्यक्ता के कारण से
ब हुक्मे आरियत (फा अ) = ऋण के द्वारा, ऋण के कारण
बिहिल् करदन् (अ फा) = क्षमा करना
बुहूर (अ) = (बह्र का बहुवचन) समुद्र
बख़्त (फा) = भाग्य
बख़्त बरगश्ता (फा) = भाग्य विपयस्त है जिसका, अभागा
बुख़्ती (फा) = बख़्तावर-बैक्ट्रिया का झबरा ऊँट, जिसके दो कोहान तथा लम्बे बाल होते हैं
बख़्त्यार (फा) = (भाग्य मित्र है जिसका) सौभाग्यशाली
बख़्श (फा) = हिस्सा, भाग
बख़्शाई (फा) = तू क्षमा कर दे
बख़्शाइश् (फा) = क्षमा, दयालुता
बख़्शायन्दगी (फा) = क्षमालुता
बख़्शीश (फा) = उपहार, दान
बख़्शन्दगी (फा) = दयालुता, दानशीलता
बख़्शिन्दा (फा) = दाता
बख़्शूदन् (फा) = दया दिखाना
बख़्शीदन् (फा) = देना, क्षमा करना
बुख़्ल (अ) = लोभ
बख़्वाँ-बख़्वाब (फा) = नीद में
ब ख़ुद बर (फा) = स्वय तेरे ऊपर
बख़ील (अ) = कञ्जूस, लोभी
बख़ीली (अ फा) = कञ्जूसी, बुख़्ल
बद (फा) = बुरा

(ب—ब)

बदा (अ) = वह पहले प्रकट हुआ
इज़ा बदा (अ) = जब वह पहले प्रकट हुआ
बद अख़्तर (फ़ा) = बुरे सितारोंवाला, दुग्रहग्रस्त
बद अख़्तरे (फ़ा) = एक दुग्रहग्रस्त व्यक्ति
बिदाँ (फ़ा) = तू जान (सं०—विदा कुरु)
बदाँ (फ़ा) = (बद का बहुवचन) बुरे लोग
बदाँ (फ़ा) = (ब+आँ में 'द' का आगम) उसके साथ, अतएव
बद अन्देश (फ़ा) = बुरा सोचनेवाला, अपकारी
बद बख़्त (फ़ा) = अभागा
बद बख़्ती (फ़ा) = दुर्भाग्य
बदख़्शाँ (फ़ा) = एक प्रदेश, मध्य एशिया में
बद ख़ू (फ़ा) = दुःशील, बुरे स्वभाववाला
बद्र (अ) = पूर्णचन्द्र, पूर्णिमा
क'ल् बद्री (अ) = पूर्णचन्द्र के सदृश
बदर (फ़ा) = (द्वार से बाहर) बाहर, बिना
बदर आमदन् (फ़ा) = बाहर आना
बदर रफ़्तन् (फ़ा) = बाहर जाना
बद्रक़ा (अ) = पथप्रदर्शक,
बदर करदन् (फ़ा) = बाहर करना, निकालना
बि दर्रीना (अ) = हमारे दूध में
बद रोज़गार (फ़ा) = अभागा, दुष्ट
बद ज़िन्दगानी (फ़ा) = बुरी तरह जीवित
ब दस्त आवुर्दन् (फ़ा) = हाथ में प्राप्त करना
ब दस्तम् (फ़ा) = मेरे हाथ में
बद सिगाल (फ़ा) = दुश्चिन्तक, बुरा सोचनेवाला
बद अहदी (फ़ा अ) = वादा तोड़ना, वादा तोड़नेवाला
बद फ़रजाम (फ़ा) = बुरा होनेवाला, परिणाम में बुरा
बदकारी (फ़ा) = दुष्कर्म
बदगुहर (फ़ा) = बुरे किस्म का, बुरे वंश (प्रभव) का
बदगुहर (फ़ा) = प्रकृत्या दुष्ट
बदगो (फ़ा) = बुरा बोलनेवाला, कटुभाषी
बद मिह्र (फ़ा) = अकृपालु
बद मिह्री (फ़ा) = अकृपा
बदन (अ) = शरीर
बदू (फ़ा) = (ब+ऊ में 'द' का आगम) उसको, उससे
बिदिह (फ़ा) = दे (सं०—देहि)
बदी (फ़ा) = बुराई
बदीअ (अ) = आश्चर्यजनक, विचित्र
बदीउ'ल्जमाल (अ) = दुर्लभ सौन्दर्य
बदीअ ए जहाँ (अ फ़ा) = संसार में आश्चर्य
बदीं (फ़ा) = (ब+ईं में 'द' का आगम) इसको, इससे, इसमें
बदींहा (फ़ा) = इन चीज़ों से
बज़्र (अ) = बीज (सं०—बीज, वीर्य)

(ب—ब)

मिन् क़ब्लि'ल बज़्र (अ) = अच्छे बीज के परिणामस्वरूप
बज़्ल (अ) = देन, दान
बुज़्ला (फ़ा) = मज़ाक़, विनोद
बर (फ़ा) = पर
बर (फ़ा) = उरोज, आलिंगन, फल
अज़ बर (फ़ा) = कण्ठस्थ
दर बर करदन् (फ़ा) = कपड़े पहनना, आच्छादित करना
बर्र (अ) = जलहीन सूखी धरती
बराबर (फ़ा) = समान (शब्दार्थ—छाती से छाती मिलाना)
बर बराबर (फ़ा) = आमने-सामने, के विरुद्ध
बिरादर (फ़ा) = भाई (सं०—भ्रातृ)
बिरादर ख़्वांदगी (फ़ा) = भाई चारा दिखाना
बर आमदन् (फ़ा) = ऊपर आना, सफल होना
बर आमेख़्तन् (फ़ा) = मिलाना
बराँ (फ़ा) = उस पर
बराँ शुदन् (फ़ा) = सहमत होना
बर अन्दोख़्तन् (फ़ा) = फेंकना, पटकना, हराना
बर अंगेख़्तन् (फ़ा) = उठाना, उत्तेजित करना
बरानम् (फ़ा) = मैं सहमत हूँ
बर आवुर्दन् (फ़ा) = पालना, पोसना, बड़ा करना
दम बर आवुर्दन् (फ़ा) = साँस लेना, साँस लेकर एक शब्द बोलना
बराये (फ़ा) = के लिये
बर बर (फ़ा) = सीने पर
बर बस्तन् (फ़ा) = बाँधना, बन्द करना (सं०—बन्धन)
बरबत (फ़ा) = ईरानी बाजा, एक तन्तुवाद्य
बरबत सराय (फ़ा) = बरबत बजानेवाला
बर पा (फ़ा) = उठा हुआ, सीधा खड़ा (शब्दार्थ—पैरों पर)
बर पा दाश्तन् (फ़ा) = सीधा रखना
बर ताफ़्तन (फ़ा) = मोड़ना, ऐंठना, बल देना
बरतर (फ़ा) = उच्चतर (सं०—वरतर)
बर तुस्त (फ़ा) = तुझ पर है
बुर्ज (अ) = मीनार, बुर्ज
बर जा (फ़ा) = ज़मीन पर, लम्बायमान, शान्त
बर जस्तन (फ़ा) = ऊँची छलाँग लगाना, कूदना
बर जहाद (फ़ा) = वह कूदता है
बुर्जे (अ फ़ा) = एक बुर्ज
बर चीदन् (फ़ा) = चुनना (सं०—चयन)
बर हक़ (फ़ा अ) = सचाई पर
बर्ख़ (फ़ा) = हिस्सा, टुकड़ा, अंश
बर ख़ास्त (फ़ा) = ऊपर उठ, ऊपर उठा
बर ख़ास्तन् (फ़ा) = ऊपर उठना
बर ख़्वांदन् (फ़ा) = बोलना, दोहराना
बर्रे (फ़ा) = थोड़ा सा, थोड़ी दूरी, एक भाग

(ب — व)

वर खेज़ (फा) = उठ, उत्तिष्ठत
वर्द (अ) = ठण्डा
वर्दे अजूज़ (अ फा) = ठण्डी बुढिया (शीतपूतना नामक रोग)
बुर्द (अ) = धारीदार वस्त्र
वर दाश्तन् (फा) = उठाना, धारण करना, सहन करना
वर दरीदन् (फा) = अनावृत करना
बुर्दन् (फा) = उठाना, ले जाना
वर रफ्तन् (फा) = ऊपर ले जाना, चढाना
वर सर (फा) = सिर के ऊपर
बि रश्शतिन् (अ) = छिडकने के द्वारा
बर्फ (फा) = हिम
वर्फाव (फा) = ठण्डा पानी
वर फुरूख्तन् (फा) = जलाना
वर फ़ज़ूदन् (फा) = वढाना
वर फिशादन् (फा) = दवाना, छीनना
वर्क़ (फा) = चमक, विजली
वर क़रार (फा अ) = स्थिर, सामान्य अवस्था मे
वरकात (अ) = (वरकत का बहुवचन) आशीर्वाद
वरकत (अ) = आशीष
विरकत-विरका (अ) = तालाव, पोखर
वर फ़ुशादन् (फा) = खोलना, ढक्कन हटाना
वर फ़ुशूदन् (फा) = खोलना
वर कशीदन् (फा) = खीचना, (स०—कर्षण)
वर कन्दन् (फा) = उखाडना, काटना (स०—कृन्तन)
वरकी (फा) = ऊँट के वालो से वने वस्त्र
वर्ग (फा) = पत्ती, पँखुडी, यात्रा पाथेय
वर गुजश्तन् (फा) = गुज़र जाना, लाँघ जाना
वर गर्दीदन (फा) = मुड जाना, वदलना
वर गिरिफ्तन् (फा) = पकडना (स०—ग्रहण)
वर गुज़ीदन् (फा) = छाँटना, चुनना
वर गुसिलीदन् (फा) = झपटना
वर गुसिलानीदन् (फा) = छीनना
वर गश्तन् (फा) = भागना, पलायन
वर गश्ता (फा) = ऊपर से नीचे होना, उलटना
वर गुमाश्तन् (फा) = भेजना, नियुक्त करना
वरम् (फा) = मै धारण करूँगा
विरिंज (फा) = चावल
विरिंजे (फा) = एक चावल का दाना
वर नयारद (फा) = वह धारण नही करता
वर नयारम् (फा) = मैं नही निकालूँगा
वर नयामदन् (फा) = वरामद न होना, पूरा न होना
वरू (फा) = उस पर
विरौ-विरव (फा) = (तू) जा

(ب — व)

वरू वर (फा) = उस पर, उसके ऊपर
बुरूत (फा) = मूँछें, गलमुच्छे, श्मश्रु
वरूमन्द (फा) = फलदार, फलनेवाले
विरूँ-वेरूँ (फा) = विना, वाहर
ब रूए खुद (फा) = अपने स्वय पर
वरा-वर्रा (फा) = भेड का वच्चा
बुरहान (अ) = निश्चित एव प्रत्यक्ष प्रमाण
वरहम वस्तन् (फा) = वन्द करना
वरहम ज़दन् (फा) = परस्पर टकराना
दस्त वरहम ज़दन् (फा) = हाथ मलना (शोक से)
वरहनगी (फा) = नग्नता
वरहना (फा) = नग्न, खाली, रिक्त
वरी (अ) = साफ, मुक्त, मासूम, निश्चिन्त
वरी दाश्तन् (अ फा) = मुक्त रखना
विरियान् (फा) = भुना हुआ, तला हुआ, भूजित
विरियान् साख्तन्-कर्दन् (फा) = भूनना, तलना
बुरीदन्-बुर्रीदन् (फा) = काटना, उघेडना
वरीं (फा) = उस पर
वज़्ज़ाज़ (अ) = वस्त्र विक्रेता
बुज़ुर्जमिहिर (फा) = नौशेरवाँ का प्रधानमंत्री
बुज़ुर्ग (फा) = (वहुवचन—बुज़ुर्गान्) वृद्ध, वडा आदमी
बुज़ुर्गज़ादा (फा) = महान् व्यक्ति का पुत्र
बुज़ुर्गवार (फा) = महान्
बुज़ुर्गवारी (फा) = महानता
बुज़ुर्गवारे (फा) = एक आदरणीय महान् व्यक्ति
बुज़ुर्गहिम्मत (फा अ) = उच्च विचारयुक्त
बुज़ुर्गी (फा) = महानता
बुज़ुर्गे (फा) = एक महान् व्यक्ति
वज़ा (फा) = पाप, अपराध
वस (फा) = वहुत से (स०—वहु)
वस करदन् (फा) = वन्द करना, समाप्त करना
वसा (फा) = कई
वसात (अ) = समतल, धरातल
विसात (अ) = कालीन, दरी (हिन्दी—विछायत)
विसितान विस्तान (फा) = (तू) ले
बुस्तान-वोस्तान-ब्रोस्ताँ (फा) = गन्धलोक, वाग
वोस्ताँ सरा (फा) = वाग में मकान, उद्यान भवन
विस्तर (फा) = विस्तर (स०—विष्टर)
वस्तन् (फा) = वाँधना, मूदना
नाल वस्तन् (अ फा) = जूते पहनना, नाल वाँधना
वि सितन्द (फा) = लेते है (वे)
वस्ता (फा) = वँधा हुआ, मुँदा हुआ
ब सर आमदन् (फा) = सिरे पर आना, समाप्ति पर आना

(ب — ब)

ब सर आमदन (फा) = समाप्ति पर आना-होना
ब सर आवुर्दन् (फा) = समाप्ति पर लाना
बसर बुर्दन् (फा) = यापन करना
बसात (अ) = (उसने) प्रभूत दिया
व लौ बसात'ल्लाहुर्रिज़्क़ (अ) = और यदि परमात्मा जीवन के साधन प्रभूत बनाता
बि'स्मि (अ) = के नाम पर
ब सूये (फा) = की दिशा में, की ओर
बसे (फा) = बहुत से
बिस्यार (फा) = बहुत, प्राय , बहुश
बिस्यार ख़ुस्प (फा) = बहुत ही स्वापशील (स०—सुषुप्)
बिस्यार ख्वार (फा) = बहुभोजी, अतिभोजी
बिस्यारी (फा) = बहुलता, आधिक्य
बसीत (अ) = विस्तीर्ण समतल धरातल
बसीम (अ) = मुस्कुराते हुए
बिशारत (अ) = सुसमाचार, प्रसादपूर्ण परिवर्तन
बशर (अ) = आदमी
बशरा (अ) = खाल, बाह्य रूप
बशरीय्यत (अ) = मानव प्रकृति
बिशिनव, बिश्नव (फा) = सुनो (स०—शृणु)
बु शुवी (फा) = तू स्वच्छ करे, तू धोये
बु शूयद (फा) = (वह) धोता है
बिसालिहिन् (अ) = एक न्यायी के द्वारा, उत्तम जन के द्वारा
बसरा (अ) = ईरान की खाड़ी पर स्थित एक नगर
बिज़ाअत (अ) = व्यापारिक माल
बत्त (अ) = बतख
बि ताहिरिन् (अ) = स्वच्छ, शुद्ध, शुद्धिपूर्वक
बत्ताल (अ) = बेकार, व्यर्थ
बतालत (अ) = निष्क्रियता, व्यर्थ बातों में समय बिताना
बत्श (अ) = शक्ति, युद्ध में शूरता, निरन्तर प्रहार
बि तल्'अतिहि (अ) = उसकी शक्ल से
बत्न (अ) = पेट, उदर
बती (अ) = सुस्त, मन्द
बि तीबिहा (अ) = उसके स्वभावमाधुर्य के कारण
बाद (अ) = पश्चात्
बाद अज़ (अ फा) = पश्चात्
ब इज़्ज़ततर (अ फ़ा) = प्रियतर
बाज़े (अ फा) = कुछ लोग
बाल (अ) = स्वामी, पति
बालिहा (अ) = उसका पति
बलबक (अ) = सीरिया में बाल्बेक नामक स्थान
बि औनी (अ) = की सहायता से
ब ईद (अ) = बहुत दूर

(ب — ब)

बग़दाद (अ) = (मूल, बाग़े दाद) दजला के तट पर प्रसिद्ध नगर
बग़ल (फा) = बगल, काँख
बग़ौ (अ) = (वे) विद्रोही होंगे
ल बग़ौ फ़ि'ल् अर्ज़ि (अ) = (वे) निश्चय विद्रोही होंगे पृथ्वी पर
बाग़ी (अ) = विद्रोही
बिग़ैर (अ) = बिना
बिग़ैरे वसीलतन् (अ) = बिना माध्यम के
बक़ा (अ) = व्यवधान, निरन्तरता
बक़ाए (अ फा) = एक निरन्तरता
बक़्क़ाल (अ) = अनाज विक्रेता, पसारी, परचूनी
बुक़ा (फा) = जगह, स्थान, प्रदेश
बि क़ल्बी (अ) = मेरे हृदय से
बक़ीयत-बक़ीय (अ) = शेष, बचा हुआ, अवशिष्ट
बक़ीय्यते (अ फा) = अवशेष, बचा हुआ खण्ड
बकार आमदन् (फा) = काम में आना
बकार बुर्दन (फा) = काम में लगाना
बुफ़ताश (फा) = एक पहलवान का नाम
बिकज़्ज़ाबिन् अशिर (अ) = एक प्रसिद्ध झूठा और उद्दण्ड व्यक्ति, झूठ का आरोप लगाना
बक्र (अ) = एक नाम (शब्दार्थ-कुमारी)
बिकाश् (फा) = (तू) सींच
बुकुश (फा) = (तू) मार
बुकुशाई-बुकशाई (फा) = (तू) खोल
बुक्म (अ) = (बहुवचन—अबकाम) गूंगा
बि कमालिहि (अ) = उसकी पूर्णता से
बुगुज़ार (फा) = जाने दे
बुगुफ़्ता (फा) = कहा हुआ
बुगो (फा) = कह (तू)
बिगीर (फा) = पकड़ (तू)
बल (अ) = किन्तु, नहीं
बलअ (अ) = विपत्ति, बला
बिलाद (अ) = (बल्दत का बहुवचन) सूबे, देश
बलाग़ (अ) = सन्देश
मा रसूलि इल्ल'ल बलाग़ (अ) = नहीं है सन्देशवाहक का काम सिवा सन्देश के
बलाग़त (अ) = वाग्मिता
बलाए (अ फा) = एक विपत्ति
बुलबुल (फा) = बुलबुल पक्षी
बुलबुला ! (फा) = ओ बुलबुल !
बुलबुलाने चश्म (फा) = तोताचश्म, बेवफा
बल्ख (फा) = प्राचीन बाख्त्रिया, बाह्लीक
बल्ख़ी (फा) = बाह्लीक वासी
बलद (अ) = देश, नगर

(ب — ब)

बलदुहू (अ) = उसका देश
बलदान (अ) = (बलद का बहुवचन) जिले, नगर, ग्राम आदि
बलदत (अ) = देश
ब लज़्ज़ततर (फा) = अधिक स्वादपूर्ण
बलग़ (अ) = वह पहुँचा
बलग़ल् उला (अ) = उसने महत्ता प्राप्त की
बल्लिग़ (अ) = (तू) पहुँचा दे
बल्लिग़ मा अलैक (अ) = पहुँचा दे जो तुझ पर (फ़र्ज़) है
बल्कि (फा) = प्रत्युत
बलन्द-बुलन्द (फा) = ऊँचा, दीर्घाकार
बुलन्द आवाज़ (फा) = ऊँची आवाज़वाला
बुलन्द बाला (फा) = ऊँचे शरीरवाला
बुलन्द बांग (फा) = ऊँची चीत्कार
बुलन्दी (फा) = ऊँचाई
बिल्लौर बिल्लूरी (अ फा) = स्फटिक
बिल्लौरी, बिल्लूरी (फा) = स्फटिकमय
बलूग़ (अ) = वयस्कता
बले (फा) = ठीक है, किन्तु, हाँ!
बलीय्यत (अ) = दुर्भाग्य
बुलीतु (अ) = मैं दुर्भाग्यग्रस्त हूँ
बुलीतु बि नह्‌विय्यिन् (अ) = मैं एक वैयाकरण के द्वारा सताया गया हूँ
बलीग़ (अ) = महान्
बि मा (अ) = जिसमें भी, जिसके अनुसार
ब मसल (फा अ) = उदाहरणार्थ
बि मिस्मई (अ) = मेरे कानों से
बि मन् (अ) = किसमें? किसको?
बि मनित्तसब्त (अ) = तू किससे सम्बन्धित है
ब मन'स्त (फा) = मेरे लिये है, मुझ को है
ब मूजिब (फा अ) = के अनुसार
बि मीर (फा) = मर जा
बिन् (अ) = (इब्न के स्थान पर प्रयुक्त जब कि वह दो संज्ञाओं के बीच में आता है) पुत्र
बुन (फा) = जड़, तह, सिरा
सर ओ बुन (फा) = सिर और पूँछ
बि ना (अ) = हमारे साथ
बिनाअ (अ) = बना हुआ मकान
बिना बर (अ फा) = (शब्दार्थ—'के ऊपर निर्मित') वृत्ति, के कारण, पर आधृत
बनात (अ) = (बिन्त का बहुवचन) लड़कियाँ, कन्याएँ
बनाते नबात (अ फा) = वनस्पति-बालिकाएँ
बनागोश-बुनागोश (फा) = (कान से लगा हुआ) = गाल
ब नाम (फा) = के नाम पर

(ب — ब)

बनान् (फा) = उँगलियाँ, उँगलियों के पोर
बि नह्‌विय्यिन् (अ) = एक वैयाकरण के द्वारा
बन्द (फा) = बन्धन
बन्द (फा) = (तू) = पकड़
बन्दे दस्त (फा) = हथकड़ियाँ
बन्द फरमूदन् (फा) = कैद करने की आज्ञा देना
बन्दगान् (फा) = (बन्दा का बहुवचन) सेवक जन
बन्दगी (फा) = सेवा
बन्दन् (फा) = बाँधना (स०—बन्धन)
बन्द निहादन् बर दिरम (फा) = दिरम पर कड़ी पकड़ रखना, कजूसी करना (स०—निधान)
बन्दा (फा) = सेवक
बन्दियान् (फा) = (बन्दी का बहुवचन) कैदीजन
बिनिह (फा) = रखदे (तू)
बुनैया (अ) = (बनी = इब्न का बहुवचन) हे पुत्रो!
बुनियाद (फा) = आधार, नींव
बनी आदम (अ) = आदम का वंश
बनी अम्म (अ) = मामा या चाचा के पुत्र
बू (फा) = गन्ध
बू (अ) = (अबू का संक्षिप्त रूप) पिता
बुल् अजब (अ) = (शब्दार्थ—आश्चर्य का कारण) आश्चर्यजनक
बव्वाब (अ) = द्वारपाल
ब वाजिबी (फा अ) = उपयुक्त
बुवद (फा) = होता है, होगा (स०—भवति)
बूदन् (फा) = होना (स०—भवनम्)
बूदे (फा) = होता (स०—अभविष्यत्)
बोरिया (फा) = खुरदरा विस्तर, टाट का विस्तर, चटाई
बोरिया बाफ (फा) = चटाई बुननेवाला
बूस्तान-बोस्तान (फा) = (शब्दार्थ—गन्धलोक) पुष्पोद्यान
बोसा (फा) = चुम्बन
बोसा दादन् (फा) = चुम्बन देना (स०—दानम्)
बोसीदन् (फा) = चूमना
बू क़लमून (अ) = शाबल्यपूर्ण, वैविध्यपूर्ण, परिवर्तनशील
बूम (फा) = उल्लू
बूम (फा) = पृथ्वी, बिना जुती बंजर धरती (स०—भूमि)
बूईदन् (फा) = गँवाना, सौरभ फैलाना
बिह (फा) = उत्तम
बिहि (अ) = उसका, उससे, उसके द्वारा
बहा (फा) = मूल्य
बहार (फा) = वसन्त
बहारी (फा) = वासन्ती
बिह अज़ (फा) = (किसी) से उत्तम
बहाना (फा) = बहाना

(ب—ब)

बहानेसाज (फा) = बहानेबाज, बहाना तराश
बहायम (अ) = (बहीमत का बहुवचन) पशुजन
बिहतर (फा) = ज्यादा अच्छा
बिहतरे (फा) = एक उत्तमतर व्यक्ति
बहजत (अ) = सौंदर्य, प्रसन्नता, आनंद
बहराम (फा) = कुछ फारसी राजाओं की उपाधि
बहराम गोरे (फा) = सासानी वंश का छठा राजा
ब हश्त (फा) = आठ में
बिहिश्त (फ़ा) = स्वर्ग
अहले बिहिश्त (अ फा) = स्वर्गवाले, स्वर्गवासी
बिहिश्ती (फा) = स्वर्गवासी
बिहिश्तरोए (फा) = देवदूतों के तुल्य मुखवाला
बहम (फा) = परस्पर, आपसी
बहम बर आमदन् (फा) = विरोध करना, क्रुद्ध होना
बहम बर जदन् (फा) = आक्रमण करना
बहम बर कर्दन् (फ़ा) = परेशान करना
बहम कशीदन् (फा) = परस्पर खींचना, भ्रूकुंचन करना
बहमन्द (फ़ा) = (वे) साथ साथ हैं
बिही (फा) = बिहीफल, सेब के तुल्य एक फल जिस पर रोम होते हैं
चू बिही (फा) = बिहीफल तुल्य
बिहीन (फा) = सर्वश्रेष्ठ (सं०—वरेण्य)
बे (फा) = बिना
बी (अ) = मुझसे-मुझको
बि आ (फा) = आ (तू)
बियाबान (फा) = बंजरभूमि, निर्जन प्रदेश
बियाबाने कुद्स (फा अ) = जरुसलम का रेगिस्तान
बियाबां नशीन (फा) = बियाबान में रहनेवाला, वानप्रस्थ
बियाबद (फा) = पाये, प्राप्त करे (सं०—प्राप्नुयात्, फारसी याफतन् का आशीर्लिङ्)
बे आबरूई (फा) = अनादर
बे अजल (फा अ) = बेमौत
बे इख्तियार (फ़ा अ) = बे बस
बे अदब (फ़ा अ) = असभ्य
बियार (फा) = (तू) ला (आवर्दन् का आदेशवाचक)
बियारामीद (फा) = विश्राम किया
बियारायद (फ़ा) = (वह) सजावे (सं०—आराज् का आशी)
बे आज़ार (फा) = निरामय, हानिरहित
बे आज़ारतर (फा) = ज्यादा हानिरहित
बियाज़ारद (फा) = (वह) सताता है
बियाज़ारदन (फा) = कष्ट देना, कष्ट पाना
बियाज़ारीयम् (फा) = (तू) मुझे सताता है
बियाज़माई (फा) = तू आज़माइश कर
बि आसाई (फा) = (तू) विश्रामकर

(ب—ब)

बियाज़ (अ) = नोट बुक
बे ऐतबार (फा अ) = अविश्वसनीय, अविश्वस्त
बि आलायद (फा) = (वह) संगत करता है (आलूदन् का णिजन्त प्रयोग)
बियामोज़ (फा) = (तू) सीख
बयान (अ) = बयान
बे अन्दाज़ा (फा) = बिना संख्या या बिना परिमाण
बे इंसाफ (फा अ) = अन्यायपूर्ण
बे इंसाफी (फा अ) = अन्याय
बे बाक (फा) = निर्भय
बे बर (फा) = निष्फल
बे बर्ग (फा) = पत्रहीन
बे बसर (फा अ) = दृष्टिहीन, अनुभूतिशून्य
बे बहरा (फा) = वंचित, असम्पूर्ण
बे पर (फा) = परहीन पक्षी
बैत (अ) = दोहा, घर
बैतुल् माल (अ) = धनागार
बे तहाशा (फा अ) = परिणामचिंतारहित
बे तदबीर (फा अ) = क्रमहीन, बुद्धिहीन
बैतम् (अ फा) = मेरा काव्य
बे तमीज़ (फा अ) = विवेक रहित
बे तोशा (फा) = बिना साधन, साधनहीन
बे तौफ़ीक़ (फ़ा अ) = कृतज्ञता रहित, कृतघ्न
बैत हा (अ फा) = पद्य का बहुवचन, दोहे
बैते (अ फा) = एक पद
बे जान (फा) = निष्प्राण
बे जान कर्दन् (फा) = जान से मारना
बे जमाली (फा अ) = सौंदर्यरहितता
बे चारगी (फा) = निरुपायता, दीनता
बेचारा (फा) = अकिंचित्कर, असहाय
बे चू (फा) = अतुल, जिसकी समता न होगा, ईश्वर
बे हासिल (फा अ) = लाभहीन
बेहद (फ़ा अ) = सीमाहीन, सीमातीत
बेहुरमत (फा अ) = निरादृत, निर्लज्ज
बेहुरमती (फा अ) = निरादर, अपमान
बे हिसाब (फा अ) = गणनारहित, गणनातीत
बे हमीय्यत (फा अ) = बेशर्म, प्रमादी
बेख़ (फ़ा) = जड़, मूल
बेख़ कन्दन् (फा) = जड़ उखाड़ना
बेख़बर (फा अ) = अज्ञानी, ज्ञानहीन
बेख़बरी (फा अ) = अज्ञान, तू अज्ञानी है
बे ख़बर आमद (फा अ) = वे ज्ञानहीन हैं
बेख़्वाबी (फा) = निद्राहीनता, प्रजागर

(ب — व)

बे ख़ुद (फा) = अपने आपे से बाहर
बेद (फा) = बेंत (स०—वेतस)
बेदे मुश्क (फा) = वेदमुश्क का पौधा
बेदार (फा) = सजग, गम्भीर
बेदारी (फा) = सजगता
बे दानिश् (फा) = अज्ञानी
बे दानिशी (फा) = अज्ञान, मूर्खता
बे दर (फा) = (शब्दार्थ—द्वारहीन) निर्वासित, प्रवासी
बे दरेग़ (फा) = बिना हिचक
बे दस्त (फा) = बिना हाथ, हथकटा
बे दिल (फा) = हृदय के आवेग से रहित
बे दीन (फा अ) = धर्महीन
बे दीने (फा अ) = एक—कोई धर्महीन
बेज़क (फा) = शतरंज का बन्धक, मोहरा
बे रस्मी (फा) = बुरी परम्परा
बे रिज़ा (फा अ) = असन्तुष्ट
बे रोज़ी (फा) = जीविकारहित, अभागा
बेरूँ (फा) = बाहर
बे ज़र (फा) = स्वर्णहीन, दीन, निर्धन
बिअस (अ) = बुरा है
बि'सल्' मताइमु (अ) = बुरा है वह भोजन
बीस्त (फा) = बीस (स०—विंशति)
बे सरोपा (फा) = बिना दिमाग़ और आधार का, अभागा
बे सरोपाई (फा) = दुर्भाग्य
बेश (फा) = बड़ा, ज़्यादा
बेशतर (फा) = और ज़्यादा
बे शरमी (फा) = निलज्जता, धृष्टता
बेश ज़ोर (फा) = महान् शक्तिवाला, अधिक दृढ़
बेशक (फा अ) = नि सन्देह
बे शुमार (फा) = गणनातीत
बीशा (फा) = जंगल
बैज़ा (अ) = अण्डा
बैतार (अ) = पशु चिकित्सक
बे ताक़त (फा अ) = निर्बल
बे ताक़ती (फा अ) = निर्बलता
बे तमअ (फा अ) = निर्लोभ, अनासक्त
बैअ-ओ-शरा (अ) = ख़रीदना, बेचना
बे इज़्ज़ती (फा अ) = अनादर
बे इल्म (फा अ) = अशिक्षित
बे अमल (फा अ) = क्रियाहीन, काल्पनिक, अव्यावहारिक
बे ग़म (फा अ) = दु खहीन, निश्चिन्त
बे ग़मी (फा अ) = तू निश्चिन्त है
बे फायदा (फा अ) = व्यर्थ

(ب — व)

बियुफ़्ताद (फा अ) = (वह) गिरा
बियुफ़्तद (फा) = (वह) गिरता है
बे क़द्र (फा अ) = कद्र न करनेवाला
बे क़रार (फा अ) = बेचैन
बे क़ुव्वत (फा अ) = शक्तिहीन
बे क़यास (फा अ) = अनुमानातीत, माप-तोल रहित
ब यकबार (फा) = एक साथ
बे करां (फा) = सीमाहीन, विराट्
बे कफ़श (फा) = जूतारहित
बे कफ़्शी (फा) = उपानद्हीनता, बिना जूता होना
बेगाना (फा) = पराया, विचित्र
बे गाह (फा) = स्थानभ्रष्ट, बेमौसम
बे गिरान (फा) = असीम, अननुमेय
बे गुमान (फा) = नि सन्देह
बे गुनाह (फा) = दोषरहित, निरपराध
बे गुनाहे (फा) = एक निरपराध
बील (फा) = बेलचा, फावड़ा
बैलक़ान (फा) = कैस्पियन सागर के तट पर आरमेनिया का प्रमुख नगर
बीम (फा) = भय, आतंक
बीमार (फा) = रोगी
बे मुहाबा (फा अ) = निर्ममता से, अनासक्त भाव से
बे मुरुव्वत (फा अ) = अमानवीय, अनुभूतिशून्य
बे मुअव्वल (फा अ) = अविश्वसनीय
बे मग़ज़ (फा) = बिना गूदा
बी (फा) = (दीदन् का आदेशवाचक) देख!
बैन (अ) = व्यवधान, बीच में, वियोग
बीना (फा) = देखते हुए
बीनद (फा) = देखता है (वह), देखेगा
बियन्दाख़्त (फा) = उसने फेंका
बियन्देश (फा) = सोच, विचार कर
बीनश् (फा) = उसे देख
बीनिश् (फा) = दृष्टि, नज़र
बे निशान (फा) = लिंग—चिह्नहीन
बे नज़ीर (फा अ) = अनुपम, अनुदाहृत
बैनक (अ) = तेरे बीच में
बे नमाज़ (फा) = प्रार्थनाहीन
बे नमाज़े (फा) = एक प्रार्थनाहीन व्यक्ति
बे नवा (फा) = भोजनरहित
बे नवाई (फा) = अभाव
बैनी (अ) = मेरे बीच
बैनी व बैनक (अ) = मेरे और तेरे बीच मे
बीनी (फा) = तू देखता है

(ب — ब)

बन यदैहि (अ) = उसके सामने
बन यदैहि वालिहा (अ) = उसके पति के सामने
बीनियम (फा) = तू मुझे देखता है
बे वफ़ाई (फा अ) = निष्ठाहीनता, कृतघ्नता
बे वक़्त (फा अ) = अनुपयुक्त काल में
बेवा (फा) = विधवा (स०—विधवा)
बेवा ज़न (फा) = विधवा स्त्री
बे हुनर (फ़ा) = अकुशल, अपटु, मूर्ख
बे हंगाम (फा) = अनुपयुक्त
बे हूदा (फा) = नासमझ, मूर्ख

پ — प

पा (फा) = पैर (स०—पाद)
पादाश् (फा) = लौटाना, बदले में लेना या देना
पादशाह (फ़ा) = राजा, सम्राट्
पादशाह ज़ादा (फा) = राजकुमार
पादशाही (फ़ा) = राजा का शासन
पादशाह कर्दन् (फा) = राज्य करना
पादशाहे (फ़ा) = एक राजा
पार (फा) = आर-पार
पार्स (फा) = फारस, ईरान
पारसा (फा) = पवित्र, भक्त, योगी
पारसा ज़ादा (फा) = भक्त पुत्र
पारसाई (फ़ा) = पवित्रता, भक्ति
पारसाए (फा) = एक भक्त
पारा (फा) = टुकड़े होना, चिथड़े होना
पारा पारा (फा) = छेद पर छेद, टुकड़े टुकड़े
पारा दोज़ (फा) = थेगली लगानेवाला
पारीना (फा) = पुराना (स०—पुराण, प्राचीन)
पास (फ़ा) = विचार, देखभाल, पहरा, पहर
पासे ख़ातिर (फा) = आवश्यकताओं का विचार
पासबान (फा) = चौकीदार, गड़रिया
पासे (फा) = एक चौकीदार
पाशीदन् (फा) = छिड़कना, बखेरना
पाशीदा (फ़ा) = छितराया हुआ, बुरका हुआ
पाक (फा) = पवित्र (वैदिक स०—पाक)
पाक कर्दन् (फा) = पवित्र करना
पाकबाज़ (फा) = हानिरहित प्रेमी
पाक बुदन् (फा) = साफ़ ले जाना
पाक दामन (फा) = पवित्र वस्त्रवाला, सच्चरित्र
पाक रफ़्तन् (फा) = पूर्णतया सफ़ाई से चले जाना
पाक ज़ी (फा) = सच्चरित्र (शब्दार्थ—पवित्र गतिवाला)
पाक सोख़्तन् (फ़ा) = पूर्ण रूप से भस्मसात् करना

(پ — प)

पाक नफ़स (फा) = पवित्र हृदयवाला
पाकीज़ा (फा) = पवित्र (स्त्रीलिंग)
पाकीज़ रूई (फा) = पवित्र मुखत्व
पालहंग (फा) = रस्सी, फन्दा, पलंग (शेर) का छन्दप्रयुक्त रूप
पंजदह (फा) = पन्द्रह (स०—पंचदश)
पंजदह सालगी (फ़ा) = पन्द्रह साल का होना
पा-पाय (फ़ा) = पैर, आधार
पायत (फा) = तेरा पैर
पायश् (फा) = उसका पैर
पायम् (फा) = मेरा पैर
अज़ पाय उफ़तादन् (फा) = गिरना, सड़क पर गिरना
अज़ पाय दर आमदन् (फा) = फिसलना, लड़खड़ाना
अज़ पाये मा (फा) = हमारे होश में, हमारी याद में
पाये दाश्तन् (फा) = किसी के पैर मज़बूत करना
पाये गिरिफ़्तन् (फा) = जड़ पकड़ना
पायान (फा) = सिरा, सीमा
पाये बन्द (फा) = गतिरुद्ध, विवश
पाये बन्देम् (फ़ा) = हम पाबन्द हैं
पाय पोश (फा) = पैर का ढक्कन, जूता
पा पोशी (फ़ा) = जूता पहनना
पायेदार (फा) = दृढ़
पायेगाह (फा) = पद
पायेमाल-पामाल (फा) = कुचला हुआ (पैर से)
पायन्दा (फा) = स्थायी
पाया (फा) = पद, पदवी
पाए (फा) = एक पैर
पाईदन् (फा) = खड़े होना, रुकना, हिचकना
पुख़्तन् (फा) = उबालना, विचारों में लगे रहना
पुख़्ता (फा) = उबला हुआ
पिदर (फा) = बाप (स०—पितृ)
पिदरम्व (फा) = पिता
पदीद (फा) = स्पष्ट, प्रकट
पदीद आमदन् (फा) = प्रकट—व्यक्त होना
पज़ीर (फा) = (तू) स्वीकार कर
पज़ीरुफ़्तन् (फा) = स्वीकार करना
पर (फा) = पर
पुर (फा) = भरा हुआ
परागन्दा (फा) = अव्यवस्थित
परागन्दा दिल / परागन्दा ख़ातिर (फा) = अव्यवस्थित चित्तवाला
परागन्दा रोज़ी (फा) = अव्यवस्थित जीविकावाला
परतव (फा) = किरण
परतवे (फा) = एक किरण

(ب—प)

पुर हज़र (फा अ) = सावधान
पुरख़ाश (फा) = लड़ाई
पुर ख़तर (फा अ) = ख़तरे से भरा हुआ
पर दाख़्त (फा) = व्यापार, सम्बन्ध, व्यस्तता
पर दाख़्तन् (फा) = सबन्ध, विनियोग, व्यापार करना, व्यस्त होना
पर दाख़्ता (फा) = व्यस्तता पूर्ण
पुरदर्द (फ़ा) = दद भरा
परदा (फा) = परदा
परदाए अल् हन् (फा अ) = सगीत का ग्राम
परदाए बीनी (फा) = नकुओ के बीच का परदा
परदाए उश्शाक़ (फा अ) = विशिष्ट गान पद्धति
परदाए हफ्तरग (फा) = सतरगा पर्दा
परदा दार (फा) = द्वारपाल
परस्तार (फा) = पूजक
परस्तन्दा (फा) = पूजक
पुरसिश् (फा) = पूछताछ (स०—पृच्छा)
पुरसीदन् (फा) = पूछना, मागना
परनियान (फा) = फूलदार रेशम
परवा (फा) = चिन्ता
परवारी (फा) = मोटा (स०—पीवर)
गावे परवारी (फा) = मोटा सांड-बैल (स०—गव-गो)
परवाना (फा) = परवाना, शलभ
परवर्दगार (फा) = पालनकर्त्ता
परवर्दन् (फा) = पालन करना (स०—परिवधन)
परवरदा (फा) = पोषित, दत्तकपुत्र (स०—परिवर्द्धित)
परवरिश् (फा) = पोसना (स०—परिवृत्ता)
परवरिन्दा (फा) = पोषक
परवरीदन् (फ़ा) = पालन (स०—परिवर्धन)
परवीन (फा) = एक तारे का नाम
पर्राह-पारा (फा) = पाश्व, सीमा (स०—पाश्व)
पर्रा ए बीनी (फा) = नकुआ
पर हेख़्तन् (फा) = रक्षण, परहेज़ करना (स०—पथ्य सेवन)
परहेज़ (फा) = सयम, पथ्य सेवन
परहेज़गार (फा) = सयमी, परहेज़ रखनेवाला
परहेज़गारी (फा) = सयम
परी (फा) = परोवाली काल्पनिक स्त्रीमूर्त्ति
पुरी (फा) = तू पूर्ण है
परी पैकर (फा) = परी के मुखवाली, सुन्दर-सुन्दरी
परीदन् (फा) = उड़ना, पर फड़फड़ाना
परी रुख़सार (फा) = परी जैसे गालोवाली
परी रू (फा) = परी जैसे मुखवाली
परेशान (फा) = दुख, बिखरा हुआ
परेशान हाल (फा) = परेशान हालवाला

(پ—प)

परेशान हाली (फा) = परेशान की स्थिति
परेशान रोज़गार (फा) = स्थिति से दुखी
परेशानी (फ़ा) = दुख
पश़्मुर्दन् (फा) = मूर्च्छित होना, कुम्हलाना
पस (फा) = पीछे, फिर, तब, अत, पिछवाड़ा
पस्त (फा) = नीचे
पसत (फा) = तेरे पीछे, तेरे बाद
पिस्ता (फा) = मेवा पिस्ता
पिसर (फा) = पुत्र (स०—पुत्र)
पिसरे (फा) = एक पुत्र
पसन्द आमदन् (फा) = पसन्द आना—होना
पसन्दन्-पसन्दीदन् (फा) = पसन्द करना
पसन्दीदा (फा) = पसन्द आया हुआ
पसन्दीदातर (फा) = अधिक रुचिकर
पसीज-पसीच (फा) = यात्रा पर निकलना
पसीनियान् (फा) = अनुयायी जन
पुश्त (फा) = पीठ, समर्थन (स०—पृष्ठ)
पुश्ते पा (फा) = पैर का पिछला भाग
पुश्त दादन् (फा) = पीठ मोड़ना, भाग निकलना
पुश्ता (फा) = बोझा, बँधा हुआ पुश्ता
पुश्ती (फा) = सहायक, पृष्ठ बल
पश्म (फा) = ऊन
पिशा-पिश्शा (फा) = गुबरीला कीड़ा
पशीज़ (फा) = खेरीज, काकणी
पशेमान (फा) = पश्चात्तापपूर्ण
पशेमानी (फा) = पश्चात्ताप
पशेमानी ख़ुर्दन् (फा) = पश्चात्ताप करना
पलास (फा) = मोटा-खुरदरा कपड़ा, फकीरो का कपड़ा, बोरी का कपड़ा
पलास पोश (फा) = दरवेश, फकीरो की पोशाक पहननेवाला
पलास पोशी (फा) = फकीरी
पलग (फा) = चीता, तेंदुआ, मासभोजी पशु (स०—पल ग्राह)
पलग अफ़गन (फा) = चीता मारनेवाला
पलगी (फा) = चीता का स्वभाव
पलीद (फा) = गन्दा, मैला
पलीदतर (फा) = ज़्यादा गन्दा
पनाह (फा) = शरण
पनाहे (फा) = एक शरण
पम्बा (फा) = रुई
पम्बा दोज़ (फा) = रुई कातनेवाला-वाली
पज (फा) = पांच (स०—पच)
पजाह (फा) = पचास (स०—पञ्चाशत्)
पजुम (फा) = पाँचवाँ (पञ्चम)

(پ — प)

पंजा (फ़ा) = हाथ का पंजा
पंजा दर अफगन्दन् / पंजा करदन् } (फ़ा) = पंजा लड़ाना
पिन्दार (फ़ा) = सोच (पिन्दाश्तन् का आदेशवाचक)
पिन्दाश्तन् (फ़ा) = सोचना
पन्दे (फ़ा) = एक सुझाव, इशारा
पिनहाँ (फ़ा) = छुपा हुआ
पनीर (फ़ा) = दूध का किल्लाट
पनीरे (फ़ा) = एक पनीर
पोस्त (फ़ा) = छिलका
पोस्त बर पोस्त (फ़ा) = छिलके पर छिलका
पोस्तीन (फ़ा) = खाल
पोस्तीन दरीदन् / पोस्तीन उफ़तादन् / पोस्तीन रफ़तन् } (फ़ा) = दाग निकालना-बनाना
पोस्तीन दोज़ी (फ़ा) = खाल के कपड़े सीना
पोस्तीनी (फ़ा) = पोस्तीन से बनी हुई
पोशीदन् (फ़ा) = छिपाना
पुल्लाद (फ़ा) = फौलाद
पुल्लाद बाज़ू (फ़ा) = फौलाद के जैसे बाहुओंवाला
पुयान (फ़ा) = दौड़ता हुआ (स०—प्लवमान)
पूईदन् (फ़ा) = दौड़ना (स०—पलायन)
पहलू (फ़ा) = छोटी पसली के नीचेवाला पार्श्व
पा-पाय (फ़ा) = चरण, पगडंडी, साहस
दर पाये (फ़ा) = पीछे, की खोज में
अज़ पाये मा (फ़ा) = हमारे पीछे, हमारे बाद
पापा पा (फ़ा) = कर एक क़दम चलकर, सफलता पूर्वक
पियादा (फ़ा) = पैदल (स०—पदाति)
पियाज़ (फ़ा) = प्याज, कांदा
पयाम (फ़ा) = सन्देश
पेच (फ़ा) = बल, ऐंठन लगा हुआ
पेचानीदन् (फ़ा) = पेच लगाना, मुड़ जाना
पेच पेच (फ़ा) = पेच दर पेचवाला, बहावदार
पेचीदन् (फ़ा) = बल देना, ऐंठना
पैदा (फ़ा) = पैदा हुआ, उत्पन्न, स्पष्ट, व्यक्त, प्रकट
पीरे तरीक़त (फ़ा अ) = धर्मवृद्ध, पथदर्शक, गुरु
पीरे मुर्शिद (फ़ा अ) = आध्यात्मिक गुरु
पैरास्तन (फ़ा) = सजाना
पीरामन-पीरामून (फ़ा) = वातावरण, नम्र
पीराना (फ़ा) = वृद्धजनोचित
पीराना सर (फ़ा) = वृद्धावस्था
पैराहन (फ़ा) = कपड़े, परिधान (स०—परिधान)
पैराया (फ़ा) = शृंगार, आभूषण

(پ — प)

पीर ज़न (फ़ा) = वृद्धा स्त्री
पीर ज़ने (फ़ा) = एक बुढ़िया
पीर मर्द (फ़ा) = वृद्ध पुरुष
पीरोज़ (फ़ा) = विजेता, भाग्यशाली
पीरी (फ़ा) = वृद्धावस्था
पीरे (फ़ा) = एक वृद्ध
पेश (फ़ा) = सामने, उपस्थिति में
पयश् (फ़ा) = उसके पीछे पीछे, उसके चरण चिह्नों पर
पेश आर (फ़ा) = (पेश आवुर्दन् का आदेशवाचक) सामने ला
पेश अज़ाँ (फ़ा) = इसके पूर्व
पेश आमदन् (फ़ा) = सामने आना, घटित होना
पेशानी (फ़ा) = माथा
पेशत (फ़ा) = तेरे सामने
पेश्तर (फ़ा) = पूर्व, पहले, इसके पूर्व
पेश रफ़तन (फ़ा) = सामने जाना, सफलता प्राप्त करना
पेश रौ (फ़ा) = नेता
पेश गिरिफ़तन (फ़ा) = सामने पकड़ना, आलिंगन करना, बढ़ना
पेश गीर (फ़ा) = (पेश गिरिफ़तन् का आदेशवाचक) सामने आ
पेशा (फ़ा) = जीविका
पेशावर (फ़ा) = शिल्पी
पेशीन (फ़ा) = पूर्ववर्ती, (स०—पुरश्चीन)
पेशीनियान् (फ़ा) = पूर्ववर्तीजन
पैग़ाम (फ़ा) = सन्देश
पैग़म्बर (फ़ा) = सन्देशवाहक (दैवदूत)
पायक (फ़ा) = सन्देशहर, क़ासिद
पैगार-पैकार (फ़ा) = लड़ाई, युद्ध
पैगान-पैकान (फ़ा) = भाला
पील (फ़ा) = हाथी
पीले मस्त (फ़ा) = मस्त हाथी
पीलवान (फ़ा) = महावत
पीलतन (फ़ा) = विशालकाय
पीलावर (फ़ा) = फेरीवाला
पीला (फ़ा) = रेशम का पीला कीड़ा
पैमान-पैमाँ (फ़ा) = वचन, सन्धि
पैमाना (फ़ा) = नाप का बरतन (स०—मान, परिमाण)
पयम्बर (फ़ा) = सन्देशवाहक, दैवदूत
पयम्बर ज़ादगी (फ़ा) = दैवदूत के घर पैदा होना
पयस्तन् (फ़ा) = प्रवेश, जोड़ना (स०—प्रवेशन)
पैवस्ता (फ़ा) = प्रविष्ट (स०—प्रविष्ट)
पैवन्द (फ़ा) = जोड़, रिश्तेदार, नाता

(ت — त)

ت – त

अत (फा) = तुझे, तेरा
ता (फा) = जब तक, (स०—यावत्-तावत्)
ता (फा) = रा (स०—तरिल् तर्)
ताब (फा) = गर्मी (स०—ताप)
ताबाँ (फा) = चमकीला
ताबिस्तान (फा) = ग्रीष्म
ताबदार (फा) = चमकीला
तातार (फा) = तातार जाति का मनुष्य
ताज (अ) = मुकुट, राजमुकुट
ताजदार (अ फा) = मुकुटधर, राजा
ताजिर (अ) = व्यापारी
ताजिरे (अ फा) = एक व्यापारी
ता चन्द (फा) = कितनी दूर, कब तक
ताख़्तन् (फा) = हमला करना, दौड़ पड़ना
ताख़ीर (अ) = विलम्ब, स्थगन
तादीब (अ) = अनुशासन
ताराज (फा) = लूट, विनाश, ध्वस
तारक (फा) = शीप
तारीख़ (अ) = [illegible]
तारीक (फा) = काला, अँधेरा
तारीक दिल (फा) = कलुषित हृदयवाला
तारीकी (फा) = अन्धकार
ताज़न्दा (फा) = दौड़ता हुआ
ताज़ा (फा) = सद्यस्क, ताज़ा
ताज़ा बहार (फा) = सद्यो वसन्त, नूतन वसन्त
ताज़ा रू (फा) = विकचमुख, प्रफुल्लवदन
ताज़ी (फा) = अरब, अरबी घोड़ा, अरबी भाषा
ताज़ियाना (फा) = कोड़े लगाना
ताज़ीदन् (फा) = दौड़ना
तअस्सुफ (अ) = शोक, कष्ट
तअस्सुफ ख़ुर्दन् (अ फा) = शोक मनाना
तअस्सुफन् (अ) = शोक के कारण
ताफ़्तन् (फा) = चमकना, कातना, मुह मोड़ना, चूल्हा सुलगाना
ताक (फा) = अंगूर
ता कुजा (फा) = कहाँ तक, किस सीमा तक
ताकी (फा) = अंगूर सम्बन्धी, अंगूरी
ता कै ? (फा) = कब तक
तअलीफ (अ) = रचना, विन्यास
तअम्मुल (अ) = सोच विचार
तावान (फा) = दण्ड, जुर्माना
तावील (अ) = विवरण, कानून
ताईद (अ) = सहायता
तबार (फा) = परिवार, कबीला (पजाबी—टब्बर)
तबाह (फा) = बरबाद
तबाही (फा) = बरबादी
तब्दील (अ) = परिवर्त्तन
तबर्रुक (अ) = आशीर्वाद, प्रसाद, प्रभूति
तबस्सुम (अ) = मुस्कुराहट
तबह (फा) = बरबाद
तबह गश्तन् (फा) = बरबाद होना
तातारी (फा) = तातार सम्बन्धी
कुलहे तातारी (फा) = तातारी टोपी
तातारे (फा) = एक तातार
ततिम्मा (अ) = पूर्णता को प्राप्त होना, पूर्ण होना
तिजारत (अ) = व्यापार
तजासुर (अ) = दृढता
तज्रिबा-तज्रिबत (अ) = अनुभव
तज्रीब (अ) = प्रयोग, सिद्ध करना
तजस्सुस (अ) = जासूसी
तजल्ली (अ) = दीप्ति
तजल्ली फर्दन् (अ फा) = प्रकाश डालना, प्रत्यक्ष करना
तजस्सुब (अ) = टालना
तजम्मुब फर्दन् (अ फा) = विरक्ति प्रकट करना
तह्ज़ीर (अ) = सावधान करना
तह्रीर (अ) = लिखितम्, दस्तावेज़ करने का लेख, फर्मान [illegible]
तहरीमा (अ) = अल्लाहो अकबर का नारा
तहसिबू (अ) = तू गिनेगा
ला तहसिबूनी (अ) = मुझे मत समझ लेना
तहसीन (अ) = प्रशसा, वाह-वाह
तहसीन फर्दन् (अ फा) = प्रशसा करना
तहसील (अ) = उपलब्धि, इकट्ठी की गयी राशि
तुहफा (अ) = उपहार
तहक़ीक (अ) = विवेक, सत्य, ज्ञान, निश्चय
तहक्कुम (अ) = शासन, अधिकार
तहक्कुम बुर्दन् (अ फा) = अधिकारी की आज्ञा मानना
तहम्मुल (अ) = धारण करना, बोझ उठाना, सहन करना
तहम्मुल फर्दन् } (अ फा) = सहन करना, धीरज रखना
तहम्मुल आवुर्दन् }
तहीयत (अ) = अभिवादन, जय-जयकार करना
तहैयुर (अ) = आश्चर्य
तख़्त (फा) = राज्य सिंहासन
तख़्लीस (अ) = मुक्ति, छोड़ना
तुख़्म (फा) = बीज, नस्ल, जाति
तदारुक (अ) = सुधार, दण्ड

(ت — त)

तद्बीर (अ) = सलाह, व्यवस्था, निर्णय, योजना, चारा
तद्री तद्रि (अ) = तू जानता है-क्या
व मा तद्रि मातिनी (अ) = और नहीं जानता तू मेरा अन्तरंग
तद्रीज (अ) = निश्चित करना
ब तद्रीज (फा अ) = शनैः शनैः, क्रम क्रम से
तनवीर (अ) = चमकाना
तर (फा) = भीगा हुआ, विशेषण का प्रत्यय (स०—तरप्)
तुरा (फा) = तुझे, तेरा
तराज (फा) = तराजू
तरानी (अ) = (तू) मुझे देखता है
तुरबत (अ) = समाधि
तरबियत (अ) = शिक्षा-दीक्षा
तरतीब (अ) = व्यवस्था, विन्यास
तरतील (अ) = विशिष्ट उच्चारण के साथ कुरान पढ़ना
तरहहुम (अ) = दया
तरद्दुद (अ) = अनिर्णय, हिचक
तर्सा (फा) = नास्तिक
तर्सान (फा) = सशंकित (स०—त्रास से त्रस्त)
तरसमत (फा) = मैं तुझ से डरता हूँ
तरसीदन (फा) = डरना (स०—त्रसन)
तुश-तुरुश (फा) = खट्टा
तुरुश रू (फा) = खट्टे चेहरेवाला, कठोर मुख
तुरुश-शीरीं (फा) = खटमिट्ठा
तुरुश-तआम (फा अ) = खट्टी गंधवाला, खट्टे स्वादवाला
तुर्शी (फा) = खटास
तरक्क़ी (अ) = उन्नति
तर्क (अ) = त्याग
तर्के अदब (अ फा) = सभ्यता का परित्याग
तर्के जान (अ फा) = जीवन का त्याग
तर्क करदन् (अ फा) = छोड़ना
तुर्क (फा) = तुर्किस्तान का निवासी
तर्कीब (अ) = ढंग, तरकीब, छोड़ जाना
तुर्किस्तान (फा) = तुर्कों का देश
तुर्किया (फा) = तुर्क सम्बन्धी, ईरान से अगम्य ग्रामीण
तुरुन्ज (फा) = नीबू-नारंगी
बजाये तुरुन्ज (फा) = नारंगी की जगह
तरन्नुम (अ) = गाना, गुनगुनाना
तराने-नर्स (फा) = हरी तरकारी, पत्रशाक
तिर्याक़ (अ) = विष का अगद
तुरीदु (अ) = तू चाहता है
तज़ीद (अ) = (तू) बढ़ेगा
तज़ीद हुब्बन् (अ) = तू बढ़ेगा प्रेम में, तू अधिक प्रीतिपात्र होगा
तस्बीह (अ) = माला, सुब्हान अल्लाह का जाप
तस्बीह ख्वान (अ फा) = माला जपनेवाला
तुस्त (फा) = तू है
बर तुस्त (फा) = तुझ पर है
तस्कीन (अ) = सान्त्वना
तसल्ली (अ) = सान्त्वना
तस्लीम (अ) = समर्पण, स्वास्थ्य, सुरक्षा
तस्लीम करदन् (अ फा) = समर्पण करना
तशबीह (अ) = समानता, उपमा
तश्रिक (अ) = साझीदार बनाना
तशरीफ (अ) = सज्जन बनाना
तिश्नगी (फा) = प्यास (स०—तृष्णा)
तिश्ना (फा) = प्यासा (स०—समास यास में तृष्ण)
तश्वीर (अ) = लज्जा, पश्चात्ताप
तश्वीश (अ) = चिन्ता का दश, भय, अशान्ति
तसानीफ (अ) = (तसनीफ का बहुवचन) साहित्यिक कृति
तसदीक़ (अ) = प्रमाणीकरण
तसर्रुफ (अ) = नियन्त्रण, अधिकार
तसन्नुअ (अ) = कलाकृति, प्रदर्शन
तसनीफ (अ) = लेखन, सम्पादन
तसव्वुर (अ) = कल्पना
तसव्वुर कर्दन् (अ फा) = विचार करना, कल्पना करना
तसव्वुफ (अ) = सूफीमत
तज़र्रुअ (अ) = रोना-पीटना, परमात्मा के आगे रोकर क्षमा माँगना
तताबुल (अ) = अन्याय, अत्याचार
ततिर् (अ) = (वह) उड़ती है, उड़ी
फ़ लैत'नम्लु लम् ततिर (अ) = अतः काश चींटी न उड़ती
ततलउ (अ) = वह उठेगा, वह उगेगा
हत्ता ततलउ'श्शम्सु (अ) = यहाँ तक कि उगेगा सूर्य
ततव्वुअ (अ) = स्वेच्छा से अच्छा काम करना
ब ततव्वुअ (फा अ) = स्वेच्छा से, पवतापूर्वक
तआला (अ) = वह महान् भगवान्
तअब्बुद (अ) = पूजा, भक्ति
तअबुदु (अ) = (तू) = पूजा कर
अन ला तअबुदु'श्शैतान (अ) = कि तू नहीं पूजेगा शैतान को
तअबिया (अ) = प्रबन्ध जमाना
ताबिया शुदन् (अ फा) = जमाया जाना
ताबीर (अ) = स्वप्न का फलादेश बताना
तअज्जुब (अ) = आश्चर्य
ताजील (अ) = त्वरा, जल्दी
तउद्दु (अ) = तू गिनता है
या मन तउद्दु मसाविनी (अ) = अरे तू जो गिनता है मेरे दुर्गुणों को
तअद्दी (अ) = आक्रमण

(ت — त)

तअज़ीब (अ) = दण्ड देना
तअरुज (अ) = ा।ापर्ााप्त, ऐव निाालता, अर्ज़ी द ।।
ताज़ीयत (अ) = समवेदना
तअस्सुब (अ) = पक्षपात, हठ
तअतील (अ) = छुट्टी
तअल्लुक़ (अ) = सम्बन्ध
तअलीम (अ) = शिक्षा, निर्देश
तअनुत (अ) = झिडकी, व्यग
तअहहुद (अ) = लालन करना, रक्षण करना
तग़ाबुन (अ) = अत्यन्त शोक करना
तग़य्युर (अ) = परिवर्तन, क्षय
तफाख़ुर (अ) = डीग मारना
तफारीक़ (अ) = (तफरीक़ का बहुवचन) विरलें, अन्तर, व्यवधानें
व तफारीक़ (फा अ) = क्रमश, किश्तो मे
तफावुत (अ) = मतभेद
तफावुत कर्दन् (अ फा) = मतभेद रखना
तफतीश (अ) = जांच, खोज
तफह्हुस (अ) = जांच, खोज
तफर्रुज (अ) = चिन्तामुक्त होना, आनन्द से घूमना
तफर्रुजगाह (अ फा) = मौज मजे का स्थान
तफ़्रिका (अ) = फट
तफ़्रिका कर्दन् (अ फा) = भेद, बँटना, अलगाव करना
तफक्क़ुद (अ) = कडाई से खोजबीन, दया से दृष्टिपात
तफवीज़ (अ) = विश्वास में लेना
तक़ाज़ा (अ) = (मूल अरबी तक़ाज़ी का फारसी रूप) माँगना, तकाजा करना
तक़ाउद (अ) = पिछडापन, असमजस, प्रमाद, उल्लघन
तक़द्दुस (अ) = (वह) पवित्र किया गया, परम पवित्र
तक़दीर (अ) = नियति, समय निश्चित करना
तक़रुब (अ) = करीब होना
तक़र्रुब नमूदन् (अ फा) = पहुँच करना, निकट जाना
तक़रीर (अ) = भाषण, बयान
तक़सीर (अ) = कसूर, अपराध, दोष
तक़ूलु (अ) = (वह) कहती है
तक़्वा (अ) = पवित्रता
तक़वियत (अ) = समर्थन, आधार
तक़्वीम (अ) = सीधा करना, सीधा करने की कोशिश
तकासुल (अ) = प्रमाद, सुस्ती, गफलत
तकब्बुर (अ) = धृष्टता, गर्व
तकसिबु (अ) = (तू) प्राप्त करे
तकल्लुफ (अ) = उपचार, समारोह, आधिक्य, बाहरीपन
तकल्लमु (अ) = (तू) कह
तकिया (अ) = शिरोपस्थान, विश्वास, निर्भरता

(ت — त)

तकिया ज़दन् (अ फा) = झुकना, समर्पण
तग (फा) = दुलकी चाल
तलातुम (अ) = उछाल
तलातमा (अ) = पानी ने उछाल ली, उछाल
तलबीस (अ) = धोखा, छद्म
तल्ख़ (फा) = कडवा
तल्ख़ गुफ्तार (फा) = कटुभाषी, व्यगभाषी
तल्ख़ी (फा) = कटुता, (तू) कटु है
तल्ख़ी चशीदा (फा) = तल्खी चखा हुआ
तलत्तुफ (अ) = कृपा, शिष्टाचार
तलाफ (अ) = नष्ट होना, विलीन हो जाना, सडना
तलाफ शुदन् (अ फा) = नष्ट होना, विलुप्त होना
तलाफ करदा (अ फा) = नष्ट किया हुआ
तलफीक़ (अ) = साथ साथ लाना, सग्रह, एकत्रीकरण
तिलमीज़ (अ) = विद्वान्, विद्यार्थी, शिष्य
तलव्वुन (अ) = परिवर्त्तनीयता, विविधता
तुलिय (अ) = (यह) पढा गया है
बि मा तुलिय फ़ि'ल् क़ुरानि मिन् आयातिहि (अ) = जैसा कि पढा गया है कुरान की आयतो मे
तम्म (अ) = (वह) समाप्त है
तम्म'ल् किताबु (अ) = पुस्तक समाप्त की गई
तमाशा (फा) = (मूल अरबी तमाशी का फारसी रूप) दृश्य, दर्शनीय
तमाम (अ) = पूर्ण, पर्याप्ति, समाप्त
तमामतर (अ फा) = पूर्णतर, पर्याप्ततर, समाप्ततर
हर चि तमामतर (फा) = जो कुछ भी श्रेष्ठतम-पूर्णतम है
ब तमामी (फा अ) = कुल मिलाकर
तमत्तुअ (अ) = आनन्द, मौज मजा
तम्र (अ) = खजूर
अत्तम्रु यानिउन् व'न्नाज़ुरु ग़ैरु मानीइन् (अ) = खजूर पके है और रखवाला मना नही करता
तमुर्रु (अ) = (तू) जाता है, (तू) गुज़रता है
लि मा ला तमुर्रु करीमन् (अ) = तू कृपा करता हुआ क्यो नही गुजरता
तमकीन (अ) = शक्ति, अविकार
तमल्लुक़ (अ) = लालन-पालन, दुलार, खुशामद
तमन्ना (अ) = इच्छा, अभिलाषा
तमन्नुन (अ) = (उसने) कृपाओ या अहसान जताया
तमूज़ (अ) = जुलाई का सिरियाई नाम, घोर ताप
तमीज़ (फा) = विवेक
तमीलु (अ) = वह मुडता-झुकता है
तमीलु ग़ुसूनु'ल् बानि (अ) = मुडती है बान—सरकडे की शाखाएँ
तन (फा) = शरीर, देह, स्थूल तत्त्व, व्यक्ति
तन दादन् (फा) = शरीर का विनियोग करना

(ت — त)

तन आसानी (फ़ा) = देह सुख
तनावुल (अ) = भोज में भाग लेना, खाना-पीना
तम्बीह (अ) = चेतावनी, डाँट
तन परवर (फ़ा) = देह पूजक, शरीरधर्मा
तन परवरी (फ़ा) = देह पूजा
तनतहो (अ) = तू परित्याग करता है
तुन्द (फ़ा) = तीव्र, आक्रामक, घातक
तुन्दख़ू (फ़ा) = तीक्ष्ण स्वभाववाला, तीक्ष्ण स्वभाव
तुन्दख़ूई (फ़ा) = तीव्र स्वभावता, तीक्ष्ण प्रकृति
तन्दुरुस्त (फ़ा) = स्वस्थ
तुन्दी (फ़ा) = उग्रता, विशालता, त्वरितता
तनज़ील (अ) = अभिव्यक्ति, कुरानशरीफ़
तनग़ीर (अ) = (तू) प्रमाद करता है
तनशा (अ) = (वह) अंकुरित होता है
तनशा लीनतु हुव इक़्हा (अ) = ताड़ का पेड़ ऊँचा उठेगा जिससे कि वह सुख है
तनऊम (अ) = प्रसन्नता, उत्सव मनाना
तुनुक (फ़ा) = छिछला
तंग (फ़ा) = न्यून, सँकरा, विपत्तिग्रस्त, दुखी
तंग आब (फ़ा) = छिछली धारा, छिछला
तंग चश्म (फ़ा) = अदूर दृष्टिवाला, लोभी, अतृप्त
तंग दस्त (फ़ा) = निर्धन, कम पैसेवाला
तंग दस्ती (फ़ा) = निर्धनता
तंग दिल (फ़ा) = दुखी, उदास
तंग रोज़ी (फ़ा) = भोजन के लाले पड़ा हुआ, जीविका के अभाव से पीड़ित
तंगी (फ़ा) = परेशानी, दुःख
तनूर (फ़ा) = तन्दूर, चूल्हा
तगर्ग (फ़ा) = ओला
तगर्गई (फ़ा) = ओलापात
तने चन्द (फ़ा) = थोड़े से व्यक्ति
तो-तु (फ़ा) = तू (सं०—त्वम्)
तवाबी (अ) = (ताबीअ का बहुवचन) अनुगामी, आश्रित परिणाम
तवाज़ोअ-तवाज़अ (अ) = सत्कार, अपने आपको तुच्छ कर डालना
तौअम तवाम (अ) = जुड़वाँ
तवान (फ़ा) = सकता है, सम्भव है
तवाना (फ़ा) = शक्तिमान्, पुष्ट, योग्य (सं०—आप्त प्रत्यय के योग से)
तवानाई (फ़ा) = शक्ति, दृढ़ता, सामर्थ्यता
तवानद (फ़ा) = यह सम्भव है सकता है
तवानिस्तन् (फ़ा) = शक्तिशाली होना, प्रभुता पाना
तवांगर (फ़ा) = धनी, महान्
तवांगरा (फ़ा) = अरे धनी!
तवांग महिम्मत (फ़ा अ) = साहस का धनी

(ت — त)

तवांगरी (फ़ा) = धनिकता, सम्पन्नता
तवांगरे (फ़ा) = एक धनी—शक्तिशाली व्यक्ति
तवानम् (फ़ा) = मैं सकता हूँ
तवानम् आं (फ़ा) = मैं यह तो (कर) सकता हूँ
तौबत-तौबा (अ) = पश्चात्ताप
तौबीख़ (अ) = तानाकशी, तिरस्कार, उपहास
तवज्जोह (अ) = उन्मुख होना, कृपा करना
तौहीद (अ) = परमात्मतत्त्व की एकता का दर्शन
तौदीअ (अ) = विदा करना, विदा लेना, धन जमा करना
तौरेत (अ) = मूसा का धर्मशास्त्र
तवस्सुत (अ) = मध्य में होना
तोशा (फ़ा) = सामान, सफ़ाई
तौफ़ीक़ (अ) = परमात्मा की कृपा, कामनापूर्ति, सफलता
तवक़्क़ो (अ) = आशा, अपेक्षा
तवक्कुफ़ (अ) = विलम्ब, असमंजस, विराम
तवक्कुफ़ करदन् (अ फ़ा) = विलम्ब करना, प्रतीक्षा करना
तवक्कुल (अ) = परमात्मा में विश्वास
तौग़ील (अ) = दूर तक जाना, अधिकृत होना
तोई तुई (फ़ा) = तू है
तिह-तिही (फ़ा) = रिक्त
तहावुन (अ) = प्रमाद, लापरवाही
तहज़ीब (अ) = सभ्यता, संशोधन, व्यवस्थित करना
तोहमत (अ) = सन्देह, दुर्विचार
तहनिअत (अ) = बधाइयाँ, उल्लास व्यक्त करना
तहव्वुर (अ) = निडरता, आक्रमण
तिही दस्त (फ़ा) = रिक्तहस्त, दीन
तिही मग़्ज़ (फ़ा) = खाली दिमागवाला, मूर्ख
तीर (फ़ा) = बाण, शर
इल्मे तीर (अ फ़ा) = धनुर्विद्या
तीर अन्दाज़ (फ़ा) = धनुर्धर, बाणविद्याविद्
तीरा (फ़ा) = मलिन, धूमिल
तीरा बख़्त (फ़ा) = दुःखी, दुर्भाग्य
तीरा बख़्ती (फ़ा) = दुःखी, अभागा, तू दुःखी है
तीरा राय (फ़ा अ) = अनिश्चित रायवाला
तीरा रवाँ (फ़ा) = तरंगित धारा
तेज़ (फ़ा) = पैना, गर्म, कुशाग्र, भयंकर
तेज़ चश्मी (फ़ा) = दृढ़ आँखवाला, तेज नज़रवाला
तेज़ दन्दान् (फ़ा) = पैने दाँतवाला
तेज़ रौ (फ़ा) = तीव्रगतिवाला, चपल
तेशा (फ़ा) = कुल्हाड़ा, आरी
तेग़ (फ़ा) = तलवार
तीमार (फ़ा) = परिचर्या, घाव की मरहम पट्टी आदि करना
तीमार ख़ुदन (फ़ा) = सहायता करना, मरहम लगाना

ث — त्स

त्साबित (अ) = दृढ
त्साबित शुदन् (अ फा) = दृढ होना
त्साबित करदन् (अ फा) = स्थापित करना
त्सरवत (अ) = धनिकता, सम्पन्नता
त्सुरैया (अ) = सप्तर्षिमण्डल
त्सुगूर (अ) = (सग्र का बहुवचन) दर्रे
त्सुगूरु'ल् इस्लाम (अ) = सद्धर्म में प्रवेश के सुगम मार्ग
त्सुम्म (अ) = (अरबी उच्चारण थुम्म) तब, इसके उपरात
त्सम्रा-त्समर (अ) = फल, लाभ, परिणाम
त्समीन (अ) = बहुमूल्य
त्सना (अ) = प्रशसा, प्रशस्ति, स्तुति, अलकृत भाषा
त्सना'उहु (अ) = उसकी स्तुति
त्सवाब (अ) = पुरस्कार, पुण्य
त्सवाबे (अ) = एक पुण्य

ج — ज

जा (फा) = स्थान, जगह
जाए (फा) = एक जगह
हमा जा (फा) = सर्वत्र
जासूस (अ) = गुप्तचर
जासूसी (अ फा) = जासूसी
जालीनूस (अ) = ग्रीस के प्रसिद्ध चिकित्सक गैलेन का अरबी नाम
जामिअ (अ) = बडी मस्जिद जहाँ प्रति शुक्रवार व्याख्यान होते है
जाम (फा) = वस्त्र, पोशाक
जाम ए काबा (फा अ) = काबे का काले रग या चाँदी के तारो-वाली कढाई का वस्त्र जो हर साल बदला जाता है
जाम हा ए कुहन (फा) = पुराने कपडे
जान (फा) = प्राण, आत्मा
जानान् (फा) = (जान का बहुवचन) जाने
जानिब (अ) = की ओर से, दिशा में
जान ब हक़ तसलीम कर्दन् (फा) = परमात्मा को प्राण सौपना
जाने पिदर (फा) = बाप का प्राणप्रिय (पुत्र)
जाँ सिताँ (फा) = जान लेनेवाला
जान कन्दन् (फा) = प्राणो को खोदकर खीचना
जानवर (फा) = पशु
जानवरी (फा) = तू पशु है
जाने (फ़ा) = एक जान
जाविदानी (फा) = शाश्वत्ता
जावेद (फा) = अमर, चिरन्तन
जाह (फा) = उच्च पद, महानता
जाहदानि (अ) = वे दोनो (मा-बाप) झगडे

(ج — ज)

व इन् जाहदाक अला अन् तुश्रिक बी (अ) = और यदि झगडे तुझसे इस पर कि तू शिर्क करे मेरे साथ
जाहिल (अ) = मूर्ख, अज्ञानी, अज्ञ
व'ल् मरु जाहिलुन् (अ) = और मनुष्य अज्ञ है
व जाए जनान् (फा) = स्त्रीत्व की अवस्था में
जाए गाह (फा) = स्थान
जाये नफस (फा अ) = श्वास का स्थान
जिबाल (अ) = (जबल का बहुवचन) पहाडो
अक़ल्लु जिबालि (अ) = पहाडो में सबसे छोटा
जब्र (अ) = ठीक करना, टूटे दिल जोडना
जबरील-जब्राईल (अ) = प्रधान फरिश्ता, देवदूत विशेष
जबल (अ) = पर्वत
जिबिल्लत (अ) = प्रकृति, ससृति
जिबिल्ली (अ) = स्वाभाविक, प्राकृतिक
जबीन (अ) = कनपटी, माथा
जुद (अ) = (तू) दान कर
जिद्द (अ) = आन्तरिकता, गम्भीरता, परिश्रम
जिदाल (अ) = सघर्ष, युद्ध
जुदाई (फा) = वियोग
जज्ब (अ) = खीचना
जर्र (अ) = खीचना, घसीट (कस्र नामक स्वरचिह्न जो कि अक्षर के अन्त में लगता है)
अला जर्रि ब्दैदिन् (अ) = जैद के झुकने पर
आमिलु'ल् जर्रि (अ) = खीचनेवाला, आकृष्ट करनेवाला, पूर्वगामी पद
जर्राह (अ) = व्रणोपचारक, शल्य चिकित्सक
जराहत (अ) = घाव
जराइम (अ) = (जरीमत का बहुवचन) जुर्म, अपराध, पाप
जुर्म (अ) = अपराध, पाप
जरयान (अ) = बहता हुआ (स०—द्रवयान) (फारसी से अरबी मे गया)
जुज़ (फा) = सिवा
जज़ा (अ) = प्रतिशोध, दण्ड
जज़्म (अ) = काटना, निर्णय, निर्णीत
जज़ीरा (अ) = टापू, द्वीप
जस्स (अ) = (उसने) छुआ
मा ज'ल्लज़ी जस्स'ल् मसानी (अ) = कौन है वह जो वीणा के तार छेडता है
जसारत (अ) = दृढता, साहस, धृष्टता
जस्तन् (फ़ा) = लपकना, झपटना
जुस्तन् (फा) = तलाश, खोज, विजिगीषा, मृगया
जसद (अ) = मनुष्य या फरिश्तो की देह, केसरिया, कुरानवर्णित इसरायलियो की आदि भूमि

(ट — ज)

जिस्र (अ) = पुल
जिस्म (अ) = देह
जसीम (अ) = विशाल काय, स्थूल
जअबा (अ) = तरकश
जअफरी (अ) = शुद्ध स्वर्ण, कुन्दन
जअल (अ) = (इस से) निश्चित किया-गया, बनाये, प्रेरित करे
व जअल इल्ला कुल्ले खैरिन् मआल हुमा (अ) = और (प्रभु) उन दोनो का परिणाम अच्छाई की ओर लगाये
जफा (अ) = आता, अत्याचार, निर्दयता
जफाए (अ फा) = एक जफा
जुफ्त (फा) = जोड़ा, साझेदार
जुफ्त गिरिफ्तन् (फा) = जोड़ा बनाना, शादी करना
जिगरबंद (फा) = हृदय-फुफ्फुस-यकृत-प्लीहा का सामूहिक नाम, आन्तरिक आयव
जल्ल (अ) = वह शान मे चमका, दिव्य परमात्मा, शानदार
जल्ल व अला (अ) = दिव्य एव महान्
जुल्ल (अ) = घोड़े की जीन, मकान (हिन्दी—झूल)
जल्लाद (अ) = वधिक
जलाल (अ) = महानता, शान
जलालश् (अ फा) = उसकी महानता
जलाली (फा) = जलालुद्दीन मलिक शाह के नाम पर चलाया गया ईरानी सवत्
जुलसा (अ) = (जलीस का बहुवचन) साथी लोग
जुलनार (अ) = (गुल अनार का अरबीकरण) अनार के फूल
जलीस (अ) = साथी
जमाद (अ) = जड़, स्थावर, अवधिष्णु
जमात (अ) = सगठन
जमाते (अ फा) = एक सगठन
जमाल (अ) = सौन्दर्य, रूप
बि जमालिहि (अ) = उसके सौन्दर्य से
जमालु'ल् अनाम (अ) = मानवजाति का अलकार स्वरूप
जमशेद (फा) = पेश दादियान् वश का चौथा सम्राट्
जमा (अ) = एक-साथ, बहुवचन, सगठित
जमा आमदन् (अ फा) = इकट्ठा होना
जमा शुदन (अ फा) = सगृह करना
जमाए (अ फा) = एक समिति
जमीया (अ) = सघ
जुमल्गी (फा) = कुल मिलाकर
व जुमल्गी (फा) = कुल मिलाकर
जुमला (अ) = कुल, पूरा
फिल जुमला (अ) = कुल मिलाकर, सक्षेप में
जमीअ (अ) = कुल, समस्त
जमील (अ) = अच्छा, सुन्दर

(ट — ज)

जिन्न (अ) = प्रतिभाशाली
जुम्बानीदन् (फा) = हिलाना, सक्रिय करना (जुम्बीदन् का णिजन्त)
जुम्बीदन् (फा) = हिलना, उत्तेजित होना
जम्बैन (अ) = दोनो पक्ष-पहलू
जम्बैक (अ) = तेरे दोनो पहलू
जन्नत (अ) = उपवन, स्वर्ग
जिन्स (अ) = किस्म, प्रकार
जग (फा) = युद्ध
जग आवुर्दन् (फा) = युद्ध छेड़ना
जग आज़मूदा (फा) = युद्ध में अनुभवी
जग आवर (फा) = योद्धा
जग आवरी (फा) = आक्रामकता
जग जू (फा) = युद्धप्रिय, युद्धलिप्सु
जगी (फा) = युद्ध सम्बन्धी
जुनून (अ) = उन्मत्तता
जनी मुकना (फा) = (ग्राम्य प्रयोग, शुद्ध रूप—जवानी की कुनद) जवानो का सा आचरण करना
जिन्नी (अ फा) = जिन्न सम्बन्धी
जव (फा) = जौ (स०—यव)
जव जव (फा) = एक एक दाना करके
जू (फा) = नदी, जलधारा
जवाब (अ) = उत्तर
जवाबे (अ फा) = एक उत्तर
जवार (अ) = पड़ोस में रहना, पड़ोस
जवारि मन् ला युहिब्बु (अ) = पड़ोसी जो नही चाहता
जुवाल (फा) = बोरा, थैला
जुवालदोज़ (फा) = बोरा सीने का सूआ, बोरी सीनेवाला
जुवान (फा) = युवा (स०—युवान)
जुवान मर्द (फा) = वीर, उदार
जवानमर्दी (फा) = वीरता, उदारता
जवानी (फा) = यौवन
जवाने (फा) = एक जवान
जूद (अ) = उदारता
जौर (अ) = अन्याय, अत्याचार
जौरे शिकम (अ फा) = पेट का अत्याचार, भूख
जौरपेशा (अ फा) = आततायी, आततजीवी
जौज़ (अ) = अखरोट
जौज़ी (अ) = अखरोट बेचनेवाला
अबु'ल फराज बिन् जौज़ी (अ) = बगदाद का एक प्रसिद्ध प्रवाचक
जौसक (अ) = महल, उच्च प्रासाद
जोश (फा) = उत्साह, समुद्र का कोप
जोशानीदन् (फा) = उबालना (जोशीदन् का णिजन्त)
जौशन (अ) = कवच

(ج — ज)

जौशनखाय (अ फा) = कवच भेद करनेवाला (स०—क्षय, फा०—खाय)
जोशीदन् (फा) = उबलना, जोश मे आना
जौहर (अ) = रत्न, प्रकृति, मूल तत्व
जौहरफरोश (अ फा) = रत्न विक्रेता, जौहरी
जौहरियान् (अ फ़ा) = (जौहरी का बहुवचन)
जवे (फा) = एक जौ का दाना
जवे सीम (फा) = चादी का एक कण
जूए (फा) = धारा, नदी
जूयान (फा) = तलाश करनेवाला (स०—शानच् प्रत्यय स प्राप्त)
जवीन (फा) = जौ का, जौ सम्बन्धी (स०—यवीन)
नाने जवीन (फा) = जौ की रोटी
जुईदन् (फा) = तलाश करना
जहाज (अ) = नौका
जुह्हाल (अ) = (जाहिल का बहुवचन) जाहिलो
जहान (फा) = विश्व
जहा आफरीं (फ़ा) = विश्वस्रष्टा, ईश्वर
जहांपनाह (फ़ा) = विश्वाश्रय, राजा
जहांदारी (फ़ा) = साम्राज्य (स०—विश्वधर)
जहीदन् (फा) = झपटना, उछलना
जहानदीदा (फा) = दुनिया देखा हुआ
जहाने (फा) = एक दुनिया
जहानीदन् (फा) = झपटवाना, उछालना
जिहत (अ) = कारण, पद्धति, वेतन
जिहते (अ फा) = एक वेतन
जहद (अ) = परिश्रम, खटना
जह्ल (अ) = अज्ञान
जुहूद (फा) = यहूदी
जहूल (अ) = घोर अज्ञानी
जहीदन् (फा) = छलाग मारना
जैब (अ) = जेब, स्तन
जिता (अ) = (तू) आता है
इजा जितनी फी रुफ्क़तिन् (अ) = जब तू मेरे पास दूसरो के साथ आता है
जीरान (अ) = (जार का बहुवचन) पडोसी लोग
जीरानी (अ) = मेरे पडोसी
जैश (अ) = सेना
जीफत (अ) = अविहित—हराम गोश्त

چ — च

चाबुक (फा) = सक्रिय, सजग, विशेषज्ञ
चादर (फा) = चादर, सिर से पैर तक का कपडा
चार-चहार (फा) = चार (स०—चत्वार)

(چ — च)

चार पा-चहार पा (फा) = चार पैरोवाला पशु
चारपाया (फा) = खाट
चारपाये (फा) = एक पशु
चारा (फा) = उपचार, चिकित्सा, साधन, सहायता (स०—उपचार)
चालाक (फा) = जागरूक, सजग
चाह (फा) = कूप, खात, वातायनहीन कोष्ठ
चाहे ज़िन्दान् (फा) = जेल की कोठरी
चाहत (फा) = तेरा कुआँ, कुए में तुझे
चप (फा) = बाईं ओर, बायाँ हाथ (स०—सव्य)
चिरा (फ़ा) = क्यो, किस लिये
चिराग (फा) = दीपक
चिरागे (फा) = एक दीप
चरागाह (फा) = चरने का स्थान, गोचरभूमि
चख अन्दाज (फा) = धनुर्धर, चक्रधर
चुस्त (फा) = फुरतीला, चपल
चश्-चश्म (फा) = आँख
चश्मखाना (फा) = अक्षिगोलक
चश्मदर्द (फा) = आँख का दर्द
चश्मा (फा) = जलधारा
चश्माए हैवान (फा अ) = जीवन का स्रोत
चश्माए होर (फा) = प्रकाश का स्रोत
चशीदन् (फा) = चखना
चशीदा (फा) = चखा हुआ
चकीदन् (फा) = गिराना, डुबाना
चि गूनगी (फा) = हालत, विवरण, क्यो-किस लिये
चिगून-चिगूं (फा) = कैसे, किस प्रकार
चिल-चिहल्-चिहाल (फा) = चालीस (स०—चत्वारिंशत्)
चिलसाला (फा) = चालीस वर्षीय
चमचा (फा) = चमचा, चम्मच
चुनां / चुनांकि (फा) = इस तरह, ऐसा
चुनांकि दानी (फा) = जैसा कि (तू) जानता है
चन्द (फा) = कुछ
तने चन्द (फा) = कुछ लोग
रोजे चन्द (फा) = कुछ दिन
चन्दां (फा) = बहुत, इतने सारे
चन्दाकि (फा) = जब तक कि, यहाँ तक कि
चन्दाने (फा) = बहुत सारे
चन्दरोज (फा) = कुछ दिन
चन्दीं (फा) = कुछ, कोई
चग-चगाल (फा) = चगुल, पजा
चुनीं (फा) = इस प्रकार

(ह—ह)

हुरोत (अ) —([illegible] का बहुवचन) [illegible]
हरारत (अ) = गर्मी
हिरासत (अ) = कैद
हराम (अ) = धर्म विरुद्ध, निषिद्ध
हरामज़ादा (अ फा) = व्यभिचार से उत्पन्न, जारज
हरामी (अ) = अपराधी, चोर डाकू
हरस (अ) = (उसने) बचाया
हरसहु'ल्लाहु (अ) = प्रभु उस (स्त्री) को बचाये
हर्फ़ (अ) = अक्षर, शब्द
हर्फ़गीर (अ फा) = [illegible] पकड़नेवाला, समालोचक
हर्गें ([illegible]) [illegible]
हरकत (अ) = गति, चेष्टा, अनुचित कार्य
हरकते (अ फा) = एक हरकत
हरम (अ) = पवित्र [illegible] [illegible]
हिरमान (अ) = मनोरथ में असफल रहना, दुर्भाग्य
हुरमत (अ) = आदर, सम्मान
हुनर ([illegible]) = [illegible]
हुरूफ़ (अ) = ([illegible] का बहुवचन) अक्षर, शब्द
हरीर (अ) = रेशम, रेशमी वस्त्र
हरीम (अ) = [illegible], रनिवास
हरीफ़ (अ) = साथी, प्रतिद्वन्द्वी
हर्बो (अ) = [illegible]
हिर्स (अ) = [illegible]
हिसाब (अ) = गणित
हस्ब (अ) = हिसाब से—के अनुसार
हस्बुहू (अ) = उसके लिये काफ़ी, उसके हिसाब से
हस्बे [illegible] (अ फा) = [illegible] के अनुसार
बर हस्बे (अ फा) = के अनुसार
हसद (अ) = ईर्ष्या
हसद बुर्दन (अ फा) = ईर्ष्या करना
हसरत (अ) = क्षोभ, दुःख
हसरत ख़ुर्दन् (अ फा) = दुःख करना
हसरते (अ फा) = एक गम्भीर दुःख
हसुना (अ) = (वह) सुन्दर—अच्छा था
हसुनत जमीअ ख़िसालिहि (अ फा) = उसके गुण सब अच्छे हैं
हुस्न (अ) = सौन्दर्य
हसन (अ) = सुन्दर
हुस्ने तदबीर (अ फा) = व्यवस्था की [illegible]
हुस्ने ख़िताब (अ फा) = भाषण का सौन्दर्य
हुस्ने राय (अ फा) = उचित विचार
हुस्ने जब्र (अ फा) = अच्छी [illegible]
हुस्नु नबाति'ल् अर्ज़ (अ) = धरती के पौधों की सुन्दरता
हसनात (अ) = (हसनत का बहुवचन) अच्छे काम

(ह—ह)

हसने मैमन्दी (अ फा) = सुल्तान महमूद के मंत्री का नाम
हसनी (अ फा) = सुन्दरता
हसूद (अ) = ईर्ष्यालु
हशम (अ) = शान शौकत, अनुयायी-प्रजा-पिछलग्गू
हिसार (अ) = किला, दुर्ग, घेरा
हिसारे (अ फा) = एक किला
हस्बा (अ) = पत्थर-नाटे, रोड़े
हिस्सा (अ) = भाग
हुसूल (अ) = उपलब्धि
हसा (अ) = छोटे रोड़े, कंकड़
हज़रत (अ) = उपस्थिति, अभ्यन्तर भवन, श्रीमान महाराज
हुज़ूर (अ) = उपस्थिति, दरबार
हुताम (अ) = सूखी और कुरकुरी चीज, भंगुर-नश्वर पदार्थ
हज़्ज़ (अ) = प्रसन्नता, स्वाद-आनन्द
हज़्ज़े (अ फा) = एक मजा
हज़्ज़े नफ़्स (अ फा) = इन्द्रिय सुख
हफ़्सा (अ) = उमर की बहिन, जो मुहम्मद की पत्नी बनी
हिफ़्ज़ (अ) = सुरक्षा, देखभाल, स्मृति
हक़ (अ) = न्याय, सत्य, सत्व, परमात्मा
हक़्क़ इबादतिक (अ) = (हे प्रभु) तेरी वास्तविक पूजा
हक़्क़ मारिफ़तिक (अ) = (हे प्रभु) तेरा वास्तविक ज्ञान
दर हक़्क़े (फा अ) = के प्रसंग में
हक़्क़न् (अ) = वास्तव में, वस्तुतः
हक़ारत (अ) = घृणा
हक़्क़शिनास (अ फा) = सत्या, ईश्वरज्ञ, कृतज्ञ
हक़्क़शिनासी (अ फा) = न्यायप्रियता, कृतज्ञता
हुक़ूक़ (अ) = (हक़ का बहुवचन) अधिकार, स्वत्व
हक़ीर (अ) = नीच, घृणित
हक़ीक़त (अ) = सत्य, वास्तविकता
हक़ीक़ी (अ) = सत्य वास्तविक
हिकायत (अ) = कथा
हुक्म (अ) = आज्ञा, आदेश
हुक्म कर्दन् (अ फा) = हुक्म देना
हुक्म अन्दाज़ (अ फा) = (पर्याय-नादिरअन्दाज) चतुर, धनुर्धर
हिक्मत (अ) = दर्शनशास्त्र, विद्वत्ता, ज्ञान, विज्ञान
दरीं चि हिक्मत'स्त (फा) = इसमें क्या बुद्धिमत्ता निहित है
हुकूमत (अ) = न्यायाधिकरण, न्यायाधीश का निर्णय
हकीम (अ) = दार्शनिक, विद्वान्, साधु, चिकित्सक
हकीमे (अ फा) = एक हकीम
हलाल (अ) = न्याय सम्मत
हलावत (अ) = मिठास
हलब (अ) = नामक नगर
हल्बी (अ) = अलेप्पो नगर सम्बन्धी

(ह—ख)

खाना (फा) = घर
खाना परदाजी (फा) = घरेलू अर्थव्यवस्था
खानाखुदा (फा) = गृहपति, नौकरों का मुखिया
खान-मान (फा) = घर-परिवार
खावी (अ) = खाली
खावि'ल् बत्नि (अ) = खाली पेट
खाया (फा) = अण्डकोष
खाईदन् (फा) = काटना, खाना (स०—खादन)
खवासत } खुब्स } (अ) = (खवीस का भाव) दौरात्म्य, दुष्टता
खबर (अ) = सूचना, ज्ञान, समाचार, परम्परा
खिबरत (अ) = अनुभव, परीक्षा, प्रमाण
खवीस (अ) = भ्रष्ट, दुरात्मा, दुष्ट
खवीसत (अ) = (खवीस का स्त्रीलिंग) भ्रष्टा, दुष्टा
खवीसात (अ) = (खवीसत का बहुवचन) भ्रष्टाएँ
अल् खवीसातु लि'ल् खवीसीन (अ) = भ्रष्टाएँ, भ्रष्टों के लिए
खवीसीन (अ) = (खवीस का बहुवचन) दुष्ट जन
खत्म (अ) = समाप्त, मुद्रित
खत्मे कुरान (अ फा) = आसमाप्ति कुरान पाठ
खत्मे (अ फा) = एक आसमाप्ति कुरान पाठ
खुतनी (फा) = खुतन सम्बन्धी, चीनी तुर्किस्तान सम्बन्धी
खजालत (अ) = शर्म, गडबड
खुजस्ता (फा) = प्रसन्न
खजिल (अ) = लज्जित
खजिल कर्दन् (अ फ़ा) = शर्मिन्दा करना
खजलत (अ) = लज्जा
खुदा (फा) = परमात्मा (स०—स्वत)
खुदा परस्त (फा) = ईश्वर पूजक
खुद्दाम (अ) = (खादिम का बहुवचन) सेवक जन
खुदावन्द (फा) = स्वामी
खुदावन्दे हक़ीकी (फा अ) = वास्तविक स्वामी
खुदावन्दज़ादा (फा) = स्वामिपुत्र, सामन्तपुत्र
खुदावन्दगार (फा) = विश्वस्रष्टा (फारसी—'गार' = स०—कार)
खुदावन्दी (फा) = परमात्म तत्व, तत्र-अत्र भवान्
खुदाई (फ़ा) = ईश्वर की ईश्वरता
खुदाया (फा) = हे प्रभु!
खुदारा (फा) = ईश्वर के लिये
खादिम (अ) = सेवक
खदम (अ) = (खादिम का बहुवचन) सेवक जन
खिदमत (अ) = सेवा
खिदमतगार (अ फा) = सेवक
खिदमते (अ फा) = एक सेवा
खर (फा) = एक गधा (स०—खर)

(ह—ख)

खरे दज्जाल (फा अ) = ईसा का गधा
खराब (अ) = नष्ट, बुरा
खराबात (अ) = (खराबत का बहुवचन) खडहर, शराबघर (मुस्लिम देशों में शराबघर खडहरो में रखे जाते थे)
खराबत (अ) = खण्डहर
खराबा (अ) = एक नाश, खण्डहर
खराबी (अ) = खण्डहर, बुराई
खिराज (अ) = कर, भाडा, राजस्व
खिराजी (अ फा) = राजस्व उगाहनेवाला
खुरासान (फ़ा) = हिरात नदी पर स्थित ईरान का सीमावर्ती प्रदेश
खुरासानी (फा) = खुरासान का
खराशीदन् (फा) = खुरचना, काटना, क्षुब्ध करना
खरामान (फा) = चलायमान (स०—क्रममाण)
खरामीदन् (फा) = चलना, इधर उधर घूमना (स०—चङ्क्रमण)
खरबूजा (फा) = खरबूजा, दशांगुल फल
खरबूजा ज़ार (फा) = खरबूजा बोने की जगह, पलेज
खर्ज (अ) } खर्च (फा) } = खर्च करना, व्यय करना
खर्च नमूदन् (फा) = खर्च करना
खुर्द (फा) = छोटा (स०—क्षुद्र)
खिरद (फा) = मति, बुद्धि, विवेकबुद्धि
खिरदमन्द (फा) = बुद्धिमान्
खुर्दा (फा) = खण्ड, शकल, टुकडा
खुर्दी (फ़ा) = छोटापन, बचपन, शैशव
खर'स्त (फा) = गधा है (स०—खरोऽस्ति)
खिरसक (फा) = (खिस = ऋक्ष, रीछ + सग = कुत्ता) कुत्ता भालू का खेल, (स०—श्वार्क्षिक)
खारतूम (अ) = सूंड, अग्रभाग
खरिफ (अ) = लाड करनेवाला बुड्ढा, सठियाया हुआ बुड्ढा
खिरक़ा (अ) = धर्मात्मा व्यक्ति की कन्था, गुदडी, वल्कल
खिरक़ापोश (अ फा) = फकीर, कन्थाधारी
खिरगाह (फा) = शाही तम्बू
खुर्रम (फा) = प्रसन्न
खुरमा (फा) = खजूर फल
खिरमन (फा) = कटी हुई फसल, बिना खलियाई फसल
खरमोहरा (फा) = कौडी, वराट, कपर्द (शब्दार्थ—गधो की माला)
खुर्रमी (फा) = प्रसन्नता
खर'न्द (फ़ा) = (वे) खरीदते है, (वे) गधे है
खरवार (फा) = गधे का बोझ (स०—खरभार)
खुरूज (अ) = निकलना, आगे बढना
अल् खुरूज क़ब्लु'ल् वुलूजि (अ) = घुसने से पहले निकलने का रास्ता देख लो
खुरोस (फा) = मुर्गा, बाँग देनेवाला

(८—ख)

खलास (अ) = मुक्ति, छुटकारा
खिलाफ (अ) = विरोध, उलट
खिलाफ कर्दन् (अ फा) = विरोध करना, खण्डन करना
खिलाफत (अ) = खलीफा का पद, खलीफा का राज्य
खुल्लान (अ) = (खलील का बहुवचन) दिली दोस्त
खलाइक (अ) = (खलीकत का बहुवचन) लोग, जातियाँ
खल्लद (अ) = चिरायु करे
खल्लद'ल्लाहु मुल्कहु (अ) = परमात्मा चिरायु करे उसका शासन
खिलअत (अ) = मान वस्त्र
खल्क (अ) = प्राणी, मानवजाति, सृष्टि
खुल्क़ (अ) = स्वभाव, प्रकृति
खल्क़ आजार (अ फा) = मनुष्यों को सतानेवाला
खुल्कान (अ) = (खल्क का बहुवचन) फटे पुराने कपडे
खल्क़े (अ फा) = एक व्यक्ति समूह
खलल (अ) = दोष
खलवत (अ) = एकान्त, एकान्त मिलन
खलवत नशीन (अ फा) = एकान्त निष्ठित
खलवत नशीनी (अ फा) = (तू) एकान्तवासी है
खलीफा (अ) = मुहम्मद साहब का उत्तराधिकारी
खम (फा) = बाँकापन, बल, टेढ़ापन
खुमार (अ) = नशे का प्रभाव, शराब पीने के बाद का सिर दर्द
खम्र (अ) = शराब या कोई भी अन्य मादक पेय
खम कमन्द (फा) = रस्सी का फन्दा
खमोश (फा) = मौन
खमीर (अ) = गुँधा हुआ आटा, खमीर
खमीर कर्दन् (अ फा) = आटा गूँधना
खन्दान (फा) = हँसाते हुए, मुस्कुराते हुए (स०—शानच् प्रत्यय)
खन्दक (अ) = गढा, खाई (फारसी 'कन्दह्' का अरबी रूप, स०—कन्दरा)
खन्दा (फा) = हास्य
खन्दीदन् (फा) = हँसना (स०—स्कन्दन)
खुनुक (फा) = ठण्डक, तरावट, प्रसादजनक ठण्डक
खू (फा) = आदत, स्वभाव (स०—स्वभाव)
खू ए बद (फा) = बुरी आदत
ख्वाब (फा) = सोना, स्वप्न (स०—स्वाप)
ख्वाबगाह (फा) = शयनागार
ख्वाजा (फा) = स्वामी, विशिष्ट व्यक्ति का सम्बोधन, गृह प्रबन्ध का अधिकारी (स०—स्वधा)
ख्वाजा ए आलम (फा अ) = विश्वपति, मुहम्मद साहब के लिये कहा जाता है
ख्वाजा ए ताश (फा) = जिनका मालिक समान है ऐसे भृत्य, सहभृत

(८—ख)

ख्वार (फा) = नीच, घृणित, धिक्कृत
मर्दुमख्वार (फा) = नरभक्षी
खुवारुन् (अ) = बछडे की तरह रँभाता हुआ
ख्वार दाश्तन् (फा) = घृणापूर्वक व्यवहार करना,
खुरदन् (फा) = खाना
ख्वारेज्म (फा) = वक्षु (औक्सस) नदी के किनारे कश्यप सागर तक फैला हुआ प्रदेश
ख्वारेज्म शाह (फा) = ख्वारेज्म का राजा
ख्वास्त (फा) = याचना, प्रार्थना
ख्वास्तन् (फा) = प्रार्थना करना
खवास (अ) = (खास खास्सत, का बहुवचन) विशिष्ट जन
खवासो आम (अ) = सामन्त और सामान्य जन
ख्वान (फा) = थाल, परात, थाली
ख्वान्दन् (फा) = पढना, सस्वर पाठ करना
ख्वान्दई (फा) = तू पढ़ता है
ख्वाह (फा) = इच्छा, भलेही, चाहे
ख्वाहर (फा) = बहिन (स०—स्वसृ)
ख्वाहन्दा (फा) = प्रार्थना करता हुआ, याचक
ख्वाही (फा) = तू चाहता है
खूब (फा) = अच्छा, सुन्दर
खूबरू (फा) = सुन्दर मुखवाली, सुन्दरी
खूबरूई (फा) = (तू) सुमुखी है
खूबसूरत (फा अ) = सुन्दर
खूबमन्ज़र (फा अ) = सुदर्शन दृश्य, सुदृश्य
खूबी (फा) = सुन्दरता
खुद (फा) = स्वय
खुदराय (फा अ) = स्वय की मनमर्जी से चलनेवाला
खुदी (फा) = आत्माभिमान
खुर्दन् (फा) = खाना
खुरदा (फा) = खाया हुआ
खुरदा ए अम्बान (फा) = पाथेय, झोले का भोजन
खुर्दी (फा) = बचपन
खुरिश् (फा) = भोजन, भोज्य पदार्थ
खुरशेद (फा) = सूर्य
खुर्रम (फा) = प्रसन्न
खुरन्दा (फा) = भोजन करनेवाला, खाता हुआ (स०—खादन्त)
खुश (फा) = प्रसन्न
खुशानीदन् (फा) = सुखाना
खुश आवाज़ (फ़ा) = सुस्वरवाला, सुकण्ठ
खुश आवाजे (फा) = एक सुस्वरवाला
खुशबू (फा) = सुगन्ध
खुशतर (फा) = प्रसन्नतर
खुशखू (फा) = सुशील, सुस्वभाववाला

(८—ख)

ख़ुश सुख़न (फा) = सुभाष, उत्तम वाणीवाला
ख़ुश तबअ (फा) = प्रसन्न रहनेवाला, प्रसन्न चित्तवाला
ख़ुश गुफ्त (फा) = अच्छा कहा है
ख़ुशनूद (फा) = प्रसन्न, सन्तोषी (स०—सुनुत्)
ख़ोशा (फा) = गुच्छा, स्तवक
ख़ुशी (फा) = प्रसन्नता
ख़ोशीदन् (फा) = मुरझाना, सूख जाना (स०—शोषितम्)
ख़ऊज (अ) = असत्य भाषण
ख़ूकर्दा (फा) = अभ्यस्त
ख़ून (फा) = रक्त (स०—शोण)
ख़ूख़्वार (फा) = ख़ून पीनेवाला, भयानक
ख़ूख़्वारगी (फा) = भयानकता
ख़वीद (फा) = हरितान्न, अकृतान्न सस्य
ख़ेश (फा) = अपना (स०—स्वस्य)
ख़ेशावन्द (फा) = अपने लोग, आत्मीयस्वजन
ख़ेशतन (फा) = केवल अपना आपा
बर ख़ेशतन (फा) = स्वेच्छापूर्वक
ख़ेशतनदार (फा) = आत्मनिग्रही
ख़ेशतनेद (फा) = तुम स्वयं हो
ख़ियार (अ) = ककड़ी, ख़रबूजा, चिभटी
ख़याल (अ) = विचार
ख़यालन् (अ) = स्वप्न मूर्त्ति
ख़याल अन्देश (अ फा) = काल्पनिक
ख़यालन् युराफ़िक़ु नी (अ) = स्वप्नमूर्त्ति जो प्रिया थी मेरी
ख़याल बस्तन् (अ फा) = कल्पना करना
ख़ियानत (अ) = धोखा, विश्वासघात
ख़ियानते (अ फा) = एक विश्वासघात
ख़ैर (अ) = कुशल, योगक्षेम
ख़ैर'स्त (अ फ़ा) = कुशल है
ख़ीरा (फा) = धृष्ट, दुष्ट
ख़ीराराय (फा) = कलुषित विचारवाला
ख़ीरारू (फ़ा) = कुदर्शन मुख
ख़ीरासर (फा) = ख़रदिमाग़
ख़ेज़ान (फा) = उठता, उठता हुआ (स०—शानच्)
उफ़तानो ख़ेज़ान (फा) = गिरते पड़ते, उठते बैठते, लुकते छिपते
ख़ेज़ीदन् (फा) = उगना, उठना
ख़ेज़श् (फ़ा) = उठ और उसे मार
ख़ेल (अ) = कबीला, घुड़सवारों का दल समूह
ख़ेलताश (फ़ा) = साथी योद्धा, गोती भाई, एक पहलवान
ख़ेलख़ाना (फा) = शाही गृहविभाग
ख़ेमा (अ) = तम्बू
ख़ेमा ज़दन् (अ फा) = तम्बू गाड़ना

९—द

दाद (फा) = (उसने) दिया (स०—ददौ)
तुवान दाद (फ़ा) = दे सकना, दानशक्ति
दादन् (फा) = देना (स०—दानम्)
दादे (फा) = न्याय, वह देता था, वह देता
दार (फा) = रख (आदेश में) (स०—धर)
दारू (फा) = दवा, चिकित्सा (स०—भैषज्य दारु)
दारू-ए-तल्ख़ (फा) = तीखी दवा, तिक्त औषध
दार ओ गीर (फा) = (शब्दार्थ—लेना और रखना) ठाठ बाट
दारू ए (फा) = एक दवा, कोई दवा
दारी (फा) = तू रखता है
दारैन (अ) = दोनों लोक (इहलोक-परलोक)
दाश्तन् (फ़ा) = रखना, थामना (स०—धारण)
दस्त दाश्तन् (फा) = हाथ से पकड़ना, पुनः प्राप्त करना
दाओ (अ) = निमन्त्रण देना, आह्वान करना, किसी वस्तु का दर्शा या प्रेरक
दाइया (अ) = कारण, सूत्र, दावा, बहाना करना, बुलाना
दाम (फा) = जाल (स०—दाम)
दाम (अ) = सदा रह
दाम मुल्कुहू (अ) = सदा रहे उसका राज्य
दाम सादुहु (अ) = सदा रहे उसकी प्रसन्नता
दामाद (फा) = जमाई (स०—जामाता)
दामन (फा) = पोशाक की लटकन, पहाड़ की तलहटी
दामने (फा) = एक दामन
दामी (फ़ा) = (तू) जाल है
दान-दाँ (फा) = (तू) जान ले, समझ ले (स०—जानीहि)
दाना (फा) = समझदार, जानकार (स०—ज्ञाता)
दानाई (फा) = ज्ञान, तू जाननेवाला है
दानाए (फा) = एक ज्ञानी
दानिस्तन् (फा) = ज्ञान
दानिस्ते (फा) = वह जान लेता, वह जानता था
दानिश् (फा) = ज्ञान
दानिशमन्द (फा) = ज्ञानी
दानिशमन्दे (फा) = एक ज्ञानी
दाँग (फा) = एक तोल, चौथाई ड्राम, दीनार का षष्ठांश
दाना (फा) = दाना, बीज, फँसाने का चारा
दानी (फा) = तू जानता है
दाऊद (अ) = इसराईल का गायक गडरिया जिसने गोलियथ को मारा जो बाद में राजा बना, डेविड
दाऊदी (फा अ) = दाऊद तुल्य, दाऊद जैसी गानविद्या
दावर (फा) = न्यायकर्त्ता, शासक, परमात्मा
दायरा (अ) = घेरा, कक्षा, परिधि

(ى — द)

दायम (अ) = स्थायी, निरन्तर, चिरन्तन
दाया (फा) = धाय, (सं०—धात्री)
दबीकी (अ) = सोने के महीन तार (मिस्र के दबीक नामक नगर का उत्पादन जहाँ सोने का बारीक काम होता था)
दज्जाल (अ) = ऐन्टीक्राइस्ट
दज्ला (अ) = दजला नदी
दुजा (अ) = अन्धकार
अद् दुजा (अ) = अन्धकार
दुख़्तर (फा) = पुत्री (सं०—दुहितृ, दुहिता)
दुख़्तर ख़्वास्तन् (फा) = विवाह के लिये कन्या माँगना
दुख़्तरक (फा) = छोटी लड़की (सं०—दुहितृका)
दख़्ल (अ) = प्रवेश, आगम, धनागम, आमदनी
दुख़ूल (अ) = प्रवेश, आगम, अन्दर आना
दद (फा) = वन्य पशु, आखेट पशु
दर (फा) = में, के अन्दर (सं०—अन्तर)
ब दरिया दर (फा) = समुद्र में
दर (फा) = दरवाज़ा (सं०—द्वार)
अज़ दर (फा) = दरवाज़े से
दर्र (अ) = दूध (सं०—दुग्ध)
दर (फा) = मोती
दर्रे यतीम (फा) = दुर्लभ मोती
दराज़ (फा) = लम्बा, फैला हुआ, विस्तीर्ण
दराज़ कर्दन् (फा) = फैलाना, ज़बान की लगाम छोड़ना
दराज़ी (फा) = लम्बाई
दरासत (अ) = अध्ययन, स्वाध्याय, निदिध्यास
दर आशुफ़्तन् (फा) = परेशान होना, विजड़ित होना
दर्रा (अ) = ऊनी कफ़नी
दर उफ़्तादन् (फा) = के ऊपर गिरना (सं०—अप पतन)
दर आमदन् (फा) = प्रवेश करना (सं०—आगमन)
दर आमोख़्तन् (फा) = सिखाना, पढ़ाना
दर अन्दाख़्तन् (फा) = फेंकना
दर आनीदन् (फा) = फाड़ना, चीरना
दर आवुर्दन् (फा) = लाना (सं०—वरण)
दर आवेख़्तन् (फा) = जोड़ देना, पकड़ना
दर आई (फा) = तू अन्दर आता है, अन्दर आ
दरायत (अ) = ज्ञान, नैपुण्य, सूक्ष्मता
दर बाख़्तन (फा) = खेलना, जुआ खेलना, दाँव हारना
दरबान (फा) = द्वारपाल
दर बर कर्दन् (फा) = (कपड़े) पहनना (सं०—धारण)
दर बर गिरिफ़्तन् (फा) = पहनना, धारण करना
दर बस्ता (फा) = द्वार बन्द किये हुए, अन्दर से दरवाज़ा बन्द किये हुए
दर बन्द (फा) = दास, गुलाम, बन्दी (सं०—अन्तरुद्ध)

(ى — द)

दर पस (फा) = पिछवाड़े, पीछे
दर पाय (फा) = पैर पीछे, पीछे पीछे, अनुगामी
दर पेश (फा) = उपस्थित, सामने
दर पैवस्तन् (फा) = जोड़ना, मिलाना (सं०—प्रवेशन)
दर्ज (अ) = समुच्चय करना, जोड़ना
दुर्ज (अ) = मजूषा
दर्जत-दरजा (अ) = उच्च श्रेणी, ऊपर की सीढ़ी, स्वर्ग की कोटि
दरजात (अ) = (दरजत का बहुवचन) उच्च श्रेणियाँ (प्रति पर्याय—दरकात)
दरजतिहि (अ) = उसकी कोटि, उसकी शान
दुर्जे (अ फा) = एक मजूषा
दर हाल (फा अ) = इस समय, वर्तमान में
दर हक़्क़ (फा अ) = के प्रसग में, पक्ष में
दरख़्त (फा) = पेड़, झाड़ी
दर ख़ुफ़िया (फा अ) = गुप्त रूप से, चुपचाप
दर ख़्वाब (फा) = स्वप्न में, निद्रा में
दर ख़्वाबी (फा) = तू सोया हुआ है
दर ख़ुर्द (फा) = योग्य, उपयुक्त
दर्द (फा) = पीड़ा
दर्दा (फा) = हाय दर्द! अफ़सोस!
दर दादन् (फा) = समर्पण करना, द्वार देना
दर्द मन्द (फा) = पीड़ित, सहानुभूतिपूर्ण
दर्द मन्देम् (फा) = हम पीड़ित होते हैं
दर रुबूदन् (फा) = फाड़ फेंकना, लूटना
दर रसानीदन् (फा) = अन्दर पहुँचाना
दर रंजीदन् (फा) = रंज करना
दर्स (अ) = अध्ययन, पाठ, व्याख्यान
दर साख़्तन् (फा) = सन्तुष्ट कराना, व्यवस्थित करना, बनाना
दर अस्त (फा) = भीतर है
दुरुस्त (फा) = स्वस्थ
दुरुस्त नाकर्दा (फा) = अपूर्ण, बिना सुधारे हुए
दर सितेज़ीदन् (फा) = हठपूर्वक कार्य करना
दुरुश्त (फा) = क्लिष्ट, कठोर (सं०—दुरूह)
दुरुश्त ख़ू (फा) = कठोर प्रकृतिवाला, दुष्ट
दुरुश्त रू (फा) = कठोर मुखवाला
दुरुश्ती (फा) = कठोरता
दर फ़ुतादन् (फा) = गिरना, आ पड़ना (सं०—आपतन)
दर क़फ़ा (फा अ) = पीछे, पीठ पीछे
दरकात (अ) = (प्रतिपर्याय-दरजात) पाताल की गहनता (दरक का बहुवचन)
दर कार'न्द (फा) = काम में लगे हैं, व्यस्त हैं
दर कुशादा (फा) = दरवाज़ा खुले हुए, विवृत द्वार
दर कशीदन् (फा) = खींचना, भेड़ना, भींचना, दबाना

(७ — द)

ज़ुबाँ दर कशीदन् (फा) = चुप रहना, जीभ को अन्दर खिंची रखना
दरगाह (फा) = राजसभा, मुख्य द्वार, महल, समाधि
दर गुज़ाश्तन् (फ़ा) = लांघ जाना, पीछे छोड़ना
दर गुज़रानीदन् (फा) = गुज़रने देना
दर गुज़श्तन (फा) = गुज़र जाना
दर गिरिफ्तन् (फा) = प्रभावित करना
दर गिरी बूदन् (फा) = गिरवी होना
दर गुसिस्तन् (फा) = टूटना, ग्रस्त होना
दर गुसिलानीदन् (फा) = छीनना, तोड़ना, ऐंठकर तोड़ना
दरम् (फा) = (दरे मन् का संक्षिप्त रूप) मेरा द्वार
दिरम-दिरह्म (फा) = चवन्नी के मोल का चांदी का सिक्का, धन
दर मान्दगी (फा) = परेशानहाली, कष्टमयता, अभाव
दर मादन (फ़ा) = दुःख में पड़ना
दर मांदा (फा) = दुखी, परेशान, दुर्भाग्यग्रस्त
दिरम दार (फा) = धनी, पैसेवाला
दिरम * (फा) = एक दिरम
दिरमे चन्द (फ़ा) = थोड़े से दिरम, स्वल्प धन
दरमियान् (फा) = बीच में
दरमियानेशान (फा) = (दरमियाने + ऐशान) उनके बीच में
दरमियाँ निहादन् (फा) = बीच में रखना (स०—निधान)
दरिन्दा (फा) = दांतों से फाड़नेवाला पशु
दिरग (फा) = देर, विलम्ब, असमंजस (स०—चिरम्)
दिरगी (फा) = विलम्ब, हिचक
दर नवर्दन (फा) = पर्यटन
दर नवर्दीदन् (फा) = मोड़ना, लपेटना, समाप्त करना
दरू (फा) = उसके अन्दर
दरवाज़ा (फ़ा) = द्वार
दरोग़ (फा) = झूठ, असत्य
दरोग़ज़न (फा) = असत्यभाषी, झूठा
दरोग़े (फा) = एक झूठ
दरोग़े कि (फा) = वह झूठ जो कि
दरूँ (फा) = उसके अन्दर
दिरवीदन् (फा) = काटना, लावनी करना (स०—वियन)
दरवेश (फा) = धर्मात्मा, साधु, याचक, भिक्षुक
दरवेश सीरत / दरवेश सिफत } (फा अ) = दरवेश के गुणों से समन्वित
दरवेशी (फ़ा) = भिक्षावृत्ति, साधुवृत्ति, निर्धनता
दरवेशे (फा) = एक साधु
दरहा (फा) = (दर का बहुवचन) द्वार, कपाट, आने जाने के रास्ते
दरहाए आसमान (फा) = आकाश के द्वार
दरहम (फा) = परस्पर, व्यत्यस्त, छिन्नभिन्न, क्षुब्ध

---

* दिरम का अरबी रूप दिरहम हो गया है

(७ — द)

दरहम उफतादा (फा) = अराजकता में पड़ा हुआ
दरहम कशीदा (फा) = निकट आना, सिकुड़ना
दरे (फा) = एक द्वार
दरिया (फा) = नदी, समुद्र
दरियाये मग़रिब (फा अ) = पश्चिम सागर, अरब भूमध्यसागर को पश्चिमी सागर कहते हैं
दरिया ए हफ्तगाँ (फा) = सात समुद्र
ब दरिया दर (फा) = समुद्र के बीच में, मँझधार में
दर याब (फा) = समझ ले, अक्ल से काम ले
दर याफ्तन् (फा) = जानना, पूछताछ करना
दरीचा (फा) = छोटा द्वार, खिड़की
दरीदन् (फा) = फाड़ना (स०—दीर्ण, दारण)
दरेग़ (फ़ा) = अफसोस
दरेग़ खुर्दन् (फ़ा) = अफसोस करना
दरेग़ दाश्तन् (फा) = इन्कार करना, रोकना, कुर्बान करना
दरेग़ा (फा) = हाय अफसोस
दरीं (फा) = इसमें
दर्यूज़ा (फा) = भिक्षार्जी, भिक्षुक
दुज़्द (फा) = चोर डाकू
दुज़्दी (फ़ा) = डकैती, चोरी
दुज़्दे (फा) = एक चोर
दुज़्दीदन् (फा) = मारना, लूटना
दस्त (फा) = हाथ (स०—हस्त)
ब दस्त आवुर्दन् (फा) = प्राप्त करना
दस्तार (फा) = पगड़ी, दुपट्टा
दस्त ब दस्त (फ़ा) = हाथों हाथ
दस्त बर दस्त ज़दन् (फ़ा) = हाथ पर हाथ मारना, शोक की चेष्टा
दस्त बर दाश्तन (फा) = हाथ दूर रखना, छोड़ना, अकेला छोड़ना
दस्त बर दिल ज़ून् (फा) = दिल पर हाथ रखना, उन्मुख होना
दस्त बर निशादन् (फा) = हाथ पर हाथ मलना (दुःख से)
दस्ते तग (फा) = अभाव
दस्त तगी (फा) = अभाव, निधनता
दस्त दादन् (फा) = हाथ देना, सहायता करना
दस्त रस (फा) = हाथ में आना, पकड़ में आयी चीज, प्राप्त, सुलभ
दस्तगाह (फा) = सहायता, शक्ति, साधन, [illegible]
दस्तगीरी (फा) = हाथ पकड़ना, सहायता देना (स०—ग्रह)
दस्तगीरी कदन् (फा) = सौंपना, अधिकार में देना
दस्तो पा (फा) = हाथ-पैर
दस्तो पा बुरीदा (फा) = हाथ पैर काटा हुआ
दस्तूर (फा) = प्रथा, प्रधान, प्रधानमंत्री
दस्ता (फा) = मुट्ठीभर, फौज का एक दस्ता, हैंडिल
दस्त याफ्तन् (फा) = हाथ (ऊपर) प्राप्त करना, जीतना
दश्त (फा) = रेगिस्तान, निर्जल-निर्जन प्रदेश

(७ -द)

दुश्मन (फा) = शत्रु (स०—द्विगन्-द्विषन्त)
दुश्मनकाम (फा) = (शब्दार्थ—शत्रु की कामना) मृत्यु
दुश्मनी (फा) = शत्रुता
दुश्नाम (फा) = गाली
दुश्नामे (फा) = एक गाली
दुश्वार (फा) = कठिन (स०—दुर्वार, दुष्कर)
दुआ (अ) = प्रार्थना, आशीष्
दुआ ए खैर (अ फा) = कुशल की प्रार्थना
दुआ ए (अ फा) = एक प्रार्थना
दअवत (अ) = प्रार्थना, निमन्त्रण, दावा, दावत, भोज
दअऊ (अ) = वे प्रार्थना करते हैं (उच्चारण—दओ)
दावा (अ) = दावा, माग, दलील
दगा (फा) = धोखा
दगाई (फा) = धोखेबाज, कपटी
दगल (अ) = भ्रष्ट, नीच, धोखेबाज
दफ (फा) = ढोल (अरबी दफ्फ का फारसी रूप, हिन्दी—टप, ध्वनिमूलक—धप्-धप्)
दफ्तर (अ) = पुस्तक, लेखा जोखा पुस्तक, कार्यालय
दफअ (अ) = दूर करना
दफअ अदाख्तन् (अ फा) = वहाने से दूर करना, स्थगित करना
दफ्न (अ) = छुपाना, गाडना
दफ्न कर्दन् (अ फा) = जमीन के अन्दर गाडना-छुपाना
दफ्क (अ) = पाप
दकीका (अ) = क्षण, सूक्ष्मविचार
दुकान (फा) = वाजार, आपण स्थान, दूकान
दिगर (फा) = दूसरा, पुन (स०—इतर)
दिगर बार (फा) = दूसरी बार, पुन
दिगर बारा (फा) = पुन, दूसरी बार
दिगर राह (फा) = दूसरा मार्ग, दूसरी बार
दिगर (फा) = एक दूसरा
दिल (फा) = हृदय
दिलाराम (फा) = हृद्य, चित्तप्रसादकर
दिल अज दस्त रफ्ता (फा) = हाथ से दिल निकला हुआ, प्रेमासक्त
दिल आजुर्दा (फा) = पीडित हृदय, क्षुब्ध, दुखित
दिल आशुफ्ता (फा) = उन्मत्त हृदय, पागल
दिल अफरोज (फा) = दिल को बढानेवाला
दलालत (अ) = चिह्न, प्रमाण, गवाही
दर दिल आमदन् (फा) = दिल मे आना, चित्त को भरना
दिल आवर (फा) = दृढचित्त, वीर
दिलावरी (फा) = वीरता
दिल आवेख्ता (फा) = प्रेम किया गया
दिल आवेज (फा) = हृदयहारी, आकर्षक
दिल वर (फा) = हृदयाकर्षक, चित्ताकर्षक

(७—द)

दिलवरे (फा) = एक चितचोर, कोई चितचोर
दिलवरी (फा) = चित्ताकर्षकता
दिल वस्तगी (फा) = हृदय जुडाना
दिलवस्ता (फा) = हृदय से जुडा हुआ
दिलवन्द (फा) = चित्तरोचक, आकर्षक
दिलतग (फा) = निराश
दिलतगी (फा) = नैराश्य
दिलखुश (फा) = प्रसन्न
दिलदार (फा) = सहृदय, उदार
दिल जि जान वर दाश्तन् (फा) = जीवन की आशा छोडना
दिल सिता (फा) = हृदय लेनेवाला, आकर्षक
दिलफिरोज (फा) = सजीव, प्रसन्न, आनन्दमय
दिलफरेव (फा) = चितचोर, चित्तविभ्रामक
दलक (अ) = न्यायाधीशो, विद्वानो और उपदेशको की पेवन्दी लगी जीर्ण पोशाक (स०—वल्कल)
दिलकश (फा) = चित्ताकर्षक (स०—कर्षक = फा—कश)
दिलकुशा (फा) = दिल को खोलनेवाला
दिलमुर्दा (फा) = जिसका दिल मुर्दा हो चुका हो, कठोर हृदय, हृदयहीन
दिल निहादन् (फा) = दिल रखना, चाहना (स०—निधान)
दिले (फा) = एक दिल
दिलेर (फा) = वीर, साहसी
दिलेरी (फा) = वीरता, साहस
दलील (अ) = प्रमाण, वाद, युक्ति, उदाहरण
दम (फा) = श्वास, वाणी, क्षण
दुम (फा) = पूछ
दम वर आवुर्दन् (फा) = (शब्दार्थ—साँस ऊपर लेना) साँस लेना
दम जदन् (फा) = शब्दो को फुसफुसाकर वोलना
दिमार-दमार (फा) = नष्ट करना
दिमाग (अ) = मस्तिष्क
दमा (फा) = (शब्दार्थ—दमवाले) = चपल, शक्तिशाली
दम व दम (फा) = हरक्षण, प्रतिक्षण, हर समय
दम वर कशीदन् (फा) = (शब्दार्थ—साँस ऊपर खीचना) चुप होना
दम्मिर (अ) = पूर्णतया नष्ट करदे
व दम्मिर अला आदायिहि व शुनातिहि (अ) = और नाश कर उसके शत्रुओ का और अशुभ चिन्तको का
दिमिश्क-दमिश्क (अ) = सीरिया की राजधानी
दमी (फा) = तू फूँक मारे, फुलाये
दमे (फा) = एक क्षण
दमे चन्द (फा) = कुछ क्षण
दिमयात (अ) = मिस्र का एक नगर
दमयाती (अ) = दमयात का बना हुआ बढिया सूती कपडा
दमीदन् (फा) = फूलना, उगना, फलना-फूलना
दुम्वाल (फा) = दुम, पिछला हिस्सा

(७—द)

दन्दान् (फा) = दाँत
दन्दाने (फा) = एक दाँत
दुनिया (अ) = विश्व, पार्थिव उपकरण
हयाते दुनिया (अ फा) = पार्थिव जीवन, ऐहिक जीवन
अद् दुनिया व'द दीन (अ) = धरती और धर्म
दुनिया ए दून (अ फा) = अधोलोक (स०—अधोन =फा—दून)
दुनियादार (अ फा) = धरती और धरती के भोगों को ही सब कुछ माननेवाला
दुनियावी (अ) = दुनियादार
दू (फा) = दो, दोनों
दवा (अ) = औषध
दवा करदन् (अ फा) = चिकित्सा करना
दवाब (अ) = (दाब्बत का बहुवचन) मवेशी, सवारी के पशु
दवाम (अ) = सदा, निरन्तर, चिरन्तन
अल'द् दवाम (अ) = हमेशा तौर पर
दवान (फा) = दौड़ता हुआ (स०—धाव+शानच्)
दवानीदन् (फा) = भगाना, दौड़ाना (दवीदन् का णिजन्त)
दवा ए (अ फा) = एक दवा, कोई दवा
दू बार (फा) = दो बार
दू बारा (फा) = दुबारा
दूता (फा) = दोलड, दुतरफा
दौहत (अ) = विस्तीर्णशाख वृक्ष
दौहतुन् सज औ तैरिहा मौजून (अ) = महान् वृक्ष जिस पर चिड़ियाँ गीत मधुर गाती हैं
दोख़्तन (फा) = सीना, थेगली लगाना
दूद (फा) = धुआँ
दूदे दिल (फा) = दिल का धुआँ, उष्ण निःश्वास, आह
दूदमान (फा) = विशाल परिवार, कबीला
दौर (अ) = समभ्रान्ति, भ्रम, चक्कर, रासचक्र, दुनिया
दूर (फा) = दूर, विप्रकृष्ट (स०—दूर)
दूर उफ्तादा (फा) = दूर जाकर पड़ा हुआ
दौरान (अ) = समय चक्र
दोज़ख़ (अ) = नरक
दोज़ख़ी (फ़ा) = नारकीय
दोस्त (फा) = मित्र, प्रेमी
दोस्त दाश्तन् (फा) = प्यार करना, मैत्री करना
दोस्तदार (फ़ा) = मित्र के रूप में स्वीकृत
दोस्तरु (फा) = मित्र की शक्लवाला, मित्रमुख
दोस्ती (फ़ा) = मित्रता
दोस्ते (फा) = एक मित्र
ब दोस्त (फा) = दोस्त की कसम
दोश (फ़ा) = कन्धा (स०—दोस्), गतरात्रि (स०—दोषा)
दोशीज़ा (फा) = कुमारी कन्या

(७—द)

दोग़ (फा) = मट्ठा दही, छाछ (स०—दोह—दुग्ध या अर्धभग)
दूकान (फा) = दूकान, सन्दूक, आपणस्थान
दुगाना (फा) = दुहरा, ऐसी प्रार्थना जिसमें शरीर की दो मुद्राएँ बनानी पड़ती हैं। (स०—द्विगुणा)
दुगाना ए (फा) = एक द्विमुद्रा प्रार्थना
दौलत (अ) = राज्य, शासन, सम्पत्ति
दौलते (अ फ़ा) = एक दौलत
दुवुम् दोयम (फा) = दूसरा, द्वितीय
दून (अ) = (बहुवचन दूनाँ) नीच
दोन (अ) = इसके अलावा, बिना
दून'ल् अज़ाबि'ल् अकबर (अ) = महत्तर दण्ड के अतिरिक्त
दू नीम (फा) = दो अर्धांश, दो अर्द्ध, दो भागों में
दवीदन् (फा) = दौड़ना, भागना (स०—धावनम्)
दह (फा) = दस (स०—दश)
दिह (फा) = गाँव, (दादन का आदेशवाचक) दे, (उत्तरपद में) देनेवाला (संस्कृत के जलद, दुःखद, सुखद, धनद, पयोद के समान, फारसी में भी दिहन्त रूप बनते हैं—जैसे आरामदिह, तकलीफदिह आदि)
दहान (फा) = मुख
दहाने (फा) = एक मुख
दिह ख़ुदा (फा) = गाँव का मुखिया, ग्रामणी
दिहद (फा) = देता है, (स०—ददाति)
दहर (अ) = समय, युग, शाश्वत्ता
दहशत (अ) = भय
दिहक़ान (अ) = किसान, गाँव का पटेल (फ़ारसी के 'दिहगान' का अरबी रूप)
दिहकान पिसर (अ फा) = ग्रामीण पुत्र
दुहुल (फा) = ढोल (हिन्दी—ढोल)
देहलीज़ (फा) = प्रवेशद्वार, प्रवेशकोष्ठा
दिहमत (फ़ा) = मैं तुझे देता हूँ, मैं तुझे देता
दहाने (फा) = एक मुख
दियार (अ) = (दार का बहुवचन) घर, ज़िले, देश, प्रदेश
दियारबक्र (अ) = मैसोपोटामिया का प्राचीन नाम
दियानत (अ) = ईमानदारी, धार्मिकता
दीबा-दीबक़ (अ) = रेशम के विविधच्छाय वस्त्र
दीबाजा (अ) = दीबाचा (फा) = भूमिका
दीदार (फा) = दर्शन
दीदन् (फा) = देखना (स०—दर्शन)
दीदा (फा) = देखा हुआ, आँख की देखने की शक्ति
देर (फा) = विलम्ब, दीर्घसूत्री, प्राचीन
देर देर (फा) = चिरकाल पश्चात्, कभी कभी
देरीना (फा) = पुराना
देरीना रोज़ (फा) = वृद्ध, प्राचीन, पुरातन
देग (फा) = पात्र, पाकपात्र

(د — द)

दीगर (फा) = दूसरा
दीगरान् (फा) = (दीगर का बहुवचन) दूसरे
दीगर बार (फा) = दूसरी बार, पुन
दीगर दम (फ़ा) = दूसरे क्षण
दीगर रोज़ (फा) = दूसरे दिन
दीगर वक्त (फा अ) = दूसरे समय
दीगरे (फा) = एक अन्य, कोई अन्य
दीन (अ) = धर्म
दीनार (अ फा) = (दीन+आर—धर्म से प्रवर्तित) एक स्वर्ण मुद्रा
दीन व दुनिया फरोश (फा) = पार्थिव मूल्यों के लिये धर्म वेचनेवाला
देव (फा) = दुरात्मा, पापात्मा (स०—देव का कुत्सनार्थक)
दीवार (फा) = दीवार, भित्ति, प्राकार
दीवान (फा) = राजस्व विभाग, राजकर, काव्यसंग्रह
साहिबे दीवान (अ फा) = अर्थमन्त्री
दीवाना (फा) = पागल, उन्मत्त
दीवानी (फा) = राजस्व मन्त्री
देव सिफत (फा अ) = राक्षसी सम्पत्तियुक्त (अ—सिफत = स०—सम्पत्, यथा दैवी सम्पत्)
दीह (फा) = गाव

ذ — ज

ज़ा (अ) = यह, वह
ज़ल्लज़ी (अ) = वह जो कि
ज़ात (अ) = व्यक्ति, देह
ज़ुख़ (अ) = खज़ाना, संचित धन
ज़खीरा (अ) = संचित राशि
ज़र्रा (अ) = कण, अणु
ज़िक्र (अ) = उल्लेख, स्मरण, ईश्वर प्रार्थना
व ज़िक्रश् (फा अ) = उसकी (परमात्मा की) स्तुति मे
ज़ुल्ल (अ) = नीचता
ज़िल्लत (अ) = भ्रष्ट, नीचता
ज़िल्लते (अ फा) = एक अपमान
ज़ालिक (अ) = वह, यह
ज़ालिकुम (अ) = वे, ये
ज़लील (अ) = पतित, नीच
ज़म्म (अ) = अभियोग
ज़माइम (अ) = (ज़मीयत का बहुवचन) दुष्काम, अपराध
ज़नब (अ) = दुम, पूछ
ज़ू (अ) = विषयक (उपसर्ग के रूप में सज्ञा शब्द)
ज़ुल् क़ुरबा (अ) = रिश्तेदार विषयक, रिश्तेदार
ज़ुल् फकार (अ) = एक प्रसिद्ध तलवार जो बद्र की लडाई में मुहम्मद सा० को मिली—उसे अली को
ज़ुन् नून (अ) = सूफी अबू फज़्ल सूनान का नाम

(ذ — ज)

ज़ौक़ (अ) = रुचि, शौक, प्रसन्नता
ज़वी (अ) = (ज़ू का बहुवचन) विषयक
ज़वि'ल् क़ुर्बा (अ) = रिश्तेदार लोग
ज़िब (अ) = भेडिया (स०—वृक)
ज़ैल (अ) = धरती तक लटकनेवाला वस्त्र

ر — र

रा (फा) = का, को
राअत (अ) = (उस स्त्री ने) देखा
राहत (फा) = शान्ति, आराम, प्रसन्नता
राज़ (फा) = रहस्य (स०—रहस्य)
रास (अ) = सिर
रासहु (अ) = उसका सिर
रास्त (फा) = सीधा, सच्चा (स०—ऋत)
रास्त ख्वाही (फा) = (तू) सच चाहे (तो)
रास्त सुखन (फा) = सच बोलनेवाला, सत्यवाक्
रास्ती (फा) = सत्य
रासिख़ (अ) = दृढ-ठोस पाण्डित्यवाला
राज़ीन (अ) = सन्तुष्ट
राज़ी (अ) = सन्तुष्ट, सहमत
राज़ीयत् (अ फा) = मै सन्तुष्ट हूँ
राअी (अ) = गडरिया
राकिब (अ) = आरोही, सवार
राकिब'ल् मवाशी (अ) = पशु पर सवार (हिन्दी—मवेशी)
राकिबात (अ) = (राकिबत=आरोहिणी का बहुवचन) आरूढाएँ
रान्दन (फा) = चलाना
रऔ (अ) = उन्होने देखा
राह (फा) = मार्ग
राहज़न (फा) = मार्ग के लुटेरे
रह न बुर्दा (फा) = राहों में न चला हुआ, अकृतयात्र
राय (अ) = सम्मति, विचार, निर्णय
राय ज़दन् (अ फा) = राय देना
रायत (अ) = झण्डा, चिह्न
रायत (अ) = तूने देखा
इज़ा रायत असीमन् (अ) = जब तू एक पापी को देखे
राए (अ फा) = एक राय, एक नया विचार
रब्ब (अ) = ईश्वर, स्वामी (स०—प्रभु)
रब्बु'ल् अर्ज़ि अनहु राज़िन् (अ) = पृथ्वी का स्वामी उस पर प्रसन्न हो
रुब्ब (अ) = बहुत से, अनेक
रुब्ब सदीक़िन् लामनी (अ) = अनेक मित्रो ने मेरी भर्त्सना की है
रिबात (अ) = धर्मशाला
रुबाई (अ) = चार चरणों का छन्द, चौकडा
रुबाईदन् (फा) = पकडना, लूटना

(ر — र)

रब्बना (अ) = हे हमारे प्रभु!
रबूदन् (फा) = छीनना, चुराना
रबीअ (अ) = वसन्त
रबीई (अ) वासन्ती
रज्म (अ) = पत्थर मारना
रज्मि'ल् अनाक़ीदि (अ) = फल के गुच्छों पर पत्थर मारना
रिहलत (अ) = कूच, विदा, मृत्यु
रह्मान (अ) = कृपालु, दयालु
अरहमानु'र्रहीम (अ) = सबसे बड़ा दयालु
रहमत (अ) = कृपा
रहमतु'ल्लाहि अलैहि (अ) = परमात्मा की कृपा उस पर हो
रहमत आवुर्दन् (अ फा) = कृपा करना
रहिल (अ) = यात्रा
रहीम (अ) = कृपालु
रुख़ाम (अ) = संगमर्मर
रख़्त (फा) = सामान, उपकरण
रुख़सार (फा) = गाल, कपोल
रख़्शन्दा (फा) = चमकता हुआ
रख़्शीदन् (फा) = चमकना
रद्द (अ) = रद करना, वापिस करना
रद्दे जवाब (अ फ़ा) = उचित उत्तर देना, प्रत्युत्तर
रज़ (फा) = अंगूर, द्राक्षा
रुज़्ज़ (अ) = चावल
रिज़्क़ (अ) = (रज़्क़ की प्राप्ति रिज़ा—स०—रिज़य) जीविका
रिज़्क़ुन् मक़्सूमुन् (अ) = निश्चित जीविका
रिसाला (अ) = पत्र, सन्धिपत्र
रसानीदन् (फा) = पहुँचाना, भेजना
रस्तगारी (फा) = छूट भागना, मुक्ति
रुस्तम (फा) = एक प्रसिद्ध वीर (ईरान के ज़ाल का पुत्र)
रस्तन् (फा) = मुक्त होना
रुस्तन् (फा) = उगना, बढ़ना
रस्ता (फा) = छूटा हुआ, मुक्त
रस्म (अ) = क़ानून, प्रथा, परम्परा
रस्मी (अ) = पारम्परिक
रसवा (फा) = बेइज़्ज़त
रसूल (अ) = सन्देशवाहक, दैवदूत
रसीदं'स्त (फा) = वह पहुँचा है
रसीदन् (फा) = पहुँचना
रश्शात (अ) = छिड़कना, छिड़काव
रश्फ़ (अ) = अन्तिम बूंद तक पीना
रश्फ़ु'ज़् ज़ुलाल (अ) = ठण्डे पानी को अन्तिम घूंट तक पीना
रश्क (फा) = ईर्ष्या
रिश्वत (अ) = उत्कोच

(ر — र)

रिश्वत ख़ुर्दन् (अ फा) = रिश्वत लेना
रिज़ा (अ) = सन्तोष, सहमति
रज़ी (अ) = वह सन्तुष्ट हुआ, वह सन्तुष्ट हो
रज़िय'ल्लाहु' अन्हु (अ) = सन्तुष्ट हो प्रभु उस पर
रज़ीना (अ) = सन्तुष्ट हैं हम
रज़ीना मिन् नवालिक बि'र्रहीलि (अ) = सन्तुष्ट हैं हम जाने देने की तेरी भेंट से
रुतब (अ) = ताज़ा सुर्ख़ खजूर
रआया (अ) = (राइयत—रैयत का बहुवचन) विषय, प्रजा
रिआयत (अ) = ध्यान देना, सुरक्षा, छूट देना
रिआयते ख़ातिर कर्दन् (अ फा) = (किसी की) इच्छाओं का आदर करना
रअद (अ) = वज्र निपात, ढोल की आवाज़
रअना (अ) = (अरअन का स्त्रीलिंग) सांवलांगी, सुन्दरी
रअय्यत (अ) = प्रजा किसान
राग़िबत (अ) = अभिलाषा, कामना, रुचि
रफ़्तार (फा) = गति, यात्रा
रफ़्तन् (फ़ा) = जाना
रुफ़्तन् (फा) = झाड़ना
रफ़्ता (फ़ा) = गया हुआ, मृतक
रफ़अ (अ) = उठाना, ऊँचा करना, पद से हटाना
रिफ़अत (अ) = राजजाता, शिष्टता
रफ़्क़त-रिफ़क़त-रुफ़क़त (अ) = सहयात्री, संगी-साथी
रफ़क़ति (अ) = संग-साथ में
रफ़ी (अ) = ऊँचा महान
रफ़ीक़ (अ) = साथी, मित्र
रिक़ाब (अ) = (रक़बत का बहुवचन) गर्दनें
रक़्स (अ) = नाच, नृत्य
रुक़आ (अ) = (हिन्दी में रुक़्का) पत्र, कागज़ या कपड़े का टुकड़ा थेगली
रुक़आ बर रुक़आ (अ फा) = थेगली पर थेगली
रक़म (अ) = लेख, मुहर, मुद्रा
रक़म (अ) = विपत्ति, दुर्भाग्य
रक़ीब (अ) = प्रतीक्षालु, प्रतिद्वन्द्वी
रुक़्यत (अ) = जादू, सम्मोहन, टोना, तन्त्र मन्त्र
रिकाब (अ) = पदाधार, पशु पर चढ़ने समय पैर रखने का छिद्र
रुकूबत (अ) = घूमना
रुकायती (अ) = मेरा घूमना
रकिबू (अ) = वे चढ़े
रका-रकत (अ) = नमाज़ प्रार्थना में अंगमुद्रा
रकीक (अ) = दुर्बल, पतला, नीचा, अकिञ्चन
रग (फा) = नस, शिरा, धमनी, रक्तवाहिनी
रगे जान (फा) = प्राणशिरा, महाशिरा

(ر — र)

रगज़न (फा) = रक्तमोक्षण करानेवाला
रिमायत (अ) = धनुर्विद्या, शरसन्धान
रमज़ान (अ) = उपवास का नवाँ अरबी मास, चान्द्रायण व्रत मास
रमक़ (अ) = अन्तिम श्वास (हिन्दी में—अभी भी रमक मार रही है)
रमा (अ) = उसने बाण मारा
रमानी (अ) = उसने मुझे बाण मारा
रमीदन् (फा) = भय से भागना, भयाक्रान्त होना
रंज (फा) = शोक, कष्ट (स०—रुज्, रुजन)
रंजानीदन् (फा) = अप्रसन्न करना, दुःख में डालना
रंजिश् (फा) = मन में गाँठ रखना, अपमान, द्वेष
रंजिश आमेज़ (फा) = अपमानपूर्ण, द्वेषपूर्ण
रंजूर (फा) = दुःखी, रुग्ण (स०—रुग्ण)
रंजूरी (फा) = रुग्णता, दुःख
रंजा (फा) = कष्ट, दुःख
रंजे (फा) = एक कष्ट
रंजीदन् (फा) = अप्रसन्न होना, अपमानित होना
रिन्द (फा) = अनिर्णयपात्र, दुराचारी, मद्यप
रंग (फा) = रंग (स०—रंग)
रंगारंग (फा) = बहुरंगी, विविध
रंगीन (फा) = रंगीन
रव-रौ (फा) = (तू) जा
रू (फा) = मुख, धरातल, कारण
बर रूए खाक (फा) = धरा पर
रवा (फा) = उचित, न्यायपूर्ण
रवा दाश्तन् (फा) = आज्ञापित करना, स्वीकार करना, सत्यापित करना
रवाँ (फा) = चलता हुआ, बहता हुआ, जीवन (स०—शानच् प्रत्यय)
रवाँ शुदन् (फा) = चलना, जाना, निकल पड़ना
रवाँ कर्दन् (फा) = रवाना करना, भेजना
रवाँ आसाय (फा) = चित्ताह्लादकर, प्रसन्न करनेवाला
रोब (फा) = (तू) झाड़, मिटा, पोंछ दे
रोबाह (फा) = लोमड़ी, भूरिमाय, किंखि
रोबीदन् (फा) = झाड़ना, धूल निकालना
रूह (अ) = आत्मा
क़ूते रूह (फा अ) = आत्मा का भोजन
रूद (फा) = नदीधारा
रवद (फा) = जाता है
रूदा (फा) = आँतें, स्नायु
रूदाए तंग (फा) = सकुचित स्नायु
रोज़ (फा) = दिन, दिवस (स०—रोघस्)
रोज़े दाद (फा) = न्याय का दिन
रोज़े शुमार (फा) = गणना का दिन, कयामत का दिन
रोज़े मैदान (फा) = युद्ध के दिन

(ر — र)

रोज़क (फा) = एक छोटा दिन
रोज़के चन्द (फा) = थोड़े से दिन
रोज़गार (फा) = दुनिया, समय, अवस्था, जीवन, जीविका
रोज़गार बुर्दन् (फा) = जीना, साथ देना
रोज़गारे नामुसाइद (फा अ) = प्रतिकूल समय
रोज़गारे (फा) = एक समय चक्र
रौज़न (फा) = रोशनदान, खिड़की, चिमनी, धुआरा
रोज़ा (फा) = उपवास
रोज़ा दाश्तन् (फा) = उपवास रखना
रोज़ी (फा) = सौभाग्य, जीविका
रोज़े (फा) = एकदिन
रोज़ीख्वार (फा) = जीविकाभुक्
रोज़ी दिह (फा) = रोज़ी देनेवाला
रऊसा (अ) = (रईस का बहुवचन) धनी-मुखिया लोग
रूस्पी (फा) = वेश्या, रूपाजीवा
रूस्ता (फा) = गाँव
रूस्ता ज़ादा (फा) = ग्रामपुत्र, ग्रामीण
रूस्ताई (फा) = किसान, गँवार
रूस्ताए (फा) = एक किसान
रूश-रौशन (फा) = प्रकाशित
रविश (फा) = गति, प्रथा, चरित्र, पगडंडी
रौशन (फा) = प्रकाशवान्
रौशनाई (फा) = प्रकाश, चमक
रौशनराय (फा अ) = स्पष्टरायवाला
रौशन कर्दन् } (फा) = चमकाना, प्रकाश डालना, दृष्टि देना
रौशन गर्दीदन् }
रौशन गुहर (फा) = प्रकाशित आत्मावाला
रौज़त-रौज़ा (अ) = फूलबाग, फूलमैदान
रौज़तन् माउ नह्रिहा सल् साल (अ) = फूलबाग—जिसकी क्यारियों का जल ठण्डा-मीठा था
रौग़न (फा) = तेल, घी
रूम (अ) = तुर्की साम्राज्य
रूमी (अ फा) = तुर्की, तुर्की सम्बन्धी
रवन्दा-रविन्दा (फा) = जाता हुआ, जानेवाला
रौनक़ (अ) = अलकार, सौन्दर्य, शान
रूय-रू (फा) = चेहरा, मुख
रू बरहम कशीदन् (फा) = चेहरा बिगाड़ना, नाक भौं चढ़ाना
रू कर्दन् (फा) = मुह मोड़ना
रवी (फा) = (तू) जाता है, (तू) जाये
रूयत (फा) = तेरा मुख
रूईदन-रोईदन् (फा) = उगना, उगाना (स०—रोहण)
रूईन (फा) = पीतल का
रूईन् चंग (फा) = पीतल के पंजोवाला

(ر — र)

रह् (फा) = राह, मार्ग, सड़क, रास्ता, मार्ग
रहा-रिहा (फा) = छुट्टी
रिहा कर्दन् (फा) = छोड़ना, छुट्टी देना
रिहानीदन (फा) = भगाना, बचाना, मुक्त करना
रिहाई (फा) = मुक्ति, छुट्टी
रहबानियत (अ) = (शब्दार्थ—भयप्रदर्शकत्व) ब्रह्मचर्य, साधुत्व
ला रहबानियत फिल् इस्लाम (अ) = नहीं है एकान्त साधुता इस्लाम में
रहबर (फा) = मार्गदर्शक
रह बुर्दन् (फा) = राह पाना, राजमार्ग पकड़ना
रहबरी (फा) = मार्ग दर्शन
रहज़न (फा) = लुटेरा, बटमार, मार्गचोर
रह गुज़र (फा) = चलने का रास्ता
रहीदन् (फा) = मुक्त होना
रिया (अ) = झूठ, दम्भ
रियासत (अ) = राज्य, मुखियागिरी
रैहान (अ) = एक सुगन्धित जड़ी-बूटी
रेख़्तन् (फ़ा) = फैलाना, बखेरना
रेख़्ता (फा) = फैला हुआ, बिखरा हुआ
रेज़ा (फा) = टुकड़ा, छत
रेसमान (फा) = रस्सी, (स०—रज्जु)
रेश (फ़ा) = व्रण, क्षत, घाव
रीश (फा) = दाढ़ी
रेशाँ (फा) = घायल, क्षताक्त, रक्ताक्त (शानच् प्रत्यय से)
रायाँ (अ) = जवानी पर आया हुआ (शानच् प्रत्यय से)
रेग (फा) = बालू (स०—रजस्)
रेगे रवाँ (फ़ा) = उड़ती बालू
रेव (फा) = धोखा, जाल

ز — ज़

ज़ि (फा) = (अज़ का संक्षिप्त रूप) से
ज़ाद (फा) = पाथेय
ज़ाद (फा) = (वह) पैदा हुआ (स०—जात)
ज़ादे राह (फा) = पाथेय
ज़ाद (अ) = वह बढ़ा, वह सर्वोच्च था
मा ज़ाद अला ज़ालिक (अ) = जो भी इनमें से अधिक हो
ज़ाद बूम (फा) = जन्मभूमि (स०—जातभूमि)
ज़ादगान् (फा) = बच्चे (ज़ाद का बहुवचन)
ज़ादगी (फा) = जन्म, पितृत्व, मातृत्व
ज़ादन् (फ़ा) = जन्म लेना (स०—जातम् स०—जात)
ज़ादा (फा) = उत्पन्न, पुत्र (स०—जात)
ज़ाद ए (फा) = एक पुत्र
ज़ार (फ़ा) = रोना, चीखना, कराहना, अभागा

(ز — ज़)

ज़ारी (फा) = रोना पीटना
ज़ाग़ (फा) = कौआ
ज़ाल (फा) = रुस्तम का पिता, प्रसिद्ध पहलवान
ज़ाले (फा) = एक वृद्धा स्त्री का नाम
ज़ाँ (फा) = (अज़ आँ) = उससे, उसकी अपेक्षा
ज़ाँकि (फा) = (अज़ आँकि) उससे कारण, क्योंकि
ज़ाँगह (फा) = तब से, उस समय से
ज़ानम् (फा) = (अज़+आँ+अम्) उसकी अपेक्षा मैं हूँ
ज़ानू (फ़ा) = जाँघ, घुटना (स०—जानु)
ज़ाहिद (अ) = भक्त, संयत जीवन बितानेवाला
ज़ाहित्तर (अ फा) = भक्ततर
ज़ाहिदी (अ फा) = भक्ति, संयम
ज़ाहिदे (अ फा) = एक भक्त
ज़ाइद (अ) = बढ़ता हुआ
ज़ाइदु'ल वस्फ़ (अ) = (वाणी से अधिक) अनिर्वचनीय
ज़ाइर (अ) = यात्री
ज़ाइल (अ) = क्षीयमाण, नष्ट होता हुआ
ज़ाइ दा-ज़ाय दा (फा) = जन्म देती हुई, माता
ज़ाईदन् (फा) = पैदा करना
ज़बान (फा) = जिह्वा, भाषा
ज़बान आवर (फा) = प्रवृत्तवाक्, व्याख्याता, वक्ता
ज़बान आवरी (फा) = वाग्मिता, वावदूकता, मुखरता
ज़बाँ बुरीदा (फ़ा) = कटी ज़ुबानवाला, मौन
ज़बाँ दराज़ (फा) = लम्बी जीभवाला, अनर्गल प्रलाप करनेवाला
ज़ुबाँ दराज़ी (फा) = अनर्गल प्रलाप करना
ज़ुबा दर कशीदन् (फा) = ज़बान अन्दर खींचना, चुप रहना
ज़बाना (फा) = लपट, लौ, अग्नि
ज़बाने (फा) = एक ज़ुबान, कोई भाषा
ज़बाने कि दाश्त (फा) = वह भाषा जो कि वह धारण करता था, जो मुँह पर आया
ज़बरदस्त (फा) = बलवान्, अत्याचारी
ज़बरीन (फा) = ऊपरला, ऊँचा
ज़बूनी (फा) = नीचता, दुष्टता
ज़ि बहरे (फा) = के लिये
ज़बीब (अ) = सूखे छुहारे, किशमिश
ज़ि पाय दर आवुर्दन (फा) = पैरों को अन्दर रखना, गिरना साष्टांग प्रणाम
ज़ि पस (फा) = पश्चात्
ज़ज्र (अ) = ताड़न, डाँटना, तिरस्कार, बाधा, विरोध, हिंसा
ज़हमत (अ) = असुविधा, तकलीफ़, अशान्ति
ज़ख़्म (फा) = घाव (स०—क्षतम्)
ज़ख़्म ख़ुर्दा (फा) = घाव खाया हुआ, घायल

(,—ज़)

ज़ख़्मा (फा) = सारगी-बेला-दिलरुबा आदि तन्तुवाद्यो को बजाने की कमान, गज (स०—वल्लकी पत्रम्)
ज़ि ख़ुद (फा) = स्वत , अपने आपसे
ज़दन् (फा) = चोट मारकर घायल करना
ज़र-ज़र्र (फा) = सोना, धन (स०—स्वर्ण)
ज़र्रे जाफ़री (फा) = शुद्धतम स्वर्ण, कुन्दन
ज़र अन्दूद (फा) = साने से मढा, स्वर्णालकृत
ज़र्द (फा) = पीला (स०—हरिद्र)
ज़रअ (अ) = बोना, बुवाई करना, बोया हुआ खेत
ज़रअ व तिजारत (फा अ) = कृषि और व्यापार
ज़फ़ (अ) = शान, दम्भ, जाल
ज़ुर् नी (अ) = जियारत कर मेरी, मेरे यहा आ
ज़ुर् नी ग़िब्बन् (अ) = मेरे यहाँ आ एक दिन के अन्तर से
ज़रीन, ज़र्रीन (फा) = स्वर्णिम (ग्व प्रत्यय से सम्पन्न)
ज़िश्त (फा) = बुरा, भद्दा (स०—दुष्ट)
ज़िश्त ख़ू (फा) = बुरे स्वभाववाला, दु शील
ज़िश्त ख़ूए (फा) = एक दु शील व्यक्ति
ज़िश्त रू (फा) = कुरूप व्यक्ति
ज़िश्त रूई (फा) = कुरूपता
ज़िश्तनामी (फा) = बदनामी
ज़िश्ती (फा) = बुराई
ज़कात (अ) = दायभाग, निधना को चालीसवा भाग इस्लाम में विहित है
ज़ुलाल (अ) = ठण्डा, शीतल जल
ज़ल्लत (अ) = पदस्खलन, भूल, गलत काम
ज़ुल्फ़ (फा) = केशो की लट, छल्ला
ज़ुम्म (अ) = (ऊँट) लादा गया
ज़ि मा (फा) = हम से, हमारे से
ज़िमाम (अ) = नकेल, लगाम
ज़मान (अ) = समय, काल ऋतु
ज़मान'ल् वस्ल (अ) = सयोग काल, मिलने का समय
ज़माना (अ फ़ा) = समय, विश्व
ज़माने (अ फा) = एक समय
ज़मख़्शहरी (फा) = ख्वारिज़्म के अतगत ज़मख़्शहर या प्रसिद्ध वैयाकरण 'अबुल कासिम महमूद ज़मख़्शहरी'
ज़ुम्रा (अ) = घेरा, भीड
ज़ुमुर्रदीन (फा) = जमुरद (पन्ना) के रग का
ज़मज़मा (अ) = गा कर पढना, गुनगुनाहट
ज़मिस्तान (फा) = हेमन्त ऋतु, जाडे (स०—हेमन्त)
ज़मन (अ) = समय, ऋतु
ज़ि मन् (फा) = मुझसे
ज़मी-ज़मीन (फा) = धरती (स०—ज्मा)
ज़न (फा) = स्त्री, पत्नी

(,—ज़)

ज़न ख़्वास्तन् (फा) = नारी की कामना करना, विवाहैषणा
ज़न कर्दन् (फा) = औरत करना, विवाह करना
ज़नो फ़र्ज़न्द (फा) = स्त्री पुत्र
ज़ने बारदार (फा) = भारधरा नारी, गर्भिणी स्त्री
ज़म्बूर (अ) = ततैया, बर्रे
ज़म्बूरम् (अ फा) = मैं ततैया हू
ज़न्जीर (फा) = बेडी, जन्जीर
ज़न्जीरे पाय (फा) = बेडियाँ, पादबन्धन
ज़नख़्दान (फा) = ठोडी, निचला जबडा, चिबुक
ज़न ख़्वास्ता (फा) = कृतविवाह, ऊढ
ज़िन्दान् (फा) = कारा, बन्दीगृह
ज़िन्दगानी (फा) = जीवन
ज़िन्दा (फा) = जीवित
ज़िन्दा कर्दन् (फा) = पुनर्जीवित करना
ज़िन्दीक़ (अ) = (फारसी जिन्द या ज़िन्दीक का अरबी रूप) अग्निपूजक, नास्तिक, मिथ्यादेव
ज़ग (फा) = ज़ग, काई, मोरचा
ज़गार (फा) = काई, मोरचा
ज़गख़ुर्दा (फा) = ज़ग खाया हुआ
ज़गी (फा) = इथियोपिया सम्बन्धी (सजर के वश का नाम जिसने अतावक के विरुद्ध से अपना वश स्थापित किया)
ज़िन्हार (फा) = रक्षा करना, देखभाल
ज़नी (फा) = स्त्रीत्व
ज़ने (फा) = एक स्त्री
ज़वाल (अ) = अपकर्ष, पतन
ज़ूद (फा) = जल्दी, चपल (स०—सद्य)
ज़ूदतर (फा) = चपलतर
ज़ूदी (फा) = चपलता, गति
ब ज़ूदी (फा) = शीघ्रतापूर्वक
ज़ोर (फा) = शक्ति, हिंसा
ज़ोर आवुर्दन् (फा) = ज़ोर से काम लेना
ज़ोर आज़मा (फा) = शक्ति का प्रयोग करनेवाला
ज़ोर आज़माए (फा) = एक बलशाली व्यक्ति
ज़ोरावर (फा) = शक्तिशाली
ज़ोरावरी (फा) = शक्तिमत्ता
ज़ौरक़ (अ) = छोटी नाव
ज़ोरमन्द (फा) = सशक्त
ज़ोरमन्दी (फा) = सशक्तता
ज़ोरमन्दे (फा) = एक बलवान् व्यक्ति
ज़ौज़न (फा) = हिरात और निशापुर के बीच में स्थित एक नगर
ज़िह् (फा) = प्रत्यञ्चा, धनुर्गुण (स०—ज्या)
ज़िह् कर्दन् (फा) = धनुष पर रस्सी चढाना

(ز — ज़)

ज़ुह्हाद (अ) = (जाहिद का बहुवचन) धार्मि , [illegible]र्मी लोग
ज़हार (फा) = गुप्ताङ्ग
ज़ुहद (अ) = सयम
ज़हर (फा) = विष
ज़हरे क़ातिल (फा अ) = घातक विष
ज़ुहरा (फा) = उदर, साहस, उत्साह
ज़ियादत-ज़ियादा (अ) = वृद्धि, बढा हुआ
ज़ियादत कर्दन् (अ फा) = बढ़ावा, उठाना
ज़ियादत गर्दीदन्-शुदन्-गश्तन् (अ फा) = शक्तिशाली होना
ज़ियादा हुस्नी (अ फा) = अतीव सौन्दर्य
ज़ियारत (अ) = यात्रा, धर्मयात्रा
ज़ियारतगाह (अ फा) = यात्रास्थल
ज़ियां (फा) = हानि
ज़ीब-ज़ेब (फा) = अलकार, शोभा (स०—शोभा)
ज़ीबा-ज़ेबा (फा) = सुन्दर, शोभित
ज़ीबक (फा) = पारा
ज़ेबीदन् (फा) = शोभित करना, अलकृत करना
ज़ैद (अ) = एक व्यक्ति का नाम
ज़ैदी (फा अ) = तू ज़ैद के वश में है, ज़ैद का ह
ता अब्रो, वक्रो ज़ैदी (फा) = जब तक तू अभ्र-वक्र और ज़ैद (अर्थात् जिस तिस) का पुजारी है
ज़ेर (फा) = नीच
ज़ेरे बार शुदन् (फा) = भार के नीचे होना, कष्ट मे होना
ज़ीरा कि (फा) = चूंकि, इसके कारण, क्योंकि
ज़ेर दस्त (फा) = शक्तिहीन, अत्याचार पीडित
ज़ेर दस्त आज़ार (फ़ा) = निर्बल को सतानेवाला
ज़ीरक (फ़ा) = चपलमति, बुद्धिमान्
ज़ीरकी (फा) = चपलता, बुद्धिमत्ता, प्रतिभा
ज़ेरीन (फा) = नीचेवाला (ज़ेर में 'ख' प्रत्यय)
ज़ीस्तन् (फा) = जीवित रहना, बच रहना
ज़ि यक (फा) = (अज़ यक का सक्षेप) एक से
ज़ीं (फ़ा) = (अज़ ईं का सक्षेप) इससे
ज़ैनब (अ) = मुहम्मद साहब की एक पत्नी
ज़ीनत (अ) = शृङ्गार
ज़ीनहार कर्दन् (फा) = रक्षा करना
ज़ेवर (फा) = आभरण, अलकार

ژ — झ़

झ़ाल (फा) = पुकार
झ़ न्दा (फा) = पुराना थेगलीदार वस्त्र
झ़ियां (फ़ा) = वीर, भयानक

س — स

साबिक़ (अ) = पहला, गत, पिछला
साबिक़ुल् इनआम (अ) = पहले पुरस्कार
साबिक़त-साबिक़ा (अ) = (स्त्रीलिंग) गत, पिछला
सातिर (अ) = पर्दे में, छुपी हुई, गुप्त
फ़ुन सातिरन् (अ) = हो छुपानेवाला (उसके दोषों का)
साख़्तन् (फा) = करना, प्रस्तुत करना, व्यवस्था करना
साज़ (फा) = सगीतवाद्य
साज़ कर्दन् (फा) = प्रस्तुत करना, व्यवस्था करना
साअत (अ) = समय, वेला, घडी
साअते (अ फा) = एक घडी
साइद (अ) = कलाई से कुहनी तक का हिस्सा, प्रकोष्ठ
साइदुहू (अ) = उसकी कलाई
साक़ (अ) = टांग
साक़ी-साक़िन् (अ) = (शुद्ध रूप—साक़ियुन्) प्याला परोसनेवाला
व हुव साक़िन् (अ) = और वह साकी है
साक़ी (अ) = साकी, प्याला परोसनेवाला
साल (फा) = वर्ष
सालार (फा) = सेनापति, सेनानायक
सालिक (अ) = यात्री
सालिकाने तरीक़ (अ फा) = पथ के यात्री, यात्रीगण
सालगी (फा) = आयु, वर्षीयता
साला (फा) = वर्षों का
पजसाला (फा) = पाच वर्षों का
सालहा (फा) = अनेक वर्ष
साले (फा) = एक वर्ष
साले चन्द (फा) = कुछ वर्ष
साले दू (फा) = एक दो वर्ष
सालियान् (फा) = अनेक वर्ष
साइर (अ) = अवशेष, शेष, समस्त (हि०—सारे)
साइल (अ) = सवाल करनेवाला, सवाली, अर्थी, याचक
साया (फा) = छाया (स०—छाया)
सायापवर्दा (फा) = छाया में पला हुआ, घर के दुलार मे पाला गया, कच्चा, अनुभवशून्य
सायीदन् (फा) = पीसना, चूर्ण करना
सबब (अ) = कारण
सुबहान'ल्लाह (अ) = पवित्र परमात्मा
हयक़ सुबहानहू तआला (अ) = परमात्मा पवित्र और महान्
सब्ज़ (फा) = हरा
सब्ज़ा (फा) = हरियाली
सुबुअ (अ) = सात (स्त्रीलिंग में)
हफ्त सुबुअ (फा अ) = सात बार, ये सात अध्याय

(س — स)

सुबुक-सुबक (फा) = छोटा
सुबुक बार (फा) = हल्के बोझवाला
सुबुक पा (फा) = हलके पैरवाला, चपल, बेनिचावला
सुबुक तगीन (फा) = छोटा नगीन, महमूद गजनवी का पिता
सुबुकसर (फा) = हलके दिमागवाला, कम अक्ल
सुबुकसरी (फा) = हलका दिमाग का होना
सबील (अ) = मार्ग, पथ, गड्ढा
बर सबीली (फा अ) = के मार्ग से, के द्वारा
सिपास (फा) = धन्यवाद, कृतज्ञता
सिपाह (फा) = सैन्य, सेना
सिपाही (फा) = सेना का एक सिपाही, योद्धा
सिपर (फा) = ढाल
सिपर अन्दाख़्तन् (फा) = ढाल छोड़ना, युद्ध में हथियार फेंकना हार मानना
सिपर बाज (फा) = ढाल से खेलनेवाला, चतुर योद्धा
सिपुर्दन् (फा) = विश्राम में लेना, सौंपना
सिपरी शुदन् (फा) = पूर्ण होना, समाप्ति पर आना
सिपन्द (फा) = जंगली जड़ी (जिसको जलाने से कड़वा धुआ, निकलता है)
अस्त (फा) = है
सितारा (फा) = तारा
सितादन् (फा) = लेना, पकड़ना
सितायश (फा) = प्रशंसा, प्रशस्ति
सितादन् (फा) = लेना, स्वीकार करना
सितुदन् (फा) = हजामत करना, मुडन
सितम (फा) = आतंक, अत्याचार
सितमदीदा (फा) = जुल्म भुगते-देखे हुए
सितमगर-सितमगार (फा) = अत्याचारी
सितमगारी (फा) = अत्याचार
सितमे (फा) = एक अत्याचार
सितूदन् (फा) = प्रशंसा करना (स०—स्तुतम्)
सुतूर (फा) = बोझा ढोनेवाला पशु (जैसे—गधा, घोड़ा, टट्टू आदि)
सुतून (फा) = स्तम्भ, आधार (स०—स्थूण)
सुतूह (फा) = थकित, मार खाया हुआ, ग्रस्त, भीत
सितेज (फा) = (तू) अड जा, लड जा, सघर्ष
सितेजाम् (फा) = झगडालू आकृतिवाला
सितेजा (फा) = सघर्ष
सितेजीदन् (फा) = सघर्ष करना
सज्अ (अ) = चिड़ियों की चहचहाहट, कपोतकूजन, अनुप्रासयुक्त भाषण (जैसे—आगा सोई घर नहीं—हमें किसी का डर नहीं)
सजाग़ो (अ फा) = तुकबंद, अनुप्रासी
सुजूद (अ) = प्रणति, पूजा
सहबान वाइल (अ) = एक प्रसिद्ध अरब कवि

(س — स)

सहर (अ) = प्रभात, उष काल
मुर्गे सहर (फा अ) = बुलबुल
सहरगह (अ फा) = प्रात काल
सहरी (अ फा) = प्रभातकालीन
सहरे (अ फा) = एक प्रभात, किसी प्रभात
सख़ा (अ) = उदारता
सख़्त (फा) = कठिन, कठोर, कष्टदायक
सख़्तपाय (फा) = कठिनपाद, कठोर साधक
सख़्ती (फा) = कठोरता
सख़्ती कशीदन् (फा) = कठोरता सहन करना
सुख़रा (अ) = श्रम करने के लिये विवश, बेगार
ब सुख़रा गिरिफ़्तन् (फा अ) = बलात् बेगार लेना
सुख़न (फा) = वाक्य, काव्य (स०—सूक्तम्)
सुख़न पैवस्तन् (फा) = वाणी में पैवस्त लगाना, समर्थन में कुछ कहना
सुख़नची (फा) = चिरस्ता कहनेवाला
सुख़नवी (फा) = सुभाषित
सुख़ने (फा) = एक सुभाषित, कोई सूक्ति
सुख़ने चन्द (फा) = कुछ सुभाषित, थोड़े से शब्द
सद्द (अ) = रोक, बाट, थाम, अवरोध
सद्दे रमक़ (अ) = जीवन को जाने से रोकनेवाला, (दोनों श अरबी हैं—प्रयोग फारसी है)
सर (फा) = सिर, चोटी, ऊँचाई, सिरा, मुखिया
अज सर (फा) = नये सिरे से
सिर (अ) = रहस्य
सर्रा (अ) = (प्रतिपर्याय जर्रा) सुख-शान्ति, प्रसन्नता
सिराज (अ) = दीपक
सिराजु'ल्मिल्लति'ल् बाहिरति (अ) = अत्यन्त ज्योतिमय समदीप
सराचा (फा) = अन्त पुर
सराचा ए दिल (फा) — हृदय का अन्तरंग भाग
सरजाम (फा) = परिणाम, समाप्ति, कार्यसिद्धि के उपाय
सरन दीब (फा) = लंका, (स०—स्वर्ण द्वीप)
सर अगुश्त (फा) = अगुलियों के सिरे, पोरुए
सराय (फा) = यात्रीनिवास, भवन
दर सराय (फा) = सराय में पहुँचा हुआ, सुस्थित
सराये दिगर (फा) = दूसरी सराय (अर्थात् परलोक)
सराये (फा) = एक भवन
सराईदन (फा) = गाना, गुनगुनाना, बजाना
बसर बुदन् (फा) = सिरे पर लाना, समाप्ति पर लाना, पूर्ण करना
सरपंजगी (फा) = पाँच अगुलियों की शक्ति, पंजा
सरपंजा (फा) = खुला पंजा, फैला पंजा
सर तेज (फा) = गर्म दिमागवाला
सुर्ख़ (फा) = रक्तवर्ण

(س — स)

सगे (फा) = एक कुत्ता
सल (अ) = (तू) मांग
सिलाह् (अ) = शस्त्रास्त्र
सलातीन (अ) = (सुल्तान का बहुवचन) राजा लोग
सलाम (अ) = शान्ति, प्रणाम
सलामत (अ) = सुरक्षा, शान्ति, योग-क्षेम
अस्सलामतु फ़िल् वह्दति (अ) = शान्ति एकान्त में है
सलामे (अ फा) = एक प्रणाम
सिलाहशोर (फा) = शस्त्रविद्या निष्णात, (सं०—शूर)
सलसाल (अ) = ठण्डा मीठा पानी
सिलसिला (अ) = क्रम
सुल्तान (अ) = राजा, सम्राट, शासक
सुल्तानु'ल् बर्रे व'ल् बहरि (अ) = पृथ्वी और सागर का शासक
सुल्तानी (अ फा) = सुल्तान का शासन
सुल्ताने (अ फा) = एक सुल्तान
सल्तनत (अ) = सुल्तान का शासन, शक्ति
सल्तानी (अ फा) = (तू) सुल्तान का है
सिल्क (अ) = डोरा, धागा, सूत्र
सल्मि (अ) = वह सुरक्षित—था
व इन् सल्मि'ल् इन्सानु (अ) = और भले ही मानव सुरक्षित होता
सल (फ़ा) = सालसाला, वर्षीय
सलीम (अ) = सज्जन, सरल, स्वस्थ, भोला
सुलेमान (अ) = सुलेमान नामक राजा
समा (अ) = आकाश, राग
समाहत (अ) = उपकार, उदारता
समात-सिमात (अ) = भोजन से लदा हुआ दस्तरख्वान
समाअ-समाअत (अ) = सुनाई, दरवेशों का घूमकर नाच-गान
समअ इन्ना हुस्नि'न् अग़ानी (अ) = मेरे कान संगीत के सौंदर्य की ओर प्रवृत्त हैं
समिअत (अ) = (उस स्त्री ने) सुना
लौ समिअत वुर्क़ुल् हमा (अ) = यदि सुनती हरी पत्तिया
समन्द (फा) = अच्छी नस्ल का घोड़ा जिसके काली पूछ और काले पैर हों, (भारत में श्याम वर्ण घोड़े अच्छे माने जाते थे)
समूम (अ) = रेगिस्तानी लू
समीन (अ) = मोटा-ताजा
सिनान (अ) = भाला
सुम्बुल (फ़ा) = एक सुगन्धित फल
सुन्नत (अ) = मुहम्मदीय परम्परा जो कि मुसलमानों के लिये कुरान के समान पालनीय है
सजार (फा) = ईरान का एक नगर
सजीदन् (फा) = सोचना, विचारना
सग (फा) = पत्थर
सग जदन् (फा) = पत्थर मारना

(س — स)

सग ख़ुर्दा (फ़ा) = छोटा पत्थर (सं०—क्षुद्र)
सग दिल (फा) = पाषाण हृदय, पत्थर जैसे दिलवाला
सगसारी (फा) = पत्थर मारना
सगी (फा) = भारी, बोझिल
सगे (फा) = एक पत्थर
सगीन (फा) = पत्थर का-सी, भारी
सिन्नौर (अ) = बिल्ली
क सिन्नौरि माल्ज़्बिन् (अ) = जैसे दबी बिल्ली
सू (फा) = दिशा, की ओर
ब सू ए आसमान (फा) = आकाश की ओर, ऊर्ध्वा दिशा में, स्वर्ग की ओर
सू (अ) = बुराई
क मिन् सू ए ज़न्नि'ल मुद्दई (अ) = शत्रुओं के बुरे चीतने पर भी
मिन् सूए नफ्सिहि (अ) = उसकी प्रकृति की दुष्टता से
सवाबिक़ (अ) = (साबिक का बहुवचन) पिछली बातें
सवाबिक़ि निअमत (अ फा) = पहले उपकार
सवाद (अ) = कालापन, अंधेरा
सवादु'ल् वजहि (अ) = चेहरे का कालापन
सवार (फा) = घुड़सवार, (सं०—अश्वारोही)
सवारम् (फा) = (मैं) सवार हूँ
सवारी (फा) = (तू) सवार है
सवारे (फा) = एक सवार
सवाल (अ) = प्रश्न
सोख्तन् (फा) = जलाना, सुखाना (सं०—शोष)
सूद (फा) = ब्याज, लाभ, उपयोग (सं०—कुसीद)
सूद दाश्तन् (फा) = प्राप्त करना, लाभ उठाना
सौदा (फा) = उन्माद (सं०—समद)
सूदमन्द (फा) = लाभकारक
सूदन् (फा) = मलना, नष्ट करना मिटाना (सं०—सूदन, जैसे—शत्रुसूदन, मधुसूदन)
सूदे (फा) = एक लाभ
सूराख़ (फा) = छिद्र
सौरत (अ) = राजशक्ति, राजमद, कुनबापरस्ती
सूरा (अ) = कुरान का अध्याय
सोज़ (फा) = गरमी, जलन
सोज़ाँ (फा) = जलता हुआ, लपटें निकलती हुई ('शानच्' के योग से)
सोज़न (फा) = सुई (सं०—सूची, सूचन)
सोज़ीदन् (फा) = जलना
सौगन्द (फा) = शपथ
सौगन्द ख़ुर्दन् (फा) = क़सम खाना, शपथ उठाना
सव्वलत (अ) = (उस स्त्री ने) जाल रचने को प्रेरित किया
सव्वलत अकुम अन्फसुकुम् अम्रन् (अ) = तुम्हारी प्रकृतियों ने जाल रचने को प्रेरित किया

(س — स)

सोयम्-सिवम् (फा) = तीसरा, तीसरी
सूहान-सूहन (फा) = आरी, करपत्र
सिवा (अ) = अतिरिक्त, छोडकर
सिह् (फा) = तीन
सिह् बार (फ़ा) = तीन बार
सिह् शश (फा) = तीन छक्के (अक्षद्यूत में)
सहल (अ) = आसान, सरल (स०—सरल)
सहलन् (अ) = आसानी से
सहलतर (अ फ़ा) = सरलतर
सहलजू (अ फा) = सरल मार्ग की ओर प्रवृत्त, सरल प्रवृत्ति
सहलगो (अ फा) = सरलता से बोलनेवाला, वाग्मी
सहली (अ फा) = सहलता, सज्जनता
सहमगीन (फ़ा) = भयभीत
सिह्री (फा) = सीधा, सतर
सिह् यक (फा) = तीन इक्की, तीन इक्के (जुए के)
सुहैल (अ) = एक तारा, (*Canopus*-बृहस्पति)
सी (फा) = तीस (स०—त्रिंश)
सैयाह (अ) = यात्री, पर्यटक
सियाहत (अ) = यात्रा, पर्यटन
सैयाहे (अ फ़ा) = एक यात्री
सियासत (अ) = राजनीति, शासन, दण्ड
सियाक़त (अ) = आगे बढ़ाना, ले चलना, प्रेरित करना
सियाक़ते सुख़न (अ फ़ा) = वादविवाद को आगे बढाना, बात करते जाना
सियाह (फ़ा) = काला, कृष्णवर्ण
सियाहदिल (फ़ा) = काले दिलवाला, दुर्विचारी
सियाह फाम (फ़ा) = कृष्णवर्ण, श्यामच्छाय
सियाहगोश (फा) = (शब्दार्थ—श्यामकर्ण) जरख
सियाही (फा) = कालापन
सियाहे (फ़ा) = एक हब्शी
सेब (फ़ा) = सेवफल
सेबे (फ़ा) = एक सेब
सीख़ (फ़ा) = भूनने की सलाई, शूल्य
सैय्यद (अ) = स्वामी
सैय्यदु'ल् अम्बिया (अ) = नबियों का स्वामी, मुहम्मद साहब
सैय्यदे आलम (अ) = विश्व का स्वामी
सैर (अ) = सैर, घूमना, पुस्तक का अध्ययन
सियर (अ) = (सीरत का बहुवचन) गुणो
सेर (फ़ा) = पूर्ण तृप्त, संतृप्त
सीर (फ़ा) = लहसन
सेरनिगाह (फ़ा) = तृप्त दृष्टि, भर नज़र देखना
सीरत (अ) = गुण
सेरी (फा) = तृप्ति

(س — स)

सीसद (फा) = तीन सौ (स०—त्रिशत)
सफ (अ) = तलवार
सैल (अ) = लहर, बाढ़, ज्वार
सैलाब (अ फा) = बाढ
सैले (अ फा) = एक बाढ
सीली (फा) = थप्पड मारना
सीम (फा) = चाँदी
सीमा (फा) = मस्तक, मस्तक के चिह्न, लक्षण
सीमीन (फा) = चाँदी का, कोमल, उज्ज्वल
सीना (फा) = छाती
सीवुम्-सोयम् (फा) = तीसरा, तीसरी

ش — श

अश् (फा.) = उसको, उसका, उसरा
शायह (अ) = उसने तुलना की, वह लगता है
शावह बि'ल् बरा हिमार इज्लन् जसदन् (अ) = बहुत से आदमियों में एक गधा, सुनहरा बछेडा जैसा
शातु (अ) = भेड-बकरी
अश्शातु नजीफतुन् (अ) = भेड हलाल होती है
शाख़ (फ़ा) = डाली (स०—शाखा)
शादमान (फा) = प्रसन्न (स०—सादमान)
शादमानी (फा) = प्रसन्नता
शादी (फा) = प्रसन्नता
शादी कुनान (फ़ा) = प्रसन्न होनेवाले (स०—कुर्वाण)
शाशीदन् (फा) = मूतना
शातिर (अ) = साहसी, वीर, सक्रिय
शायर (अ) = कवि
शाफी (अ) = शफा देनेवाला, स्वस्थ करनेवाला
शाकिर (अ) = कृतज्ञ, शुक्रिया करनेवाला
शागिर्द (फ़ा) = शिष्य, सेवक
शाम (अ) = सीरिया, इराक
शामियान (अ फ़ा) = सीरियाई लोग, शाम निवासी
शाअन् (अ) = चीज़, मामला, व्यवहार
शान (फा) = प्रकृति, अवस्था, तड़क-भडक
दर शाने (फा) = के विषय में
शाह (फ़ा) = राजा (स०—शास्)
शाहिद (अ) = प्रेमिका, प्रेमी, प्रियपात्र, गवाह
शाहिद पिसर (अ फा) = प्रिय पुत्र
शाहिदी (अ फा) = धृष्टता, अपमान
शाहनामा (फा) = राजवंशावली, फिरदौसी का प्रसिद्ध ग्रंथ
शाहन्शाहु'ल् मुअज्ज़म (अ) = महानतम राजाधिराज
शाहन्शाह (फा) = राजाधिराज
शाही (फा) = राजकीय, शाह की शाही

(ش — श)

शायद (फा) = सम्भवत
शायिस्तन् (फा) = उपयुक्त होना, सगत होना
शायिस्ता (फा) = उपयुक्त, सगत, योग्य
शायीदन् (फा) = योग्य होना
शब (फा) = रात, आज रात (स०—शर्वरी)
शबे क़द्र (फा अ) = शक्ति रात्रि (रमज़ान मास की १७वी रात जब कुरान स्वर्ग से भेजी गई थी)
शबाब (अ) = यौवन
शबान-शुबान (फा) = गडरिया
शबोरोज (फा) = रात दिन
शबान् गाह् (फा) = रात्रिकाल, सन्ध्या, रात घिरना
शबपारा, शपारा, शप्पारा (फा) = चमगादड (शब्दार्थ—रात में उडनेवाला)
शबख़ेज़ (फा) = रात में उठनेवाला, जल्दी जागनेवाला, चौकीदार
शबअ्-शबिअ (अ) = तृप्ति
शबिया (अ) = (वह) तृप्त हुआ, (वह) तृप्त हो
इज़ा शबि'ल् फमिय्यु (अ) = जब योद्धा का पेट तृप्त होवे
शबगाह (फा) = रात्रिकाल, सन्ध्या
शबनम (फा) = ओस
शबह (अ) = काँच का दाना, मनका
शबे (फा) = एक रात
शप्पारा चश्म (फा) = चमगादड की आँखवाला, अधा
शिता (अ) = शीतकाल में, जाडो में (सस्कृत में 'दोषा', 'दिवा' की भाँति 'शीता' भी अव्ययपद रहा होगा)
शिताब (फा) = जल्दी, शीघ्रता
शिताबाँ (फा) = जल्दी करनेवाला, त्वरमाण
शिताफ्तन् (फा) = जल्दी करना
शुतुर (फा) = ऊँट (स०—उष्ट्र)
शुतुरे सालिह् (फा अ) = सालिह नामक ईश्वर दूत का ऊँट (जो कि उसने पत्थर में से पैदा कर दिखाया था)
शुतुरबार (फा) = ऊँट का बोझ, भारवाही ऊँट
शुतुरबान (फा) = ऊँट चालक
शुतुरबच्चा (फा) = ऊँट का बच्चा, दासेरक
शजाअत (अ) = साहस, वीरता
शजर (अ) = वृक्ष
शह्ना (अ) = पुलिस का अध्यक्ष
शख़्स (अ) = व्यक्ति
शख़्सम् (अ फा) = मेरा व्यक्तित्व
शख़्से (अ फा) = एक व्यक्ति
शिदाद (अ) = (शदीद का बहुवचन) कडा, कठोर
शिद्दत (अ) = कठिनाई, कठोरता
शुदन् (फा) = होना, जाना, प्रवेश करना
शुदाए (फा) = वह एक, जो हो चुका

(ش — श)

चि शुदे (फा) = क्या होता
शर्र (अ) = दुष्टता, दुर्जनता
शराब (अ) = मद्य
शरबत (अ) = एक घूट, मधुरपेय
शरिब्तु (अ) = मैंने पिया
शरबते आबी (अ फा) = पानी की एक घूंट
शरबते (अ फा) = एक घूंट
व लौ शरिब्तु बुहूरा (अ) = भले ही मैं सागरो को पी जाता
शरह (अ) = परमात्मा हृदय खोले (धर्म की ओर)
शरह सद्रहु (अ) = वह खोले उसका वक्ष
शर्ज़ा (फा) = भयकर
शर्त (अ) = शर्त
शुर्त (अ) = मन्द मधुर अनुकूल पवन
शरअ (अ) = कानून, धर्मशास्त्र, मुस्लिम धर्मशास्त्र
शरई (अ) = धर्म विषयक
शरफ़ (अ) = महानता, भद्रता, महत्ता (धर्म की)
शर्म (फा) = लज्जा
शर्मज़दा (फा) = शर्म से मारा हुआ, लज्जित
शर्मसार (फा) = शर्म से भरा हुआ
शर्मसारी (फा) = लज्जा से भरना
शरह् (अ) = भूख, लोभ, वासना
शरीफ (अ) = सज्जन
शरीक (अ) = साझीदार
शुस्तन् (फा) = धोना
शश (फा) = छै (स०—षट्)
सिह शश (फा) = तीन छक्के
शशम् (फा) = छठा, छठवा (स०—षष्ठ)
शस्त (फा) = साठ (स०—षष्ठि)
शतरज (फा) = शतरज नामक चौसर का खेल
शिअब (अ) = घाटी, उपत्यका
शेर (अ) = कविता
शुअरा (अ) = कविगण (शाअर का बहुवचन)
शिफा (अ) = स्वास्थ्य लाभ
शफाअत (अ) = दूसरो के लिये प्रार्थना करना
शिफा याफ्तन् (अ फा) = स्वास्थ्य लाभ करना
शफत (अ) = ओठ, अधर
शफति'स्साइमि (अ) = उपवासी के अधर, लटके होठ
शफ़क़त (अ) = दया, उदारता, सहानुभूति
शफी (अ) = वकील, सिफारिश करनेवाला
शफी आवुर्दन् (अ फा) = वकील को चुनना-लाना
शुक़ूक़ (अ) = (शक्क का बहुवचन) दरार, छेद
शक्क (अ) सन्देह
शिकारगाह (फा) = शिकार का मैदान, जगल

(ش — श)

शिकारी (फा) = व्याध, लुब्धक, आखेटक
सगे शिकारी (फा) = शिकारी कुत्ता
शिकायत (अ) = शिकायत
शिकायत कर्दन् (अ फा) = शिकायत करना
शकर (फा) = चीनी, खाँड (स०—शकरा)
शुक्र (अ) = धन्यवाद
शुक्रन् (अ) = धन्यवाद देते हुए
शकरख़न्दा (फा) = मीठी मुसकानवाला
शुक्र गुज़ारदन् (अ फा) = धन्यवाद करना
शुक्रे निअमत (अ फा) = एक कृतज्ञता का कार्य, एक धन्यवाद
शुक्रे (अ) = एक धन्यवाद
शिकस्त (फा) = तोड़ना, हड्डी टूटना (फलितार्थ-हार)
शिकस्तन् (फा) = टूटना, भग होना
शिकस्ता (फ़ा) = टूटा हुआ, हारा हुआ, जर्जर
शक्ल (अ) = आकार, रूप
शिकम (फ़ा) = पेट
शिकम बन्दा (फ़ा) = पेट का गुलाम
शिकम दर्द (फा) = पेट दर्द
शिकंजा (फ़ा) = शिकंजा
शकूर (अ) = कृतज्ञ, शुक्रिया करनेवाला
अश्शकूर (अ) = कृतज्ञ व्यक्ति
शिकीबे (फा) = धैर्य का लेश
शिकीबीदन् (फ़ा) = धैर्य रखना
शिगाफ्तन् (फ़ा) = बखेरना, फैलाना
शिगिफ्त (फ़ा) = आश्चर्य, विस्मय
शिगिफ्त आमदन् (फ़ा) = आश्चर्यान्वित होना
शिगुफ्त'स्त (फ़ा) = खिलता है, खिला हुआ
शिगुफ्तन् (फा) = खिलना, प्रफुल्ल होना
शिगूफा (फा) = कली, वसन्तोपहार
शलग़म (फा) = शलग़म का क़न्द
शुमा (फ़ा) = तुम
शमातत (अ) = असूया, शत्रु के कष्ट पर प्रसन्न होना, औरो के दु:ख पर प्रसन्न होना
शुमार (फ़ा) = गणित
रोज़े शुमार (फा) = प्रलय का-न्याय का दिन
शुमारीदन् (फा) = गिनना, गणन
शमाइल (अ) = गुण, प्रतिभा, रूप, आकार (शिमाल का बहुवचन)
शमाइली (अ) = प्राकृतिक, भौतिक
शम्मा (अ) = कण, अणु, सूक्ष्म
शुमुर्दन् (फा) = गिनना
शम्स (अ) = सूर्य (स्त्रीलिंग)
शम्सुद्दीन (अ) = धर्मसूर्य, एक नाम
शम्शेर (फ़ा) = तलवार

(ش — श)

शमअ (अ) = मोमबत्ती, दीपक
शमीदन् (फा) = गँवाना, बदबू छोड़ना
शुनात (अ) = (शानी का बहुवचन) = घृणा करनेवाला, द्वेष्टा
शुनातिहि (अ) = उसके शत्रु
शिनाख़्त (फा) = ज्ञान
शिनाख़्तन् (फा) = जानना
शिनास (फा) = जाननेवाला, विचारक, तू जान (शिनाख़्तन् का आदेशवाचक)
शुनअत (अ) = क्रूरता, बुराबोलना, गदी गाली
शगरफ (फा) = हिंगुल, रोली
शिनव (फ़ा) = सुन, सुनो (स०—शृणु)
शिनूदन् (फा) = सुनना (स०—श्रवण)
शिनवम् (फ़ा) = मैं सुनता हूँ (स०—शृणोमि)
शुनीद (फा) = उसने सुना, सुनवाई
शुनीदस्ती (फ़ा) = तेरा सुना हुआ है, तू सुन चुका है
शुनीदन (फ़ा) = सुनना
शुनीदई (फा) = तूने सुना है
शनीअ (अ) = नीच, घृणास्पद
शव-शौ (फा) = हो (शुदन् का आदेशवाचक)
शूय (फ़ा) = पति (शवी और शूय के हिज्जे एक ही है)
शू (फा) = (तू) धो (शुस्तन् का आदेशवाचक)
शोख़ (फा) = धृष्ट, खिलन्दड़ा
शोख़चश्म (फा) = चपल नयन, निलज्ज, अस्थिर
शोख़चश्मी (फ़ा) = अस्थिरता, निलज्जता
शोख़दीदा (फा) = चपलनयन, अस्थिर
शोख़ी (फा) = चपलता, निलज्जता
शवद (फ़ा) = होता है, होगा
शोर (फा) = कोलाहल, नमकीन, दुर्भाग्य (स०—क्षार)
शोरबख़्त (फा) = अभागा, कटुभाग्य
शोरिश् (फा) = कोलाहल, उन्माद, दिमाग की गड़बड़
शोरा (फा) = शोरा, भूक्षार
शोराबूम (फा) = खारी ज़मीन (स०—क्षारभूमि)
शोरे (फा) = एक उन्मत्त आवेग
शोरीदन् (फा) = परेशान होना, अशान्त होना
शोरीदा (फा) = परेशान, अशान्त, पागल, सनकी,
शौकत (अ) = शान, महानता
शौहर (फ़ा) = पति
शवी (फा) = तू होता है
शू (फा) = पति
शूयम् (फा) = (मैं) धोता हूँ—धोऊँगा
शूयद (फा) = (वह) धोता है
शाह (फा) = राजा, शासक (स०—शास)
शह्द (अ) = मधु

(ش — श)

शहर (फा) = नगर
शाहरवा (फा) = एक राजा जिसने चमड़े के सिक्के चलाये, चर्ममुद्रा
शहरे (फा) = एक नगर
शहरयार (फा) = नगर का मित्र, राजा
शहवार (फा) = राजाओं के योग्य
शहवत (अ) = रिरसा, उत्तेजना
शैयन् (अ) = वस्तु
शैयाव (अ) = धोखेबाज़, छलिया
शयातीन् (अ) = (शैतान का बहुवचन) बुरे लोग
शैव (अ) = सफेदी, बुढ़ापा
शैख़ (अ) = आदरणीय, विद्वान्, दार्शनिक, विचारक
शैख़ अबु'ल्फ़र्ज शम्सु'द्दीन बिन् जौज़ी (अ) = सादी का गुरु
शैद (फा) = धोखा, छल
शैदी (फा) = (तू) धोखेबाज है
शैदा (फा) = प्रेमोन्मत्त
शीर (फा) = दूध (स०—क्षीर)
शेर (फा) = सिंह
शीराज़ (फा) = एक ईरानी नगर, ईरान की प्राचीन राजधानी
शीराज़ी (फा) = शीराज के निवासी
शेरमर्द (फा) = वीर
शेरमर्दी (फा) = वीरता
शेरी (फा) = शेरपन, वीरता
शीरीन (फा) = मधुर (शीर+'ख' प्रत्यय)
शीरीं ज़ुबान (फा) = मधुर वाणी, मधुर वाणीवाला
शीरीं ज़ुबानी (फ) = मधुर वाणी
शीरीं लब (फा) = मीठे ओठ, मीठे ओठवाला
शीरीनी (फा) = मिठास
शीशा (फा) = काँच, काँच का पात्र
शीशागर (फा) = काँच बनानेवाला
शैतान
अश्शैतान } (अ) = दुरात्मा
शेवा (फा) = शान, गुण, प्रकृति, स्वभाव

ص — श्र

श्राबिर (अ) = सब्र करनेवाला, धैर्यधारी
श्राहिब (अ) = स्वामी
श्राहिबतमीज़ (अ फा) = विवेकवान्
श्राहिब तमीज़ी (अ फा) = (तू) विवेकवान् है
श्राहिबे दिल (अ फा) = सहृदय, भक्त
श्राहिबे दिलें (अ फा) = दिलवाला, सूफी, भक्त
श्राहिबे दुनिया (अ फा) = धनी व्यक्ति
श्राहिबे दौलत (अ) = शासनाधिपति
श्राहिबे दीवान (अ फा) = कोषपति

(ص — श्र)

श्राहिब फिरासत (अ फा) = बुद्धिमान्, चालाक
श्राहिब हुनर (अ फा) = चतुर, शिल्पी, प्रवीण
श्राहत (अ) = वह रोई-रोती
श्रादिर (अ) = जारी करता हुआ, बढ़ता हुआ
श्रादिर शुदन् (अ फा) = प्रारम्भ होना, उद्गत होना, भाग छूटना
श्रादिक़ (अ) = सच्चा, न्यायकारी
श्राफी (अ) = शुद्ध, पवित्र
श्रालिह (अ) = साधु
श्रालिहन् (अ) = सत्कार्य, गुणवत्ता
श्रालिहे (अ फा) = एक पवित्र व्यक्ति
श्राइम (अ) = उपवासी
श्रबा (अ) = मन्द पवन
श्रिबा (अ) = लड़कपन
श्रबाह (अ) = प्रभात
अलश्श्रबाह (अ) = प्रभात काल में
श्रबाहत (अ) = सुन्दरता, शाम
श्रुब्ह (अ) = प्रभात
श्रब्र (अ) = धीरज, सन्तोष
श्रबिर (अ) = एलवालुक, एलुआ
श्रब्र कर्दन् (अ फा) = सब्र करना
फ श्रब्रुन् जमीलुन् (अ) = सो, सन्तोष ही ठीक है
श्रबूह (अ) = प्रभात, उष काल
श्रबूर (अ) = धैर्यवान्
श्रबूरी (अ) = धैर्य, धृति
श्रुहबत (अ) = संगत
श्रिह्हत-श्रेहत (अ) = स्वास्थ्य, सुधार
श्रहरा (अ) = रेगिस्तान, सहारा का रेगिस्तान
श्रहन (अ) = आँगन
श्रख़रा (अ) = सुलेमान की अँगूठी चुरानेवाला दुरात्मा पिशाच
श्रद (फा) = सौ (स०—शत)
श्रदाक़ (अ) = पत्नी के प्रति पति की की हुई प्रतिज्ञा
श्रद बाब (फा) = सौ अध्याय, सौ द्वार
श्रद चन्दाँ (फा) = सौ बार, सौ तरह से
श्रद्र (अ) = प्रधान पद, छाती-सीना
श्रद साल (फा) = सौ वर्ष
श्रदफ (फा) = सीप (स०—शुक्ति)
श्रिद्क़ (अ) = सत्य (स०—सिद्धि)
श्रदक़'ल्लाहु'ल् अज़ीम (अ) = महान् प्रभु ने सत्य कहा है
श्रिदक़े मवद्दत (अ फ़ा) = सच्चा प्रेम
श्रदक़ा (अ) = भिक्षा देना, दान देना, बलि देना
श्रदमा (अ) = धक्का
श्रदीक़ (अ) = अन्तरग, सच्चा मित्र

शिद्दीक़ (अ) = सचाई का वफादार (स०—सिद्ध सिद्दीक)
शर्फ (अ) = खर्चा
शर्फ शुदन् (अ फा) = खर्च होना
शर्फ कर्दन् (अ फा) = खर्च करना
शुर्रा (अ) = एक थैली
शअब (अ) = कठिन, कठोर, विलष्ट, कष्टकार, दुर्दम
शफ-शफ (अ) = पद, पदवी, पंक्ति, कोटि
दर अव्वल शफ (फा अ) = प्रथम पंक्ति-कोटि में
शफा (अ) = शुद्धि, चित्तशुद्धि
इख़वानु'श्शफा (अ) = (शब्दार्थ—शुद्धि के भाई) बसरा में चौथी हिजरी में स्थापित विद्वत् परिषद्
शिफाहान (इस्फहान) (फा) = प्राचीन पार्थियन साम्राज्य की राजधानी
शफाई (अ फा) = शुद्धि
शिफत (अ) = गुण, आकार (प्रत्यय के बतौर—गुणवाला) (स०—सम्पत्—यथा आसुरी सम्पत्, दैवी सम्पत्)
हर शिफत (फा अ) = किसी भी प्रकार
शफवत (अ) = सर्वश्रेष्ठ प्रकार
शला (फा) = मित्रों को भोजन के लिये बुलाना
शलाबत (अ) = दृढ़ता, कठोरता, आतंक, शान
शलाह (अ) = भलाई, ईमानदारी, समृद्धि, सलाह, राय
शलाहियत (अ) = ईमानदारी, क्षमता
शुल्ह (अ) = सन्धि, शान्ति
शुलहा (अ) = न्यायपूर्ण, पवित्र (सालिह का बहुवचन)
शल्द (अ) = (छन्दानुरोध से 'शलद' भी) दृढ़ ठोस, कठोर
शलम (अ) = ('शल्ल'ल्लाह अलैहि व सल्लम्' का संक्षेप) परमात्मा उस पर कृपालु हो और रक्षा करे
शल्लू (अ) = प्रार्थना कर, दुआ माँग
शलवात (अ) = (सलात का बहुवचन) आशीर्वाद
शल्लू अलैहि व आलिहि (अ) = आशीर्वाद माँग उसके लिये और उसके परिवार के लिये
सलात (अ) = भगवत्कृपा, सहानुभूति, आशीर्वाद
शुम्म (अ) = (असम्म का बहुवचन) बहरा
शुम्मुन् बुक्म (अ) = बहरा और गूँगा
शमीम (अ) = अन्त शुद्ध, सच्चा, पवित्र, असली
सन्दल (अ) = चन्दन (स०—चन्दन)
शन्दूक़ (अ) = मंजूषा, पेटिका
शन्दूक़े गोर (अ फ़ा) = चूना पत्थर की क़ब्र
शनअ (अ) = निर्माण, कार्य, उत्पादित विश्व
सनअत (अ) = पेशा, व्यापार, कला, शिल्पोद्योग
शनम (अ) = मूर्ति, सुन्दर प्रेमिका
शवाब (अ) = पुण्यकार्य, विवेकपूर्ण कार्य
शौत (अ) = ध्वनि, आवाज
ल शौतु'ल् हमीरी (अ) = गर्दभ चीत्कार
शूरत (अ) = आकार, तुलना
ब शूरत (फा अ) = के जैसा
आलमे शूरत (अ) = बाह्य विश्व, दृश्यमाण विश्व
शूरत बस्तन् (फा अ) = आकार देना, रूप कल्पना, सम्भावना होना
शूरते हाल (अ फ़ा) = वर्तमान अवस्था
शूरतो माना (अ फा) = आकार और अर्थ, देह और आत्मा, [illegible] और यथार्थ
शूफी (फा) = ईश्वर प्रेमी सन्त, पवित्र जन
शूफिये (फा) = एक सूफी
शौलत-शव्लत (अ) = क्रोध, हिंसा, आवेग, आवेश
सैयाद (अ) = व्याध, शिकारी (स०—व्याध)
शीत (अ) = प्रसिद्धि, ख्याति
शैद (अ) = आखेट, मृगया, शिकार के पीछे जाना
शैद कर्दन् (अ फा) = शिकार करना, बन्दी बनाना
शैफ (अ) = बसन्त (अधिक गर्म महीने क़ैज़ कहलाते हैं)
शैक़ल (अ) = चमकाना, रगड़कर चमकाना, रगड़कर चमकानेवाला

ض — द्ज़

द्ज़अफ (अ) = वह दोगुना हो, परमात्मा उसे दुगुना करे
व द्ज़अफ अज्रहु (अ) = और दो गुना हो उसका पुरस्कार
व द्ज़अफ इज्लालहुम (अ) = और बढ़ाये उन दोनों का प्रताप
द्ज़ाइफ सवाब जमीलिहि व हसनातिहि (अ) = और बढ़ा उसकी नेकियों और सत्कर्मों के पुरस्कार को
द्ज़ाया (अ) = नष्ट होना, बेकार जाना
द्ज़ब्त (अ) = संयम, रोकना, उपवास करना
द्ज़जूर (अ) = अशान्त, अधीर, व्याकुल
द्ज़ुहहाक (अ) = जमशेद को हरानेवाला अरब राजकुमार जिसे फ़रीदूं ने हराया
द्ज़िद्द (अ) = हठ, शत्रु, विपक्षी
द्ज़र्रा (अ) = (प्रतिपर्याय ज़र्रा) कण
द्ज़र्ब (अ) = आघात
द्ज़रब (अ) = उसने आघात किया
द्ज़र्बु'ल हबीबि ज़बीबुन् (अ) = प्रेमी की चोट खजूर-किशमिश (जैसी होती है)
द्ज़र्बत (अ) = एक चोट
द्ज़र्बते लाज़िब (अ फा) = एक बोलता हुआ आघात (जो जीवन भर अपनी छाप रखता है)
द्ज़रब जैदुन अम्रन् (अ) = मारा जैद ने अम्र को
द्ज़रूरत (अ) = आवश्यकता
ब द्ज़रूरत (फा अ) = आवश्यकतानुसार
द्ज़रूरते (अ फा) = एक अनिवार्य आवश्यकता
द्ज़रीर (अ) = अन्धा

(ض — द्ज)

द्ज़रीरे (अ फा) = एक अन्धा आदमी
द्ज़ुअफ़ (अ) = निबलता, दुबलता
द्ज़ईफ़ (अ) = वृद्ध, अशक्त, निबल
द्ज़ईफ़ अन्दाम (अ फा) = अशक्त अगवाला (अन्दाम=अगम्)
द्ज़ईफ़े (अ फा) = एक वृद्ध, एवं दुबल
द्ज़ालालत (अ) = सर्वनाश, कुमार्गगामिता
द्ज़म्मा (अ) = उकार चिह्न (॑), मूछें
द्ज़मीर (अ) = अन्तर्मन
द्ज़मीन (अ) = ज़ामिन, प्रतिभू
द्ज़ैग़म (अ) = शेर, सिंह
द्ज़ैमुरान (अ) = एक सुगन्धित जडी

ط — त

ताराम (फा) = गुम्बज
ताराम आला (फा अ) = सर्वोच्च् गुम्बज, स्वर्ग
ताअत (अ) = ईश्वर भक्ति
ताअतश (अ फा) = उसकी (ईश्वर की) भक्ति,-
ताइन (अ) = विरोध करना, गाली बकना
तागी (अ) = बागियों का नेता, आतंककारी
ताक़ (अ) = आँगन, आला
ताक़त (अ) = शक्ति, सहन शक्ति
ताल (अ) = वह लम्बा है-था
ताल लिसानुहू (अ) = उसकी जीभ लम्बी होती है
तालिब (अ) = अर्थी, चाहनेवाला
तालिअ् (अ) = उगता हुआ, भाग्य
ताऊस (अ) = मोर
ताऊस जेबे (अ फा) = मोर पख की सजावट किये हुए
ताऊसी (अ फा) = मयूर विषयक
ताहिर (अ) = शुद्ध
ताइर (अ) = उडनेवाला
ताइरे (अ फा) = एक पक्षी, उडनेवाली कोई चीज
ताइफा (अ) = सग साथ
तिबअ (अ) = प्रवृत्ति, स्वभाव
तबान्चा (फा) = थप्पड (हिन्दी—तमाचा)
तबाइ (अ) = (तबिअत का बहुवचन) प्रकृतियाँ, स्वभाव
तबअ (अ) = प्रवृत्ति, स्वभाव (स०—तत्व)
चार तबअ (फा अ) = चार तत्व (पृथ्वी-तेज-वायु-जल)
तबक़ (अ) = थाली, मकान की मंज़िलें, प्लेटफार्म, एक पत्ता
तबक़े (अ फा) = पूरी थाली
तब्ल (अ) = तबला, ढोल
तब्ला (अ) = बडी लकडी की थाली जिसमें फलफूल सजाकर रखे जाते हैं
तबीब (अ) = चिकित्सक

(ط — त)

तबीअत (अ) = प्रवृत्ति, स्वभाव
तबीअत शिनास (अ फा) = प्रकृतिज्ञ, कुशल चिकित्सक
तराबुलूस (अ) = त्रिपोली नामक शहर
तराबुलूसे शाम (अ फा) = ईराक का त्रिपोली नगर
तर्रार (अ) = जेबकट, तस्कर, चोर
तरब (अ) = आनन्द, उत्साह, उत्तेजना
तरब अंगेज़ (अ फा) = उत्साहवर्धक, आनन्दवर्धक
तर्ह (अ) = ढग, प्रकार, मकान की नींव डालना
ब तर्ह दादन् (फा अ) = लेने को मजबूर करना, ऊँची कीमतें पर देना
तर्ह फ़िगन्दन् (अ फा) = नींव डालना, आचरण करना
तरफ़ (अ) = की ओर, दिशा
तरफ़े (अ फा) = एक दिशा
तरीक़ (अ) = रास्ता, मार्ग, धर्मविश्वास
ब तरीक़े (फा अ) = के मार्ग से, के द्वारा
तरीक़न् (अ) = मार्ग के द्वारा
तरीक़त (अ) = जीवन का ढग, धर्मविश्वास
पीरे तरीक़त (फा अ) = धर्म गुरु
तरीके (अ फा) = एक मार्ग
तआम-तअम (अ) = भोजन, स्वाद, गन्ध
तुमा (अ) = भोजन, व्यालू
तअन-ताना (अ) = ताना, आक्षेप
ताना ज़दन (अ फा) = अपशब्द कहना
ताना ज़नाँ (अ फा) = ताना देनेवाला (शानच् के योग से)
तिफ़्ल (अ) = बच्चा
तिफ़्ली (अ फा) = बचपन
तिफ़्ले (अ फा) = एक बालक
तुफ़ूलियत (अ) = शैशव
तिला (फा) = स्वर्ण, सोने के वक या तार
तलाक़ (अ) = तलाक, विवाह विच्छेद
तलब (अ) = पूछताछ, खोज, दावा, दावत
तलब कर्दन्-नमूदन् (अ फा) = बुलवाना, मँगाना, तलाश करना
तलबगार (अ फा) = तलब करनेवाला
तलबीदन् (फा) = (अरबी से फारसी में गढी गई क्रिया) खोजना
तलअत (अ) = आकृति, अनुकृति, स्वरूप
बि तलअतिहि (अ) = उसकी शक्ल से
तमअ (अ) = लोभ, लालसा, वासना
तमअ दाश्तन्-कर्दन् (अ फा) = लोभ करना
तंज़ (अ) = उपहास, तिरस्कार
तूर (अ) = सिनाई पर्वत, पर्वतमात्र
तूती (फा) = तोती, शुकी
तौअ (अ) = स्वेच्छा से आज्ञानुवर्ती
तौअन् व करहन् (अ) = चाहो या न चाहो

(ط — त)

तूफ़ान (अ) = बाढ़
तूल (अ) = लम्बाई
तवीला (अ) = लम्बी रस्सी, जिसमें घोड़े गधे ऊँट आदि पशु एक पंक्ति में बाँध दिये जाते हैं (फलत: जहाँ तवीला से बँधे पशु रखे जाते हैं उस गोष्ठ को भी तवीला कहते हैं। हिंदी में—तबेला)
तहारत (अ) = शुद्धि, पवित्रता
तीब (अ) = मधुरता, उत्तमता, कोमलता
तीबु'ल् अदा (अ) = (शुद्ध रूप—तैबु'ल् अदा) मधुर स्वरपूर्ण
तीब आमेज़ (अ फा) = मधुरता युक्त
तीबत (अ) = मधुरता, उत्तमता
तीबत आमेज़ (अ फा) = भलाई से युक्त, माधुर्यपूर्ण
तीब लहजते (अ फा) = स्वर माधुरी
ब तीबे नफ़स (फ़ा अ) = प्रसन्न मन से
तैर (अ) = पक्षी
ताइरान् (अ फा) = पक्षीगण
ताइरा (अ) = दिमाग़ की उड़ान, क्रोध
तीरा (फा) = लज्जा, खेद, दु:ख
तैश (फा) = अस्थिरता, मूर्खता, क्रोधावेश
तैफ़ (फ़ा) = भूत-प्रेत, आकार दिखाई पड़ना

ظ — ज़

ज़ालिम (अ) = जुल्म करनेवाला, अत्याचारी
ज़ालिमे (अ फ़ा) = एक अत्याचारी
ज़ाहिर (अ) = प्रकट, वाह्य, व्यक्त
अज़ रूए ज़ाहिर (फा अ) = वाह्य रूप से
ज़राफ़त (अ) = दक्षता, प्रसन्नता
ज़रीफ़ (अ) = चतुर
ज़फ़र (अ) = विजय
ज़िल (अ) = छाया
ज़िल्लु'ल्लाही (अ) = परमात्मा की छाया
ज़ुल्म (अ) = अत्याचार
ज़ुल्मात-ज़ुल्मात (अ) = (जुलमत का बहुवचन) अँधेरा
ज़ुल्मत (अ) = विश्व के उपान्त में एक अन्धकारपूर्ण प्रदेश जहाँ अमृत होने की कल्पना की गयी है।
ज़लूम (अ) = महा अत्याचारी
ज़िम
ज़मा } (अ) = प्यास
ज़माउन् फ़ि क़ल्बी (अ) = मेरे हृदय की प्यास
ज़न्न (अ) = विचार, राय, सन्देह
हुस्ने ज़न्न (अ फ़ा) = सद्‌विचार
हुस्ने ज़न्ने (अ फा) = एक सद्‌विचार
ज़हर (अ) = पीठ, पृष्ठभाग, वाह्य भाग
ज़हीर (अ) = समर्थक, रक्षक

ع — अ

आबिद (अ) = पूजक, भक्त
आबिद फरेबे (अ फा) = योगियों को भी प्रलुब्ध करनेवाली
आज (अ) = हाथी दाँत
आजिज़ (अ) = दुर्बल, निबल, परेशान
आजिज़ आमदन् (अ फा) = अयोग्य सिद्ध होना, परेशान होना
आजिल (अ) = संक्रान्ति कालीन, भङ्गुर, अनित्य
आदत (अ) = स्वभाव, अभ्यास
आदिल (अ) = न्यायशील, समभावी
आर (अ) = लज्जा, अपमान
आरिज़ (अ) = गाल, दुघटना, दुर्भाग्य
आरिफ़ (अ) = बुद्धिमान, चतुर, ईश्वरज्ञ
आरियत (अ) = कर्ज़
आशिक़ (अ) प्रेमी
आशिक़ी (अ फा) = प्रेम सम्बन्ध
आसी (अ) = पापी, अवज्ञा करनेवाला
आफ़ीयत (अ) = स्वास्थ्य, सुरक्षा
आफ़ीन (अ) = (अफ़ी का बहुवचन) क्षमाशील
व'ल् आफ़ीन अनि'न्नास (अ) = और जो क्षमा करते हैं मनुष्यों को
आक़िबत (अ) = समाप्ति, अन्त में
आक़िबतु'ल् अम्र (अ) = मामले की समाप्ति पर
आक़िल (अ) = अक्लमन्द, बुद्धिमान्
आकिफ़ (अ) = ध्यान लगाये हुए, निदिध्यासी
आकिफ़ाने काबा (अ) = काबा में रहनेवाले
आलम (अ) = विश्व
आलिम (अ) = विद्वान्
आलिमु'ल् ग़ैब (अ) = गुप्त रहस्यज्ञ
आलम आराए (अ फ़ा) = विश्व को सँवारनेवाला
आलमे सूरत (अ फा) = दृश्यमाण विश्व
आलमे मअना (अ फा) = अदृश्य विश्व, अध्यात्म लोक
आलमी (अ फा) = विश्व का निवासी, दुनियादार
आलमे (अ फ़ा) = एक दुनिया
आलिमे (अ फ़ा) = एक विद्वान्
आली (अ) = उच्च, महान्
आमि (अ) = (बहुवचन आमियान) सामान्य, साधारण
आमिल (अ) = अमल करनेवाला, कर लेनेवाला, व्याकरण में governing particle
आमिलु'ल् जर्र (अ) = गीरीगाणा, व्याकरण में अनुगामी शब्द पर लगनेवाला कस्र का चिह्न
आम्मी (अ फा) = निरक्षर, बेपढ़ा
आयदत (अ) = लौट रही है, लौटेगी, लौटता है, लौटेगा
अबा (अ) = लम्बा लबादा
इबाद (अ) = (अब्द का बहुवचन) सेवक, चाकर

(६—अ)

इबादी (अ) = मेरे सेवक
लि इबादिहि (अ) = उसके सेवको के लिये
इबादा-इबादत (अ) = प्रार्थना, भक्ति
इबादतिक (अ) = तेरी भक्ति (हे प्रभु!)
इबारत (अ) = लेख, वाक्यविन्यास
अब्द (अ) = सेवक, दास
अब्दी (अ) = दासत्व, सेवा, मेरे सेवक
अब्दु'ल क़ादिर गीलानी (अ) = एक प्रसिद्ध हकीम जो गिलान में जन्मा, और बसरा में मरा
अबद् ना (अ) = हमने प्रार्थना की है
अबद् ना क (अ) = हमने प्रायना की है तेरी
इबरत (अ) = चेतावनी
इबरत गिरिफ्तन् (अ फा) = चेतावनी लेना
उबूर (अ) = नदी पार करना, मार्ग
उबूर फर्दन् (अ फा) = साफ पार करना, माफ करना (हिन्दी—उबरना)
अबीर (अ) = अम्बर, एक सुगन्ध विशेष जो कस्तूरी-चन्दन और गुलाब जल से बनती है
अबीरी (अ फ़ा) = क्या तू अबीर है
इताब (अ) = ताडना, नाखुशी
अजाइब (अ) = (अजीब का बहुवचन) आश्चर्यजनक वस्तुऐं
उज्ब (अ) = गर्व, आत्मछल, आत्मरति
अजब (अ) = विचित्र
बु'ल् अजब कारे (अ फा) = विचित्र काय
चि अजब (फा अ) = क्या आश्चर्य
अजबतर (अ फा) = विचित्रतर
अज्ज़ (अ) = निर्बलता, नपुसकता, असामथ्य
इज्ल (अ) = बछडा
इज्लन् जसदन् (अ) = लाल सोने का बछडा
अजम (अ) = ईरान (शब्दार्थ—विदेश, अरब लोग ईरान को अजम कहते हैं)
अजमी (अ) = परदेशी, ईरानी
अजुज़ (अ) = जाडे के अन्तिम पाँच (किसी किसी के मत से सात) दिन
अजीन (अ) = सीमेन्ट, लेप, गारा
अजीनु'ल् फिल्स (अ) = चूने का गारा, सुघा लेप
अदावा-अदावत (अ) = विद्वेप, शत्रुता
इद्दत (अ) = विघवा अथवा परित्यक्ता नारी को पुनर्विवाह के पूर्व पालनीय चार मास दस दिन की अवधि
अद्ल (अ) = न्याय
अदम-उद्म-उदुम (अ) = अभाव, हानि, अनुपस्थिति
अदू (अ) = शत्रु
अदुव्विक (अ) = तेराशत्रु

(६—अ)

उदूल (अ) = (आदिल का बहुवचन) न्यायकारी लोग
अदील (अ) = समतोल, ऊँट की लादी में दोनो तरफ लदे लोग
अज़ाब (अ) = दण्ड, यातना
अज़ाब'न् नार (अ) = अग्नि दण्ड, सज़ाये आतिश
इज़ार (अ) = मुख, कपोल
उज़्र (अ) = बहाना
उज़्र ख़ास्तन् (अ फा) = क्षमा याचना
उज़्र निहादन् (अ फा) = क्षमा करना
उज़्री (अ) = मेरी क्षमा याचना
इराक़ (अ) = प्राचीन चैल्डिया, इराक़
अरब (अ) = अरब देश, अरब के वासी
अरबद (अ) = मुठभेड, दगा, शराबियो का उपद्रव
अरबी (अ) = अरबो की भापा, अरब विपयक
अरसा (अ) = क्षेत्र, मैदान
अर्ज़ (अ) = दरख़ास्त, बयान, प्रार्थनापत्र
इर्ज़ (अ) = प्रतिष्ठा, चरित्र
अ्रफ ना (अ) = जान चुके हम, जाना हमने
अ्रफ ना क (अ) = जाना हमने तुझे
इर्क़ (अ) = जड या तना
अरक़ (अ) = पसीना, रस, खिचा हुआ अर्क़
इर्क़ुहा (अ) = उसकी जड या तना
अरूस (अ) = दुलहिन
अरूसी (अ फा) = जोडा, विवाह
उरियाँ (अ) = नग्न, लुटा हुआ
अज़्ज़ (अ) = वह महान् था, शानदार
अज़्ज़ नस्रहु (अ) = महान् हो विजय उसकी
इज़्ज़ (अ) = शान, मान
अज़ब (अ) = अविवाहित, कुमार, कुँआरा आदमी
अज़बम् (अ फ़ा) = मै अविवाहित हूँ
इज़्ज़त (अ) = प्रतिष्ठा
ब इज़्ज़त (फा अ) = प्रतिष्ठा से
ब इज़्ज़तर (फा अ) = अधिक प्रतिष्ठा से
उज़लत (अ) = स्वेच्छया कर्म सन्यास, एकान्तवास
अज़्म (अ) = संकल्प, लक्ष्य।
अज़्ज़ व जल्ल (अ) = उसका मान हो, उसकी शान हो
अज़ीज़ (अ) = प्रिय, मिस्र के राजा का विरुद
अज़ीज़े (अ फा) = कोई प्रिय वस्तु, एक प्रिय व्यक्ति
अज़ीमत (अ) = जादू, सकल्प, विदा
उस्र (अ) = कठिनाई, दिक्कत
इन्न मअल् उसरि युसरन् (अ) = अत्यन्त निकट है कठिनाई के आसानी
असल (अ) = शहद

(६—अ)

अआ (अ) = उच्च, महान्
इशा (अ) = सन्ध्या
इश्शाक (अ) = (आशिक का बहुवचन) प्रेमीजन
इशरत (अ) = उपभोग, वैभव, सुख
इश्क़ (अ) = प्रेम
इश्क बाज़ी (अ फा) = प्रेम का खेल खेलना
इश्क बाज़े (अ फ़ा) = एक प्रेमी
असा (अ) = डण्डा, दण्ड
उसारा (अ) = रस, निकला हुआ स्वरस (स०—स्वरस)
अस्र (अ) = आयु, काल
इस्मत (अ) = पवित्रता, सतीत्व, कौमार्य
इस्यान (अ) = पाप, पापी, विद्रोह, विद्रोही
अज़ुद (अ) = कन्धे से कुहनी तक का भाग, बाहु
अज़ुदु'द् दौलति'ल् ज़ाहिरति (अ) = जयिष्णु साम्राज्य की बाहु
उदव (अ) = अवयव (स०—अवयव)
उद्वे (अ फा) = एक अवयव
अता (अ) = देना, उपहार
अत्तार (अ) = सुगन्धित द्रव्यो-औषधियो का विक्रेता
अतशन् (अ) = प्यास से (अरबी—अतश, स०—तृषा)
अज़ीम (अ) = बडा, विशाल
अफाफ (अ) = सयम, पवित्रता
अफ्व (अ) = क्षमा
अक़ब (अ) = एडी, पार्ष्णि, पिछला, पीछे
दर अक़ब (फा अ) = तत्पश्चात, फलत
उक़बा (अ) = अत, पुरस्कार, भविष्यत् जीवन
अक्द (अ) = गांठ, गुच्छा, शपथपत्र
अक्द बस्तन् (अ फा) = गांठ बांधना
अक्द निकाह (अ फा) = विवाह बन्धन
उक्दा (अ) = विवाह ग्रन्थि
अक्ल (अ) = बुद्धि
उक़ूबत (अ) = दण्ड, यातना
उक़ूल (अ) = (अक्ल का बहुवचन) बुद्धियाँ
उक़ूलिहिम् (अ) = उनकी बुद्धियाँ
अला क़दरे उक़ूलिहिम् (अ) = उनकी बुद्धिया की सीमा के अनुसार
अक्स (अ) = प्रतिच्छाया, बिम्ब
फि अक्सि'द्दुजा (अ) = अन्धकार के विरुद्ध, प्रकाश में
अलिया-अला (अ) = वह महान् था
इलाज (अ) = चिकित्सा, उपचार
अलामत (अ) = चिह्न, विशेषता
अल्लामा (अ) = सबसे ज्यादा विद्वान् विद्वत्तम
अलानियत (अ) = बाह्य विभाग
अलानियती हाज़ा (अ) = यह मेरा बाहरी रूप है

(६—अ)

इल्लत (अ) = कारण, दुर्घटना
इल्लते (अ फा) = एक कारण
अलफ ज़ार (अ फा) = चरागाह, मैदान
उलिक़त (अ) = लटकाया गया, लटके हुए
उलिक़त बि'श्शजरि'ल् अख़ज़र नार (अ) = हरे पेड से आग लटकी हुई
इल्म (अ) = विद्या
अलम (अ) = झण्डा
उलमा (अ) = (आमिल का बहुवचन) विद्वान् लोग
अलम शुदन् (अ फा) = प्रसिद्ध होना
इल्मे महासबा (अ फ़ा) = गणित विद्या
उलुव्व (अ) = ऊँचाई, महानता
उलुव्वहु (अ) = उसकी महानता
उलूम (अ) = (इल्म का बहुवचन) विद्या की शाखाएं
उलवी (अ) = महान् विद्याए
अलवी (अ) = अली वशीय
अलवीयम् (अ) = मैं अली के वश का (सैयद) हूँ
अला (अ) = के ऊपर, के विरुद्ध
अला दीनि मुलूकिहिम् (अ) = उनके (अपने) राजाओं को धर्म के अनुसार
अल'द्दवाम (अ) = सदैव, निरन्तर
अल'ल् इबाद (अ) = सेवको के विरुद्ध
अल'ल् फितरत (अ) = सच्चे धर्म में
अला क़दरि (अ) = अनुपात स, के अनुसार
अल'ल् लैलि (अ) = रात भर, रात में
अल'ल् मुसव्विफि (अ) = लेखक पर
उलिया (अ) = ऊँचाई, शान
अली (अ) = मुहम्मद साहब के दामाद
अलैया (अ) = मुझ पर
औला (अ) = उच्चतर (आला का तुलनात्मक)
यदे औला-उलिया (अ) = ऊँचा हाथ, देनेवाले का हाथ
अलैक (अ) = तुझ पर (कर्तव्य) है
मा अलैक (अ) = जो तुझ पर (फर्ज़) है
अलैहि (अ) = उस पर (फ़र्ज़) है
अलैहा (अ) = उस (स्त्री) पर (फ़र्ज़) है
अलैहि'स सलाम (अ) = उस पर शान्ति हो
अम्म (अ) = चाचा
बनी अम्म (अ) = चचेरे भाई
इमारत (अ) = इमारत, भवन
उम्दा-उम्दत (अ) = आधार
उम्दतु'ल् ख़वास (अ) = सामन्तो का आधार, प्रधान मन्त्री
उम्दतु'ल् मुलूक (अ) = राजाधिराज
उम्र (अ) = आयु

(६—अ)

उमर (अ) = हज़रत उमर, दूसरे खलीफा
अम्रन् (अ) = अम्र को
अम्र (अ) = एक नाम
अम्रो उस (अ) = एक राजा (सम्राप—अमरसिंह)
उम्रे (अ) = एक आयु
अमल (अ) = आचरण
अमिल (अ) = (उसने) किया
मन् अमिल सालिहन् (अ) = जिसने किया भला
अमल फरमूदन् (अ फा) = काम मे नियुक्त करना
उमूम (अ) = समस्त विश्व, सम्प्रदाय
अल'ल् उमूम (अ) = आम तौर पर
अमीम (अ) = सावजनीन
अन (अ) = दूर, से (स०—अन्यत्र—आत्)
अना (अ) = परेशानी, दु ख
उन्नाब (अ) = एक प्रकार का लाल बेर जैसा फल
उन्नाबरग (अ फा) = उन्नाब के रग का
इनाद (अ) = हठ, झगडा
अनाकिद (अ) = (अनकुद का बहुवचन) फलो के गुच्छे
इनान (अ) = लगाम
इनायत (अ) = सहायता, कृपा
अम्बर (अ) = एक सुगन्ध
इन्द (अ) = से, साथ, के समय, के निकट
इन्द'ल्लाहि (अ) = ईश्वर की दृष्टि मे
इन्द'ल् आयान (अ) = सामन्तो के सामने
व इन्द हुबूबि'न् नाशिरति (अ) = मेघ विडम्बक पवनो के चलने के समय
अन्दलीब (अ) = बुल्बुल
अनफुवान् (अ) = सौन्दर्य, वीरता, यौवन
अनकबूत (अ) = मकडी, लूता
अन्हु (अ) = उसका, उसका
अन्हु राजिन् (अ) = उससे राज़ी हो
अवाकिब (अ) = (अकीबत का बहुवचन) परिणाम, नतीजे
अवाक़िबहु (अ) = उसके परिणाम
अवाम (अ) = (आम का बहुवचन) साधारण जन
अवामु'न्नास (अ) = सामान्य जनता
अवाइब (अ) = (ऐब का बहुवचन) दोष, कलक
अवाइद (अ) = (ऐदत का बहुवचन) प्रतिफल, लाभ
ऊद (अ) = ऊद लकडी, सुगन्धित लकडी
एवज़ (अ) = प्रतिनिधि, समकक्ष
औन (अ) = सहायता
अहद (अ) = प्रतिज्ञा, समझौता, वायदा, शपथ
उह्दा (अ) = पद-पदवी, उपकार, अभियोग ।

(६—अ)

अज़ उह्दा बदर आमदन् (फा) = ओहदा से बाहर निकलना, किसी के अभियोग या एहसान से अपने को मुक्त करना
ऐयारी (अ फा) = धोखा, चालाकी, चालबाज़ी
इयाल (अ) = (अय्यिल का बहुवचन) परिवार, बच्चे
ऐब (अ) = दोष, कलक
ऐब कर्दन् (अ फा) = दोष लगाना, आरोप लगाना
ऐबजू (अ फा) = छिद्रान्वेषी, आलोचक
ऐबे (अ फा) = एक दोष
ईद (अ) = एक त्यौहार
ईदुज्जुहा (अ) = इब्राहिम के पुत्र इस्माइल के बलिदान की स्मृति मे होनेवाला बलिदान
ईस (अ) = (आयस का बहुवचन) ऊँटो के रग का, ऊँटो
ईसा (अ) = ईसा मसीह
ऐश (अ) = जीवन, आनद, सुख, साज-सजा
ऐन (अ) = आँख; स्रोत, सत्व-पदार्थ, ठेठ
मिन् ऐने जीरानी (अ) = मेरे पडोसी की नज़र मे
ऐनु'ल् क़ित्र (अ) = अलकतरा का सार
उयूब (अ) = दोष, कलक (ऐब का बहुवचन)

६—ग

ग़ार (अ) = गुफा, खोह (स०—गह्वर)
ग़ारत (अ) = डकैती, लूटना
ग़ाज़ी (अ) = योद्धा, विजेता, नास्तिको से लडनेवाला
ग़ास (अ) = वह डूब गया
गास फ़ि'ल् कुसबि (अ) = (उसको जो) रेत की राशि मे डूब गया
ग़ाफिल (अ) = उन्मत्त, लापरवाह
गालिब (अ) = विजेता, चढबैठू
ग़ालिब आमदन् (अ फा) = चढ बैठना
ग़ालिब औकात (अ फा) = अधिकाश अवसरो पर
गायब (अ) = अनुपस्थित, अदृश्य
गायत (अ) = चरम, चरम सीमा
ब गायत (फा अ) = चरम सीमा पर
गिब्बन् (अ) = हर दूसरे दिन, एक दिन छोडकर
गुबार (अ) = धूल, धुन्ध
गद्दार (अ) = ग़दर करनेवाला, विद्रोही, धोखेबाज़
गद्र (अ) = दगा, विद्रोह
गुज़ीत (अ) = (तू) पोसा गया है
गुराब (अ) = कौआ
गुराबु'ल् बैनि (अ) = वियोग के (सूचक) कौए
गरामत (अ) = वह कर्ज जिसे चुकाना फर्ज है, जुर्माना
ग़राइब (अ) = (ग़रीब का बहुवचन) असाधारण विचित्र वस्तुए
गुरबा (अ) = (ग़रीब का बहुवचन) अजनबी, मित्रहीन, दीन
गिरबाल (अ) = चलनी, गालनपात्र

(ع — ग़)

ग़ुर्बत (अ) = विदेशयात्रा, प्रवास, देश निकाला
ग़र्ज़ (अ) = स्वार्थ, प्रवृत्ति, द्वेष, संक्षेप में
ग़र्ज़े (अ) = एक द्वेष, अभिप्राय यह कि
ग़ुर्फ़ा (अ) = ऊपर की मंज़िल का कमरा, छज्जा
ग़र्क़ (अ) = डूबना
ग़र्क़ शुदन् (अ फ़ा) = ग़र्क़ होना
ग़ुरूर (अ) = दर्प, गर्व
गिर्रा (फ़ा) = (अरबी में ग़र्रा) छलित, आरोपित, घमण्ड
ग़रीब (अ) = परदेशी, दीन, विचित्र
ग़रीबी (अ फ़ा) = अजनबीपन, दीनता
ग़रीबे (अ फ़ा) = एक ग़रीब
ग़रीक़ (अ) = डूबता हुआ, डूबा हुआ
ग़िरीव (फ़ा) = चीत्कार, ढोल की ढमाढम
ग़ज़्ज़ाली (अ) = एक प्रसिद्ध दार्शनिक
ग़ज़ल (अ) = प्रेमगीत ('माशूक़ गुफ़्तन्-ग़ज़ल')
ग़ुस्सा (अ) = क्रोध
ग़ुसून (अ) = (ग़ुस्न का बहुवचन) कोमल शाखाएँ
ग़ज़वान (अ फ़ा) = युद्ध
ग़ुफ़रान (अ) = पापमुक्ति, क्षमा
ग़फ़र्तु लहू (अ) = मैंने उसे क्षमा किया
ग़फ़लत (अ) = प्रमाद, लापरवाही
ग़फ़ूर (अ) = क्षमाशील (अर्थात् परमात्मा)
ग़ुलाम (अ) = सेवक, दास
ग़ल्वा (अ) = उपवन, उद्यान
ग़ल्बत-ग़लबा (अ) = विजय
ग़ल्बा कर्दन् (अ) = जीतना
ग़ल्ला (अ) = अनाज, धान्य
ग़ल्त (अ) = अशुद्ध, भूल
ग़ल्तीदन् (फ़ा) = भूल करना, लुढ़कना
ग़लीज़ (अ) = गन्दा, कठोरचित्त, पाशविक
ग़म (अ) = दुःख, क्षोभ
ग़म ख़ुरदन् (अ फ़ा) = दुःख मनाना
ग़म दाश्तन् (अ फ़ा) = दुःख सहना
ग़मे फ़र्दा (अ फ़ा) = कल का दुःख, अनागत की चिन्ता
ग़म्माज़ (अ) = अभियोग लगानेवाला, खबर देनेवाला, संकेत करनेवाला
ग़मत (अ फ़ा) = तेरी चिन्ता
ग़मज़ा (अ) = प्यार की नज़र, प्रेम का संकेत
ग़मे (अ फ़ा) = एक दुःख
ग़नाइम (अ) = (ग़नीम-ग़नीमत का बहुवचन) शत्रु
ग़नी (अ) = धनी, स्वतन्त्र
ग़नीतर (अ फ़ा) = धनिकतर
ग़नीमत (अ) = लूट का धन, उपहार, शत्रुओं से लूटा धन

(ع — ग़)

ग़नीमत शुमुदन् (अ फ़ा) = मूल्यवान् मानना
ग़वाशी (अ) = (ग़ाशियत का बहुवचन) ज़ीन का ढाँकने का कपड़ा
हामिल'ल् ग़वाशी (अ) = ज़ीन का कपड़ा ढोनेवाला
ग़व्वास (अ) = मोती निकालनेवाला, ग़ोताख़ोर
ग़ौर (अ) = गम्भीर विचार
ग़ोता (अ) = डुबकी
ग़ोता ख़ुदन (अ फ़ा) = डुबकी मारना
ग़ार (अ) = गेढा (ग०—गार)
ग़ियास (अ) = सहायता, सहायक
ग़ियासु'ल् इस्लाम (अ) = इस्लाम का रक्षक
ग़ैब (अ) = अदृश्य, आधिदैविक सम्पत्ति, अदृष्ट
ग़ैबदाँ (अ फ़ा) = सर्वज्ञ, रहस्यज्ञ
ग़ैबत (अ) = वियोग, अन्धा होना
ग़ीवत (अ) = चुग़ली करना
ग़ार (अ) = पराया, शत्रु
ग़ैयर (अ) = (वह) बदला, (उसने) बदल दिया
व'श्शैबु ग़ैयरनी (अ) = और पलित ने मुझे बदल दिया है
ग़ैरत (अ) = ईर्ष्या, लज्जा
ग़ैर मानीइन् (अ) = नहीं मना करनेवाला है
ग़ैरी (अ) = मेरे अतिरिक्त
ग़ैज़ (अ) = क्रोध

ف — फ

फ (अ) = तो, पस, अत
फ़ाजिरा (अ) = (फ़ाजिर का स्त्रीलिंग) दुराचारिणी
फ़ाहिश (अ) = (स्त्रीलिंग—फ़ाहिशा) अमर्यादित, धृष्ट, घटिया
ज़ने फ़ाहिशा (फ़ा अ) = फ़ाहिशा औरत
फ़ाख़िर (अ) = गर्व करनेवाला, वीर, परंपराप्रिय
फ इज़ा (अ) = अत, तब
फ़ार्स-फ़ारस (फ़ा) = ईरान देश
फ़ारिस (अ) = घुड़सवार
फ़ारसी (फ़ा) = फ़ारस का निवासी
फ़ारिग़ (अ) = मुक्त, निश्चिन्त
फ़ासिद (अ) = बुरा, चरित्रहीन, फ़साद करनेवाला
फ़ासिक़ (अ) = अयोग्य, भ्रष्ट, पापी, दुराचारी
फ़ाज़िल (अ) = विद्वान्, प्रतिभाशाली (स०—प्राज्ञ)
फ़ाज़िलतर (अ फ़ा) = विद्वत्तर
फ अवाल्लु (अ) — [illegible]
फ़ाक़ा (अ) = उपवास, अनशन
फ़ाम (फ़ा) = रंग
फ इन् (अ) = और यदि
फ अन्त (अ) = तब तू
फ अन्त मुहारिबु (अ) = तब तू युद्ध करनेवाला होगा

(ف — फ)

फायदा (अ) = लाभ, उपयोग
फ इन्न'ल् फायदत (अ) = क्योंकि यह लाभ
फाइक़ (अ) = श्रेष्ठ
फुतादन् (फा) = गिरना (स०—पतन)
फुतादा (फा) = गिरा हुआ (स०—पतित)
फत्ह (अ) = विजय
फतहा (अ) = स्वरचिह्न (-), दाढी
फतहे (अ फा) = एक विजय
फुतद (फा) = गिरता है, गिरेगा
फितना (अ) = उपद्रव
फितना अगेज (अ फा) = उपद्रव भडकानेवाला
फुतुव्वत (अ) = उदारता, मर्दानगी
फतवा (अ) = मुफ्ती की न्याय व्यवस्था
फुजूर (अ) = दुष्टता, दुराचार
फख़् (अ) = शान, अहकार, गर्व
फख़्'द्दीन (अ) = धर्म की शान, एक नाम
फख़्री (अ) = मेरी शान,
फिदा (अ) = किसी के प्रति भक्ति, बलिदान, भक्तिधन
फर्र (फा) = शान, ठाठबाट
फरा (फा) = आगे आगे, सामने
फुरात (अ) = फरात नदी
फरा चग आवुर्दन् (फा) = किसी के चगुल मे फँसना
फराख़ (फा) = विशाल
फराख़ रू (फा) = खुला मुख, चौडे मुहवाला
फराख़ रवी (फा) = विशालगति, तीव्रगति
फराख़ सुखन (फा) = मुखर, वातून
फराख़ी (फा) = विशालता, पर्याप्ति
फरार-फिरार (अ) = भागा हुआ, भगोडा
फरा रसीदन् (फा) = पहुँचना, घेरना
फरा रफतन् (फा) = बाहर जाना
फराज (फा) = ऊँचा, ऊँचाई, प्रवेश, अतरग, वन्द
फराज आमदन् (फा) = पास आना, अन्दर आना
अज दर फराज आमदन् (फा) = द्वार मे आना
फिरासत (अ) = चतुरता, प्रतिभा
फिरासते (अ फा) = एक चतुरता
फर्राश (अ) = फर्श बिछानेवाला (फर्राश अवसर जल्लाद का काम भी करते थे अत —) जल्लाद
फिराग़ / फराग़त (अ) = परिश्रम से विश्राम, शान्ति, विराम
फिराक़ (अ) = वियोग, विरह
फरा गिरिफतन् (फा) = समेटना
फरामुश-फरामोश (फा) = भूलना, विस्मृति, विस्मृत
फरामुशत (फा) = तुझे भुलाना

(ف — फ)

फरामूश (फा) = विस्मृत
फरामूश कर्दन् (फा) = भूलना
फरावान (फा) = विशाल, ढेर सारा, पर्याप्त
फराहम (फा) = साथ साथ, उपलब्ध
फराहम आवुर्दन् (फा) = सग्रह, चयन
फराहम शुदन् (फा) = एक दूसरे के समीप होना
फरबिह् (फा) = मोटा (स०—पीवर)
फरबिही (फा) = मुटापा
फरबिहे (फा) = एक मोटा आदमी
फरतूत (अ) = सठियाया हुआ बुड्ढा
फर्ज (अ) = स्त्री-पुरुषों के गुप्ताङ्ग
फर्जाम (फा) = परिणाम (स०—परिणाम)
फरह् (अ) = प्रसन्नता
फर्रुख़ (फा) = प्रसन्न, भाग्यवान्
फर्खुन्दा (फा) = सम्पन्न, सुखी
फर्खुन्दा ताली (फा अ) = प्रसन्न भाग्यवाला
फर्दा (फा) = आनेवाला कल, आगामी जीवन
फर्जंद (फा) = पुत्र
फर्जंद वर ख़ास्ता (फा) = वडे वच्चोवाला
फर्जीन (फा) = शतरज का फर्जी
फिरिस्तादन् (फा) = भेजना, रवाना करना (स०—प्रेषण)
फर्सग (फा) = एक कोस के वरावर नाप
फर्सूदा (फा) = थकित, निराश
फर्श (फा) = कालीन, फर्श वनाना
फरिश्ता (फा) = देवदूत
फरिश्ताए (फा) = एक देवदूत
फरिश्ता ख़ू (फा) = देवदूत की प्रकृतिवाला
फुरसत (अ) = अवसर, उपकार, वरदान
फर्ज (अ) = कर्त्तव्य, दैवी आदेश
फर्त (अ) = अत्यन्त, अधिक, आधिक्य
फिरऔन (अ) = मिस्र के प्राचीन राजाओ का विरुद
फिरऔनी (अ) = गर्व, राजमद, अपने को भगवान मानना
फर्क़ (अ) = भेद, अन्तर, विभेद
फरमान (फा) = आदेश
फरमान वुर्दन् (फा) = आदेश पालन
फरमान दादन् (फा) = आदेश देना
फर्मा वरदार (फा) = आज्ञा पालक
फर्मां वरदारम् (फा) = मैं आज्ञापालक हूँ
फरमान दिह (फा) = आज्ञा देनेवाला
फरमूदन (फा) = आज्ञा देना-कहना
फरमूदा (फा) = आज्ञापित
फरग (फा) = (Franc-फ्रान्सवासी, ईरान और भारत में 'फरग' हो गया) यूरोपियन-गोरा

(ف — फ़)

फरो-फिरो-फ़ुरो (फा) = नीचे, निम्न
फरो बुर्दन् (फ़ा) = नीचे ले जाना, छोटा बनाना, डुबकी लगाना
फरो बस्तन् (फा) = बांधना, रोकना बन्द करना
फरो पोशीदन् (फ़ा) = कपडे पहनना
फरोतर (फा) = निम्नतर
फरोख़्तन् (फा) = बेचना, रोशनी करना
फरो ख़्वान्दन् (फा) = कह डालना
फिरोद आमदन् (फा) = नीचे उतरना
फिरोद आवुर्दन् (फा) = नीचे उतारना
फरो रफ़्तन् (फा) = नीचे जाना, श्वास खींचना, डूबना
फरोश (फा) = बेचनेवाला, विक्रेता
फरो ग़ल्तीदन् (फा) = नीचे लुढकना
फरो कोफ़्तन् (फा) = टक्कर देकर गिराना, कोंचना
फ़रो गुज़ाश्तन् (फा) = से गुज़र जाना, अनदेखा करना
फरो गुफ़्तन् (फा) = बात करना
फरो मान्दन् (फ़ा) = पिछडना, पीछे रहना
फरो माया (फा) = नीच, नीच कुलोत्पन्न
फ़रो निशान्दन् (फा) = शान्त करना
फरो निशस्तन् (फा) = बुझाना, शान्त करना
फरो हिश्तन् (फा) = नीचे लटकाना
फरो हिश्ता (फ़ा) = नीचे लटका हुआ
फरो हिलीदन् (फ़ा) = निकालना
फरहंग (फा) = बुद्धिमत्ता, प्रतिभा, शब्द कोष, संस्कृति
फरियाद (फ़ा) = सहायता के लिये चिल्लाना, शिकायत
फरियाद रस (फा) = फरियाद पहुँचा हुआ, सहायक
फरियाद रसी (फा) = सहायता
फरेब (फ़ा) = धोखा, चालाकी
फरेबीदन् (फा) = धोखा देना
फ़रीदूँ (फा) = ज़ह्हाक से फारस को छुडानेवाला एक ईरानी राजा
फरेफ़्तन् (फा) = धोखा देना
फरीक़ (अ) = वर्ग, दल, पक्ष
फ़ुज़ूदन् (फा) = बढ़ाना, कई गुणा करना
फ़ुज़ून (फ़ा) = बढ़ा हुआ
फ़ुज़ूनी (फा) = वृद्धि
फसाद (अ) = पाप, दुष्टता
फ़ुसहत (अ) = फैलाव, स्थान, प्रसन्नता
फिस्क़ (अ) = दुराचार
फ़िसोस (फ़ा) = (शुद्ध रूप—अफ़सोस) शोक
फ़ुसून (अ) = धृष्टता, आचार
फ़ुसून (फा) = (शुद्ध रूप—अफ़सून) कल्पना, कल्पना में धोखा खाना
फ़िशान्दन् (फा) = छिडकना
फ़साहत (अ) = वाग्मिता

(ف — फ)

फस्ल (अ) = समय, ऋतु, अध्याय
फस्ले (अ फा) = एक अध्याय, एक ऋतु
फसीह (अ) = धारा प्रवाह वाणी
फ़ज़ाइल (अ) = (फ़ज़ीलत का बहुवचन) गुण, महानता
फ़ज़्ल (अ) = कृपा, विद्या
फ़ुज़लाय (अ) = (फाज़िल का बहुवचन) ज्ञानी जन
फ़ज़्ला-फ़ुज़्ला (अ) = अवशेष, फालतू भाग
फ़ुज़्ला ए रज़ (अ फा) = अंगूर लता के फालतू पत्ते आदि
फ़ुज़ूल (अ) = अनावश्यक, धृष्टतापूर्ण, अधिक
फ़ुज़ूल (अ) = अनावश्यक, धृष्टतापूर्ण, अधिक
फ़ज़ीहत (अ) = अपमान, बदनामी
फ़ज़ीलत (अ) = महानता, श्रेष्ठता
फ़ित्रा-फितरत (अ) = इस्लाम धर्म, सृष्टि, रमज़ान में रोज़ा खोलने के अवसर पर दी जानेवाली दक्षिणा
फितरत (अ) = समझ, बुद्धि
फ़ैल (अ) = चरित्र, कर्म
फ अलैहा (अ) = तो यह है उसके विरुद्ध
फ़िग़ाँ (फा) = शिकायत, रोना-पीटना
ब फ़िग़ाँ (फ़ा) = निराशा में
ब फ़िग़ाँ आमदन् (फा) = रो पडना, चीख पडना
फ क़द (अ) = इसलिये, अतः, बेशक
फ क़त्तु (अ) = मैं भूल गया, मैंने खो दिया
फ क़त्तु ज़मान'लू वस्लि (अ) = और इसलिये मैंने खो दिया मिलन का समय
फ़क़्र (अ) = निर्धनता, दरिद्रता
फ़ुक़राय (अ) = (फ़क़ीर का बहुवचन) निर्धन लोग
अल् फ़क़्रि'ल् मुक़िद्दि (अ) = घोर निर्धनता के कारण
अल् फ़क़्रु सवादु'ल वज्हि फ़ि'द्दारैन (अ) = निर्धनता मुख की कालिमा है दोनों लोकों में
फ़क़्रुश् (अ फा) = उसकी दरिद्रता
अल फ़क़्रु फख़्री (अ) = निर्धनता मेरा गौरव है
फ़ क़ुल्तु (अ) = तब मैंने कहा
फ़क़ीर (अ) = निर्धन
फ़क़ीरा (अ) = निर्धन स्त्री
फ़क़ीह (अ) = इस्लामी कानून जाननेवाला, धाराशास्त्री
फ़िक्र (अ) = विचार, कल्पना
फ़िकरा-फ़िकरत (अ) = विचार, विचारणीय विषय
फ़ कैफ़ (अ) = तो क्यों
फ़िगन्दन (फा) = (शुद्ध रूप—अफ़गन्दन्) रोना-पीटना
फ़ ला तुतिअ् हुमा (अ) = तो उनकी आज्ञा मत मान
फलाह् (अ) = सम्पत्ति, वैभव, कल्याण
फल्लाह् (अ) = पति, स्वामी
फ़ुलान् (अ) = अमुक, ऐसा

(ف — फ)

फुलानम् (अ फा) = मैं अमुक हूँ
फुल्क (अ) = जलयान, जहाज
फलक (अ) = आकाश, स्वर्ग
फ लिर्'रहमान (अ) = दयालु (प्रभु) के ऊपर है
फ लम्मा (अ) = और जब
फ लि नफ़्सिहि (अ) = तब यह उसकी भलाई के लिये है
फ लैत (अ) = तो काश!
फ लैस (अ) = अत नहीं
फ मा अलैक (अ) = तो यह तुझ पर नहीं है, तो वह तेरा दोष नहीं है
फ मन् (अ) = तो कौन?
फ मिन् (अ) = तो से
फुनून (अ) = (फन का बहुवचन) विज्ञान, विद्याएँ
फ़्वारिस (अ) = (फारिस का बहुवचन) घुड़सवार लोग
फवाकिह (अ) = (फाकिहत का बहुवचन) फल
फवायद (अ) = (फायदत का बहुवचन) लाभ
फौत (अ) = मृत्यु
फौत शुदन् (अ फा) = मरना, खो जाना
फूलाद-फौलाद-पूलाद (फ़ा) = इस्पात
फहम (अ) = समझ
फह्मीदन् (फा) = (अरबी 'फह्म' से गढ़ी गयी फारसी धातु) समझना
फ हुव (अ) = और इसीलिये वह
फ हुव हस्बुहु (अ) = तब यह उसके लिये काफी होगा
फी (अ) = में, बीच में, के लिये
फिल् जुमला (अ) = संक्षेप में
फिलहाल (अ) = अभी, अभी तो
फिरोजा (फा) = भाग्यवान्, एक रत्न जो सौभाग्यदायक माना जाता है
फील (अ) = हाथी
व'ल् फीलु खीफतुन् (अ) = और हाथी हराम (अमेध्य) है
फैलसूफ (अ) = दार्शनिक
फीना (अ) = हमारे बीच में
फीहि (अ) = उसके बीच में, उसमें
फीहिम् (अ) = उनके बीच में, उनमें

ق — क

क़ाबिल (अ) = योग्य, ग्रहणशील
क़ाबिला (अ) = धात्री, उपचारिका, बच्चा जनानेवाली
क़ातिल (अ) = मारक, घातक
क़ादिर (अ) = समर्थ, विधाता
क़ारूँ (अ) = हज़रत मूसा का चचेरा भाई जो बड़ा धनी था
क़ासिद (अ) = सन्देशवाहक
क़ासिर (अ) = थोड़ा, कम, अभावमय, अपर्याप्त
क़ाज़ी (अ) = न्याय करनेवाला

(ق — क)

क़ाअ (अ) = मैदान, समतल भूमि
क़ाए बसीत (अ फा) = विशाल मैदान
क़ाइदा (अ) = नियम, ढंग
काफ़िला (अ) = यात्रीदल
क़ाल (अ) = (क़ौल से व्युत्पन्न) उस ने कहा
क़ाल'ल्लाहु तआला (अ) = कहा परमात्मा ने
क़ालिब (अ) = क़ल्ब (आत्मा) को धारण करनेवाला, देह
क़ालू (अ) = उन्होंने कहा है
क़ामत (अ) = स्थिति, शक्ल, लम्बाई, पुरुषा (६ फीट का नाप)
क़ानअ (अ) = सन्तुष्ट होता हुआ, सन्तुष्ट
क़ाहिर (अ) = विजेता (स्त्रीलिंग में काहिरत)
अल क़ाहिरा (अ) = विजेत्री, क़ाहिरा नगरी
काइम मुक़ाम (अ) = उपाध्यक्ष, उत्तराधिकारी
कबा (अ) = हलका ऊनी लबादा
क़बा ए पोस्तीन (अ फा) = पोस्तीन-फर-का लबादा
क़बाला (अ) = लिखित समझौता
क़ुब्ह (अ) = बदशक्ली, कुरूपता, निर्लज्जता (म०—शुभ का प्रति पर्याय-कुभ)
क़ब्ज़ा (अ) = अधिकार
क़ब्ल (अ) = अग्रभाग, पहले
क़िबल (अ) = हिस्सा, पक्ष, दिशा
क़ब्लु'ल् मसाइब (अ) = विपत्तियों के (आगमन के) पूर्व
अज क़िब्ले मशरिक़ (फा अ) = पूर्व दिशा से
किबला (अ) = प्रार्थनोन्मुख्य दिशा (मुसलमानों में मक्का, ईसाइयों और यहूदियों में जरूसलम)
क़बूल (अ) = स्वीकार, स्वीकृति
क़बूली (अ फा) = स्वीकार्य, स्वीकृति
क़बीह (अ) = अरुचिकर, घृण्य, अपमानकर
क़बीला (अ) = वर्ग, कुटुम्ब, पत्नी
क़ताल (अ) = आत्मा, जीवन का अवशेष, शक्ति, देह
क़िताल (अ) = लड़ना, वध करना, युद्ध करना
क़त्ल (अ) = वध
क़ुह्बा-क़ह्बा (अ) = वेश्या, कुलटा, पुंश्चली
क़द (अ) = (क्रियाओं के पूर्व लगनेवाला पद) पहले ही, अब, वस्तुत, निश्चितत, सम्भवत, कदाचित्
क़द्द (अ) = क़द, ऊँचाई
क़दह (अ) = प्याला, पानपात्र
क़द्र (अ) = शक्ति, प्रसिद्धि, पदवी, मूल्य, योग्यता
क़िद्र (अ) = पात्र
क़दर (अ) = परिमाण, मूल्य
लैलतु'ल् क़द्र (अ), शबे क़द्र (फा अ) } = रमजान की अन्तिम दस रातों में से एक रात, जिब्राईल ने इसी रात से कुरान उतारनी शुरू की थी।

(क़—क)

क़द्रन् (अ) = क़द्र से
क़ुदरत (अ) = शक्ति, क्षमता
ब क़ुदरत (फा अ) = तेरी शक्ति से
अल क़द्रु मजफ़ूज़ु (अ) = क़द्र (इज्जत) उतर गयी
अल् क़िद्रु मुतसिबुन् (अ) = चिद्र (हाँडी) चढ गयी
क़द्रे (अ फा) = थोडा सा
क़ुदस (अ) = जरूसलम
क़दम (अ) = चरण, चलना
क़दम बर दाश्तन (अ फा) = पैर उठाना, चलना
क़दम रंजा शुदन् (अ फा) = चलने का कष्ट उठाना
क़द्दिम (अ) = पहले भेज
क़द्दिमि'ल् ख़ुरूज क़ब्ल'ल् वुलूज (अ) = घुसने से पहले निकलने का इन्तज़ाम कर
क़दमे (अ फा) = एक क़दम
क़दमे चन्द (अ फा) = कुछ कदम
क़ुदूम (अ) = आगमन, अवतरण, आविर्भाव
क़दीम (अ) = प्राचीन
क़रार (अ) = स्थिरता, दृढ़ता, शान्ति, समझौता वायदा
बर क़रार (फा अ) = दृढ, स्थिर, मजबूत नीववाला, अपरिवर्तित
क़ुराज़ा (अ) = स्वर्णखण्ड, धातुखण्ड
क़ुरआन (अ) = मुसलमानो की धर्मपुस्तक
क़राइन (अ) = (क़रीना-क़रीनत का बहुवचन) चिह्न, इशारे
क़ुरबान (अ) = बलिदान
क़ुरबानी (अ) = बलि के लिये नियत
क़िरबत (अ) = मशक, चममय जलपात्र
क़ुरबत (अ) = निकटता, सामीप्य, रिश्ता
क़िरबती (अ) = मेरी मशक
क़ुरबा (अ) = रिश्तेदारी, सम्बन्ध
क़ुर्स (अ) = थाल, मण्डल
क़ुर्से ख़ुर्शीद (अ फा) = सूर्य मण्डल
क़र्ज़ (अ) = ऋण
क़रीन (अ) = जुड़ा हुआ, मित्र
क़रिया (अ) = गाँव
क़ज़्ज़ (अ) = कच्चा रेशम
क़ज़्ज़ आगन्द (अ फा) = रेशम भरे हुए वस्त्र जो युद्ध में कवच की तरह पहने जाते थे
क़सीम (अ) = सुन्दर
क़स्साब (अ) = खटीक, पशुओं को मारकर उनका मास बेचनेवाला
क़िसास (अ) = प्रतिशोध, बदला
क़सब (अ) = सरकंडा, शरकाण्ड, शरखण्ड लेखनी, मलमल
क़सबु'ल् हबीब (अ) = मित्रतापूर्ण लेखनी, प्यारे की चिट्ठी
क़सबे मिस्री (अ फा) = मिस्र की मलमल
क़िस्सा (अ) = इतिहास, कथा

(क़—क)

क़स्द (अ) = लक्ष्य, तैयारी, षड्यंत्र
क़स्द कदन् (अ फा) = षड्यंत्र करना, जान लेने की कोशिश करना
क़स्र (अ) = गढ़, महल
क़सीदा (अ) = कविता, लम्बी कविता
क़ज़ा (अ) = भाग्य, नियति, मृत्यु, प्राणदण्ड, समाप्त करना
क़ज़ा कर्दन् (अ फा) = अधूरी प्रार्थना पूरी करना
क़ज़ाए नविश्ता (अ फा) = नियति द्वारा लिखित
क़ज़ारा (अ फ़ा) = दैवयोग से
क़ुज़्बान (अ) = (क़ज़ीब का बहुवचन) लम्बी-पतली शाखाएँ
क़ुत्ब (अ) = ध्रुवतारा, उत्तरी ध्रुव
क़त्र (अ) = बूद
क़ित्र (अ) = तारकोल
क़त्रुन् अला क़त्रिन् (अ) = बूद पर बूंद
क़तरा (अ) = बूद
क़तरए चन्द (अ फा) = कुछ बूदें
क़तअ (अ) = काटना, अलग करना
क़तअ रहिम (अ फा) = रिश्तेदारी तोडना
क़तअ कदन् (अ फा) = काटना, समाप्त करना
क़ितअ (अ) = खण्ड, हिस्सा
क़अर (अ) = गड्ढा, खाडी
क़फ़ा (अ) = गर्दन का पिछला भाग, पीठ पीछे, चुपचाप
दर क़फ़ाये ऊ (फा अ) = उसके पीछे पीछे
क़फ़स (अ) = पिंजरा
क़िलाअ (अ) = (क़लअ का बहुवचन) किले, दुर्ग (उर्दूवाले एकवचन में भी क़िला कहते हैं जो कि अशुद्ध है)
क़ल्ब (अ) = हृदय
बि क़ल्बि'ल् मूजई (अ) = मुझ अभागे के हृदय में
क़ुल्तु (अ) = मैंने कहा
फ क़ुल्तु लहू (अ) = तब मैंने कहा उससे
क़लअ (अ) = (किला का एकवचन) दुर्ग
क़लम (अ) = सरकंडा, सरकंडा की कलम
क़लमून (अ) = गिरगिट
क़ुल्ना (अ) = हमने कहा
क़लन्दर (फा) = मुण्डित, सर्वस्व त्यागी मुसलमान मत
क़ुल्ला (अ) = चोटी
क़लील (अ) = थोडा, कम, जरा सा
व क़लीलुम् मिन इबादी अश्शकूर (अ) = और मेरे थोड़े ही सेवक कृतज्ञ हैं
क़िना (अ) = हमारी रक्षा कर
क़िना अज़ाब'न्नार (अ) = हमारी रक्षा कर अग्निदण्ड से
क़नाअत (अ) = सन्तोष
क़ुव्वत (अ) = शक्ति
क़ूत (अ) = भोजन, जीविका

(ک — क)

[illegible] ([illegible]) = [illegible], गर्व (स०—गर्व)
[illegible] (अ) = फ़ाख्ता, कबूतर (स०—कपोत)
कबूतर (फा) = कबूतर (स०—कपोत)
कबीर (अ) = महान, विराट्
कत-कित (फा) = (कि तुरा का सक्षेप) कि तुझे
किताब (अ) = पुस्तक
किताबे मजीद (अ फ़ा) = कुरान महान्
कुत्ताब (अ) = लिखना सिखाने की शाला
किताबा (अ) = मुखपृष्ठ, समाधि का शिलालेख
कुत्ताबे (अ फा) = एक लेखनशाला
किताबे चन्द (अ फा) = कुछ पुस्तकें
कुतुब (अ) = पुस्तकें (किताब का बहुवचन)
कत खुदा (फा) = गृहपति, गृहस्थ
कत खुदा ए (फा) = एक गृहस्थ
कित्फ-कितिफ-कतफ (अ) = कधा (स०—स्कध)
दस्त बर कतफ (फ़ा) = पीठ पर हाथ बाँधे हुए
कुसुब (अ) = (कसीब का बहुवचन) रेत के टीले
कज (फा) = टेढ़ा, बुरा, कच्चा रेशम (स०—कद = कु)
कुजा (फा) = कहाँ, कहाँ मे, कैसे (स०—क्व)
कज आगन्द (फा) = कच्चा रेशम भरा कवच
कजावा (फा) = ऊँट पर रखी जानेवाली डोली जिस पर यात्री बैठते हैं
कजावा नशीन (फा) = कजावा में बैठा हुआ
कुजाई (फा) = (तू) कहाँ है, कहाँ का है
अज कुजाई (फा) = (तू) कहाँ से है, कहाँ का है
कज तबअ (फा अ) = बुरी प्रकृतिवाला, कुशील, दु शील
कुदाम (फ़ा) = कौन सा (स०—कतम)
कद खुदा (फा) = गृहपति, गृहस्थ
कुदूरत (अ) = उदासी, निराशा
कज्जाब (अ) = महाझूठा
क जालिक (अ) = इस तरह से
किरा (फा) = कौन, किसको
किराम (अ) = उदार, कृपालु (करीम का बहुवचन)
किरामत् (अ) = कृपया
करामत (अ) = (बहुवचन—करामात) उदारता, चमत्कार
करा (फा) = किनारा, तट
कराना (फा) = किनारा, तट, कोना, सिरा
कराहत (अ) = घृणा, अरुचि
कराहियत (अ) = घृणा, अरुचि
कुरबत (अ) = कष्ट, परेशानी, बुरे दिन
कर्द (फा) = किया (स०—कृत)
किरदार (फा) = चालचलन (स०—चरित्र)
किरदारे (फ़ा) = एक चरित्र, कृत्य
करदस्त (फा) = (करदा+अस्त) (उसने) किया है

(ک — क)

किर्दगार (फा) = परमात्मा (स०—[illegible])
कर्दन् (फा) = करना (स०—करण)
कर्दा (फ़ा) = किया हुआ (स०—कृत)
करदे (फा) = करता, करते (हेतुहेतुमद्भूत)
करिश्मा (फा) = एक नजर, एक नजर का इशारा
किर्म (फा) = कीड़ा (सं०—कृमि)
किर्मे पीला (फा) = पीला कीड़ा, रेशम का कीड़ा
करम (अ) = कृपा
करमे (अ फा) = एक कृपा
कर्रूबी (अ) = फ़रिश्ता
करीम (अ) = कृपालु, परमात्मा का एक नाम
करीमुन्नफ्स (अ) = कृपालु हृदयवाला
करीमन् (अ) = कृपया
करीमे (अ फा) = अत्यन्त कृपालु (एक)
करीह (अ) = घृणास्पद, गन्दा, कर्कश
करीहुस्सौत (अ) = कर्कश कठवाला
कज (फा) = (कि+अज) कि [illegible]
कज अकबश (फ़ा अ) = क्योंकि उसके उपरान्त
कि जू (फा) = (कि+अज+ऊ) कि उससे
क जैदिन् (अ) = जैदिन् जैसा
कज्दुम (फा) = टेढ़ी पूँछवाला, बिच्छू
कस (फ़ा) = कोई एक व्यक्ति (स०—[illegible])
कसा (फा) = (कस का बहुवचन) लोग
कस्र (अ) = टूटन, खण्डित सौभाग्य
किसरा (अ) = ईरान का पुराना राजवश, नौशेरवाँ से अभिप्राय है
क सिन्नौरि (अ) = जैसे बिल्ली
किसवत (अ) = कपड़े, वस्त्र, काले कपड़े की चाँदी से कढ़ी चादर जो काबा पर उढ़ाई जाती है
कसे (फा) = कोई आदमी, एक आदमी
कसे कि (फा) = वह आदमी जो कि
कश (फा) = (तू) खींच, (उत्तर पद में) खींचनेवाला
कश (फा) = (कि+अश) कि उसको
कुशादन् (फा) = खोलना, जीतना
कुशादा पेशानी (फा) = खुला मस्तक जिस पर चिंता का रूखा जाल या भ्रूकुञ्चन न हो
कुशादा रू (फा) = खुली मुखच्छविवाला, प्रसन्न वदन
कशान (फा) = खींचता हुआ, (स०—शानच् प्रत्यय के योग से)
कुशाई (फा) = (तू) खोलता है
कुश्तगान् (फा) = कटे हुए, मारे गये (प्राणी)
किश्तन् (फा) = जोतना, बोना
कुश्तन् (फा) = वध करना, मारना
कुश्ता (फ़ा) = मारा हुआ
कुश्ता बाशी (फा) = तू मार चुकेगा

(ک—क)

कश्ती (फा) = नौका
कश्तीबान (फा) = मल्लाह
कुश्ती (फा) = कुश्ती, मल्लविद्या
कश्ति ए शिकस्ता (फा) = जर्जर नौका, टूटी नाव
कुश्ती गिरिफ्तन् (फा) = कुश्ती में पकड़ना, कुश्ती लड़ना
कशफ (अ) = खोलना
कशफा (अ) = उसने खोला, उसने पर्दा उठाया
कशफ़'हुजा (अ) = उसने अन्धकार (पाप को) दूर किया
कुशन्दा (फ़ा) = मारक (विष)
कुशूदन् (फा) = खोलना
किश्वर (फ़ा) = देश, क्षेत्र
किश्वर कुशा (फ़ा) = साम्राज्य विजयी
किश्वर कुशाए (फा) = एक साम्राज्य विजयी
कुशी (फ़ा) = तू मारता है, तू मार
कशीदन् (फ़ा) = खींचना, फैलाना
कशीदा (फा) = खींचा हुआ
कअब (अ) = (टाव) एड़ी, पार्ष्णि
कअबा (काबा) (अ) = काबा, बैतुल्लाह, हरम
कफ़ (अ) = हाथ की हथेली, पैर की पगतली
कफे दस्त (अ फा) = हाथ की हथेली, करतल
ब कफ आवुर्दन् (फा अ) = हाथ में लेना
कफ्फारत-कफ्फ़ारा (अ) = प्रायश्चित्त, पश्चात्ताप
कफाफ (अ) = पर्याप्त, जीविका
कफाफे अन्दक (अ फ़ा) = थोड़ी सी जीविका
कफाफे (अ फा) = एक पर्याप्ति
किफायत (अ) = पर्याप्ति, योग्यता, क्षमता, बचाना
किफायत कर्दन् (अ फा) = काफी होना, किफायत करना
कुफ्र (अ) = नास्तिकता
कफ्श (फ़ा) = जूता
कफ्श दोज (फा) = जूता सीनेवाला
कफ़न (अ) = मुर्दे की चादर
कफ़ूर (अ) = अपवित्र, नास्तिक, अकृतज्ञ
कफा (अ) = यह काफी है
कफीत (अ) = तू काफी है
कफ़ीत अजन् (अ) = तू काफी बनाया गया है
कुल्ल (अ) = पूर्ण
कलासा (फ़ा) = कुँए जहाँ मक्का के यात्री पानी पीते हैं
कलाम (अ) = शब्द, वार्ता
कुल्लु इनाइन (अ) = प्रत्येक पात्र
कुलाह (फा) = तातारी टोपी
कुलाहगोश (फा) = (होना चाहिये-गोशाए कुलाह) टोपी की कलगी
कल्ब (अ) = कुत्ता
अल'ल् कल्बि (अ) = कुत्ते के विरुद्ध, कुत्ते पर

(ک—क)

कुल्बा (फा) = दुकान, सामान की दूकान
किल्स (अ) = बुझा हुआ चूना
कल्लिम (अ) = (तू) कह, बोल
कल्लिमिन्नास (अ) = लोगों से कह
कलमा (अ) = वाक्य, शब्द
कलम ए चन्द (अ फा) = थोड़े से शब्द, संक्षिप्त वार्ता
कलम ए हक़ (अ फा) = सत्यवार्ता
कुलू (अ) = (तू) खा
कुलूख (फा) = ईंट के टुकड़े, मिट्टी के ढेले
कुलूख अन्दाज (फा) = ईंट के टुकड़े फेंकनेवाला
कुलूख कोब (फा) = ढेले फेंकने की गुलेल
कुल्ली (अ) = पूर्णतया, समग्रतया
किलीद (फा) = चाभी
कुल्ल यौमिन् (अ) = हर रोज, प्रतिदिन
कम (फ़ा) = थोड़ा, कम
कुम् (अ) = तुम
कुम्म (अ) = आस्तीन्
कमा (अ) = (शब्दार्थ—उस जैसा) जो कि, के अनुसार, जैसा कि
कमा अह्सन'ल्लाहु इलैक (अ) = जैसा कि उपकार किया है परमात्मा ने तुझ पर
कम आजार (फ़ा) = कम पीटनेवाला (अध्यापक)
कमाल (अ) = पूर्णता
बि कमालिहि (अ) = अपनी पूर्णता से
कमाले बहजत (अ फा) = सौन्दर्य की पूर्णता
कमाल बहजते (अ फा) = एक सौन्दर्य की पूर्णता
कमान (फ़ा) = धनुष्
कमाने कयानी (फा) = कयानी धनुष् (ईरानी में कयानी राजवंश ने धनुर्विद्या में पूर्णता प्राप्त की थी)
कमानदार (फा) = धनुर्धर
कमतर (फा) = बहुत थोड़ा
कमतरम् (फा) = हम थोड़े हैं
कमतरीन (फा) = सबसे कम
कमर (फा) = कमर, कटि
कमरबन्द (फा) = कटिबन्ध, अण्टी
कम इयार (फा अ) = स्तर से नीचे, घटिया (फा०—इयार = सं०—अह)
कमन्द (फा) = रस्सी, फन्दा
कमिय्य (अ) = हथियार बन्द, वीर, दृढ़
कमीन (फ़ा) = दोषपूर्ण, नीच
कमीन (अ) = मुठभेड़
कमीनगाह (अ फा) = मुठभेड़ का स्थान, युद्धक्षेत्र
कमीनम् (फा) = मैं नीच हूँ
कमीना (फा) = नीच, छोटा

(ک—क)

कुन (ـ) = (तू) हो
कनार (फा) = किनारा, तट
किनार (फा) = गोद, आलिंगन, छाती
किनार दर कर्दन् (फा) = गोद भरना
किनारो बोस (फ़ा) = आलिंगन और चुम्बन
कनारा (फा) = किनारा, सिरा
कनारा गिरिफ्तन् (फा) = कन्नी काटना, उपेक्षा करना
कुनान (फा) = करते हुए (स०—कुर्वाण)
कुंज (फा) = कुञ्ज, कोण, कोना (स०—कुञ्ज)
कुंजिश्क (फ़ा) = छोटी चिड़िया
कुंजे (फ़ा) = एक कोना
कुंद (फ़ा) = मन्द बुद्धि (स०—कुण्ठ)
कुनद (फ़ा) = (वह) करता है (स०—कृणुति-ते)
कन्दर (फा) = (कि+अन्दर) जो कि अन्दर है
कन्दन् (फ़ा) = खोदना, तोड़ना, काटना (स०—कृन्तन)
कुनिश्त (फ़ा) = अग्निपूजकों का अग्निमन्दिर, यहूदियों का सिनागोग, ईसाइयों का चर्च
कनआन (अ) = नूह का पौत्र कनआन
शाहिदम् मन् वले न दर कनआं (फा) = मैं भी सुन्दर हूँ किन्तु कनान की कोटि का नहीं
कुनमत (फा) = (मैं) तुझे बनाऊँगा
कुनून (फ़ा) = (शुद्ध रूप—अकनून) अब (स०—अधुना)
कुनूनत (फा) = अब तुझे
कुनी (फा) = (तू) बनाता है
कनीज़ (फ़ा) = कुमारी, नौकरानी
कनीज़क (फा) = सेविका
कू-कू (फ़ा) = गली, कूचा
कोब (फ़ा) = (कोफ्तन् का आदेशवाचक) मार, घूँसा दे
कोताह-कोतह (फा) = कम, थोड़ा
कोताह क़द (फ़ा) = छोटे क़दवाला
कोतह दस्त (फ़ा) = छोटे हाथोंवाला, शक्तिहीन
कोतह नज़र (फ़ा अ) = अल्पदृष्टि, मूर्ख, अविचारी
कूचक (फ़ा) = थोड़ा, कम
कूदक (फा) = लड़का, बच्चा (स०—कूदक)
कूदकी (फ़ा) = बचपन
कूदके (फ़ा) = एक बच्चा
कौदन (फ़ा) = सुस्त, मद, मूर्ख
कूर (फ़ा) = अन्धा
कूर बख़्त (फ़ा) = अभागा
कूर दिल (फ़ा) = अन्धे हृदयवाला, मूर्ख
कूज़ (फ़ा) = टेढ़ा-मेढ़ा, झुका हुआ (स०—कुब्ज)
पुश्ते कूज़ (फ़ा) = कमर टेढ़ा, कुबड़ा
कूज़ा (फा) = लोटा, सुराही (हिन्दी में—कुजा)

(ک—क)

कोस (फ़ा) = ढोल, नगाड़े
कोस ज़दन (फ़ा) = नगाड़ा पीटना, ढोल बजाना
कोशिश् (फा) = प्रयास
कोशीदन् (फ़ा) = प्रयास करना
कूफ़ा (अ) = फरात नदी के तट पर एक नगर
कोफ्तन् (फा) = मारना, घूसा लगाना
कोफ्ता (फ़ा) = पिटा हुआ, कुटा हुआ, गुथा हुआ, थकित
कून (फ़ा) = मौलिक पदार्थ, गुण (स०—गुण)
कूने खर (फा) = गधे के गुण, एड़ी
कोह (फा) = पहाड़
कोहसार (फा) = पहाड़ी, चट्टानी
कोहिस्तान (फ़ा) = पहाड़ी इलाक़ा
कोहे (फ़ा) = एक पहाड़
कूए (फा) = एक गली
कि (फा) = कि, क्योंकि, किन्तु (स०—किम्)
कि (फा) = कौन, किस, किसके (यह दूसरा 'कि' कुदामिया कहलाता है)
अज़ दस्तो ज़ुबाने कि (फ़ा) = किसके हाथ (कर्म) और जीभ (वाणी) से
किह् (फ़ा) = (प्रतिपर्याय—'मिह्') थोड़ा, कम
किहतर (फ़ा) = ज्यादा छोटा
कहफ (अ) = गुफा, खोह (स०—गुहा)
असहाबे कहफ (अ फ़ा) = गुफा के (सात) स्वामी-साधु
कहफ़ुल् फ़ुक़राय (अ) = निर्धनों का आश्रय
कुहन-कुहना (फ़ा) = पुराना
कुहनपीरे (फा) = बुड्ढा आदमी
कै (फ़ा) = एक ईरानी राजा
कियासत (अ) = बुद्धिमत्ता
कियासते (अ फ़ा) = एक बुद्धिमत्ता
कयान (फ़ा) = (कै का बहुवचन) कै नामक राजवंश के राजा
कयानी (फा) = कै राजाओं का राज्य, कै राजाओंवाला प्रसिद्ध धनुष्
कै ख़ुसरो (फ़ा) = कै वंश का तीसरा राजा, इसका सेनापति रुस्तम था। यह अफरासियाब से लड़ा था।
कीर (फा) = उपस्थ, लिंग
कीस्त (फा) = क्या है (स०—किमस्ति)
कीस्ती (फा) = (तू) क्या है
कीसा (फ़ा) = थैली (हिन्दी—खीसा)
कीश (फा) = ईरान की खाड़ी के मुहाने पर एक द्वीप
कयश् (फ़ा) = कैसे उसका
कैफ़ियत (अ) = हालत, परिस्थिति
कीमियागर (अ फ़ा) = रसायनज्ञ
कीं (फ़ा) = (कि+ईं) कि यह

(گ — ग)

گ — ग

गाज़ुर (फा) = धोबी
गाम (फा) = चरण
गाव (फा) = बैल, सांड (स०—गो-गव-गाव)
गाव रान्दन् (फा) = बैल को चलाना, बैल जोतना
गावे (फा) = एक गाय, एक बैल
गाह (फा) = समय, स्थान, कभी कभी
गाहो बेगाह (फ़ा) = समय कुसमय, सारे समय
गाहे (फा) = कभी कभी
गब्र (फा) = अग्निपूजक, ज़रथुस्त्र का अनुयायी (अंग्रेजी-guebre)
गदा (फा) = भिक्षुक
गदा तबअ (फा अ) = भिक्षुक प्रवृत्तिवाला
गदाई (फा) = भिक्षावृत्ति
गदाए (फा) = एक भिक्षुक
गुज़ार (फा) = छोड दे, रहने दे, जाने दे
गुज़ारदन् (फा) = गुज़ारना, विताना
गुज़ाश्तन् (फा) = छोडना, जाने देना
गुज़र (फा) = मार्ग
गुज़र कर्दन् (फा) = गुज़रना, मरना
गुज़रानीदन् (फा) = गुज़रने देना, भेजना, ले जाना
गुज़श्त'स्त (फा) = गुज़र गया है
गुज़श्तन् (फा) = गुज़रना, घटित होना, मरना
गुज़िश्ता (फ़ा) = गुज़रा हुआ
गर (फा) = यदि (अगर का सक्षेप)
गिरानी (फा) = मूल्य, प्रिय, आदृत
गिरां-गिरान (फ़ा) = प्रिय, बहुमूल्य, भारी, महत्वपूर्ण, उदासी भरा
गिरांमाया (फा) = अत्यन्त मूल्यवान
गिराने (फ़ा) = एक भारी-सुस्त-मासपिण्डवत् आदमी
गिराईदन् (फा) = रुचि रखना, देखना, जाच करना
गुरबा (फा) = बिल्ली
गुरपुज़ (फा) = (रूपान्तर—गुरबुज़) धोखे मे भरा, प्रलोभनपूर्ण
गरत (फा) = अगर तू, अगर तुझे
गर्चे (फा) = यद्यपि
गर्द (फा) = धूल, उडती धूल
गिर्द (फा) = चारो ओर, नाचते हुए दरवेशो का घेरा (स०—वृत्त, आवत)
गुर्द (फ़ा) = दृढ़ वीर
गिर्दाब (फा) = भँवर, आवत्त
गिर्द आमदन् (फा) = इकट्ठे होना
गर्दान (फ़ा) = घूमते हुए (शानच् के योग से)
गर्दानीदन् (फा) = घुमाना, चक्कर कटवाना
गिर्द आवुर्दन् (फा) = इकट्ठा करना
ब गिर्दश् (फा) = उसके चारो ओर
गर्दिश (फा) = चक्कर, गोलाकार गति
गिर्द कर्दन् (फा) = इकट्ठा करना
गिर्दगान (फा) = अखरोट
गर्दन् (फा) = गर्दन, ग्रीवा
गर्दन कशीदन् (फ़ा) = गर्दन उठाना, विद्रोह करना
गर्दन कशी (फा) = घमड से ऊँची गर्दन करना
गर्दू (फा) = आकाश चक्र, स्वर्ग
गिरदा (फा) = गोल लड्डू, पिण्ड, रोटी
गर्दे (फा) = एक धूल, एक पख
गरदीदन् (फा) = होना, बदलना, घुमक्कडी करना, चक्कर लगाना
गरदीदे (फा) = (वह) होता
गुर्ज़े (फा) = एक लिंग, एक डण्डा
गिरिस्तन् (फा) = रोना, अश्रुमोचन
गुरसनगी (फा) = भूख
गुरसना (फा) = भूखा (स०—दुरशन)
गिरिफ्तार (फा) = बन्दी, कैदी
गिरिफ्तार आमदन् (फा) = गिरिफ्तार होना
गिरिफ्त'स्त (फा) = लिया है, पकडा है
गिरिफ्तन् (फा) = लेना, पकडना (स०—ग्रहण)
गिरिफ्ते (फा) = (वह) ले लेता
गुर्ग (फा) = भेडिया (स०—वृक)
गुर्गज़ादा (फ़ा) = भेडिये का बच्चा
गर्म (फा) = उष्ण, उत्साही, व्यस्त, सक्रिय
गर्मी (फा) = उष्णता, ज्वर, पित्तप्रकृति
गर्मीदार (फा) = पित्तप्रधान व्यक्ति
गिरौ-गिरव (फा) = गिरवी रखा हुआ
गुरोह-गरोह (फा) = दल, भीड, झुण्ड
गरोहे (फा) = एक झुण्ड, एक वर्ग
गिरवीदन् (फा) = अनुसरण करना, प्रशसा करना, (स०—वन्धित होना), बँध जाना
गिरियां (फा) = रोते हुए, चिल्लाते हुए
गिरेबान (फा) = छाती के ऊपर का कपडा
गुरेख्तन् (फा) = भागना, भाग छूटना
गुरेज़ (फा) = भागना, पलायन
गुरेज़ां (फा) = भागते हुए, पलायन करते हुए
गिरीस्तन् (फा) = रोना, आँसू गिराना, चिल्लाना
गरीव-गिरीव (फा) = ऊँचा धरातल, खडे किनारे, उपत्यका, आवाज़
गिरिया (फा) = रोदन, अश्रुमोक्षण, चीत्कार
गुज़ारदन् (फा) = ऋण चुकाना, गुज़ारना
गुज़ाफ (फ़ा) = डीग
ब गुज़ाफ (फा) = डीग मारते हुए
गज़न्द (फ़ा) = हानि, क्षति, हिंसा (स०—गधन)
गज़न्दे (फा) = एक हानि, कोई क्षति

(گ — ग)

गज़ीदन् (फा) = दाँतों से काटना
गुज़ीदन् (फ़ा) = पसन्द करना, चुनना
गुज़ीर (फ़ा) = सहायता, उपाय, चिकित्सा
गुस्तरदन्-गुस्तरानीदन् (फ़ा) = फैलाना, इकट्ठा करना
गुस्तरद (फा) = (वह) फैलाता है, (वह) फैलाये
गुसिस्तन (फ़ा) = तोड़ना, खण्डित करना
गुसिस्तानीदन्
गुसिलीदन् } (फा) = तोड़ना, झपाटे से खींचना
गश्तस्त (फ़ा) = गया हुआ है (सं०—गतोऽस्ति)
गश्तन् (फ़ा) = होना, जाना, बदलना
गुफ्त (फा) = (वह) बोला, (उसने) कहा
गुफ्ता (फा) = कहा हुआ (सं०—उक्त)
गुफ्तार (फ़ा) = बोल चाल, बातचीत
गुफ्तारे (फा) = एक वार्तालाप
गुफ्तस्त (फ़ा) = कहा है, कहा गया है (सं०—उक्तमस्ति)
गुफ्तमश् (फा) = मैंने उससे कहा
गुफ्तमे (फ़ा) = मैं कहता (हेतुहेतुमद्भूत)
गुफ्तन् (फ़ा) = कहना
दस्तनाम गुफ्तन गुफ्तनम् उफ्तादा अस्त (फ़ा) = बोलने से निषेध
   मुझ पर आ पड़ा है
गुफ्तो शुनूद (फा) = कहन-सुनन
गुफ्त (फा) = कहा हुआ
गुफ्तहा (फ़ा) = कही हुई चीजें
गिल (फा) = मिट्टी, मुल्तानी मिट्टी, कीचड़, गारा (सं०—कल्ल)
गुल (फ़ा) = फूल
गुलाब (फ़ा) = (जलाब—जलपुष्प अर्थात् कमल) गुलाब का फूल*
गुलत (फा) = तेरा फूल, तेरा देहरूपी गुलाब
गुलिस्तां (फ़ा) = पुष्पखोर
गुलशकर (फा) = पुष्पमधु
गिलम् (फा) = मैं मिट्टी हूँ
गिला (फा) = शिकायत
गिलये (फा) = इस बरसों से आता या गम्भीर
गलागल्ला (फा) = पशुओं का झुंड
गुम (फा) = खोया हुआ

---

* जब पहली बार ईरानियों ने गुलाब देखा तो उसकी उपमा अपने पूर्व परिचित पुष्प कमल से दी और इसका नाम रखा 'गुलाब' (गुल+आब) जलपुष्प अर्थात् कमल। बाद में यह पुष्प इतना लोकप्रिय हुआ कि 'गुल' कहने मात्र से ही इस पुष्प का बोध होने लगा। सादी ने गुलाब के लिये अनेक स्थलों पर केवल गुल का प्रयोग किया है। स्मरण रहे भारत में सुन्दर अंगों की उपमाएं भी उसी प्रकार कमल से दी जाती रही हैं (मुखकमल, कमलनयन, करकमल, चरणकमल आदि) और ईरान में गुलाब से।

(گ — ग)

गुमाश्तन् (फ़ा) = नियत करना, विश्वास करना
गुमान-गुमाँ (फ़ा) = सन्देह, कल्पना
गुमान बुर्दन् (फ़ा) = सोचना, सन्देह करना
गुम शुदन् (फा) = खोया हुआ होना
गुम कर्दन् (फ़ा) = खो देना
गुम कर्दा फ़र्ज़न्द (फा) = बेटे को खोये हुए, यूसुफ़ का पिता याकूब
गुनाह-गुनह (फा) = दोष, पाप, अपराध, भूल
गुनाहे (फा) = एक भूल, एक अपराध
गुम्बज (फा) = गुम्बज
गुम्बजे आज़ाद (फ़ा) = एक प्रसिद्ध गुम्बज
गंज (फ़ा) = कोष
गंजे (फा) = एक कोष
गंजीदन् (फ़ा) = रखना, संचय करना
गंदुम् (फा) = गेहूँ (सं०—गोधूम)
गंदुमे बिरयान (फा) = भुना गेहूँ
गंदना (फा) = लहसुन
गंदना ज़ार (फा) = लहसुन का खेत
गंदीदन् (फा) = गँधाना
गंदा
गंदीदा } (फा) = गन्दा, सड़ा, दुर्गन्धित
गुंग (फा) = गूंगा
गुनहगार (फा) = अपराधी
गोय-गो (फ़ा) = कह, बोल (गुफ्तन् का आदेशवाचक)
गूय-गो-गू (फा) = गेंद
गवाही (फ) = गवाही, शहादत, साक्षी
गोर (फा) = कब्र
गोरे (फ़ा) = एक कब्र
गोस्फन्द (फ़ा) = भेड़, गाय-भेड़-बकरी का झुण्ड
गोश (फा) = कान
गोशत (फा) = तेरा कान
गोश्त (फा) = मांस
गोशमाल (फा) = (शब्दार्थ—कान मलना) दण्ड
गोशमाल ख़ुर्दन् (फ़ा) = दण्ड पाना, भुगतना
गोशमाली (फा) = दण्ड
गोशवार-गोशवारा (फा) = कर्णाभरण, कुण्डल
गोशा (फा) = कोना
गोशा नशीन (फ़ा) = कोने में बैठा हुआ, एकान्तवासी
गूगिर्द-गोगर्द (फा) = गूगल (सं०—गुग्गुलु)
गूनागूं (फ़ा) = कई रंगों की आभावाला
गूना (फा) = प्रकार, ढंग, उपाय
चि गूनाई (फा) = (तू) कैसा है
गोहर (फा) = रत्न, मोती
गोयाँ (फा) = बोलते हुए (गुफ्तन् प्रत्ययान्त)

(گ — ग)

गोयद (फा) = (वह) कहता है
गोयन्दा (फा) = कहनेवाला
गू ए नेकी वुर्दन् (फा) = भलाई की गेंद ले जाना, भलाई में बढना
गोई (फा) = (तू) कहता है
गह-गाह (फा) = समय, अब, तब, कभी कभी
गहर-गुहर (फा) = वश, जाति, प्रभव
गह गह (फा) = समय समय पर, कभी कभी
गहे (फा) = एक समय
गियाह् (फा) = घास
गेती (फा) = दुनिया, विश्व, नियति
गेतीआरा (फा) = विश्व की अलंकार स्वरूपा
गेती फरोज (फा) = विश्वप्रभा
गीर (फा) = ले, (उत्तर पद मे—जैसे जहाँगीर मे) लेनेवाला। (फारसी मे धातु का आदेशवाचक, उत्तरपद में कर्त्ता बन जाता है)
गीरद (फा) = (वह) लेता है
गीरम् (फा) = (मैं) लेता हूँ
गीर ओ वार (फा) = (शब्दार्थ—लेना और रखना), धनागम
गेसू (फा) = बालो के छल्ले

ل — ल

ल (अ) = (क्रियापदीय उपसर्ग) बेशक, (स०—खलु के अर्थ में) को, के लिये
लि (अ) = को, के लिये
ला (अ) = नही, ना (स०—ना)
ला तहज़नम्र (अ) = मत शोक कर
ला तहसिबूनी (अ) = मत समझना मुझे
ला तुस्रिफू (अ) = मत व्यर्थ (अपव्यय) कर
ला तफअल (अ) = मत कर
ला तफअल वि मा भा नह्नु वि अह्लिहि (अ) = मत कर हमारे साथ जिसके कि हम योग्य हैं
ला तमर्र (अ) = मत गुज़र पास होकर, नही गुज़रता पास से
ला तमुनुन (अ) = मत जता अहसान
ला जरम (अ) = आवश्यकता के कारण, बेशक
लाजवर्द (अ) = एक रत्न (स०—राजावर्त्त)
ला हौल (अ) = (पूरा मत्र—लाहौल विला कूवत इल्ला विल्लाहि) न कोई शक्ति न दृढता सिवा परमात्मा के
ला खैर (अ) = नही है अच्छा
ल अर्जुमन्नक (अ) = बेशक पत्थर मारूँगा तुझे
ला रह्वानियत फ़िल् इस्लाम (अ) = नही है एकान्तवास इस्लाम में
लाज़िब (अ) = दृढ, ठोस
ज़रवते लाज़िब (अ फा) = चोट जो निशान छोड जाती है
लाज़िम (अ) = आवश्यक, अनिवार्य
लाश (फा) = मुर्दा, शव

(ل — ल)

ल आज़म (अ) = बेशक महानतम
लाग़र (फ़ा) = दुर्बल, पतला, क्षीण
लाग़र मियान (फा) = क्षीणकटिवाला-वाली
लाग़रे (फा) = एक दुर्बल
लाफ (फा) = डींग
लाफ ज़दन् (फा) = डींग मारना
लाला (फा) = एक फूल
लाली (अ) = (लुलु का बहुवचन) मोती
लाम (अ) = (उसने) आरोप लगाया
लामनी (अ) = (उसने) मलामत की मेरी
लि अन्न (अ) = चूंकि, क्योंकि
लि अन्न'ल् फायदत अलैक आयदतुन् (अ) = क्योंकि उसका लाभ तुझको लौट कर मिलेगा
ला व'ल्लाहि (अ) = नहीं भगवान की कसम
लायद (फा) = भूंक, गुर्राहट
ला यसउनी (अ) = नहीं प्राप्त करता वह मुझे, नही बराबर होता मेरे
ला यसउनी फीहि (अ) = नही पाता वह मुझे उसमें
ला यस्क़ी (अ) = नही पिलाता (वह)
ला यक़िल (अ) = नही समझता (वह)
ला यलम (अ) = अज्ञानी, नही जानता (वह)
ला युग़्लकु (अ) = नही बन्द होता (वह)
लायक़ (अ) = योग्य, उपयुक्त
ला युक़ालु (अ) = नहीं कहा जायगा
ला युकादु (अ) = नही पहुँचता निकट (वह), नही सकता वह
ला युकादु युसीग़ुहु (अ) = नही सकता प्यास मिटा
लाइम (अ) = मलामत करनेवाला, दोषारोपक
ला यमुर्रु (अ) = नहीं जाता पास होकर (वह)
ला युम्लकु (अ) = नहीं है मिल्कियत (किसी की)
लब (फा) = होंठ
लिबास (अ) = परिधान, पोशाक
ल बग़ौ (अ) = बेशक वे बगावत करते
लुबनान (अ) = लेबनान पर्वत
लि तज़ूरनी (अ) = लिये जियारत करने मेरी
लह्ज़ा (अ) = नज़र, दृष्टि, एक क्षण
लख़्त (फा) = कुछ, थोड़ा सा, टुकडा
लख़्ते (फा) = एक टुकड़ा
लद्ग़ा (अ) = डक, दश
लज़्ज़त (अ) = मजा, सुख, स्वाद
ब लज़्ज़त (फा अ) = स्वाद से, गन्ध मे
ब लज़्ज़त्तर (फा अ) = ज्यादा स्वाद से
लि ज़ालिक (अ) = इस कारण से, अत, तत
लज़ीज़ (अ) = स्वादिष्ट
लर्ज़ा (फा) = कम्प, हड़कम्प, कँपकँपी

(ل — ल)

लर्ज़ीदन् (फ़ा) = काँपना, हिलना
लिसान (अ) = जीभ, वाणी
लिसानुहू (अ) = उसकी जीभ
लश्कर (फा) = सेना, दल
लश्करी (फा) = सेना, सिपाही
लि साहिबिहि (अ) = वास्ते उसके स्वामी के
लताफत (अ) = कोमलता, शान, भव्यता
लुत्फ (अ) = आनन्द, मजा
लुत्फगोई (अ फा) = कोमल, भाषण
लतीफ (अ) = कोमल, भव्य, शानदार
लतीफन् (अ) = कोमलता से
लतीफा (अ) = सुखवार्त्ता, चुटकुला
लतीफखू (अ फा) = कोमल स्वभाव, सुस्वभाववाला
लअब (अ) = खेल, क्रीड़ा
लि इबादिहि (अ) = वास्ते उसके सेवकों के
लाल (अ) = रक्तमणि, माणिक्य
ल अल्ल (अ) = शायद
ल अल्लहुम् (अ) = शायद वे
लालपारा (अ फा) = माणिक्य का टुकड़ा
लअनत-लानत (अ) = धिक्कार, शाप
लानतु'ल्लाहि अला हिदहि (अ) = धिक्कार परमात्मा का उनमें से हर एक पर
लाज़ीदन् (फा) = काँपना
लाय (अ) = अविचारपूर्ण भाषण, अयुक्त भाषण
लायी (अ) = मेरा अविवेक
लाबे (अ फ़ा) = एक जीभ की लड़खड़ाहट-हकलाहट
लफ्ज़ (अ) = शब्द
लिफ़ाफ़ा (अ) = मुखमुद्रा
ल क़द (अ) = बेशक
लुक़मान (अ) = एक प्रसिद्ध हकीम और दार्शनिक
लुक़्मा (अ) = ग्रास
लुक्म ए चन्द (अ फ़ा) = कुछ ग्रास
ल क (अ) = तुझको
लि कातिबिहि (अ) = वास्ते कातिब के इसके
ल कुम् (अ) = तुमको, तुम्हारे लिये
लि'ल् ख़बीसीन (अ) = अपवित्र जनों के लिये
लि'र्रहमानि (अ) = दयालु के लिये
फ लि'र्रहमानि अल्ताफुन् खुफिय्यह् (अ) = क्योंकि दयालु के पास गुप्त कृपाएँ हैं
लि'ल् ग़रीब (अ) = दीन के लिये
लि'न्नाइमि (अ) = सोनेवाले के लिये, सोये हुए के लिये
लम् (अ) = नहीं
लि मा (अ) = किस लिये

(ل — ल)

लम्मा (अ) = तब, बाद में, जब
इन् लम् अकुन् (अ) = यदि मैं न होऊँ
लम् तत्तिर (अ) = न उड़ती
लुम् तुम्न (अ) = (तुमने) दोष लगाया
फ ज़ालिकु'म्न'ल्लज़ी लुम्तुम्न नी फीहि (अ) = सो वह यह है जिसके लिये तुमने मेरी मलामत की
लमान (अ) = चमक, द्युति
लम् यरहा (अ) = (उसने) नहीं देखा उसे
लम् यअक़िलू (अ) = नहीं समझा करते (वे)
लम् यल्तफ़ित (अ) = (वे) नहीं देखती
ल नुज़ीक़न्नहुम् (अ) = बेशक चखायेंगे उन्हें हम
व ल नुज़ीक़न्नहुम् मिन'ल् अज़ाबि'ल अद्ना (अ) = और बेशक चखायेंगे उन्हें हम दंड छोटा
लि नफ़्सिक (अ) = वास्ते आत्मा के तेरी
लग (फ़ा) = लगड़ा, (न०—पागु)
लगर (फा) = लगर
लगर निहादन् (फा) = लगर डालना
लौ (अ) = अगर, जब तक कि नहीं
लवाज़िम (अ) = (लाज़िमत का बहुवचन) आवश्यक उपादान
लूज (फा) = मैंगा
लौह (अ) = पट्टी, लेखफलक
लूत (अ) = इब्राहीम का भानजा-भतीजा
लौम (अ) = आरोप, अभियोग
लहू (अ) = उसके लिये
लहजा-लहजत (अ) = बोलने का लहजा
लहू ख़ुवार (अ) = उसका रंभाना
लहू सौतुन् (अ) = उसके लिये एक आवाज
लहुम् (अ) = उनका, उनके लिये
लह्व (अ) = खेल
लह्वो लअब (अ) = खेल, खिलौना
ली (अ) = मेरे लिये
लैत (अ) = काश कि !
लैस (अ) = शेर, सिंह
अफ़्रो लैस (अ) = ईरान के सफ़वीद वंश का एक राजा
लैस (अ) = (यह) नहीं था-है
लैस बि ताहिरिन् (अ) = नहीं है पवित्र
व लैस लहू ग़ैरी (अ) = और नहीं है उसके लिये कोई और सिवा मेरे
लैस यर्फउ (अ) = नहीं उठाता (वह)
लैस यस्लमु (अ) = नहीं रहता सलामत (वह)
लेकन-लेकिन (अ) = किन्तु, परन्तु
लैल / अल् लल } (अ) = रात
अल'ल्लैलि (अ) = रात में

(ل—ल)

लैला (अ) = मजनूं की प्रेमिका (शब्दार्थ—काली, कृष्णा, श्यामा)
लि मा'ल्लाहि वक्तुन् (अ) = मेरे लिये परमात्मा के सान्निध्य का एक समय होता है
ल इन् (अ) = बेशक
ल इन् लम् तन्तहि ल अर्जुमन्नक (अ) = बेशक अगर नहीं छोड़ेगा (मानेगा) तू (तो) बेशक पत्थर मारूँगा तुझे
लीनत (अ) = महानता, कोमलता, मानवता, एक खण्डहर
लईम (अ) = नीच, कमीन
लईमु'त्तबअ (अ) = नीच स्वभाववाला

م—म

अम् (फा) = मुझे, मेरा, मैं
मा (फ़ा) = हम, हमें, हमारा
मा (अ) = मत, न, नहीं (स०—मा)
मा (अ) = जो, जो कि, क्या?, जब तक कि
माअ (अ) = जल
माउ नहरिहा (अ) = पानी उसकी नहरों का
मा वि क़ल्बि (अ) = जो दिल में है
मा तक़ूलु (अ) = जो तू कहता है
मातम (फ़ा) = शोक, रोना, पीटना
माजरा (अ) = जो हुआ, घटना
मा हज़र (अ) = जो हाज़िर है, तैयार है
मा हज़रे (अ फ़ा) = फल, दूध, पनीर का नाश्ता
माख़ूज़ (अ) = दण्डित, लज्जित
मा दाम (अ) = जब तक चले
मादर (फा) = माता (स०—मातृ-मातर)
मादरे मादर (फ़ा) = माता की माता (स०—मातुर्माता)
माज़ा (अ) = क्या है यह?, क्या
माज़'फ़्तसब्त (अ) = क्या आचरण किया तूने?
मार (फ़ा) = साँप
मारा (फ़ा) = हमको, हमारे लिये, हमें
मार गज़ीदा (फा) = साँप का काटा हुआ
मारी (फ़ा) = साँप है (तू)
मास्त (फ़ा) = छाछ (स०—मस्तु)
माज़ी (अ) = अतीत
मा अबद्नाक (अ) = नहीं पूजा हमने तुझे
मा अरफ़्नाक (अ) = नहीं जाना हमने तुझे
मआल (अ) = अन्त, लक्ष्य
माल (अ) = धन, सम्पत्ति, समृद्धि
मालदार (अ फा) = धनी
मालिक (अ) = स्वामी
मालिकु'रिक़ाबि'ल् उमम् (अ) = स्वामी गर्दनों का राष्ट्रों की
मालिकी (अ) = स्वामित्व

(م—म)

मा लि'ल् ग़रीबि सिव'ल् ग़रीबि अनीसु (अ) = नहीं है वास्ते गरीब के सिवा ग़रीब के दोस्त
माअलूफ़ (अ) = (शुद्ध रूप—मअलूफ़) परिचित, अभ्यस्त
माआलहुमा (अ) = परिणाम दोनों का
मालीख़ूलिया (अ) = पागलपन
मालीदन् (फा) = मसलना, रगड़ना (स०—मर्दन)
मा लैस लक बिहि इल्मुन् (अ) = जिसका तुझे कोई इल्म नहीं है
मा मर्र (अ) = जो गुज़र गया, गुज़रता है
मा मज़ा (अ) = जो अतीत हो गया
मामक (फ़ा) = माँ, छोटी अम्मा (संस्कृत—अम्बिका-अनुकम्पार्थक स्वार्थिक 'क')
मामन (अ) = सुरक्षा की जगह
मामनि रिज़ा (अ फा) = सन्तोषप्रद सुरक्षा स्थान
मा मिन् मौलूदिन् (अ) = नहीं कोई पैदा हुआ, नहीं हुआ पैदा हुओं में से कोई
मामूल (अ) = अपेक्षित, जिसकी आशा थी ही
माना (फा) = समान
मान्द (फा) = बचा हुआ है
मानद (फा) = बचता है
मान्दन् (फा) = रहना, बचना
दर गिल मान्दन् (फा) = पंक में होना, हिचकना
मान्दा शुदन् (फा) = थकित होना
मानिस्तन् (फ़ा) = समानता होना
मानीअ-मानीइन् (अ) = मना करनेवाला, रोकनेवाला
मानन्द (फ़ा) = समान
मानी (फा) = एक चित्रकार
मा वा (अ) = (शुद्ध रूप—म वा) घर, विश्राम स्थल
माह (फ़ा) = चन्द्रमा, चाँद
माहरू (फा) = चन्द्रमुखी, चन्द्रमुख
माहरू ए (फा) = एक चन्द्रमुखी
माही (फ़ा) = मछली (स०—मत्स्य)
माही ए (फ़ा) = एक मछली
माया (फा) = धन, रकम (स०—माया)
मुबाह (अ) = वैध, वैधानिक
म बाद / म बादा } (फा) = मत हो, न हो (स०—मा भूत्, मा भूयात्)
मुबारिज़ (अ) = योद्धा
मुबारज़त (अ) = युद्ध के लिये बढ़ना
मुबारक (अ) = धन्य, आशीर्वादित, प्रसन्न
म बाश (फा) = मत हो (स०—मा भूयास्)
मुबालिग़ा (अ) = अतिशयोक्ति
मुबालिग़ा नमूदन् (अ फा) = अतिरेक करना
मुब्तला (अ) = ग्रस्त होना, व्यस्त होना

(م — म)

मुबद्दल (अ) = परिवर्तित
मुबज़्ज़िर (अ) = फिजूल खर्च, अतिव्ययी
मुबज़्ज़िरी (अ) = फिजूल खर्ची
म बर (फा) = मत कम मान, (गत समझ)
मब्रज (अ) = व्यक्तिगत, गुप्तस्थान (शौचालय)
मबलग़-मुबलिग़ (अ) = कुल रकम
मुबलिग़े (अ फा) = एक रकम
म बन्द (फा) = मत उलझ, मत सम्पृक्त हो
मबीत (अ) = रात गुज़ारना
मुबीन (अ) = स्पष्ट, व्यक्त, प्रकट
म पिन्दार (फा) = मत सोच
म ताब (फा) = मत पलट, मत मुड़
मुताबअ़त (अ) = आज्ञाकारिता
मुतालिफ़ (अ) = दोस्ती करना, जान पहचान बढ़ाना
मुतबह्हिर (अ) = समुद्रकल्प, समुद्र के समान गहरे ज्ञानवाला
मुतबद्दल (अ) = बदला हुआ, परिवर्तित
मुतजल्ली (अ) = प्रसन्न, चमकता हुआ
मुतर्रिफ़ (अ) = चलता हुआ
मुतहल्ली (अ) = रत्नों से सजा हुआ
मुतहम्मिल (अ) = धीरज से सहता हुआ
मुतहय्यिर (अ) = चकित, विस्मित
मुतरद्दिद (अ) = असमंजस में पड़ा हुआ
मुतरस्सिल (अ) = पत्र लेखक, लेखक, सचिव
मुतरस्सिद (अ) = विचारक, सजग
मुतरक़्क़िब (अ) = अपेक्षा करनेवाला, आशा करनेवाला
मुत्तसीअ् (अ) = बड़ा, विशाल
मुतसव्वर (अ) = चिन्तित, विचारित
मुतज़ह्हिफ़ (अ) = दुर्बल, निबल, अशक्त
मत्ति (अ) = प्रसन्न हो, प्रसन्न करे, प्रसन्नता दे
मत्तिल् मुस्लिमीन बि तूले हयातिहि (अ,) = प्रसन्न कर मुसलमानों को उसकी दीर्घायु से
मुतअ़ब्बिद (अ) = भक्त, पूजक
मुतअ़द्दी (अ) = आक्रामक, व्याकरण में सकर्मक क्रिया
मुतअ़द्दियन् (अ) = आक्रामक रूप से
मुतअ़ल्लिक़ (अ) = सम्बन्धित, के सम्बन्ध में
मुतअ़ल्लिम (अ) = शिष्य
मुतअ़न्निद (अ) = सर्वनाशकामी, शत्रु
मुतग़य्यर (अ) = बदला हुआ, परेशान
मुत्तफ़िक़ (अ) = सहमत
मुतक़द्दिम (अ) = पूर्ववर्त्ती
मुतकब्बिर (अ) = घमंडी, धृष्ट
मुतकल्लिम (अ) = कलाम करनेवाला, वक्ता
मुतलह्हिफ़ (अ) = व्याकुल, चिन्तित

(م — म)

मुतमत्तिअ (अ) = प्रसन्नतापूर्ण, चीज काम में लानेवाला, उपकारा
मुतमक्किन (अ) = स्थित
मुतक़द्दिम (अ) = पुरस्कृत
मुतवक़्क़िअ् (अ) = तवक्को करनेवाला, अर्थी, अपेक्षा रखनेवाला
मुतहाविन (अ) = प्रमादी, लापरवाह
मुत्तहिम (अ) = सन्देहास्पद
मसावत (अ) = कदम, कोटि
मसावते (अ फा) = एक कोटि
मिसाल (अ) = उपमा, उदाहरण, समानता
बर मिसाल (फा अ) = के समान
बा मिसाले मा (फा) = हम जैसों के समान
मसानी (अ) = (मसना का बहुवचन) वीणा के तार
मसल (अ) = कहावत, कहानी
फ़िल् मसल (अ) = उदाहरण के लिये
मसल ज़दन् (अ फा) = उदाहरण देना
मसले (अ फा) = एक उदाहरण
मस्नवी (अ फा) = दोहे, दो-दो पंक्तियों की कविताएँ
मुजादल (अ) = विवाद, झगड़ा
मजाल (अ) = मुड़ने की जगह, शक्ति, क्षमता
मजालिस (अ) = (मजलिस का बहुवचन) सभाएँ
मुजालसत (अ) = समिति, समिति में एक दूसरे के साथ बैठना
मुजानबत (अ) = विराग करना, चले जाना
मुजावरत (अ) = पड़ोसियों से बात करना, अन्तरंगता
मुजावरत कर्दन् (अ फा) = निकटवास, साथ बैठना
मुजाहदा (अ) = धर्मयुद्ध
मुज्तबा (अ) = चुना हुआ
मुजर्रद (अ) = एकाकी, केवल
ब मुजर्रद (फा अ) = केवल, एकाकी मात्र
मजरूह (अ) = घायल
मुजरा (अ) = बहाया गया, जारी किया गया, स्वीकृत
मजलिस (अ) = समिति
मजलिसे (अ फा) = एक समिति
मुजल्ला (अ) = सजाया हुआ, अलंकृत
मजमा (अ) = भीड़, सभा
मजमूअ् (अ) = एकत्रित, शान्त
मजमूआ (अ) = संग्रह
मजनूं (अ) = लैला का प्रेमी, पागल, प्रेमोन्मत्त
म जू-म जो (फा) = मत तलाश कर, मत चाह
मजीद (अ) = महान्, शानदार
मुहाबा (अ) = समारोह
मुहावरा (अ) = वार्तालाप
मुहाज़ा (अ) = मुकाबला, आमना-सामना
मुहारिब (अ) = योद्धा

(م — म)

मुहासिबा (अ) = हिसाब की जाँच, गणित विद्या
महासिन (अ) = (हुस्न का बहुवचन) आकर्षक, सत्काय, सौन्दर्य युक्त
महासिनी (अ) = मेरे सुन्दर काम
महाफिल (अ) = (महफिल का बहुवचन) महफिलें, सभाएँ
मुहाल (अ) = असम्भव, असगत, विरुद्ध, बेकार
महामिद (अ) = (महमीदत का बहुवचन) प्रशस्त गुण
महावरा (अ) = बातचीत
मुहिब्ब (अ) = प्रेमी, मित्र
मुहिब्बु'ल् औलिया (अ) = पवित्र जनों-साधुओं का मित्र
मुहब्बत (अ) = प्रेम, मैत्री
महबूब (अ) = प्रेम किया गया, प्रेमपात्र-पात्री
महबूबतर (अ फा) = प्रेयान्-प्रेयसी
महबूबे (अ फा) = एक प्रेमपात्र
मुहताज (अ) = आवश्यकता से-अभाव से ग्रस्त
मुहताजतर (अ फा) = अधिक अभावग्रस्त
मुहतसिब (अ) = दण्डपाल, चरित्र निरीक्षक
मुहतमल (अ) = सम्भाव्य, सन्देहास्पद
मुहतमिल (अ) = भारग्रस्त, रोगी
महजूब (अ) = लज्जालु, पर्दा किये हुए, हिजाब किये हुए
मुहरक़्न् (अ) = जला हुआ, जलता हुआ (मुहरक से शतृ प्रत्यय)
महरूम (अ) = वंचित, कृतनिषेध
मुहसिनीन (अ) = (मुहसिन का बहुवचन) उपकारक लोग
महशर (अ) = कयामत की न्यायसभा
महज (अ) = शुद्ध, केवल
महजर (अ) = मिजाज़, स्वभाव
महफिल (अ) = सभा
महफ़ूज (अ) = हिफाजत किया गया, सुरक्षित
मुहक़्क़िक़ (अ) = हकीकत का उपदेशक, विचारक
मुहक़्क़िक़ान (अ फा) = (मुहक्किक़ का बहुवचन) विचारकजन
मिहक्क (अ) = कसौटी, परीक्षा
मुहकम (अ) = दृढ़, कुरान का एक अंश
महल्ल (अ) = स्थान
महल्ला (अ) = महल्ला
मुहम्मद (अ) = इस्लाम के प्रवर्तक, (शब्दार्थ—प्रशंसनीय)
मुहम्मद बिन् मुहम्मद गज्जाली (अ) = इस्लाम का एक खुरासानी विचारक
महमूद सुबुक्तगीन (अ फा) = महमूद गजनवी (शब्दार्थ—छोटा तगीन)
मिहनत (अ) = परिश्रम
मह्व (अ) = लीन, तन्मय
मह्व शुदन् (अ फा) = लीन होना
मुख़ातब (अ) = सम्बोधित व्यक्ति, द्वितीय व्यक्ति
मुख़ातिब (अ) = सम्बोधित करते हुए, वक्ता
मख़ाफ़त (अ) = खौफ, भय

(م — म)

मुख़ालतत (अ) = अन्तरगता, घुलना मिलना
मुख़ालिफ (अ) = विरुद्ध, विरोधी
मुख़ालफत (अ) = विरोध
मुख़ब्बत (अ) = अव्यवस्थित
मुख़्तसर (अ) = संक्षिप्त
मुख़्तलिफ (अ) = विभिन्न
मख़दूम (अ) = खिदमत किया गया, मालिक
म ख़र (फा) = मत खरीद (मा क्रयस्व)
म ख़राश (फा) = मत काट-फाड, मत सता
मख़फ़ूज (अ) = नीचा हो गया, उतर गया, 'कस्र' या 'खफ्ज' से चिह्नित अक्षर जैसे ب
मुख़लिस (अ) = खालिस, असली, वास्तविक
मुख़लिसीन (अ) = (मुख्लिस का बहुवचन) खालिस लोग
मुखलिसीन लहु'द्दीन (अ) = धर्म में लिप्त ईश्वरोन्मुख लोग
मख़लूक़ (अ) = प्राणी, जीवधारी, सृष्ट
मुख़न्नस (अ) = स्त्री बनाना, नपुसक, द्वारपाल
म ख़ुर (फा) = मत खा
मख़ूफ (अ) = भयानक
मद्दाह (अ) = प्रशसा करनेवाला, चारण, भाट
म दार (फा) = मत पकड
मुदारा (फा) = नम्रता, सज्जनता
मुदावमत (अ) = स्थायित्व
मुदब्बिर (अ) = शासक, निर्देशक
मुद्दत (अ) = काल, अवधि, चिरकाल
मुद्दतहा (अ फा) = बहुत समय, कई व्यवधान
मुद्दते (अ फा) = एक लम्बा व्यवधान
मद्ह (अ) = प्रशंसा
मद्रसा (अ) = विद्यालय, पाठशाला
मुद्दई (अ) = वादी
मदफून (अ) = दफन किया गया, गुप्त
म दिह (फ़ा) = मत दे (स०—मा देहि)
मदहोश (फ़ा) = बेहोश, प्रमत्त
मजकूर (अ) = उल्लिखित, उक्त
मजल्लत (अ) = नीच, घृणास्पद
मजम्मत (अ) = आरोप, तिरस्कार
मजमूम (अ) = अभियुक्त
मर (फा) = ही
मर्रा (अ) = वह गुजरा
व मर'ल् ईसु (अ) = जब गुजर चुका पाण्डुर ऊँट
मरअ (अ) = मनुष्य, मानवजाति (स०—'मर', अमर का प्रतिपर्याय)
मरा (फा) = मुझको, मेरा
मरातिब (अ) = (मरतबा का बहुवचन) पदवियाँ

(म—म)

मुराद (अ) = अभिलाषा, अभिलषित
मुरासला (अ) = पत्र व्यवहार, पत्राचार
मुराअवत (अ) = इच्छा व्यक्त करना
मुराफअ (अ) = न्यायाधीश के सामने शिकायत ले जाना
मुराफक़त (अ) = साथ साथ यात्रा करना, संगत, सभा
मुराक़बा (अ) = ध्यान, ईश्वरचिंतन
मरा हस्त (फा) = मुझको है
मुरब्बी (अ) = शिक्षक, संरक्षक अभिभावक
मुरत्तब (अ) = व्यवस्थित, क्रम से, लगाया गया
मुरत्तब करदन् / मुरत्तब साख़्तन् (अ फा) = व्यवस्थित करना
मरतबा मरतबत् (अ) = पद, कोटि
मरतबते (अ फा) = एक पद
मुरतहन, मुरतहन (अ) = शपथ, सत्यापित, प्रतिज्ञापित
मरफ़ह (अ) = आधिक्य, सुविधा
मरहबन् (अ) = आधिक्य, सुविधा पूर्वक
मरहमत (अ) = दया, अनुकम्पा
मर्द (फा) = पुरुष, वीर
मुर्दाद (फ़ा) = ईरानी संवत्सर का चौथा मास, आषाढ़, जुलाई
मुर्दार (फा) = अपवित्र, अशुद्ध, लाश
मर्दान् (फा) = (मर्द का बहुवचन) पुरुष
मर्दाना (फा) = पुरुषोचित
मर्दश्त (फा) = शीराज़ के निकट एक स्थान जो मिट्टी के बरतनों के लिये प्रसिद्ध है।
मर्दक (फा) = छोटा आदमी, मामूली आदमी
मर्दुम (फा) = पुरुष, मर्द
मर्दुम आज़ार (फा) = मनुष्यों को सतानेवाला
मर्दुम आज़ारी (फा) = मनुष्यों का सताना
मर्दुम आज़ारे (फा) = एक मनुष्यों का सतानेवाला
मर्दुम ख़्वार (फा) = नरभक्षी, क्रूर, निर्दय
मर्दुम दर (फा) = मनुष्यों को फाड़नेवाला (सं०—दृ से दर)
मर्दुम गज़ा (फा) = आदमियों को काटनेवाला
मर्दुमी (फा) = पुरुषत्व
मर्दुमे (फा) = एक पुरुष
मुर्दन् (फा) = मरना (सं०—मरण)
मर्दी (फा) = पुरुष विषयक
मुर्दा (फा) = मुर्दा (सं०—मृत)
दुमर्दा (फा) = दो मर्दों के लायक
मुर्दा बिह (फा) = बेहतर है मुर्दा, मरा भला
मर्दी (फा) = पुरुषत्व, वीरत्व
मर्दे (फा) = एक मर्द
मर्दियत (फ़ा) = तेरी वीरता
म रसान (फ़ा) = मत भेज

(म—म)

मुर्सल (अ) = भेजा, दूत
मरसूम (अ) = लिखित, वेतन
मुर्शिद (अ) = गुरु, शिक्षक
मुरस्सअ (अ) = रत्नमण्डित, रत्न जटित
मरज़ (अ) = रोग, बीमारी
मर्ज़ (अ फा) = भय रोग
मर्ज़ी (अ) = इच्छा, सम्मति
मुर्ग़ (फा) = पक्षी
मुर्ग़ाबी (फा) = जलमुर्गी
मुर्ग़ ख़ानगी (फा) = आँगन की चिड़िया—जैसे मैना, तोता, कबूतर
मुर्ग़ बिरयान (फा) = भुना मुर्ग़-मुर्गी
मुर्ग़क (फा) = छोटी चिड़िया
मुर्ग़े (फा) = एक चिड़िया
मुरफ़क़अ (अ) = पैबंदों लगी पोशाक, भिक्षुओं की पोशाक
मरकब (अ) = सवारी के पशु—जैसे घोड़ा, ऊँट, गाय
मुरक्कब (अ) = रचा बोया हुआ, दीवार सीना पेंट
मरकज़ (अ) = केन्द्र
मर्ग (फा) = मृत्यु
म रंज (फा) = मत नाराज़ हो (सं०—मत रंज)
म रो-म रव (फा) = मत जा (सं०—मत याहि)
मर्र (अ) = वे गुज़रे
इज़ा मर्रू बिल लग़्वि (अ) = जब वे गुज़रे एक पातकी के पास से
मर्रू किरामन् (अ) = वे गुज़रे सम्मानपूर्ण होकर
मरवारीद (अ) = मोती
मुरव्वत-मुरुव्वत (अ) = मर्दानगी, मनुष्यता, दयालुता, सज्जनता
मिरवहा (अ) = पंखा
मरहम (अ) = मरहम
मरहम निह (अ फा) = मरहम लगानेवाला, शान्ति देनेवाला
मरऊब (अ) = भयभीत, त्रस्त
मुरीद (अ) = चेला
मरी (फा) = (मर+ई) मरी है
मिज़ाज (अ) = स्वभाव, रचना, गुण
मुज़ाहत (अ) = हास, विनोद
मुज़्जात (अ) = (मुज़्जन का स्त्रीलिंग) थोड़ी, ज़रासी
मुज़्द (फा) = उपहार, ईनाम, मज़दूरी
मुज़्दे सरहंगी (फा) = राजस्व अधिकारी का कर
मज़रूअ (अ) = बोया हुआ खेत, जोत
मुज़क्का (अ) = शुद्ध किया हुआ, जिस धन पर २॥ प्रतिशत ज़कात निकाल दी गई हो
म ज़न (फा) = मत मार
मज़ीय्यत (अ) = अत्यन्त उत्कृष्ट वृद्धि
मज़ीद (अ) = वृद्धि, बढ़ोतरी
मुज़्दा (फ़ा) = सुसमाचार

(م—म)

मिश्ज़ा (फा)=(मिश्ज़गाँ वहुवचन) पलक (स०—पक्ष्म)
मसा (अ)=सन्ध्या
मुसाइद (अ)=प्रसन्नतापूर्ण, हर्षमय
मुसाफिर (अ)=सफर करनेवाला, यात्रिक
मसाकीन (अ)=(मिसकीन का वहुवचन) निर्धन लोग
मुसामहत (अ)=प्रमाद, लापरवाही, दावा छोड़ना
मस्त (फा)=पिये हुए, पानोन्मत्त (स०—मत्त)
पीले मस्त (फा)=मस्त हाथी
मुस्ततर (अ)=छिपा हुआ, निगूढ
मुस्ततिर (अ)=आत्म गोपक
मुस्तजाव (अ)=उत्तरित, स्वीकृत
मुस्तजाबु'द्दवत (अ)=स्वीकृत प्रार्थनावाला, वह जिसकी प्रार्थनाएं प्रभु स्वीकार करता है
मुस्तह्कम (अ)=दृढ, सुस्थापित
मुस्तख्लस (अ)=साफ़ तौर पर ले जाया गया, सुरक्षित
मुस्तस्क़ी (अ)=जलोदरी, तृषारोगी
मुस्तआर (अ)=उधार में मांगा हुआ
मुस्तआन (अ)=प्रार्थित (अर्थात् परमात्मा)
मुस्तअरिव (अ)=अरवीकृत, अरव वना हुआ
मुस्तअजिल (अ)=शीघ्र, चपल, त्वरित
मुस्तइद (अ)=सधा हुआ, प्रस्तुत, हाज़िर
मुस्तग़रक़ (अ)=डूबा हुआ
मुस्तफीद (अ)=लाभान्वित
मुस्तक़्बिह (अ)=घृणापूर्ण
मुस्तक़ीम (अ)=सच्चा, सकल्प युक्त
मस्तम् (फा)=मैं मस्त (नशे में) हूं
मुस्तमिअ (फ़ा)=श्रोता
मुस्तमन्द (फ़ा)=ज़रूरतमन्द
मुस्तौजिव (अ)=योग्य, उपयुक्त
मस्तूर (अ)=पर्दादार, अच्छी, लजीली, पवित्र
मुस्तऊली (अ)=विजेता, अपनी चलानेवाला
मस्ती (फा)=नशा
मस्जिद (अ)=पूजास्थल
मस्तूर (अ)=लिखित, वर्णित
मुस्किर (अ)=नशीला, मादक पदार्थ
मस्कनत (अ)=(मिस्कीन का भाव) ग़रीवी, निर्धनता
मिस्कीन (अ)=निर्धन
मुस्लिम (अ)=सच्ची आस्थावाला
मुसल्लम (अ)=तसलीम किया हुआ, समूचा, विध्वस्त
मुस्लिमान (अ)=(मुस्लिम का वहुवचन) मुसलमान लोग
मुसलमान (फा)=(शुद्ध रूप—मुसल्नआन)
मुसलमानी (फ़ा)=मुसलमानी धर्म
मुस्लिमीन (अ)=(मुस्लिम का वहुवचन) मुसलमान लोग

(م—म)

मिस्मअ (अ)=कान, श्रवणेन्द्रिय
मिस्मई (अ)=मेरा कान
वि मिस्मई (अ)=मेरे कान में
मस्नद-मसनद (अ)=वड़ा गद्दा, गद्दी
मसनदे क़ज़ा (फा)=न्यायासन
मसऊल (अ)=सवाल किया गया, पूछा गया व्यक्ति
मसला (अ)=प्रश्न, समस्या, कानूनी नुक्ता
मुशावहत (अ)=समानता, अनुरूपता
मुशार (अ)=व्यक्त, उद्दिष्ट
मुशारुन इलैहि (अ)=पूर्वोद्दिष्ट
मश्शाता (अ)=नौकरानी, सेविका
मशाम्म (अ)=गन्ध, घ्राणेन्द्रिय
मुशावरत (अ)=सलाह मांगना, सलाह
मुशाहदत (अ)=देखना, दर्शन, मनन
मुशाहदतु'ल् अवरारि वैन'त्तजल्ली व'ल् इस्तितार (अ)=भक्त को ईश्वर दर्शन कुछ परमात्मा की व्यक्ति है और कुछ अव्यक्ति
मुशाहरा (अ)=मासिक वृत्ति, तनखाह
मशाइख़ (अ)=(शैख का वहुवचन) वड़े लोग, पवित्र जन
मुश्त (फा)=मुट्ठी, मुट्ठी भर, मुक्का मारना (स०—मुष्टि)
म शिताव (फा)=जल्दी मत कर
मुश्ताक़ (अ)=अभिलाषी, उत्सुक
मुश्ताक़े मज़िली (अ फा)=तू मजिल पर पहुंचने का मुश्ताक़-अभिलाषी है
मुश्ताक़ी (अ फा)=अभिलाषा
मुश्ताक़ी बिह् कि मलूली (अ फा)=उत्सुकता अच्छी या विरति
मुश्तरी (अ फा)=शुभग्रह, खरीदार, क्रेता
मुश्तज़न (फा)=घूंसा मारनेवाला (स०—मुष्टिहन्)
मुश्तज़नी (फा)=घूंसेवाज़ी
मुश्तज़ने (फा)=एक घूसेवाज़
मुश्तग़ल (अ)=व्यस्त, डूवा हुआ
मुश्तग़िल (अ)=काम लेनेवाला, खर्च करनेवाला
मुश्तहर-मुश्तहिर (अ)=इश्तिहार किया गया, प्रसिद्ध
मुश्ती (फा)=घूसेवाज़ (स०—मौष्टिक-मुष्टीक)
मुश्ते (फा)=एक मुट्ठी
मुश्ते दू (फ़ा)=एक दो मुट्ठी, ज़रा सा
मशरिक़ (अ)=पूर्व
मशरिक़े ताविस्तानी (अ फ़ा)=सब से वड़ा दिन
मशरिक़े ज़मिस्तानी (अ फा)=सब से छोटा दिन
मशरिक़ैन (अ)=(शब्दार्थ—दोनों पूर्व) पूर्व पश्चिम
वुअदु'ल मशरिक़ैन (अ)=पूर्व पश्चिम की दूरी
मशअल-मशाल (अ)=मशाल, उल्मुक
मशालदार (अ फा)=मशाल दिखानेवाला
मशग़ला (अ)=समय यापन का साधन

(م — म)

मशगूल (अ) = व्यस्त
मशगूली (अ फा) = व्यस्तता
मुशफ़िक़ (अ) = दयापूर्ण, सौजन्यपूर्ण
मशक़्क़त (अ) = खटना, कड़ी मिहनत
मुश्क (फ़ा) = कस्तूरी
बेदे मुश्क (फ़ा) = बेदमुश्क नामक दवा
मुश्किल (अ) = कठिन
मुश्किली (अ फ़ा) = कठिनाई
मुश्की (फा) = क्या तू कस्तूरी है
म शुमार (फा) = मत गिन, मत मान
मशमूम (अ) = सुगन्धित
मशवरत (अ) = मश्वरा, सलाह
मुशव्वश (अ) = परेशान, अशान्त, आविष्ट
मशहूर (अ) = प्रसिद्ध
मशहूरतर (अ फा) = प्रसिद्धतर
मशीय्यत (अ) = मर्ज़ी, खुशी
मुशीर (अ) = सलाहकार
मुसाहबत (अ) = अन्तरंगता
मुसाहिफ़ (अ) = (मुसहफ का बहुवचन) पुस्तकें, कुरान
मुसादिरा (अ) = अर्थदण्ड, दण्ड
मुसारअत (अ) = कुश्ती, मुकाबला
मसाफ्फ-मुसाफ (अ) = (मसाफ्फ का बहुवचन) सेना की पंक्तियाँ, युद्धक्षेत्र
मुसाफ आज़मूदा (अ फा) = युद्ध में अनुभवी
मसालिह (अ) = (मसलिहत का बहुवचन) मसले, मामले
मुसालहत (अ) = सन्धि, शान्ति
मसाइब (अ) = (मुसीबत का बहुवचन) विपत्तियाँ
क़ब्ल'ल् मसाइब (अ) = विपत्तियों से पूर्व
मुसहफ़ (अ) = पुस्तक, कुरान
अल् मुसहफ़-मुसहफ़े अज़ीज़-मुसहफ़े मजीद (अ) = क़ुरान
मिस्र (अ) = मिस्र देश
मिसराअ् (अ) = कविता का एक चरण, अंश
मिसरी (अ फा) = मिस्रवासी, मिस्र विषयक
मुस्तफ़ा (अ) = चुना हुआ (अर्थात् मुहम्मद)
मुस्लिह (अ) = इस्लाह करनेवाला, सुधारक
मस्लहत (अ) = विषय, उद्देश्य, भलाई, उपकार
मस्लहत आमेज़ (अ फ़ा) = दयालुतापूर्ण, उपकारपूर्ण
मस्लहतजू (अ फा) = सुधार चाहनेवाला
मस्लहत जूए (अ फा) = एक भलाई चाहनेवाला
मस्लहते (अ फा) = एक मस्लहत
मुसल्ला (अ) = प्रार्थना स्थल, प्रार्थना करते समय बैठने की दरी
मुसल्लाए शीराज़ (अ फ़ा) = शीराज का एक स्थान
मुसम्मम (अ) = नियत, तुला हुआ, निर्णीत

(م — म)

मुसन्निफ़ (अ) = लेखक
मसून (अ) = सुरक्षित
मुसीब (अ) = घातक
मुसीबत (अ) = विपत्ति
ब मुसीबते (फा अ) = दुर्भाग्य से, एक मुसीबत में
मुज़ाद (अ) = प्रतिद्वन्द्वी, शत्रु
मुज़ाअफ़ (अ) = दोगुना, द्विगुणित
मज़रत (अ फा) = दुष्टता, चोट, परेशानी
मज़मून (अ) = विषय
मज़मूने ख़िताब (अ फा) = विवाद का विषय
मज़ा (अ) = वह गया
मज़'स्सिबा (अ) = बचपन चला गया
मुताबिक़ (अ) = के अनुसार
मुताअ (अ) = आज्ञापालन की जाय जिसकी
मुताइम (अ) = (मताम का बहुवचन) भोज्य पदार्थ
मुतालबा (अ) = पृच्छा, जानकारी, अध्ययन
मुतालबत करदन् (अ फा) = पूछना
मुताअला (अ) = मनन, अध्ययन
मुताअला फरमूदन् (अ फा) = पढ़ना, देखना, विचार करना
मुताबअत (अ) = आज्ञाकारिता
मुतायबा (अ) = परस्पर हासविलास, खुशी मनाना
मतबख़ (अ) = रसोई
मतबूअ (अ) = छपा हुआ
मुतरिब (अ) = गायक
मुतरिबे (अ फा) = एक गायक
म तलब (फा) = मत ढूँढ़
मुत्तलिअ (अ) = परिचित
मुत्तलिअ शुदन (अ फा) = परिचित होना, देखना
मुत्तलिअ गर्दानीदन् (अ फा) = सूचित करना
मतलूब (अ) = कामित, इच्छित, माँगा गया
मतमह (अ) = ऊँची उठी निगाह, दृश्य, नज़ारा, दृष्टिगोचर
मतमहे नज़र (अ फा) = नयनाकर्षक पदार्थ
मुतय्यब (अ) = सुगन्धित
मुतीअ (अ) = आज्ञाकारी
मुज़फ्फर (अ) = विजेता बनाया हुआ, विजयी
मुज़फ्फरो मन्सूर (अ) = विजेता बनाया गया तथा सहायता दिया गया
मज़लूम (अ) = अत्याचार, पीड़ित
मअ् (अ) = युक्त, सहित, साथ
मई (अ) = मेरे साथ
मअहू (अ) = उसके साथ
मुआतबत (अ) = दण्ड, ताड़ना
मआश (अ) = जीविका

(م — ग)

मुआशरत (अ) = परिचित, अन्तरगता, सभा
मआसी (अ) = (मासियत का बहुवचन) अपराध, पाप
मुआफा (अ) = स्वस्थ, निरामय, नीरोग
लिल् मुआफा (अ) = उसको जो कष्टरहित है
मआकबत (अ) = दण्ड, पीछा
मुआलजा (अ) = चिकित्सा
मुआलजतें (अ फ़ा) = एक इलाज
मुआमला (अ) = मामला
मुआनिद (अ) = शत्रु प्रतिपक्षी, हठी
मुआयना (अ) = मुआयना
मअबर (अ) = गुज़र, इस तरफ से उस तरफ जाने का रास्ता, नाव
मुअताद (अ) = अभ्यस्त
मुअतबिर (अ) = विश्वस्त, आदृत
मुअतरिफ़ (अ) = स्वीकार करनेवाला
मुअतकिद (अ) = आस्थावान्
मुअतकिफ़ (अ) = निरन्तर भक्ति में लीन
मुअतमद (अ) = रहस्य जाननेवाला, विश्वासपात्र
मुअतमद अलैह (अ) = उसके विश्वासपात्र
मुअजिब (अ) = आत्मप्रशंसक, घमण्डी
मुअजिज़ (अ) = चमत्कार
मिअदा (अ) = पेट
मअदन (अ) — खान, धातुओं का खान
मअदूम (अ) = विनष्ट, लुप्त, अविद्य
मिअदा सगी (अ फ़ा) = अजीर्ण, पेट का कड़ा होना
मअज़रत (अ) = क्षमायाचना
मअज़ूर (अ) = क्षम्य, क्षमा किया
मअज़ूर दाश्तन् (अ फ़ा) = क्षमा कर रखना
मअरज़ (अ) = मिलनस्थल, स्थिति
मअरिफत (अ) = ज्ञान, परिचय, ईश्वर ज्ञान
साबिक़ ए मअरिफतें (अ फ़ा) = पुराना परिचय
मअरका (अ) = युद्ध क्षेत्र, युद्ध
मअरूफ़ (अ) = प्रसिद्ध
मअज़ूल (अ) = पदनिवृत्त, पदावनत, निष्कासित
मअज़ूली (अ फ़ा) = निवृत्त करना, पदावनत करना
मअशर (अ) = समाज, समाज
मअशूक़ (अ) = प्रेमपात्री, प्रियपात्र
मअशूका (अ) = प्रेमिका
मअशूकी (अ फ़ा) = प्रेमसम्बन्ध
मिअसम (अ) = कलाई, मणिबन्ध
मअसूम (अ) = निर्दोष, भोला, पवित्र, बेदाग
मअसूमी (अ फ़ा) = निर्दोषिता
मअसियत (अ) = बगावत, विद्रोह, पाप, अपराध
व मअसियतें (फ़ा अ) = उस पाप के कारण

(م — ग)

मुअज़िलात (अ) = (मुज़िलत का बहुवचन तथा मुज़िल का स्त्रीलिंग) कठिनाइयाँ
मुअत्तल (अ) = उपेक्षित, परित्यक्त
मुअज़्ज़म (अ) = महान्, आदरणीय
मुअज़मात (अ) = महान् विषय, भारी-महत्वपूर्ण विषय
मुअलम (अ) = अंकित, चिह्नांकित, फूलदार सज्जावाला
मुअल्लम (अ) = चिह्नित, अंकित
मुअल्लिम (अ) = गुरु, उपाध्याय
मअलूम (अ) = ज्ञात
मअलूम करदन् (अ फ़ा) = जानना
मअलमे (अ फ़ा) = एक निशान, एक चिह्न
मअना (अ) = अर्थ, वास्तविकता, धार्मिक भावना, आध्यात्मिक दुनिया
व मअना (फ़ा अ) = आत्मा में, वस्तुत
मअना ए ईं सुखन (अ फ़ा) = इस बात का अर्थ
मुअव्वल (अ) = विश्रामभूमि, सहायता के लिये विश्वास किया गया
मऊनत (अ) = सहायता
मअहूद (अ) = अहद किया गया, वाग्दत्त, सामान्य, पारम्परिक
मअई, (अ) = मेरे साथ
मईशत (अ) = जीविका, जीविकासाधन
मुअय्यन (अ) = निश्चित, नियत, निर्णीत
मअयार (अ) = कसौटी, शुद्धतासार
मगार (अ) = माद, खोह, गुफा
मुगाज़िबन् (अ) = क्रोधावेशपूर्वक
मगरिब (अ) = पश्चिम, मोरक्को, पश्चिम अफ्रीका
मिन् मगारिबिहा (अ) = उसके अस्त होने की जगह से
मगरिबी (अ फ़ा) = पश्चिमी, पश्चिम निवासी
मगरूर (अ) = घमण्डी
मग्ज़ (फ़ा) = मिंगी, गूदा, मस्तिष्क
मग्ज़े (फ़ा) = एक मिंगी
मगफिरत (अ) = क्षमा
मगलूब (अ) = पराजित
मुगन्नी-मुगन्नीन (अ) = गायक
व अन्त मुगन्नीन (अ) = लेकिन तू गायक (ऐसा) है
मुगीलान (अ) = बबूल
मफातीह (अ) = (मिफ़्ताह का बहुवचन) चाभियाँ
मुफारकत (अ) = वियोग, मृत्यु
मुफावज़त (अ) = साझेदारी, मैथुन, दैहिक मैथुन
मुफततिन (अ) = मोहित, जादू से विस्मित
मुफतखिर (अ) = दम्भी, डींगियल
मुफतकिर (अ) = निधन, उत्सुक, गरज़मन्द
मुफतन् (अ) = प्रलोभित, उन्मत्त, पागल
मफख़र (अ) = शान की चीज़

(م — म)

मफ़ख़र'ल् इस्लाम (अ) = इस्लाम का गौरव
मुफ़्तख़र (अ) = शानदार, महान्
मुफ़्तख़िर (अ) = प्रतापवान
म फ़रमा (फ़ा) = मत हुक्म दे
म फ़िरोश (फ़ा) = मत बेच
मुफ़सिद (अ) = फ़साद करनेवाला
मुफ़लिस (अ) = निर्धन, दिवालिया
मुफ़लिसी (अ फ़ा) = निर्धनता, दिवालियापन
मफ़हूम (अ) = समझा गया
मुक़ाबला मुक़ाबलत (अ) = विरोध, प्रतिरोध, प्रतिद्वन्द्विता
मक़ाल (अ) = बातचीत, भाषण
मक़ाल (अ) = बातचीत किया हुआ, वाणी
मक़ाम (अ) = स्थिति, जगह, विश्रामस्थल, निवास
मक़ामात (अ) = (मक़ाम का बहुवचन) बैठक में पढ़े जानेवाले भाषण
मुक़ामिर (अ) = जुआरी
मक़ामे (अ फ़ा) = एक स्थान
मुक़ावमत (अ) = विरोध, प्रतिरोध, प्रतिस्पर्द्धा
मुक़बिल (अ) = बढ़ता हुआ, समृद्धिशील, सौभाग्यशाली
मक़बूल (अ) = स्वीकृत, स्वीकार्य, कृतस्वागत
मक़बूलतर (अ फ़ा) = स्वीकृततर
मुक़्तज़ा (अ) = अभीप्सित, इच्छित
मिक़दार (अ) = परिमाण, मात्रा
ह्ज़'ल् मिक़दार यहमिलुक (अ) = यह मात्रा तुझे तेरा सहयोग-सहायता देगी
मुक़द्दर (अ) = भाग्य
मुक़द्दम (अ) = अग्रस्थित, प्रियतर
मुक़द्दम दाश्तन (अ फ़ा) = सबसे पहले रखना
मुक़द्दमा (अ) = भूमिका, प्रारम्भ, प्रवेश, प्रवेशिका
मुक़द्दमए नह्वे क़मरउद्दहरी (अ फ़ा) = क़मरउद्दहरी की व्याकरण प्रवेशिका
मक़दूर (अ) = नियति, भाग्य
मुक़र्रब (अ) = निकटतर, समीपतर व्यक्ति
मुक़र्रर (अ) = नियत
मक़रून (अ) = सम्बन्धित, जुआ के नीचे बँधा
मुक़री (फ़ा) = प्राकृतिक, अपने आप उगा हुआ
मूरे मुक़री (फ़ा) = [illegible]
मक़सूम (अ) = तक़सीम किया हुआ, विभाजित, भाग्य
मक़सद (अ) = लक्ष्य, उद्देश्य
मक़सूद (अ) = उद्दिष्ट, लक्षित
मिक़यास (अ) = [illegible]
मुक़ीम (अ) = निवासी, स्थिर
मक़ालिक़ (अ) = (मक़्ला का बहुवचन) प्रशंसा, गुणानुवाद
मकारिह (अ) = घृणास्पद पदार्थ
मुकाशफ़ा (अ) = प्रकटीकरण, प्रदर्शन
मुकालमा (अ) = बातचीत, वार्तालाप
मकान (अ) = घर, निवास
मकाइद (अ) = (कायद का बहुवचन) चालें
मुकिद्र (अ) = सिर झुकानेवाली बात, अपमानजनक
मक्का (अ) = हिजाज़ प्रान्त में मुहम्मद साहब की जन्मभूमि
मकतब (अ) = विद्यालय, लेखन शिक्षणशाला
मक्तूब (अ) = लिखित, ग्रन्थ, पत्र
मक्र (अ) = छल
मुकर्रर (अ) = दुहराया गया
मुकर्रम (अ) = आदृत
मकरूह (अ) = आपत्तिजनक, अरुचिकर, निन्दनीय
मकरूही (अ फ़ा) = अरुचि,
मकसब (अ) = लाभ, जीविका स्रोत
म कुन (फ़ा) = मत कर
मुकनत (अ) = शक्ति, दृढ़ता, प्रभाव
मुकना (फ़ा) = ('मी कुनद' का प्राचीन रूप) करता है
मगर (फ़ा) = किन्तु, ताकि नहीं, शायद
म गर्दान (फ़ा) = मत होने दे
मगस (फ़ा) = मक्खी (सं०—मक्षक्)
म गो (फ़ा) = मत कह, मत बोल
मला (अ) = जनता की भीड़
बर मला उफ़तादन (फ़ा अ) = भीड़ पर ज़ाहिर होना
मल्लाह (अ) = माँझी
मुलाहिदत (अ) = नास्तिकता
मलाज़ (अ) = दुर्ग, सुरक्षा स्थल
मलाज़'ल् मुस्ताम (अ) = [illegible] शरण स्थान
मुलाज़िम (अ) = नौकर
मुलाज़िमत (अ) = नौकरी, निकटवर्तिता
मुलातफ़त (अ) = कोमलता, दुलार, शिष्टाचार
मलातिया (अ) = फ़रात नदी पर स्थित एक कस्बा
मलाअबत (अ) = हास-परिहास, क्रीड़ा
मुलाक़ात (अ) = सम्मिलन
मलाल-मलालत (अ) = अफ़सोस, दुःख
मलाली (अ फ़ा) = अप्रसन्नता
मलाम (अ) = ताना, फटकार
मलामत (अ) = फटकारना, आरोप लगाना
मलाही (अ) = (मिल्हा का बहुवचन) संगीत के साज जो कि भगवान से न्यारे भिन्न रूप होने के कारण निषिद्ध माने गये हैं।
मलायक मलायकत (अ) = (मलक का बहुवचन) फ़रिश्ते
मा मलायकती (अ) = हे मेरे फ़रिश्तो
मलायक सूरते (अ फ़ा) = फ़रिश्ता की सूरतवाला एक

मिल्लत (अ) = धर्म
मलजाअ (अ) = शरणस्थल
मुलहिद (अ) = नास्तिक
मलहूज (अ) = दृष्ट, देखा गया, विचारित
मलख़ (फा) = टिड्डा-टिड्डी (स०—मक्षस्)
मलऊन (अ) = अभिशप्त, निन्दित
मिल्क (अ) = मिल्कियत, जायदाद
मुल्क (अ) = राज्य, देश, सत्ता
मुल्को दीन (अ फा) = धर्म और सत्ता
मलक (अ) = फरिश्ता
मलिक (अ) = बादशाह
मलिकु'ल् ख़वास (अ) = सामन्त प्रमुख
मलिकज़ादा (अ फा) = राजकुमार
मलिके नीमरोज (अ फा) = नीमरोज़ का राजा
मलकूत (अ) = साम्राज्य, स्वर्ग का राज्य
मलकी (अ फा) = फरिश्ता सम्बन्धी
मुलव्वस (अ) = भ्रष्ट
मुलूक (अ) = (मलिक का बहुवचन) राजा लोग
मलूल (अ) = निराश, थकित
मलूली (अ फा) = तू थकित-सुस्त है
ममालिक (अ) = (ममलुकत का बहुवचन) प्रदेश, राज्य
मुमानिअत (अ) = निषेध
मुमताज़ (अ) = चुना हुआ, विशिष्ट
मुम्तनअ (अ) = निषिद्ध, अव्यवहार्य, असम्भाव्य
मुमिद्द (अ) = सहायक
ममदूह (अ) = प्रशस्त, स्तुत
मुमसिक (अ) = मुट्ठी भींचे हुए, कंजूस
ममक़ूत (अ) = घृणित, निन्दित
ममलुकत (अ) = राज्य, शासन
ममलूक (अ) = अधिकृत, जायदाद, क्रीतदास
ममलूकी (अ फा) = दासत्व, अधिकार
मन् (फा) = मैं, मुझे
मन् (अ) = कौन, जो कि, जिसको कि, जो कोई भी, कोई भी
मज् ज़ा (मन् ज़ा) (अ) = यह कौन है ?
मिन् (अ) = में से, के द्वारा, के कारण, की अपेक्षा
मिज़्ज़'ल्लज़ी (मिन्+ज़ा+अल्लज़ी) (अ) = इससे जो कि
मा मिन् मौलूदिन् (अ) = नही हुआ पैदा हुआ में से कोई
मन्न (अ) = एहसान करके ताना मारना
मनाबिर (अ) = (मिम्बर का बहुवचन) भाषण पीठिकाएँ
मुनाजात (अ) = मौन प्रार्थना (स०—मौनध्यात)
मुनादमत (अ) = सामाजिकता
मनारा (अ) = मीनार जहाँ से प्रार्थना करनेवालों को बुलाया जाता है
मुनाज़अत (अ) = विरोध करना
मुनासिब (अ) = उचित, उपयुक्त
मुनासबत (अ) = रिश्ता, समरूपता, तुलना
मुनासहत (अ) = सलाह
मुनाज़रा (अ) = विवाद, तर्क
मुनाफ़ा-मनाफ़ा (अ) = (मन्फ़अत का बहुवचन) लाभ
मुनाफ़िज़ (अ) = विरुद्ध
मुनाकहत (अ) = निकाह, विवाह
मिन'स्समा (अ) = स्वर्ग से
मिन'ल् अज़ाबि'ल् अद्ना (अ) = छोटे (सासारिक) दण्ड में से
मनाही (अ) = (मनहीय्य का बहुवचन) निषिद्ध, पाप
मिन् आयातिहि (अ) = कुरान की आयतो में से
मिम्बर (अ) = धर्मवेदी, व्यासपीठ, भाषण की चौकी
मिम् बाद (अ) = बाद में
मिम् बाद ज़ालिक (अ) = उसके पश्चात्
मनत (फा) = मैं तुझे
मिन्नत (अ) = स्तुति, धन्यवाद, एहसान
मिन्नत बुर्दन् (अ फा) = अहसान उठाना, अहसानो के नीचे दबना
मिन्नत शनास (अ फा) = कृतज्ञ
मिन्नत निहादन् (अ फा) = अहसान से दबाना, अहसान मारना
मुन्तसिब (अ) = खड़ा करना, नस्ब या फत्ह का चिह्न लगाना जैसे किद्र का कद्र करने के लिये नस्ब लगता है
मुन्तज़िर (अ) = प्रतीक्षारत
मुन्तज़िम (अ) = प्रबन्धक, पक्तिबद्ध
मुन्तहा (अ) = समाप्त
मजलाब (फा) = अशुद्ध, दुर्गन्धित जल
मुनज्जिम (अ) = ज्योतिषी
मिन् खैर (अ) = भलाई में से
मज़िल (अ) = निवास स्थान, विरामस्थल
मज़िलन् (अ) = मज़िल के बतौर
मज़िलत (अ) = पद, पदवी
मन्सूब (अ) = सम्बन्धित, आरोपित, अभियुक्त
मनश् (फा) = मैं उसको
यके अज़ मुतअल्लिक़ाने मनश् मुत्तलाअ गर्दानीद (फा) = मेरे सेवको में से एक ने उसको सूचित किया
मशात (अ) = साहित्यिक लेख
म निशीं (फा) = मत बैठ (मा निष्ठा)
मन्सब-मंसिब (अ) = पद, अधिकार
मन्सबे क़ज़ा (अ फ़ा) = न्यायाधीश का पद
मन्सबे (अ फा) = एक पदवी
मुन्सरिफ (अ) = विश्रान्त, विरत
मुन्सरिफ कर्दन् (अ फा) = छुटकारा पाना, विरत करना
मुन्सिफ (अ) = इन्साफ करनेवाला, सच्चा
मन्सूर (अ) = सहायता प्राप्त (प्रभु से), विजेता

(م — म)

मौला मुलूकि'ल् अरबि व'ल् अजम (अ) = अरब और अजम के राजाओ का राजा
मोम-गूम (फा) = मोम, मधुकरण्डक
मौअनत (अ) = दैनिक भोजन
मूअनिस (अ) = अन्तरग मित्र
मूस (फा) = वाल
मू ए वुनागोश (फा) = गाल के वाल
मुअय्यद (अ) = सहायता प्राप्त, विजेता वनाया गया
अल् मुअय्यद मिन'स्समाअ (अ) = स्वर्ग से सहायता प्राप्त
मूये (फा) = एक वाल
माह (फा) = चन्द्रमा
मिह (फा) = महान् (स०—महत्)
महावत (अ) = भय, त्रास
मिहार (अ) = नकेल, लगाम
माहपारा (फा) = चाँद का टुकडा, प्रेमिका
मिहतर (फा) = महत्तर (स०—महत्तर)
मिहतरी (फा) = महानता
महजूर (अ) = वियुक्त, विरहित, परित्यक्त
महद (अ) = पालना, झूला
मिहर, मेहर (फ़ा) = कृपा, प्रेम, कोमलता
मुहर (फा) = मुद्रा, अक्षतयोनित्व (स०—मुद्र)
मिहरश् (फा) = उसका प्रेम
मिहरवान (फा) = प्रेमी, कृपालु, मित्र
महरू (फा) = चन्द्रमुखी, सुन्दरी
महरूई (फ़ा) = तू चन्द्रमुखी ह
मुहरा वरचीदन् (फा) = (शब्दार्थ—मुहरे चुनना) शतरज उठाना, प्रयाग वन्द करना
मुहिम (अ) = भारी काम, महत्वपूर्ण मामला
मिहमान (फा) = अतिथि
मिहमानसराय (फा) = अतिथिशाला
मिहमानी (फा) = आतिथ्य, दावत
मुहमल (अ) = व्यर्थ, महत्वहीन
मुहमिल (अ) = प्रमादी, लापरवाह
मुहैया (अ) = तैयार, तैयार किया हुआ
मिहीन (फा) = महान्, सव से वडा
मय (फा) = शराव (स०—मद्य)
मी (फा) = सामान्य भूत, वर्त्तमान, भूतकालिक शतृ प्रत्ययात, और आदेशवाचक में लगनेवाला उपसग, प्रायोवाची के अर्थ में
मया (फा) = मत आ (स०—मायाहि)
मयाजार (फा) = मत दु ख दे
मियान (फा) = वीच, मध्य, कटिभाग (स०—मध्यम)
अज आँ मियान् (फा) = उसके वीच में
दर मियान् आमदन् (फा) = वीच मे पडना

(م — म)

मियान् वस्तन् (फा) = कमर वाँधना, तैयार होना
मियान् तिही (फा) = खोखला
मियाना (फा) = मध्य, मध्यमाकार
मी आयद (फा) = आ रहा है, आया करता है
मय्यत (अ) = मरा हुआ (स०—मृत)
हाजा माहु मय्यतुन् (अ) = यह (चीज) उसके साथ मरी हुई
मेख (फा) = खूंटी, कील
मेखे चन्द (फा) = कुछ कीलें
मैदान (फा) = मैदान, युद्ध क्षेत्र, युद्ध
मीर (फा) = राजकुमार, प्रधान
मीर (फा) = (तू) मर जा
मीरास (अ) = परम्परा, उत्तराधिकार
मीरानम् (अ) = मुझे मार दे
मी रवद (अ) = जाता है, जा रहा है
मुयस्सर (अ) = उपलब्ध, उपलभ्य
मी शूई (फा) = (तू) धो सकता है, धोता है
मीकाईल (अ) = एक फरिश्ता
मी कर्दम् (फा) = मैं कर रहा था (स०—अकरवम्)
माइल (अ) = प्रवृत्त, रुचि, पक्षपात (उत्तर पद में 'मिश्रित'—जैसे सुर्खी माइल)
माइल कर्दन् (अ फा) = प्रवृत्त करना
मील (अ) = सुई
मैले (अ फा) = एक प्रवृत्ति
मैमून (अ) = सौभाग्य समृद्ध, एक व्यक्ति का नाम
मीना (फा) = नीला आकाश, रगविरगा काँच का वरतन या काँच
मयदेश (फा) = मत चिन्ता कर
मेवा-मीवा (फा) = फल

ن — न

न (फा) = नही (स०—न-नो-ना)
ना (फा) = नही (उपसर्ग) (स०—न-नो-ना)
ना (अ) = हम, हमको, हमारा (स०—न)
ना आजमूदा (फा) = अपरीक्षित
ना उमेद (फा) = निराश
ना उमेदी (फा) = निराशा
ना अहल (फा अ) = अयोग्य
ना बकारी (फा) = वेकारपन
ना वूदा (फा) = नहीं हुआ (स०—नाभूत्)
ना वीना (फा) = न देखता हुआ, अन्धा
ना वीनाई (फा) = अन्धापन
ना वीनाए (फा) = एक अन्धा
ना पाक (फा) = अपवित्र, अशुचि
ना पायेदार (फा) = अस्थिर, अनित्य

(ں—न)

ना परहेजगार (फा) = परहेज न करनेवाला
ना पसन्द (फा) = अरुचिकर
ना पसन्दी (फा) = अरुचि
ना पसन्दीदा (फा) = अरुच्य, अरुचित
ना तराशीदा (फा) = बिना छाँटा हुआ, अपरिष्कृत
ना तमाम (फा अ) = असमाप्त, दोषपूर्ण
ना तुवान (फा) = नपुंसक, निर्बल, नि:शक्त
ना तवानी (फा) = अशक्ति
ना जिन्स (फा अ) = बेकार, गुणहीन
ना जवान मर्द (फा) = असज्जन, असज्जनोचित
नाचार (फ़ा) = लाचार, नि:सहाय, असाध्य
नाचीज (फा) = अकिञ्चन
ना हक्क शनास (फा अ) = परमात्मा को न जाननेवाला, कृतघ्न
नाग्न (फ़ा) = नग्न (स०—नग्न)
नाखूब (फा) = भद्दा, असुन्दर
नाखूबी (फा) = भद्दापन
ना खुर्दन् (फा) = न खाना, अभक्ष्य
नाखुर्दा (फा) = अभुक्त
नाखुश (फा) = अप्रसन्न
नाखुश आवाज (फ़ा) = कर्कश स्वरवाला
नाखुशतर (फा) = अधिक अप्रसन्न
नादान (फा) = नासमझ (स०—अज्ञान, अज्ञान)
नादानी (फा) = नासमझी
नादिर (अ) = अपूर्व, विचित्र
नादिर-ए-हुस्न (अ) = अपूर्व सौन्दर्यवान्-वती
ना दुरुस्त (फा = अशुद्ध, असंशोधित
ना दीदा (फा) = अदृष्ट, न देखा हुआ
नार (अ) = आग, नरक (स्त्रीलिंग में)
नाज (फा) = लाड़-प्यार, दुलार, भव्य
नाजिल (अ) = उतरना, अवतरण
नाजनीन (फा) = सुन्दरी प्रेमिका, ललनांगा
नाजनीनी (फा) = तू कोमलांगिनी है
ना जेबा (फा) = अशोभा
नाजीदन (फा) = नाज करना, नखरे करना
नास (अ) = मनुष्य, मनुष्यजाति
अन्नास (अ) = मानवजाति
अन्नासु अला दीनि मुलूकिहिम् (अ) = मनुष्य अपने राजाओं के अनुसार धर्माचरण करते।
ना साज (फा) = असभ्य
ना साजगार (फा) = [illegible]
ना सिपास (फा) = अकृतज्ञ, कृतघ्न
ना सज़ा (फा) = अमान्यता, अयुक्तता, असामञ्जस्य
ना सज़ावार (फा) = अयोग्य

(ں—न)

ना सज़ाई (फा) = अयोग्यता, तू अयोग्य है
ना सज़ाए (फा) = एक अयोग्य व्यक्ति
नाशिरत (अ) = बादलों या धूल को ध्वस्त करनेवाली आँधी, तेज हवा
ना शिनाख्त (फा) = अज्ञात, अपरिचित
नासिह (अ) = उपदेशक
नासिर (अ) = रक्षक, सहायक
ना सवाब (फा अ) = अनुपयुक्त, अनुचित
नासिया (अ) = चेहरे की लटें, मस्तक
नाज़ुर (अ) = नज़र रखनेवाला, रखवाला, उद्यान रक्षक
नाज़िर (अ) = देखभाल करनेवाला
नाफ़ (फा) = नाभि, टूँडी (स०—नाभि)
नाफ़िज़ (अ) = छेदनेवाला, बेधनेवाला, जिसकी आज्ञा मानी जाय
ना फ़रजाम (फा) = अभागा, अप्रसन्न भाग्य-वाला
ना फ़रमान (फा) = आज्ञा उल्लंघक
नाफ़िअ (अ) = लाभकारक, उपयोगी
बि नाफ़िन (अ) = लाभ के लिये, गणित से लाभकारक
फ लैस बि नाफ़िन अदबु'ल् अदीब (अ) = तब नहीं है लाभकारक अध्यापक का निर्देश
नाक़िस (अ) = दोषपूर्ण, हीन
नाक़िस अक्ल (अ फा) = हीन बुद्धि, मन्द बुद्धि
ना करदन् (फा) = ना करना, मना करना
ना कर्दा (फा) = न किया हुआ, अकृत
ना कस (फा) = न कोई, न कुछ, नीच, बेकार
नागाह-नागह (फा) = सहसा (स०—अनायास)
ना गुफ्तन् (फा) = न बोलना, न बोलते हुए
नागहे (फा) = अकस्मात्
नालिश (फा) = शिकायत
नाला (फा) = शिकायत, रोना-पीटना
नालीदन (फा) = शिकायत करना, रोना-पीटना
नाम (फा) = नाम, प्रसिद्धि
नाम निहादन (फा) = नाम रखना, पुकारना
ना मतलूब (फा अ) = अवांछित, न चाहा गया
ना मुरादी (फा अ) = निराशा, वैराग्य
ना मर्दुम (फा) = अमानवीय, पशुजातीय, नीच
ना मुसाइद (फा अ) = अनुदार
ना मुस्तइद (फा अ) = अनुपयुक्त, अयोग्य, अप्रस्तुत
ना मालूम (फा अ) = अज्ञात
ना मुअव्वल (फा अ) = अविश्वसनीय
ना मक्बूल (फा अ) = अस्वीकृत
ना मुनासिब (फा अ) = अनुचित
नामवर (फा) = प्रसिद्ध
ना मौजूँ (फा अ) = असंगत, अनुपयुक्त

(ں — न)

नामूस (फा) = ख्याति, प्रसिद्धि, (प्राय बुरे अर्थ में)
नामो निशाँ (फा) = नाम और चिह्न
नामा (फा) = पत्र, पुस्तक, लेख
नामी (फा) = विख्यात
नान (फा) = रोटी (ईरानी उच्चारण 'नून')
नाने तिही (फा) = खाली रोटी, रूखी रोटी
नाने रिबात (फा अ) = मठों में साधुओं, भिक्षुओं तथा यात्रियों के लिये भिजवाई जानेवाली रोटी
नाने वक्फ (फा अ) = भिक्षा की रोटी
ना निहादा (फा) = नही रखा गया
नाने (फा) = एक रोटी
ना वरी (फा) = (नायावरी का सक्षिप्त) तू नही लायेगा
ना हमवार (फा) = असमान, ऊबड़खाबड, अव्यवस्थित
नाय-ने (फा) = गर्दन, गला, तना, वशी
नाय ओ नोश (फा) = सगीत और शराब
ना यापतन् (फा) = न पाना
नायद (फा) = नही आता है
नाइम (अ) = सोनेवाला, सोया हुआ
लिं'न्नाइमि (अ) = सोनेवाले के लिये
नवात (फा) = सफेद स्वच्छ मिश्री
नबात (अ) = वनस्पति, पेडपौधे
नवर्द (फा) = युद्ध, सघर्ष
न वरद (फा) = नही ले जाता (वह)
न बुरद (फा) = (वह) नही काटता
न वरी (फा) = (तू) सहन नही करेगा
नविश्त (फा) = लिखा हुआ
नविश्तन् (फा) = लिखना
नव्ज (अ) = नाडी
नवूवत (अ) = नवी का कार्य
न बूदे (फा) = (वह) न होता
नवी (फा) = (न वीनद का सक्षेप) नहीं देखता
नवी (अ) = ईश्वर दूत
न वीनद (फा) = नही देखता
न तरसद (फा) = नही डरता (स० — न त्रसेत्)
न तुवान (फा) = नही सकता
न तुवान् रस्त (फा) = नहीं पहुँच (या छट) सकता
न तुवानद (फा) = नही सकता
न तुवानिस्तन् (फा) = योग्य-समर्थ न होना
निसार (अ) = जनता में रुपये पैसे की वखेर
नुसार (अ) = कोई भी वखेरी गयी चीज, वर्षा
नज्म (अ) = तारा
न जूई (फा) = (तू) तलाश नही करता
नज्म (अ) = [illegible] (स० [illegible], [illegible], [illegible])

(ں — न)

नह्व (अ) = पथ, पगडण्डी
अन् नह्व (अ) = व्याकरण, शब्दानुशासन
नह्वी (अ) = वैयाकरण
वि नह्वीयिन् (अ) = वैयाकरण के द्वारा
नखुस्त (फा) = पहला, सर्वप्रथम
नखुस्तीन (फा) = प्रथम, मौलिक
न खुफ्त'स्त (फा) = नही सोया है
नख्ल (अ) = खजूर का पेड, कोई पेड मात्र
नख्ल वन्द (अ फा) = नकली फूल वनानेवाला
नख्ले बनी महमूद (अ.) = वनी महमूद का खजूर कुज
नख्ल ए बनी हिलाल (अ) = वनी हिलाल का खजूर कुन्ज
अन्द (फा) = है (स० — अन्ति-अन्ते)
निदा (अ) = आवाज, स्वर्गीय पुकार, आकाशवाणी
नदामत (अ) = पश्चात्ताप
न दानी (फा) = (तू) नही जानता
न दरद (फा) = (तू) नही फाडता
नुदमा (अ) = (नदीम का बहुवचन) अन्तरग मित्र
न दिहद (फा) = (वह) नही देता
न दीदई (फा) = क्या नही देखता, क्या तूने नही देखा
नदीम (अ) = दरवारी, विश्वस्त, उपहारो का साथी
नज्र (अ) = शपथ, प्रतिज्ञा, अपने से वडे को भेंट
नज़ीर (अ) = उपदेशक, गुरु, दुष्टों को सावधान करनेवाला
कफा वि तगय्युरि'ज् जमाने नजीरन् (अ) = बडा है परिवर्तन जमाने का गुरु
न रसी (फा) = (तू) नही पहुँचेगा
नर्म (फा) = कोमल
नर्मी (फा) = कोमलता
निजाअ (अ) = झगडा, विवाद
नज्द (फा) = निकट
नज्दीक (फा) = निकट
नज्दीकान् (फा) = (नज्दीक का बहुवचन) निकटवर्ती लोग
नज्दीकतर (फा) = समीपतर
नज्अ (अ) = मृत्युकाल की पीडा
नुज़ूल (अ) = अवतरण, अवतरित
नुज्हत (अ) = पवित्रता, प्रसन्नता
निसवत (अ) = सम्बन्ध
निसबत कर्दन् (अ फा) = हवाला देना, तुलना करना
नसद्दु (अ) = हम वन्द कर देंगे
नसद्दु विहि शुक़ूक़'ल मब्रजि (अ) = हम वन्द करेंगे इससे शौचालय के छिद्र
नसरीन (फा) = जगली गुलाव
नसक़ (अ) = व्यवस्था, ढंग
नस्ल (अ) = जाति, वालक

(ن — न)

नक़दे (अ फा) = धन
नुक़रा (अ) = चांदी
नुक़रा ए ख़ाम (अ फा) = कच्ची चाँदी
नक़्श (अ) = चित्र, गोंडना
नक़्शे बिरुन (अ फा) = बाहरी सजावट
नक़्शो निगार (अ फा) = मडन और अलकरण
नुक़्स (अ) = दोष, कमी, हानि
नुक़सान (अ) = हानि, दोष, अपूर्णता, असफलता
नक़्ज़ (अ) = प्रतिज्ञाभग, खण्डन
नक़्ल (अ) = अनुवाद, हटाकर दूसरी जगह रखना, स्थानान्तरण
नक़्ल कर्दन् (अ फा) = अनुवाद करना
निकाह् (अ) = विवाह्
नक्बत (अ) = विपत्ति, कष्टदशा
नुक्ता (अ) = सूक्ष्मविचार, पहेली, बिन्दु
न कुनद (फा) = नहीं करता (वह)
निकू (फा) = सुन्दर, उत्तम, (हिन्दी—नीक, नीक, नीका)
निकू रू (फा) = सुन्दर मुखवाला
निकू सीरत (फा अ) = उत्तम गुणों से युक्त
निकू नाम (फा) = अच्छे नामवाला
नकूहीदन् (फा) = नीच करना, आरोप लगाना
नकहोदा (फा) = तिरस्कृत
निकूई (फा) = भलाई, सुन्दरता
निकूई कर्दन् (फा) = भलाई करना
निगार (फा) = चित्र, प्रियवस्तु, प्रेमिका, सौन्दर्य
निगार कर्दन् (फा) = चित्र खीचना
निगार खाना (फा) = चित्रशाला
निगारीन (फा) = सजी हुई, सुन्दर, प्रेमास्पद
निगाह्-निगह (फा) = दृष्टि, दृष्टिपात
निगाह् दाश्तन् (फा) = निगाह् में रखना, कामना करना
निगाह् कर्दन् (फा) = कामना से देखना
निगरान (फा) = देखते हुए (शानच् प्रत्ययान्त)
निगरिस्तन् (फा) = देखना, झाँकना
न गुफ्ता (फा) = अकथित
निगूं-नुगूं (फा) = उलटा, बदला हुआ, विरुद्ध
निगूं बख़्त (फा) = अभागा
निगह दार (फा) = (तू) अपने को सँभाल
निगीन (फा) = मुद्रा—छापवाली अँगूठी
ज़ेरे निगीन (फा) = आज्ञा के अन्तर्गत
नम (फा) = भीगा हुआ, आर्द्र
नमाज़ (फा) = प्रार्थना, (स०—नमम्)
न मानद (फा) = नहीं बचता
न मान्दम् (फा) = मैं नहीं बचा रहा
नमदे ज़ीन (फा) = ज़ीन का नमदा

(ن — न)

नमत (अ) = ढग, प्रकार, पद्धति
नमक (फा) = नमक (स०—लवण)
नमकीन (फा) = नमकीन, सुन्दर
नम्ल (अ) = चीटी, दाढी
नमूदन् (फा) = प्रकट होना, व्यक्त होना
नमूदे (फा) = दिखाता
नमूना (फा) = उदाहरण
नग (फा) = आदर, अपमान, लज्जा (स०—नग्न)
न निही (फा) = (तू) नही रखता
नौ (फा) = नया (स०—नव)
नवाही (अ) = (नाहियत का बहुवचन) सलग्न हिस्से
नवाख़्तन् (फा) = पुचकारना, प्यार-दुलार करना
नवादिर (अ) = (नादिरत का बहुवचन) दुर्लभ पदार्थ
नवाज़ीदन् (फा) = पुचकारना, प्यार दुलार करना
नवाल (अ) = उपहार, भेट
नवालिक (अ) = तेरी भेंट
नौ आवुर्दा (फा) = ताजा लाया हुआ
नौबत (अ) = अवधि, समय
नौजवान (फा) = नवयुवा (स०—नवयुवा-नवयुवान)
नूह (अ) = हज़रत नूह, शैखुल् मुर्सलीन (स०—मनु)
नौ दमीदा (फा) = नयी पैदा हुई, नवजात दाढी-मूँछ
नूर (अ) = प्रकाश, आत्मालोक, दिव्यालोक
नवर्वन्-नवर्दीदन् (फ़ा) = उल्लघन करना, भूल जाना
नौ रसीदा (फा) = नया पहुँचा हुआ, आता हुआ
नौरोज़ (फा) = (शब्दार्थ—नवदिन) नववर्ष का प्रथम दिन
नौरोज़ी (फा) = नववर्ष का, नववर्ष के लिये उपयुक्त
नोश (फा) = पीना, पेय, मधुर, मिठाई
नविश्त (फा) = लिखितम्, लिखा हुआ
नविश्त'स्त (फा) = लिखा हुआ है
नविश्तन् (फा) = लिखना, लिखकर रखना
नविश्ता (फा) = लिखा हुआ
नोश दारू (फा) = विष उतारने के लिये पीने की दवा; सुस्वादु औषध पेय
नोशीदन् (फा) = पीना
नौशेरवान (फा) = न्यायशीलता के लिये प्रसिद्ध एक राजा
नोशीन (फा) = मीठा, स्वादु
नौअ (अ) = क़िस्में, प्रकार
नौ ए (अ) = एक जाति, एक प्रकार
ना उमेदी (फा) = निराशा
नून (अ) = मछली (स०—मीन)
ज़ुन्नून (ज़ु+अल्+नून) (अ) = (शब्दार्थ—मछलियों का स्वामी) जोना नामक एक पैगम्बर
नवीसन्दा (फा) = लेखक

(ن — न)

ना-न (फा) = नही
नई (फा) = (तू) नही है
निह (फा) = (तू) रख, रख ले (स०—निधेहि)
नुह (फा) = नौ (स०—नव)
नुहाजु (अ) = हम उत्तेजित है, हम उत्थित है, उदग्र हैं
नुहाजु इला सौति'ल् अग़ानी (अ) = हम उदग्र हैं सगीत की ध्वनि पर
निहाद (फा) = प्रकृति, स्वभाव
निहादन् (फा) = रखना (स०—निधानम्)
निहादा (फा) = रखा हुआ (स०—निहित)
निहाँ (फ़ा) = छुपा हुआ, गुप्त (शानच् प्रत्ययान्त)
निहाँ दाश्तन् (फा) = गुप्त रखना
निहानी (फा) = छुपा हुआ, रहस्य
नुहावन्द (फ़ा) = ईरानी इराक में एक जगह का नाम, एक सगीत पद्धति
निहायत (अ) = अत्यन्त
नहर (अ) = नदी, धारा, नहर
नहरुन् अला नहरिन् (अ) = नदी से नदी को
नहरिन् तलातुम रुकवती (अ) = एक नहर थपेडे मारती हुई मेरे घुटनो पर
निहुफ्त (फा) = (उसने) छिपाया, गुप्त, रहस्य (स०—निगुप्त)
ब निहुफ्त (फा) = चुपचाप
निहुफ्तन् (फा) = छुपाना, गोपन
निहुफ्ता (फा) = छुपा हुआ
नहक़ (अ) = (वह) रेंका
इज़ा नहक़'ल् ख़तीबु अबु'ल् फवारिसि (अ) = जब रेंका उपदेशक अबु'ल् फ़वारिस
नहग-निहग (फा) = मगरमच्छ
नही (अ) = नही, निषेध (स०—नहि)
नही फर्दन् (अ फा) = मना करना
नहीब (फा) = भय, त्रास
नै (फा) = सरकण्डा, वेणु, वशी
नी (अ) = मुझे
नै (फ़ा) = नहीं (स०—नैव)
नयारामद (फा) = (नै+आरामद) नही आराम करता
नयारामीद (फा) = (नै+आरामीद) नही आराम किया
नयारद (फा) = (नै+आरद) नहीं लाता
बर नयारद (फ़ा) = नही उठता
नयाज़ारद (फा) = (नै+आज़ारद) (वह) नहीं सताता
नयाज़ारी (फा) = (तू) नहीं सताता
नयाज़रदम् (फ़ा) = (मैंने) नही सताया
नयाज़मन्द (फा) = ज़रूरतमन्द
नयाज़मूदा (फा) = (नै+आज़मूदा) अपरीक्षित
नयासायद (फा) = (नै+आसायद) (वह) ताज़ा नही है
नयासूदे (फा) = (नै+आसूदे) चैन न लेता

(ن — न)

न याफ्त (फा) = नही पाया
नियाक़ (अ) = (नाक़त का बहुवचन) ऊँट
नियाम (फा) = तलवार की मियान
नयामद (फा) = (नै+आमद) (वह) नही आता
नयामोख़्त (फा) = (नै+आमोख़्त) नहीं सीखा
नयावुर्दी (फा) = (नै+आवुर्दी) (तू) नही लाया है
नयावरी (फा) = (नै+आवरी) (तू) नही लाता है
नयायद (फा) = (नै+आयद) (वह) नही आता है
नयायी (फा) = (नै+आयी) (तू) नही आता है
नै ए बोरिया (फा) = बोरिया बनाने की मूज, सन की डडी
नियत (अ) = उद्देश्य, विचार, सकल्प
नयर्जद (फा) = (नै+अर्ज़द) नहीं योग्य है (स०—न+अर्हति)
नीरू (फा) = शक्ति
नीज़ (फा) = भी, इसी प्रकार, यहाँ तक कि, पुन
नेज़ा (फ़ा) = भाला
नेज़ाबाज़ (फा) = भालाबाज, शूल योद्धा
नीस्त-नेस्त (फा) = नही है
नीस्ती (फा) = (तू) नही है
नेश (फा) = डक, दश
नेश ज़दन् (फा) = डक मारना
नै शकर (फा) = शकर की नै, ईख
नयुफ्ताद (फा) = (नै+उफ्ताद) (वह) नही गिरा
नयफ्शान्दी (फा) = (नै+अफ्शान्दी) (तूने) नही बखेरा
नयफ्शानी (फा) = (नै+अफ्शानी) (तू) नही बखेरता
नयफ्गानी (फा) = (नै+अफ्गानी) (तू) नही रोता
नेक (फा) = अवस्था, सुन्दर, भला
नेक अजाम (फा) = सुखान्त, सुपरिणत
नेकबख़्त (फा) = सौभाग्यशाली, प्रसन्न
नेकबख़्ती (फा) = सौभाग्य
नेकख़्वाह (फा) = शुभेच्छु
नेक दाश्तन् (फा) = आदर रखना, कृपा से बरतना
नेक रफ्ता (फा) = (शब्दार्थ—अच्छी तरह गया) मरने के बाद अच्छे के रूप में याद किया गया
नेकरोज़ (फा) = प्रसन्न
नेक सरजाम (फा) = सुखान्त, सुपरिणत
नेक सहल'स्त (फा) = बहुत आसान है
नेकसीरत (फा अ) = सद्गुणयुक्त
नेकफर्जाम (फा) = प्रसन्नतापूर्ण परिणामवाला
नेकमहज़र (फा अ) = भली प्रकृति का
नेकमर्द (फा) = भला आदमी, सुपुरुष
नेकमर्दी (फा) = ईमानदारी, भलाई, कृपालुता
नेकनाम (फा) = सुख्यात
नीकू (फा) = भला

(ن — न)

नेको वद (फा) = अच्छा और बुरा
निकूरविश (फा) = भली चालचलनवाला
निकूनाम (फा) = सुख्याति
नेकुवी-निकूई-नेकी (फा) = भलाई
नील (फा) = नील, (जिस घर मे मौत हो जाती थी, वहाँ नीला छापा लगा देते थे, अत नीला रग शोक-सूचक माना गया है नील नदी का अर्थ है, शोकनदी)
नीम (फा) = आधा (म०—नेम)
नीमखुर्द } नीमख़ुर्दा } (फ़ा) = आधा खाया हुआ, अर्धोच्छिष्ट
नीमरोज (फा) = आधा दिन, सीस्तान प्रदेश
नीमसेर (फा) = अध तृप्त
नीमशव (फा) = आधी रात
नयन्दाख़्ते (फा) = (नँ+अन्दाख़्ते) (वह) न फेंकता
नयन्दोख़्त (फा) = (नँ+अन्दोख़्त) (उसने) नही पाया-जोडा
नियूशीदिन् (फा) = सुनना (स०—नि श्रवण)
नंईन (फा) = सरकण्डे स बना

و — व

व (अ) = और (इसको 'ओ' भी वोला जाता है, स०—उ, उत)
वा (फा) = पुन (प्रत्यय के तौर पर लगता है, अव्युत्पन्न है)
व अतूबु इलैहि (अ) = और मै तौवा मे उसकी (परमात्मा के) ओर मुडता हूँ
वासिक़ (अ) = विश्वस्त, आश्वस्त
वाजिव (अ) = उपयुक्त, उचित
वाजिव आमदन् (अ फा) = आवश्यक होना, उपयुक्त होना
वाजिवी व वाजिवी (अ फा) = जरूरी, उपयुक्त
व'हफ़ज़ (अ) = और रक्षा कर (हे परमात्मा)
वादी (अ) = घाटी, तराई, नदी
वारिस (अ) = उत्तराधिकारी
वारिसु मुल्के सुलेमान (अ) = सुलेमान के राज्य का उत्तराधिकारी
व'र्फ़अ (अ) = और ऊँचा कर
वाश्गून (फा) = उलटा, सिर के वल (स०—विषम)
वाश्गून बख़्त (फा) = अभागा
वासित (अ) = कूफा और वसरा के वीच का एक नगर
वासिफ (अ) = पूजा करनेवाला, स्तोता
व'तलुब (अ) = और ढूँढ-माँग, (तू) तलवकर
वाइज़ (अ) = उपदेशक
वाफिर (अ) = प्रभूत, पूर्ण, महान्
वाक़आ (अ) = घटना, दुर्घटना, युद्ध, मामला
वाक़अहा (अ फा) = घटनाएँ, लडाइयाँ
वाक़आ दीदा (अ फा) = घटनाऐं देखे हुए, अनुभवी
वाक़िफ (अ) = परिचित, जानकार

(و — व)

वाक़िफ गर्दानीदन् (अ फा) = जानकारी देना
वाला (फा) = महान्
वालातर (फा) = महत्तर
व इल्ला (अ) = और यदि नही, अन्यथा
व आलिहि (अ) = और उसकी औलाद पर
व'ल्लाह (अ) = और परमात्मा (की कसम)
वाम (फा) = ऋण
वाम दादन् (फा) = क़र्ज देना
वा मान्दन् (फा) = पीछे रह जाना, पिछडना
वामे (फा) = एक गज़ा
व इन् (अ) = और यदि, यद्यपि
व अन्त (अ) = और तू
व इन् जेत (अ) = यद्यपि तू आया है
वाँगाह (फा) = और तव
व इन्नमा (अ) = और सिर्फ
व इन्नहु (अ) = और वेशक वह है
व इन्नहु ल आज़मु (अ) = जव कि वह वेशक है महानतम
वज्द (अ) = परमानन्द, चरमानन्द
वुजूव (अ) = आवश्यकता, कर्त्तव्य
व वुजूव (फा अ) = आवश्यक रूप से
वुजूद (अ) = सत्ता, व्यक्ति
वावुजूद (फा अ) = तथापि, होने पर भी
वुजूदे (अ फा) = एक अस्तित्व
वज्ह (अ) = कारण, प्रकार, मुख, उपादान
वज्हे क़फाफ (अ फा) = उपादानो का आधिक्य
वहदत (अ) = एकान्तता, एकमेवता
वहश (अ) = जगली जानवर, वन्यपशु
वहशत (अ) = भय, उदासी, क्रोध, विपर्यय, जगलीपन
वहल (अ) = कीचड, कर्दम
वहीद (अ) = एकाकी, वियुक्त, विरही
विदाद (अ) = प्यार
फी विदादिहा (अ) = उस (स्त्री) के प्रेम के कारण
वदाअ-विदाअ (अ) = विदा
वदाअ कर्दन् (अ फा) = विदा करना
वर (फा) = (व+अगर) और यदि, चूंकि
वरा (अ) = इसके अतिरिक्त
व राकिबातिन् नियाक़न् (अ) = और नारियाँ ऊँटनियो पर चढी हुईं
वर्द (अ) = गुलाव, फूलो की पखुरी
वर्जीदन् (फा) = प्राप्त करना, तलाश करना
वरश् (फा) = (व+अगर+अश्) और यदि वह
वर्तह् (अ) = भँवर, चक्रावत (स०—आवर्त)
वुर्क़ (अ) = भूरा, सलेटी, पत्ते (हिन्दी का 'सफेद—वुर्राक' में यह पर्यायानुवचन है)

(,—व)

वरक़ (अ) = कागज, पत्र
वरक़े (अ फा) = एक पत्र
वरना (फा) = (व+अगर+ना) और यदि नही, अन्यथा
वरा (अ) = मनुष्य, मरणधर्मा
वज (फा) = (व+अज) और से
वुज़रा (अ) = (वज़ीर का बहुवचन) मन्त्रिगण, सचिवगण
वज़्न (अ) = वजन, भार
वज़ीर (अ) = सचिव, मन्त्री, अमात्य
वज़ीरी (अ फा) = मन्त्रिपद
वुसअत (अ) = विशालता
वस्मा (फा) = नीलीरंग, खिज़ाब
वसीलत-वसीला (अ) = साधन, माध्यम, बड़े आदमियों की कृपा से प्राप्त जीविका
वसीम (अ) = कन्धा के नीच में एक माला के गुच्छे का चिह्न जो कि ईश्वरदूता का चिह्न माना जाता था।
विसाल (अ) = मिलन
वस्फ़ (अ) = वर्णन, स्तुति, गुणधर्म
वस्ल (अ) = मिलन, मिलाप
वसीयत (अ) = अन्तिम इच्छा
वज़ीफ़ा (अ) = जीविका, वृत्ति
वज़ीफ़ाख़ुर (अ फा) = वृत्तिभुक्
वअद (अ) = (उसने) वादा किया
वअदा (अ) = वायदा, प्रतिज्ञा
वअदा दादन् (अ फा) = वायदा देना, प्रतिज्ञा करना
वअज़ (अ) = चेतावनी, उपदेश
वफ़ा (अ) = वायदा पूरा करना, निभाना
वफ़ा कर्दन् (अ फा) = पूरा करना, निभाना
वफ़ात (अ) = मृत्यु
वफ़ात याफ़्तन् (अ फा) = मरना, मरने को प्राप्त होना
वफ़ादार (अ फा) = विश्वासपात्र
वफ़ादारी (अ फा) = विश्वासपात्रता
वफ़ाए (अ फा) = एक विश्वास
वफ़्क़ (अ) = अनुपात
बर वफ़्क़ (फा अ) = के अनुपात से
वफ़ाअ् (अ) = उसने चुकाया
इज़ा वअद वफ़ा (अ) = जब (उसने) वायदा किया, (तो उसे) पूरा किया
वक़ाहत (अ) = धृष्टता, निर्लज्जता
वक़ार (अ) = महानता, गुरुता
वक़्त (अ) = समय, अवसर
ब वक़्त (फा अ) = उचित अवसर पर
वक़्ता (अ फा) = (वक़्त का बहुवचन) अनेक समय, जब कि

(,—व)

वक़्ते (अ फा) = एक समय
व हक़्क़ (अ) = और बेशक
वक़्फ़ (अ) = धार्मिक दान, धर्मदाय, धर्मादा
माले वक़्फ़ (फा अ) = धर्मादा की सम्पत्ति
अल् वक़्फ़ु ला युमल्लकु (अ) = धर्म के निमित्त माल का कोई स्वामी नहीं है
वुक़ूफ़ (अ) = अनुभव, ज्ञान
वुक़ूफ़ याफ़्तन् (अ फा) = जानकारी पाना, जानना
वकील (अ) = वकील, विश्वस्त, प्रतिनिधि, अध्यक्ष
वगरना (फा) = और यदि नही, अन्यथा
व ला (अ) = और नाही
वुलात (अ) = (वाली का बहुवचन) शासकगण
विलादत (अ) = जन्म, जन्म देना
विलायत (अ) = देश, भूमि, विदेश भूमि
वलद (अ) = पुत्र
वलदहु (अ) = उसका पुत्र
वलअ (अ) = तीव्र आकांक्षा
व ल नुज़ीक़न्नहुम् (अ) = और बेशक हम उन्हें चखायेंगे
व लौ (अ) = और यदि, यद्यपि
व लौ इन्न (अ) = और अगर सचमुच
वुलूज (अ) = प्रवेश द्वार
वले (फा) = किन्तु, अस्तु
वली (अ) = साधु
व लैस (अ) = और नही (है)
वली अहद (अ) = उत्तराधिकारी
व लेक (फा) = किन्तु
व लेकिन (अ) = किन्तु
वली निअमत (अ फा) = उपकारक, स्वामी
व मा (अ) = और जो भी है
व मन् यतवक्कलु अल'ल्लाहि फ़ हुव हस्बुहु (अ) = और जो विश्वास करता है परमात्मा पर तो वह उसको काफी है।
व नह्नु (अ) = और हम
व नसर आलामहु (अ) = और विजयी बना उसके झंडा को
वुह! (अ) = ओह!
वह्हाब (अ) = महान् और उदार दाता
अल् वह्हाब (अ) = दाता, परमात्मा
व हल् (अ) = और क्या?
वहम (अ) = सन्देह, भ्रम, गलती
व हुव (अ) = और वह (है)
व हुव सामिन् यरा (अ) = और वह है मोटी जो दिखता है
व (फा) = वह, उसको, उसका (छोटा लिखा गया)
वीरान (फा) = निर्जन, विजन
वीं (फा) = (व+ईं) और यह

(४—ह)

४—ह

हु (अ) = वह, उसको, उसका (कारको के उपरान्त इसका उच्चारण 'हि' हो जाता है)
हा (अ) = (स्त्रीलिंग) वह, उसको, उसका
हादी (अ) = मार्गदर्शक, नेता, निर्देशक
कफ़ा'ब्लाह हादियन् (अ) = काफी है अल्लाह हादी (मार्गदर्शक) होने का
हारूँ अ'र्रशीद (अ) = पांचवा खलीफा हारूँ अर्रशीद
हामान (अ) = अहमुस्स् (अमुरेश) का कृपापात्र जो कि यहूदियो का शत्रु था। उसे कुरान में फरऔन का मंत्री कहा है।
हान (फा) = सावधान (स०—सावधान—धान!)
हाइल (अ) = भयकर
हुबूब (अ) = तेज़ आँधी
हिजरा (अ) = मुहम्मद साहब का १६ जुलाई ६२२ ई० को मक्का से मदीना को पलायन। इसी तिथि के आधार पर खलीफा उमर ने हिजरी सवत्सर चलाया।
हदी (अ) = बलि के लिये मक्का भेजे जानेवाले पशु।
हदफ (अ) = धनुर्धरो का लक्ष्य, वेधलक्ष्य
हदिया (अ) = बड़ो के लिये भेंट
हाज़ा (अ) = यह
हाज़'ल् मिक़दार (अ) = यह मिकदार—परिमाण
हर (फा) = प्रति, प्रत्येक (स०—सर्व)
हिरास (फा) = आतक, भय, त्रास (स०—त्रास)
हिरासीदन् (फा) = डरना
हरां (फा) = (हर+आं) हर वह (स०—सर्व-हर)
हरां कि (फा) = हर वह जो कि, जो कोई भी
हर आईना (फा) = बेशक, हर सूरत मे
हर बार (फा) = हर बार
हर जा कि (फा) = हर जगह कि, जहाँ कही भी
हर चन्द (फा) = यद्यपि
हर चि (फ़ा) = हर वह चीज़ जो कि
हर चि तमाम (फ़ा) = हर वह चीज जो
हर दम (फा) = हर घडी
हर दू (फा) = दोनो
ब हर दू दस्त (फा) = दोनो हाथो से
हर रोज़ (फा) = हर रोज़, प्रतिदिन
हर्ज़ा गर्द (फा) = एक घुमक्कड, व्यर्थ घूमनेवाला
हर्ज़ा गो (फा) = बेकार बात करनेवाला
हर्ज़ा गोए (फा) = एक बेकार बात करनेवाला
हर सू (फा) = हर ओर
हर शब (फा) = हर रात
हर कुजा (फा) = हर कही, सब जगह, जहाँ कही भी
हर कि रा (फा) = हर किसी को
हर कि (फा) = जो कोई भी
हर गाह-हर गह (फा) = हर बार, जब भी
हर गाह कि (फा) = जब कभी भी
हरगिज़ (फा) = कभी भी, कदापि (हरगिज़ के बाद सदा 'न' आता है)
हुर्मुज़ (फा) = नौशेरवान का पुत्र (कोमल राजकुमार, अपने पतन से पूर्व यह अत्यन्त क्रूर हो गया था)
हुरैरा-हुरैरत (अ) = पालतू बिल्ली
हर यके (फा) = हर एक
हज़ार (फा) = हज़ार (सं०—सहस्र)
हज़ार बार (फा) = हज़ार बार
हज़ार पा (फा) = कानखजूरा, शतपदी
हज़ार दाना (फा) = हज़ार दानोवाला
हज़ार दोस्त (फा) = हज़ार दोस्तोवाला
हिज़ब्र (अ) = शेर
हज़्ल (अ) = परिहास
हस्त (फा) = (वह) है
हस्तम् (फा) = (मैं) हूँ
हस्तन्द (फा) = (वे) हैं
हस्ती (फा) = अस्तित्व, तू है (स०—सत्ता)
हुश-होश (फा) = होश, चैतन्य
हुश-होश दाश्तन् (फा) = ध्यान रखना
हश्त (फा) = आठ (स०—अष्ट)
हश्तुम् (फा) = आठवाँ (स०—अष्टम)
हिश्तन् (फा) = अकेला छोडकर जाना
हुशदार-होशवार (फा) = होश में रह, सावधान
हुशियार (फा) = होशियार, सावधान
हफ्त (फा) = सात (स०—सप्त)
हफ्ता (फा) = (हफ्ताद का सक्षिप्त) सत्तर (स०—सप्तति)
हफ्ताद (फा) = सत्तर (स०—सप्तति)
हफ्त रग (फा) = सात रगोवाला (स०—सप्तरग)
हफ्तगान् (फा) = सात बार, सतगुना (स०—सप्तगुण)
हफ्तुम् (फा) = सातवाँ (स०—सप्तम)
हफ्ता (फा) = सप्ताह (स०—सप्ताह)
हल (अ) = क्या ऐसा है?
हलाक (अ) = मारना, विनाश
हलाक शुदन् (अ फा) = नष्ट होना, समाप्त होना
हलाकत (अ) = तेरा नाश, विनाश
हिलाल (अ) = एक कबीले का नाम
बनी हिलाल (अ) = हिलाल का वश
हलक (अ) = (वह) नष्ट हुआ
हलक'न्नासु हौलहु अतशन् (अ) = नष्ट होते थे आदमी उसके चारो ओर प्यास से
हलयत (अ) = (तूं) नष्ट हुआ

(४—ह)

हिलीदन (फा) = परित्याग करना, प्रमाद करना
फरो हिलीदन् (फा) = निकालना
हम (फा) = भी, साथ (सं०—समम्)
हुम् (अ) = वे, उनको
हुम्म (अ) = दुःख, चिन्ता
हुमा (फा) = हुमा नामक पक्षी जिसकी छाया पड़ने से सामान्य व्यक्ति भी राजा हो जाता है।
हुमा-हिमा (अ) = वे दोनों
हमाँ (फा) = सदा, इस प्रकार, वही
हमाना (फा) = बेशक, पुनः पूर्ववत्, की तरह, तुरत
हमाना कि (फा) = सत्यमेव, तब इसी सत्यमेव
हमाँ बिह (फा) = सदा उत्तम, सदा पथ्य
हुमायूँ (फा) = महान्, राजसी, सौभाग्यशील, प्रसन्न
हिम्मत (अ फा) = साहस, संकल्प, आशीर्वाद
हिम्मत खास्तन् (अ फा) = साहस आशीष् माँगना
हम चुनाँ } हम चुनीं } (फा) = इसी प्रकार
हमचु हमचो (फा) = के तुल्य, समान
हमख्वाब (फा) = साथ सोनेवाले
हमदान (फा) = ईरान के ईराक़ प्रान्त का एक नगर
हम वराँ (फा) = नहीं
हमदर्द (फा) = साथ में कष्ट पानेवाला, सहानुभूतिपूर्ण
हमदर्दे (फा) = एक हमदर्द
हमदम (फा) = साथी, मित्र
हमदवान (फा) = साथ साथ दौड़ते हुए (सं०—धावमान)
हमराह (फा) = साथी
हमसाया (फा) = पड़ोसी (सं०—समच्छाय)
हमसाय ए दरवेश (फ़ा) = साधु का पड़ोसी, भिक्षु
हमसर (फा) = एक जैसा सिर (विचार)-वाले (सं०—समशिरा)
हमइनान (फ़ा अ) = समान लगामवाले, साथी सवार
हमक़दम (फा अ) = साथ कदम रखनेवाले (सं०—समचरण)
हम क़फ़स (फा अ) = क़ैद-पिंजरे के साथी
हमकुन (फा) = साथ काम करनेवाले (सं०—समकर्मा)
हमगिनान (फा) = समस्त, एकसाथ, साथी (सं०—समकक्षा)
हमनशीं-हमनिशस्त (फा) = साथ बैठनेवाले (सं०—समस्थ, सन्निष्ठ)
हमा (फा) = सब, हर एक, समस्त, हर चीज़
बा ईं हमा (फा) = इस सबके साथ, इतने पर भी
हमा जा (फा) = हर जगह
हमा जा'स्त (फा) = हर जगह है
हमारा (फा) = सबका, सबको
हमी (फा) = 'मी' के समान एक अतिरिक्त वाक्यांश 'मी' के ही अर्थ में

(४—ह)

हमे (फा) = इसी प्रकार
हमी दारम् (फा) = मैं धारण करता हूँ, मैं रखता हूँ
हमी दूँ (फा) = अब, सदा, इस प्रकार
हमेशा (फा) = सदैव
हमीं (फा) = केवल, केवल यह, वही, न कम न ज़्यादा, इसी प्रकार
हिन्द (अ फा) = भारत
हिन्दू (फा) = हिन्दू, अफगानिस्तान के निवासी (ईरानियों की दृष्टि में लुटेरे)
हिन्दुस्तान (फा) = भारतदेश
हिन्दू ए (फा) = एक हिन्दू
हिन्दी (फा) = भारतीय, भारतीय भाषा
हुनर (फा) = विद्या, योग्यता (सं०—सुन्दर)
हुनरमन्द (फा) = चतुर, विद्यावान्, योग्य
हुनर नुमाई (फा) = योग्यता प्रदर्शन
हुनरवरी (फा) = कलापूर्णता, कला में विशेषता (सं०—वर)
हुनरे (फा) = एक हुनर
हंगाम (फा) = समय, काल, घड़ी
हंगुफ्त (फा) = मोटा कपड़ा (सं०—सगुम्फ)
हुनूद (अ) = (हिन्दू का बहुवचन)
हनोज़ (फा) = अभी तक, आज तक (अधुना हि)
हनी (अ) = सगूचा, गुप्त, खुशगवार, सुगम
हुव (अ) = वह, परमात्मा का एक नाम (सं०—स) (यथा—स्सा थैं स)
हवा (अ) = हवा, वायु, खाली चीज
हवा पुख्तन् (अ फा) = हवा पकाना, कल्पना की उड़ान
हवा ओ हवस (अ) = वासना, अदम्य वासना
हवा परस्त (अ फा) = वासना का पूजक, लालसा का दास
हवा परस्ते (अ फा) = एक वासना का गुलाम
हवादिज (अ) = (हौदज का बहुवचन) ऊँट के हौदे
फी हवादिजहा (अ) = उनके हौदा में
हवायश् (अ फा) = उसकी हवा, उसका जलवायु
हवाए (अ फा) = एक नया विचार, धुन, मनक
होर (फा) = सूर्य (सं०—सूर-सूर्य)
हवस (अ) = वासना, कामना
हवस बाजे (अ फा) = एक लालसायुक्त व्यक्ति
हवसे (अ फा) = एक सनक, एक वासना, एक धुन
होश (फा) = चैतन्य, विवेक
होश दाश्तन् (फा) = होश रखना, विवेक रखना
होशमन्द (फा) = सावधान
होशमन्दी (फा) = सावधानी
होशियार (फा) = चतुर
हौल (अ) = भय, आतंक
हौलनाक (अ फा) = भयानक

(४ — ह)

हुवैदा (फा) = स्पष्ट, सुव्यक्त
हैअत (अ) = बाह्यरूप, आकृति
हैबत (अ) = भय, आदर
हेच (फा) = बिलकुल, कुछ भी, कोई, कुछ
हेचत (फा) = तुझे कुछ भी, तुझे कोई भी
हेच गुदाम (फा) = कोई भी
हेच कस (फा) = बेकार आदमी, अकिंचन
हेच वक्ते (फा अ) = किसी भी समय
हेच यक (फा) = कोई भी एक
हैज़म (फा) = लकड़ी, जलाने का काठ
हैज़म कश (फा) = लकड़हारा
हैकल (अ) = मूर्त्ति, आकार
हैकले (अ फा) = एक मूर्त्ति, आकार
हैयूलानी (अ) = पार्थिव
है हात (अ) = सावधान! हाय-हाय! दूर हो!

ي — य

ई (अ) = मेरा (संज्ञा के पीछे लगनेवाली विभक्ति)
या (फा) = अथवा
या! (अ) = हे!
याब (फा) = (तू) प्राप्त कर-करे
या बुनैया! (अ) = हे पुत्र!
याद (फा) = स्मृति, याद
याद आमदन् (फा) = याद आना
याद आवुर्दन् (फा) = याद करना, स्मृति में आना
याद दाश्त (फा) = धृति, स्मृति में धारण करना
याद गिरिफ्तन् (फा) = दिमाग में रखना
यार (फा) = सहायक, साथी, प्रेमी, मित्र
यारा (फा) = शक्ति, दृढ़ता, साहस
यारा ए गुफ्तार (फा) = बातचीत की हिम्मत
या रब्ब! (अ) = हे परमात्मा
यारी (फा) = मैत्री
यारे (फा) = एक मित्र
यास (अ) = निराशा
यास्मिन् (फा) = चमेली
यास्मिन् बू (फा) = चमेली की गन्धवाला-वाली
यास्मिन् बूई (फा) = तू चमेली की गंधवाली है
याफ्तन् (फा) = प्राप्त करना (स०—आप्नोति)
याफ्ते (फा) = (वह) पाता
याफादराय (फा) = ठाली बातें करनेवाला
या लिं'ल् अजब (अ) = आश्चर्य, अजीब
या लैत (अ) = ऐ! काश! (ऐसा होता)
या मअशर'ल् ख़ुल्लान (अ) = हे मित्रमण्डल!

(ي — य)

या मन्! (अ) = अरे! तू जो कि!
यानीअ (अ) = पके हुए, सुपक्व, परिणत फल
अ'त् तम्रु यानीइन (अ) = खजूर पके हैं
यावरी (फा) = सहायता
यावरी कर्दन (फा) = मित्र होना, सहायता करना
यबतुशु (अ) = उसने कड़ाई से पकड़ा
यबतुशु बि'ल् फिरारी (अ) = वह भाग छूटता है
यतख़ाशनु (अ) = वह कठोर है
यतरश्शहु (अ) = वह छींटे देता है
यतलातफु (अ) = वह कोमल है
यतवक्कलु (अ) = वह तवक्को करता है
व मन्, यतवक्कलु अल'ल्लाहि (अ) = और जो कोई भी ईश्वर में विश्वास करता है
यतीम (अ) = अनाथ, शिष्य, विचित्र, अतुल
दुर्रे यतीम (फा अ) = एक अतुल मोती
यज्लू (अ) = प्रकाशित करता है-था
मन् यज्लू बि तलअतिहिं'हुजा (अ) = जिसने अँधेरे को अपनी छवि से जगमगा दिया
युह्बिबु (अ) = वह प्यार करता है—दोस्ती निभाता है
व'ल्लाहु युहिब्बु'ल् मुहसिनीन (अ) = और परमात्मा प्यार करता है उपकारी को
युहद्दिसु (अ) = वह बातचीत करता है
मन् ज़ा युहद्दिसु नी (अ) = कौन मुझ से बात करेगा
यह्मिलु (अ) = वह धारण करता है-करेगा, ले जाता है-ले जायेगा
यह्मिलुक (अ) = वह तुझे गड़ा रखेगा
यह्या (अ) = सन्त योहन
यख़ (फा) = बर्फ
यख़ बस्ता } (फा) = बर्फ में जमा हुआ
यख़ गिरिफ्ता }
यद (अ) = हाथ
यदे सुफ्ला (अ) = नीचा हाथ (जो दान लेता है)
यदे उलिया (अ) = ऊँचा हाथ (जो दान देता है)
यदैन (अ) = दोनो हाथ
बैन यदैहि (अ) = उसके दोनो हाथो के बीच, उसके सामने
यर (अ) = वह देखता है
अ लम् यरहा यौमन् (अ) = अफसोस (उन्होंने) नही देखा उस (स्त्री) को किसी दिन
युराफिकु (अ) = वह चलता है साथ साथ
युराफिक़ु नी अल'ल्लैलि हादियन् (अ) = वह चला मेरे साथ रात को पथप्रदर्शक के रूप में
यर्जऊन (अ) = वे वापिस आते है-आवेंगे
यरफउ (अ) = वह उठाता है
लैस यर्फउ रासहु (अ) = वह नही उठाता अपना सिर

)

यरा (अ) = (वह) देखता है
यजलु (अ) = (वह) अलग होता है, क्षीण होता है
यस्तक़ीमु (अ) = (वह) उठाता, रहता है
व हल् यस्तक़ीमु'र् रम्ज (अ) = और कैसे उठा सकता है कोना
युसरन् (अ) = आसानी, सुविधा
यसउ (अ) = (वह) विशाल—प्रभूत है
यसउ नी (अ) = (वह) मेरे जोड़ का होता है
यस्क़ी (अ) = वह शराब देता है, वह पिलाता है
व ला यस्क़ी (अ) = और (वह) नहीं पिलाता
यस्लमु (अ) = वह सुरक्षित है
युसीग़ु (अ) = वह तृषा मिटाता है
ला यकादु युसीग़ुहु (अ) = वह उसे शान्त नहीं करता
यसूलु (अ) = वह हमला करता है
यसूलु वतृशन् (अ) = वह वीरता से हमला करेगा
यसूलु अल'ल् कल्बि (अ) = वह हमला करती है कुत्ते पर
यसूलु मुग़ाज़िबन् तलव्य (अ) = वह हमला करता है भयकरता से मुझ पर
यतिर (अ) = (वह) भाग गया
युत्फी (अ) = (वह) बुझाता है मुझे
युतफी वि रश्शाति (अ) = वह बुझाता है मुझे छींटों से
यअलमु (अ) = (वह) जानता है
व'ल्लाहु यअलमु (अ) = लेकिन ईश्वर जानता है
यअनी (अ) = अर्थात्
युग़लकु (अ) = वह बन्द होगा
युग़मा-यग़मा (अ फा) = लूट, तुर्किस्तान का एक नगर जो अपने निवासियों की सुन्दरता के लिये प्रसिद्ध है
यग़माई (फ़ा) = यग़मा निवासी
युग़नी (अ) = निरपेक्ष बनाना, बेपरवा होना
युग़नीहि ग़ालिक अन (अ) = वह उसको निरपेक्ष बनाता है … से
यफ्तरी (अ) = वह झूठा आरोप लगाता है
युक़ालु (अ) = यह कहा जाता है—कहा जायेगा
युक़ब्बिहु (अ) = (वह) घृणा करता है
या मन् युक़ब्बिहु अक़्री (अ) = अरे! जो घृणा करता है मेरे आचरण से
यक़्बलू (अ) = वे स्वीकार करते हैं
यक़ीन (अ) = विश्वास, सत्य

(ی—य)

यक (फा) = एक
सिह यक (फा) = तीन हिस्से, तीन में
यक यक (फा) = एक एक करके
यकु (अ) = (शुद्ध रूप—यकुनु) वह था, हुआ
लम् यकु यापऊहुम् ईमानुहुम् (अ) = उनके विश्वास ने उन्हें फल नहीं दिया
यकादु (अ) = वह थोड़ा ही निश्चित् पर्यंत पहुँचता है
यकाँ यकाँ (फा) = एक एक करके
यक बार (फा) = एकबार
व यक बार (फा) = एक साथ में
यक बारा (फा) = पूरी तरह से
यकताश (फा) = प्रसिद्ध पहलवान का नाम
यक दिल (फा) = एक चित्त लोग
यक दम (फा) = एकदम, सहसा, एक क्षण
यक दम कि (फा) = एक क्षण कि, जैसे ही
यक दीगर (फा) = एक दूसरे को
यक ज़ुबान (फा) = एक स्वर से, निर्विरोध
यकसाँ (फा) = एक जैसे
यकसिबु (अ) = (वह) प्राप्त करता है, कमाता है
यकसू (फा) = एक दिशा, एक ओर, एकतरफ
यकसू निहादन् (फा) = एक तरफ रखना
यकूनु (अ) = वह होता है, होगा
यकी (फ़ा) = एकता
यके (फा) = एक, कोई
यके रोज़ (फा) = एक दिन, किसी दिन
यगाना (फा) = (शुद्ध रूप—यकगाना) एकमेव, अद्वितीय
यल्तफ़ितू (अ) = वे ध्यान देते हैं
यल्हक़ु (अ) = वह संलग्न होता है
फ यल्हक़ु नी शानुन (अ) = तो संलग्न होती है मुझसे एक हालत
यल्मिज़ु (अ) = वह ताना देता है, इल्ज़ाम देता है
यमानी (अ) = यमन में पैदा हुआ
युमज्जिसान (अ) = (वे दोनों) मजूसी (अग्निपूजक) बना देते हैं (म०—मग से व्युत्पन्न)
युमज्जिसानिहि (अ) = (वे दोनों माता पिता) उसे अग्निपूजक बना देते हैं

गुलिस्ताँ में प्रयुक्त छन्दों के लक्षण, भेद तथा वर्गीकृत सूची

गुलिस्ताँ में मुख्यतया तेरह प्रकार के छन्दों का प्रयोग हुआ है। इनमें हर छन्द की अपनी अलग प्रकृति है, अपना प्रभाव है। सादी, महाकवि कालिदास की ही भांति, छन्द के उपयुक्त चयन में निपुण कवि हैं। ये छन्द उर्दू साहित्य, और लोकगीतों तथा गीतों के माध्यम से हिन्दी साहित्य में प्रवेश पा चुके हैं और भारतीय पाठक और विशेषतया हिन्दी का पाठक इन छन्दों से नितान्त अपरिचित नहीं है। थोड़े ही परिश्रम से इन छन्दों पर अधिकार पाया जा सकता है। ये निम्न प्रकार हैं—

१	वहरे हजज	३१०
२	वहरे खफीफ	३५५
३	वहरे मुतकारिब	१२६
४	वहरे मुज्तस्	१३६
५	वहरे रमल	१०३
६	वहरे मुजारी	५९
७	वहरे सरी	४५
८	वहरे मुसरिह	१८
९	वहरे रजज	५
१०	वहरे कामिल	१२
११	वहरे वाफिर	७
१२	वहरे वसीत	९
१३	वहरे तवील	१८

मूलतः ये वर्णिक प्रकृति के छन्द हैं, किन्तु नियम और वाचन के अनुसार ये मात्रिक छन्द भी बन जाते हैं। कहीं एक गुरु के स्थान में दो लघु वर्ण लग जाते हैं, कहीं दो लघु के स्थान पर एक गुरु प्रवृत्त हो जाता है। कहीं गुरु की विवक्षा में लघु को अवकाश मिल जाता है तो कहीं लघु के स्थान में गुरुवर्ण 'लघुप्रयत्नतर' भी हो जाता है।

इनमें से कोई कोई छन्द संस्कृत छन्दों के बहुत निकट है। इससे यह नहीं मानना चाहिये कि संस्कृत छन्दों से उन छन्दों की उत्पत्ति हुई है बल्कि यह एक सुखद संयोग है कि शब्दों की जिस लय, ताल और गति ने संस्कृत कविता के काव्य को छन्दात्मकता दी, उसी ने अरबी और फारसी कविताओं को भी छन्दोमय बना दिया।

उदाहरणार्थ एक छन्द है, जिसमें चार समानान्तर यतियां हैं। एक यति में तीन वर्ण हैं। और उन तीन वर्णों में पहला वर्ण लघु है और दूसरे-तीसरे वर्ण गुरु हैं। मैंने इस छन्द को पाश्चात्य संगीत के ड्रम पर भी सुना है—ट्र ला ला—ट्र ला ला—ट्र ला ला—ट्र ला ला। इसी को मैंने अरबी फारसी छन्द शास्त्रों में भी देखा है—फऊलुन् फऊलुन् फऊलुन् फऊलुन् (देखिये वहरे मुतकारिब)। और इसी को मैंने संस्कृत के 'भुजगप्रयातम्' में भी पढ़ा है 'भुजगप्रयातं चतुर्भिर्यकारैः'।

स्पष्ट है, कि यह एक सार्वभौमिक लयात्मकतावाला छन्द है। निश्चय ही अरबों ने 'भुजगप्रयातम्' का लक्षण रटकर इसकी सृष्टि नहीं की होगी और न विलायती तबलचियों ने फऊलुन् फऊलुन् फऊलुन् फऊलुन् की बहर याद करके अपने तबले के बोल निकाले होंगे। एक लय है जिसने सभी को आकृष्ट किया है और उसका अपने अपने ढंग से उपयोग करते हुए नामकरण कर दिया है। यही दूसरे छन्दों के बारे में भी समझना चाहिये।

[illegible] फारसी [illegible] याद करनी होती है। भारतीय छन्दशास्त्र के अध्येताओं की सुविधा के लिये हमने इनके गण और गुरु लघु भी लिख दिये हैं।

उपर्युक्त छन्दों में से अन्तिम चार छन्द मुख्यतया अरबी पदों के लिये प्रयुक्त हुए हैं।

१—बहरे हज़ज्

इस छन्द के मुख्यतया चार भेद हैं।

१ बहरे हज़ज् सालिम मुसम्मन् (पूर्ण अष्टयतिक)
२ बहरे हज़ज् सालिम मुसद्दस (पूर्ण षड्यतिक)
३ बहरे हज़ज् ग़ैर सालिम मुसम्मन् (अपूर्ण अष्टयतिक)
४ बहरे हज़ज् ग़ैर सालिम मुसद्दस (अपूर्ण षड्यतिक)

(१) सालिम मुसम्मन् (पूर्ण अष्टयतिक) छन्द का लक्षण इस प्रकार है—

'मफाईलुन् मफाईलुन् मफाईलुन् मफाईलुन्' (केवल द्वितीय और अन्तिम दो पद इसके उदाहरण हैं)।

भारतीय छन्दशास्त्र के अध्येताओं के लिये गुरु लघु में इसका निदर्शन इस प्रकार है—

मफाईलुन् मफाईलुन् मफाईलुन् मफाईलुन्
ISSS ISSS ISSS ISSS
य र त म य ग

जब इस छन्द के अन्त में से गुरु निकाल देते हैं तो इसका रूप यह हो जाता है—

मफाईलुन् मफाईलुन् मफाईलुन् मफाईल् (मफाईल् या फऊलुन् भी कहते हैं)
ISSS ISSS ISSS ISS

ऐसी अवस्था में इस के अन्तिम चरण को मक़सूर या महज़ूफ (पदक्षेपी) कहा जाता है।

(२) सालिम मुसद्दस (पूर्ण षड्यतिक) छन्द का लक्षण इस प्रकार है—

मफाईलुन् मफाईलुन् मफाईलुन्
ISSS ISSS ISSS
य र त म

जब इसके अन्त में से एक गुरु निकाल देते हैं तो इसका रूप यह हो जाता है—

मफाईलुन् मफाईलुन् मफाईल् (या फऊलुन्)
ISSS ISSS ISS

(३) ग़ैर सालिम मुसम्मन् (अपूर्ण अष्टयतिक) छन्द का लक्षण इस प्रकार है—

मफ्ऊलु मफ़ाईलु मफाईलु मफाईल् (या फऊलुन्)
SSI ISSI ISSI ISS
त य स भ गग

(४) ग़ैर सालिम मुसद्दस (अपूर्ण षड्यतिक) छन्द का लक्षण इस प्रकार है—

मफ्ऊलु मफाइलुन् मफाईल् (या फऊलुन्)
SSI ISIS ISS
त ज र ग

इनमें से प्रथम चरण को अख़रब कहते हैं, द्वितीय चरण और तृतीय चरण मकफूफ कहलाते हैं और अन्तिम चरण को मक़सूर या महज़ूफ कहेंगे।

इनके अतिरिक्त इसी बहर का प्रयोग, अनेक पदों में, उपर्युक्त लक्षणों से थोड़े बहुत परिवर्तनों के साथ किया गया है वास्तव में यह बहर बड़ी विविधतापूर्ण और विशाल है। प्रतिपद लक्षण आगे दिये जाते हैं।

हज़ज्	अध्याय	पद संख्या	पद	लक्षण
१	भूमिका	१	अज़ दस्तो ज़बाने कि बरामद।	मफ्ऊलु मफाईलु फऊलुन्
२	,,	९	चि गम दीवारे उम्मत रा कि वाशद चूं तो पुश्तीबां।	मफाईलुन् मफाईलुन् मफाईलुन् मफाईलुन्
३	,,	१५	गुफ्तम् कि गुले विचीनम् अज़ वाग।	मफ्ऊलु मफाइलुन् फऊलुन्
४	,,	१६–१७	ऐ मुर्गे सहर इश्क ज़ि परवाना बियामोज़।	मफ्ऊलु मफाईलु मफाईलु मफाईल्
५	,,	२०–२१	जां गह कि तुरा वर मने मिस्की नज़र'स्त।	मफ्ऊलु मफाईलु मफाईलु फलुन्
६	,,	२२–२५	गिले खुशबूए दर हम्माम रोज़े।	मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
७	,,	६५	पैराहने सब्ज़ वर दरख्तां।	मफ्ऊलु मफाइलुन् फऊलुन्
८	,,	८९	मर्दीत वियाज़्माय व आंगह ज़न् कुन्।	मफ्ऊलु मफाईलु मफाईलुन् फा
९	,,	९२–९४	बिमानद सालहा ईं नज़्मो तरतीव।	मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
१०	,,	९५–९६	दरां मुद्दत कि मारा वक्त खुश बूद।	मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
११	प्रथम	१५	ता मर्द सुखुन न गुफ्ता बाशद।	मफ्ऊलु मफाइलुन् फऊलुन्
१२	,,	३०–३१	दानी कि चि गुफ्त ज़ाल वा रुस्तमे गुर्द।	मफ्ऊलु मफाइलुन् मफाईलु फलुन्
१३	,,	३७–३८	ज़मीने शोर सुम्बुल वर नयारद।	मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
१४	,,	३८–१	वालाये सरश् ज़ि होशमन्दी।	मफ्ऊलु मफाइलुन् फऊलुन्
१५	,,	मिसरा	दुश्मन चि कुनद चूं महरवां बाशद दोस्त।	मफ्ऊलु मफाईलुन् मफाईलुन् फा
१६	,,	५२–५३	ऐ मैर तुरा नाने जवीं खुश न नुमायद।	मफ्ऊलु मफाईलु मफाईलु मफाईल्
१७	,,	५४	फ़र्क'स्त मियाने आं कि यारश् दर वर।	मफ्ऊलु मफाईलु मफाईलुन् फा
१८	,,	६४	दरवेशो गनी वन्दाए ईं खाके दर'न्द।	मफ्ऊलु मफाईलु मफाईलु फलुन्
१९	,,	७६	मारा व जहां खुशतर अज़ी यक दम नेस्त।	मफ्ऊलु मफाईलु मफाईलुन् फा
२०	,,	७७	ऐ आं कि ब ख्वाबे तो दर आलम नेस्त।	मफ्ऊलु मफाईलु मफाईलुन् फा
२१	,,	९०–९१	आनां कि ब कुन्जे आफियत बनिशस्तन्द।	मफ्ऊलु मफाइलुन् मफाईलुन् फा
२२	,,	९३	अगर सद साल गब्र आतिश फरोज़द।	मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
२३	,,	९४	तो वर सरे कद्रे खेश मी वाशो विकार।	मफ्ऊलु मफाइलुन् मफाईलु फलुन्
२४	,,	९५	बस गुरसना खुफ्तो कस न दानिस्त कि कीस्त।	मफ्ऊलु मफाइलुन् मफाईलु फलुन्
२५	,,	९६–९७	बिबीं आं बे हमीय्यत रा कि हरगिज़।	मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
२६	,,	१०३	व दरिया दर मुनाफ़े वे शुमार'स्त।	मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
२७	,,	११२–११३	न दानस्ती कि बीनी बन्द वर पाय।	मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
२८	,,	११६	बिगुज़ार कि वन्दए कमीनम्।	मफ्ऊलु मफाइलुन् फऊलुन्
२९	,,	११७	गर वर सरो चश्मे मन् नशीनी।	मफ्ऊलु मफाइलुन् फऊलुन्
३०	,,	१२२–१२३	नयामायद मशाम अज़ तब्ल ए ऊद।	मफ़ाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
३१	,,	१२४–१२५	अगर गजे कुनी वर आमियां बख्श।	मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
३२	,,	१३१–१३२	मिमकीने खर अगर्चे वे तमीज़'स्त।	मफ्ऊलु मफाईलुन् फऊलुन्
३३	,,	१३३–१३४	हासिल न शवद रिज़ाए सुल्तान।	मफ्ऊलु मफाइलुन् फऊलुन्
३४	,,	१४१	पेशे कि वर आवरम् ज़ि दस्तत फरियाद।	मफ्ऊलु मफाइलुन् मफाईलुन् फा
३५	,,	१४५–१४६	चु कर्दी वा कुलूख अन्दाज़ पैगार।	मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
३६	,,	१४९	औरा चि वजाये तुस्त हरदम करमे।	मफऊलु मफाइलुन् मफाईलु फलुन्
३७	,,	१५७	मारी तो—कि हर कि रा बिबीनी—बिज़नी।	मफ्ऊलु मफाइलुन् मफाईलु फलुन्
३८	,,	१७३	दरयाब कुनूं कि निअमतत हस्त ब दस्त।	मफ्ऊलु मफाइलुन् मफाईलु फलुन्
३९	,,	१७६–१७७	दौराने वफ़ा चु वादे सहरा बगुज़श्त।	मफ्ऊलु मफाइलुन् मफाईलुन् फा
४०	,,	१७८–१७९	खिलाफे राये सुल्तां राय जुस्तन्।	मफाईलुन् मफ़ाईलुन् फऊलुन्
४१	,,	१८५–१८६	न मद'स्त आं व नज़दीके खिरदमन्द।	मफ़ाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
४२	,,	१८७–१८८	यके रा ज़िश्त खूये दाद दुश्नाम।	मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्

रुबाई	अध्याय	पद संख्या	पद	लक्षण
४३	प्रथम	१९४	शूए जने जिश्तरूय ना बीना बिह।	मफ़ऊलु मफ़ाइलुन् मफ़ाईलुन् फ़ा
४४	,,	१९५–१९६	चु कारे बे फ़ुज़ूले मन बर आयद।	मफ़ाईलुन् मफ़ाईलुन् फ़ऊलुन्
४५	,,	१९७–१९८	अगर रोज़ी ब दानिश बर फ़ज़ूदे।	मफ़ाईलुन् मफ़ाईलुन् फ़ऊलुन्
४६	,,	२०२	तो गायी ता क़यामत जिश्तरूई।	मफ़ाईलुन् मफ़ाईलुन् फ़ऊलुन्
४७	,,	२०३–२०४	क़ास्से नै चुनाँ फ़रीह् मज़ग।	मफ़ऊलु मफ़ाइलुन् फ़ऊलुन्
४८	द्वितीय	२२–२३	चु अज़ क़ौमे यके बे दानिशी कर्द।	मफ़ाईलुन् मफ़ाईलुन् फ़ऊलुन्
४९	,,	२६	तरसम् न रसी ब काबा ऐ आराबी।	मफ़ऊलु मफ़ाइलुन् मफ़ाईलुन् फ़ा
५०	,,	२९–३०	न बीनद मुद्दई जुज़ ख़ेशतन रा।	मफ़ाईलुन् मफ़ाईलुन् फ़ऊलुन्
५१	,,	३७–४१	यके पुरसीद अज़ाँ गुमकर्दा फ़र्ज़न्द।	मफ़ाईलुन् मफ़ाईलुन् फ़ऊलुन्
५२	,,	५२	हर सू दवद आँ कि़श् ज़ि दरे ख़ेश बिरानद।	मफ़ऊलु मफ़ाईलु मफ़ाईलु मफ़ाईल्
५३	,,	५३–५४	वक़्ते व चिराग़ आयदो तस्बीहो मुस्ला।	मफ़ऊलु मफ़ाईलु मफ़ाईलु मफ़ाईल्
५४	,,	५७	शख़्से हमा शब बर सरे बीमार गिरीस्त।	मफ़ऊलु मफ़ाईलु मफ़ाईलु फ़ऊलुन्
५५	,,	६२–६३	ता ज़ाहिदे अम्रो बक्रो ज़ैदी।	मफ़ऊलु मफ़ाइलुन् फ़ऊलुन्
५६	,,	७०	गोयी रगे जाँ मीगुसिलद नग़मए नासाज़श्।	मफ़ऊलु मफ़ाईलुन् मफ़ऊलु मफ़ाईलुन्
५७	,,	७५–७६	मुअज़्ज़िन बाँग बेहंगाम बर दाश्त।	मफ़ाईलुन् मफ़ाईलुन् फ़ऊलुन्
५८	,,	८०–८१	आवाज़े ख़ुश अज़ कामो दहानो लबे शीरीं।	मफ़ऊलु मफ़ाईलु मफ़ाईलु मफ़ाईल्
५९	,,	८२–८३	न गोयद अज़ सरे बाज़ीचे हर्फ़े।	मफ़ाईलुन् मफ़ाईलुन् फ़ऊलुन्
६०	,,	९२–९३	दरे बस्ता ब रूए ख़ुद ज़ि मर्दुम्।	मफ़ाईलुन् मफ़ाईलुन् फ़ऊलुन्
६१	,,	१०५–१०६	ब ज़िश्तश् हर चि बीनी दर सरेश्त'स्त।	मफ़ाईलुन् मफ़ाईलुन् फ़ऊलुन्
६२	,,	१०८–१०९	अगर दुनिया न बाशद दर्दमन्दैम्।	मफ़ाईलुन् मफ़ाईलुन् फ़ऊलुन्
६३	,,	११३	अगर शिरीं कुनद बहराम गोर।	मफ़ाईलुन् मफ़ाईलुन् फ़ऊलुन्
६४	,,	११६–११७	शिकम ज़िन्दाने बाद'स्त ऐ ख़िरदमन्द।	मफ़ाईलुन् मफ़ाईलुन् फ़ऊलुन्
६५	,,	१२६–१२८	शुनीदम् गोस्फ़न्दे रा बुज़ुर्गे।	मफ़ाईलुन् मफ़ाईलुन् फ़ऊलुन्
६६	,,	१३६–१३७	अज़ीं माह् पाराए आबिद फ़रेबे।	मफ़ाईलुन् मफ़ाईलुन् फ़ऊलुन्
६७	,,	१४३	नै ज़ाहिद रा दिरम बायद नै दीनार।	मफ़ाईलुन् मफ़ाईलुन् फ़ऊलुन्
६८	,,	१४९	ज़ाहिद कि दिरम गिरिफ़्तो दीनार।	मफ़ऊलु मफ़ाइलुन् फ़ऊलुन्
६९	,,	१५१	मन् गुर्सना दर बराबरे सुफ़राए नान।	मफ़ऊलु मफ़ाइलुन् मफ़ाईलु फ़ऊलुन्
७०	,,	१६५–१६६	म ताब ऐ पारसा रू अज़ गुनहगार।	मफ़ाईलुन् मफ़ाईलुन् फ़ऊलुन्
७१	,,	१६७	दरियाए फ़रावाँ न शवद तीरा ब संग।	मफ़ऊलु मफ़ाईलु मफ़ाईलु फ़ऊलुन्
७२	,,	१८३–१८४	अगर ख़ुद बर दरद पेशानिए पील।	मफ़ाईलुन् मफ़ाईलुन् फ़ऊलुन्
७३	,,	१९५–१९७	अगर शिकर ख़ुदाए सागरान'स्त।	मफ़ाईलुन् मफ़ाईलुन् फ़ऊलुन्
७४	,,	२०२–२१३	दीदम् गुले ताज़ा चन्द दस्ता।	मफ़ऊलु मफ़ाइलुन् फ़ऊलुन्
७५	तृतीय	३–४	मन आँ मोरम् कि दर पायम् बिमालन्द।	मफ़ाईलुन् मफ़ाईलुन् फ़ऊलुन्
७६	,,	१२–१३	चु कम ख़ुरदन् तबीअत शुद कसे रा।	मफ़ाईलुन् मफ़ाईलुन् फ़ऊलुन्
७७	,,	२३	अगर हंज़ल ख़ुरी अज़ दस्ते ख़ुश ख़ूय।	मफ़ाईलुन् मफ़ाईलुन् फ़ऊलुन्
७८	,,	२८–२९	म बर हाजत ब नज़दीके तुरुश रूय्।	मफ़ाईलुन् मफ़ाईलुन् फ़ऊलुन्
७९	,,	४०	आजिज़ बाशद कि दस्ते क़ुदरत यावद।	मफ़ऊलुन् मफ़ाइलुन् मफ़ाईलुन् फ़ा
८०	,,	४४	आँ कस् कि तवांगर्त नमी गर्दानद।	मफ़ऊलु मफ़ाईलु मफ़ाईलुन् फ़ा
८१	,,	५६	गर आबे चाहे नसरानी न पाक'स्त।	मफ़ाईलुन् मफ़ाईलुन् फ़ऊलुन्
८२	,,	६१	दरवेश ब जुज़ बूए तआमश् न शमीदे।	मफ़ऊलु मफ़ाईलु मफ़ाईलु मफ़ाईल्
८३	,,	६२	बा तबए मलूलत चि कुनद दिल कि न साज़द।	मफ़ऊलु मफ़ाईलु मफ़ाईलु मफ़ाईल्
८४	,,	७१	सय्याद नै हर बार शिकारे बिबुरद।	मफ़ऊलु मफ़ाईलु मफ़ाईलु फ़ऊलुन्

रुबाई	अध्याय	पद संख्या	पद	लक्षण
८५	तृतीय	७४	कद शावह् बिल वरा हिमारुन् ।	मफ्ऊलु मफाइलुन् फ़ऊलुन्
८६	,,	१०९	बे ज़र न तवानी कि कुनी वर कस ज़ोर ।	मफ्ऊलु मफाईलु मफाईलुन् फा
८७	,,	१२४	चि खुश गुफ्त आँ तिही दस्ते सिलहशोर ।	मफाईलुन् मफाईलुन् फ़ऊलुन्
८८	,,	१२६	गव्वास गर अन्देशा कुनद कामे निहंग ।	मफ्ऊलु मफाईलु मफाईलु फलुन्
८९	,,	१२९	मय्याद नै हर बार शिकारे विबुरद ।	मफ्ऊलु मफाईलु मफाईलु फलुन्
९०	चतुर्थ	८	आँ कस कि व कुरआनो खबर ज् न रिही ।	मफ्ऊलु मफाईलु मफाईलु फलुन्
९१	,,	९–१४	दु आकिल रा न वाशद कीनो पैगार ।	मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
९२	,,	२६–२८	अज़ सुहवते दोस्ताँ विरजम् ।	मफ्ऊलु मफाइलुन् फऊलुन्
९३	पञ्चम	८–९	कोताह् न कुनम् जि दामनत,दस्त ।	मफ्ऊलु मफाइलुन् फऊलुन्
९४	,,	१७	गर दस्त दिहद कि आस्तीनश् गीरम् ।	मफ्ऊलु मफाइलुन् मफाईलुन्
९५	,,	१८	पन्द अर्चे हजार सूद मन्द'स्त ।	मफ्ऊलु मफाइलुन् फऊलुन्
९६	,,	१९	दरदा ! कि तवीव सिन्न मी फरमायद ।	मफ्ऊलु मफाइलुन् मफाईलुन् फा
९७	,,	२२	आँ कस् कि मरा वुकुश्त वाज़ आमद पेश ।	मफऊलु मफाइलुन् मफाईलुन् फा
९८	,,	२३	अगर खुद हफ्त सबअ'ज़ बर बख्वानी ।	मफाईलुन् मफाईलुन् मफाईल्
९९	,,	३४–३५	देर आमदी ऐ निगारे सर मस्त ।	मफ्ऊलु मफाइलुन् फऊलुन्
१००	,,	५१	वाज़ आय् व मरा वुकुश कि पेशत मुर्दन् ।	मफ्ऊलु मफाईलु मफाईलुन् फा
१०१	,,	५८–५९	गर मन्न कुनी वर न कुनी मूए वुनागोश ।	मफ्ऊलु मफाईलु मफाईलु मफाईल्
१०२	,,	६३	शायद पसे कारे खेशतन वनिशस्तन् ।	मफ्ऊलु मफाईलुन् मफाईलुन् फा
१०३	,,	७१–७२	जमए चु गुलो लाला वहम पैवस्ता ।	मफ्ऊलु मफाईलु मफाईलुन् फा
१०४	,,	७५–७७	नै मारा दर मियाँ अह्दे वफा वूद ।	मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
१०५	,,	९०–९२	वुजुर्गे दीदम् अन्दर कोहसारे ।	मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
१०६	,,	९७	न वायद वस्तन् अन्दर चीज़ो कस दिल ।	मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
१०७	,,	१०९–११०	तुरा वर दर्दे मन् रहमत नयायद ।	मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
१०८	,,	११७–११८	दर चश्मे मन् आमद आँ सिही सर्वे वुलन्द ।	मफ्ऊलु मफाइलुन् मफाईलु फलुन्
१०९	,,	११९	आँ शाहिदि ओ खिश्म गिरिफ्तन् बीनश् ।	मफ्ऊलु मफाईलु मफाईलुन् फा
११०	,,	१२०	अज़ दस्ते तो मुश्त वर दहाने खुर्दन् ।	मफ्ऊलु मफाइलुन् मफाईलुन् फा
१११	,,	१२१	अगूरे नौ आवुर्दा तुरुश ताम वुवद ।	मफ्ऊलु मफाईलु मफ़ाईलु फलुन्
११२	,,	१२५	नसीहत कुन् मरा चन्दाँ कि ख्वाही ।	मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
११३	,,	१२६	अज यादे तो गाफिल न तवाँ कर्द व हेचम् ।	मफ्ऊलु मफाईलु मफाईलु मफाईल्
११४	,,	१३८–१३९	चि सूद आँगह जि दुज्दी तौवा कर्दन् ।	मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
११५	,,	१४३–१५२	जवाने पाक वाज़ो पाकरू वूद ।	मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
११६	षष्ठ	११–१२	जवानाने सिरदमन्दो निकूरू ।	मफाईलुन् मफ़ाईलुन् फऊलुन्
११७	,,	१४–१५	ज़न कज़ बरे मद वेरज़ा वर खेज़द ।	मफ्ऊलु मफाइलुन् मफाईलुन् फा
११८	,,	२०	वा ईं हमा जोरो तुन्दखूयी ।	मफ्ऊलु मफाइलुन् फऊलुन्
११९	,,	२९	चूं पीर शुदी जि कूदकी दस्त विदार ।	मफ्ऊलु मफाइलुन् मफाईलु फलुन्
१२०	,,	३९–४०	दिरेगा गदने ताअत निहादन् ।	मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
१२१	सप्तम	५	सख्त अस्त पस अज़ जाह तहक्कुम वुर्दन् ।	मफ्ऊलु मफाईलु मफाईलुन् फा
१२२	,,	९	मीरासे पिदर् ख्वाही इल्मे पिदर आमोज़ ।	मफ्ऊलु मफाईलुन् मफ्ऊलु मफाईल्
१२३	,,	१०–११	अगर सद नापसन्द आयद जि दरवेश ।	मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
१२४	,,	१४	उस्तादे मुअल्लिम चु वुवद कम आज़ार ।	मफ्ऊलु मफाईलु मफाईलुन् फा
१२५	,,	१७–१८	चु दस्लत नेस्त खर्ज आहिस्तातर कुन् ।	मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
१२६	,,	१९–२०	खुदावन्दाने नामो नेकबख्ती ।	मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्

हज़ज्	अध्याय	पद संख्या	पद	लक्षण
१२७	सप्तम	२६–२७	हरीफ़े सिफ़ला दर पायाने मस्ती।	मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
१२८	,,	३०–३३	फरामोशत न कर्द ऐज़द दर आँ हाल।	मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
१२९	,,	३८–३९	ज़नाने बारदार ऐ मर्दे हुशियार।	मफ़ाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
१३०	,,	४०–४१	व सूरत आदमी शुद कतरा ए आब।	मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
१३१	,,	४२–४५	जवाँ मर्दी व लुत्फ़ो आदमीयत।	मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
१३२	,,	५२–५५	बर बन्दा म गीर ख़िश्मे बिस्यार।	मफ्ऊलु मफाइलुन् फऊलुन्
१३३	,,	७१	करीमाँ रा ब दस्त अन्दर दिरम नेस्त।	मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
१३४	,,	७७–७८	ऐ तब्ले बलन्द बाँग व दर बातिन हेच।	मफ़ऊलु मफाइलुन् मफाईलुन् फा
१३५	,,	८४–८५	सगे रा गर कुलूखे बर सर आयद।	मफाईलुन् मफ़ाईलुन् फऊलुन्
१३६	,,	९०	बा गुर्सनगी कुव्वते परहेज़ न मानद।	मफ्ऊलु मफाईलु मफाईलु मफ़ाईल्
१३७	,,	९१	दर मन् म निगर ता दिगराँ चश्म न दारन्द।	मफ्ऊलु मफ़ाईलु मफ़ाईलु मफाईल्
१३८	,,	९४–९५	ऊ बर मन् व मन् दरू फ़ितादा।	मफ़ऊलु मफाइलुन् फऊलुन्
१३९	,,	१००	दूनाँ चु गलीमे ख़ेश बेरूँ बुर्दन्द।	मफ्ऊलु मफाइलुन् मफाईलुन् फा
१४०	अष्टम	२–३	आँ कस कि ब दीनारो दिरम ख़ैर नयन्दोख़्त।	मफ़ऊलु मफाईलु मफाईलु मफाईल्
१४१	,,	१२	बे फायदा हर कि उम्र दर बाख़्त।	मफ्ऊलु मफाइलुन् फऊलुन्
१४२	,,	१८	माशूके हज़ार दोस्त रा दिल न दिही।	मफ्ऊलु मफाइलुन् मफाईलु फलुन्
१४३	,,	२३–२४	इमरोज़ बुकुश कि मीतवाँ कुश्त।	मफ्ऊलु मफाइलुन् फऊलुन्
१४४	,,	३१	बा मर्दुमे सहल जू ए दुश्वार मगोय्।	मफ्ऊलु मफाइलुन् मफाईलु फ़लुन्
१४५	,,	३४–३५	पसन्दीदा'स्त बख़्शायश् वलेकिन।	मफाईलुन् मफाईलुन् फ़ऊलुन्
१४६	,,	३६–३७	हज़र कुन् ज़ाँचि दुश्मन गोयद 'आँकुन्'।	मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
१४७	,,	४१–४२	शबाने बा पिदर गुफ्त—'ऐ ख़िरदमन्द।'	मफाईलुन् मफ़ाईलुन् फऊलुन्
१४८	,,	४९–५०	बिरो बा दोस्ताँ आसूदा बिनशी।	मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
१४९	,,	५४–५५	अला ता न शनवी मद्हे सुख़ुनगो।	मफाईलुन् मफ़ाईलुन् फऊलुन्
१५०	,,	६२–६४	पिदर चू दौरे उमरश् मुनक्ज़ी कर्द।	मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
१५१	,,	७१–७२	ब चश्मे ख़ेश दीदम् दर बयाबाँ।	मफाईलुन् मफ़ाईलुन् फऊलुन्
१५२	,,	७५–७७	ख़रे रा अबलहे तालीम मीदाद।	मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
१५३	,,	८३	बस क़ामते ख़ुश कि ज़ेरे चादर बाशद।	मफ्ऊलु मफाइलुन् मफाईलुन् फा
१५४	,,	८४	गर सग हुमा लाले बदख़्शाँ बूदे।	मफ्ऊलु मफाईलु मफाईलुन् फ़ा
१५५	,,	९६	तरह्हुम बर पलंगे तेज़ दन्दाँ।	मफाईलुन् मफाईलुन् फ़ऊलुन्
१५६	,,	१०३–१०४	बलन्द आवाज़े नादाँ गर्दन अफ़राख़्त।	मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
१५७	,,	१०५–१०६	चु बिनशाँ रा तबीअत बेहुनर बूद।	मफ़ाईलुन् मफ़ाईलुन् फऊलुन्
१५८	,	११२	आबिद कि नै अज़ बहरे ख़ुदा गोशा नशीनद।	मफ्ऊलु मफाईलु मफ़ाईलु मफाईल्
१५९	,,	११९–१२१	बामश् मदिह् आँ कि बे नमाज़'स्त।	मफ्ऊलु मफ़ाइलुन् फ़ऊलुन्
१६०	,,	१४१	सरहंगे लतीफ ख़ूए दिलदार।	मफ्ऊलु मफाइलुन् फऊलुन्
१६१	,,	१४२	जम्बूरे दुरुश्ते बेमुरुव्वत रा गोय।	मफ्ऊलु मफाइलुन् मफाईलुन् फा
१६२	,,	१५१–१५२	चु लुक़्माँ दीद कान्दर दस्ते दाऊद।	मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
१६३	,,	१५३–१५४	हिकायत बर मिज़ाजे मुस्तमिअ गोय्।	मफाईलुन् मफ़ाईलुन् फऊलुन्
१६४	,,	१५५–१५६	रक़म बर ख़ुद ब नादानी कशीदी।	मफाईलुन् मफ़ाईलुन् फऊलुन्
१६५	,,	१६२–१६३	ता नेक न दानी कि सुख़ुन ऐने सवाब'स्त।	मफऊलु मफ़ाईलु मफाईलु मफाईल्
१६६	,,	१६८–१६९	सगे रा लुक़्माए हर्गिज़ फरामोश।	मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
१६७	,,	१७२–१७३	गर अन्दर निअमती मग़रूरो ग़ाफिल।	मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
१६८	,,	१७८	बस न'स्त ख़ुश आ रा कि बुवद ज़िक्रे तो मूनिस।	मफ्ऊलु मफाईलु मफाईलु मफाईल्

हज़ज्	अध्याय	पद संख्या	पद	लक्षण
१६९	अष्टम	१७७	पन्द'स्त खितावे मिहतरां आँगह बन्द।	मफ्ऊलु मफाइलुन् मफाईलुन् फ़ा
१७०	,,	१८२–१८३	अज तो ब के जालम् कि दिगर दावर नेस्त।	मफ्ऊलु मफाईलु मफाईलुन् फा
१७१	,,	१८५	गरत खूए मन् आमद नासज़ावार।	मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
१७२	,,	१८७–१८८	दूनां न खुरन्दो गोशा दारन्द।	मफ्ऊलु मफाइलुन् फऊलुन्
१७३	,,	१८९–१९०	नै हर बाजू कि दर वै कुव्वते हस्त।	मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
१७४	,,	१९२–१९३	फरीदूं गुफ्त नक्काशाने चीं रा।	मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
१७५	,,	१९९	क़ाज़ी कि ब रिश्वत बिखुरद पंज खियार।	मफ़ऊलु मफाईलु मफ़ाईलु फलुन्
१७६	,,	२००	जवाने सख्तपै बायद कि अज़ शहवत बिपरहेज़द।	मफाईलुन् मफाईलुन् मफाईलुन् मफ़ाईलुन्

२—बहरे खफीफ

यह छन्द मुसद्दस (षड्यतिक) है। यह मुख्यतया इन रूपों में मिलता है।

(१) फाइलातुन् मफाइलुन् फैलुन्
SISS ISIS SS
र र य ग

(२) फइलातुन् मफाइलुन् फैलुन्
IISS ISIS SS
स र य ग

(३) फाइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
SISS ISIS IIS
र र ज लग

(४) फ़इलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
IISS ISIS IIS
स र ज लग

इस छन्द का दूसरा चरण मखबून कहलाता है और अन्तिम (तीसरा) चरण महज़ूफ या मक़तू कहलाता है।

खफीफ	अध्याय	पद संख्या	पद	लक्षण
१	भूमिका	४–५	ऐ करीमे कि अज़ खज़ानाए गैब।	फाइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
२	,,	१३–१४	गर बसे वस्फे ऊ ज़ि मन् पुरसद।	फाइलातुन् मफ़ाइलुन् फैलुन्
३	,,	३९–५७	हर दम अज़ उम्र मी रवद नफ़से।	फ़ाइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
४	,,	६८–७०	रौजतुन् माउ नहरिहा सलसाल।	फाइलातुन् मफाइलुन् फैलुन्
५	,,	७१–७२	व चिवार आयदत ज़ि गुल तबके।	फइलातुन् मफाइलुन् फ़इलुन्
६	,,	७६	हर कि दर सायाए इनायते ऊस्त।	फाइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
७	,,	८५–८८	हर कि गदन ब दावा अफराज़द।	फाइलातुन् मफाइलुन् फैलुन्
८	,,	९०–९१	गर्चे शातिर बुवद खरोस ब जंग।	फाइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
९	प्रथम	४	हर कि शाह आँ कुनद कि ऊ गोयद।	फाइलातुन् मफाइलुन् फैलुन्
१०	,,	१३–१४	आँ शुनीदी कि लागरे दाना।	फाइलातुन् मफ़ाइलुन् फैलुन्
११	,,	१८–१९	ऐ कि शख्स मनत हकीर नमूद।	फाइलातुन् मफ़ाइलुन् फइलुन्
१२	,,	२०	कस नयायद ब ज़ेरे सायाए बूम।	फाइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्

क्रमांक	अध्याय	पद संख्या	पद	लक्षण
५५	द्वितीय	११४–११५	दर बुज़ुर्गी व दारो गीरो अमल।	फ़ाइलातुन् मफ़ाइलुन् फ़इलुन्
५६	,,	१२४–१२५	ज़ने वद दर सराय मर्दे निकू।	फ़इलातुन् मफ़ाइलुन् फ़इलुन्
५७	,,	१२९–१३२	ऐ गिरिफ्तारे पाये वन्दे अयाल।	फ़ाइलातुन् मफ़ाइलुन् फ़इलुन्
५८	,,	१३३–१३४	गुले सुरखश् चु आरिज़े ख़ूबाँ।	फ़इलातुन् मफ़ाइलुन् फ़ैलुन्
५९	,,	१३८–१३९	हलक'श्रामु हौलहु अतशा।	फ़इलातुन् मफ़ाइलुन् फ़इलुन्
६०	,,	१४१–१४२	हर कि हस्त अज़ फ़क़ीहो पीरो मुरीद।	फ़ाइलातुन् मफ़ाइलुन् फ़इलुन्
६१	,,	१४८	ता मरा हस्तो दीगरम् वायद।	फ़ाइलातुन् मफ़ाइलुन् फ़ैलुन्
६२	,,	१५४–१५६	तर्के दुनिया व मर्दुम् आमोज़न्द।	फ़ाइलातुन् मफ़ाइलुन् फ़ैलुन्
६३	,,	१५८–१६०	गुफ्ते आलिम व गोशे जाँ विशनव।	फ़ाइलातुन् मफ़ाइलुन् फ़इलुन्
६४	,,	१६८–१६९	गर गज़न्दत रगद तहम्मुल् कुन्।	फ़ाइलातुन् मफ़ाइलुन् फ़ैलुन्
६५	,,	१७०–१८०	ईं हिकायत शिनव कि दर बग़दाद।	फ़ाइलातुन् मफ़ाइलुन् फ़ैलुन्
६६	,,	१८८–१९३	पीर मर्दे लतीफ़ दर बगदाद।	फ़ाइलातुन् मफ़ाइलुन् फ़ैलुन्
६७	,,	१९४	ज़िश्त बाशद दरीग़ि ओ दीवा।	फ़ाइलातुन् मफ़ाइलुन् फ़ैलुन्
६८	,,	२००–२०१	ऐ ! दस्नत वरहुना अज़ तकवा।	फ़ाइलातुन् मफ़ाइलुन् फ़इलुन्
६९	तृतीय	१–२	ऐ क़नाअत तवागरम् गरदान्।	फ़ाइलातुन् मफ़ाइलुन् फ़ैलुन्
७०	,,	८–१०	सुख़ुन आँ गह कुनद हकीम आग़ाज़।	फ़इलातुन् मफ़ाइलुन् फ़ैलुन्
७१	,,	१९–२०	तर्के अहसाने ख्वाजा औलातर।	फ़ाइलातुन् मफ़ाइलुन् फ़ैलुन्
७२	,,	२७	नानम् अफज़ूदो आवे रूयम् कास्त।	फ़ाइलातुन् मफ़ाइलुन् फ़ैलुन्
७३	,,	३२–३३	ततरी गर कुशद मुखन्नस रा।	फ़इलातुन् मफ़ाइलुन् फ़इलुन्
७४	,,	३४–३७	न ख़ुरद शेर नीम ख़ुर्दाए सग।	फ़इलातुन् मफ़ाइलुन् फ़इलुन्
७५	,,	४५–४६	दर बयाबाने ख़ुश्को रेगे रवाँ।	फ़ाइलातुन् मफ़ाइलुन् फ़इलुन्
७६	,,	४९–५०	गर हमा ज़रें जाफ़री दारद्।	फ़ाइलातुन् मफ़ाइलुन् फ़ैलुन्
७७	,,	५१–५२	मुर्गे बिरियाँ व चश्मे मर्दुमे सैर।	फ़ाइलातुन् मफ़ाइलुन् फ़इलुन्
७८	,,	५७–५८	वर लताफत चु बर नयायद काम।	फ़ाइलातुन् मफ़ाइलुन् फ़इलुन्
७९	,,	६४–६५	अज़ ज़रो सीम राहते बिरसाँ।	फ़ाइलातुन् मफ़ाइलुन् फ़इलुन्
८०	,,	६६–६७	वह ! कि गर मुर्दा बाज़ मी आयद।	फ़ाइलातुन् मफ़ाइलुन् फ़ैलुन्
८१	,,	६८	बिखुर ऐ ! नेकसीरते सारा मर्द।	फ़इलातुन् मफ़ाइलुन् फ़इलुन्
८२	,,	६९–७०	शुद गुलामे कि आवे जू आरद।	फ़ाइलातुन् मफ़ाइलुन् फ़ैलुन्
८३	,,	८३	चि कुनद ज़ोरमन्द वाश्ज़ूँ बख़्त।	फ़इलातुन् मफ़ाइलुन् फ़ैलुन्
८४	,,	८४–८५	ता ब दूकाने ख़ाना दर गिरवी।	फ़ाइलातुन् मफ़ाइलुन् फ़इलुन्
८५	,,	१०२–१०३	रिज़्क़ हर चन्द बेगुमाँ बिरसद।	फ़ाइलातुन् मफ़ाइलुन् फ़इलुन्
८६	,,	११६–११७	म शाँ ऐमन् कि तगदिल गरदी।	फ़इलातुन् मफ़ाइलुन् फ़ैलुन्
८७	,,	१२०–१२१	हरगिज़ ऐमन ज़ि यार नै निशस्तम्।	फ़ाइलातुन् मफ़ाइलुन् फ़इलुन्
८८	,,	१२५	गर्चे बेरूँ ज़ि रिज़्क़ न तवाँ ख़ुर्द।	फ़ाइलातुन् मफ़ाइलुन् फ़ैलुन्
८९	,,	१२७–१२८	चि ख़ुरद शेर शर्जा दर बुने गार।	फ़इलातुन् मफ़ाइलुन् फ़इलुन्
९०	,,	१३०–१३१	गह बुवद कज़ हकीमे रौशन राय।	फ़ाइलातुन् मफ़ाइलुन् फ़ैलुन्
९१	,,	१३२–१३३	हर कि बर ख़ुद दरे सवाल कशाद।	फ़ाइलातुन् मफ़ाइलुन् फ़इलुन्
९२	,,	१३४	हर कि रा बर सिमात वनिशस्ती।	फ़ाइलातुन् मफ़ाइलुन् फ़ैलुन्
९३	चतुर्थ	३	नूरे गेती फ़रोज़ चश्माए होर।	फ़ाइलातुन् मफ़ाइलुन् फ़इलुन्
९४	,,	५–६	आँ शुनीदी कि सूफ़िये मी कोफ्त।	फ़ाइलातुन् मफ़ाइलुन् फ़ैलुन्
९५	,,	२०–२१	ख़ानाए रा कि चूँ तो हुम साया'स्त।	फ़ाइलातुन् मफ़ाइलुन् फ़ैलुन्
९६	,,	२४	तो बर औजे फ़लक चि दानी चीस्त।	फ़ाइलातुन् मफ़ाइलुन् फ़ैलुन्

खफीफ	अध्याय	पद संख्या	पद	लक्षण
१३९	अष्टम	११	हर कि परहेज़ो इल्मो ज़ुहद फरोख्त।	फाइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
१४०	,,	२१	सुखुने दर निहाँ न बायद गुफ्त।	फइलातुन् मफाइलुन् फैलुन्
१४१	,,	२२	दोस्तानम् जि दुश्मनाँ बतर'न्द।	फाइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
१४२	,,	५२	बुलबुला! मुश्ज़द ए बहार बियार।	फाइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
१४३	,,	६६–६७	खाके मशरिक शुनीदा अम् कि कुनन्द।	फाइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
१४४	,,	७३–७४	चूँ न दारी कमाले फज्ल आँ बिह।	फइलातुन् मफाइलुन् फैलुन्
१४५	,,	८०	चूँ दर आयद बिह अज़ तोई व सुखुन।	फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
१४६	,,	८१–८२	गर निशीनद फरिश्ता ए बा देव।	फाइलातुन् मफाइलुन् फैलुन्
१४७	,,	८७–८८	ख्वेशतन रा बुजुर्ग मी बीनी।	फाइलातुन् मफाइलुन् फैलुन्
१४८	,,	८९	जगो ज़ोर आवरी म कुन बा मस्त।	फाइलातुन् मफाइलुन् फैलुन्
१४९	,,	९०–९१	साया पर्वर्दा रा चि ताकत आँ।	फाइलातुन् मफाइलुन् फैलुन्
१५०	,,	९२	चु नयायद नसीहतत दर गोश।	फइलातुन् मफाइलुन् फैलुन्
१५१	,,	९७	सग दर दस्तो मार बर सरे सग।	फाइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
१५२	,,	९८–९९	नेक सहल'स्त जिन्दा बेजाँ कद।	फाइलातुन् मफाइलुन् फैलुन्
१५३	,,	१००	न अजब गर फिरो रवद नफसश्।	फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
१५४	,,	१०७–१०८	आलिम अन्दर मियाना ए जुहहाल।	फाइलातुन् मफाइलुन् फैलुन्
१५५	,,	११४	अन्दक अन्दक बहम शवद बिस्यार।	फाइलातुन् मफाइलुन् फैलुन्
१५६	,,	१२२–१२३	आँ कि दर राहतो तनउ्उम जीस्त।	फ़ाइलातुन् मफाइलुन् फैलुन्
१५७	,,	१३१–१३२	जहदे रिज़्क अर कुनी बगर न कुनी।	फाइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
१५८	,,	१३५–१३६	हर कि रा जाहो दौलत'स्त वर्दा।	फाइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
१५९	,,	१३७–१३८	मर्दके खुश्क मग़ज़ रा दीदम्।	फाइलातुन् मफाइलुन् फैलुन्
१६०	,,	१४३–१४४	ऐ! व पिन्दार कर्दा जामा सफेद।	फाइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
१६१	,,	१४८	सिरका अज़ दस्ते रजे खेशो तरा।	फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
१६२	,,	१६०–१६१	न दिहद मर्दे होशमन्द जवाब।	फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन
१६३	,,	१७५–१७६	गर व महशर खिताबे कहर कुनद।	फाइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
१६४	,,	१७८–१७९	न रवद मुग सूए दाना फराज़।	फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
१६५	,,	१८०–१८१	शबे तारीके दोस्ताने खुदाय।	फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
१६६	,,	१९४	आँ कि शख्स आफरीदो रोज़ी ओ बख्त।	फाइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
१६७	,,	२०४–२०५	कस न दानद वसीले फाज़िल रा।	फाइलातुन् मफाइलुन् फैलुन्।
१६८	,,	२०७–२०८	मा नसीहत व जाय खुद करदैम्।	फाइलातुन् मफाइलुन् फैलुन्

३—बहरे मुतक़ारिब

यह छन्द मुसम्मन (अष्टयतिक) है तथा प्राय पदक्षेपी रूप मे उपलब्ध होता है। यत्र तत्र यह अपने पूर्णरूप में भी मिलता है। अपने अविकल रूप में यह सस्कृत का भुजगप्रयात बन जाता है। महाकवि फिरदौसी ने अपना 'शाहनामा' तथा दशम गुरु गोविन्दसिंह ने अपना 'जफरनामा' इसी छन्द में लिखा है। भारत के गाँवो में होनेवाले साँगो में भी यह छन्द लोकप्रिय है।

इसका अविकल रूप इस प्रकार है।

(१) फऊलुन् फऊलुन् फऊलुन् फऊलुन्
ISS ISS ISS ISS
य य य य

मुतक़ारिब	अध्याय	पद संख्या	पद	लक्षण
३६	तृतीय	१०७	हुनरवर चु बख्तश् न बाशद ब काम।	फऊलुन् फऊलुन् फऊलुन् फऊल्
३७	,,	१११	बदोज़द शरह्'दीदाए होशमन्द।	,,
३८	,,	११२–११४	चु पुरखाश बीनी तहम्मुल बयार।	,,
३९	,,	११५	चि खुश गुफ्त यकताश वा खेलताश।	,,
४०	,,	१२३	दुरश्ती कुनद बा गरीबाँ कसे।	,,
४१	चतुर्थ	४	म गो अन्दोहे खेश बा दुश्मनाँ।	,,
४२	,,	७	न गुफ्ता न दारद कसे बा तो कार।	,,
४३	,,	१५–१६	सुखुन गर्चे दिलबन्दो शीरी बुवद।	,,
४४	,,	१७–१८	सुखुन रा सर'स्त ऐ खिरदमन्दो बुन।	,,
४५	पञ्चम	७	गु'गग आ'नाादा बायदो रिश्ताजान।	,,
४६	,,	१२	चु दर चश्मे शाहिद नयायद ज़रत।	,,
४७	,,	४८	बिरौ हरचि मीबायदत पेशगीर।	,,
४८	,,	१२२	नै दर हर सुखुन बहस कर्दन् रवा'स्त।	,,
४९	,,	१२३–१२४	यके कर्दा बे आबरूई बसे।	,,
५०	,,	१३५	ब तुन्दी सुबुकदस्त बुर्दन् ब तेग।	,,
५१	षष्ठ	१–२	दमे चन्द गुफ्तम् बरारम् ब काम।	,,
५२	,,	१३	ज़ि खुद बेहतरे जूयो फुरसत शुमार।	,,
५३	,,	२७	बदर कर्द गेती गुरूर'ज़ सरश्।	,,
५४	,,	३६–३८	चि खुश गुफ्त ज़ाले ब फर्ज़न्दे खेश।	,,
५५	सप्तम	५८	नयुफ्तादा दर दस्ते दुश्मन असीर।	,,
५६	,,	६०	बियार आँचि दारी ज़ि मर्दी ओ ज़ोर।	,,
५७	,,	७६	खुदावन्दे मुकनत ब हक मुश्तगिल	,,
५८	,,	८६	ब खूने अज़ीज़ाँ फरो बुर्दा चग।	,,
५९	,,	९७	अगर श्ज़ालह् हर क़तरए दुर शुदे।	,,
६०	,,	९८	गर अज़ नेस्ती दीगरे शुद हलाक।	,,
६१	अष्टम	४–५	दरख्ते करम हर कुजा बेख कर्द।	,,
६२	,,	२५–२७	मियाने दु तन जग चूँ आतिश'स्त।	,,
६३	,,	३०	बिशूय ऐ खिरदमन्द ज़ाँ दोस्त दस्त।	,,
६४	,,	३२	चु दस्त अज़ हमा हीलते दर गुसिस्त।	,,
६५	,,	३८–४०	दुरुश्ती व नरमी बहम दर बिह'स्त।	,,
६६	,,	४४–४५	न शायद बनी आदमे खाकज़ाद।	,,
६७	,,	५३	पसीज़े सुखुन गुफ्तन् आँगाह कुन्।	,,
६८	,,	५६	म शौ गर्रा बर हुस्ने गुफ्तारे खेश।	,,
६९	,,	६५	बदअख्तरतर अज़ मर्दुम आज़ार नेस्त।	,,
७०	,,	९४	शिकम बन्दे दस्त'स्तो ज़जीरे पाय।	,,
७१	,,	११०	दरे खुर्रमी बर सराये बबन्द।	,,
७२	,,	११५	चु बा सिफला गोयी ब लुत्फो खुशी।	,,
७३	,,	१३९–१४०	अला ता न ख्वाही बला बर हसूद।	,,
७४	,,	१६४–१६७	दरोगे न गीरन्द साहिबदिलाँ।	,,
७५	,,	१७०–१७१	म कुन रहम बर गावे बिस्यार ख्वार।	,,
७६	,,	१८४	गमे क'ज़ पयश् शादमानी खुरी।	,,
७७	,,	१९५–१९६	मुबह्हिद चि दर पाये रेज़ी ज़रश्।	,,
७८	,,	२०६	कुहन जामाए खेश पैरास्तन्	,,

४—बहरे मुज्तस्

यह छन्द भी मुसम्मन् (अष्टयतिक) है तथा निम्नलिखित रूपों में पाया जाता है।

(१) मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
ISIS IISS ISIS IIS
ज भ त र ग

(२) मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फालुन्
ISIS IISS ISIS SS
ज भ त र गग

यत्र तत्र इसके दूसरे चरण में (फइलातुन् में) रूपान्तर मिलता है। उस समय इसके दो लघु के स्थान पर गुरु का आदेश हो जाता है और यह 'मगण' बन जाता है—ऽऽऽ—। ऐसी स्थिति में फइलातुन् के स्थान में मफ्ऊलुन् पढ़ेंगे। सर्वगुरु को संस्कृत में मगण और अरबी-फ़ारसी में मशअस या मुशअस्स कहते हैं।

मुज्तस्	अध्याय	पद संख्या	पद	लक्षण
१	भूमिका	५८	जुर्रा बुरीदा व मुर्गे निशस्ता गुम्गुन् बाग़ ।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
२	,,	६२–६३	अगर्चे पेशे खिरदमन्द खामुशी अदबस्त ।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
३	,,	७३–७५	मर फ़ज़ीलते खुदावन्दीयम् नियारायद ।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फालुन्
४	प्रथम	४०–४१	शावानम् आँ कि नयाजारम् अन्दरूने कसे ।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
५	,,	५८–५९	दरीं उमेद बसर शुद दरेग उम्रे अज़ीज़ ।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
६	,,	६५–६८	ब बाजुआने तवाना व कुव्वते सरे दस्त ।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
७	,,	७८	क़रार बर कफ़े आज़ादगाँ नगीरद माल ।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
८	,,	८२	ब रूए खुद दरे इतमाअ बाज न तवाँ कर्द ।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फालुन्
९	,,	९२	हुमाय बर हमा मुर्ग़ाँ अज़ाँ शरफ़ दारद ।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फालुन्
१०	,,	१०१–१०२	ब मुल्क फ़रास रवी दर अमल अगर ख्वाही ।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फालुन्
११	,,	१०६	जि यारे बस्ता मयन्देशो दिल निशस्ता म दार ।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
१२	,,	११८–११९	चि जुर्म दीद खुदावन्दे साबिक़'ल इनआम ।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फालुन्
१३	,,	१२०–१२१	बु यारा मिन्नते हाजत बुर्द अज़ दयारे न दद ।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
१४	,,	१२७–१२८	अगर जि बाग़े रअय्यत मलिक खुरद सेबे ।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फालुन्
१५	,,	१३५–१३६	नै हर कि कुव्वते बाज़ू व मनसबे दारद ।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फालुन्
१६	,,	१५३–१५४	दु चामदाद मगर आयद कसे व खिदमते शाह ।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
१७	,,	१६२–१६३	चि सालहाये फ़रावानो उम्रहाय दराज़	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
१८	,,	१९४	मरा ब मर्गे उदू जाये शादमानी नेस्त ।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फालुन्
१९	द्वितीय	४८	खुश'स्त ज़ेरे मुग़ीलाँ व राहे बादिया खुफ्त ।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
२०	,,	६७–६८	ब रोज़गारे सलामत शिकस्तगाँ दर याब ।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
२१	,,	८६	व उम्मो तीबाह् तवाँ रुस्त अज अजाबे खुदाय ।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
२२	,,	१०७	शिगूफ़ा गाह् शिगुफ़्त'स्तो गाह् खाशीदा ।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फालुन्
२३	,,	१२१–१२२	हमी गुरेज़म् अज़ मर्दुमाँ ब कोहो ब दश्त ।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
२४	,,	१८७	हज़ार खेश कि बेगाना अज़ खुदा बाशद ।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फालुन्
२५	,,	१९८–१९९	नै आँ कि बर सरे दावा नशीनद अज़ खल्के ।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फालुन्
२६	,,	२१६–२१७	न माद हातिमे ताई वलेक ता ब अबद ।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
२७	तृतीय	५	ब नाने खुश्क क़नाअत कुनैमो जामाए दल्क ।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्

मुजतश्	अध्याय	पद सख्या	पद	लक्षण
२८	तृतीय	२४–२५	जि वक्त रूए तुरुशकर्दा पेशे यारे अज़ीज़।	मफ़ाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
२९	,,	३०–३१	न माद जानवर अज़ वहशो तैरो माहियो मोर।	मफाइलुन् फडलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
३०	,,	५३–५४	ज़ि क़द्रो शौकते सुल्ताँ न गश्त चीज़े कम।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फालुन्
३१	,,	७५–७६	व आदमी न तवाँ गुफ्त मानद ईं हैवान।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फालुन्
३२	,,	७७–७८	शरीफ गर मुतज़इ्इफ शवद-खयाल म वन्द।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
३३	,,	८२	अगर व हर सरे मूये दु सद हुनर वाशद।	मफाइलुन् फाइलातुन् मफाइलुन् फालुन्
३४	,,	८८–८९	वुजूदे मर्दुमे दाना मिसाले ज़र्रो तिला'स्त।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
३५	,,	१००–१०१	हर आँ कि गर्दिशे गेती व कीने ऊ वर खास्त।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फालुन्
३६	चतुर्थ	२	हुनर व चश्मे अदावत वुज़ुर्गतर ऐवे'स्त।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फालुन्
३७	,,	१९	नै हर सुखुन कि वरायद व गोयद अह्ले शनाख्त।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
३८	,,	२३	उमीदवार वुवद आदमी व खैरे कसाँ।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
३९	,,	२९	व तेशा कस न खराशद ज़ि रूए खारागिल।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फालुन्
४०	पञ्चम	१–२	कसे व दीदाए इनकार गर निगाह कुनद।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फउलुन्
४१	,,	२६–२७	नै आँ चुनाँ व तो मशगूलम् ऐ विहिश्ते रू।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फालुन्
४२	,,	३७–३८	व यक नफस कि दर आमेख्त यार वा अगयार।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
४३	,,	६०–६१	सवाल कर्दमो गुफ्तम् जमाले रूयत रा।	मफाइलुन् फाइलातुम् मफाइलुन् फइलुन्
४४	,,	६४–६५	अल'स्सवाह व रूये तो हर कि वर खेज़द।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फालुन्
४५	,,	७३–७४	निगारे मन् चु दर आयद व खन्दए नमकीन।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
४६	,,	८४–८५	मुअल्लिमश् हमा शोखी व दिलवरी आमोख्त।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फालुन्
४७	,,	९८–९९	मगर गलायते वर आरगाँ यगर ँ वदार।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
४८	,,	१४०–१४१	व आस्तीने मलाली कि वर मन् अफशान्दी।	मफाइलुन् फडलातुन् मफाइलुन् फालुन्
४९	षष्ठ	३–४	न दीदई कि चि सख्ती रसद व जाने कसे।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
५०	,,	४३–४९	शुनीदा अम् कि दरी रोज़हा कुहन् पीरे।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फालुन्
५१	सप्तम	६१	नै हर कि मूए शिगाफद ज़ि तीरे जोशन खाय।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
५२	,,	६२–६४	व कारहाय गिराँ मर्दे कारदीदा फिरिस्त।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
५३	,,	६९–७०	फरिश्ता खूय शवद आदमी व कम खुर्दन्।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फालुन्
५४	,,	७२–७३	तवागरान रा वक्फ'स्तो नज्रो मिहमानी।	मफ़ाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फालुन्
५५	,,	८१	व रजो सई कसे निअमते व चग आरद।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फालुन्
५६	,,	८७	दिले कि हूरे वहिश्ती रवूदो यग्मा कर्द।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फालुन्
५७	,,	१०१–१०२	पिदर व जाए पिसर हरगिज़ ईं करम न कुनद।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फ़इलुन
५८	,,	१०३–१०४	म कुन ज़ि गर्दिशे गेती शिकायत ऐ दरवेश।	मफाइलुन् फइलातुन् मफ़ाइलुन् फइलुन्
५९	अष्टम	१	म कुन नमाज़ वराँ हेचकस कि हेच न कर्द।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फ़इलुन्
६०	,,	१७	खवीस रा चु तअह्हुद कुनी ओ विनवाज़ी।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फालुन्
६१	,,	४८	अगर ज़ि दस्ते वला वर फलक रवद वदखू।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन
६२	,,	५१	व रोज़े मारका ऐमन् मशौ ज़ि खस्मे ज़इफ़।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
६३	,,	५७–६०	यके जहूदो मुसलमाँ खिलाफ़ मी जुस्तन्द।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फालुन्
६४	,,	८५–८६	तवाँ शिनाख्त व यक रोज़ दर शमाइले मद।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
६५	,,	९३	कुनद हर आईना गैवत हसूदे कोतह दस्त।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
६६	,,	९५	असीरे वन्दे शिकम रा दु शव न गीरद ख्वाव।	मफ़ाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
६७	,,	१११	तमीज़ वायदो तदवीरो रायो आँगह मुल्क।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
६८	,,	११८	व कौले दुश्मने पैमाने दोस्त विश्कस्ती।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फ़ालुन्
६९	,,	१२६–१२७	खरे कि वीनी कि वारश् व गिल दर उफ्तादा।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फालुन्

मुज्तस्	अध्याय	पद संख्या	पद	लक्षण
७०	अष्टम	१२९–१३०	बजा दिगर न शवद बर हज़ार नाला ओ आह।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फ़इलुन्
७१	,,	१३३	शुनीदई कि सिकन्दर बरपत दर जुलमात।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फालुन्
७२	,,	१४९–१५०	उमीदे आफियत आँगह बुवद मुवाफिके अक्ल।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
७३	,,	१५८–१५९	कसे कि लुत्फ कुनद बा तो खाके पायश् बाश।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
७४	,,	१८६	नऊजु बिल्लाह! अगर खल्क गैबदाँ बूदे।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फालुन्
७५	,,	१९१	हजार बार चरागाह खुशतर'ज मैदान।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फालुन्
७६	,,	१९७–१९८	चु हक़ मुआयना बीनी कि मी बिबायद दाद।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्
७७	,,	२०१	जवाने गोशा नशीं शेरमर्दे राहे खुदा'स्त।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फ़इलुन्
७८	,,	२०२–२०३	बदों चि मी गुजरद दिल न निह कि दज्ला बसा।	मफाइलुन् फइलातुन् मफाइलुन् फइलुन्

५—बहरे रमल

यह छन्द मुसम्मन् (अष्टयतिक) और मुसद्दस (षड्यतिक) दोनों रूपों में मिलता है।

(१) इसका अष्टयतिक लक्षण इस प्रकार है —

फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलातुन्
S I S S S I S S S I S S S I S S
र त म य र ग

(२) जब इस छन्द के चरणों के आद्यक्षर लघु हो जाते हैं तब इसका लक्षण इस प्रकार होता है —

फइलातुन् फइलातुन् फइलातुन् फइलातुन्
I I S S I I S S I I S S I I S S
स भ त य स ग

(३) जब इस छन्द का अन्तिम चरण मकसूर (पदक्षेपी) होकर अन्तिम वर्ण का विसर्जन कर देता है तो इसका लक्षण इस प्रकार होता है —

फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलातुन् फ़ाइलुन्
S I S S S I S S S I S S S I S
र त म य र

अवान्तर भेद से अन्तिम मकसूर (पदक्षेपी) चरण 'फालुन्' (S S अर्थात् 'ग ग') अथवा 'फइलुन्' (I I S अर्थात् सगण) के रूप में भी मिलता है।

(४) मुसद्दस (षड्यतिक) रूप में यही छन्द एक चरण का विसर्जन करके इस प्रकार मिलता है —

फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलुन्
S I S S S I S S S I S
र त म लग

(५) अष्टयतिक छन्द की ही भाँति, अवान्तर भेदों में, षड्यतिक छन्द के चरणों के आद्यक्षर भी लघु हो जाते हैं। यथा —

फइलातुन् फइलातुन् फइलुन्
I I S S I I S S I I S
स भ त लग

अवान्तर भेदों में षड्यतिक छन्दों के मकसूर (पदक्षेपी) चरणों में भी अष्टयतिकों जैसे परिवर्तन देखे जाते हैं। कहीं 'फाइलुन्' का 'फालुन्' हो जाता है, कहीं 'फइलुन्'।

प्रति पद लक्षण आगे दिये जा रहे हैं।

रमल	अध्याय	पद संख्या	पद	लक्षण
१	भूमिका	६–७	अब्रो बादो मही खुरशीदो फलक दर कारन्द ।	फाइलातुन् फइलातुन् फइलातुन् फालुन्
२	प्रथम	१६–१७	आँ न मन् बाशम् कि रोजे जग बीनी पुश्ते मन् ।	फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलुन्
३	,,	२१–२२	नीम नाने गर खुरद मर्दे खुदाय ।	फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलुन्
४	,,	२७	परतवे नेकाँ न गीरद हर कि बुनियादश् बद'स्त ।	फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलुन्
५	,,	४५–४६	हर कि फरियाद रसे रोजे मुसीबत ख्वाहद ।	फाइलातुन् फइलातुन् फइलातुन् फालुन्
६	,,	५०–५१	पादशाहे कू रवा दारद सितम बर जेर दस्त ।	फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलुन्
७	,,	७४–७५	जालिमे रा खुफ्ता दीदम् नीमरोज ।	फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलुन्
८	,,	८१	अवलहे कू रोजे रौशन शमए काफूरी निहद ।	फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलुन्
९	,,	८८	जर बिदेह मर्दे सिपाहीए रा ता सर बिदिहद ।	फाइलातुन् फइलातुन् फइलातुन् फइलुन्
१०	,,	१०४–१०५	दोस्त म शुमार आ कि दर निअमत् जनद ।	फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलुन्
११	,,	१०८	म नशी तुश तो अज़ गर्दिशे अय्याम कि सब्र ।	फइलातुन् फइलातुन् फइलातुन् फइलुन्
१२	,,	१३७–१४०	ना सजाए रा चु बीनी बख्तियार ।	फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलुन्
१३	,,	१४२–१४३	हमचुनाँ दर फ़िक्र आँ बैतम् कि गुफ्त ।	फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलुन्
१४	,,	१४७–१४८	सुलह् वा दुश्मने खुद कुनन्व गरत रोजे ऊ ।	फइलातुन् फइलातुन् फइलातुन् फालुन्
१५	,,	२०५–२०६	तिश्नाए सोख्ता बर चश्मए हैवाँ चु रसद ।	फइलातुन् फइलातुन् फइलातुन् फइलुन्
१६	,,	२१२–२१३	ईं हमा हेच'स्त चूँ मी बिगुजरद ।	फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलुन्
१७	द्वितीय	५–६	गर कुशी वर जुर्म बख्शी रूय् व सर बर आस्तानम् ।	फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलातुन्
१८	,,	१४	हर कि ऐबे दीगराँ पेशे तो आवुर्दो शुमुर्द ।	फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलुन्
१९	,,	४२–४३	दोस्त नजदीकतर'ज़ मन् व मन'स्त ।	फाइलातुन् फइलातुन् फइलुन्
२०	,,	४९–५०	गर मरा जार व फ़ुरसतन् दिहद आँ यारे अज़ीज़ ।	फाइलातुन् फइलातुन् फइलातुन् फइलुन्
२१	,,	५१	चूँ फिरोमानी व सख्ती तन व इज्ज़ अन्दर म दिह ।	फ़ाइलातुन् फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलुन्
२२	,,	६९	काज़ी अर वा मा नशीनद बर फिशानद दस्त रा ।	फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलुन्
२३	,,	७३–७४	चूँ व आवाज आमद आँ बरबत सराय ।	फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलुन्
२४	,,	८७–८९	चन्द गोयी कि बद'न्देशो हुसूद ।	फाइलातुन् फइलातुन् फइलुन्
२५	,,	१२३	पाय दर जंजीर पेशे दोस्ताँ ।	फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलुन्
२६	,,	१३५	व अफानीनु अलैहा जुल्नार ।	फइलातुन् फइलातुन् फालुन्
२७	,,	१४०	दर सरे कारे तो कर्दम् दिल व दी वा हमा दानिश् ।	फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलातुन्
२८	,,	१५३	गर गदा पेशरौ ए लश्करे इस्लाम बुवद ।	फाइलातुन् फइलातुन् फइलातुन् फइलुन्
२९	,,	१८१–१८२	लाफे सरपंजगियो दावए मर्दी बिगुजार ।	फाइलातुन् फइलातुन् फइलातुन् फ़इलुन्
३०	तृतीय	२१	गर वजाये नानश् अन्दर सुफरा बूदे आफताब ।	फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलुन्
३१	,,	२२	हर चि अज़ दूनाँ व मिन्नत ख्वास्ती ।	फाइलातुन् फ़ाइलातुन् फाइलुन्
३२	,,	३८	हर कि नान'ज़ अमले खेश खुरद ।	फइलातुन् फइलातुन् फइलुन्
३३	,,	३९	गुरबए मिस्की अगर पर दाश्ते ।	फाइलातुन् फ़ाइलातुन् फाइलुन्
३४	,,	५९–६०	आँ शुनीद'स्ती कि वक्ते ताजिरे ।	फ़ाइलातुन् फाइलातुन् फाइलुन्
३५	,,	९०–९२	शाहिद आँ जा कि रवद इज्ज़तो हुरमत बीनद ।	फाइलातुन् फइलातुन् फइलातुन् फालुन्
३६	,,	१०८	सह्मगी आवे कि मुरग़ावी दरूँ ऐमन् न बूद ।	फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलुन्
३७	,,	११०	ज़र न दारी न तवाँ रफ्त व ज़ोर अज़ दरिया ।	फ़ाइलातुन् फइलातुन् फइलातुन् फइलुन्
३८	पञ्चम	१०–११	हर कुजा सुल्तान इश्क आमद न माँद ।	फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलुन्
३९	,,	२४	अजब'स्त बावुजूदत कि वुजूदे मन् बिमानद ।	फइलातु फाइलातुन् फइलातु फाइलातुन्
४०	,,	२५	अजब अज़ कुश्ता न बाशद व दरे खेमाए दोस्त ।	फइलातुन् फइलातुन् फइलातुन् फइलुन्
४१	,,	३९–४०	यारे देरीना मरा गो—ब जुबाँ तौबा म दिह ।	फाइलातुन् फइलातुन् फइलातुन् फइलुन्
४२	,,	८२–८३	खुर्रम आँ फर्खुन्दा ताले रा कि चश्म ।	फ़ाइलातुन् फाइलातुन् फाइलुन्

रमल	अध्याय	पद संख्या	पद	लक्षण
४३	पञ्चम	८९–९	वायुजूदत जि मन् आवाज नयायद कि गाग्।	फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलुन्
४४	,,	१००–१०१	फाश औं रोज कि दर पाये तो शुद खारे अजल।	फाइलातुन् फइलातुन् फ़इलातुन् फालुन्
४५	,,	१०४–१०५	सूदे दरिया नेक बूदे गर न बूदे बीमे मौज।	फाइलातुन् फ़ाइलातुन् फ़ाइलातुन् फाइलुन्
४६	,,	११३–११६	तन्दुरुस्ती रा न बाशद दर्दे रेश।	फाइलातुन् फ़ाइलातुन् फाइलुन्
४७	,,	१३६–१३७	ईं दु चीजम् बर गुनाह् अंगेख्तन्द।	फाइलातुन् फ़ाइलातुन् फाइलुन्
४८	सप्तम	२८–२९	गर्चे सीमो जर जि सग आयद हमे।	फ़ाइलातुन् फाइलातुन् फाइलुन्
४९	,,	५९	पील फ़ू ता पतफो बाजूए गुर्दा बीनद।	फाइलातुन् फइलातुन् फइलातुन् फालुन्
५०	,,	६६–६८	मर्दे दरवेश कि बारे सितमे फाका कशीद।	फाइलातुन् फइलातुन् फ़इलातुन् फइलुन्
५१	,,	९६	जोरे दुश्मन् चि कुशद गर न कशद तालिये दोस्त।	फ़ाइलातुन् फइलातुन् फ़इलातुन् फइलुन्
५२	अष्टम	१९–२०	ख़ामुशी बिह् कि जमीरे दिले खेश	फाइलातुन् फ़इलातुन् फ़इलुन्
५३	,,	२८–२९	दर सुखुन बा दोस्तां आहिस्ता बाश।	फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलुन्
५४	,,	४३	बर सरे मुल्क म बाद औं मलिके फरमांदिह्	फ़ाइलातुन् फ़इलातुन् फ़इलातुन् फालुन्
५५	,,	६१	रूदये तंग व यक गिर्दाए नां पुर गर्दद।	फाइलातुन् फइलातुन् फइलातुन् फ़ालुन्
५६	,,	६८–७०	मुर्गंक अज बैजा बरूं आयदो रोजी तलबद।	फ़ाइलातुन् फइलातुन् फ़इलातुन् फइलुन्
५७	,,	१०१–१०२	गर हुनर मन्द जि ओबाश जफाए बीनद।	फ़ाइलातुन् फ़इलातुन् फ़इलातुन् फालुन्
५८	,,	११६–११७	आम्मिये नादां परेशां रोजगार।	फ़ाइलातुन् फाइलातुन् फ़ाइलुन्
५९	,,	१२४–१२५	ऐ ! कि बर मरकबे ताजिन्दा सवारी हुशदार।	फ़ाइलातुन् फइलातुन् फइलातुन् फइलुन्
६०	,,	१४५–१४७	पेशे दरवेशां बुवद खूनत मुबाह।	फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलुन्

६—बहरे मुजारी*

यह छन्द मुसम्मन् (अष्टयतिक) है और इसका केवल एक ही लक्षण उपलब्ध होता है। यथा —

मफ़ऊलु फ़ाइलातु मफ़ाईलु फाइलुन्
ऽऽ। ऽ।ऽ। ।ऽऽ। ऽ।ऽ
त र स र लग

प्रतिपद लक्षण आगे दिये जा रहे हैं।

मुजारी	अध्याय	पद संख्या	पद	लक्षण
१	भूमिका	१८–१९	ऐ बरतर अज़ खयालो कयासो गुमानो वह्म।	मफ़ऊलु फाइलातु मफ़ाईलु फाइलुन्
२	,,	३५–३८	अक़्लीमे पार्स रा ग़म'ज़ आसीबे दह्र नेस्त।	,,
३	प्रथम	८–११	बस नामवर ब जेरे जमीं दफ्न कर्दा अन्द।	,,
४	,,	३५–३६	शमशेरे नेक'ज़ आहने बद चू कुनद कसे।	,,
५	,,	१११	या दुर ब हर दु दस्त कुनद ख्वाजा दर किनार।	,,
६	,,	१२६	क़ारूं हलाक शुद कि चेहल् खाना गज दाश्त।	,,
७	द्वितीय	३२–३३	शख्सम् ब चश्मे आलमियां खूब मंजर'स्त।	,,
८	,,	३४	दीदार मी नुमाई मो परहेज़ मी कुनी	,,
९	,,	१४४–१४७	खातूने खूबसूरतो पाकीज़ारूय रा।	,,

* इस तर्ज पर, भरतपुर के महाराज सूरज सिंह और जवाहर सिंह की दिल्ली विजय की गाथा पर आधारित एक लम्बा लोककाव्य प्रचलित है, जिसे मुसलमान लोक गायक हाथ में लोहे की चूड़ियां डालकर डण्डे से ताल देते हुए घर घर सुनाते हैं। यह छन्द चूड़ी डण्डेवाली की तर्ज के नाम से प्रसिद्ध है।

मुजारी	अध्याय	पद सख्या	पद	लक्षण
१०	द्वितीय	१५०	नान'ज़ वराये गजे इवादत गिरिफ्ता अन्द।	मफ्ऊलु फाइलातु मफाईलु फाइलुन्
११	,,	१५७	आलिम कि कामरानी ओ तन परवरी कुनद।	,,
१२	,,	१६१–१६३	साहिव दिले व मद्रसा आयद ज़ि खानकाह।	,,
१३	,,	१८५	हमराह गर शिताव कुनद हमरहे तो नेस्त।	,,
१४	तृतीय	६–७	हम रुकआ दोस्तन् विहो इल्ज़ामे कुजे सब्र।	,,
१५	,,	११	खुर्दन् वराये ज़ीस्तन् ओ ज़िक्र कर्दन'स्त।	,,
१६	,,	१६–१७	वा आकि दर वजूदे तआम'स्त हज्ज़े नफ्स।	,,
१७	,,	८६	मुनइम व कोहो दश्तो वयावाँ गरीव नेस्त।	,,
१८	,,	९३–९४	चूँ दर पिसर मुवाफिकतो दिलवरी बुवद।	,,
१९	,,	१०४–१०६	चूँ मर्द वर फुताद ज़ि जायो मकामे खेश।	,,
२०	पञ्चम	१२८–१३२	इमशव मगर व वक्ते न मी ख्वाँद ईं खरोस।	,,
२१	सप्तम	४६–४७	अज मन् वगोय हाजिये मर्दुम गिज़ाय रा।	,,
२२	,,	८०	गर वे हुनर व माल कुनद किब्र वर हकीम।	,,
२३	,,	८२	आँरा कि अवलो हिम्मतो तदवीरो राय नेस्त।	,,
२४	,,	९२–९३	हाँ ! ता सिपर नयफगनी अज़ हमल ए फसीह।	,,
२५	अष्टम	६–७	शुक्रे खुदाय कुन् कि मुवफिफक शुदी व खैर।	,,
२६	,,	१५–१६	वक्ते व लुत्फ गोयो मुदारा व मर्दुमी।	,,
२७	,,	४६–४७	दर खाके वेलकाँ विरसीदम् व आविदे।	,,
२८	,,	१०९	सगे व चन्द साल शवद लालपाराए।	,,
२९	,,	१३४	मिस्की हरीसे दर हमा आलम हमी रवद।	,,

७—वहरे सरी

यह छन्द मुसद्दस (षड्यतिक) है और इसका एक ही लक्षण मिलता है। यथा —

मुफ्तइलुन् मुफ्तइलुन् फाइलुन्
S I I S S I I S S I S
भ त य लग

प्रतिपद लक्षण निम्न प्रकार है —

सरी	अध्याय	पद सख्या	पद	लक्षण
१	भूमिका	२–३	वन्दा हमा विह कि जि तक्सीरे खेश।	मुफ्तइलुन् मुफ्तइलुन् फाइलुन्
२	प्रथम	३	वक्ते जुरूरत चु न मानद गुरेज़।	,,
३	,,	१३०	आतिशे सोज़ाँ न कुनद वा सिपन्द।	,,
४	,,	१९२–१९३	उम्रे गराँ माया दरी सर्फ शुद।	,,
५	द्वितीय	४४–४५	फहमे सुखुन चूँ न कुनद मुस्तमिअ।	,,
६	,,	१५२	कोफ्ता दर सुफरा ए मन्-गो-म वाश।	,,
७	तृतीय	१८	मैदा चु पुर गश्तो दरू दर्द खास्त।	,,
८	,,	४२–४३	सिफ्ला चु जाह आमदो सीमो जरश्।	,,
९	,,	७९	दस्ते दराज़ अज़ पये यक हब्वा सीम।	,,
१०	,,	९८–९९	गर व ग़रीवी र व द अज़ शहरे खेश।	,,

रारी	अध्याय	पद्य संख्या	पद	लक्षण
११	तृतीय	११८–११९	पिदरा चु पुर शुद वजनद पील रा।	मुफ्तइलुन् मुफ्तइलुन् फाइलुन् •
१२	"	१३५–१३९	गोशे तयानद कि हुमा उम्रे वै।	"
१३	पञ्चम	२८–२९	चदगे वर्दन्देश कि वर गन्दा वाद।	"
१४	"	५२–५४	ताज़ा बहारे तो ख़ुर्ज़ू ख़द शुद।	"
१५	"	८८–८९	तवए तुरा ता हवसे नहुव कर्द।	,
१६	"	१०२–१०३	आँकि करारद् न गिरिफ्तं व ख्वाव।	"
१७	षष्ठ	१६–१७	लम्मा रअत वैन यदे वालिहा।	"
१८	"	२१–२२	बा तु मरा सोख्तन् अन्दर अज़ाव।	"
१९	"	३२–३५	दौरे जवानी व शुद अज़ दस्ते मन्।	"
२०	सप्तम	२१–२२	हर कि अलम शुद व सखा ओ करम।	"
२१	अष्टम	१३–१४	पन्द अगर विशनवी ऐ पादशाह।	"
२२	"	७८–७९	हर कि ताम्मुल न कुनद दर जवाव।	"

८—वहरे मुसरिह

यह छन्द मुसम्मन् (अष्टयतिक) है और निम्नलिखित रूपो में मिलता है। यथा —

(१) मुफ्तइलुन् फाइलुन् मुफ्तइलुन् फाइलुन् (यह रूप वहरे रजज़ के एक विशिष्ट रूप जैसा बन जाता है।)
ऽ।।ऽ ऽ।ऽ ऽ।।ऽ ऽ।ऽ
भ त त य लग

इसके दूसरे और चौथे चरणों में परिवर्त्तन होकर अवान्तर भेद बन जाते हैं। यथा —

(२) मुफ्तइलुन् फाइलातु मुफ्तइलुन् फाइलात् (अथवा फाइलुन्)
ऽ।।ऽ ऽ।ऽ। ऽ।।ऽ ऽ।ऽ
भ त र स र

(३) मुफ्तइलुन् फाइलुन् मुफ्तइलुन् फा
ऽ।।ऽ ऽ।ऽ ऽ।।ऽ ऽ
भ त त य

(४) मुफ्तइलुन् फाइलातु मुफ्तइलुन् फा
ऽ।।ऽ ऽ।ऽ। ऽ।।ऽ ऽ
भ त र स ग

प्रतिपद लक्षण नीचे दिये जा रहे हैं।

मुसरिह	अध्याय	पद्य संख्या	पद	लक्षण
१	भूमिका	६६–६७	अव्वले उर्दे विहिश्त माहे जलाली।	ऽ।।ऽ ऽ।ऽ। ऽ।।ऽ ऽ
२	"	७७–८०	पुश्ते दूता ए फलक रास्त शुद अज़ खुरमी।	ऽ।।ऽ ऽ।ऽ ऽ।।ऽ ऽ।ऽ
३	द्वितीय	१८६	चूँ न वुवद खेश रा दयानतो तक़्वा।	ऽ।।ऽ ऽ।ऽ। ऽ।।ऽ ऽ
४	तृतीय	६३	दस्ते तज़र्रुअ चि सूद वन्दा ए मुहताज रा।	ऽ।।ऽ ऽ।ऽ। ऽ।।ऽ ऽ।ऽ
५	"	८०	फज्लो हुनर ज़ाया अस्त ता न नुमायन्द।	ऽ।।ऽ ऽ।ऽ। ऽ।।ऽ ऽ
६	"	८१	कस न तवानद गिरिफ्त दौलते दामन व ज़ोर।	ऽ।।ऽ ऽ।ऽ। ऽ।।ऽ ऽ।ऽ
७	पञ्चम	४९	शवपरा गर वस्ले आफ़्ताव न ख्वाहद।	ऽ।।ऽ ऽ।ऽ। ऽ।।ऽ ऽ
८	सप्तम	८३	दीद ए अहले तमअ व निअमते दुनिया।	ऽ।।ऽ ऽ।ऽ। ऽ।।ऽ ऽ
९	"	८९	चूँ सगे दरिन्दा गोश्त यापत न पुसद।	ऽ।।ऽ ऽ।ऽ। ऽ।।ऽ ऽ

९—बहरे रजज़

यह छन्द अप्टयतिक और षड्यतिक रूपों में मिलता है। यथा —

अप्टयतिक—

(१) मुफ्ताइलुन् मुफ्ताइलुन् मुफ्ताइलुन् मुफ्ताइलुन्
SS।S SS।S SS।S SS।S
त म य र त ग

(२) मुफ्तइलुन् मफाइलुन् मुफ्तइलुन् मफाइलुन्
S।।S ।S।S S।।S ।S।S
भ र य स ज ग

जब द्वितीय लक्षण के द्वितीय और चतुर्थ चरणों में से आदि लघु गिर जाता है तब इस छन्द का रूप बहरे मुन्सरिह के समान हो जाता है। यथा —

(३) मुफ्तइलुन् फाइलुन् मुफ्तइलुन् फाइलुन्
S।।S S।S S।।S S।S
भ त त य लग

षड्यतिक (मुसद्दस)—

(४) मुफ्ताइलुन् मुफ्ताइलुन् मुफ्ताइलुन् (क्वचित्—मफाइलुन्)
SS।S SS।S ।S।S SS।S
त म ज र त ग

रजज़	अध्याय	पद सख्या	पद	लक्षण
१	प्रथम	१४४	हर् कि रवद वर सरम् चूं तो पसन्दी रवा'स्त।	मुफ्तइलुन् फाइलुन् मुफ्तइलुन् फ़ाइलुन्
२	पञ्चम	४७	आं कि नवाते आरिजश् आवे हयात मीखुरद।	मुफ्तइलुन् मफाइलुन् मुफ्तइलुन् मफाइलुन्
३	"	१११–११२	मा मर्र मिन् जिक्रि'ल् हिमा वि मिस्मई।	मुफ्ताइलुन् मुफ्ताइलुन् मुफ्ताइलुन्
४	अष्टम	३३	दुश्मन चि वीनी नातवां लाफ अज़ वुरूते खुद म जन।	मुफ्ताइलुन् मुफ्ताइलुन् मुफ्ताइलुन् मुफ्ताइलुन्

१०—बहरे कामिल

यह अप्टयतिक छन्द है। यह हरिगीतिका छन्द के निकट है। बहरे तवील की अपेक्षा यह फारसी छन्दो के अधिक अनुकूल है। गुप्तजी ने अपनी भारतभारती इसी छन्द में लिखी है। इसका क्षण इस प्रकार है। यथा —

कामिल	अध्याय	पद सख्या	पद	लक्षण
१	भूमिका	१०–११	वलग'ल् उला नि कमालिहि।	।।S।S ।।S।S
२	द्वितीय	१६४	इज़्ा रायत व असीमन्—कुन् सातिरँव् व हलीमन्।	SS।S ।।SS
३	तृतीय	४७–४८	या लैत! वन्ल मनीयती—यौमन् अफूजु वि मुन्यती।	SS।S ।।S।S
४	"	५५	काल् अजीनु'ल् किल्सि लैस वि ताहिरिन्।	SS।S SS।S ।।S।S
५	"	९५	समई इला हुस्नि'ल् अगानी।	मुफ्ताइलुन् मुफ्ताइलुन् फा
६	"	१२३	मज् जा युहद्दिसुनी व मर्र'ल् ईसु।	SS।S ।।S।S SS।
७	चतुर्थ	१	वअखु'ल् अदावति ला यमुर्रु वि सालिहिन्।	।।S।S ।।S।S ।।S।S
८	पञ्चम	८१	जमउन् वि कल्वी ला यकादु युसीगुहू।	।।S।S SS।S ।।S।S
९	"	९५	इन् लम् अमुत् यौम'ल् विदाइ तास्सुफन्।	SS।S SS।S ।।S।S
१०	षष्ठ	२८	माज़'स्सिवा व'ईसैवु गय्यर नी।	SS।S SS।S ।।S

११—बहरे वाफिर

यह षड्यतिक (मुसद्दस) छन्द है। इसका लक्षण इस प्रकार है। यथा —

(१) मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
ISSS ISSS ISS
य र त गग

जब इसके 'ई' (गुरु) के स्थान पर दो ह्रस्व वर्णों का आदेश हो जाता है तब इसके लक्षण इस प्रकार हो जाते हैं —

(२) मफाइफलुन् मफाइफलुन् फऊलुन्
ISIIS ISIIS ISS
ज ज भ र ग

प्रतिपद लक्षण इस प्रकार हैं —

वाफिर	अध्याय	पदसंख्या	पद	लक्षण
१	प्रथम	३२–३३	गुज़ीत वि दरि'ना व निशात फी ना।	ISIIS ISIIS ISS
२	,,	८९	इज़ा शरि'न् कमिय्यु गयूलु वतुशा।	ISIIS ISIIS ISS
३	,,	१०७	अला ला तहज्ञनन्न अतु'ल् वलिय्यह्।	ISSS ISSS IS
४	,,	१६४	उअल्लिमहु'रिमायत कुल्ल-यौमिन्।	ISIIS ISIIS ISS
५	चतुर्थ	२२	रिज़ी ना मिन् नवालिक वि'रहीलि।	ISSS ISIIS ISS
६	,,	२५	इज़ा नह्'ल् खतीबु अनु'ल् फ़वारिस।	ISIIS ISIIS ISS

१२—बहरे बसीत

यह छन्द अष्टयतिक और षड्यतिक दोनों रूपों में प्रयुक्त होता है। हिन्दी में यह छन्द देवघनाक्षरी के नाम से विख्यात है। सात पदों में यह मुसद्दस (षड्यतिक) है और एक में मुसम्मन् (अष्टयतिक) है। इसका लक्षण इस प्रकार है —

अष्टयतिक—

(१) मुफ्ताइलुन् फ़इलुन् मुफ़्ताइलुन् फालुन्
SSIS IIS SSIS SS
त भ म य ग

(२) मफाइलुन् फाइलुन् मफाइलुन् फइलुन्
ISIS SIS ISIS IIS
ज त र ज लग

षड्यतिक—

(३) मुफ्ताइलुन् फाइलुन् फऊलुन्,
SSIS SIS ISS
त त र ग

बसीत	अध्याय	पदसंख्या	पद	लक्षण
१	द्वितीय	१५	इन् लम् अकुन् राकिब'ल् मवाशी।	SSIS SIS ISS
२	,,	९१	इन्नी लमुस्ततिरुन् मिन् ऐनें जीरानी।	SSIS IIS SSIS SS
३	,,	१०२–१०३	दानी चि गुफ्त मरा आं बुलबुले सहरी।	SSIS IIS SSIS IIS
४	तृतीय	२६	बि'सल मताइमु हीन'फ्जुल्ल यकसिबुहा।	SSIS IIS SSIS IIS
५	,,	४१	मा जा अखाजक या मग़रूर फ़ि'ल् खतरि।	SSIS IIS SSIS IIS
६	सप्तम	८८	मन् कान वैन यदैहि म'श्तहा रुतबन्।	SSIS IIS ISIS IIS
७	,,	९९	व राकिबातिन् नियाकन फी हवादिजिहा।	ISIS SIS SSIS IIS
८	अष्टम	२०९	या नाज़िरा फीहि सल् वि'ल्लाहि मरहमतन्।	SSIS SIS SSIS IIS

१३—बहरे तवील

यह अष्टयतिक (मुसम्मन्) छन्द गुलिस्तां मे अरबी पदो के लिये प्रयुक्त हुआ है। फारसी छन्दो की प्रकृति के अनुकूल न होने के कारण फारसी छन्दो के लिये इसका प्रयोग नही किया गया है। सांगो में जिस बहरे तवील का प्रयोग होता है वह इस बहरे तवील से भिन्न लगती है। इसका लक्षण इस प्रकार है —

(१) फऊलु मफाईलुन् फऊलुन् मफाइलुन्
।ऽ। ।ऽऽऽ ।ऽऽ ।ऽ।ऽ
ज य र र लग

(२) फऊलुन् मफाइलुन् फऊलु मफाईलुन्
।ऽऽ ।ऽ।ऽ ।ऽ। ।ऽऽऽ
य ज र र गग

इन्ही के व्यत्यय से इस छन्द के अनेक अवान्तर भेद बन जाते हैं। प्रतिपद लक्षण आगे दिये जा रहे हैं। यथा —

तवील	अध्याय	पद सख्या	पद	लक्षण
१	भूमिका	२६–२७	ल कद सइदु'द्दुनिया बिही दाम सादुह।	फऊलु मफाईलुन् फऊलुन् मफाइलुन्
२	प्रथम	२	इज़ा यइस'ल् इन्सानु ताल लिसानुहू।	फऊलु मफाईलुन् फऊलु मफाइलुन्
३	„	१२	अफ़ल्लु जिबालि'ल् अर्ज़े तूरुन् व इन्नहू।	फऊलु मफाईलुन् फऊलुन् मफाइलुन्
४	द्वितीय	३१	कुफीत अज़न या मन् तउद्दु महासिनी।	फ़ऊलु मफाईलुन् फऊलु मफाइलुन्
५	„	३५–३६	उशाहिदु मन् अह्वा बिग़ैरि वसीलतिन्।	फऊलु मफाईलुन् फऊलु मफाइलुन्
६	„	७१	नुहाजु इला सौति'ल् अग़ानी बि तीबिहा।	फऊलु मफाईलुन् फऊलुन् मफाइलुन्
७	„	१०४	व इन्द हुबूबि'न्नाशिराति अल'ल् हिमा।	फऊलु मफाईलुन् फऊलु मफ़ाइलुन्
८	पञ्चम	३०–३१	सरा तैफु मञ्यजलू बि तलअतिहि'द्दुजा।	फऊलुन् मफाईलुन् फऊलु मफाइलुन्
९	„	३६	इज़ा जेतनी फी रुफ्कतिन् लि तज़ूरनी।	फऊलुन् मफाईलुन् फऊलु मफाइलुन्
१०	„	५०	फक़'त्तु ज़मान'ल् वस्लि व'ल् मरउ जाहिलुन्।	फऊलु मफाईलुन् फऊलुन् मफाइलुन्
११	„	६२	व इन् सलिम'ल् इन्सानु मिन् सूये नफ्सिहि।	फऊलु मफाईलुन् फऊलुन् मफाइलुन्
१२	„	८६–८७	बुलीतु बि नहवियियिन् यसूलु मुग़ाज़िबन्।	फऊलु मफाईलुन् फऊलु मफाइलुन्
१३	„	१०६	व रुब्ब सदीकिन् लामनी फी विदादिहा।	फऊलु मफाईलुन् फऊलुन् मफाइलुन्
१४	अष्टम	११३	व कत्रा अला कत्रा इज़ा इत्तफक्त नह्रु।	फऊलु मफाईलुन् फ़ऊलुन् मफाइलुन्

शुद्धिपत्रम्

पृष्ठ	भाषा	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६	(स०)	५	शिरसा नम	च नमाम्यहम्
८	(स०)	२९	कञ्चन	किञ्चन
९	(फा०)	२४	طر	لط
३५	(लि०)	१२	वहरे हग्रज्	वहरे रजग्र
४२	(लि०)	११	उहदये	उहदए
„	(लि०)	१७	खुदावन्दीयश्	खुदावन्दीयश्
४३	(स०)	१०	स्यापितु	स्थापने
„	(स०)	१५	यश्चागस	यश्चागासि
४४	(लि०)	१७	शफीउन्	शफीउन्
„	(लि०)	१७	मुताउन्	मुताउन्
४५	(स०)	३	वामन्ती	वासन्तीं
„	(स०)	३	वीरुघ्	वीरुत्
„	(स०)	७	मधुनाऽपि	मधुनोऽपि
„	(स०)	२७	तमिस्रा	तमिस्र
„	(स०)	२९	भयासु	भूयासु
४६	(लि०)	१६	वदिल'ज	वेदिल'ज
„	(लि०)	२३	दरख्ते	दरख्ते
४७	(स०)	१३	राधितुमर्हसि	राधनमर्हसि
„	(स०)	१५	विज्ञातुमर्हसि	विज्ञानमर्हसि
४९	(स०)	५	ईशमन्विष्य	ईशमन्वेष
„	(स०)	२३	निर्विशेप	निर्विशेप
„	(स०)	२९	सर्वदोपेभ्यो	सर्वदोपैस्तु
५१	(स०)	३	लोष्ठ	लोष्ट
„	(स०)	६	नयमानोऽस्मि	नीयमानोऽस्मि
„	(स०)	७	लोष्ठ	लोष्ट
„	(स०)	८	अकिञ्चनास्मि	अकिञ्चन हि
„	(स०)	११	अनन्तनाम	अनन्तनामन्
५३	(स०)	२५	गतमायुप	गतमायुष्य
„	(स०)	„	वेश्मान	वेश्म
„	(स०)	१८	चतुष्टत्वानि	चतुस्तत्वानि
„	(स०)	२०	यतम	यतमत्
„	(स०)	२३	विश्वेऽस्मिन्	विश्वस्मिन्
५७	(स०)	४	वाक्यानि	वाक्य च
„	(स०)	२१	शक्नुते	शक्नोति
„	(स०)	२३	विरस्ये	विरस्यामि
५८	(लि०)	१	गुफ्तैम—रफ्तैम	गुफ्तैम्—रफ्तैम्
६१	(स०)	६	रुच्यै	रुच्चै
„	(स०)	२३	व्यसजत्	व्यसर्जयत्

पृष्ठ	भाषा	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६१	(स०)	२६	प्राणेपीय	प्राणेषि
६२	(लि०)	९	फरमयाद	फ़रमायद
६३	(स०)	२	जयिष्णो	जिष्णो
„	(स०)	३	मनुवशभूपण	मनुवशभूषण
„	(स०)	३	इस्लामगौरव	इस्लामगौरव
„	(स०)	४	ससागरा	ससागर
„	(स०)	२०	उन्नस्यति	उन्नमयिष्यति
„	(स०)	२५	प्रतीना	प्रतिना
६५	(स०)	९	मान चैव	मानश्चैव
„	(स०)	८	काय	कार्ये
„	(स०)	२२	देहत्यागोपरान्तेऽपि	जाते देहावसानेऽपि
„	(स०)	२४	चेटकी	चेटिका
„	(स०)	२८	मुदाहरन्नौच्यत	मुदाहरतौच्यत
६६	(लि०)	१८	जौहरियान	जौहरियान्
„	(लि०)	३०	नावीनायान	नावीनायान्
६७	(स०)	२	अम्याहरतीति	अभिव्याहरतीति
„	(स०)	१०	कुरु	तव
„	(स०)	११	श्रेयानितरै पशुभि	श्रेयान् पशुभ्यो मन्यते
„	(स०)	१५	अकिञ्चन	अकिञ्चन
„	(स०)	१७	मणकाश्च	मणिकाश्च
„	(स०)	„	विक्रेतानां	विक्रेतॄणा
६८	(लि०)	६	वुजुर्गान	वुजुर्गान्
„	(लि०)	१२	करदैम	करदैम्
६९	(स०)	१०	नोद्घाटितु	नोद्घाटयितु
„	(स०)	२८	वर्पस्य	वर्षाणा
„	(स०)	२८	पट्शतम्	पट्शते
७२	(लि०)	१४	मांद	मानद
७३	(स०)	१२	आक्रमते	आक्रामति
„	(स०)	२४	रुचिरतरैस्तस्मात्	रुचिरतर तस्मात्
७५	(स०)	३	यस्यानुकुरुते	यञ्चानुकुरुते
„	(स०)	१६	मृण्मय	मृन्मय
„	(स०)	२४	तथा निगरित	निगीर्णं हि तथा
७६	(लि०)	७	किहतर	किहृतर
७७	(हि०)	२६	सेनाऐ	सेनाऐं
„	(स०)	१२	सैपादृतश्चैव	सैप आदृतश्च
७९	(स०)	७	आचक्रमे	आचक्राम
„	(स०)	„	योद्धृश्च	योद्धृश्च
„	(स०)	„	सञ्जघान	जघान

चिह्न निर्देश—(स०) = सस्कृत, (लि०) = हिन्दी लिपीकरण, (हि०) = हिन्दी, (फा०) = फारसी।

शुद्धिपत्रम्

पृष्ठ	भाषा	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७९	(स०)	१५	गजमान	गजन्
,,	(स०)	२२	कृपयालुलोच	कृपयालुलोचे
,,	(स०)	२४	गवाक्षपट	गवाक्षपट्ट
,,	(स०)	३३	फलहो	फलह
,,	(स०)	३३	यथाह्न	यथाह्न
८७	(स०)	१६	सुमन	कुसुम
,,	(स०)	२३	प्रौढ़	प्रौढ
९३	(स०)	३२	अपराघ	अपराध
९४	(लि०)	२८	वदाए	वदाए
१०१	(स०)	८	वस्त्रण्यपि	वस्त्राण्यपि
,,	(स०)	१५	विद्वभिरय	विद्वद्भिरय
१११	(स०)	२५	उपतिष्ठति	उपतिष्ठते
११३	(स०)	२५	सत्तायामधिष्ठान्	वै सत्तामधिष्ठान्
११५	(स०)	२८	द्वाप्रतीहारौ	द्वप्रतीहारौ
११७	(स०)	४	पृथिव्यामुपविश्य	पृथिवीमुपविश्य
१२१	(स०)	२५	श्रेयान्सो	श्रेयासो
१३३	(स०)	८	नाभावतरित तद्धि	नाभावतीणमेतद्धि
१४३	(स०)	६	गृहस्थीयो	गृहस्थीय
१४९	(स०)	११	मूढचेता	मूढधीश्चा
,,	(स०)	२८	अघो	अहो
१५३	(स०)	१०	ज्यायान्स	ज्यायास
१५७	(स०)	१४	मुख	मुग्ध
१६१	(स०)	२०	सम्मान	सम्मानो
१६२	(स०)	२३	कपाल	पालक
१६७	(स०)	२८	हुताशनमाद्र	हुताशनं आद्र
१६९	(हि०)	४	निकट है	निकट हैं
,,	(स०)	८	केनाह्	कञ्चाह्
१७०	(लि०)	१८	फ़रमद	फरमूद
१७९	(स०)	५	क्वचिदञ्जलि	क्वचिद ञ्जलि
१८३	(स०)	५	पाठ्यते	पठ्यते
,,	(स०)	९	आदिनोदयात्	आदिनोदय
,,	(स०)	९	प्रार्थनाया	प्रार्थना
१८९	(स०)	१८	शैलजा	शैलजा
१९९	(हि०)	१५	जिसके	जिससे
,,	(स०)	२५	कपोलमिव	कपोल इव
२२८	(लि०)	१०	कूव्वत	कुव्वत
२२९	(हि०)	१०	पण्डित	पण्डित
२३३	(स०)	११	ह्वस्याना	ह्वा स्याना
२३५	(स०)	१८	भोज्य	भोज्य
२४७	(स०)	२४	भण्डार	भाण्डार
२५१	(हि०)	१०	स्वय	स्वय
२५१	(स०)	६	दानपर्माणि	दानकर्माणि
,,	(स०)	२४	मुद्धस्वैन	मुद्धस्वैनां
२५३	(हि०)	१५	फाड	फाड
२५७	(स०)	७	स्याहेतु	स्याहेतु
,,	(स०)	३२	य	य
,,	(स०)	३२	रोपयत्	रोपयेत्
२६१	(हि०)	९	क्यों	क्योंकि
२६३	(स०)	८	कर्त्तूं	कर्त्तुं
२६५	(स०)	११	वासे	वाससि
,,	(स०)	२८	तेतु	सेतु
२६७	(स०)	६	वाण	वाण
,,	(स०)	७	विनिष्क्रान्त	विनिष्क्रान्तम्
,,	(स०)	२३	किञ्चित्	कश्चित्
२६८	(लि०)	३	शरे	शेरे
२६९	(स०)	१७	कश्चन	किञ्चन
,,	(स०)	२१	सम्भाव्यत	सम्भाव्यते
२७०	(लि०)	२०	इआतद	इआदत
२७५	(हि०)	१३	उपया	उपाय
,,	(स०)	१८	कस्मिश्चित्	कस्याचित्
२७७	(स०)	७	सम्भूता	सम्भूत
,,	(स०)	७	सम्भवाम्	सम्भवम्
२८३	(स०)	१७	पयन्ताद्	पर्यन्त
२८५	(स०)	१५	कश्चिद्	किञ्चिद्
२८७	(स०)	६	अभद्रेण	अभद्राय
२९८	(हि०)	३०	जजव	अजव
३०२	(लि०)	२९	व सेन	वसे न
३०३	(स०)	१०	सन्निवेश्य	सन्निवेशय
,,	(स०)	२१	यया	यस्यात्
,,	(स०)	२४	मिश्रै	मिश्रै
३०५	(स०)	७	सादि।	सादिन्।
,,	(स०)	५	त्वगेय	त्वचमेका
३०६	(लि०)	१५	बहूरे हुज्ज्	बहूरे रजज्
३०८	(लि०)	२७	व रन	वर न
३०९	(स०)	२५	शान्त हुताशनम्	शान्तो हुताशन
३१०	(लि०)	२१	जागे	जागे
,,	(लि०)	२४	गुराव	गुराव
३१३	(स०)	१८	उद्धत	उद्धृत
३१५	(स०)	१५	सा धुरिति	साधुरिति
३१६	(लि०)	१७	जसाहत	फसाहत
३१७	(हि०)	८	तेरा	तुझे
३२१	(स०)	७	ज्यायान्स	ज्यायास

चिह्न निर्देश—(स०) = संस्कृत, (लि०) = हिन्दी लिपीकरण, (हि०) = हिन्दी, (फा०) = फारसी।

शुद्धिपत्रम्

पृष्ठ	भाषा	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३२१	(स०)	२१	मयी युक्ते	मयीत्युक्ते
३२७	(स०)	४	एप	एप
,,	(स०)	७	घृणास्पदा	घृणास्पद
३२८	(लि०)	३०	वह्रे मुज्तश्	वह्रे हज़ज्
३२९	(स०)	३३	स्मृता	स्मृता
३३१	(म०)	१०	पुण्यपन्था	पुण्यपथ
३३३	(म०)	३२	मणिमिति	मणिरिति
३३५	(स०)	२४	प्रायश्चित्तोऽपि	प्रायश्चित्तमपि
,,	(स०)	२५	निष्फल	निष्फलम्
३४५	(स०)	१३	वाण	वाण
,,	(स०)	१७	गृहान्निवर्तन्ते	गृहात् प्रवर्तन्ते
,,	(स०)	२३	ह्येपो	ह्येप
३४६	(लि०)	२०	वह्रे खफीफ	वह्रे हज़ज्
३५१	(स०)	३	जरायुपा	जरायुप
,,	(स०)	४	विनिर्गतश्चापो	विनिर्गताश्चापो
,,	(स०)	३०	नीरोग	नीरुज
३५७	(स०)	२५	तस्य नो जायते	न जातु कुरुते
,,	(स०)	२५	चिन्ता	चिन्ता
३६१	(स०)	१९	उपाध्यायाय	उपाध्यायस्य
३६५	(हि०)	२७	पत्ते झडाता	फल लुटाता
,,	(स०)	,,	पर्णं च पातयेत्	नित्य देदीयते फलम्
३७३	(स०)	२२	लज्जास्पदो	लज्जास्पद
३७९	(स०)	१७	समाधिस्तावद्	समाधिशय्या तु
३८५	(स०)	११	तदा	सदा
३९५	(स०)	२६	देवदार्वपि	देवदारुरपि
३९६	(लि०)	२४	मुज़फ्फरुद्दनिया	मुज़फ्फरुद्दुनिया
४०३	(स०)	१७	नु वाह्यन्ते	समूह्यन्ते
४०५	(स०)	४	यतरा	यावन्तो
४०७	(स०)	२६	क्षोदीयान्स	क्षोदीयास
,,	(स०)	२९	उद्वुद्धचन्नल	उद्वुद्धयन्ननल
,,	(स०)	३२	सृष्ट वाण	सृष्टो वाणस्
४०८	(हि०)	३	व	वे
४१०	(लि०)	३१	वह्रे हज़ज्	वह्रे रजज़
४१३	(स०)	१०	पण्डित	पण्डित।
४१९	(हि०)	१३	समस्त	समस्त
४२५	(स०)	२१	लोष्ठ	लोष्ट
,,	(स०)	२६	का सीमा	का सीमा
४३१	(स०)	८	पुनरुज्जीवितु	समुज्जीवयितु
४३७	(स०)	१२	लज्जास्पदपदता	लज्जास्पदता
४३८	(लि०)	१४	वह्रे हज़ज्	वह्रे खफीफ
४४२	(लि०)	३०	उज्व	उज्व
४४९	(स०)	२९	वैदुष्य	वैदुष्य
४५५	(स०)	१३	न्यायकाल	न्यायकाले
,,	(स०)	१६	आगस	वृजिन
४५७	(स०)	६	भक्तेम्यो	भक्तेभ्य
४६३	(स०)	२४	व्रह्मनिष्ठश्च	ब्रह्मनिष्ठश्च

चिह्न निर्देश—(स०) = संस्कृत, (लि०) = हिन्दी लिपीकरण, (हि०) = हिन्दी, (फा०) = फारसी।

بیت

هرچه رود بر سرم - چون تو پسندی - رواست
بنده چه دعوی کند؟ حکم خداوند راست *

اما بموجب آن که پروردهٔ نعمت این خاندانم - نخواهم که در قیامت خون من گرفتار آیی - اگر بنده‌را خواهی کشت - باری بتاویل شرعی بکش - تا بقیامت ماخوذ نباشی * گفت - تاویل چه گونه کنم؟ گفت - اجازت ده تا من وزیررا بکشم - آنگه بقصاص کشتن بفرما - تا بحق کشته باشی * ملک بخندید و وزیررا گفت - چه مصلحت می بینی؟ گفت - ای خداوند! این شوخ دیده‌را بصدقهٔ گور پدرت آزاد کن - تا مرا هم در بلا نیفگند! گناه از منست - که قول حکما معتبر نداشتم - که گفته اند -

قطعه

چو کردی با کلوخ انداز پیکار
سر خودرا بنادانی شکستی *
چو تیر انداختی بر روی دشمن
حذر کن کاندر آماجش نشستی!

حکایت ۲۵

ملک زوزن‌را خواجهٔ بود کریم النفس و نیک محضر - که همگنان‌را در مواجهه حرمت داشتی و در غیبت نیکو گفتی * اتفاقاً از وی حرکتی صادر شد که در نظر سلطان ناپسندیده آمد * مصادره فرمود و عقوبت کرد * سرهنگان پادشاه بسوابق انعام معترف بودند - و بشکر آن مرتهن - در مدت توکیل او رفق و ملاطفت کردندی و زجر و معاقبت روا نداشتندی *

قطعه

صلح با دشمن خود کن - وگرت روزی او
در قفا عیب کند در نظرش تحسین کن *
سخن آخر بدهان میگذرد موذی‌را
سخنش تلخ نخواهی - دهنش شیرین کن *

बैत (बहरे हज़ज्)

हर कि रवद बर सरम् चूं तो पसन्दी रवा'स्त।
बन्दा चि दअवा कुनद? हुक्मे ख़ुदावन्द रास्त॥

अम्मा ब मूजिबे आं कि परवर्दाए निअमते ईं ख़ानदानम् न ख़्वाहम् कि दर क़यामत ब ख़ूने मन गिरिफ़्तार आयी। अगर बेगुनाह बन्दा रा ख़्वाही कुश्त—बारे ब तावीले शरई बुकुश—ता ब क़यामत माख़ूज़ न बाशी। गुफ़्त—'तावील चिगूना कुनम्?' गुफ़्त—'इजाज़त दिह ता मन् वज़ीर रा बिकुशम्—आँगह ब क़िसासे ऊ कुश्तन् बिफ़र्मा—ता बहक़्क़ कुश्ता बाशी।' मलिक बिख़न्दीद व वज़ीर रा गुफ़्त—'चि मस्लहत मी बीनी?' गुफ़्त—'ऐ ख़ुदावन्द ईं शोख़ दीदा रा बसद्क़ाए गोरे पिदरत आज़ाद कुन—ता मरा हम दर बला नयफ़्गनद। गुनाह अज़ मन'स्त कि क़ौले हुकमा रा मोतबिर न दाश्तम् कि गुफ़्ता अन्द—

क़ता (बहरे हज़ज्)

चु कर्दी बा कुलूख़ अन्दाज़ पैकार।
सरे ख़ुद रा ब नादानी शिकस्ती॥
चु तीर अन्दाख़्ती बर रूए दुश्मन।
हिज़र कुन कांदर आमाजश् निशस्ती॥'

हिकायत—२५

मलिके ज़ौज़न रा ख़्वाजाए बूद करीमु'न्नफ़्स व नेक महज़र कि हमगिनान् रा दर मुवाजहा हुरमत दाश्ते व दर ग़ैबत निकू गुफ़्ते। इत्तिफ़ाक़न् अज़ वै हरकते सादिर शुद कि दर नज़रे सुल्तान नापसन्दीदा आमद। मुसादरा फ़रमूद व उक़ूबत कर्द। सरहंगाने पादशाह ब सवाबिक़े इनआम मुअतरिफ़ बूदन्द—व ब शुक्रे आं मुर्तहन—दर मुद्दते तौकीले ऊ रिफ़्क़ व मुलातफ़त कर्दन्दे व ज़जर व मआक़बत रवा न दाश्तन्दे।

क़ता (बहरे रमल)

सुल्ह बा दुश्मने ख़ुद कुन् वगरत रोज़े ऊ।
दर क़फ़ा ऐब कुनद—दर नज़रश् तहसीं कुन्॥
सुख़न आख़िर ब दहां मी गुज़रद मूज़ी रा।
सुख़नश् तल्ख़ न ख़्वाही—दहनश् शीरीं कुन्॥

बैंत

'मेरे सिर पर जो भी गुजरे यदि तुझे पसन्द है तो ठीक है।
दास क्या दावा कर सकता है? स्वामी की आज्ञा ठीक है।।

किन्तु, इस कारण कि, मैं इसी परिवार की कृपा से पला हूँ, मैं नही चाहता कि प्रलय के दिन मेरी हत्या (के अपराध) मे तू पकडा जाय। यदि तू निरपराध दास को मारना चाहे तो धार्मिक विधान से मार ताकि क़यामत के दिन तू दण्डित न हो।' उसने कहा—'विधान पूर्त्ति कैसे करूँ?' वह बोला—'आज्ञा दे ताकि मैं मत्री को मार दूँ। तब उसके बदले मे (मेरे) मारने की आज्ञा दे ताकि तू भी न्यायपूर्वक मारा जाय।' राजा हँस पडा और मत्री से बोला—'तू क्या उचित समझता है?' वह बोला—'हे स्वामी! इस निर्लज्ज को अपने पिता की क़ब्र के सदक़े में मुक्त कर—ताकि यह मुझे भी बला में न डाले। दोष मेरा ही है क्योंकि मैंने पण्डितो के इस वाक्य का विश्वास नही किया जैसा कि वह गये है—

क़ता

अगर करोगे पत्थर फेंकने वाले से लडाई।
अपने सिर को नादानी से तुडवा लोगे।।
यदि तुम तीर फेंकते हो दुश्मन की ओर।
सावधान कि (तुम भी) उसके निशाने में बैठे हो।।'

कथा—२५

जौजन के राजा के एक अधिकारी था, दयालु और सदाचारी (ऐसा) कि साथियो का सामने आदर करता था और पीठ पीछे प्रशसा करता था। सयोग से उससे कुछ ऐसी हरकत हो गई जो कि राजा की नजरो को नापसन्द लगी। (राजा ने) अर्थ दण्ड की आज्ञा दी और दण्ड दिया। राजा के अधिकारी (उसके) पुराने उपकार मानते थे और उसकी कृतज्ञता से बँधे थे। उसके बन्धन काल मे (वे उससे) शिष्टता और नम्रता से व्यवहार करते रहे और डाँट और फटकार नही करते थे।

क़ता

अपने शत्रु से सन्धि कर—और यदि तुझे (वह) किसी दिन।
पीठ पीछे बुरा कहे तो उसके सामने उसकी बडाई कर।।
शब्द आखिर मुँह से निकलेंगे ही मूजी के।
उसके वचन यदि तू कडवे न चाहे तो उसका मुँह मीठा कर।।

श्लोक

यदुदति कपाले मे युक्त ते यदि गचते।
दास किं प्रभनेद् वचनु प्रभोराज्ञा हि साम्प्रतम्।। १८८।।

किन्तु यतस्तवान्वयवशानुग्रहेण परिवर्धितोऽस्मि, अतः [illegible] प्रलयकाले न त्वं निगडितः स्याः। यदि मां निरपराधं दासं हन्तुमिच्छसि तर्हि धर्मविहितेन मार्गेण हन्या यत परलोके दण्डितो न [illegible]। सोऽवदत्—'कथं धर्मविहितं कुर्याम्?' स ब्रूते—'आज्ञापय, यतोऽहमेनं मन्त्रिणं हन्याम्। तदा तस्यापराधेन मां जहि, यत स्त्वमपि न्यायतो हन्यसे!' राजा जहास मन्त्रिणमुवाच च—'उदारा किं साम्प्रतमिति?' सोऽवदत्—'हे नाथ! निर्लज्जमेनं स्वर्गताय पित्रे विसृज, यावन् न मामपि विपत्तौ पातयेदिति। दोषस्तावत् मामकीन एव, यदहं पण्डितानां सूक्तावप्रतीत आसं यथाहु —

पदम्

लोष्ठखण्डमुचा नार्थ युद्धं यदि समाचरे।
अज्ञानेन शिर स्वस्य भङ्क्तुमुत्सहसे स्वयम्।। [illegible]।।
शत्रुमुद्दिश्य बाण चेदुत्सृजेद्विषत प्रति।
त्वमप्येतस्य द्विषतो बाणसीमा प्रतिष्ठसे।। [illegible]।।

आख्यायितम्—२५

आसीदथ जौजननरेशस्य कश्चिदन्त पुराधिकारी—[illegible]।। सदय सदाचारी च। समकक्षाणामग्रे तेषामादरं कुर्वन् [illegible] च प्रशसाशीलश्च। दैवयोगात् तेन कश्चिदपराध कृतो यश्चानभिमतो राज्ञो बभूव। स तमर्थदण्डमादिदेश बन्धने च पातितवानपि। राजसैनिकास्तस्य पूर्वानुग्रहग्रहीता उपकारपाशबद्धाश्चासन्। तस्य बन्धनकाले ते शिष्टतया नम्रतया च व्यवजह्रु, [illegible] चाविहित वृत्त्वेति।

पदम्

कुर्वीथा द्विषता सन्धि यस्मिंश्चिद् दिवसे स चेत्।
कुत्सयेत परोक्षे त्वा त्व तस्याग्रे प्रशस तम्।। १०७।।
वाग्वज्र दुर्जनस्यास्यादवश्य भविता स्फुटम्।
नेच्छेश्चेत् कटुवाक्य त मधुरास्य विधेहि तम्।। १०८।।

पडोस के राजाओ में से एक ने गुप्त रूप मे उसको सन्देश भेजा कि—'उधर के (आपके) राजा ने आपके जैसे आदरणीय की महत्ता नही समझी और अपमान किया। यदि ऐसे श्रेष्ठ पुरुष की चित्त वृत्ति—(परमेश्वर उसके अजाम को समृद्ध करे) हमारी ओर कृपा करे तो उनके चित्त की प्रसन्नता के लिये हर एक पूरा पूरा प्रयत्न किया जायगा। इस राज्य के सामन्तगण उनके (आपके) दर्शनो के लिये उत्सुक है। और इन अक्षरो के उत्तर की प्रतीक्षा में है।' अधिकारी को इसकी सूचना हुई और वह खतरे से डरा। उसने तुरन्त ही सक्षिप्त उत्तर—जैसा कि ठीक समझा—कि यदि प्रकट हो जाय तो बखेडा न हो, पत्र के पीछे लिख दिया और रवाना कर दिया। दरबारियो में से एक ने—जो कि इस सब से परिचित था—राजा को सूचना दे दी कि अमुक व्यक्ति, कि जिसको आपने कारादण्ड दिया है, पडोस के राजाओं से पत्राचार रखता है। राजा कुपित हो गया और इस खबर की जांच की आज्ञा दी। पत्रवाहक पकडा गया और पत्र पढ़ा गया। लिखा था—'(आप) महानुभावो की शुभ सम्मति इस दास के प्रति दास के गुणो से अधिक है, और वह गौरव जो कि आपने फरमाया है—इस सेवक की स्वीकृति की सामर्थ्य में नही है। क्योकि मैं इसी वश की कृपाओं से पला हुआ हूँ। और थोडीसी अप्रसन्नता के कारण पूर्वोपकारी के साथ बेवफाई नही कर सकता—जैसा कि कहा है—

अथ तत्रत्य कश्चिद् राजा गुप्तरूपेण तं सन्देशं प्राहिणोदथ—'तत्र नरेशस्त्वादृशस्यादरणीयस्यादरं मानं च न वेदापमानं च कृतवानिति। यदि त्वादृशस्य नरोत्तमस्य चित्तवृत्ति (महाप्रभु पुण्यपत्तनं वर्धयतु)—अस्मासु सदया भवेत्तर्हि तस्याः प्रसादाय पूर्ण-भावेन प्रयत्नः करिष्यते। अस्य राज्यस्य सामन्ता तव दर्शनाय पत्रोत्तरप्राप्त्यै प्रवृद्धोत्सुक्यास्चेति।' अथाधिकारी चैतदविज्ञाय सशयमापन्न। अमा सक्षेपेण औचित्यपुरस्सर, सत्वरेदेऽपि निरापद प्रत्युत्तर प्राप्तपत्रस्य पृष्ठभागे लिखित्वा प्राहिणोत्। अथ कश्चित् पारिषद यस्तत् सर्वं वेद राजानं विज्ञापितवानथामुको जनोऽत्र त्वया कारागारे निक्षिप्तोऽन्यतरैर्नरेशैः पत्राचारं कुरुते। राजा कोप गत्वादन्तस्यास्य तथ्यान्वेषणार्थमादिदेश। अथ राजपुरुषै पत्र-वाहकः गृहीत पत्र पाठितञ्च। लिखितमासीदथ—'तत्रभवतां दासं प्रति शुभसम्मतिरस्य दासस्य गुणानतिशेते। सामर्थ्या-वर्त्तु यच्च प्रस्तावित भवद्भिस्तत् नैवरस्यास्य सामर्थ्यमस्त्येति च। यतोऽहमनेनैव राजकुलस्यान्वयागतानुग्रहेण परिपालितोऽस्मि, अल्पीयस्याऽप्रसन्नतया च पूर्वोपकारिणमवमन्तुमक्षमोऽस्मीति।'

यत आहु —

बैत

जिसकी कि तेरे ऊपर है प्रतिक्षण कृपाएँ।
उसका अपराध क्षमा कर यदि करे जीवन में एक बार।।'

राजा को उसकी हक़ शनासी का गुण पसन्द आया और उसे वस्त्रोपहार और धन दिया। और अपराध की क्षमा माँगी कि मैंने अपराध किया कि तुझ बेगुनाह को सताया। उसने कहा—'हे स्वामी! दास इस अवस्था में भी स्वामी का दोष नही देखता, बल्कि परमात्मा की नियति ऐसी ही थी कि इस दास को ऐसा ही कष्ट पहुँचे—अत आपके हाथ से यह अधिक ठीक था क्योंकि आप पहली कृपाओ का अधिकार और उपकारो का एहसान इस दास पर रखते थे, क्योकि पण्डितो ने कहा है—

श्लोक

त्वयि यश्च सदा प्रीत दयावुद्धयैव वर्तते।
तस्य दोषो हि क्षन्तव्य म्रियते यदि चैकदा।। १४६ ।।

राजा तस्याविचलितनिष्ठा विज्ञाय प्रीत सञ्जात। तस्मै वासं प्राभृत धन च ददौ। क्षमा च ययाचे स्वस्यापराधस्याथ—'मया-ऽपराद्ध यत्त्वा निरपराध पीडितवानहम्।' सोऽवदत्—'हे नाथ! अयं दासोऽस्यामवस्थायामपि स्वामिनो दोष न पश्यति। यत एवमेवाऽऽसीद्धि दैवेच्छा यदयं दास कष्ट प्राप्नुयादिति। तस्मादिदं त्वत्तोऽनुप्राप्त भद्रतर मन्ये यतोऽत्रभवान् पूर्वोपकारपरम्परया प्रभवति दासजने।'

यथाहु पण्डिता —

مثنوی

گر گزندت رسد ز خلق مرنج
که نه راحت رسد ز خلق نه رنج
از خدا دان خلاف دشمن و دوست
که دل هر دو در تصرف اوست
گرچه تیر از کمان همی گذرد
از کماندار بیند اهل خرد

حکایت ۲۶

یکی از ملوک عرب را شنیدم ـ که ... ـ فرمود ـ که مرسوم فلانرا ـ چندانکه هست ـ مضاعف کنید ـ که ملازم درگاه است و مترصد فرمان ـ و دیگر خدمتکاران بلهو و لعب مشغول ـ و در ادای خدمت متهاون • صاحبدلی بشنید ـ فریاد و خروش از نهادش بر آمد • پرسیدندش ـ که چه دیدی؟ گفت ـ درجات بندگان بدرگاه حق جل و علا همین مثال دارد •

نظم

دو بامداد گر آید کسی بخدمت شاه
سوم هر آینه در وی کند بلطف نگاه
امید هست پرستندگان مخلص را
که نا امید نگردند ز آستان اله •

مثنوی

مهتری در قبول فرمانست
ترک فرمان دلیل حرمانست •
هر که سیمای راستان دارد
سر خدمت بر آستان دارد

حکایت ۲۷

ظالمی را حکایت کنند ـ که هیزم درویشان خریدی ـ و توانگران را دادی بحیف ـ صاحبدلی بر او گذر کرد و گفت ـ

मसनवी (वहरे ख़फीफ)

गर गजन्दत रसद जि ख़ल्क़ मरंज।
कि नै राहत रसद जि ख़ल्क़ नै रंज॥
अज खुदा दाँ ख़िलाफ़े दुश्मनो दोस्त।
कि दिले हर दु दर तसर्रुफ़े ओस्त॥
गर्चे तीर अज कमाँ हमी गुज़रद।
अज कमाँदार बीनद अहले ख़िरद॥

हिकायत—२६

यके अज मुलूके अरब रा शुनीदम्—कि बा मुतअल्लिक़ाने दीवान फ़रमूद—कि मरसूमे फ़ुलाँ रा चन्दाँकि हस्त—मुज़ाअफ़ कुनेद—कि मुलाज़िमे दरगाह अस्त व मुतरस्सिदे फ़रमान—व साइरे ख़िदमतगारान् ब लह्व व लअब मशगूलन्द व दर अदाये ख़िदमत मुतहाविन। साहिबदिले बिशुनीद। फ़रियाद व ख़रोश अज निहादश् बर आमद। पुरसीदन्दश् कि चि दीदी? गुफ़्त—'दरजाते बन्दगान् ब दरगाहे हक़्क़ जल्ल व अला हमी मिसाल दारद।'

नज़्म (वहरे मुज्तस्)

दु बामदाद गर आयद कसे ब ख़िदमते शाह।
सिवुम् हर आईना दर वै कुनद ब लुत्फ़ निगाह॥
उमीद हस्त परस्तन्दगाने मुख़्लिस रा।
कि नाउमीद न गर्दन्द ज़ आस्ताने इलाह॥

मसनवी (वहरे ख़फीफ)

मिहतरी दर क़बूले फ़रमान'स्त।
तर्के फ़रमाँ दलीले हिरमान'स्त॥
हर कि सीमाये रास्ताँ दारद।
सरे ख़िदमत बर आस्ताँ दारद॥

हिकायत—२७

ज़ालिमे रा हिकायत कुनन्द—कि हेज़मे दरवेशाँ ख़रीदे व हैफ़—व तवाँगराँ रा दादे ब हैफ़। साहिबदिले बर ऊ गुज़र कर्द व गुफ़्त—

मसनवी

यदि तुझे कष्ट पहुचे लोगों से तो रज मत करे।
क्योंकि न राहत मिलती है लोगों से न रज॥
परमात्मा की ओर से जान शत्रु और मित्र की चेष्टाए।
क्योंकि उन दोनो का दिल उसी के अधिकार मे ह॥
यद्यपि वाण धनुष से निकलता है।
(पर) बुद्धिमान् उसे धनुर्धारी से आया मानते हैं॥

गाथा

कष्ट चेल्लभ्यते लोकैस्त्वया तदनु मा शुच।
न सुखानि न दुःखानि लोकैर्लभ्यानि सर्वथा॥ १७०॥
चेष्टित मित्रशत्रूणामवेहि परमात्मन।
तेनैवाधिष्ठिते नित्य मनसी च तयोर्द्वयो॥ १७१॥
अपि चेद् दृश्यते नित्य धनुषो मुच्यते शर।
तथापि प्राज्ञो जानाति विसृष्ट त धनुष्मता॥ १७२॥

कथा—२६

अरव के राजाओ में से एक के विषय में मैंने सुना है कि उसने कोष के अधिकारियों को आज्ञा दी कि अमुक का वेतन—वह जो भी हो—दुगुना कर दो, क्योंकि वह दरवार मे मुलाजिम (अनिवार्य) है, और आदेश के प्रति सजग है। और सारे सेवक विनोद और क्रीडा में व्यस्त रहते है और सेवा में प्रमाद करते है।'

एक भक्त ने यह सुना। प्रार्थना और चीत्कार उसके भीतर से निकली।

उससे पूछा कि—'क्या देख लिया तूने?' उसने कहा—'सेवकों की कोटि में वृद्धि परमेश्वर के दरवार मे भी इसी प्रकार होती है।'

आख्यायितम्—२६

श्रुतवानस्मि कश्चिदारव्यनरेश स्वस्य कोषाधिकारिण आदिदेशाथ 'अमुकस्य वृत्ति द्विगुणिता कुरु। यत स राजद्वारस्य सेवक, आज्ञा पालनतत्परश्च वर्तते। अन्ये सेवका विनोदन क्रीडया च काल यापयन्ति सेवाया प्रमादिनश्चति।' अथ कश्चिद्भक्त इद श्रुत्वा हाहेति कृत्वा ररास। तावास्त पप्रच्छुरस्य 'कि दृष्टवानसि?' सोऽवदत्—'ईश्वर भजमानाना वृद्धिभवति चेदृशी॥ २८॥'

नज़्म

दो प्रभात तक यदि जायें आदमी राजा की सेवा में।
तीसरे दिन अवश्य ही उस पर करता है वह कृपा दृष्टि॥
आशा है सच्चे सेवको को।
कि निराश न होगे प्रभु की देहली से॥

गाथा

द्विप्रभात हि सेवाया राज्ञा याति जनो यदि।
तृतीयेऽह्नि ह्यवश्य त राजा प्रेम्णाऽनुप्रेक्षते॥ १७३॥
आशास्ते प्रभोर्भक्ता सत्यभक्तिपरायणा।
नायाभङ्गान्निवर्तन्ते तत्सकाशाद्धि सात्त्वता॥ १७४॥

मसनवी

वडप्पन आज्ञा पालन मे है।
आज्ञा का उल्लघन दुर्भाग्य का कारण है॥
जो भी सच्चो का लक्षण रखता है।
वह सेवा में सिर देहली पर टेकता है॥

गाथा

महत्ता लभ्यतेऽनुज्ञापालनात्परमात्मन।
अवज्ञा परमेशस्य दौर्भाग्य जनयेत्सदा॥ १७५॥
यश्चापि सत्यसत्त्वाना लक्षण दधाति हि।
सेवाया मस्तक स्वस्य प्रभोरग्रे दधाति स॥ १७६॥

कथा—२७

एक अत्याचारी की कथा कही जाती है कि वह गरीबों का ईंधन खरीदता था वलात् और धनियों को देता था लाभ से। एक भक्त उधर से गुज़रा और वोला—

आख्यायितम्—२७

कस्यचिदत्याचारिण कथाऽनुश्रूयते—स निरुपायानामिन्धन बला त्कृत्य क्रीणाति स्म सम्पन्नेषु तदेवातिलाभेन विक्रीणीते च। केनचिद्भक्तेन ततो गच्छतोक्तम्—

बैत

या तू साप ह कि हर किसी को देखते ही डसता है।
या उल्लू ह कि जहां भी बैठता है उजाडता है॥

श्लोक

सर्पोऽसि प्राणिदर्शं दंदश्यसे सहसा समम्।
अथवा किमुलूकोऽसि यत्रास्ते तस्य नाशकृत्॥१५७॥

क़ता

तेरा जोर यदि चल जाय हम जैसो के सामने।
सवज्ञ प्रभु के सामने नही चलेगा॥
शक्ति से मत दवा धरती वालो को।
ताकि उनकी वद दुआ आसमान तक न जाय॥

अत्याचारी इस बात से चिढ़ गया—और उसके उपदेश से मुँह सेकोड लिया और उस पर ध्यान न दिया।

'पकडता है अभिमान उसको पाप पर।' यहाँ तक कि एक रात को रसोई घर की चिनगारी इंधन के ढेर पर आ पडी और उसके सारे वैभव को जला दिया और वह नम विस्तर से गम भूभल मे आ पडा। सयोग से वही व्यक्ति उधर से आ निकला। उसे (ज़ालिम को) देखा कि मित्रा से कह रहा था—'न जाने यह आग कहाँ से मेरे घर में आ लगी।' उसने (भक्त ने) कहा—'गरीवो के दिल के धुएँ से।'

पदम्

वल तेऽस्मादृशाश्चेद्धि अल भवति पीडने।
सवज्ञस्य प्रभोरग्रे न तच्छक्नोति किञ्चन॥१५८॥
मा कृथास्त्वमनाचार पृथ्वीतलनिवासिषु।
येनार्तना हि चीत्कारो न व्याप्नोतु नभस्तलम्॥१५९॥

अत्याचारी चैतच्छ्रुत्वाऽप्रसन्न सञ्जात, उपदेशात्पराङ्मुख सवृत्तश्च।

'अभिमाना हि पाप्मान पापाध्वनि प्रवर्तयेत्।' अथैकदा दोषाऽस्य महानसाग्निस्फुलिङ्गोऽस्येन्धनपुञ्जे पपात। सर्वं चैतस्य सञ्चित धन ददाह। स च मसृणविष्टरात्प्रतप्तभूमावुपापतत्। दैवयोगेन स एव भक्तस्तत आजगाम ददर्श चैन मित्रै साहासीन ब्रुवन्त च—'न जानामि कुतश्चाग्निमम वेश्मनि चापतत्।' भक्तोऽवदत्—'दीनाना दह्यमानाना दु खधूमायिताद्धृद॥१६॥'

क़ता

घायल दिलो के धुएँ से सावधान रह।
कि भीतर का घाव आखिर फूट निकलता है॥
किसी दिल को मत उखाड जब तक तू सके।
क्योकि एक आह एक दुनिया को उखाड सकती है॥

यह लतीफा (निम्नाकित) कैखुसरो के महल पर लिखा हुआ था।

पदम्

शान्तममक्षतार्तेस्तु हेतुर्भूस्त्व कदाचन।
अन्तगमव्रण यस्मादन्तन स्फुटति ध्रुवम्॥१६०॥
मा पिपीडो यथाशक्ति कस्यचिद्धृदय क्वचित्।
यत आतस्य चीत्कार कृत्स्न विश्व विनाशयेत्॥१६१॥

इद सूक्त कैखुसरवस्य हर्म्ये लिखितमासीत्—

क़ता

कितने ही विशाल वर्षो तक और लम्बे आयुष्यो तक।
लोग हमारे सिर रौदते हुए धरती पर चलते रहेंगे॥
जैसे कि हाथो हाथ आया है राज्य हम तक।
वैसे ही हाथो हाथ चला भी जायगा॥

पदम्

कति वर्षाणि पयन्तादायूपि कति वा पुन।
लोको मम शिर पादैर्दलित्वा सञ्चरिष्यति॥१६२॥
हस्ताद्धस्त यथा सापत् प्राप्त राज्यमिद मयि।
हस्तमन्यत् तथा सपन्मत्तोऽपि सङ्क्रमिष्यति॥१६३॥

कथा—२८

एक आदमी मल्लविद्या में चोटी पर पहुँच गया था कि ३६० दाँव पेंच इस विद्या में जानता था, और हर रोज नये दाँव से कुश्ती लडता था। किन्तु उसका ध्यान एक शिष्य के गुण में लगा हुआ था। तीन सौ उनसठ दाँव उसको सिखा दिये, सिवा एक दाँव के, कि जिसके सिखाने में वह टाल मटोल और देर-दार करता रहा।

आख्यायितम्—२८

कश्चिज्जनो मल्लविद्याया सर्वोच्चपदं प्राप। स पष्ट्युत्तर त्रिशत घातान् वेद। तथा च प्रत्यह नूतनया कलया मल्लयुद्ध मकरोत्। नन्वस्य चित्तवृत्ति शिष्येष्वेकतमस्य रूपगुणप्रकर्षे प्रवृत्ताऽऽसीत्। स एनमेकोनषष्ट्युत्तरत्रिशत मल्लव्यूहान् शिक्षायितवान् नानैकं यस्य च शिक्षणे स बहुलेन विलम्बव्यपदेश च

बिरपत—वफ़ाए नअ्रश् व वुजूर लाज़िम आमद। यके रा अज बन्दगाने खास कीसाए दिरम दाद ता ब ज़ाहिदाँ नफ़क़ा कुनद। आवुर्दा अन्द कि गुलाम हुशियार बूद। हमा रोज़ बिगर्दीद व शबगाह बाज़ आमद व दिरमहा बोसा दाद व पेशे मलिक बनिहाद व गुफ़्त—'चन्दाँ कि ज़ाहिदाँ रा जुस्तम् न याफ़्तम्।' मलिक गुफ़्त—'ईं चि हिकायत'स्त? आँ चि मन् दानम् दर ईं शहर चहार सद ज़ाहिद'स्त।' गुफ़्त—'ऐ ख़ुदावन्दे जहान! आँ कि ज़ाहिद'स्त ज़र न मी सितानद—व आँ कि ज़र मी सितानद ज़ाहिद नेस्त।' मलिक बिख़न्दीद व बा नदीमान् गुफ़्त—'चन्दाँ कि मरा दर हक़्क़े ईं तायफ़ाय इरादत'स्त व इक़रार—मर ईं शोख़ दीदा रा अदावत'स्त व इनकार। व हक़ ब जानिबे ऊस्त—कि गुफ़्ता अन्द—

बैत (बहरे हजज्-मुसद्दस)

ज़ाहिद कि दिरम गिरिफ़्तो दीनार।
ज़ाहिदतर अज़ू दिगर ब दस्त आर॥'

हिकायत—३५

यके अज़ उलमाय रासिख़ रा पुरसीदन्द—'कि चि गोयी दर नाने वक़्फ़?' गुफ़्त—'अगर अज़ बहरे जमीय्यते ख़ातिर व फ़िराग़े इबादत मी सितानन्द—हलाल'स्त—व अगर जमा अज़ बहरे नान नशीनन्द हराम।'

बैत (बहरे मुज़ारी)

नान अज बराये कुंजे इबादत गिरिफ़्ता अन्द।
साहिबदिलाँ नै कुंजे इबादत बराये नान॥

हिकायत—३६

दरवेशे ब मक़ामे दर आमद—कि साहिबे आँ बुक़आ करीमुन्नफ़्स बूद। तायफ़ाए अहले फ़ज़्ल दर सुहबते ऊ हर यक बज़्ला व लतीफ़ा हमी गुफ़्तन्द। दरवेश राहे बयाबान क़त्ता करदा बूद व मान्दा शुदा व चीज़े न ख़ुर्दा। यके अज़ आँ मियान ब तरीक़े ज़राफ़त गुफ़्त—'तुरा हम चीज़े बबायद गुफ़्त।' दरवेश गुफ़्त—'मरा चू दीगराँ फ़ज़्ल व बलाग़त नेस्त—व चीज़े न ख़्वान्दाअम्—ब यक बैत अज़ मन् क़नाअत कुनेद।' हमगिनान् ब रग़बत गुफ़्तन्द—'बिगो!' गुफ़्त—

بروت ـ وفای نذرش بوجوب لازم آمد * یکی‌را از بندگان خاص کیسهٔ درم داد تا براهدان نفقه کند * آورده اند که غلام هشیار بود * همه روز بگردید و شبگاه باز آمد و درمها بوسه داد و پیش ملک بنهاد و گفت ـ ''چندان که زاهدان‌را جستم نیافتم'' * ملک گفت ـ ''این چه حکایتست؟ آنچه من دانم درین شهر چهار صد زاهدست'' * گفت ـ ''ای خداوند جهان! آن که زاهدست زر نمیستاند ـ و آن که زر میستاند زاهد نیست'' * ملک بخندید و با ندیمان گفت ـ ''چندانکه مرا در حق این طائفه ارادتست و اقرار ـ مر این شوخ دیده‌را عداوتست و انکار ـ و حق بجانب اوست ـ که گفته اند ـ

بیت

زاهد که درم گرفت و دینار
زاهدتر ازو دگر بدست آر'' *

حکایت ۳۵

یکی از علمای راسخ‌را پرسیدند ـ که چه گوئی در نان وقف؟ گفت ـ ''اگر از بهر جمعیت خاطر و فراغ عبادت می‌ستانند ـ حلالست ـ و اگر جمع از بهر نان نشینند حرام'' *

بیت

نان از برای کنج عبادت گرفته اند
صاحبدلان ـ نه کنج عبادت برای نان *

حکایت ۳۶

درویشی بمقامی در آمد ـ که صاحب آن بقعه کریم النفس بود * طائفهٔ اهل فضل در صحبت او هر یک بذله و لطیفهٔ همی گفتند * درویش راه بیابان قطع کرده بود و مانده شده و چیزی نخورده * یکی از ان میان بطریق ظرافت گفت ـ ''ترا هم چیزی باید گفت'' * درویش گفت ـ ''مرا چون دیگران فضل و بلاغت نیست ـ و چیزی نخوانده ام ـ بیک بیت از من قناعت کنید'' * همگنان برغبت گفتند ـ ''بگو''! گفت ـ

और उसकी मनोव्यथा जाती रही तो उसके लिये प्रतिज्ञा पूर्ति अनिवार्य हो गयी। (उसने) अपने एक खास सेवक को एक थैली (भर) दिरम दिये ताकि सन्तो में बाँट दे। कहते हैं कि सेवक चतुर था। सारे दिन घूमता रहा और रात के समय लौट आया और दिरमों को चूमकर राजा के सामने रख दिया और बोला—'मैंने कितना ही साधुओं को ढूढा पर न पाया।' राजा ने कहा—'यह क्या बात है? जैसा कि मैं जानता हूँ इस नगर में चार सौ साधु हैं।' उसने कहा—'हे पृथ्वीनाथ! जो साधु है वह सोना नहीं लेता और जो सोना लेता है वह साधु नहीं है।' राजा हँसने लगा और दरबारियों से बोला—'जितनी मुझको इस वर्ग के प्रति प्रीति और रुचि है उतनी ही इस धृष्ट को अदावत और अरुचि है। और सचाई उसकी तरफ है क्योंकि कहा गया है—

यदा तस्य कामना चाप्ता, मनोव्यथा चापनीता तर्हि प्रतिज्ञापालनमावश्यक जातम्। स स्वस्य सेवकस्य कुथिनीप्रमाणानि दिरमानि दत्तवान् येनाऽसौ साधुभ्यो वितरेदिति। श्रूयतेऽथ सेवकश्चतुर आसीत्। स सम दिन पर्यभ्रमत् दोषा च प्रतिनिवृत्त, दिरमानि च चुम्बित्वा राज्ञ समक्षमदधादवदच्च—'भूरिशो मया साधवोऽन्वेषिता न चोपलब्धा।' राजाऽब्रवीत्—'तत् किम्? यथाऽहं जाने, अस्या पुर्यां चतुःशत साधवो निवसन्ति।' सोऽवदत्—'हे पृथ्वीनाथ! यो हि साधु स धन नाददाति यश्चाददाति न स साधुरिति।' राजा विहस्य पारिषदानाह—'यावती मे वर्तते श्रद्धा साधून् प्रत्यभिरुचिश्च तावती हि धृष्टस्यास्य शत्रुता अरुचिश्च। अय च लब्धसत्यो ह्येष जन। उच्यते हि—

बैत

वह साधु जो दीनार और दिरम लेता है।
उससे ज्यादा पहुँचा हुआ साधु ढूढ।।'

श्लोक

दिरम चैव दीनार गृह्यन्नास्ते हि यो यति।
ततो यतितर कञ्चिदन्वीक्षेथा अथापरम्।। १४९।।'

कथा—३५

एक प्रकाण्ड पण्डित से पूछा गया—कि 'वक्फ की रोटी खाने के विषय में क्या कहते हो?' उसने कहा—'यदि चित्त स्थिर करने के लिये और उपासना के अवसर के लिये ले आये तो हलाल है, और यदि रोटी से निश्चिन्त होकर बैठने के उद्देश्य से लाये तो हराम है।'

आख्यायितम्—३५

कश्चित् प्रकाण्डो विद्वान् कैश्चित् पुभि पृष्टोऽथ दानस्यान्नमधिकृत्य कि व्यवस्यीयते भवता?' स उवाच—'यदि चित्तस्थैर्यमुद्दिश्य नीयते, उपासनासामर्थ्यं च लब्धु तर्हि विहितमतोऽन्यथा त्यक्तान्नचिन्ताव्यवसायाद्धेतोश्चेद् गृह्यते तर्हि निषिद्धमिति।'

बैत

रोटी को प्रार्थना कोष के लिये लेते हैं।
साधु लोग—न कि प्रार्थना करते है रोटी के लिये।।

श्लोक

यतय प्रार्थनाद्धेतो कुर्वते चान्नभोजनम्।
न चैव भोजनाद्धेतो प्रार्थयन्ते कदाचन।। १५०।।

कथा—३६

एक साधु एक ऐसे स्थान पर आया कि—जिस स्थान का स्वामी उदारचित्त था। विद्वन्मण्डली उसकी सगति में मजाक और चुटकुले कह रही थी। साधु रेगिस्तान का रास्ता काटकर आया था, थका हुआ था, और कुछ खाया नही था। उन में से एक ने हँसी के ढग से कहा—'आप को भी कुछ कहना चाहिये।' साधु ने कहा—'मुझ में दूसरो की तरह विद्या और वाग्मिता नहीं है, और न मैं कुछ पढा ही हूँ, मुझ से एक ही श्लोक से सन्तोष करें।' साथियो ने आग्रहपूर्वक कहा—'कहिये।' उसने कहा—

आख्यायितम्—३६

कश्चित् साधुरेतादृश स्थान प्राप यस्याधिष्ठाता उदारचित्त आसीत्। गुणिजनास्तत्र परिषदि विनोदप्रसङ्गै काल वहन्ति स्म। साधुस्तूत्तीर्णमरुकान्तार, पादप्रचारखेदखिन्न, अभुक्तान्नपान आसीत्। पारिषदानामेकतमो विनोदपुरस्सरमुवाच—'भवताऽपि किञ्चिद् वक्तव्यम्।' साधुरब्रवीत्—

अन्यैश्च पुरुषैस्तुल्य न मे विद्या न वाग्मिता।
न च किञ्चिन्मयाधीत श्लोकैकेन हि तुष्यताम्।। ११।।

पारिषदा साग्रहमूचु—'ब्रूहि तावत्।' स उवाच—

شعر

من گرسنه در برابر سفرهٔ نان
همچون عزبم بر در حمام زنان *

یاران نهایت عجز او بدانستند - و سفرهٔ پیش آوردند * صاحب دعوت گفت - ای یار! زمانی توقف کن - که پرستارانم کوفتهٔ بریان میسازند * درویش سر بر آورد و گفت -

بیت

کوفته در سفرهٔ من - گو - مباش!
کوفته‌را نان تهی کوفته است *

حکایت ۳۷

مریدی گفت پیر را - چه کنم؟ که از خلائق برحمت اندرم از بسکه بزیارت من همی‌آیند و اوقات مرا از تردد ایشان تشویش می‌باشد * گفت - هرچه درویشانند مر ایشان‌را وامی بده - و آنچه توانگرانند - از ایشان چیزی بخواه - که دیگر گرد تو نگردند *

بیت

گر گدا پیشرو لشکر اسلام بود
کافر از بیم توقع برود تا در چین *

حکایت ۳۸

فقیهی پدررا گفت - "هیچ ازین سخنان رنگین متکلمان در من اثر نمی‌کند - بحکم آنکه نمی‌بینم ایشان‌را کرداری موافق گفتاری" *

مثنوی

ترك دنیا بمردم آموزند
خویشتن سیم و غله اندوزند *
عالمی‌را که گفت باشد و بس
چون بگوید نگیرد اندر کس *
عالم آن کس بود که بد نکند
نه که گوید بخلق و خود بکند *

शेर (बहरे हजज्)

मन् गुरुसना दर बराबरे सुफ़राये नान।
हमचूं अज़बम् बर दरे हम्मामे ज़नान॥

यारान् निहायते इज्ज़े ऊ बदानिस्तन्द—व सुफ़राए पेशे ऊ आवुर्दन्द। साहिबे दावत गुफ़्त—'ऐ यार! ज़माने तवक्कुफ़ कुन्—कि परस्तारानम् कोफ़्ताए बिरियान मी साज़न्द।' दरवेश सर बर आवुर्द व गुफ़्त—

बैत (बहरे सरी)

कोफ़्ता दर सुफ़राए मन्-गो-म बाश।
कोफ़्ता रा नाने तिही कोफ़्ता अस्त॥

हिकायत—३७

मुरीदे गुफ़्त पीर रा—'चि कुनम्? कि अज़ ख़लायक ब ज़हमत अन्दरम् अज़ बस कि ब ज़ियारते मन् हमी आयन्द व औक़ाते मरा अज़ तरद्दुद ऐशान् तशवीश मी बाशद।' गुफ़्त—'हर चि दरवेशानन्द मर ऐशान् रा वामे बिदिह्—व आँ चि तवांगरानन्द—अज़ ऐशान् चीज़े बिख़्वाह्—कि दीगर गिर्दे तो न गिरदन्द।'

बैत (बहरे रमल)

गर गदा पेशरौ ए लश्करे इस्लाम बुवद।
काफ़िर अज़ बीमे तवक़्क़ो बिरवद ता दर ची॥

हिकायत—३८

फ़क़ीहे पिदर रा गुफ़्त—'हेच अज़ ईं सुख़ुनाने रंगीने मुतकल्लिमान् दर मन् असर न मी कुनद—ब हुक्मे आँ कि न मी बीनम् ऐशान् रा किरदारे मुवाफ़िक़े गुफ़्तारे।'

मसनवी (बहरे ख़फ़ीफ़)

तर्के दुनिया ब मरदुम आमोज़न्द।
ख़ेश्तन सीम ओ ग़ल्ला अन्दोज़न्द॥
आलिमे रा कि गुफ़्त बाशदो बस।
चू ब गोयद न गीरद अन्दर कस॥
आलिम आ कस बुवद कि बद न कुनद।
नै कि गोयद ब ख़ल्क़ो ख़ुद न कुनद॥

शेर

मैं भूखा—रोटी के दस्तरखान के सामने।
जैसे कि मैं क्वारा स्त्रियों की स्नानशाला के सामने॥

श्लोक

बुभुक्षितोऽस्मि चान्नस्य पुरतस्तु तथा स्थित ।
ग्रनूढश्च रिरसुश्च स्नानीयान्त पुरे यथा॥ १५१॥

मित्रो ने उसकी अत्यन्त कृशता समझी और उसके सामने दस्तरखान बिछाया। आतिथेय ने कहा—'हे मित्र! थोडी सी देर रुक ताकि मेरे नौकर भुना हुआ गोश्त पकादे।' साधु ने (खाने से) सिर उठाया और कहा—

पारिपदास्तस्यात्यन्तिकदौर्बल्यनिमित्तमज्ञासिपु, भोजनपात्र तस्याग्रेऽनैपु। आतिथेयोऽवदत्—'हे मित्र! क्षरण प्रतीक्षस्व यावन्मे सेवका शूल्य प्रस्तुवन्ति।' साधु शिर उत्थाय ब्रूते—

वैत

कह दो—कि मेरे दस्तरखान पर कोफ्ता (साधितमास) रहने दें।
कोफ्ता (हारे थके) के लिये रूखी रोटी ही कोफ्ता है॥

श्लोक

मा मासपरम भोज्य निवेहि पुरतो मम।
कदन्न हि क्षुधार्तानां मासात् प्रियतर स्मृतम्॥ १५२॥

कथा—३७

एक शिष्य ने गुरु से कहा—'मैं क्या करूँ? लोगो के कारण मैं परेशान हूँ। इतने सारे लोग मेरी जियारत के लिये आते हैं और मेरा अधिकाश समय इनके तरद्दुद से नष्ट होता है।' (गुरु ने) कहा—'उनमें जो निर्धन हैं उन्हें थोडा कर्जा दे दे—और जो धनी हैं—उनसे कुछ मांग बैठ—कि फिर तेरे पास नही फटकेंगे।'

आख्यायितम्—३७

कश्चिच्छिष्यो गुरमवोचदथ—'किं कुर्याम्? लोकसम्रवखिन्नोऽस्मि। बहवो जना मा द्रष्टुमागच्छन्ति, तेषा गमनागमनेन विघ्नो मे भवति।' गुरुरुवाच—

'ये तेषा धनहीना स्युस्तेषा दत्तादृरण क्वचित्॥ १२॥
ये तेषु धनसम्पन्ना किञ्चिद् याचस्व तास्तथा।
एव न पुनरेष्यन्ति याच्ञाभीता कदाचन॥ १३॥'

वैत

यदि भिक्षुक इस्लाम की सेना का सेनापति हो।
तो काफिर उसकी याचना के भय से चीन तक भाग जायेंगे॥

श्लोक

इस्लामपृतनाग्रे स्याद् भिक्षुको यदि याचक।
ग्राचीनाद् दानसन्त्रासात् पलायन्ते हि नास्तिका॥ १५३॥

कथा—३८

एक धर्मशास्त्री ने अपने बाप से कहा—'उपदेशको के कैसे भी रगीन वचन मुझ पर असर नही करते, क्योंकि मैं नही देखता इनका चरित्र इनके उपदेश के अनुसार।'

आख्यायितम्—३८

कश्चिद् धर्मशास्त्री पितरमुवाच—'उपदेशकानामलङ्कारभरा भारती न मे प्रभवति यतो नाह पश्याम्येतेषा चरितानि चोपदेशानुगानि।'

मसनवी

(ये) दुनियादारी छोडने को लोगो को सिखाते हैं।
अपने लिये चाँदी और अन्न जोडते हैं॥
एक विद्वान् जो सिर्फ कहता भर है—और बस।
जब बोलता है तो नही पकडता किसी का अन्तर॥
विद्वान् वह आदमी होता है जो कि बुराई नही करता।
न कि (वह जो कि) दुनिया से तो कहता है पर स्वय आचरण नही करता॥

गाथा

लोकैषणा परित्याग परेभ्य उपदिश्यते।
धनान्यन्नानि सर्वाणि चीयन्ते चात्मने तथा॥ १५४॥
प्रशास्ता यश्च शास्त्राणि व्याख्यापयति केवलम्।
यदाह वाग्मितापूर्वं न तत् केनापि धार्यते॥ १५५॥
पण्डित कीर्तित पुसु भजते यो न किल्विषम्।
न स यश्च प्रवक्ता स्यात् न चोक्त कुरुते स्वयम्॥ १५६॥

آیة

أَتَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَ تَنْسَوْنَ أَنْفُسَكُمْ؟

بیت

عالم که کامرانی و تن پروری کند
او خویشتن گم است - کرا رهبری کند؟

پدر گفت - "ای پسرا! بمجرد این خیال باطل نشاید روی از تربیت ناصحان گردانیدن - و راه بطالت گرفتن - و علما را بضلالت منسوب کردن - و در طلب عالم معصوم بودن - و از فواید علم محروم ماندن * همچو نابینائی - که شبی در وحل افتاده بود و می گفت - آخر - ای مسلمانان! چراغی فرا راه من دارید! زنی فاحشه بشنید و گفت - تو - که چراغ نه بینی - بچراغ چه بینی؟ همچنین مجلس واعظان چون کلبهٔ بزازاست - که آنجا - تا نقدی ندهی - بضاعتی نستانی - و اینجا - تا ارادتی نیاوری - سعادتی نبری *

قطعه

گفت عالم بگوش جان بشنو
ور نماند بگفتنش کردار -
باطلست آن که مدعی گوید
"خفته‌را خفته کی کند بیدار"؟
مرد باید که گیرد اندر گوش
ور نوشتست پند بر دیوار *

قطعه

صاحبدلی بمدرسه آمد ز خانقاه
بشکست عهد صحبت اهل طریق‌را *
گفتم - میان عالم و عابد چه فرق بود؟
تا اختیار کردی از آن این فریق‌را *
گفت - آن گلیم خویش برون میبرد ز موج
وین جهد میکند که بگیرد غریق‌را *

आयत

अतामुरून'न्नास बि'ल्बिर्रि व तन्सौन अन्फुसकुम?

बैत (बहरे मुजारी)

आलिम कि कामरानी ओ तन परवरी कुनद।
ऊ ख़ेशतन गुम'स्त किरा रहबरी कुनद॥

पिदर गुफ़्त—'ऐ पिसर! ब मुजर्रदे ईं ख़याले बातिल न शायद रूय अज तरबियते नासिहाँ गर्दानीदन्—व राहे बितालत गिरिफ़्तन्—व उलमा रा ब ज़लालत मन्सूब कर्दन्—व दर तलबे आलिमे मअसूम बूदन्—व अज फ़वायदे इल्म महरूम मान्दन्।' हमचु नाबीनाए कि शबे दर वहल उफ़तादा बूद व मी गुफ़्त—'आख़िर ऐ मुसलमानान्! चिराग़े फ़रा राह मन् दारेद।' ज़ने फ़ाहिशा बशुनीद व गुफ़्त—'तो कि चिराग़ न बीनी—ब चिराग़ चि बीनी?' हम चुनीं मजलिसे वाइज़ाँ चू कुल्बाए बज़्ज़ाज़ान'स्त—कि आँजा ता नक़्दे न दिही—बिज़ाअते न सितानी। व ईंजा ता इरादते नयावरी—सआदते न बरी।

क़ता (बहरे ख़फ़ीफ़)

गुफ़्ते आलिम ब गोशे जाँ बिशनव।
वर न मानद ब गुफ़्तनश् किर्दार॥
बातिल'स्त आँ कि मुद्दई गोयद।
'ख़ुफ़्ता रा ख़ुफ़्ता कै कुनद बेदार?'
मर्द बायद कि गीरद अन्दर गोश।
वर नविश्त'स्त पन्द बर दीवार॥

क़ता (बहरे मुजारी)

साहिबदिले ब मद्रसा आमद ज़ि ख़ानक़ाह।
बिश्कस्त अहदे सुहबते अहले तरीक़ रा॥
गुफ़्तम् मियाने आलिमो आबिद चि फ़र्क़ बूद।
ता इख़्तियार कर्दी अज़ाँ ईं फ़रीक़ रा॥
गुफ़्त—आँ गलीमे ख़ेश बरूँ मी बुरद ज़ि मौज।
वीं जहद मी कुनद कि बिगीरद ग़रीक़ रा॥

आयत

क्या (तुम) हुक्म करते हो लोगों को भलाई का
और भूल जाते हो जान अपनी।

बैत

विद्वान् जो कामनापूर्त्ति और शरीर सेवा में लगा रहता है।
वह स्वयं भटका हुआ है—किसका पथ प्रदर्शन करेगा॥

बाप ने कहा—'हे पुत्र! केवल इस असगत कल्पना से ही उपदेशकों की शिक्षा से मुख मोड लेना, असगति का मार्ग पकड़ना, विद्वानों पर नीचता आरोपित करना, पण्डितों की खोज से विरत होना और विद्या के लाभों से वंचित रह जाना उचित नहीं है।

उस अन्धे की तरह कि जो एक रात कीचड में गिर गया था और कहता था—"अरे मुसलमानो! कम से कम मेरे रास्ते पर एक दीपक तो जला दो।" एक रण्डी ने सुनकर कहा—"तू जो कि दीपक ही नहीं देख सकता, दीपक से क्या देखेगा?" ऐसी ही उपदेशकों की सभा है जैसी कि बजाजों की दुकान। वहाँ जब तक नक़द न दोगे कोई माल नहीं ले सकते। और यहाँ जब तक सकल्प नहीं लाते आनन्द नहीं उठा सकते।'

कुरानवाक्यम्

'किं प्रशिष्ठ जनान् यूयं
प्राणान् विस्मरथात्मन।'

श्लोक

विद्वान् यः कामनापूर्ति देहसेवामुपक्रमेत्।
स्वयमस्ति स दिग्भ्रान्तः पन्थानं कस्य दर्शयेत्॥ १५७॥

पिताऽब्रवीत्—'हे पुत्र! असाम्प्रतं हि नाम केवलमनयाऽसङ्गतया कल्पनयैव शास्तॄणामनुशासनाद् विमुखीभवितुम्, असङ्गतमार्गेण च गन्तुं, विदुषश्च दोषेणाक्षेप्तुं, पण्डितानामन्वेषणाच्च विरन्तुं, विद्यालाभेनात्मानं वञ्चयितुञ्चेति। यथाऽऽसीदेकोऽन्धः, यश्चैकदा दोषा पङ्के निपतितः, ब्रूते च—"हे मुसलमानाः! ममाध्वनि दीपं प्रदीपयन्तु।" काचिद् वेश्या तच्छ्रुत्वोवाच—

"दीपं द्रष्टुं न शक्नोषि चाक्षिपा प्रदायाऽस्तु।
दीपालोकेन किं नाम स त्वं प्रेक्षितुमर्हसि॥" १५८॥

तथैवास्तिशास्तॄणां परिषद् यथा हि वस्त्रव्यवसायिनामापणस्थानं, यावत्तत्र ग्रन्थिं नोन्मोक्ष्यसे न तावत् अन्यानि क्रेतुमर्हसि। इहापि यावत् सङ्कल्पो न विधीयते न तावदानन्दोपलब्धिरिति।'

क़ता

पण्डित की वाणी जान के कान से (जान लगाकर) सुन।
भले ही न हो कहने के अनुसार उसका चरित्र॥
असगत है वह जो कि विवादी कहता है।
'सोये हुए को सोया हुआ कैसे जगाये॥'
मर्द को चाहिये कि रखे कान में।
भले ही लिखा हुआ हो उपदेश दीवार पर॥

पदम्

श्रूयतां पण्डितेनोक्तं दत्तचित्तेन सर्वदा।
अपि चेन्नास्य वृत्तं स्यात् स्वयमुक्तानुगं क्वचित्॥ १५८॥
प्रतिवादी वृथा ब्रूते चैतत् सत्यबहिष्कृतम्।
'सुप्तं सुप्तः कथं कुर्यान्निर्निद्रं चैव जागृतम्'॥ १५९॥
मतिमान् धारयेत् सूक्तिं सावधानश्च सर्वदा।
अपि चेदुपदेशस्य वाक्यं स्याद् भित्तिमङ्कितम्॥ १६०॥

क़ता

एक महात्मा मठ से (मठ त्याग कर) विद्यालय में आये।
श्रेयोमार्गियों की सगति के नियम को तोडा॥
मैंने उनसे पूछा—'पण्डित और भक्त में क्या अन्तर है।
जो कि आपने उस पक्ष से इस पक्ष को स्वीकार किया है॥'
बोले—'वह (भक्त) अपना कम्बल लहरों से निकालता है।
और यह (पण्डित) सघर्ष करता है कि डूबे को निकाल ले॥'

पदम्

साधुः कश्चिन्मया दृष्टः शालाविष्टो मठात् क्वचित्।
सन्मार्गगामिना सङ्गं छित्त्वा च नियमं मकृत्॥ १६१॥
पृष्टो विद्वत्सु भक्तेषु दृष्टवन्तः किमन्तरम्।
यतो विहाय सत्सङ्गं भवन्त इत आगताः॥ १६२॥
स ब्रूते—'कम्बलं स्वस्य मज्जितं चोद्धरन्ति ते।
इमे जनञ्च मज्जन्तमुद्धरन्ति प्रयत्नतः'॥ १६३॥

حکایت ۳۹

یکی بر سر راهی مست خفته بود - و زمام اختیارش از دست رفته * عابدی برو گذر کرد و در حال مستقبح او نظر کرد * چون از خواب مستی سر بر آورد - گفت - اِذَا مَرُّوا بِاللَّغْوِ مَرُّوا کِرَامًا *

हिकायत—३९

यके बर सरे राहे मस्त खुफ़्ता बूद—व ज़िमामे इख़्तियारश् अज़ दस्त रफ़्ता। आबिदे बरू गुज़र कर्द व दर हाले मुस्तक़्बिहे ऊ नज़र कर्द। चू अज़ ख़्वाबे मस्ती सर बर आवुर्द—गुफ़्त—'इज़ा मर्रू बि'ल् लग्वि मर्रू किरामा।'

شعر

اِذَا　رَأَیْتَ　اَثِیمًا
کُنْ سَاتِرًا و حَلِیمًا *
یَا مَنْ　یُقَبِّحُ　اَمْرِی!
لِمَ　لَا　تَمُرُّ　کَرِیمًا؟

शेर (बहरे कामिल)

इज़ा　रायत　असीमन्।
कुन् सातिरँव् व हलीमा॥
या मन् युक़ब्बिहु अम्री।
लिम् ला तमुर्रु करीमा॥

قطعه

متاب - ای پارسا! روی از گنهکار
ببخشایندگی در وی نظر کن *
اگر من ناجوانمردم بکردار
تو بر من چون جوانمردان گذر کن *

क़ता (बहरे हज़ज्)

म ताब—ऐ पारसा! रू अज़ गुनहगार।
ब बख़्शायन्दगी दर वै नज़र कुन्॥
अगर मन् नाजवाँ मर्द'म् ब किरदार।
तो बर मन् चू जवाँ मर्दाँ गुज़र कुन्॥

حکایت ۴۰

طائفه رندان بخلاف و انکار درویشان بدر آمدند و سخنان ناسزا گفتند و درویشی‌را بزدند * از بی‌طاقتی شکایت پیش پیر طریقت برد - که چنین حالتی بر من رفت * گفت - ای فرزند! خرقهٔ درویشان جامهٔ رضاست * هر که درین کسوت تحمل نامرادی نکند - مدعی است - و خرقه بر وی حرام *

हिकायत—४०

तायफ़ाए रिन्दान् ब ख़िलाफ़ो इनकारे दरवेशान् बदर आमदन्द व सुख़ुनाने ना सज़ा गुफ़्तन्द व दरवेशे रा बिज़दन्द। अज़ बे ताक़ती शिकायत पेशे पीरे तरीक़त बुर्द—कि चुनी हालते बर मन् रफ़्त। गुफ़्त—'ऐ फ़र्ज़न्द ख़िरक़ाए दरवेशान् जामाए रिज़ा स्त। हर कि दर ईं किस्वत तहम्मुले नामुरादी न कुनद मुद्दइ अस्त—व ख़िरक़ा बर वै हराम।'

فرد

دریای فراوان نشود تیره بسنگ
عارف که برنجد تنک آبست هنوز *

फ़र्द (बहरे हज़ज्)

दरियाए फ़रावाँ न शवद तीरा ब संग।
आरिफ़ कि बिरंजद तुनक आब'स्त हनोज़॥

कथा—३९

एक आदमी बीच सडक पर शराब के नशे मे सोया हुआ पडा था। और उसके अधिकार की लगाम उसके हाथ से छूट गयी थी। एक भक्त उधर से निकला और उसकी घृणित अवस्था पर नजर डाली। जब (नशेबाज़ ने) नशे की नीद से सिर ऊपर उठाया तो कहा—'जब वे गुज़रते हैं घृणित वस्तु के पास से, गुज़रते है दयापूर्वक।'

आख्यायितम्—३९

कश्चित् सुरामत्तश्चत्वरे सुषुप्त आसीत्। हस्तविच्युतचैतन्य-वल्गाश्च। कश्चन महात्मा ततो गच्छंस्तस्यौ, तस्य घृणितावस्थाया दृष्टिपातमकरोत्। सुरापीतो मदनिद्राया मूर्धानमुत्थापयामासोवाद च—'यदा पश्यन्ति घृण्यानि सन्त पश्यन्त्यनुग्रहात्।'

शेर

जब तू देखे पापी को—हो जा छिपाने वाला और नम्र।
अरे जो बुरा लगता है मेरा काम क्यो नही तू गुज़रता दया करता हुआ॥

श्लोक

यदु पश्यसि पाप्मान गोप्ता भव च नम्रक।
कुवृत्त मन्यसे चेन्मा दयया किन्न वर्तसे॥ १६४॥

क़ता

मत मोड हे साधु! मुख पापी से।
क्षमापूर्वक उस पर दृष्टिपात कर॥
यदि मैं असमर्थ हूँ चरित्र से।
तू मेरे पास से समर्थ की तरह निकल जा॥

पदम्

महात्मन्! मा स्म पापेभ्य प्रतिवर्तस्व वै मुखम्।
क्षमाबुद्ध्यैव चैतेषु दृष्टिपातो हि साम्प्रतम्॥ १६५॥
यदि वृत्तेन हीनोऽस्मि ह्यक्षमश्चैव निर्बल।
मयि वीर्यानुरूपस्त्व कृपया द्रष्टुमर्हसि॥ १६६॥

कथा—४०

नशेबाजो की एक साधु विरोधी और साधु द्वेषी टोली अन्दर आयी और अनकहनी बातें कही और एक साधु को पीटा। असामर्थ्य के कारण उसने सम्प्रदाय के गुरु से शिकायत की कि ऐसी हालत मुझ पर गुज़री। उसने कहा—'हे पुत्र! साधुओ की गुदडी त्याग का वस्त्र है। जो इस वेश के अन्तर्गत अपनी इच्छा-विरुद्ध बात को नही सहता वह विरोधी है और गुदडी उस पर हराम है।'

आख्यायितम्—४०

सुरामत्ताना कश्चित् साधुद्विट्समूह कञ्चिन्मठ प्रविष्ट, अपशब्दैश्च साधूनुदीरितवान् साधुमेक च ताडितवांश्च। असामर्थ्या-दसौ सम्प्रदायगुरो समक्षमात्मदु ख निवेदयामासायैंच दशा मे जाता। सोऽवदत्—'हे पुत्र! साधूना वल्कल हि त्यागवृत्तीना परिधानम्। य एनत् परिधायात्मन प्रतिकूलानि न सहते स कपटमुनि। वल्कल च तस्मायविहितमिति।'

फर्द

महासागर नही होता चचल पत्थर फेंकने से।
जो मुनि खिन्न हो जाय वह अभी थोडे पानी में है॥

श्लोक

न महासागरो याति शैलोत्क्षेपाच्च चञ्चल।
मुनिरुद्विजते यो हि स्वल्पतोय स उच्यते॥ १६७॥

قطعه

گر گزندت رسد ـ تحمل کن
که بعفو از گناه پاك شوی *
ای برادرا چو عاقبت خاکست
خاك شو پیش از ان که خاك شوی *

क़ता (वहरे ख़फ़ीफ़)

गर गज़न्दत रसद तहम्मुल कुन।
कि व अफ़्व अज़ गुनाह् पाक शवी॥
ऐ बिरादर! चु आक़िबत ख़ाक'स्त।
ख़ाक शव पेश अज़ आँ कि ख़ाक शवी॥

حکایت ۴۱

منظومه

این حکایت شنو ـ که در بغداد
رایت و پرده‌را خلاف افتاد *
رایت ـ از رنج ره و گرد رکاب
گفت با پرده از طریق عتاب ـ
من و تو هر دو خواجه تاشانیم
بندهٔ بارگاه سلطانیم *
من ز خدمت دمی نه آسودم
گاه و بیگاه در سفر بودم *
تو نه رنج آزمودهٔ نه حصار
نه بیابان و راه و گرد و غبار *
قدم من بسعی پیشترست
پس چرا قربت تو بیشترست؟
تو بر بندگان مه روئی
با کنیزان یاسمن بوئی *
من فتاده بدست شاگردان
بسفر پای بند و سر گردان *
گفت ـ من سر بر آستان دارم
نه ـ چو تو ـ سر بر آسمان دارم *
هر که بیهوده گردن افرازد
خویشتن‌را بگردن اندازد *
سعدی افتاده ایست آزاده
کس نیاید بجنگ افتاده *

हिकायत—४१

मज़्मा (वहरे ख़फ़ीफ़)

ईं हिकायत शिनव कि दर बग़दाद।
रायतो पर्दा रा ख़िलाफ़ उफ़्ताद॥
रायत अज़ रंजे राहो गर्दे रिकाब।
गुफ़्त बा पर्दा अज़ तरीक़े इताब॥
मनो तो हर दु ख़्वाजा ताशानेम्।
बन्दाए बारगाहे सुल्तानेम्॥
मन ज़ि ख़िदमत दमे नै आसूदम्।
गाहो बेगाह दर सफ़र बूदम्॥
तो नै रंज आज़मूदाई नै हिसार।
नै बियाबानो राहो गर्दो ग़ुबार॥
क़दमे मन् ब सइ पेशतर'स्त।
पस चिरा क़ुर्बते तो बेशतर'स्त॥
तो बरे बन्दगाने महरूई।
बा कनीज़ाने यास्मिन बूई॥
मन फ़ुतादा ब दस्ते शागिर्दान्।
ब सफ़र पायबन्दो सर गिर्दा॥
गुफ़्त—मन् सर बर आस्ताँ दारम्।
नै चु तो—सर बर आस्माँ दारम्॥
हर कि बेहूदा गर्दन अफ़राज़द।
ख़ेशतन रा ब गर्दन अन्दाज़द॥
सादी उफ़्तादा ऐस्त आज़ादा।
कस नयायद ब जंग उफ़्तादा॥

حکایت ۴۲

یکی از صاحبدلان زور آزمائی‌را دید بهم بر آمده و در خشم شده و کف بر دهان آورده * پرسید ـ ”که اورا چه

हिकायत—४२

यके अज़ साहिब दिलान् ज़ोर आज़माए रा दीद बहम बर आमदा व दर ख़िश्म शुदा व कफ़ बर दहान आवुर्दा। पुरसीद 'कि ऊरा चि

कता

यदि (कोई) तुझे कष्ट दे तो सहन कर।
क्योंकि क्षमा से तू पापों से पवित्र होगा।।
हे भाई! जब अन्त खाक ही है।
तो खाक बनकर रह इसके पूर्व कि तू खाक हो।।

पदम्

विप्रिय यदि कुर्वीत तव कश्चित् सहस्व तत्।
क्षमावान् खलु पापेभ्यो विमुक्तस्त्व भविष्यसि।। १६८।।
हे मित्र! परिणामे तु धूलिरेवावशिष्यते।
धूलीभूयानुवर्तेथा यावन्नो धूलिसाद् भवे।। १६९।।

कथा—४१

मजूमा

यह कथा सुनो कि बगदाद में।
झण्डे और पर्दे में झगडा हो गया।।
झण्डा मार्ग-खेद से और खुरो की धूल से।
पर्दे से बोला—फटकार के ढग से।।
मै और तू दोनो राजसेवक है।
राजा के दरबार के दास है।।
मै सेवा से एक क्षण चैन नही पाता।
समय-कुसमय यात्रा में रहता हूँ।।
तूने न रज देखा न युद्ध।
न निर्जन रेगिस्तान, न रास्ता, न धूलधक्कड।।
मेरे चरण सकट मे सबसे आगे रहते है।
फिर तेरा सम्मान क्यो अधिक है।।
तू चन्द्रमुखी दासियो के मुँह पर रहता है।
चमेली-गन्धा कन्याओ के साथ रहता है।।
मै पडता हूँ नौकरो के हाथ।
यात्रा में पैर बांधा हुआ और सिर घूमता हुआ।।
पर्दा बोला—मैं देहली पर सिर टेकता हूँ।
तेरी तरह नही कि सिर आसमान में रखूं।।
जो कि गदन को व्यर्थ बढ़ाता है।
अपने आपको गदन के बल गिराता है।।
सादी विनीत है और मुक्त है।
कोई विनीत से लडने नही आता।।

आख्यायितम्—४१

गाथा

शृणु चैतदुपाख्यान बगदादे ह्यर्थैकदा।
ध्वजश्चैवावगुण्ठश्च विवदेते परस्परम्।। १७०।।
ध्वजस्तु मार्गखेदाच्च खुराणा पाशुपाण्डुर।
अवगुण्ठमिद ब्रूते सरोपमथ भर्त्सयन्।। १७१।।
आवामुभौ तु दासौ स्व एकस्य स्वामिनो ननु।
राजद्वारस्य चैकस्य भूभुज सेवकौ तथा।। १७२।।
मया सेवाऽनुलग्नेन सुखश्वासो न लभ्यते।
काले काले तथा चाह प्रवासस्थोऽस्मि प्रायश।। १७३।।
न च त्व दृष्टदु खोऽसि न चासि दृष्टसगर।
न निर्जन न चाध्वान न पाशु दृष्टवानसि।। १७४।।
पादो मे सर्वकृच्छ्रेषु चाग्रगामितर सदा।
किमर्थं तर्हि ते मानो नून मत्तो विशिष्यते।। १७५।।
त्व चन्द्रवदना दासीश्चाश्लिष्टो वर्तसे सदा।
जातीपुष्पसुगन्धाना सेविकाना च सन्निधौ।। १७६।।
अह पुनश्च दासाना हस्तन्यस्तश्चरामि हि।
प्रवासी नित्यबद्धश्च सदा घूर्णितमस्तक।। १७७।।
ऊचेऽवगुण्ठन—'चाह देहलीधृतमस्तक।
न चैव त्वादृशोऽह य ऊर्ध्ववक्त्रश्चरेत् सदा।। १७८।।
गर्वोद्धतेन भावेन चोद्ग्रीवो यो हि वर्तते।
अधोमुख स चात्मान शिरसा पातयत्यथ।। १७९।।
सादी खलु विनीतोऽस्ति जीवन्मुक्तस्तथापि च।
न च कश्चिद् विनीतेन सार्धं युद्ध समाचरेत्।। १८०।।

कथा—४२

एक भक्त ने किसी पहलवान को देखा रोष में आया हुआ और क्रोध में मुँह से झाग निकालता हुआ। पूछा कि 'इसकी (यह)

आख्यायितम्—४२

कश्चिद् भक्त कचन मल्ल दृष्टवान् रोषाविष्ट क्रोधाच्च मुखात्फेन-मुद्वमन्त चेति। स पृष्टवान्—'केय दशा चास्य?' लोका ऊचु —

حالتست،،؟ گفتند ـ ''فلاں کس اورا دشنام داده است،، * گفت ـ ''این فرومایه هزار من سنگ بر میدارد و طاقت یك سخن نمی‌آرد،،!

قطعه

لاف سر پنجگی و دعوی مردی بگذار
عاجز نفس فرومایه چه مردی چه زنی؟
گرت از دست بر آید ـ دهنی شیریں کن
مردی آں نیست که مشتی بزنی بر دهنی *

قطعه

اگر خود بر درد پیشانی پیل
نه مردست آں که در وی مردمی نیست *
بنی آدم سرشت از خاك دارد
اگر خاکی نباشد ـ آدمی نیست *

حکایت ۴۳

بزرگی‌را پرسیدند از سیرت اخوان الصفا * گفت ـ کمینه آں که مراد خاطر یاران بر مصالح خود مقدم دارد ، و حکما گفته اند ـ

برادر که در بند خویشست
نه برادر نه خویشست *

بیت

همراه ـ گر شتاب کند ـ همره تو نیست
دل در کسی مبند که دلبستهٔ تو نیست *

بیت

چوں نبود خویش‌را دیانت و تقوی
قطع رحم بهتر از مودت قربی *

یاد دارم که یکی از مدعیان دریں بیت بر قول من اعتراض کرد و گفت ـ ''حق تعالی در کتاب مجید از قطع رحم نهی کرده است ـ و بمودت ذوالقربی امر فرموده ـ و آنچه تو می گوئی مناقض آنست،، * گفتم ـ ''غلط

हालत'स्त ?' गुफ़्तन्द—'फ़लाँ कस करा दुश्नाम दादा अस्त।' गुफ़्त—'ईं फ़िरोमाया हज़ार मन संग वर मी दारद व ताक़ते यक सुख़ुने न मी आरद।'

क़ता (वहरे रमल)

लाफ़े सर पंजगी ओ दावाए मर्दी विगुज़ार।
आजिज़े नफ़्से फ़रोमाया चि मर्दे चि ज़ने।
गरत अज़ दस्त वर आयद दहने शीरी कुन।
मर्दी आँ नेस्त कि मुश्ते बिज़नी वर दहने॥

क़ता (वहरे हज़ज़्)

अगर ख़ुद वर दरद पेशानिये पील।
नै मर्द'स्त आँ कि दरे वै मर्दुमी नेस्त॥
वनी आदम सिरिश्त अज़ ख़ाक दारद।
अगर ख़ाकी न वाशद आदमी नेस्त॥

हिकायत—४३

वुज़ुर्गे रा पुरसीदन्द अज़ सीरते इख़वानु'स्सफ़ा। गुफ़्त—'कमीना आँ कि मुरादे ख़ातिरे यारान् वर मिसालहे ख़ुद मुक़द्दम दारद। व हुकमा गुफ़्ता अन्द—

विरादर कि दर वन्दे ख़ेश'स्त।
नै विरादर नै ख़ेश'स्त॥'

वैत (वहरे मुज़ारी)

हमराह गर शिताव कुनद हमरहे तो नेस्त।
दिल दर कसे मवन्द कि दिलवस्तए तो नेस्त॥

वैत (वहरे मुसरिह)

चूँ न वुवद ख़ेश रा दयानत व तक़वा।
क़तए रहिम वहतर अज़ मवद्दते क़ुरवा॥

याद दारम् कि यके अज़ मुद्दईयान् दर ईं वैत वर क़ौले मन् ऐतराज़ कर्द व गुफ़्त—'हक़ तआला दर किताबे मजीद अज़ क़तए रहिम नही कर्दा अस्त। व व मुवद्दते ज़ु'ल् क़ुरवा अम्र फ़रमूदा—व आँ चि तो मी गोयी मुनाक़िज़े आन'स्त।' गुफ़्तम्—'ग़लत

क्या हालत है?' लोगो ने कहा—'अमुक व्यक्ति ने इसे गाली दी है।' भक्त ने कहा—'यह नीच एक हजार मन का पत्थर उठा लेता है और एक बात उठाने की शक्ति नही रखता!'

'अमुकेनास्मै गालिर्दत्ता।' सोऽवदत्—'अय पामर सहस्रपलमुपलमुत्थापयति न चापशब्दमेकमुत्थापयितु समर्थोऽस्तीति।'

कता

पजे की ताकत और पौरुष का दावा छोड दे।
नीच प्रकृति के वशीभूत (व्यक्ति) में क्या मर्दानगी और क्या स्त्रीत्व ॥
यदि तेरे हाथ से हो सके तो किसी का मुँह मीठा कर।
पौरुष यह नहीं है कि तू घूँसा मार दे किसी के मुँह पर॥

पदम्

जहि वाहुवलोत्सेक शौएटीर्यस्य विकत्थनम्।
नीचप्रकृतिवश्येपु क्व स्त्रीत्व क्व च पौरुषम् ॥ १८१ ॥
मिष्ट मुख प्रकुर्वीथा मधुना यदि शक्नुया ।
पौरुप न तदाख्यात दद्या मुखचपेटिकाम् ॥ १८२ ॥

क़ता

चाहे अकेला ही फाड दे हाथी का मस्तक।
वह मर्द नही है कि जिसमें मर्दानगी नही है॥
मानव का वश मिट्टी से बना है।
यदि तू नम्र नही है तो मनुष्य नही है॥

पदम्

गजस्य मस्तक भङ्क्तु सामर्थ्येऽपि तथा सति।
न त नर विजानीयान् मनुष्यत्वविवर्जितम् ॥ १८३ ॥
सर्वानादिमवशीयान् नृजातान् विद्धि पार्थिवान्।
यस्त्र पृथ्वीव नम्र स्या न नाऽसीति मतिर्मम ॥ १८४ ॥

कथा—४३

एक बडे आदमी से लोगो ने पवित्रात्माओं के गुणो के विषय में पूछा—उसने कहा—'कम से कम यह, कि (पवित्रात्मा व्यक्ति) मित्रो की मनोकामना को अपने स्वय के प्रयोजन पर महत्त्व देता है। और पण्डितो ने कहा है कि—

यह भाई जो अपने काम में बँधा है।
न भाई है—न अपना है॥'

आख्यायितम्—४३

अय कञ्चिन्महाजन केचन जना पृष्टवन्त पुण्यात्मना गुणाना विषये। सोऽवदत्—'तेपु न्यूनतमो हि मित्राणा मनोऽभिलाष स्वस्य प्रयोजनाद् गुरुतर मत्वा विशिनष्टि। यथाहु पण्डिता —स्वक स्वार्थपरो भ्राता न च भ्राता न च स्वक ।'

वैत

साथी यदि (चलने में) जल्दी करता है तो तेरा साथी नही है।
दिल उस पर मत लगा जो तुझ पर दिल नही रखता॥

श्लोक

शीघ्रग सहचारश्चेत् सहचारो न ते क्वचित्।
मा चैन सुहृद मस्या यस्त्वा मन्येत नो सुहृत् ॥ १८५ ॥

वैत

यदि न हो (तेरे) आत्मीय में धर्म और पवित्रता।
(तो) सम्बन्ध विच्छेद करना रिश्ते के प्यार से अच्छा है॥

श्लोक

आत्मीयश्चेन्न ते धत्ते धर्म न च पवित्रताम्।
सम्बन्धोच्छेदन तस्माद् बन्धुप्रेम्णो वर स्मृतम् ॥ १८६ ॥

मुझे याद है कि एक विरोधी ने इस पद्य में मेरे वचन पर आपत्ति की और कहा—'परमेश्वर ने महान् ग्रन्थ (कुरान) में सम्बन्ध-विच्छेद की नाही की है। और सम्बन्धियो से प्रेम का उपदेश किया है। और जो तू कहता है उस के विरुद्ध है।' मैंने कहा—'गलती करते

अभिजानामि यत् कश्चिद् विरुद्धवक्ता चैतत् पदस्थ मम वचनमाक्षिपन्नवदत्—'श्रीमद्भगवता स्वकीये ग्रन्थे सम्बन्धविच्छेदमविहित कृत्वा निर्दिष्टम्। सम्बन्धिभि प्रीत्या चरेति निर्दिष्टम्। यच्च त्व ब्रूपे तच्छास्त्रविरुद्धमिति।' अहमवोचम्—'अनभिज्ञोऽसि—यदह

کردی - کہ مطابق قرآنست - وَ اِنْ جَاهَدَاكَ عَلٰى اَنْ تُشْرِكَ بِى مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا، *

بیت

هزار خویش کہ بیگانہ از خدا باشد
فدای یك تن بیگانہ کاشنا باشد *

حکایت ۴۴

مثنوی

پیر مردی لطیف در بغداد
دخترك را بکفش دوزی داد *
مردك سنگدل چنان بگزید
لب دختر - کہ خون رو بچکید *
بامدادان پدر چنان دیدش
پیش داماد رفت و پرسیدش -
کای فرومایہ! این چہ دندانست؟
چند خائی لبش؟ نہ انبانست!
بمزاحت نگفتم این گفتار
هزل بگذار و جد ازو بردار *
خوی بد در طبیعتی کہ نشست
نرود تا بروز مرگ از دست *

حکایت ۴۵

فقیہی دختری داشت - بغایت زشت روی - بجد زنان رسیده - و با وجود جہاز و نعمت بسیار کسی بمناکحت او رغبت نمی کرد *

بیت

زشت باشد دبیقی و دیبا
کہ بود بر عروس نا زیبا *

فی الجملہ بحکم ضرورت با ضریری عقد نکاحش بستند * آورده اند کہ در آن تاریخ حکیمی از سراندیب آمده بود - کہ دیدهای نابینایان را روشن کردی * فقیہ را گفتند -

कर्दी—कि मुताबिके कुरआ'नस्त—"व इन् जाहदाक अला अन् तुश्रिक बी मा लैस लक बिहि इल्म फ ला तुतिअ हुमा" ।'

बैत (बहरे मुज्तस्)

हजार खेश कि बेगाना अज खुदा बाशद ।
फिदाये यक तने बेगाना काशना बाशद ॥

हिकायत—४४

मस्नवी (बहरे खफीफ)

पीर मर्दे लतीफ दर बग़दाद ।
दुख्तरक रा ब कफ़्श दोज़े दाद ॥
मर्दके संगदिल चुनाँ बिगज़ीद ।
लबे दुख्तर कि खून जू बिचकीद ॥
बामदादाँ पिदर चुनाँ दीदश् ।
पेशे दामाद रफ्तो पुरसीदश् ॥
कै! फ़िरोमाया! ईं चि दन्दान'स्त ।
चन्द खायी लबश्? ने अम्बान'स्त ॥
ब मिज़ाहत न गुफ्तम् ईं गुफ्तार ।
हज्ल बिगुज़ारो जिद्द अज् वर दार ॥
ख़ूये बद दर तबीयते कि निशस्त ।
न रवद ता ब रोज़े मर्ग अज़ दस्त ॥

हिकायत—४५

फ़क़ीहे दुख़्तरे दाश्त—ब ग़ायत ज़िश्त रूय—ब हद्दे ज़नान रसीदा—व बावजूदे जिहाज व निअ़मते बिस्यार कसे ब मुनाकहते ऊ रग़बत न मी कर्द ।

बैत (बहरे खफीफ)

ज़िश्त बाशद दबीकि ओ दीबा ।
कि बुवद बर उरूसे नाज़ेबा ॥

फ़ि'ल जुमला ब हुक्मे ज़रूरत बा ज़रीरे अक़दे निकाहश् बस्तन्द । आवुर्दा अन्द कि दर आँ तारीख़ हकीमे अज़ सरन्दीब आमदा बूद कि दीदहाये नाबीनायाँ रा रौशन कर्दे । फ़क़ीह रा गुफ्तन्द—

क्योंकि यह कुरान के अनुसार है। यथा—"और यदि माँ बाप तुझसे, इस पर कि तू शिर्क करे मेरे साथ नहीं जिसे तू जानता, तो मत मान उन दोनों की"।'

ब्रवीमि तत् कुरानानुमोदित यथा—
"पितरौ यदि शिष्याता मया सार्धं तु पूजितुम्।
दिवौकसमविज्ञात मा कार्षीस्तस्य पालनम्" ॥ १५ ॥'

बैत

हज़ार आत्मीय जो ईश्वर से बेगाना हो।
एक बेगाने ईश्वरभक्त पर न्योछावर है॥

श्लोक

अप्यात्मीयसहस्र च भूयोऽनीश्वरवादिनाम्।
अनात्मीयैकभक्तस्य बलिहार्यं हि सर्वदा ॥ १८७ ॥

कथा—४४

मसनूमा

एक विनोदी आदमी ने बगदाद में।
अपनी कन्या को एक जूती गाँठने वाले से ब्याह दिया॥

(उस) कठोरचित्त पुरुष ने ऐसा काटा।
कन्या का होंठ कि खून उससे निकल आया॥

सवेरे बाप ने जब ऐसा देखा उसको।
(तो) दामाद के सामने गया और उससे पूछा॥

'अरे नीच! यह कैसे दाँत हैं।
कितनी बार तूने काटे इसके होंठ? यह चमड़ा तो नहीं है॥'

परिहास में मैं यह नहीं कह रहा हूँ।
मज़ाक छोड़कर उससे प्रेम का व्यवहार कर॥

यदि बुरा स्वभाव प्रकृति में बैठ गया।
नहीं जायेगा मरने के दिन तक हाथ से॥

आख्यायितम्—४४

प्रबन्ध

कश्चिद् बग्दादवास्तव्यो विनोदी वृद्धसज्जन।
विवाहे कन्यका स्वीया चर्मकाराय दत्तवान् ॥ १८८ ॥

क्रूरेण पुरुषेणैव वधूटी परिचुम्बिता।
यदोष्ठो तेन स्वतातो दष्टेनावृतता भृशम् ॥ १८९ ॥

प्रातःकाले यदा तातो ददर्शैव च कन्यकाम्।
जामातुः पुरतो गत्वा तमेव पृष्टवानथ ॥ १९० ॥

'अरे नीच किमाकारमिद दन्तक्षत ननु।
कतिधा चर्विताबोष्ठौ? मृतचर्ममयौ न तौ ॥ १९१ ॥'

न ब्रुवेऽहमिद वाक्य परिहासेन किञ्चन।
हसित च परित्यज्य प्रीतिभावेन ता भज ॥ १९२ ॥

दुःस्वभाव प्रकृत्या चेदतिमात्रेण सस्थित।
मरणान्तात् दिनादेष न तावदपहीयते ॥ १९३ ॥

कथा—४५

एक धर्मशास्त्री के एक बेटी थी—अत्यन्त कुरूपा, जो नारीत्व की सीमा प्राप्त कर चुकी थी, और बावजूद दहेज और काफी सम्पत्ति के कोई भी उससे विवाह की इच्छा नहीं करता था।

आख्यायितम्—४५

कस्यचिद् धर्मशास्त्रिण एका दुहिताऽऽसीत्, अतीव कुदर्शना, नारीभावगमिता च। प्रभूतयौतुकसम्पन्ना प्रकाम धनयुक्तामपि ता न कश्चिद् विवोढुमुत्सेहे।

बैत

बुरे लगते हैं रेशम और सोने के कपड़े।
जो होते हैं असोभन दुलहिन पर॥

श्लोक

अपि स्वर्णमय वस्त्र कौशेय विविधच्छविम्।
वधूट्या रूपहीनाया मण्डनाय न वै क्वचित् ॥ १९४ ॥

सक्षेप में, विवशता में एक अन्धे से उसकी विवाह-ग्रन्थि बाँध दी। कहते हैं कि उसी दिन स्वर्णद्वीप (लका) से एक वैद्य आया जो कि अन्धों की आँखों को प्रकाशमान करता था। धर्मशास्त्री से लोगों

अन्ततो गत्वा, कस्मैचिदन्धाय तां ददौ। तस्मिन्नेवाहनि स्वर्णद्वीपात् (लकायाः) कश्चिन्नेत्रवैद्यस्तत्रागत। यश्च नेत्रान्धानां नेत्रे चिकित्सति स्म। लोकैर्धर्मशास्त्री सबोधित—'कथ

'चश्मे दामाद रा चिरा इलाज न मी कुनी ?' गुफ्त—'मी तरसम् कि बीना शवद व दुख़्तरम् रा तलाक़ दिहद।'

मिसराअ (बहरे हज़ज्)

शूये ज़ने ज़िश्त रूय नाबीना बिह्।

हिकायत—८६

पादशाहे ब दीदाए इस्तिहिक़ार दर तायफ़ाए दरवेशान् नज़र कर्द। यके अज़ आँ मियान ब फ़िरासत दानिस्त। गुफ़्त—'ऐ मलिक! मा दर ईं दुनिया ब जैश अज़ तो कमतरैम् व ब ऐश ख़ुशतर-ेम् व ब मर्ग बराबर—व दर क़यामत इंशा अल्लाह—बेहतर।

मसनवी (बहरे हज़ज्)

अगर किशवर कुशाए कामरान'स्त।
व गर दरवेश हाजतमन्दे नान'स्त॥
दरॉं हालत कि ख़्वाहन्द ईं व आँ मुर्द।
न ख़्वाहन्द अज़ जहाँ बेश अज़ कफ़न बुर्द॥
चु रख़्ते ममलुकत बर बस्त ख़्वाही।
गदायी ख़ुशतर'स्त अज़ पादशाही॥

ज़ाहिरे दरवेशाँ जामाए जिन्दा अस्त व मूए सुतुर्दा व हक़ीक़त आँ दिले ज़िन्दा व नफ़्से मुर्दा।

कता (बहरे मुज्तस्)

नै आँकि बर सरे दावा नशीनद अज़ ख़ल्के।
व गर ख़िलाफ़ कुनद ऊ ब जंग बर ख़ेज़द॥
कि गर ज़ि कोह फ़िरो ग़ल्तद आसिया संगी।
नै आरिफ़'स्त कि अज़ राहे संग बर ख़ेज़द॥

तरीक़े दरवेशान् ज़िक्र'स्त व शुक्र व ख़िदमत व ताअत व ईसार व क़नाअत व तौहीद व तवक्कुल व तस्लीम व तहम्मुल। हर कि बदीं सिफ़्तहा मौसूफ़'स्त—ब हक़ीक़त दरवेश'स्त—अगर चि दर क़बा'स्त। अम्मा हर ज़ा गर्दी—बेनमाज़ी—हवा परस्ती—हवस बाज़ी—कि रोज़हा ब शब आरद दर बन्दे शह्वत—व शबहा रोज़ कुनद दर ख़्वाबे ग़फ़लत—व ख़ुरद हर चि दर मियान आयद—व बिगोयद हर चि बर ज़बान आयद—ज़िन्दीक़'स्त अगर चि दर अबा'स्त।

''چشم دامادرا چرا علاج نمی کنی''؟ گفت - ''می ترسم که بینا شود و دخترمرا طلاق دهد'' *

مصراع

شوی زن زشت روی نابینا به

حکایت ۸۶

بادشاهی بدیدهٔ استحقار در طائفهٔ درویشان نظر کرد * یکی از آن میان بفراست دانست * گفت - ''ای ملک! ما درین دنیا بجیش از تو کمتریم - و بعیش خوشتر - و بمرگ برابر - و در قیامت - انشاالله - بهتر'' *

مثنوی

اگر کشور کشائی کامرانست
و گر درویش حاجتمند نانست -
در آن حالت که خواهند این و آن مرد
نخواهند از جهان بیش از کفن برد *
چو رخت مملکت بر بست خواهی
گدائی خوشترست از بادشاهی *

ظاهر درویشان جامهٔ ژنده است و موی سترده و حقیقت آن دل زنده و نفس مرده *

قطعه

نه آن که بر سر دعوی نشیند از خلقی
و گر خلاف کند او بجنگ بر خیزد -
که گر ز کوه فرو غلطد آسیا سنگی
نه عارفست که از راه سنگ بر خیزد *

طریق درویشان ذکرست و شکر و خدمت و طاعت و ایثار و قناعت و توحید و توکل و تسلیم و تحمل * هر که بدین صفتها موصوفست - بحقیقت درویشست - اگرچه در قباست * اما هرزه گردی - بی نماری - هوا پرستی - هوس باری - که روزها بشب آرد در بند شهوت - و شبها روز کند در خواب غفلت - و بخورد هر چه در میان آید - و بگوید هرچه بر زبان آید - رندیقست - اگر چه در عباست *

ने कहा—'दामाद की आंखो का इलाज क्यो नही कराता?' वह बोला—'डरता हूँ कि देखने लगा तो (और) मेरी बेटी को तलाक दे देगा।'

मिसरा

पति, कुरूपा नारी का, अन्धा ही अच्छा।

कथा—४६

एक राजा ने घृणा की दृष्टि से भिक्षुमण्डली पर दृष्टिपात किया। उनमें से एक अपनी चतुराई से भाँप गया। बोला—'अरे राजा! हम इस दुनियाँ में सेना की दृष्टि से तुझ से कम हैं, सुख में तुझ से प्रसन्नतर हैं और मौत मे बराबर हैं, और प्रलय के दिन यदि परमात्मा ने चाहा तो तुझ से अच्छे रहेंगे।'

मसनवी

यदि देशो को जीतने वाला आप्तकाम हैं।
और यदि साधु रोटी को तरसता है॥
इस अवस्था में, जब कि यह और वह मरेंगे।
नही दुनिया से कफन से ज्यादा (कुछ) ले जायेंगे॥
जब तुझे राज्य वैभव समेटना पडेगा।
तो फकीरी राजत्व से अच्छी रहेगी॥

साधुओं का वाह्यलक्षण थेगलीदार कपड़ा है और मुडे हुए बाल हैं और अन्तर्लक्षण चैतन्य हृदय और मुर्दा वासनाएँ हैं।

कता

वह साधु नही है जो दावा करके दुनिया से दूर जा बैठे।
और यदि कोई विरोध करे तो लडने को खडा हो जाय॥
कि यदि पहाड से चक्की का पाट लुढके।
नही साधु है जो पत्थर के रास्ते से उठ जाय॥

साधुओं का तरीका उपासना, कृतज्ञता, सेवा, पूजा, त्याग, सन्तोप, भक्ति, ईश्वर-विश्वास, समपण और तितिक्षा का है। जो इन गुणो से सम्पन्न है—वास्तव में साधु है भले ही वह गृहस्थ वेश में हो। किन्तु हर जगह घूमना, प्रार्थना हीनता, कामनापूजन, वासनाओ से खेलना, अथच जो दिनो की रात कर देता है उत्तेजनाओ की दासता में, और रातो का दिन कर देता है गफलत की नीद में, और खा जाता है जो कुछ सामन आता है, और कह डालता है जो कुछ जुबान पर आता है, वह नास्तिक (अग्निपूजक) है—भले ही वह मुनिवेश में हो।

जामातुर्नेत्रचिकित्सा न कारयसि?' सोऽवदत्—

'बिभेमि प्राप्तदृष्टि स पुत्री त्यक्ष्यति निश्चयम्॥ १६॥'

अर्धाली

कुरूपायास्तु भार्याया नेत्रहीनो वरो वर।

आख्यायितम्—४६

कश्चिद् राजा तिरस्कारदृष्ट्या साधुमण्डली दृष्टवान्। तेषामेकश्चातुर्येण तदधिगतवान्। सोऽवदत्—'हे राजन्! वयमिह उपादानैस्त्वत्तो दरिद्रतरा, आनन्देन चाढ्यतरा, मरणेन समाना, परलोके च दिष्ट्या सम्पन्नतरा भविष्याम।'

गाथा

यदि दिग्विजयी राजा चाप्तकामो भवेत्तथा।
अटन्नपि न चाप्नोति भोजन यदि भिक्षुक॥ १६५॥
प्राप्ते मरणकाले तु ह्युभावेतौ प्रयास्यत।
शवाच्छदादृते किञ्चिन्न नीत्वा खलु यास्यत॥ १६६॥
यदा ह्यैश्वर्यससार सन्निकृष्ट विधास्यसि।
सम्भारभारहीनत्व राज्यभारात्प्रशस्यते॥ १६७॥

मुनीना वाह्य चिह्न तु कन्थापरिधान मुण्डित च मुण्डमिति, आन्तरिक पुनश्चैतन्य चित्तमचेतन च चेतोविकारमिति।

पदम्

नाऽसौ साधुरहकारी ससार य परित्यजेत्।
यदि कश्चिद् विरुन्धीत तेन सार्धं च युध्यते॥ १६८॥
अद्रे शृङ्गादकस्माच्च पतेद् यदि विराट् शिला।
न त साधु विजानीयात् ततो यस्तु पलायते॥ १६९॥

उपासना-कृतज्ञता-सेवा-पूजा-त्याग-सन्तोप-भक्तीश्वरविश्वास-सन्तोप-तितिक्षामूलको हि मुनिमार्ग। य एतैर्गुणै सम्पन्न स गृहस्थवेश दधानोऽपि तत्वत साधु। परन्तु यश्च सर्वत्र विहार, प्रार्थनाहीनता, कामोपसेवा, स्वैराचाञ्च कुरुते, यो हि कामाचारेणाह्नो रात्रि कुरुते प्रमादनिद्राया शर्वर्या दिन कुरुते, यथास्वैर भुङ्क्ते, यथास्वैर ब्रूते स मुनिवेश दधानोऽपि नास्तिक।

قطعه

ای درویت برهنه ار تقوی
کر بروں حامهٔ ریا داری!
پردهٔ هفت رنگ‌را نگدار
تو که در حانه بوریا داری *

कता (वहरे खफीफ)

ऐ दरूनत वरहना अज़ तक़्वा।
वज़ बरूँ जामाए रिया दारी॥
पर्दाए हफ्त रंग रा बिगुज़ार।
तो कि दर ख़ाना बोरिया दारी॥

مثنوی

دیدم گل تاره چند دسته
بر گسدی ار گیاه بسته *
گفتم - چه بود گیاه ناچیر
تا در صف گل نشیند او نیر؟
نگریست گیاه و گفت - خاموش
صحبت نکند کرم فراموش *
گر نیست حمال و رنگ و بویم
آحر نه گیاه باغ اویم؟
من بندهٔ حضرت کریمم
پروردهٔ نعمت قدیمم *
گر بی هنرم و گر هنرمند
لطفست امیدم ار حداوند *
با آں که بضاعتی ندارم
سرمایهٔ طاعتی ندارم -
او چارهٔ کار بنده داند
چوں هیچ وسیلتی نماند *
رسمیست که مالکاں تحریر
آزاد کنند بندهٔ پیر *
ای بار حدای عالم آرای!
بر بندهٔ پیر حود ببخشای!
سعدی! ره کعبهٔ رضا گیر!
ای مرد حدا - ره حدا گیر!
بد بخت کسی که سر بتابد
زیں در - که دری دگر نیابد *

मसनवी (बहरे हज़ज्-मुसद्दस)

दीदम् गुले ताज़ा चन्द दस्ता।
वर गुम्बज़े अज़ गियाह वस्ता॥
गुफ्तम्—चि बूद गियाहे नाचीज़।
ता दर सफे गुल नशीनद ऊ नीज़॥
बिगिरीस्त गियाह् ओ गुफ्त खामोश।
सुहबत न कुनद करम फरामोश॥
गर नेस्त जमालो रंगो बूयम्।
आखिर नै गियाहे बागे ऊयम्?
मन बन्दाए हज़रते करीमम्।
परवरदाए निअमते कदीमम्॥
गर बेहुनरम् व गर हुनरमन्द।
लुत्फ़'स्त उमीदम् अज़ खुदावन्द॥
बा आँ कि बिज़ाअते न दारम्।
सरमायाए ताअते न दारम्॥
ऊ चाराए कारे बन्दा दानद।
चूं हेच वसील्ते न मानद॥
रस्मे'स्त कि मालिकाने तहरीर।
आज़ाद कुनन्द बन्दाए पीर॥
ऐ बारे खुदाय! आलम आराय।
बर बन्दाए पीरे खुद ब बख़्शाय॥
सादी रहे काबाए रज़ा गीर।
ऐ मर्दे खुदा रहे खुदा गीर॥
बदबख़्त कसे कि सर बताबद।
ज़ी दर—कि दरे दिगर न यावद॥

क़ता

अरे! तेरा अभ्यन्तर पवित्रता से शून्य है।
कि वाहर से तू झूठ का कपडा पहनता है॥
इस सतरगे कपडे को जाने दे।
तू जो कि घर में मूंज की चटाई मात्र रखता है॥

मसनवी

मैंने कुछ ताजा गुलदस्ता देखे।
एक समूह में घास से वँधे हुए॥
मैंने कहा—कौन होती है यह नाचीज घास।
कि यह भी फूलो को कोटि में आ वैठे॥
घास रोकर वोली—'चुप रहो।
सगति को कृपा नही भूलती॥
यदि मुझ में रूप-रग और गन्ध नही है।
फिर भी मैं उसी के वाग की घास हूँ॥'
मैं भी दयालु स्वामी का दास हूँ।
पला हुआ हूँ प्राचीन कृपा से॥
भले ही मैं गुणहीन हूँ चाहे गुणवान्।
भगवत्कृपा पर मेरी आशा है॥
भले ही मैं विक्री का माल नही रखता।
भक्ति की पूंजी नही रखता॥
वह अपने वन्दो के काम का उपाय जानता है।
जव कि कोई उपाय नही रहता॥
प्रथा है कि लिखित दासपत्र के स्वामी।
आजाद कर देते हैं वृद्ध दास को॥
हे प्रभो! हे विश्व भूषण।
वृद्ध दास को स्वय मुक्त कर दो॥
हे सादी! कावा का सन्तोपमार्ग पकड।
हे ईश्वरभक्त! ईश्वर का मार्ग पकड॥
अभागा है वह आदमी जो कि सिर मोड लेता है।
इस द्वार से—क्योकि वह दूसरा द्वार नही पायगा॥

पदम्

अरे! पवित्रभावेन शून्योऽस्ति हृदय तव।
तथा कपटवेशोऽय वाह्यतो धृतवानसि॥ २००॥
सप्तवर्णोच्छ्रट पट्ट जहीहीद मनोहरम्।
त्वमन्त पुरराज्जाया धत्से मौञ्जमय कटम्॥ २०१॥

गाथा

सद्यो जातानि पुष्पाणि मया दृष्टानि चैकदा।
तृणगुच्छनिवद्धानि स्तवके चारुदर्शने॥ २०२॥
उक्त मयाऽथ किन्नाम तृणमेतदकिञ्चनम्।
पुष्पकोट्यामनेनापि कथमत्रोपविश्यते॥ २०३॥
वाष्पमुच्चारयद् व्रूते तृण—'मौन समाचर।
कृपया वञ्चितो न स्यान्नीचोऽपि श्रेष्ठसन्निधौ॥ २०४॥
सौन्दर्य न च रागश्च न गन्ध विद्यते मयि।
तथा सत्यपि तस्यैवारामस्यास्मि तृण किल'॥ २०५॥
किंकरोऽस्मि दयासिन्धोरीश्वरस्य जगत्पते।
पालित पोषितश्चास्मि ह्युपकारै पुरातनै॥ २०६॥
अपि चेद् गुणहीनोऽस्मि ह्यथवा गुणवान् महान्।
आशाभूमि कृपैकास्ति मत्कृते तु जगत्पते॥ २०७॥
सदर्घे प्रभुसेवाया वाणिज्य न च किञ्चन।
भक्तिवित्त प्रभोर्नाम्नो न दधामि कथञ्चन॥ २०८॥
स्वस्य दासस्य रोगस्य स जानाति क्रियाक्रमम्।
यदा न कोऽप्युपायेन सिद्धि सम्भाव्यते क्वचित्॥ २०९॥
लेखप्राप्ताधिकाराणा स्वामिनामस्ति पद्धति।
वृद्ध दास जराजीर्ण मोचयन्ति समन्तत॥ २१०॥
हे प्रभो! हे जगन्नाथ! भगवन्! विश्वभूषण!
जराजीर्णस्य दासस्य सर्वदोषान् क्षमस्व मे॥ २११॥
सादिन्! गृहाण कावायास्तोषमार्गमकण्टकम्।
भगवद्भक्त! मुख्योऽस्ति मार्गश्च परमात्मन॥ २१२॥
दुर्भग स जनो यश्च द्वारादस्मात् पराङ्मुख।
द्वारादस्माद् वहिर्भूतो द्वारमन्यन्न चाप्नुयात्॥ २१३॥

حکایت ۴۷

حکیمی‌را پرسیدند - که از شجاعت و سخاوت کدام فاضلترست؟ گفت - هر کرا سخاوتست - شجاعت حاجت نیست *

بیت

بنشست بر گور بهرام گور
که دست کرم به ز بازوی زور *
گرفتیم عالم بمردی و زور
و لیکن نبردیم با خود بگور *

قطعه

نماند حاتم طائی - و لیك تا باید
بماند نام بلندش به نیکوی مشهور *
زکاة مال بدرکن - که فضلهٔ رز را
چو باغبان ببرد - بیشتر دهد انگور *

हिकायत—४७

हकीमे रा पुरसीदन्द कि अज़ शुजाअत व सख़ावत कुदाम फाज़िलतर'स्त ? गुफ्त—' हर कि रा सख़ावत'स्त—व शुजाअत हाजत नेस्त ।'

वैत (वहरे मुतकारिव)

नविश्त'स्त वर गोरे वहराम गोर ।
कि दस्ते करम विह् जि वाज़ूए ज़ोर ।।
गिरिफ्तेम् आलम व मर्दी व ज़ोर ।
व लेकिन न वुर्देम् बा खुद व गोर ।।

कता (वहरे मुज्तश्)

न मांद हातिमे ताई वलेक ता बावद ।
बिमांद नामे बलन्दश् व नेकुई मशहूर ।।
ज़काते माल वदर कुन कि फुज़्लाए रिज़ रा ।
चु वाग़वां विवुरद वेशतर दिहद अगूर ।।

कथा—४७

एक पण्डित से लोगो ने पूछा कि वीरता और उदारता में कौनसी श्रेष्ठतर है? उसने कहा—जिसमें उदारता है उसे वीरता की ज़रूरत नही है।'

आख्यायितम्—४७

केचन जना कञ्चित्पण्डित पप्रच्छुरय—'किंस्विच्छ्रेय शौर्य-मुतौदार्यम्?' सोऽवदत्—'औदार्येण तु युक्तस्य न शौर्यस्य किल स्पृहा ॥ १७ ॥'

बैत

लिखा हुआ है समाधि पर बहराम गोर की।
उदारता का हाथ बाहुबल से श्रेष्ठ है॥
हमने जीत लिया था ससार पौरुष और बल से।
किन्तु उसे हम नही ले जा सके अपने साथ समाधि में॥

श्लोक

समाधौ बहरामस्य गोरस्यैतद् विलेखितम्।
'योद्धुर्भुजबलाद् दातुर्दोर्बल बलवत्तरम् ॥ २१४ ॥
अस्माभि पौरुषेणैतज्जित सर्वं जगन्नु।
तन्नास्माभि सम नेतु समाधाविह शेकिम' ॥ २१५ ॥

कता

नही रहा हातिम ताअी किन्तु सदैव।
रहेगा उसका ऊँचा नाम भलाई के लिये प्रसिद्ध॥
माल का ज़कात बाहर निकाल क्योंकि अगूर लता की फालतू वृद्धि को।
जब माली छाँट देता है तो वह अगूर ज्यादा देती है॥

पदम्

नैवाद्य विद्यते ताई हातिम किन्तु सर्वदा।
वितस्यते तस्य वै शश्वत् सद्वृत्तप्रथित यश ॥ २१६ ॥
वित्ताद् बलिर्बहिर्नेया यतो द्राक्षाफलानि च।
यथोद्यानपति कृन्तेत् तथा हि फलसञ्चय ॥ २१७ ॥

باب سوم

در فضیلت قناعت

حکایت ۱

خواهندهٔ مغربی در صف بزازان حلب میگفت - ''ای خداوندان نعمت! اگر شمارا انصاف بودی و مارا قناعت - رسم سؤال از جهان بر خاستی'' *

قطعه

ای قناعت! توانگرم گردان
که ورای تو هیچ نعمت نیست *
کنج صبر اختیار لقمانست
هرکرا صبر نیست حکمت نیست *

حکایت ۲

دو امیر زاده بودند در مصر * یکی علم آموختی و دیگری مال اندوختی * این علامهٔ عصر شد و آن عزیز مصر * پس توانگر بچشم حقارت در فقیه نظر کرد و گفت - ''من بسلطنت رسیدم و تو همچنان در مسکنت بماندی'' * گفت - ''ای برادر! شکر نعمت باری تعالی مرا می باید گفتن - که میراث پیغمبران یافتم - یعنی علم - و تو میراث فرعون - یعنی ملک مصر'' *

مثنوی

من آن مورم - که در پایم بمالند
نه زنبورم - که از نیشم بنالند *
چگونه شکر این نعمت گذارم؟
که زور مردم آزاری ندارم *

حکایت ۳

درویشی را دیدم که در آتش فاقه میسوخت - و خرقه بر خرقه میدوخت - و تسکین خاطر خود را میگفت *

बाबे सिवुम्

दर फज़ीलते कनाअत

हिकायत—१

ख्वाहिन्दाए मगरिबी दर सफे बज़्ज़ाज़ाने हलब मी गुफ्त—'ए ख़ुदावन्दाने निअमत! अगर शुमारा इन्साफ बूदे व मारा क़नाअत—रस्मे सवाल अज़ जहान बर ख़ास्ते।'

क़ता (बहरे खफीफ)

ए कनाअत! तवागरम् गरदान।
कि वराये तो हेच निअमत नेस्त।।
कुंजे सब्र इख्तियारे लुक़मान'स्त।
हर कि रा सब्र नेस्त हिकमत नेस्त।।

हिकायत—२

दू अमीरज़ादा बूदन्द दर मिस्र। यके इल्म आमोख्ते व दीगर माल अन्दोख्ते। ईं अल्लामाए अस्र शुद व आँ अज़ीज़े मिस्र। पस तवागर ब चश्मे हिकारत दर फकीह नज़र कद व गुफ्त—'मन् ब सल्तनत रसीदम् व तो हम चुनाँ दर मस्कनत बिमान्दी।' गुफ्त—'ए बिरादर शुक्रे निअमते बारी तआला मरा मीबायद गुफ्तन्—कि मीरामे पैग़म्बरान् याफतम्—यानी इल्म—व तो मीरामे फिरऔन—यानी मुल्के मिस्र।'

मसनवी (बहरे हजज्)

मन आँ मोरम् कि दर पायम् बमालन्द।
नै ज़म्बूरम् कि अज़ नेशम् बनालन्द।।
चुगूना शुक्रे ईं निअमत गुज़ारम्।
कि ज़ोरे मर्दुमाज़ारी न दारम्।।

हिकायत—३

दरवेशे रा दीदम् कि दर आतिशे फाका मी सोख्त—व खिरका बर खिरका मी दोख्त—व तसकीने खातिरे खुद रा मी गुफ्त।

तीसरा अध्याय

सन्तोष की महिमा के विषय में

कथा—१

एक पश्चिमी याचक हलव के बजाजो के बाज़ार में कह रहा था—'हे महाजनो! यदि तुम में न्याय होता और हम में सन्तोष, तो माँगने की प्रथा दुनियाँ से उठ जाती।'

क़ता

हे सन्तोष मुझे धनी बना दे।
कि तुझसे बडी कोई सम्पत्ति नही है।।
सन्तोष का एकान्त स्वीकार करना लुकमान का आदेश है।
जिसे सन्तोष नही है उसे बुद्धि नही है।।

कथा—२

दो अमीरज़ादे थे मिस्र में। एक विद्या पढ़ता था और दूसरा धन जोडता था। यह अपने युग का महान् विद्वान् हुआ और वह मिस्र का राजा। फलत समृद्ध (भाई) ने घृणा की आँख से धर्म-शास्त्री पर दृष्टि डाली और कहा—'मैं राज्य तक पहुँचा और तू वैसा ही दीन है।' विद्वान् बोला—'हे भाई! मुझे महान् प्रभु के उपकार की कृतज्ञता कहनी चाहिये—कि मुझे पैगम्बरो का उत्तराधिकार मिला अर्थात् ज्ञान, और तुझे फिरऔन का उत्तराधिकार यानी मिस्र देश।'

मसनवी

मैं वह चीटी हूँ कि जिसे पैरो तले रौंद दें।
मैं भिड नहीं हूँ कि मेरे डक से लोग बिलबिलाएँ।।
मैं किस प्रकार इस कृपा का धन्यवाद करूँ।
कि मनुष्यों को सताने की शक्ति नही रखता हूँ।।

कथा—३

मैंने एक साधु को देखा कि भूख की आग में जल रहा था—और थेगली पर थेगली सी रहा था, और अपने मन को समझाने के लिये कह रहा था—

तृतीयोऽध्यायः

सन्तोषस्य महत्तायाम्

आख्यायितम्—१

कश्चित्पाश्चात्यो याचक हलबपुरे वस्त्रव्यवसायिनामापणे परिवक्ति स्म—'हे महाजना! यदि भवन्तो न्यायशीला अभविष्यन् वय च सन्तोषशीला अभविष्याम तर्हि याचितस्य परम्परैव जगत प्राणङ्क्ष्यत्।'

पदम्

अहो, सन्तोष! एतर्हि सन्तोषाढ्य विधेहि माम्।
न समृद्धतर त्वत्तो धन किञ्चन विद्यते।।१।।
सन्तोषमुत वैराग्य लोकमान्य उपादिशत्।
यस्य नास्तीह सन्तोषो बुद्धिस्तस्य न च ध्रुवम्।।२।।

आख्यायितम्—२

अथैकदा द्वौ महाजनपुत्रौ मिश्रदेशे निवसत स्म। तयोरेको विद्यामधीतेऽन्यतरश्च धन सगृह्णाति स्म। प्रथम स्वस्य युगस्य प्रथितकीर्तिविद्वानभूत्, अपरश्च मिश्रदेशाधिपति। एकदा समृद्धो भ्राता धर्मशास्त्रिणमवज्ञया दृष्ट्वोवाच—'अह राज्यपदमापम् त्वञ्च पूर्ववद् दरिद्र।' सोऽवदत्—'हे भ्रातर्! अह परमात्मनोऽनुग्रहपात्र यदह मुनीनामुत्तराधिकार लब्धवान्, अर्थाद् विद्याम्, त्वञ्च फिरऔनस्योत्तराधिकारमर्थान् मिश्रदेशमिति।'

गाथा

अह पिपीलकल्पोऽस्मि पादसञ्चारनश्वर।
नाह वरटसङ्काशो यत् कुर्यां दशविह्वलम्।।३।।
कि कृत्वाऽस्या कृपायास्तु धन्यवाद करोम्यहम्।
परपीडनसामर्थ्यं नृणां न दधाम्यहम्।।४।।

आख्यायितम्—३

मया कश्चित् साधुर्दृष्टो बुभुक्षानले ज्वलन्, स्यूता कन्था पुनरपि सीव्यन्, आत्मनश्चेतस्तोषार्थं ब्रुवाणोऽथ—

بیت

سان حشك قناعت کیم و حامهٔ دلق
که بار محنت حود به ر بار ست حلق *

कسی گفتش - ''چا سنیی؟ که فلاں در اس شہر طبعی کریم دارد و کرمی عمیم - میاں خدمت آرادگاں ستہ است و بر در دلہا سشستہ - اگر بر صورت حال چنانکه هست وقوف یابد - پاس حاطر عزیرت را منت دارد و غنیمت شمارد'' * گفت - ''حاموش - که در گرسگی مردں به که حاحت پیش کسی بردں'' *

قطعه

هم رقعه دوحتں به و الرام کنح صبر
کر بهر حامه رقعه بر حواحگاں بوشت *
حقا - که با عقوبت دورح برابرست
رفتں بپای مردئ همسایه در بهشت *

حکایت ۴

یکی ار ملوك عجم طبیبی حادق بخدمت مصطفی (صلی الله علیه و سلم) فرستاد * سالی در دیار عرب بود - کسی تجربتی پیش او بیامد و معالحتی بخواست * روری بیش پیعمبر (صلی الله علیه و سلم) آمد و گله کرد - که مرا برای معالجت اصحاب فرستاده اند و کسی در ایں مدت التفاتی بکرد - تا حدمتی - که بر اس بنده معیں است - بحای آورد * رسول صلعم فرمود - ''که ایں طائفهرا طریقی است - که تا ایشاں‌را گرسگی عالب نشود - چیری بخورند - و هنور اشتها باقی بود که دست ار طعام بدارند'' * حکیم گفت - ''موحب تندرستی همیںست'' * رمیں خدمت ببوسید و برفت *

مثنوی

سحں آنگه کند حکیم آعار
یا سر انگشت سوی لقمه درار -

बैत (बहरे मुज्तस्)

ब नाने सुश्क क़नाअत कुनैगो जामाए दल्क़।
कि वारे मिहनते खुद बिह् ज़ि बारे मिन्नते ख़ल्क़॥

कसी गुफ़्तश्—'चि नशीनी? कि फ़लाँ दर ईं शह्र तबए करीम दारद व करमे अमीम। मियान ब खिदमते आज़ादगान् बस्ता अस्त—व बर दरे दिल्हा निशस्ता—अगर बर सूरते हालत चुनाँ कि हस्त वक़्फ़ यावद—पासे ख़ातिरे अज़ीज़त रा मिन्नत दारद व ग़नीमत शुमारद।' गुफ़्त—'ख़ामुश कि दर गुरुसनगी मुर्दन् बिह् कि हाजत पेशे कसी बुर्दन्।'

क़ता (बहरे मुज़ारी)

हम रुक़आ दोख़्तन् बिह् ओ इल्ज़ामे कुंजे सब्र।
कज़ बहरे जामा रुक़आ बरे ख़्वाजगाँ नविश्त॥
हक़्क़ा कि बा उक़ूबते दोज़ख़ बराबर'स्त।
रफ़्तन् ब पाये मर्दिये हमसाया दर बहिश्त॥

हिकायत—४

यके अज़ मुलूके अजम तबीबे हाज़िक़ ब खिदमते मुस्तफा (सल्ल'ल्लाहु अलैहि व सल्लम्) फ़िरिस्ताद। साले दर दयारे अरब बूद। कसे ब तज्रिबते पेशे ऊ नयामद व मुआलजते न ख़्वास्त। रोज़े पेशे पैग़म्बर (सल्ल'ल्लाहु अलैहि व सल्लम्) आमद व गिला कर्द—कि मरा बराये मुआलजत असहाब फ़िरिस्तादा अन्द व कसे दर ईं मुद्दत इल्तिफ़ाते न कर्द। ता ख़िदमते कि बर ईं बन्दा मुअय्यन अस्त—बजा आवरद। रसूल सलअम फ़रमूद कि ईं तायफ़ाय रा तरीक़े अस्त कि ता ऐशान् रा गुरुसनगी ग़ालिब न शवद—चीज़े न ख़ुरन्द व हनोज़ इश्तिहा बाक़ी बुवद कि दस्त अज़ तआम बदारन्द। हकीम गुफ़्त—'मूजिबे तन्दुरुस्ती हमीन'स्त।' ज़मीने ख़िदमत बिबोसीद व बिरफ़्त।

मसनवी (बहरे ख़फ़ीफ़)

सुख़न आँगह कुनद हकीम आग़ाज़।
या सरे अंगुश्त सूये लुक़्मा दराज़॥

बैत

हम रूखी रोटी से सन्तोष करेंगे और गुदड़ी से।
क्योंकि अपने कष्टों का भार लोगों के उपकार भार से अच्छा है ॥

किसी ने उस से कहा—'क्या बैठा है ? अमुक व्यक्ति इस नगर में कृपा भाव और दया रखता है। और कमर बांधकर त्यागियों की सेवा में लगा रहता है। और दिलों के द्वार पर बैठा है। यदि उसे तुम्हारी अवस्था का पता चले तो तुम्हारे प्रिय चित्त की दिल जोयी करने का अवसर पाना सौभाग्य समझेगा और गनीमत मानेगा।' उस ने कहा—'चुप रहो! क्योंकि भूखों मर जाना—अपनी आवश्यकता किसी के सामने बताने से—अच्छा है।'

श्लोक

वरं शुष्कमपूपार्या तुष्टाश्च जीर्णकन्थया।
दयाभाराद्धि लोकस्य दुःखभारोऽल्पदुःसहः ॥ ५ ॥

कश्चित् तमवदत्—'कथं निरारम्भस्तितिक्षसे ? अस्यामुको जनोऽस्यां पुर्यां सर्वभूतदयारतः, अतिकृपालुः, साधुसेवायां बद्धकटिः, सर्वेषां हृदि निविष्टोऽस्ति। यदि स तावकीनामवस्थां जानीयात् स तव चित्तं प्रसादयितुं स्वस्य सौभाग्यं मंस्यते।' सोऽवदत्—'अलं-मुक्तेन! बुभुक्षामरणं श्रेयो गमनं न च याचितुम्।'

क़ता

रोटी पर पैबन्द लगाना और सन्तोष के कोने में बैठना अच्छा है।
कपड़ा के लिये धनियों को प्रार्थनापत्र लिखने से ॥
वास्तव में यह नरक यातना के समान है।
क्योंकि तो मर्दुमी के पैरों से जाना स्वर्ग में ॥

पदम्

अपि स्यूतं पुरः स्यूतं तथा चैकान्तसेवनम्।
वरं न वाससो हेतो प्रार्थनापत्रप्रेषणम् ॥ ६ ॥
रौरवीयातनातुल्यं प्रोक्तं चैतद्धि वस्तुतः।
स्वर्गे चारोहणं चापि साहाय्येन तु कस्यचित् ॥ ७ ॥

कथा—४

ईरान के एक राजा ने एक निष्णात चिकित्सक को मुहम्मद मुस्तफा (परमात्मा उन्हें शान्ति दे) की सेवा में भेजा। एक वर्ष तक वह अरब देश में रहा। कोई व्यक्ति उसके पास जाँच के लिये नहीं आया और न चिकित्सा चाही। एक दिन वह पैगम्बर (उन पर शान्ति हो) के सामने आया और क्षोभ व्यक्त किया कि चिकित्सा के लिये स्वामियों ने मुझे भेजा और किसी आदमी ने अब तक कृपा नहीं की। जिससे कि जिस सेवा पर यह दास नियुक्त है वह पूरी हो सके। रसूल सलाम ने फरमाया कि—'इस जाति की एक पद्धति है कि जब तक इन पर भूख गालिब न हो, ये कुछ नहीं खाते और जब क्षुधा कामना शेष रहे तो भोजन से हाथ खींच लेते हैं।' चिकित्सक ने कहा—'स्वास्थ्य का हेतु यही है।' उसने सेवा भूमि को चूमा और चला गया।

आख्यायितम्—४

पारसीकदेशाधिपतिः कञ्चिन्निष्णातं भिषजं मुहम्मदमुस्तफं (स्वस्त्यस्तु तस्मै सदा) सेवायां प्राहिणोत्। वर्षैकं यावत् स अरब-देशमुवास। परं कोऽपि जनश्चिकित्सार्थं तं न प्रापन्न च रोगं न्यवेदयत्। एकदा स देवदूतस्य पुरत आगत्य स्वस्य क्षोभं व्यनक्त्यथ—'चिकित्सार्थं स्वामिना मामिह प्राहिण्वन् न च कश्चित् ततः प्रभृति मामागात्, यतो यस्यां सेवायामयं दासो नियुक्तस्तत् कार्यं निर्वाहमेतु।' देवदूत उवाच—'अस्माकं ज्ञातिवर्गस्य परम्परा तावदियमथ यावदेते क्षुधाकुला न स्युः, नैते किञ्चिदपि भोक्तुमुत्सहन्ते, अथ च यावद् बुभुक्षा-शेषा विरतभोजना भवन्ति।' चिकित्सको ब्रूते—'अयमेव स्वास्थ्यस्य हेतुरिति।' तदा स सेवाभूमिं चुचुम्ब ततो निर्जगाम।

मसनवी

बोलना तब करता है पण्डित पुरुष।
या उँगलियाँ ग्रास की ओर फैलाना ॥

गाथा

पण्डिता वचनानश्च यावत् प्रक्रमते तदा।
हस्तमुन्नयते भोक्तुं तथा च भोजनं प्रति ॥ ८ ॥

کی ر ناگفتنش خلل زاید
یا ز ناخوردنش بجان آید ۔
لاجرم حکمتش بود گفتار
خوردنش تندرستی آرد بار *

कि ज़ि नागुफ़्तनश् ख़लल् ज़ायद।
या ज़ि नाख़ुर्दनश् ब जाँ आयद॥
लाजरम हिकमतश् बुवद गुफ़्तार।
ख़ुर्दनश् तन्दुरुस्ती आरद बार॥

حکایت ۵

در سیرت اردشیر بابکان آمده است ۔ که حکیم عرب را پرسید ۔ ''که روزی چه مقدار باید خوردن''؟ گفت ۔ ''صد درم سنگ کفایت کند * گفت ۔ این مقدار چه قوت دهد''؟ حکیم گفت ۔ ''هٰذَا الْمِقْدَارُ یَحْمِلُكَ وَ مَا زَادَ عَلَیٰ ذٰلِكَ فَأَنْتَ حَامِلُهُ'' ۔ یعنی ۔ این قدر ترا بر پای دارد ۔ و هر چه بر این زیاده کنی تو حمال آنی *

हिकायत—५

दर सीरते अर्दशेर बाबकान आमदा अस्त—कि हकीमे अरब रा पुरसीद—'कि रोज़े चि मिक़दार बायद ख़ुरदन्?' गुफ़्त—'सद दिरम सग किफ़ायत कुनद।' गुफ़्त—'ईं मिक़दार चि कुव्वत दिहद?' हकीम गुफ़्त—'हाज़'ल् मिक़दारु यह्‌मिलुक व मा ज़ाद अला ज़ालिक फ अन्त हामिलुहू।' यानी ईं क़दर तुरा बर पाय दारद—व हर चि बर ईं ज़ियादा कुनी तो हम्माले आनी।

بیت

خوردن برای زیستن و ذکر کردنست
تو معتقد که زیستن از بهر خوردنست *

बैत (बहरे मुज़ारी)

ख़ुरदन् बराय ज़ीस्तन ओ ज़िक्र करदन'स्त।
तो मौतक़िद कि ज़ीस्तन'ज़ बहरे ख़ुरदन'स्त॥

حکایت ۶

دو درویش خراسانی در ملازمت صحبت یکدگر سیاحت کردندی * یکی ضعیف بود ۔ که روزه داشتی و بعد از دو شب افطار کردی ۔ و دیگری قوی ۔ که روزی سه بار خوردی * قضارا بر در شهری بتهمت جاسوسی گرفتار آمدند ۔ و هر دورا حبس کردند و در زندان بگل بر آوردند * بعد از دو هفته معلوم شد که بی گناه اند * در بگشادند ۔ قوی‌را دیدند مرده و ضعیف جان بسلامت برده * درین عجب ماندند * حکیمی گفت ۔ ''اگر بر خلاف آن بودی تعجب بودی ۔ زیراکه این بسیار خوار بود ۔ طاقت بی نوائی نیاورد و بسختی هلاك شد ۔ و آن دیگر خویشتن‌دار بود ۔ بر عادت خود صبوری کرد و بسلامت ماند'' *

हिकायत—६

दु दरवेशे ख़ुरासानी दर मुलाज़मते सुहबते यक दिगर सियाहत करदन्दे। यके ज़ईफ़ बूद—कि रोज़ा दाश्ते व बाद अज़ दु शब इफ़्तार करदे—व दीगरे क़वी कि रोज़े सिह बार ख़ुर्दे। क़ज़ा रा बर दरे शहरे ब तुहमते जासूसी गिरिफ़्तार आमदन्द—व हर दुरा हब्स करदन्द व दरे ज़िन्दान ब गिल बर आवुर्दन्द। बाद अज़ दु हफ़्ता मअ्लूम शुद कि बेगुनाह अन्द। दर बुकुशादन्द—क़वी रा दीदन्द मुर्दा व ज़ईफ़ जान ब सलामत बुर्दा। दर ईं अजब मान्दन्द। हकीमे गुफ़्त—'अगर बर ख़िलाफ़े आँ बूदे तअ्ज्जुब बूदे—ज़ीरा कि ईं बिस्यार ख़्वार बूद—ताक़ते बेनवाई नयावुर्द व ब सख़्ती हलाक शुद। व आँ दीगर ख़ेशतनदार बूद—बर आदते ख़ुद सबूरी कर्द व ब सलामत मांद।'

कि जब उसके न बोलने से हानि होती हो।
या उसके न खाने से जान पर आ बनती हो॥
बेशक (तभी) उसका बोलना पाण्डित्य होता है।
(तभी) उसका भोजन स्वास्थ्य का कारण होता है॥

यदा मौनेन हानिः स्यात् तस्य चानुवतो ध्रुवम्।
अभोजनेन चैतस्य जायेत प्राणसंशय ॥ ९॥
अत एव हि तस्योक्त जायते बुद्धिसङ्गतम्।
अत एवास्यभुक्तञ्च जायते स्वास्थ्यकारणम् ॥ १०॥

कथा—५

अदशेर बाबका के गुण वर्णन में (उल्लेख) आता है कि उसने अरब के एक हकीम से पूछा कि—'एक दिन में कितना परिमाण खाना चाहिये?' उसने कहा—'सौ दिरम भर काफी है।' अदशेर ने कहा—'यह परिमाण क्या शक्ति देगा?' पण्डित ने कहा—'यह परिमाण खड़ा रखेगा तुझे और जो भी इससे अधिक हो तो तू उसका बोझा ढोने वाला होगा।' अर्थात् इतना खाना तुझे पैरों पर खड़ा रखेगा और जो भी तू इससे ज्यादा खायेगा वह तुझ पर बोझा होगा।

आख्यायितम्—५

अदशेर बाबकास्य गुणाख्याने वर्णितमथासौ कञ्चिदरबदेशीय पण्डित पप्रच्छाय—'कियन्मानमन्न दिनैके भोज्यम्?' सोऽवदत्—'शतकर्षमात्रेण पर्याप्तिर्भविष्यति।' असौ ब्रूते—'का शक्तिरनेन परिमाणेन भविष्यतीति?' सोऽवदत्—'एतच्च परिमाण ते पादयो स्थापयिष्यते। अतोऽधिकस्य भुक्तस्य भारीयस्त्व भविष्यसि॥ १॥' अर्थात्—इद परिमाण त्वा सुस्थित धारयिष्यति, अतोऽधिक भारभूत भविष्यति।

बैत

भोजन जीवन और ईश्वर प्रार्थना के लिये है।
तेरा विश्वास है कि जीवन खाने के लिये है॥

श्लोक

भोजन प्राणरक्षायै भजनाय च कल्पितम्।
त्व विश्वसिष्यदो जन्म भोजनाय हि कल्पितम् ॥ ११॥

कथा—६

दो खुरासानी साधु एक दूसरे की संगति की सेवा में भ्रमण कर रहे थे। एक दुर्बल था क्योंकि उपवास रखता था और दो रात के बाद उद्यापन करता था और दूसरा बलिष्ठ क्योंकि एक दिन में तीन बार खाता था। संयोग से (दोनों) एक नगर में जासूसी के आरोप में पकड़े गये और दोनों को कारागार में डाल दिया गया। और कारागार का द्वार मिट्टी से लीप दिया गया। दो सप्ताह पश्चात् ज्ञात हुआ कि (दोनों) निरपराध हैं। द्वार खोला गया—बलिष्ठ को देखा कि मर गया और दुर्बल जान तो सलामती से लिये है। इससे बड़ा आश्चर्य किया। एक पण्डित ने कहा—'यदि इसके विपरीत होता तो आश्चर्य होता। चूंकि यह बहुभोजी था, भोजन के अभाव की सहनशक्ति नहीं रखता था, अतः कष्ट से मर गया और वह दूसरा आत्मनिग्रही था, अपने अभ्यास के अनुसार सन्तोष कर गया और सुरक्षित रहा आया।'

आख्यायितम्—६

खुरासानदेशीयौ द्वौ साधू चान्योन्य सेव्यमानौ भ्रेमतु। तयोरेकतर कृश आसीत्, यत स उपवासशील आसीत् द्विरात्रमतिलङ्घ्य च अतस्योद्यापन चक्रे, अन्यतरस्तु पीनो यत स प्रत्यहस्त्रिकृत्वो बुभुजे। दैवयोगात् तौ कस्मिश्चिन्नगरे प्रणिधिचारत्वस्य चारोपे निगृहीतौ। उभावपि कारागारे निवेशितौ। काराद्वार मृत्तिकालेपेन पिहितम्। पक्षे व्यतीते इद ज्ञातमथ उभावपि निर्दोषावास्ताम्। द्वारमुद्घाटितम्। तयो पीवरो मृत आसीत्, कृशश्च प्राणान् सुरक्षितानर्नैपीत्। द्रष्टारस्तत्र विस्मयमागता। कश्चित् पण्डितोऽवदत्—'अतो विपरीत विस्मयहेतुरभविष्यद्, यतोऽस्य बहुभोजी आसीदतो लघन सामर्थ्यं न दधे, कष्टापन्नो ममार। अन्यतरोऽयमात्मनिग्रहवान् आसीत्, आत्मनोऽभ्यासात् सन्तोष कृतवास्तात सुरक्षित आसीदिति।'

قطعه

چو کم خوردن طبیعت شد کسی را
چو سختی پیشش آید ـ سهل گیرد *
و گر تن پرورست اندر فراخی
چو تنگی بیند ـ از سختی بمیرد *

بیت

تنور شکم دم بدم تافتن
مصیبت بود روز نا یافتن *

حکایت ۷

یکی از حکما پسر را نهی کردی از خوردن بسیار ـ که سیری شخص را رنجور کند * گفت ـ ''ای پدر! گرسنگی مردم را بکشد * نشنیدهٔ؟ که ظریفان گفته اند ـ که بسیری مردن به که بگرسنگی جان سپردن'' * پدر گفت ـ ''اندازه نگهدار *

قَولُهُ تعالی ـ كُلُوا وَ اشْرَبُوا وَ لا تُسْرِفُوا'' *

بیت

نه چندان بخور کز دهانت بر آید
نه چندان که از ضعف جانت بر آید *

قطعه

با آن که در وجود طعامست حظ نفس
رنج آورد طعام که بیش از قدر بود *
گر گلشکر خوری بتکلف ـ زیان بود
ور نان خشك دیر خوری ـ گلشکر بود *

حکایت ۸

رنجوری را گفتند ـ که دلت چه میخواهد؟ گفت ـ ''آنکه دلم چیزی نخواهد'' *

بیت

معده چو بر گشت و درون درد خاست
سود ندارد همه اسباب راست *

कता (वहरे हज़ज)

चु कम खुरदन तबीअत शुद कसी रा।
चु सख्ती पेशश् आयद—सहल गीरद।।
वगर तन परवर'स्त अन्दर फराखी।
चु तंगी बीनद—अज़ सख्ती बिमीरद।।

वैत (वहरे मुतक़ारिब)

तनूरे शिकम दम ब दम ताफ़तन्।
मुसीबत बुवद रोज़े नायाफ़तन्।।

हिकायत—७

यके अज़ हुकमा पिसर रा नही कर्दे अज़ खुरदने बिस्यार कि सेरी शख़्स रा रंजूर कुनद। गुफ्त—'ऐ पिदर! गुरुसनगी मर्दुम रा बिकुशद। न शुनीदई कि ज़रीफ़ान गुफ्ता अन्द कि—ब सेरी मुर्दन् बिह् कि ब गुरुसनगी जान सिपुर्दन्?' पिदर गुफ्त—'अन्दाज़ा निगह्दार!

कौलुहू तआला—कुलू व'श्रबू व ला तुस्रिफू।'

वैत (वहरे मुतक़ारिब)

नै चन्दाँ बिखुर कज़ दहानत वर आयद।
नै चन्दाँ कि अज़ ज़ोफ़ जानत वर आयद।।

क़ता (वहरे मुज़ारी)

बा आँ कि दर वजूदे तआम'स्त हज़्ज़े नफ़्स।
रंज आवुरद तआम कि बेश अज़ क़दर बुवद।।
गर गुलशकर खुरी ब तकल्लुफ़ ज़ियाँ बुवद।
वर नाने खुश्क देर खुरी गुलशकर बुवद।।

हिकायत—८

रंजूरे रा गुफ्तन्द—कि दिलत चि मी ख्वाहद? गुफ्त—'आँ कि दिलम् चीज़े न ख्वाहद।'

वैत (वहरे सरी)

मेदा चु बर गश्तो दरूँ दर्द ख़ास्त।
सूद न दारद हमा असबाबे रास्त।।

कता

जब सूक्ष्म भोजन किसी व्यक्ति का स्वभाव बन जाय।
तो जब उसके सामने कष्ट आये तो उसे सरलता से लेता है॥
और यदि देहपरायण हो प्राचुर्य काल में।
जब अभाव दखता है तो कष्ट से मर जाता है॥

बैत

पेट के चूल्हे को थोड़ी थोड़ी देर में तपाना।
मुसीबत हो जाता है अभाव के दिनों में॥

कथा—७

एक पण्डित ने बेटे को अधिक खाने से मना किया क्योंकि तृप्ति आदमी को रुग्ण करती है। पुत्र ने कहा—'हे पिता! भूख आदमी को मार डालती है। क्या नहीं सुना कि प्रवीण कह गये हैं—"तृप्ति से मरना अच्छा कि भूख से जान देना"?' बाप ने कहा—'अन्दाज रखना है।' भगवद्वचन—'तू खा और पी और मत अपव्यय कर।'

बैत

न इतना खा कि तेरे मुंह से बाहर निकल आये।
न इतना कि निर्बलता से तेरी जान निकल जाये॥

कता

इसके होते हुए भी कि भोजन में प्राण का सुख निहित है।
रोग लाता है भोजन जब कि परिमाण से अधिक होता है॥
यदि तू गुलशकर खाये तकल्लुफ से—तो हानि होगी।
और यदि रूखी रोटी देर से खाये तो वही गुलशकर होगी॥

कथा—८

एक बीमार से लोगों ने पूछा—कि तेरा दिल क्या चाहता है?
उसने कहा—'यही कि मेरा दिल कुछ न चाहे।'

बैत

जब पेट रुंधा हुआ हो और उसमें दर्द उठता हो।
भलाई नहीं रखती सारी अच्छी चीजें॥

पदम्

यदा प्रकृतिमापन्ना सूक्ष्मभोजनशीलता।
प्राप्ते कठिनकाले ना दुष्कालमतिवाहयेत्॥ १२॥
परन्तु यदि वैपुल्यात्पुष्टदेहो भवेन्नर।
दुर्दिनन्त्वागत वीक्ष्य कष्टार्तिम्या प्रणश्यति॥ १३॥

श्लोक

भाण्ड जठरकोष्ठस्य ज्वालन च क्षणे क्षणे।
कष्टहेतुर्भवत्येव यदा न लभतेऽशनम्॥ १४॥

आख्यायितम्—७

कश्चित् पण्डित स्वीय पुत्रमध्यशनान् निवारयामास यत आतृप्ति भोजन पुमास रुग्ण विदधाति। पुत्रोऽब्रवीत्—'हे पित! क्षुधा पुमासो म्रियते। न किं श्रुतवानसि यथाहुर्विद्वास—'प्रीणितो मरण श्रेयो न चैव मरण क्षुधा।' पिता ब्रूते—'अनुगन्यस्व त्व स्वयम्।' भगवद्वचनम्—'अन्न भुङ्क्ष्व पिब त्यापो मा कुरुष्व ह्यपव्ययम्॥ २॥'

श्लोक

न तथा भोजन भुङ्क्ष्व यद् वक्त्राद् बहिरागतम्।
न तथा चैव दौर्बल्यात् प्राणा स्यु कण्ठनिष्ठिता॥ १५॥

पदम्

अपि चेज्जीवलोकस्य ह्यन्नायत्त सुख स्मृतम्।
तदेव कुरुते रोगमतिमात्रेण सेवितम्॥ १६॥
बुभुक्षया विना भुक्ताऽप्यपकाराय शर्करा।
चिराद् भुक्ता पर स्वाद्वी शुष्काऽपि करपट्टिका॥ १७॥

आख्यायितम्—८

कश्चिद् रुग्ण केचन पृष्टवन्तोऽथ—'किं ते कामयते चेत?' सोऽवदत्—'कामयेय न किञ्चन।'॥ ३॥

श्लोक

उदरे पूरिते भोज्यैर्यदा शूलोऽभिजायते।
न भद्र वीक्षते रोगी सर्व क्षेममय जगत्॥ १८॥

حکایت ۹

بقالی را درمی چند بر صوفیان گرد آمده بود * هر روز مطالبه کردی و سخنهای با خشونت گفتی * اصحاب از تعنت او خسته خاطر همی‌بودند - و جز تحمل چاره نبود * صاحب دلی شنید - بخندید و گفت - "نفس را وعده دادن بطعام آسانترست که بقال را بدرم" *

قطعه

ترک احسان خواجه اولیتر
کاحتمال جفای بوابان *
بتمنای گوشت مردن به
که تقاضای زشت قصابان *

حکایت ۱۰

جوانمردی را در جنگ تاتار جراحتی هولناک رسید * کسی گفتش - "فلان بازرگان نوشدارو دارد - اگر بخواهی - باشد که قدری بدهد" * و گویند که آن بازرگان به بخل چنان معروف بود که حاتم طائی بسخا *

بیت

گر بجای نانش اندر سفره بودی آفتاب
تا قیامت روز روشن کس ندیدی در جهان *

جوانمرد گفت - "نوشدارو از وی نخواهم - که بدهد یا ندهد - اگر دهد - منفعت کند یا نکند * باری خواستن ازو کشنده است" *

بیت

هر چه از دونان بمنت خواستی
در تن افزودی و از جان کاستی *

حکما گفته اند - "اگر آب حیات فروشند - فی المثل - بآب روی - دانا نخرد - که مردن بعلت به از زندگی بذلت" *

بیت

اگر حنظل خوری از دست خوشخوی
به از شیرینی از دست ترش روی *

हिकायत—९

वक़्क़ाले रा दिरमे चन्द बर सूफ़ियान गिर्द आमदा बूद। हर रोज़ मुतालबा कर्दे व सुख़ुनहाय बा ख़ुशूनत गुफ़्ते। असहाब अज़ तअन्नुते ऊ ख़स्ता ख़ातिर हमी बूदन्द व जुज़ तहम्मुल चारा न बूद। साहिब दिले बिशुनीद—बिख़न्दीद व गुफ़्त—'नफ़्स रा वअदा दादन् ब तआम आसानतर'स्त कि बक़्क़ाल रा ब दिरम्।'

कता (बहरे ख़फ़ीफ़)

तर्के अहसाने ख़्वाजा औलातर।
काह्तिमाले जफ़ाए बव्वाबान्॥
ब तमन्नाए गोश्त मुर्दन् बिह्।
कि तक़ाज़ाए ज़िश्ते क़स्साबान्॥

हिकायत—१०

जवाँमर्दे रा दर जंगे तातार जराह्ते हौलनाक रसीद। कसे गुफ़्तश्—'फ़लाँ बाज़रगान् नोशदारू दारद—अगर बिख़्वाही—बाशद कि क़दरे ब दिहद। व गोयन्द कि आँ बाज़रगान् ब बुख़्ल चुनाँ मारूफ़ बूद कि हातिमे ताई ब सख़ा।

बैत (बहरे रमल)

गर बजाये नानश् अन्दर सुफ़रा बूदे आफ़ताब।
ता क़यामत रोज़े रोशन कस न दीदे दर जहान॥

जवाँ मर्द गुफ़्त—'नोशदारू अज़ वै न ख़्वाहम् कि बदिहद या न दिहद—अगर दिहद—मुनफ़अत कुनद या न कुनद। बारे ख़्वास्तन् अज़ू कुशिन्दा अस्त।'

बैत (बहरे रमल)

हर चि अज़ दूनाँ ब मिन्नत ख़्वास्ती।
दर तन अफ़ज़ूदी व अज़ जाँ कास्ती॥

हुकमा गुफ़्ता अन्द—'अगर आबे हयात फ़िरोशन्द—फ़िल् मसल—ब आबरू—दाना न ख़ुरद—कि मुर्दन् ब इल्लत बिह् अज़ ज़िन्दगानी ब ज़िल्लत।'

बैत (बहरे हज़ज्)

अगर हन्ज़िल ख़ुरी अज़ दस्ते ख़ुशख़ूय।
बिह् अज़ शीरीनी अज़ दस्ते तुरुश् रूय॥

कथा—९

एक वणिक के कुछ दिरम सूफियों पर निकलते थे। वह प्रतिदिन तकाजा करता था और अनेक बातें रूखेपन से बोलता था। त्यागी लोग उसकी झिड़कियों से भग्नचित्त हो गये और सहने के सिवा चारा न था। एक ज्ञात ने (यह) सुना तो हँसा और कहा—'अपने चित्त को भोजन के वायदे से बहला देना ज्यादा आसान है वणिक को दिरम के वायदे से बहलाने से।'

क़ता

श्रीमन्ता के अनुग्रह को छोड़ना श्रेष्ठ है।
[illegible] भी कसाई सहन से ॥
मांस की अभिलाषा में मर जाना अच्छा।
कसाइयों का कड़ा तकाजा (सहने) से ॥

कथा—१०

एक योद्धा को तातार युद्ध में एक भयंकर घाव लगा। किसी ने उससे कहा—'अमुक व्यापारी के पास दवा है, यदि तू माँगे तो हो सकता है थोड़ी सी दे दे।' और कहते हैं कि वह व्यापारी कंजूसी के लिये इतना ही प्रसिद्ध था जितना कि हातिम ताई उदारता के लिये।

बैत

यदि रोटी के बजाय उसके दस्तरख़्वान पर सूरज होता।
प्रलय तक चमकीला दिन कोई न देखता दुनिया में ॥

योद्धा ने कहा—'मैं उससे दवा नहीं माँगूगा, क्या पता दे या न दे—अगर दे दी तो अनुकूल हो या न हो। जो भी हो उससे माँगना मारक है।'

बैत

जो भी चीज तू नीचों से मिन्नत से माँगता है।
वह तेरे शरीर को तो बढ़ाती है पर आत्मा को क्षीण करती है ॥

पण्डितों ने कहा है कि—'यदि अमृत को लोग आबरू लेकर बेचते होते तो ज्ञानी उसे न खाते—क्योंकि रोग से मरना अच्छा है अपमानपूर्वक जीने से।

बैत

यदि तू इन्द्रायण खाये अच्छे स्वभाव वाले के हाथों से।
मुँह बिगाड़ने वाले के हाथ से मिष्टान्न खाने से अच्छा है ॥

आख्यायितम्—९

कस्मैचिद् वणिजे कतिचिद् दिरमाणि धारयन्ति स्म केचन साधव । स प्रत्यहंस्तानपयाचते, बहूनि च परुषाक्षराणि ब्रूते स्म। साधवस्तस्य निर्भर्त्सनैर्भग्नहृदया सञ्जाता। सहनादृते तु नोपायोऽपरस्तदासीत्। कश्चिद्ज्ञात एतच्छ्रुत्वा व्यहसदवदच्च—'दास्यामीति प्रतिज्ञात मनस्तुष्टिमवाप्नुयात्। नोत्तमर्णस्ततस्तोष कुसीदी लभते वणिक् ॥ ४ ॥'

पद्यम्

अनुग्रहपरित्याग श्रेष्ठिना श्रेष्ठ उच्यते।
सहनादथ [illegible] ॥ १९ ॥
मृत्युर्मांसाभिलाषाया सवतो वरमुच्यते।
नोत्तमर्णस्य सूनस्य परुष प्रतियाचितम् ॥ २० ॥

आख्यायितम्—१०

कश्चिद् योद्धा तातारसंग्रामे क्षतायतो बभूव। केनचित् स प्रबोधितोऽय—'अमुको वणिग् व्रणौषध धत्ते। यदि त्व प्रार्थयितासि, सम्भाव्यते स दास्यति।' श्रूयते च स वणिक् तथैव कार्पण्यप्रथितकीर्तिरासीद् यथा चौदार्येण हातिम तायी प्रसिद्ध ।

श्लोक

तस्य चेद् भोजनस्थाल्या यायाद् भुवनभास्कर ।
भास्वन्त दिवस जातु न कश्चिद्द्रष्टुमर्हति ॥ २१ ॥

योद्धा ब्रूते—'अह तदौषध न याचिष्ये, न जाने स दास्यति वा वा, दत्तमप्यौषध सात्म्य भवति वा न वा। ननु मरणेन समा याञ्चा

श्लोक

यच्चापि दुर्जनेभ्यस्त्व विनीत सन्नवाप्नुया ।
तनु पुष्णाति तन्नून तनूकुर्वीत ते मन ॥ २२ ॥
यथाहु पण्डिता —
अमृत यदि सम्मानात् प्रतियच्छन्ति वाणिजा ।
न चैतज्ज्ञानिनोऽदन्ति मानभङ्गस्य कारणम् ॥ ५ ॥
यतो हि—
रोगाद्धि मरण श्रेयो नापमानाद्धि जीवितम् ।

श्लोक

इन्द्रायणफल भुङ्क्ष्व यदि सज्जनप्राभृतम् ।
मिष्टान्न न ततो य स्याद्विकृतास्यविचेष्टित ॥ २३ ॥

حکایت ۱۱

یکی ار علما حورندهٔ سیار داشت و کفاف اندك * با یکی ار بررکان ـ که حسن طن بلیغ در حق او داشت ـ حال حود نگفت * روی ار توقع او درهم کشید ـ و تعرض سؤال ار اهل ادب در نطرش قبیح آمد *

قطعه

رحت روی تـرش کرده پیش یار عریر
مرو ـ که عیش برو نیر تلح گردانی *
بحاحتی که روی تاره رو و حندان باش
مرو نه نندد کاری کشاده پیشانی *

آورده اند ـ که در وطیفهٔ او ریادت کرد و ار ارادت کم * پس ار چند رور چون بر قرار معهودش ندید ـ گفت ـ

بیت

بئسَ المَطَاعِمُ حِینَ الذُّلُّ یَکْسِبُها
القِدْرُ مُنتَصِبٌ و القَدْرُ مَخْفُوضٌ *

بیت

نانم افرود و آب رویم کاست
بی نوائی به ار مدلت حواست *

حکایت ۱۲

درویشی‌را صرورتی پیش آمد * کسی گفتش ـ ''فلان نعمت بی قیاس دارد ـ اگر بر حاحت تو وقوف یابد ـ همانا که در قصای آن توقع روا ندارد'' * گفت ـ ''من اورا نمی‌دانم'' * گفت ـ ''منت رهبری کنم'' * دستش گرفت و نمرل آن شحص در آورد * درویش یکی‌را دید لب فرو هشته ـ و ابرو بهم کشیده ـ و تند و ترش نشسته برگشت و سحن نگفت * یکی گفتش ـ ''چه کردی و چه کردی''؟ گفت ـ ''عطای او بلقای او بحشیدم'' *

हिकायत—११

यके अज़ उलमा खुरिन्दाए बिस्यार दाश्त 'व कफ़ाफे अन्दक। बा यके अज़ बुज़ुर्गां कि हुस्ने ज़न्ने बलीग़ दर हक़्क़े ऊ दाश्त— हाले खुद बिगुफ्त। रूय अज़ तवक़्क़ोए ऊ दरहम कशीद— व तअर्रुज़े सवाल अज़ अहले अदब दर नज़रश् क़बीह आमद।

कता (बह्‌रे मुज्तश्)

ज़ि बह्‌र रूए तुरुश कर्दा पेशे यारे अज़ीज़।
मरौ कि ऐश बरू नीज़ तल्ख़ गरदानी॥
ब हाजते कि रवी ताज़ा रू व खन्दां बाश।
फ़िरो न बन्दद कारे गुशादा पेशानी॥

आवुर्दा अन्द कि दर वज़ीफाए ऊ ज़ियादत कर्द व अज़ इरादत कम। पस अज़ चन्द रोज़ चू बर क़रारे मअहूदश् न दीद— गुफ्त—

बैत (बह्‌रे बसीत)

बिं'सल् मताइमु हीन'ज़्ज़ुल्लु यक्सिबुहा।
अल् क़िद्रु मुन्तसिबु व'ल् क़द्रु मख़्फ़ूज़ु॥

बैत (बह्‌रे खफीफ)

नानम् अफ़ज़ूद ओ आबे रूयम् कास्त।
बे नवायी बिह अज़ मज़िल्लते ख़्वास्त॥

हिकायत—१२

दरवेशे रा ज़रूरते पेश आमद। कसे गुफ्तश्—'फ़लां निअमते बेक़ियास दारद—अगर बर हाजते तो वक़ूफ़ यावद— हमाना कि दर क़ज़ाय आं तवक़्क़ुफ़ रवा न दारद।' गुफ्त—'मन् ऊ रा न मीदानम्।' गुफ्त—'मनत रहबरी कुनम्।' दस्तश् गिरिफ्त व ब मंज़िले आं शख़्स दर आवुर्द। दरवेश यके रा दीद लब फ़िरो हिश्ता—व अब्रू बहम कशीदा—व तुन्दो तुरुश निशस्ता। बरगश्त व सुख़ुन न गुफ्त। यके गुफ्तश्—'चि कुनी— व चि कर्दी?' गुफ्त—'अताये ऊ ब लिक़ाये ऊ बख़्शीदम्।'

कथा—११

एक विद्वान् के यहाँ खाने वाले बहुत थे और जीविका थोडी। उनने एक बडे आदमी से जो कि उनके बारे में बहुत ऊँची राय रखता था—अपना हाल कहा। उसने उनकी प्रार्थना से मुंह बिगाड लिया—विद्वानों का याचना की अर्जी देना उनकी दृष्टि में अशोभनीय था।

कता

दुर्भाग्य से खिन्न मुख किया हुआ—मित्र के सामने।
मत जा, क्योंकि उसका सुख भी तू नष्ट कर देगा॥
आवश्यकता से जाये तो प्रसन्नमुख और हँसता रह।
बन्द नहीं रहता तुझे मस्तक वाले का काम॥

कहते हैं कि उनने उनकी वृत्ति बढा दी और आदर कम कर दिया। कुछ दिन बाद जब उनने पूर्व व्यवहार न देखा तो कहा—

बैत

बुरा होता है वह भोज्य, ज़िल्लत के समय जो तू कमाये।
हाँडी चढ गयी और इज्जत उतर गयी॥

बैत

मेरी रोटी बढ़ गयी और प्रतिष्ठा क्षीण हो गयी।
निर्धनता अच्छी माँगने के अपमान से॥

कथा—१२

एक साधु को कोई जरूरत आ पडी। किसी ने उससे कहा—'अमुक के पास असीम सम्पत्ति है। यदि उसे तेरी जरूरत मालूम हो तो बेशक उसकी पूर्ति में विलम्ब न करेगा।' वह बोला—'मैं उसे नहीं जानता।' उसने कहा—'मैं तुझे राह बताऊँगा।' उसने उसका हाथ पकडा और उस व्यक्ति के घर तक ले गया। साधु ने एक आदमी को होंठ लटकाए और भौं चढाए—क्रोध में बैठे देखा। वह वापिस मुड आया और कुछ न बोला। किसी ने उससे पूछा—'तूने क्या कहा और क्या किया?' वह बोला—'मैंने उसका दान उसकी छवि पर न्यौछावर कर दिया।'

आख्यायितम्—११

कस्यचिद् विदुष परिवारे भूयासो हि भुञ्जाना अल्पीयसी हि वृत्तिश्च। स कञ्चिन्निजानुरक्त श्रद्धधान च महाजन स्वस्य दशा निवेदयामास। महाजनस्तस्य दशा श्रुत्वा पराङमुख सवृत्त, यतो विदुषा याचनपरता स नितरामशोभनीया मन्यते स्म।

पदम्

क्लेशखिन्न मुख नीत्वा समक्ष सुहृद क्वचित्।
मा गा अपि सुख तस्य खिन्नमेव विधास्यसि॥ २४॥
अवश्य यदि गन्तव्यमुपेया सुस्मिताननः।
प्रसन्नास्यस्य लोकस्य कार्यव्युद्धिर्न वै क्वचित्॥ २५॥

श्रूयतेऽथ महाजनस्तस्य वृत्ति वर्धयामास आदरञ्चापचकर्ष। किञ्चित्कालादनन्तर यदा स पूर्वव्यवहार न ददर्श, स उवाच—

श्लोक

हीन तद्भोजन प्रोक्तमपमानेन चार्जितम्।
भाण्ड सम्पूरित भोज्यैं सम्मानो रिक्तता गत॥ २६॥

श्लोक

भोज्य मे वृद्धित चैव प्रतिष्ठा चापकर्षिता।
निर्धनत्व वर प्रोक्त याच्ञा न च मानच्छित्॥ २७॥

आख्यायितम्—१२

कश्चित् साधु किञ्चिदर्थित्व गत। केनचित् स उक्तोऽथ—'अमुक पुमान् अपार धन धत्ते। यदि स तवार्थित्व जानीयात्, तत्पूरयितु नून चिर न करिष्यते।' स उवाच—'अह न त जाने।' मित्रमवदत्—'अह ते पन्थान दर्शयामि।' स त हस्ते गृहीत्वा धनाधीशवेश्मन्यनैपीत्। साधुरेक पुमास ददर्श लुण्ठिताधरोष्ठ, कुञ्चितभ्रुव कोपाविष्टञ्चेति। स तत प्रत्यावृत्त—न च किञ्चिदाह। कश्चित् तमूचे—'त्वया किमुक्त किञ्चाचरितम्?' साधुरुवाच—'मया तस्य प्रसादस्तस्य रूपाय प्रतिदत्त।'

قطعه

مبر حاجت بنزدیك ترش روی
که از خوی بدش فرسوده گردی *
اگر گوئی ـ غم دل با کسی گوی
که از رویش بنقد آسوده گردی *

कता (बहरे हज़ज्)

मबर हाजत ब नज़दीके तुरुश रूय।
कि अज़ ख़ूये बदश् फ़रसूदा गर्दी॥
अगर गोयी—ग़मे दिल बा कसे गोय।
कि अज़ रूयश् ब नक़द आसूदा गर्दी॥

حکایت ۱۳

سالی در اسکندریه خشك سالی پدید آمد ـ چنانکه عنان طاقت درویشان از دست رفته بود ـ و درهای آسمان بر زمین بسته ـ و فریاد اهل زمین بآسمان در پیوسته *

हिकायत—१३

साले दर इस्कन्दरिया ख़ुश्कसाली पदीद आमद—चुनाँ कि इनाने ताक़ते दरवेशान् अज़ दस्त रफ़्ता बूद—व दरहाए आसमान बर ज़मीन बस्ता—व फ़रियादे अहले ज़मीन बआसमान दर पैवस्ता।

قطعه

نماند جانور از وحش و طیر و ماهی و مور
که بر فلك نشد از نامرادی افغانش *
عجب که دود دل خلق جمع می‌نشود
که ابر گردد و سیلاب دیده بارانش *

कता (बहरे मुज्तस्)

न मांद जानवर'ज़ वहशो तैरो माहियो मोर।
कि बर फ़लक न शुद अज़ नामुरादी अफ़ग़ानश्॥
अजब कि दूदे दिले ख़ल्क जमअ मी न शवद।
कि अब्र गरदद ओ सैलाबे दीदा बारानश्॥

در چنین سالی مخنثی (دور از دوستان! که سخن در وصف او گفتن ترك ادبست ـ خاصه در حضرت بزرگان ـ و بطریق اهمال از آن در گذشتن هم نشاید که طائفۀ بر عجز گوینده حمل کنند * برین دو بیت اختصار کردم ـ

दर चुनीं साले मुख़न्निसे (दूर अज़ दोस्तान्! कि सुख़ुन दर वस्फ़े ऊ गुफ़्तन् तर्के अदब'स्त—ख़ास्सा दर हज़रते बुज़ुर्गान्—व ब तरीक़े इहमाल अज़ आँ दर गुज़श्तन् हम न शायद कि तायफ़ाए बर इज्ज़े गोयन्दा हमल कुनन्द। बरीं दू बैत इख़्तिसार करदम्।

قطعه

تتری گر کشد مخنث‌را
تتررا عوض نباید کشت *
چند باشد چو جسر بغدادش
آب در زیر و آدمی بر پشت؟

क़ता (बहरे ख़फ़ीफ़)

ततरी गर कुशद मुख़न्नस रा।
ततरी रा इवज़ न बायद कुश्त॥
चन्द बाशद चु जिस्रे बग़दादश्।
आब दर ज़ेरो आदमी बर पुश्त॥

اندکی دلیل بسیاری بود و مشتی نمونۀ خرواری *) چنین شخصی ـ که طرفی از نعت او شنیدی ـ در آن سال نعمت بیکران داشت ـ تنگدستانرا زر و سیم دادی و مسافرانرا سفره نهادی * گروهی درویشان ـ که از جور فاقه بجان آمده بودند ـ آهنگ دعوت او کردند و مرا مشاورت آوردند ـ سر از موافقت ایشان باز زدم و گفتم ـ

अन्दकी दलीले बिस्यारी बुवद व मुश्ते नमूनाए ख़रवार) चुनीं शख़्से कि तरफ़े अज़ नाते ऊ शुनीदी—दर आँ साल निअमते बेकराँ दाश्त—तंग दस्ताँ रा ज़र व सीम दादे व मुसाफ़िराँ रा सुफ़रा निहादे। गुरोहे दरवेशान् कि अज़ जौरे फ़ाक़ा ब जान आमदा बूदन्द—आहंगे दावते ऊ करदन्द व ब मन मुशावरत आवुर्दन्द—सर अज़ मुवाफ़िक़ते ऐशाँ बाज़ ज़दम् व गुफ़्तम्—

कता

मन ले जा ज़रूरत कर्कश मुख वाले के निकट।
क्योंकि उसके बुरे स्वभाव से तू खिन्न होगा॥
यदि कहना ही हो तो चित्त की चिन्ता उस आदमी से कह।
कि जिसकी मुखमुद्रा से तू तुरन्त ही सन्तुष्ट हो जाय॥

पदम्

मा प्रदर्शय चार्थित्व कर्कशास्य प्रति क्वचित्।
कार्कश्येनास्य सवृत्त खिन्न एव भविष्यसि॥ २८॥
अवश्य यदि वक्तव्य क्लेश तस्मै निवेदय।
प्रसन्नास्येन यस्तुभ्य सद्यो दद्याद्धि सान्त्वनाम्॥ २९॥

कथा—१३

एक वर्ष सिकन्दरिया में ऐसा सूखा पड़ा कि फकीरो की लगाम हाथ से छूट गयी, और आकाश के द्वार पृथ्वी के लिये बन्द हो गये और पृथ्वीवासियो की फरियाद आकाश तक प्रविष्ट हो गयी।

आख्यायितम्—१३

कस्मिंश्चिद् वर्षे सिकन्दरियाया पुर्या एतावती चानावृष्टिरापन्ना, यत् साधूनामपि धैर्यवल्गा हस्तात् परिच्युता। आकाशद्वाराणि भुवमभिमुख सवव्रते। पार्थिवाना च क्रन्दनमाकाशाद् व्याप।

कता

न रहा कोई जगली प्राणी, पक्षी, मछली या चींटी।
कि जिसकी चीत्कार निराशा से गगन आकाश तक न पहुँची॥
आश्चर्य है कि दुनिया के दिल का धुँआ इकट्ठा न हुआ।
कि मेघ बन जाता और उनके आँसुओ जैसा वह निकलता॥

पदम्

नासीद्वनेचर कश्चित् खेचरोऽप्युचर क्वचित्।
आकाशाद्रोदन यस्यालब्धकामस्य नानुतम्॥ ३०॥
आश्चर्य! जगत सर्व दु खधूम न सञ्चितम्।
उपानेष्यद् यतो मेघोऽप्यपिप्यच्चक्षुषोर्जलम्॥ ३१॥

इसी वर्ष एक हिजड़ा (मित्रो से वह दूर रहे! क्योंकि उनके गुण वर्णन में कुछ कहना अशिष्टता होगी, विशेषतया बड़े लोगों के सामने, और उसके आचरण को दरगुज़र करना भी उचित न होगा क्योंकि कुछ लोग इसे वक्ता का असामर्थ्य मानेंगे। इस विषय में दो पदो में सक्षेप करूँगा—

तस्मिन्नेव वत्सरे कश्चित् षण्ढ (दूरगेपोऽस्तु मित्रेभ्य! एतस्य च प्रशस्तौ किञ्चिच्चपि भणितुमशिष्टता भविष्यतीति, विशेषतया ज्यायसा पुरत, तस्याचरणञ्चाप्यगोचर कर्तुं न युज्यते, अन्यथा वक्तुरसामर्थ्य मन्यन्त एके। एतदधिकृत्य द्वाभ्या पदाभ्यामेवालक्रियते।

कता

यदि कोई तातार मार डाले (उस) हिजड़े को।
(तो उस) तातार को बदले में मारना उचित न होगा॥
प्राय वह बग़दाद के पुल जैसा रहा।
नीचे पानी बहता था और आदमी पीठ पर॥

पदम्

यदि कश्चित् तातारो हन्यादेन नपुसकम्।
त तातार च हन्तारं मारण स्यात्साम्प्रतम्॥ ३२॥
प्रायेण बगदादस्य सेतुर इव स स्मृत।
यस्याधस्तादगा धारा उपरिष्टाच्च कामिन॥ ३३॥

थोड़ेसे बहुत का अनुमान हो जाता है और एक मुट्ठी से गधे के भार का) ऐसा आदमी कि जिसकी प्रशस्ति आपने सुन ली है, उस वर्ष अपार धन रखता था, गरीबों को सोना-चाँदी देता था और परदेसियो के लिये भोजन कराता था। साधुओ का एक सघ जो कि उपवास से मरणासन्न हो रहा था, उसके निमन्त्रण की ओर प्रवृत्त हुआ और मुझ से सलाह लेने आया, पर मैंने उनके समर्थन से सिर हिला दिया और मैंने कहा—

अल्पेनैव भूयाननुमीयते, मुष्टिप्रमाणेन च खरभार) तादृश पुमान्—यस्य प्रशस्तिर्भवद्भिराकर्णिता, तस्मिन् वर्षेऽपार धन दधौ। निर्धनेभ्यो हिरण्य रजत च ददौ, प्रवासिषु भोजन यच्छति स्म। अथ कश्चित् साधुसघो यश्चानाहारान्मरणासन्न आसीत्, तस्य षण्ढस्य आह्वान प्रत्युन्मुख सञ्जातो मा च निगमयितुम् सम्प्राप्त। किन्तु मया निषेधे मूर्धानं चालितम्—

قطعه

نخورد شیر نیم خوردهٔ سگ
ور بسختی بمیرد اندر غار *
تن به بیچارگی و گرسنگی
بنه ـ و دست پیش سفله مدار *
گر فریدون شود بنعمت و جاه
بی هنر را هیچ کس مشمار *
پرنیان و نسیج بر نا اهل
لاجورد و طلاست بر دیوار ـ

حکایت ۱۴

حاتم طائی‌را گفتند ـ ''از خود بزرگ همت تر در جهان کسی دیدهٔ؟'' گفت ـ ''بلی ـ روزی چهل شتر قربان کرده بودم و امرای عرب‌را طلب نموده ـ ناگاه بحاجتی بگوشهٔ صحرا رفتم ـ خار کشی‌را دیدم پشتهٔ خار فرا هم آورده ـ گفتم ـ 'بمهمانی حاتم چرا نروی؟ که خلقی بر سماط او گرد آمده اند' * گفت ـ

بیت

هر که نان از عمل خویش خورد
منت حاتم طائی نبرد *

من اورا بهمت و جوانمردی برتر از خود دیدم'' *

حکایت ۱۵

موسی (علیه السّلام) درویشی‌را دید که از برهنگی بریگ اندر شده * گفت ـ ''ای موسی! دعا کن تا حق تعالی مرا کفافی دهد'' * موسی دعا کرد و برفت * پس از چند گاهی دیدش گرفتار و خلقی برو گرد آمده * گفت ـ ''این‌را چه حالتست؟'' گفتند ـ ''خمر خورده است و عربده کرده و یکی‌را کشته ـ اکنون قصاص فرموده اند'' *

شعر

گربهٔ مسکین ـ اگر پر داشتی
تخم گنجشک از جهان بر داشتی *

क़ता (वहरे खफीफ)

न खुरद शेर नीम खुर्दाए सग।
वर व सख्ती वमीरद अन्दर गार॥
तन व वेचारगी ओ गुरुसनगी।
विनिह् ओ दस्त पेशे सिफला मदार॥
गर फरेदूं शवद व निअमतो जाह।
वेहुनर रा व हेच कस मशुमार॥
पुरनियानो नसीज वर ना अह्ल।
लाजवर्दो तिला'स्त वर दीवार॥

हिकायत—१४

हातिमे ताई रा गुफ्तन्द—'कि अज़ खुद बुजुर्ग हिम्मततर दर जहान कसे दीदई?' गुफ्त—'बले—रोज़े चेहल शुतुर कुरवान करदा बूदम् व उमराय अरब रा तलव नमूदा—नागाह व हाजते व गोशाए सहरा रफ्तम्—खारकशे रा दीदम् पुश्ताए खार फराहम आवुर्दा। गुफ्तम्—'व मिह्मानी हातिम चिरा न रवी? कि खल्क़े वर समाते ऊ गिर्द आमदा अन्द।' गुफ्त—

वैत (वहरे रमल)

'हर कि नान अज़ अमले खेश खुरद।
मिन्नते हातिमे ताई न वुरद॥'

मन ऊ रा व हिम्मत व जवांमर्दी बरतर अज़ खुद दीदम्।'

हिकायत—१५

मूसा—अलैहि'स्सलाम—दरवेशे रा दीद कि अज़ बरहनगी वरेग अन्दर शुदा। गुफ्त—'ऐ मूसा! दुआ कुन् ता हक़ तआला मरा क्फाफे दिहद।' मूसा दुआ कर्द व विरफ्त। पस अज़ चन्दगाहे दीदश् गिरिफ्तार व खल्क़े बरू गिर्द आमदा। गुफ्त—'ईं रा चि हालत'स्त?' गुफ्तन्द—'खम्र खुर्दा अस्त व अरबदा करदा व यके रा कुश्ता—अकनूं क़िसास फरमूदा अन्द।'

शेर (वहरे रमल)

गुरबाए मिसकीं अगर पर दाश्ते।
तुख्मे गुंजिश्क अज जहां बरदाश्ते॥

कता

नहीं खाता सिंह अवगाया कुत्ते का।
भले ही गुफा में मर जाय भोजन बिना॥
शरीर को निराश्रयता और भूख के सामने डाल दे।
और हाथ नीच के सामने मत फैला॥
भले ही वह सम्पत्ति और अधिकार में फरेदूँ हो।
गुणहीन को कुछ मत गिन॥
रेशम और स्वर्ण का पट है अयोग्य के ऊपर।
(मानो) राजावर्त मणि और सोना दीवार पर जड़े हों॥

कथा—१४

हातिम ताई से लोगों ने कहा—'कि अपने से बड़ा आदमी दुनिया में कोई देखा है?' बोला—'हाँ! एक दिन मैंने चालीस ऊँटों का बलिदान किया और अरब के अमीरों को बुलाया—सहसा आवश्यकतावश रेगिस्तान के एक कोने में गया—मैंने एक लकड़हारे को पीठ पर काँटे (ईंधन) लादे देखा। मैंने कहा—हातिम की महमानी में क्यों नहीं जाता कि दुनिया भर उसके दस्तरख़ान पर आयी हुई है।' वह बोला—

बैत

'जो कोई रोटी अपने स्वयं के काम से खाता है।
वह हातिम ताई का अनुग्रह नहीं उठाता॥

मैंने उसको गौरव और उदारता में अपने से बढ़कर देखा।'

कथा—१५

मूसा ने (उन पर शान्ति हो) एक साधु को देखा कि नंगेपन के कारण रेत में घुसा हुआ था। बोला—'हे मूसा! प्रार्थना कर ताकि भगवान् मुझे जीविका दे।' मूसा ने प्रार्थना की और चल दिये। कुछ समय बाद उसको बन्दी देखा, और लोग उसके चारों ओर इकट्ठे थे। बोले—'इसकी क्या हालत है?' लोगों ने कहा—'शराब पिये हुए है और उपद्रव किया है और एक को मार दिया है, अब इसे मृत्युदण्ड मिला है।'

शेर

बेचारी बिल्ली यदि पर रखती होती।
चिड़ियों का वंश दुनिया से उठा देती॥

पदम्

न भक्षयति सिंहश्च श्वोच्छिष्टं जातु कुत्रचित्।
म्रियेत चाप्यनाहाराद्गुहायामात्मनो यदि॥ ३४॥
निरपायं क्षुधाक्षामं निधेहि तपसे तनुं।
मा मा नीच जन हस्तं प्रसाय प्रार्थय क्वचित्॥ ३५॥
प्रतिशेते पुमान् यश्चित् प्रभुत्वे यदि वैभवे।
मा मस्थास्तं गुणैर्हीनं तृणञ्चापि कदाचन॥ ३६॥
कौशेयवाससाच्छन्न एव भाति ह्यसज्जनः।
सुवर्णरचिता रत्नैर्मण्डिता भित्तिका यथा॥ ३७॥

आख्यायितम्—१४

हातिमतायिनं केचन पृष्टवन्तोऽस्य—'अपि स्वस्माज्ज्यायान्सं कञ्चन पुमांसं दृष्टवानसि?' सोऽवदत्—'आम्! एकदाऽहं चत्वारिंशदुष्ट्रान् निहत्य अरबप्रभुगणाञ्जाराहूतवान्। कार्यवशात् ततोऽहं मरुकान्तारेऽगमम्। अहं तत्र कण्टकमयं काष्ठं वाहयन्तं कञ्चित् काष्ठहारकमदर्शम्। अहमवोचम्—'हातिमस्यातिथिशालां न कथं यासि—यत्र सर्वे लोकास्तस्य सहायतो आहूताः सन्ति।' स ब्रूते—

श्लोक

यश्चाप्यर्जयति ह्यन्नं प्रतियत्नेन चात्मनः।
स जातु हातिमस्यापि नानुयाचत्यनुग्रहम्॥ ३८॥

अहं तं पुमांसं मत्तो गौरवादौदार्याच्च विशिष्टमदर्शमिति।

आख्यायितम्—१५

मूसा (स्वस्त्यस्तु तस्मै सदा) कञ्चन साधुं ददर्श, नग्नत्वान्मरुराशौ निगूहितात्मानम्। स उवाच—'हे मूसा, प्रभुं प्रार्थयस्व, येन स मां समाढ्यं विदधीत।' मूसा प्रार्थनां कृतवान् ततो जगाम च। अथ कतिपयदिनोपरान्ते तं राजपुरुषैर्बद्धं ददर्श, लोकाश्च तं परित आसन्। मूसा पप्रच्छ—'इयं काऽवस्थाऽस्य?' लोका ऊचुः—'अनेन हाला पीता, साहसं कृतम्, कस्यचित् प्राणा हृता, इदानीं मृत्युदण्डेन दण्डित इति।'

श्लोक

वराको यदि मार्जारः पक्षयुग्ममवाप्स्यत।
बीजञ्चापि विहङ्गानामनङ्क्ष्यज्जगतः सकृत्॥ ३९॥

शेर (बहरे हजज्)

आजिज़—बाशद कि दस्ते कुदरत याबद।
बर खेज़द ओ दस्ते आजिज़ाँ बर ताबद॥

मूसा—अलैहि'स्सलाम—ब हिकमते जहान आफरी इकरार कर्द व अज़ तजासुरे खेश इस्तिग़्फार। 'काल'ल्लाहु तआला—व लौ बसत' ल्लाहु'र्रिज़्क लि इबादिहि ल बग़ौ फि'ल् अर्ज़ि।'

शेर (बहरे बसीत)

मा जा अख़ाज़क या मग़रूर! फि'ल् ख़तरि।
हत्ता हलक्त? फ लैत'न्नम्लु लम् ततिरि॥

नज़्म (बहरे सरी)

सिफ्ला चु जाह आमदो सीमो ज़रश्।
सीली ख्वाहद ब हक़ीक़त सरश्॥
आँ नै शुनीदी कि हकीमे चि गुफ्त।
मोर हमाँ बिह् कि न बाशद परश्॥

हिकमत

पिदर रा अस्ल बिस्यार'स्त—अम्मा पिसर गर्मीदार'स्त।

बैत (बहरे हजज्)

आँ कस कि तवांगरत नमी गर्दानद।
ऊ मस्लहते तो अज़ तो बिह् मी दानद॥

हिकायत—१६

आराबी रा दीदम्—दर हल्क़ाए जौहरियाने बसरा हिकायत मी कर्द कि—'वक्ते दर बियाबाने राह गुम कर्दा बूदम् व अज़ ज़ाद बा मन् चीज़े न मान्दा–दिल बर हलाक निहादम्। नागाह कीसाए याफ्तम् पुर अज़ मरवारीद—कि हरगिज़ आँ ज़ौक ओ शादी फरामुश न कुनम्—कि पन्दाश्तम् कि गन्दुमे बिरियान'स्त या गन्दुम—व बाज़—आँ तल्ख़ी ओ नाउमेदी—चू मअलूम कर्दम् कि मरवारीद'स्त।'

शेर

दीन—जो पाता है कि सामर्थ्य पाय।
उठे, और दीनों पर अत्याचार करे॥

मूसा (उन पर शान्ति हो) ने विश्वकर्त्ता की बुद्धिमत्ता स्वीकार की और अपने अपराध की क्षमा याचना की।

परमेश्वर वचन—'यदि फराग करे परमेश्वर रिज़्क़ तो अपने सेवकों के लिये, अवश्य बगावत करेंगे धरती पर।'

शेर

किस चीज़ ने फुलाया तुझे ऐ घमण्डी खतरे में।
जहाँ तक कि तू हलाक हुई, तो काश! चींटी कभी न उड़ती॥

नज़्म

नीच जब पदवी, चाँदी और सोना पाता है।
(तब वह) थप्पड़ चाहता है वास्तव में अपने सिर पर॥
क्या तूने यह नहीं सुना कि एक पण्डित ने क्या कहा।
'चींटी वही अच्छी कि जिसके पर नहीं हुए॥'

हिकमत

बाप के पास शहद बहुत है—पर बेटा पित्त प्रकृति है॥

बैत

जिसने तुझे धनी नहीं बनाया।
वह तेरा कल्याण तुझ से ज्यादा जानता है॥

कथा—१६

मैंने एक अरबवासी को देखा—बसरे के जौहरियों के बीच में कथा सुना रहा था कि—'एक समय निर्जन मरु में मैं राह भटक गया और पाथेय में से कुछ नहीं बचा। मैंने अपना दिल मौत पर रख लिया। सहसा मुझे एक थैली मिली भरी हुई मोतियों से, कि कभी भी मैं उस आनन्द और प्रसन्नता को नहीं भूल सकता कि मैंने सोचा कि गेहूँ भुने हुए हैं या ज्वार। और फिर वह कटुता और निराशा, जब मुझे ज्ञात हुआ कि मोती हैं।'

श्लोक

सामर्थ्यं प्राप्य दीनोऽपि कदाचित् सविशाल्यते।
उत्थाय चैव दीनेषु ह्यत्याचारं समाचरेत्॥४०॥

मूसा (स्वस्त्यस्तु तस्मै सदा) विश्वस्रष्टुर्बुद्धिमत्तामङ्गीचकार स्वस्यागसश्च क्षमां ययाचे।

भगवद्वचनम्—

कुर्याच्चेद्वृत्तिप्राचुर्यं दासेभ्यः परमेश्वरः।
नास्तिक्यमाचरिष्यन्ति भूत्वा तेद्रोहबुद्धयः॥६॥

श्लोक

तत् किमासीदरे! यत् त्वां पातयामास साशये।
इदानीं निहतं मेने, पिपीलिकापक्षत्वे पिपीलिनि॥४१॥

गाथा

नीचस्तु पदवीं रौप्यं काञ्चनं लभते यदा।
भृशं चपेटिकाघातं तदानीं मूर्ध्नि सोऽर्हति॥४२॥
अयच्च पण्डितेनोक्तं न किञ्चिच्छ्रुतवानसि।
पिपीलिका वरा सैव जातपक्षा न या गता॥४३॥

युक्ति

पितुस्तु मधुबाहुल्यमौरसः किन्तु पैत्तिकः॥७॥

श्लोक

यस्त्वां वैभवसम्पन्नं न चकार विचारतः।
सर्वं वेद स भद्रं ते त्वत्तो भद्रतरं खलु॥४४॥

आख्यायितम्—१६

अहं कञ्चन अरबवासिनमपश्यं बसरापुर्यां रत्नविक्रेतॄणामापणे याथाकथ्यं व्याहरन्तम्—अथैकदाऽहं निर्जने मरुकान्तारे मार्गाद्भ्रष्टः आसं निष्पाथेयश्च। मरणञ्च ध्रुवमाशङ्कितं मया। अकस्मादहं मुक्तासभृतं सम्पुटमेकं लब्धवान्। अविस्मरणीय आसीन्ममानन्दप्रसादश्च, यतो मया कल्पितं सम्पुटोऽयमन्नमयोऽस्ति। न च विस्मरामि तां कटुतां हताशां च यदा मया ज्ञातमयं मौक्तिकमयोऽयं सम्पुट इति।

قطعه

در بیابان خشك و ریگ روان
تشنه‌را در دهان چه در چه صدف ٭
مرد بی توشه ـ کاوفتاد از پای
در کمر بند او چه زر چه خزف ٭

क़ता (बहरे ख़फ़ीफ़)

दर बयाबाने ख़ुश्को रेगे रवाँ।
तिश्ना रा दर दहाँ चि दुर चि सदफ़॥
मर्दे बेतोशा कि उफ़्ताद'ज़ पाय।
दर कमरबन्दे ऊ चि ज़र चि ख़ज़फ़॥

حکایت ۱۷

یکی از عرب در بیابان از غایت تشنگی می گفت ـ

हिकायत—१७

यके अज अरब दर बयावान अज़ ग़ायते तिश्नगी मीगुफ़्त—

شعر

يَا لَيْتَ قَبْلَ مَنِيَّتِي
يَوْمًا أَفُوزُ بِمُنْيَتِي ـ
نَهْرٍ تَلَاطَمَ رُكْبَتِي
فَأَظَلُّ أَمْلَاءُ قِرْبَتِي ٭

शेर (बहरे कामिल)

या लैत क़ब्ल मनीयती।
योमन् अफ़ूज़ु बिमुन्यती॥
नह्‌रिन् तलातुम रुक्‌बती।
फ अज़ल्लु अम्लओ क़िर्‌बती॥

همچنین در قاع بسیط مسافری راه گم کرده ـ و قوت و قوتش بآخر آمده ـ و درمی چند بر میان داشت ٭ بسیار بگردید ـ راه بجای نبرد و بسختی هلاك شد ٭ طائفهٔ برسیدند ـ درمها‌را دیدند پیش رویش نهاده و بر خاك نبشته ـ

हम चुनीं दर क़ाए बसीत मुसाफ़िरे राह गुम कर्दा—व क़ुव्वतो क़ूतश् व आख़िर आमदा—व दिरमे चन्द बर मियान् दाश्त। बिस्यार बिगर्दीद—राह बजाये न बुर्द व ब सख़्ती हलाक शुद। ताइफ़ाए बिरसीदन्द—दिरमहा रा दीदन्द पेशे रूयश् निहादा व बर ख़ाक नविश्ता—

قطعه

گر همه زر جعفری دارد
مرد بی توشه بر نگیرد کام ٭
در بیابان فقیر گرسنه‌را
شلغم پخته به ز نقرهٔ خام ٭

क़ता (बहरे ख़फ़ीफ़)

गर हमा ज़रे जाफ़री दारद।
मर्दे बेतोशा बर न गीरद काम॥
दर बयाबाँ फ़क़ीरे गुरसना रा।
शल्ग़मे पुख़्ता बिह् ज़ि नुक़्‌रए ख़ाम॥

حکایت ۱۸

هرگز از جور زمان نالیده بودم ـ و از گردش آسمان روی در هم نکشیده ـ مگر وقتی که پایم برهنه بود و استطاعت پای‌پوشی نداشتم ٭ جامع کوفه در آمدم دلتنگ ـ یکی‌را دیدم که پای نداشت ـ شکر نعمت حق بجای آوردم و بر بی کفشی صبر کردم ٭

हिकायत—१८

हरगिज अज जौरे ज़माँ न नालीदा बूदम्—व अज़ गर्दिशे आसमान रूए दरहम न कशीदा—मगर वक़्ते कि पायम् बरह्‌ना बूद व इस्तिताअते पायपोशी न दाश्तम्। व जामिए कूफ़ा दर आमदम् दिल्तंग। यके रा दीदम् कि पाय न दाश्त—शुक्रे निअमते हक़ बजाय आवुर्दम् व बर बेकफ़्शी सब्र कर्दम्।

कता

निर्जन मरु में, सूखे में और उछलती रेत में।
प्यासे के मुंह में क्या मोती और क्या सीपी॥
निष्पाथेय व्यक्ति जो पैरों से गिर गया हो।
उसके कमरबन्द में क्या सोना और क्या ठीकरा॥

पदम्

घोरे विषमकान्तारे, सशुष्के प्रोच्छलन्मरौ।
पिपासा विवृतास्यस्य का मुक्ता का वराटिका॥४५॥
मरौ सम्भारहीनस्य पद्भ्यामापतितस्य च।
पुंसस्तु मेखलाबन्धे समा स्वर्णं तथोपलम्॥४६॥

कथा—१७

एक अरब निर्जन मरु में अत्यन्त प्यास से (यह) कह रहा था—

आख्यायितम्—१७

कश्चिदरबो निर्जनमरुकान्तारे पिपासाकुलो व्याहृतवानासीत्—

शेर

ऐ काश! मेरी मौत से पहले।
किसी दिन मेरी कामना में सफल होता॥
एक नदी लहराती मेरे घुटनों तक।
तो दिन भर अश्वास भरता रहता अपनी मशक॥

श्लोक

हन्त चेत् निधनात् प्राक्मे भूयादिति मदृच्छया।
सकृदेव मदीयं च पूरयेद्धि मनोरथम्॥४७॥
मन्दक्षोभोच्छ्रिता धारा गुल्फदघ्ना प्रजायताम्।
मतो दिवसपर्यन्तं चर्मकोशे भराम्यहम्॥४८॥

इसी प्रकार एक विस्तृत मैदान में एक यात्री मार्ग भटक गया और उसकी शक्ति और भोजन-सामग्री समाप्त हो गयी, और उसके पास कुछ दिरम कमर में थे। (वह) बहुत भटका, राह न मिली और कष्ट से मर गया। एक दल (उधर) आ निकला—दिरमों को देखा सामने उसके रखे हुए और मिट्टी पर लिखा हुआ—

एवं हि विस्तीर्णकान्तारे कश्चिद् यात्रिकः पथभ्रष्टो जातः, तस्य बलं च पाथेयं च समाप्तम्। तस्य कटिपुटे कतिचिद् दिरमाणि आसन्। स भूयो भूयो विभ्रान्, अध्वानं च न लेभे, कष्टान्मृतश्च। कश्चित् सार्थस्ततो निर्जगाम—तत्र दिरमाणि पुरतो निहितानि, मृत्तिकायां लिखितानि चाक्षराणि ददर्श—

कता

यदि समस्त शुद्ध स्वर्ण को धारण करे।
(तो भी) बिना पाथेय का व्यक्ति इच्छा पूर्ति नहीं कर सकता॥
निर्जन मरु में भूखे फकीर के लिये।
पकी शलगम कच्ची चांदी से अच्छी है॥

पदम्

समस्तं जातरूपं च दधन्नपि क्षुधातुरः।
वीतपाथेयजातश्चेल्लब्धकामो न जायते॥४९॥
कान्तारे निर्जने घोरे क्षुधापन्नाय साधवे।
शृतं प्रियतरं कन्दं न च रौप्यमसाधितम्॥५०॥

कथा—१८

मैं समय के अत्याचार से कभी नहीं रोया और न आकाश-चक्र के परिवर्तन से कभी मैंने मुंह बिगाड़ा था, सिवा एक समय के जब कि मेरा पांव नंगा था और मैं जूते (खरीदने) की सामर्थ्य नहीं रखता था। मैं कूफा की जामा मस्जिद में दुखी होकर आया। मैंने एक को देखा कि उसके पैर ही नहीं थे। मैंने परमात्मा को धन्यवाद किया और अपनी जूता विहीनता पर सब्र किया।

आख्यायितम्—१८

अहं दैवदुर्विपाकान्नान्वशोचं कदाचन। न चाकाशचक्रनेमिक्रमात् क्षुब्धवदनश्च जातः। किन्तु एकदा यदाहं निरुपानदासम्, उपानहौ च क्रेतुमप्यसमर्थ आसम्, अहं कूफानगर्याः प्रमुखोपासनामन्दिरे नितरां निर्विण्णो भूत्वाऽगमम्। तत्र मया कश्चित् पुमानवेक्षितः पदचरणविकलः। तं दृष्ट्वा अहं परमात्मनः कृपां ज्ञातवान् निरुपानद्वत्तायां धैर्यं च विधृतवानिति।

قطعه

مرغ بریان بچشم مردم سیر
کمتر از برگ تره بر خوانست ۔
و آنکه‌را دستگاه و قدرت نیست
شلغم پخته مرغ بریانست ٭

حکایت ۱۹

یکی از ملوک با تنی چند از خاصان در شکارگاهی بزمستان از شهر دور افتاد ٭ شب در آمد ۔ از دور دهی دیدند ویران و خانهٔ دهقانی در آن ٭ ملک گفت ۔ ''شب آنجا رویم تا زحمت سرما کمتر باشد،، ٭ یکی از وزرا گفت ۔ ''لایق قدر بلند پادشاه نباشد بخانهٔ دهقانی رکیک التجا کردن ۔ همین جای خیمه زنیم و آتش بر فروزیم،، ٭ دهقانرا خبر شد ۔ ما حضری ترتیب کرد ۔ و پیش سلطان حاضر آورد ۔ و زمین خدمت ببوسید و گفت ۔ ''قدر بلند سلطان نزول کردن در خانهٔ دهقان نازل نشدی ۔ و لیکن نخواستند تا قدر دهقان بلند شود،، ٭ ملک‌را سخن او مطبوع آمد ۔ شبانگاه بمنزل او نزول کرد ٭ دهقان خدمت پسندیده کرد ٭ بامدادان ملک باو خلعت و نعمت داد ٭ شنیدم که قدمی چند در رکاب سلطان میرفت و میگفت ۔

قطعه

ز قدر و شوکت سلطان نگشت چیزی کم
از التفات بمهمان سرای دهقانی ۔
کلاه گوشهٔ دهقان بآفتاب رسید
که سایه بر سرش‌افگند چون تو سلطانی ٭

حکایت ۲۰

گدائی‌را حکایت کنند ۔ که نعمت وافر اندوخته بود ٭ یکی از پادشاهان گفتش ۔ ''می نماید که مال بیکران داری ۔ به برخی از آن مارا دستگیری کن ۔ که مهمی پیش آمده است ۔ چون ارتفاع برسد وفا کرده شود،، ٭ گفت ۔ ''ای خداوند روی زمین ! لایق قدر بزرگواری

क़ता (बहरे ख़फ़ीफ़)

मुर्ग़े बिरियाँ ब चश्मे मर्दुमे सैर।
कमतर अज़ बर्गे तर्रा बर ख़्वान’स्त॥
व् आंकि रा दस्तगाहो क़ुदरत नेस्त।
शलग़मे पुख़्ता मुर्ग़े बिरियान’स्त॥

हिकायत—१९

यके अज़ मुलूक बा तने चन्द अज़ ख़ास्सान दर शिकारगाहे ब ज़मिस्तान् अज़ शहर दूर उफ़्ताद। शब दरामद। अज़ दूर दिहे दीदन्द वीरान व ख़ानाए दिहक़ाने दर आँ। मलिक गुफ़्त—‘शब आंजा रवेम् ता ज़ह्मते सरमा कमतर बाशद।’ यके अज़ वुज़रा गुफ़्त—‘लायक़े क़द्रे बलन्दे पादशाह न बाशद ब ख़ानाए दहक़ानीए रकीक इल्तिजा कदन्—हमी जाय ख़ेमा ज़नैम् व आतिश बर फ़रोज़ैम्।’ दहक़ान रा ख़बर शुद—मा हज़रे तरतीब कर्द—व पेशे सुलतान हाज़िर आवुद व ज़मीने ख़िदमत बिबोसीद व गुफ़्त—‘क़द्रे बलन्दे सुलतान ब नज़ूल कदन् दर ख़ानाए दह्क़ान नाज़िल न शुदे—व लेकिन न ख़्वास्तन्द ता क़द्रे दहक़ान बुलन्द शवद।’ मलिक रा सुख़ुने ऊ मत्बूअ आमद—शबांगाह ब मंज़िले ऊ नज़ूल कद। दहक़ान ख़िदमते पसन्दीदा कद। बामदादान् मलिक ब ऊ ख़िलअतो निअमत दाद। शुनीदम् कि क़दमे चन्द दर रिकाबे सुलतान मीरफ़त व मीगुफ़्त—

क़ता (बहरे मुज्तस्)

ज़ि क़द्रो शौकते सुल्तां न गश्त चीज़े कम।
अज़ इल्तिफ़ात ब महमा सराय दिहक़ाने॥
कुलाहे गोशाए दिह्क़ां ब आफ़ताब रसीद।
कि साया बर सरश् अफ़गन्द चू तो सुल्ताने॥

हिकायत—२०

गदाये रा हिकायत कुनन्द कि निअमते वाफ़िर अन्दोख़्ता बूद। यके अज़ पादशाहान् गुफ़्तश्—‘मीनुमायद कि माले बेकराँ दारी—ब बिर्ख़े अज़ आँ मारा दस्तगीरी कुन्—कि मुहिम्मे पेश आमदा अस्त—चूँ इर्तिफ़ाअ बिरसद—वफ़ा कर्दा शवद।’ गुफ़्त—‘ऐ ख़ुदावन्दे रूए ज़मीन! लायक़े क़द्रे बुज़ुर्गवारी

कता

भुना मुर्गा पेट भरे आदमी की दृष्टि में।
सागपात की अपेक्षा भी कम है दस्तरख़ान पर॥
और उसके लिये जिसके कि साधन और शक्ति नहीं है।
उबली शलगम ही भुना मुर्गा है॥

पदम्

आप्यायितस्यर्चियं स्यात् तस्मै मांसं पतत्त्रिणः ।
पत्रशाकमिव प्रायः स्वादहीनं प्रतीयते ॥ ७१ ॥
परन्तु रिक्तहस्ताय साधनविवर्जिताय च ।
गृञ्जनं कन्दुपक्वं हि पक्षिमांसात्प्रियं मतम् ॥ ७२ ॥

कथा—१९

एक राजा अपने कुछ विशिष्ट जनों के साथ आखेट क्षेत्र में, जाड़ों में, नगर से दूर पड़ गया। रात घिर आयी। उन्होंने दूर से एक ऊजड़ गाँव देखा जिसमें एक ग्रामीण का घर था। राजा ने कहा—'रात इस घर में बितायें ताकि शीत का कष्ट कम हो।' एक मंत्री ने कहा—'नीच ग्रामीण के घर शरण की प्रार्थना करना राजा की महत्ता के गौरव के अनुकूल नहीं है। इसी जगह हम ख़ेमा गाड़ दें और आग जला लें।' ग्रामीण को खबर लगी, जो कुछ हाज़िर था उसे व्यवस्थित किया और राजा के सामने हाज़िर किया और सेवाभूमि को चूम कर बोला—'महाराज की महत्ता का गौरव ग्रामीण के घर उतरने से नहीं घटेगा लेकिन लोग नहीं चाहते कि किसान का गौरव बढ़े।' राजा को उसकी बात सगत लगी। रात के समय उसके घर उतरा। ग्रामीण ने यथेच्छ सेवा की। सवेरे राजा ने उसे वस्त्रोपहार और सम्पत्ति दी। मैंने सुना है कि वह कुछ कदम राजा के पीछे पीछे चला और बोला—

आख्यायितम्—१९

कश्चिद्राजा स्वीयैः पारिषदैः परिवृतः शिशिरर्तौ बहुदूरं गतः । शर्वरी समुपक्रान्ता । तैर्दूरादेव कश्चिन्निर्जनप्रायो जनपदो दृष्टो यत्रैकाकी कश्चिद् ग्रामीणः प्रतिवसति स्म। राजोवाच—'शर्वरीं तत्र वाहयेम येन शैत्यकष्टं न स्यात्।' तेष्वेकतमोऽमात्यो ब्रूते—'नैतद्राजपदगौरवानुरूपमयं नीचग्रामीणस्य कुट्यां शरणमभियाचितम्। अत्रैव तावद्वयं शिविरमास्थापयेम अग्न्याधानं च कुर्मः।' ग्रामीणस्तावदिदं विज्ञाय यत्किञ्चिदुपादानं सदधे तद् व्यवस्थितवान्, राज्ञोऽभिमुखमुपगतश्च, सेवाभूमिं चुम्बयित्वोचे—'महाराजानां महिमा ग्रामीणस्य कुट्यां निवेशनाद्ध्रासं न यास्यति। न किन्तु लोकाः सहन्ते कृषीवलस्य मानवृद्धिम्।' राज्ञस्तस्य वचनमभिमतं जातम्। दोषा च तस्य कुट्यामुवास। ग्रामीणो यथेष्टं सिषेवे। व्यतीतायां हि शर्वर्यां राजा तस्मै वस्त्रप्राभृतं धनं च ददौ। श्रुतवानस्मि स कियद्दूरं राजानमनुजगामोवाच च—

कता

राजा की महत्ता और शौकत में कोई चीज़ कम नहीं हुई।
ग्रामीण के घर आतिथ्य का अनुग्रह करने से॥
ग्रामीण की पगड़ी का तुर्रा सूर्य तक पहुँच गया।
जब कि उसके सिर पर तेरे जैसे राजा की छाया पड़ी॥

पदम्

गौरवं गरिमा चैव राज्ञो न न्यूनतां व्रजेत्।
आतिथ्यग्रहणाच्चैव कृषकस्य निवेशने ॥ ७३ ॥
सूर्यस्पृक् स्वमुष्णीषं मन्यते तु कृषीवलः ।
त्वादृशस्येन्नरेशस्य छाया मूर्ध्नि यदाऽपतत् ॥ ७४ ॥

कथा—२०

एक भिखारी की कथा कहते हैं कि (उसने) बहुत सम्पत्ति इकट्ठी कर ली थी। एक राजा ने उससे कहा—'लगता है कि तू असीम सम्पत्ति रखता है। उसके थोड़े से भाग से मेरी सहायता कर, क्योंकि एक संकट सामने आया हुआ है। जब राज-कर आयेगा तो चुका दिया जायगा।' वह बोला—'हे पृथ्वीनाथ! आपकी

आख्यायितम्—२०

कस्यचिद् भिक्षुकस्य कथामुद्धरन्ति। तेन प्रकामं सम्पत्तिरुपचिता। एकदा राजा तमाह—'प्रतीयते यत् त्वया भूयसी वित्तमात्रोपचिताऽस्ति। तस्या लवांशेन मम सहायता कार्या, यत इदानीं सन्देहो मे समुपस्थितः। यदा राजकरमागमिष्यति तदाऽपनायिष्यते।' सोऽवदत्—'हे पृथ्वीनाथ! नैतद् भवतां महिमानुरूपं

نباشد دست بمال چون من گدای آلوده کردن ـ جو جو بگدائی فراهم آورده ام» ، گفت ـ «غمی مخور که بتاتار میدهم ـ الخَبِیثَاتُ لِلخَبِیثِینَ ،

بیت

قَالُوا عَجِینُ الکِلسِ لَیسَ بِطَاهِرٍ

قُلنَا نَسُدُّ بِهِ شُقُوقَ المَبرَزِ ،

بیت

گر آب چاه نصرانی نه پاکست

جهود مرده میشوئی ـ چه باکست ؟

شنیدم که سر از فرمان ملك باز زد و حجت پیش گرفت و شوخ چشمی نمود ، ملك فرمود تا مضمون خطاب را بزجر و توبیخ از وی مستخلص کردند ،

مثنوی

بلطافت چو بر نیاید کار

سر به بی حرمتی کشد ناچار ،

هر که بر خویشتن نبخشاید

گر نبخشد کسی برو شاید ،

حکایت ۲۱

بازرگانی را دیدم که صد و پنجاه شتر بار داشت و چهل بنده خدمتگار ، شبی در جزیرهٔ کیش مرا بحجرهٔ خویش برد و همه شب نیارامید از سخنهای پریشان گفتن ـ «که فلان انبارم بترکستانست ـ و فلان بضاعت بهندوستان ـ و این قبالهٔ فلان زمینست ـ و فلان مال را فلان کس ضمین ، گاه گفتی که خاطر اسکندریه دارم ـ که هوائی خوشست ـ و باز گفتی ـ نی ـ دریای مغرب مشوشست ـ سعدیا ـ سفری دیگر در پیشست ، گر آن کرده شود ـ بقیت عمر بگوشه نشینم» ، گفتم ـ «آن کدام سفرست» ؟ گفت ـ «گوگرد پارسی بچین خواهم بردن ـ که شنیدم

न बाशद दस्त ब माले चूं मन् गदाये आलूदा कर्दन्—कि जौ-जौ ब गदायी फ़राहम आवुर्दअम्।' गुफ़्त—'ग़मे मख़ुर कि ब तातार मीदिहम्।' 'अल् ख़बीसातु लि'ल् ख़बीसीन्।'

बैत (बह्रे कामिल)

क़ालू—अजीनु'ल् किल्सि लैस बिताहिरिन्।

क़ुल्ना—नसुद्दु बिही शुक़ूक़'ल् मब्रज़ि॥

बैत (बह्रे हज़ज्)

गर आबे चाहे नसरानी नै पाक'स्त।

जुहूदे मुर्दा मी शूयी—चि बाक'स्त॥

शुनीदम् कि सर अज़ फ़रमाने मलिक बाज़ ज़द व हुज्जत पेश गिरिफ़्त व शोख़चश्मी नमूद। मलिक फ़रमूद ता मज़मूने ख़िताब रा ब ज़ज्र व तौबीख़ अज़ वै मुस्तख़लिस कर्दन्द।

मसनवी (बह्रे ख़फ़ीफ़)

ब लताफ़त चु बर नयायद कार।

सर ब बेहुरमती कशद नाचार॥

हर कि बर ख़ेश्तन न बख़्शायद।

गर न बख़्शद कसे बरू शायद॥

हिकायत—२१

बाज़रगाने रा दीदम् कि सदो पंजाह शुतरे बार दाश्त—व चेहल बन्दा ख़िदमतगार। शबे दर जज़ीराए कीश मरा ब हुजराए ख़ेश बुर्द व हमा शब नयारामीद अज़ सुख़ुनहाये परेशां गुफ़्तन्—'कि फ़लां अम्बारम् ब तुर्किस्तान'स्त व फ़लां बिज़ाअत ब हिन्दुस्तान—व ईं क़बालाए फ़लां ज़मीन'स्त—व फ़लां माल रा फ़लां कस ज़मीन।' गाह गुफ़्ते कि ख़ातिरे इस्कन्दरिया दारम्—कि हवायश ख़ुश'स्त व बाज़ गुफ़्ते—नै—दरियाए मग़रिब मुशव्वश'स्त। सादिया! सफ़रे दीगर दर पेश'स्त। गर आं कर्दा शवद—बक़ीयते उम्र ब गोशा निशीनम्। गुफ़्तम्—'आं कुदाम सफ़र'स्त?' गुफ़्त—'गोगिर्दे पारसी ब चीन ख़्वाहम् बुर्दन्—कि शुनीदम्

महानता के गौरव के अनुरूप नहीं है मेरे जैसे भिक्षुक के धन से हाथ सानना जो कि जो जो माँग के भीख में मैंने जोड़ा है।' उसने कहा— 'कोई चिन्ता नहीं क्योंकि मुझे तातारों को देना है।' 'भ्रष्टाएँ भ्रष्टों के लिये।'

मादृशस्य भिक्षुजनस्य धनेन हस्तं कलुषीकर्तुं यन्मया यत्र यत्र याचमानेन सञ्चितम्।' राजाह—'न तत् शोच्यं यतस्तन्मया तातारेभ्यो देयमस्ति।'

'भ्रष्टा स्त्रियस्तु भ्रष्टेभ्यः।'

बैत

उन्होंने कहा—आग नूरों का नहीं है पवित्र।
हमने कहा—हम बन्द करेंगे उससे दरारों को शौचालय की॥

श्लोक

तैरुक्तं हि—'सुधापङ्को नास्ति तावत् पवित्रकः।'
'शौचागारस्य छिद्राणि पिधास्यामो हि नो वचः॥ ७५॥'

बैत

यदि ईसाई के कुँए का पानी पवित्र नहीं है।
मुर्दा यहूदी धो दें—क्या भय है॥

श्लोक

क्रुष्टान कूपपानीयं यदि नास्ति विशोधितम्।
स्नापयेयदि मूसीय मृतकं तेन किं भयम्॥ ७६॥

मैंने सुना कि (उसने) राजा की आज्ञा से सिर हिला दिया, तब करने लगा और धृष्टता दिखाई। राजा ने आज्ञा दी कि विवादास्पद वस्तु (धन) को रूखे और बलात्कारपूर्वक छीन लें।

अहं श्रुतवानस्मि स राज्ञ आदेशममान्यं कृत्वा मूर्धानं चचाल। विवादे प्रवृत्तो धार्ष्ट्यमन्य दर्शितवान्। राजाऽऽदिदेशदथ विवादास्पदं वस्तु निग्रहपुरस्सरं तस्मात् प्रसह्याददतु।

मसनवी

कोमलता से जब काम नहीं सधता।
सिर अपमान से लाचार झुकता है॥
जो कि अपने को सम्मान नहीं करता।
यदि नहीं करता कोई दूसरा उसे तो उचित ही है॥

गाथा

मार्दवेण यदा चैव कार्यसिद्धिर्न जायते।
तदा धृष्टस्य लोकस्य शिरः केशेषु गृह्यते॥ ७७॥
यस्य नात्यात्मसम्मानं नास्ति वा स्वस्य गौरवम्।
अन्ये न चेन्न मन्यन्ते मान्यं तदिति साम्प्रतम्॥ ७८॥

कथा—२१

मैंने एक व्यापारी को देखा कि जो १५० ऊँट रखता था और चालीस दास सेवक। एक रात वह कीश द्वीप में मुझे अपने घर ले गया और सारी रात तरह तरह की बातों से विश्राम नहीं किया—'कि मेरा अमुक भण्डार तुर्किस्तान में है और अमुक माल हिन्दुस्तान में, और यह कबाला अमुक जमीन का है, और अमुक माल का अमुक व्यक्ति जामिन है।' कभी कहता—'कि मैं इस्कन्दरिया (जाने) का विचार रखता हूँ क्योंकि वहाँ की जलवायु अच्छी है फिर कहता कि—नहीं—पश्चिम सागर बड़ा अशान्त है। सादी! एक और यात्रा करनी है। यदि वह हो जाय तो शेष आयु कोने में बैठूँ।' मैंने कहा—'वह कौनसी यात्रा है?' वह बोला—'मैं ईरानी गूगल को चीन ले जाना चाहता हूँ क्योंकि मैंने सुना है कि वहाँ उसका बड़ा दाम है।

आख्यायितम्—२१

एकदा मया कश्चिद् वणिग् दृष्टो यस्तु पञ्चाशदधिकशतमुष्ट्रगोष्ठं दधे चत्वारिंशच्च दासान्। एकदा शर्वर्यां स मां कीशद्वीपस्थं स्वस्य निलयमनैषीद् बहुविधं कथाप्रसङ्गपरिच्छेदं जल्पजल्पन् समां रात्रिं न व्यरमत्—'अमुको भण्डारो मदीयस्तुर्किस्थानेऽस्ति, अमुकश्च हिन्दुस्ताने, इदं क्रयपत्रकममुकस्य भूखण्डस्यास्ति, अमुकस्य पण्यस्यामुकः प्रतिभूः।' कदाचिद् ब्रूतेऽथ—'सिकन्दरीयाया पुर्यां यातुमिच्छामि, ननु तत्रत्यो जलवायुरतीव स्वास्थ्यकरोऽस्ति।' कदाचिद् ब्रूते—'न च, पश्चिमसागरो नितरामशान्तः। हे सादिन्! मया यात्रैकावश्यकर्तव्याऽस्ति, यद्येषा सम्पद्यते तर्हि शेषे जीवने एकान्तवासं करिष्यामि।' अहमप्राक्षम्—'का चैषा यात्रा?' सोऽवदत्—'अहं पारसीकं गुग्गुलं चीनान् नेतुमीहे, श्रूयते तत्राय महार्घः।

قیمت عظیم دارد - و از آنجا کاسهٔ چینی بروم برم
و دیبای رومی بهند - و پولاد هندی بحلب - و آبگینهٔ
حلبی به یمن - و برد یمانی بپارس - از آن پس ترک سفر
کنم و بدکانی بنشینم»، + چندانی ازین مالیخولیا فرو گفت
که بیش طاقت گفتنش نماند + گفت - «ای سعدی!
تو هم سخنی بگوی از آنها که دیدی و شنیدی»، + گفتم -

क़ीमते अज़ीम दारद। व अज़ आं जा कासाए चीनी ब रूम बरम्—
व दीबाए रूमी ब हिन्द—व पूलादे हिन्दी ब हल्ब—व आबगीनाए
हल्बी ब यमन—व बुर्दे यमानी ब पारस। अज़ आं पस तर्के सफ़र
कुनम् व ब दुकाने निशीनम्। चन्दाने अज़ ईं मालेख़ूलिया फ़रो गुफ़्त
कि बेश ताक़ते गुफ़्तनश् न मांद। गुफ़्त—'ऐ सादी!
तो हम सुख़ने बिगोय अज़ आंहा कि दीदी व शुनीदी।' गुफ़्तम्—

نظم

آن شنیدستی که وقتی تاجری
در بیابانی بیفتاد از ستور -
گفت - چشم تنگ دنیادار را
یا قناعت پر کند یا خاك گور +

नज़्म (बहरे रमल)

आं शुनीदस्ती कि वक़्ते ताजिरे।
दर बियाबाने बि युफ़्ताद अज़ सुतोर॥
गुफ़्त—'चश्मे तंगे दुनिया दार रा।
या क़नाअत पुर कुनद या ख़ाके गोर॥'

حکایت ۲۲

مالداری‌را شنیدم که به بخل چنان معروف بود که
حاتم طائی بسخا + ظاهر حالش بنعمت دنیا آراسته -
و خست نفس در نهادش همچنان متمکن تا جانی که
نانی‌را بجانی از دست ندادی - و گربهٔ ابو هریره‌را بلقمه
ننواختی - و سگ اصحاب کهف‌را استخوانی نینداختی
فی الجمله کسی خانهٔ اورا ندیدی در گشاده - و سفره
اورا سر گشاده +

हिकायत—२२

मालदारे रा शुनीदम् कि ब बुख़्ल चुनां मारूफ़ बूद कि
हातिमे ताई ब सख़ा। ज़ाहिरे हालश् ब निअमते दुनिया आरास्ता—
व ख़िस्सते नफ़्स दर निहादश् हमचुनां मुतमक्किन ता बजाए कि
नाने रा बजाने अज़ दस्त न दादे—व गुरबाए अबू हुरैरा रा ब लुक़माए
न नवाख़्ते—व सगे असहाबे कह्फ़ रा उस्तुख़्वाने नयन्दाख़्ते।
फ़िल् जुमला कसे ख़ानाए ऊरा न दीदे दर कुशादा—व सुफ़राए
ऊरा सर कुशादा।

بیت

درویش بجز بوی طعامش نشنیدی
مرغ از پس نان خوردن او ریزه نچیدی +

बैत (बहरे हज़ज)

दरवेश ब जुज़ बूए तआमश् न शुनीदे।
मुर्ग़ अज़ पसे नां ख़ुर्दने ऊ रेज़ा न चीदे॥

شنیدم که بدریای مغرب راه مصر بر گرفته بود و خیال
فرعونی در سر کرده + بادی مخالف گرد کشتی بر آمد -
و دریا در جوش آمد + حَتَّى اِذَا اَدْرَكَهُ الْغَرَقُ -

शुनीदम् कि ब दरियाए मग़रिब राहे मिस्र बर गिरिफ़्ता बूद व ख़याले
फ़िरऔनी दर सर कर्दा। बादे मुख़ालिफ़ गिर्दे कश्ती बर आमद
व दरिया दर जोश आमद। हत्ता—'इज़ा अद्राकहु'ल ग़रक़ु।'

بیت

با طبع ملولت چه کند دل که نسازد؟
شرطه همه وقتی نبود لایق کشتی -

बैत (बहरे हज़ज-मुसम्मन्)

बा तबए मलूलत चि कुनद दिल कि नसाज़द।
शरता हमा वक़्ते न बवद लायक़े कश्ती॥

और वहाँ से चीनी वर्तन रूम ले जाऊँगा और रूम का रेशम हिन्दुस्तान को और हिन्दुस्तान का लोहा हलब को। और हलब के प्याले यमन को और यमन का लहरिया फारस को। इसके बाद यात्रा बन्द कर दूँगा और दुकान पर बैठूँगा।' उसने पागलपन की बकबक इतनी की कि उसकी और बोलने की शक्ति न रही। बोला—'अरे सादी! जो कि देखा सुना है उसमें से तू भी कुछ कह।' मैंने कहा—

ततश्च चीनजानि भाण्डानि रूमान् नेष्यामि, रूमीय कौशेयपट भारतान्, भारतीयमायस हलवान्, हालव्यानि पानपात्राणि यमनान्, यमनीय कमनीयमिन्द्रचापच्छट वासो पारसीकान्, तदनन्तर यात्रासञ्चारादुपरतो भूत्वाऽऽपण एव निष्ठातास्मि।' स एवमेतावन्त प्रलाप कृतवान् यदस्यातोऽधिक वक्तु सामर्थ्य न शिष्टम्। अन्ततोऽवोचत्—'हे सादिन्! त्वमपि किञ्चिद् ब्रूहि यच्च दृष्टवान् यद्वा श्रुतवानसीति।' अहमवोचम्—

नज़्म

क्या तूने वह सुना है कि एक समय कोई व्यापारी।
मरुकान्तार में अपनी सवारी से गिर पड़ा॥
बोला—दुनियादार की लोभी आँख को।
या तो सन्तोष भरता है या कब्र की मट्टी॥

प्रबन्ध

श्रुतवानसि किं चैतद् व्यापारी कश्चिदेकदा।
गहने च मरुक्षेत्रे पशुपृष्ठात् परिच्युत॥५९॥
उवाच—'चक्षुर्गृध्यच्च जगदासक्तचेतस।
सन्तोषो वा चिताग्निर्वा प्रपूरयति केवलम्॥६०॥

कथा—२२

एक धनी के विषय में मैंने सुना कि कजूसी के लिये इतना प्रसिद्ध था जितना कि हातिम ताई उदारता के लिये। प्रत्यक्ष में वह ससार के वैभव से विभूषित था और चित्त की नीचता उसमें ऐसी कूटकूट कर भरी थी कि एक भी रोटी किसी को हाथ से नहीं देता था। अबूहुरैरा की बिल्ली को एक भी ग्रास नहीं देता था और न गुफा के साधुओं के (नाम पर) कुत्ते को हड्डी फेंकता था। सक्षेप में किसी ने उसका घर दरवाजा खुले नहीं देखा था और न उसका दस्तरखान बिछा देखा था।

आख्यायितम्—२२

श्रुतवानस्मि कश्चिद्धनिक कार्पण्येन चैतावान् प्रथितकीर्तिर्बभूव यथाऽऽसीद् हातिमतायी औदार्येण च। बाह्यत स सासारिकवैभवविभूषित आसीदन्ततश्चासीदतीव नीचचेता, यतो न जातु कस्मैचिद्धस्त प्रसार्यान्न ददौ, न च अबूहुरैर मार्जाराय ग्रासमेक ददौ न च दरीसाधूनां स्मृतौ कुक्कुरायास्थि वा ददौ। अनागतिविस्तरेण, केनापि तस्य गृहमनावृतद्वार न दृष्ट न च प्रस्तीर्णं चास्य भोजनम्।

बैत

किसी फकीर ने उसका भोजन सिवा गंध के नहीं पाया।
किसी चिड़िया ने उसके भोजन के बाद टुकडे नहीं चुगे॥

श्लोक

भोज्यगन्धादृते किञ्चिन्न लेभे याचकस्तत।
विहगोऽपि क्वचित्तस्य भुक्तशेष न चाददे॥६१॥

मैंने सुना कि पश्चिमी सागर होकर वह मिस्र जा रहा था फिरऔनी खयालों में भूला हुआ। विरुद्ध पवन ने जहाज़ को घेर लिया और समुद्र उत्तेजित हो गया। यहाँ तक कि—'जब डूबने ने उन्हें ग्रस लिया।'

श्रूयतेऽथ पाश्चात्यसागरमार्गेण स ऐश्वर्यमदातिसक्त फिरऔन इव मिश्रान् गच्छन्नासीत्। विरुद्धेन वातेन नौका समाक्रान्ता, सागरश्च क्षोभमागत। अन्तत—'निमज्जन तान् परितो न्यवास्कन्दत्।'

बैत

तेरी नाराजी को दिल क्या करे कि नहीं है योग्य।
अनुकूल पवन सारे समय नहीं होता नाव के योग्य॥

श्लोक

अनेन प्रकृतिक्षोभात् चित्तक्षोभो न युज्यते।
नानुकूलो सदा वायुर्नौकावाहसहायक॥६२॥

दस्ते दुआ बर आवुर्द व फ़रियादे बे फ़ायदा कर्दन् गिरिफ़्त।

'फ़ इज़ा रकिबू फ़िल् फ़ुल्कि दअवुल्लाह मुख़्लिसीन लहु'द्दीन।'

دست دعا بر آورد و فریاد بی فائده کردن گرفت

فَاِذَا رَکِبُوا فِی الْفُلْکِ دَعَوُا اللهَ مُخْلِصِینَ لَهُ الدِّین

बैत (बहरे मुसरिह)

दस्ते तज़र्रुअ चि सूद बन्दाए मोहताज रा।
वक़्ते दुआ बर ख़ुदा ओ वक़्ते करम दर बग़ल।।

بیت

دست تضرع چه سود بندهٔ محتاج را
وقت دعا بر خدا و وقت کرم در بغل

क़ता (बहरे ख़फ़ीफ़)

अज़ ज़रो सीम राहते बिरसां।
ख़ेशतन हम तमत्तुए बर गीर।।
व् आं गह ईं ख़ाना अज़ तो ख़्वाहद मांद।
ख़िश्ते अज़ सीमो ख़िश्ते अज़ ज़र गीर।।

قطعه

از زر و سیم راحتی برسان
خویشتن هم تمتعی بر گیر
و آنگه این خانه از تو خواهد ماند
خشتی از سیم و خشتی از زر گیر

आवुर्दा अन्द कि दर मिस्र अक़ारिबे दरवेशे दाश्त। बाद अज़ हलाके ऊ ब बक़ीय्यते माले ऊ तवांगर शुदन्द व जामहाए कुहना ब मर्गे ऊ ब दरीदन्द—व ख़ज़्ज़ व दमयाती ब बुरीदन्द। हम दर आं हफ़्ता यके रा दीदम् अज़ ऐशान बर बादपाए रवां व ग़ुलामे दर पै दवां। बा ख़ुद गुफ़्तम्—

آورده اند که در مصر اقارب درویشی داشت، بعد از هلاک او ببقیت مال او توانگر شدند و جامهای کهنه بمرگ او بدریدند و خز و دمیاطی بریدند، هم در آن هفته یکی را دیدم از ایشان بر باد پائی روان و غلامی در پی دوان، با خود گفتم۔

क़ता (बहरे ख़फ़ीफ़)

वह्! कि गर मुर्दा बाज़ गरदीदे।
ब मियाने क़बीला ओ पैवन्द।।
रद्दे मीरास सख़्ततर बूदे।
वारिसां रा ज़ि मर्गे ख़ेशावन्द।।

قطعه

وه که گر مرده باز گردیدی
بمیان قبیله و پیوند
رد میراث سخت‌تر بودی
وارثان را ز مرگ خویشاوند

ब साबिक़ए मारिफ़ते कि दर मियाने मा बूद—आस्तीनश् गिरिफ़्तम् व गुफ़्तम्—

بسابقهٔ معرفتی که در میان ما بود آستینش گرفتم و گفتم۔

बैत (बहरे ख़फ़ीफ़)

बिख़ुर ऐ नेकसीरते सरा मर्द।
कां निगूं बख़्त गिर्द कर्दो न ख़ुर्द।।

بیت

بخور ای نیک سیرت سره مرد
کان نگون بخت گرد کرد و نخورد

रिवायत—२३

सय्यादे ज़ईफ़ रा माही क़वी दर दाम उफ़्ताद। ताक़ते हिफ़्ज़े आं न दाश्त—माही बर ग़ालिब आमद व दाम अज़ दस्ताश् दर रबूद व बिरफ़्त। मुतहय्यर शुद व गुफ़्त—

حکایت ۲۳

صیادی ضعیف را ماهی قوی در دام افتاد، طاقت حفظ آن نداشت۔ ماهی برو غالب آمد و دام از دستش در ربود و برفت، متحیر شد و گفت۔

(उसने) प्रार्थना में हाथ ऊपर उठाया और बेफ़ायदा फरियाद करने लगा। 'तो जब सवार हुए नाव में, उन्होंने प्रार्थना की परमेश्वर से, (दिखाते हुए) उसको अपना सच्चा धर्म।'

तेन प्रार्थनायामूर्ध्वं हस्तं न्यस्तं मोघं च त्राहि माम् त्राहिमामिति क्रुष्टम्। 'तुष्टनुर्विगाराद्य धर्मं विज्ञाप्य चानिशम्।'

बैत

(ऐसे) हाथ ऊपर उठाकर रोने से क्या लाभ निरुपाय दास का।
जो प्रार्थना के समय भगवान की ओर और दान के समय बगल में।।

श्लोक

रुदितेनोच्चहस्तेन विपन्नस्य नरस्य किम्।
प्रार्थनायां यदुत्तिष्ठेत् कुक्षिस्थं दानकर्मणि।। ६३।।

क़ता

सोने और चाँदी से सुख पहुँचा।
स्वयं भी सुख उठा।।
और तब यह घर तेरे बाद भी रहेगा।
एक ईंट चाँदी से और एक ईंट सोने से बना।।

पदम्

स्वर्णेन रजतेनाथ भूयास्त्वं शर्मदं सदा।
स्वतोऽपि सुखमन्विष्या धनलभ्यमहर्निशम्।। ६४।।
अद सनातनं वेश्म स्यात्ता तावद् गतेऽपि ते।
स्वर्णेन रजतेनैनमत एव विधीयताम्।। ६५।।

कहते हैं कि मिस्र में उसके फटेहाल रिश्तेदार थे। उसके मरने के उपरान्त उसके शेष धन से वे धनी हो गये और उसकी मौत पर उन्होंने अपने पुराने कपड़े फाड़ डाले और रेशम और अण्डी के कपड़े कटवा सिलवा लिये। उसी सप्ताह उनमें से एक को मैंने पवनवेगी घोड़े पर जाते देखा और एक दास को पीछे पीछे दौड़ते हुए। मैंने अपने आपसे कहा—

श्रूयते तस्य सम्बन्धिनो मिश्रदेशे धनाभावे कालं वाहयन्ति स्म। तस्मिन् पञ्चत्वं गते तस्यावशिष्टेन धनेन ते धनाढ्या बभूवु। तस्य मरणोदन्तं श्रुत्वा ते स्वीयानि जीर्णानि वासांसि छिन्नानि, नूतानि कौशेयवस्त्राणि च सीवितानि। तस्मिन्नेव सप्ताहेऽह्न तेष्वेकं पवनजवाश्वारूढं, दासं च तमनु धावन्तमपश्यम्। मया स्वगतेनोक्तम्—

क़ता

वाह! यदि मरा हुआ वापिस आ जाय।
अपने कुटुम्ब और सम्बन्धियों के बीच।।
(तो) उत्तराधिकार का त्याग अधिक कष्टकर होगा।
उत्तराधिकारियों के लिये आत्मीय की मौत से।।

पदम्

अहो! दिवङ्गतो लोको यद्यागच्छेत् ततः पुनः।
स्वकीयं परिवारं च कथञ्चन कुटुम्बिनः।। ६६।।
तस्योत्तराधिकारस्य परित्यागः सुदुःसहः।
भविता वर्तमानेभ्यो मरणाच्च कुटुम्बिनः।। ६७।।

पुराने परिचय के कारण जो हमारे बीच में था, मैंने उसकी बाँह पकड़ी और कहा—

आवयोः प्राक्तनपरिचयाच्चाहं तं हस्ते गृहीत्वा चावदम्—

बैत

खा! हे सद्गुण सम्पन्न भले आदमी।
क्योंकि उस अभागे ने जोड़ा था, खाया नहीं।।

श्लोक

भुङ्क्ष्वैनं भोगसम्पत्तिमहो सद्गुणभूषित।
सञ्चितं भाग्यहीनेन तेन भुक्तं न किञ्चन।। ६८।।

कथा—२३

एक निर्बल शिकारी के जाल में मोटी मछली आ गयी। वह उसको रोकने की शक्ति नहीं रखता था—मछली उससे प्रचण्ड हो गयी और उसके हाथ से जाल छीनकर भाग गयी। चकित हुआ और कहने लगा—

आख्यायितम्—२३

कस्यचिन्निर्बलस्य धीवरस्य जाले एकदा बृहन्मत्स्यः प्रापतत्। स तं निगृहीतुं न शशाक। मत्स्यस्तस्मात् प्रबलो जातो जालं च प्रसह्याकर्षत् पलायितश्च। विस्मयापन्नः स उवाच—

قطعه

شد غلامی که آب جو آرد
آب جو آمد و غلام ببرد
دام هر بار ماهی آوردی
ماهی این بار رفت و دام ببرد

कता (बहरे खफीफ)

शुद गुलामे कि आबे जू आरद।
आबे जू आमदो गुलाम बिबुर्द॥
दाम हरबार माही आवुर्दे।
माही ईं बार रफ्तो दाम बिबुर्द॥

دیگر صیادان دریغ خوردند و ملامتش کردند که چنین صیدی در دامت افتاد و نتوانستی نگاه داشتن! گفت - «ای برادران! چه توان کرد؟ مرا روزی نبود و ماهی‌را همچنان روزی مانده بود - و حکما گفته اند -

صیاد بی روزی در دجله ماهی نگیرد -
و ماهی بی اجل بر خشکی نمیرد».

दीगर सय्यादाँ दिरेग खुर्दन्द व मलामतश् कर्दन्द कि चुनीं सैदे दर दामत उफ्ताद व न तवानस्ती निगाह दाश्तन्। गुफ्त—'ऐ बिरादरान्! चि तवाँ कर्द? मरा रोज़ी न बूद व माही रा हम चुनाँ रोज़ी मान्दा बूद। व हुकमा गुफ्ता अन्द—

'सय्यादे बे रोज़ी दर दज्ला माही न गीरद।
व माही बे अजल बर खुश्की न मीरद॥'

بیت

صیاد نه هر بار شکاری ببرد
باشد که یکی روز پلنگش بدرد.

बैत (बहरे हज़ज)

सय्याद नै हर बार शिकारे बिबुरद।
बाशद कि यके रोज़ पलंगश् बिदरद॥

حکایت ۲۴

دست و پا بریده‌ای هزارپایی‌را بکشت. صاحبدلی برو بگذشت و گفت - «سبحان الله! با هزار پای که داشت - چون اجلش فرا رسید - از بی‌دست و پایی نتوانست گریخت».

हिकायत—२४

दस्तो पा बुरीदाए हज़ार पाये रा बुकुश्त। साहिब दिले बर बिगुज़श्त व गुफ्त— सुब्हान अल्लाह! बा हज़ार पाये कि दाश्त—चु अजलश् फरा रसीद—अज़ बे दस्तो पाये न तवानिस्त गुरेख्त।

مثنوی

چو آید ز پی دشمن جان ستان
ببندد اجل پای مرد دوان.
در آن دم که دشمن پیاپی رسید
کمان کیانی نشاید کشید.

मसनवी (बहरे मुतकारिब)

चु आयद ज़ि पै दुश्मने जाँ सिताँ।
बिबन्दद अजल पाये मर्दे दवाँ॥
दराँ दम कि दुश्मन् पयापै रसीद।
कमाने कयानी न शायद कशीद॥

حکایت ۲۵

ابلهی‌را دیدم سمین خلعتی ثمین در بر و مرکبی تازی در زیر و قصبی مصری بر سر. کسی گفت - «سعدی! چگونه همی‌بینی این دیبای معلم بر این حیوان لا یعلم؟» گفتم - «خطی زشت است که به آب زر نبشته است».

हिकायत—२५

अबलहे रा दीदम् सिमीने खिलअते समीन दर बर व मरकबे ताज़ी दर ज़ेर व कसबे मिस्री बर सर। कसे गुफ्त—'सादी! चूगूना मी बीनी ईं दीबाए मुअल्लम बर ईं हैवाने ला यअलम?' गुफ्तम—'खत्ते ज़िश्त् अस्त कि ब आबे ज़र नबिश्ता अस्त।'

कता

गया एक दास कि नदी का पानी लावे।
नदी का पानी आया और दास को (बहा) ले गया ॥
जाल हरबार मछली लाता था।
मछली इस बार आयी और जाल ले गयी ॥

दूसरे शिकारियों ने अफसोस किया और उसको फटकारा कि ऐसा शिकार तेरे जाल में आया और तू उसे रख न सका। उसने कहा—'अरे भाइयो! क्या किया जाय। मेरे भाग्य में रोजी नही बदी थी और मछली की रोजी बदी थी।' और विद्वान् लोग कह गये है—'बिना रोजी वाला शिकारी दज्ला में भी मछली नही पाता और मछली बिना मौत सुखी में भी नही मरती ॥'

पदम्

नद्या पानीयमानेतुमेकदा सेवको गत।
तरङ्गपूर आगच्छद्दासं नीत्वा प्रवाहित ॥ ६९ ॥
निनाय सर्वदानायश्चाद्भ्यो मत्स्यसमुच्चयम्।
इदानी तु गतो मत्स्यो जाल नीत्वा समन्तत ॥ ७० ॥

अन्यैर्धीवरै खेद प्रकाशित स च भर्त्सित। 'अयैतावान् वृहन्मत्स्यस्ते जाल आपतितो न त्वमेन रोद्धु शशक्थेति।' स ऊचे—'अयि भ्रातर! किं कर्तुमर्हामि! मम भाग्ये जीविका नासीत्, मत्स्यस्य च जीवनमासीत्। यथाहुर्विद्वास —

प्रारब्धरहितो व्याधो दज्लाया नाप्नुते झषम्।
अप्राप्तमरणो मत्स्यो म्रियते न धरातले ॥ ८ ॥

वैत

शिकारी हरबार शिकार नही लाता।
हो सकता है कि एक दिन उसे शेर फाड डाले ॥

श्लोक

व्याधो न सर्वदाऽऽखेटमानेतु शक्नुयादिति।
कदाचिद्भाव्यते व्याघ्रश्चावदीर्णं करोति तम् ॥ ७१ ॥

कथा—२४

एक हाथ पैर कटे हुए (आदमी) ने शतपदी (कानखजूरे) को मार डाला। एक भक्त उधर से गुजरा और बोला—'धन्य हो प्रभो! यह हजार पैर रखता था—जब इसकी मौत आयी तो बिना हाथ पैर वाले से न भाग सका।'

आख्यायितम्—२४

एकदा केनचिच्छिन्नशाखेन पुरुषेण शतपदी हता। कश्चिद्भक्तस्ततो गच्छन्नुवाच—'धन्योऽसि प्रभो! इय शतपदी शत पदानि दधानाऽपि मरणे सन्निहिते छिन्नशाखिन पलायितु न शशाक।'

मसनवी

जब आता है पीछे पीछे प्राणघातक शत्रु।
तो बाँध देती है मौत दौडने वाले आदमी के पैर ॥
उस समय जब कि दुश्मन पीछे पीछे चलता आता है।
कयानी धनुष् नही खीची जाती ॥

गाथा

अनुगस्तु यदायाति सुराति प्राणघातक।
पादौ बध्नाति वै मृत्युर्धावत पुरुषस्य हि ॥ ७२ ॥
यस्मिन् काले समायाति शत्रु कालेन प्रेरित।
तदा चाप कयानीय समाक्रष्टु न शक्यते ॥ ७३ ॥

कथा—२५

मैंने एक मूर्ख को देखा जो बहुमूल्य वस्त्र सीने पर पहने था और अरबी घोडा उसके नीचे था और मिस्री मलमल की पगडी उसके सिर पर थी। किसी ने कहा—'हे सादी! कैसा देखते हो इस रेशमी छीट को इस अज्ञानी पशु के ऊपर?' मैंने कहा—'भद्दा खत है जो कि सोने के पानी से लिखा गया है।'

आख्यायितम्—२५

अह कञ्चिन्मूर्ख, महार्घमुत्तरीय दधानम्, आरब्यमश्वमारूढ, मिश्रदेशीयमुष्णीष मूर्धनि दधानमदशम्। केनचिदह पृष्ट—'हे सादिन्! कीदृशमिद कौशेयच्छद ज्ञानहीनेऽमुस्मिन् पशौ पश्यसि?' अहमवोचम्—'हस्तलेखो विवर्णश्च सुवर्णलिखितो यथा ॥ ९ ॥'

शेर

बेशक वह मनुष्यों में गधा समान है।
एक बछड़ा, जिस्म है जिसका रँभाता हुआ॥

श्लोक

अवश्य स मनुष्येभ्य स्मृतो वैशाखनन्दन ।
यश्चीत्करोति कण्ठेन हैमवत्सतरो यथा ॥ ७४ ॥

क़ता

आदमी नाम से नहीं कह सकते इस जानवर को।
सिवा इसके कपड़ो, पगड़ी और बाहरी आकृति के॥
सारे तरफ इसका सारा वैभव और सम्पत्ति देख।
कि इसकी कोई चीज नहीं पायेगा तू हलाल सिवा इसके खून के॥

पदम्

मनुष्यसंज्ञया जातु नाभिधेयोऽस्त्ययं पशु ।
ऋतेऽस्य परिधान चैवोष्णीष च नराकृतिम् ॥ ७५ ॥
आसागन्तात् प्रपश्यैन सम्प्रिष्ट च वैभवम् ।
न धर्म्यं किंचिदवानेयगतस्तु शोणितादृते ॥ ७६ ॥

कता

सज्जन यदि निर्धन हो जाय तो खयाल मत कर।
कि उसका ऊँचा पद नीचा हो जायगा॥
और यदि उसकी चाँदी की देहली में सोने की कील ठुकी हो।
तो मत सोच कि यहूदी शरीफ हो जायगा॥

पदम्

सज्जनो यदि निर्द्रव्यो मा मस्यास्त कदाचन।
यदुच्चपदवी चास्य निर्द्रव्यत्वाच्च हीयते॥ ७७ ॥
परन्तु रौप्यदेहल्या सुवर्णं खचित भवेत्।
मा मस्थास्तेन मूसीय कदाचित् सज्जनायते॥ ७८ ॥

कथा—२६

एक चोर ने एक भिक्षुक से कहा—'तुझे शर्म नहीं आती कि जौ जौ भर चाँदी के लिये हर नीच के सामने हाथ फैलाता है!' वह बोला—

बैत

हाथ फैलाना एक हब्बा भर चाँदी के लिये।
बिहतर है कि डेढ़ दाग के लिये लोग हाथ काट दें॥

आख्यायितम्—२६

केनचिच्चौरेण कश्चिद् भिक्षुक आक्षिप्त —'न त्व लज्जसे यद् यवप्रमाणाय रौप्याय हस्त प्रसार्य याचसे सर्वस्य पुरत ?' सोऽवदत्—

श्लोक

हस्तप्रसारण भैक्ष्ये रौप्यस्य कणिकाकृते।
वर न कर्तित किञ्च दामार्धकृते कर ॥ ७९ ॥

कथा—२७

एक धूसेबाज की कथा कहते हैं कि विपरीत समय के कारण क्षीण गया और विशाल मुख और छोटा हाथ होने के कारण जान पर बन आई। वह बाप के पास शिकायत ले गया और आज्ञा मागी कि मैंने यात्रा का सकल्प किया है—सम्भवत बाहुबल से मैं कामना पूरी कर लू।

आख्यायितम्—२७

कस्यचिन्मौष्टिकस्य कथाऽनुश्रूयते यदयं कालविपर्ययान्नितरा निर्विण्णो जात । लम्बोदरत्वादलम्बकरत्वाच्च स कण्ठगतप्राणो बभूव। स स्वस्य पितरमात्मनो दु ख निवेदयामास। आदेश च ययाचेऽथ मया प्रवासयात्रा सकल्प्ता, शक्यते नु कदाचिद्बाहुबलेन कार्यसिद्धि स्यात्।

बैत

गुण और विद्या व्यर्थ है जब तक प्रदर्शित न हो।
गूगल आग पर रखते है और कस्तूरी को रगड़ते हैं॥

श्लोक

विद्या मोघा गुणो मोघो यावन्नैतौ प्रदर्शितौ।
हूयते गुग्गुलुर्वह्नौ कस्तूरी च विमृज्यते ॥ ८० ॥

बाप ने कहा—'हे पुत्र! व्यर्थ विचार को सिर से निकाल दे और सन्तोष के पैर को सुरक्षा के दामन में खींच ले, क्योंकि बड़ों ने कहा है कि—"वैभव उद्योग से नहीं मिलता। बल्कि उसका उपचार उद्वेग को कम करना है"।'

बैत

कोई नहीं पकड़ सकता वैभव के आँचल को ज़ोर से।
प्रयत्न व्यर्थ है अन्धे की आँख पर खिज़ाब लगाने का॥

बैत

यदि तेरे रोम रोम में दो दो सौ गुण हों।
हुनर काम नहीं आता जब भाग्य बुरा होता है॥

बैत

बलशाली अभागा क्या कर सकता है।
सौभाग्य बाहु वाला कठोर बाहु वाले अच्छा है॥

पुत्र बोला—'हे पिता! यात्रा के लाभ अनेक हैं और उसके प्रतिफल अगणित हैं। चित्त की प्रसन्नता, लाभ का आगम, वैचित्र्य दर्शन, एवं वैचित्र्य श्रवण, देशों की सैर, मित्रों का लाभ, पदवी, ज्ञान शिष्टाचार और सम्पत्ति का संग्रह मित्रों का संग्रह और पहचान और संसार में लोगों का अनुभव इनमें से कुछ हैं। जैसा कि प्रेममार्ग के यात्री (सूफी) कह गये हैं—

क़ता

जब तक तू घर की दुकान (कोठरी) में गिरवी है।
(तब तक) हे कच्चा आदमी! तू हरगिज आदमी नहीं होगा॥
जा दुनिया में सैर कर।
उस दिन के पूर्व कि तू दुनिया से चल दे॥'

बाप ने कहा—'हे पुत्र! यात्रा के लाभ इसी प्रकार—जैसा कि तू कहता है—बहुत हैं। लेकिन पूरी तरह वे पाँच वर्गों को ही प्राप्त होते हैं।'

'पहले व्यापारी' को जो कि सम्पत्ति और प्रभाव के कारण तथा मनोहर दास दासियों तथा चपल और चतुर सेवकों के कारण प्रतिदिन नये नगर में और हर रात नयी जगह में और प्रतिक्षण नये सैरगाह में दुनिया के आनन्द का भोग करता है।

कता

धनी व्यक्ति पहाड़, जंगल और मरु में भी परदेशी नहीं है।
जहाँ भी जाता है तम्बू तान देता है और शयनागार बना लेता है॥

पिताऽवदत्—'हे पुत्र! इदं वृथा कल्पितं मूर्ध्नो बहिष्कुर्वीथा सन्तोषपदतां च सुरक्षा सीम्नि नीत्वा सुखी भव। यथाहुर्ज्यायांस —"न यत्नादश्नुते सौख्यं सन्तोषात् सुखमश्नुते"।'

श्लोक

भाग्यांशुकं बलाद्धृत्वा न भाग्यं लभ्यते क्वचित्।
नीलालेपो वृथाहेतुः स्याच्चक्षुर्हीनस्य च भ्रुवो॥ ८१॥

श्लोक

गुणानां द्विशतं यस्या लोम्नि लोम्नि तथापि न।
भाग्यं यदि विपर्यस्तं निर्गुणत्वं गुणो व्रजेत्॥ ८२॥

श्लोक

किं करोति बलीयांस्तु यदि भाग्यविडम्बितः।
सौभाग्यदृढबाहुश्च दोर्दृढादतिरिच्यते॥ ८३॥

पुत्रोऽवदत्—'हे पितः! यात्रालाभा बहवोऽसंख्यातानि च यात्राफलानि। चित्तप्रसादः, अर्थागमः, वैचित्र्यदर्शनम्, वैचित्र्यश्रवणम्, देशाटनम्, मित्रसमागमः, सम्प्राप्तिश्च पदस्य ज्ञानस्य शिष्टाचारस्य धनस्य च, परीक्षा च सुहृदाम्, अनुभवश्च संसारस्येति। यथाहुः प्रेममार्गानुयायिनः सूफिनः—

पदम्

यावत् सीम्नि निबद्धोऽसि निरुद्धः स्वस्य वेश्मनि।
परान्नपक्वमते! तावन्नरत्वं न प्राप्स्यसि॥ ८४॥
याहीह जगतो मध्ये पर्यटन्नथ सञ्चर।
यावन्नास्माद्धि संसारात् प्रयाणं क्रियते त्वया॥ ८५॥'

पिताऽवदत्—'हे पुत्र! यात्रालब्धानि यथा व्याहरसि तथैव—बहुलानि। ननु, फलीभूतानि पञ्चस्वेव भवन्ति।'

प्रथमस्तु वणिक्षु—ये च सम्पत्तिप्रभावेण, मनोज्ञदासदासीसम्भारेण, चपलचतुरभृत्यवर्गेण सह प्रत्यहं नूतने नगरे प्रतिरात्रं च नूतनेऽधिष्ठाने सर्वदा सर्वकालञ्च संसारस्यल्यामानन्दोपभोगं भुञ्जानाश्चरन्ति।

पदम्

धनाढ्यः शैलकान्तारे गहनेऽपि न सीदति।
यं देशं श्रयते चासौ शिबिरं तत्र रोपयत्॥ ८६॥

शेर

(और) मेरे तार लगे हैं संगीत के सौन्दर्य पर।
कौन है वह जो बजाता है दुहरे तार (तारों से तार)॥

श्लोक

अथ श्रोत्रे मदीये च संलग्ने गीतवैभवे।
को वादयति तारेण तारवाद्य मनोरमम् ॥ ९५ ॥

कता

कितना अच्छा लगता है कोमल और विषादपूर्ण स्वर।
प्रभात की नदिया से मस्त साधुओं के कानों में॥
सुन्दर मुख से भी सुकण्ठ अच्छा है।
क्योंकि वह चित्त का सुख है और यह आत्मा का भोग है॥

पदम्

स्वन मन्द विषण्ण च कियत् सुष्ठु प्रतीयते।
उष काले च यद् भाना कुर्यु श्रोत्रगत मिल ॥ ९६ ॥
अप्याननस्य सौन्दर्यात् सुस्वरत्व विशिष्यते।
इन्द्रियाणां सुख रूप आत्मानन्दो हि सुस्वर ॥ ९७ ॥

'<u>पांचवें पेशा जानने वाले</u>' को जो कि भुजाओं के प्रयत्न से जीविका उपलब्ध कर लेता है, जिससे कि उसकी आबरू रोटी के लिये खराब नहीं होती, क्योंकि बुद्धिमानों ने कहा है—

<u>पञ्चमस्तु शिल्पिक</u>—शिल्पी हि खलु हस्तकौशलव्यापारेण जीविकामर्जयति, तस्य प्रतिष्ठाऽस्य कृतेऽहीयते। यथाहुर्विद्वांस —

कता

यदि निर्धनता के कारण चला जाय अपने घर से।
कष्ट और कठोरता नहीं उठाता दुःखों सीने वाला॥
और यदि राज्य से च्युत हो जाय।
भूखा सोता है नीमरोज का राजा॥

पदम्

निर्धनत्वाद्विनिष्क्राम्येत्स्वगारायदि चात्मन।
न कष्टिम न वैषम्य लभते वस्त्रसीवक ॥ ९८ ॥
परन्तु यदि साम्राज्यच्युद्धिजीवित वञ्चन।
नीमरोजनरेशोऽपि तत स्वप्याद्बुभुक्षित ॥ ९९ ॥

ये गुण जो कि मैंने कहे हैं, यात्रा में मानसिक शान्ति के कारण हैं और सुख की प्राप्ति के हेतु हैं, और जो कि इन सब से रहित है, व्यर्थ विचारों के साथ दुनिया में भटकेगा, और कोई दूसरा उसका नाम निशान न लेगा न सुनेगा।

इमे गुणा ये च मया ख्याता यात्राया मन शान्तिकरा सुखोपलब्धि-हेतवश्च। एतैर्गुणैर्विहीन स वृथाविचारैरीरित ससारमटति, न च कश्चिदपरस्तस्य नाम न च स्मरयति श्रोष्यति वेति।

कता

हर वह आदमी कि जमाने का चक्कर जिसके विरुद्ध हो।
उसको अनिष्ट का पथ दिखाते हैं दिन॥
वह कबूतर कि जिसको फिर नीड़ देखना नहीं होता।
मौत ले जाती है उसे दाने और जाल की ओर॥

पदम्

यस्यापि दुर्दिवचक्र विधत्ते भाग्यवञ्चितम्।
पथ प्रदर्शयत्यस्य दुर्दिनानि प्रकुर्वते ॥ १०० ॥
भाग्ये यस्य कपोतस्य न पुनर्नीडदर्शनम्।
मृत्युस्त प्रेरयत्येव बीजजालोन्मुख सदा ॥ १०१ ॥

बेटे ने कहा—'हे पिता! पण्डितों के कथन की किस तरह उपेक्षा करूं?' जैसा कि वह कहते हैं—'रोजी यद्यपि पूर्व निर्धारित है लेकिन उसकी उपलब्धि में उद्योग की शर्त लगी हुई है, और विपत्ति यद्यपि पूर्व निश्चित है, उसके द्वारा में प्रवेश से बचना ही उचित है।'

पुत्रोऽवदत्—'हे पित! कथमहं विदुषां वचांसि तिरस्कुर्वे,' यथाहु —
'प्रारब्धविहिता वृत्तिरुद्योगेनैव लभ्यते।
प्रारब्धाज्जायते कष्ट न तद्द्वार विशेत् स्वत ॥ १२ ॥'

क़ता

जीविका यद्यपि बेगुमां मिलती है।
अक्ल की शर्त है उसके द्वारों के ढूंढने में॥
यद्यपि कोई भी बेमौत नहीं मरेगा।
तू अजगर के मुंह में स्वयं मत जा॥

जिस अवस्था में कि मैं हूं, मस्त हाथी से लड़ सकता हूं और क्रुद्ध सिंह से पंजा लड़ा सकता हूं, अतः कल्याणकर यही है कि मैं यात्रा करूं क्योंकि इस से अधिक नाति गरीबी सहने की मैं नहीं रखता।

पदम्

भोज्य यद्यप्यनिर्दिष्टमार्गेणैव हि लभ्यते।
पाण्डित्य निहित तस्यान्वेषणे खलु यत्नत ॥ १०२॥
अनागतेऽन्तिमे काले मृत्यु याति न कश्चन।
मा त्व प्रविश सर्पस्य स्वत एव मुखे क्वचित्॥ १०३॥

यथेदानीमस्मि मत्तकुञ्जरेणापि योद्धुमुत्सहे, क्रुद्धसिंहेनापि मुष्टामुष्टिकर्तुं समर्थोऽस्मि। अत इदमेव हि श्रेयस्कर मन्ये यत् प्रवासमुपेयां, यस्मादतोऽधिक दारिद्र्य सोढुमसमर्थोऽस्मि।

क़ता

जब मनुष्य च्युत हो जाय अपनी प्रतिष्ठा और स्थान से।
वह और दुःख क्यों भोगे, समस्त दिशाएं उसका घर हैं॥
हर रात को धनी अपने घर पहुंच जाता है।
भिक्षुक जहां भी रात हो जाय वही उसका घर है॥
ईश्वर का भक्त न पूरब में और न पश्चिम में परदेसी है।
वह जहां भी चला जाय भगवान की सारी धरती उसकी है॥

यह कहा और बाप को विदा कर दिया और आशीर्वाद मांगा और चल पड़ा और अपने आपसे कहने लगा—

पदम्

यदि कश्चित् प्रतिष्ठाया पुमान् स्थानपरिच्युत।
किं दुःखकारण चात्र? तस्य स्थान सम जगत्॥ १०४॥
धनिको नित्यशर्वर्यामुपैति स्वगृह तथा।
भिक्षुको यत्र निस्तिष्ठेच्छर्वर्यां तस्य तद्गृहम्॥ १०५॥
न प्राच्या या प्रतीच्या वा विदेश मन्यते क्वचित्।
भक्तो यत्रापि सगच्छेत् तस्येद विश्वपो जगत्॥ १०६॥

एतदुक्त्वा पितुराशिष गृहीत्वा पथि प्रवृत्त स्वगत चाब्रवीत्—

बैत

गुणी व्यक्ति, जब उसका भाग्य उसका साथ नहीं देता।
ऐसी जगह चला जाता है कि (जहां) उसका नाम नहीं जानते॥

यहां तक कि एक जलतट पर पहुंचा कि जिसके वेग से पत्थर से पत्थर टकराता था और उसका शोर एक कोस तक जाता था।

श्लोक

ललाटलिखित भाग्य यदा न स्यात् सहायकृत्।
गुणी तत्र समायाति यत्रैनं न जानते॥ १०७॥

ग्राम ग्राम स कञ्चिन्नदीतटमगाद् यत्र जलप्रवाहवेगेन पाषाणात्पाषाणो घृष्यमाण आसीत् क्रोशे चास्य ध्वनि श्रूयते स्म।

बैत

भयंकर पानी कि जिसमें मुर्गाबी भी सुरक्षित नहीं थी।
जिसकी छोटी लहर भी चक्की के पाट को किनारे से ले जा सकती थी॥

उसने आदमियों का एक समूह देखा कि हर कोई एक एक पैसा देकर नाव में बैठते थे। जवान का देने का हाथ बंधा था। खुशामद की वाणी निकाली। यहां तक कि रोने लगा पर लोगों ने यारी न की। एक निष्ठुर मल्लाह उस पर हंस कर चला गया और बोला—

श्लोक

भयङ्करजल यत्रारक्षिता जलपक्षिणः।
अवतुङ्गतरङ्गोऽपि तटशैलमुपाटयेत्॥ १०८॥

स पुसामेक समूह दृष्टवान् ये च कार्षापण दत्वा नावमध्यासामासु। युवा तु रिक्तहस्त आसीत्। स साम्ना तानुपेयाय, अपि रुरोद न पुनरपि दयार्द्रा लोका। कश्चिन्निष्ठुरो नाविकस्तमुपहस्याह—

शेर

बिना धन तू नही सकता कि करे किसी पर ज़ोर।
यदि सोना रखता है तो तू ज़ोर का मुहताज नही है।।

शेर

यदि तू धन नही रखता तो नही जा सकता ज़ोर से नदी से।
दस आदमियो के ज़ोर मे क्या होता है, एक आदमी का शुल्क ला।।

युवक का हृदय मल्लाह के ताने से क्रुद्ध हो गया। चाहा कि उससे बदला ले। नाव चल चुकी थी। (उसने) आवाज़ दी कि यदि इस वस्त्र से जो कि मैं पहने हुए हूँ तू सन्तोष करे तो मुझे अफसोस नही। मल्लाह ने वस्त्र पर लालच किया और नाव लौटा लाया।

बैत

सी देता है लोभ होशमन्द की आँख।
लाता है लालच पक्षियो और मछलियो को बन्धन में।।

जैसे ही युवक का हाथ मल्लाह की दाढी और गले तक पहुँचा उसको साथ ही साथ घसीट लिया और बेमुहावा पीट डाला। उसके मित्र नाव से निकल आये कि उसका पृष्ठपोषण करें। पर कठोरता देखी तो पीठ फेर ली। इसके सिवा कोई और उपाय नहीं सूझा कि सन्धि कर लें और पारिश्रमिक का दावा छोड दिलायें।

मसनवी

जब तू झगडा देखे तो धीरज रख।
क्योकि एक सरल व्यक्ति बन्द कर देता है झगडे का द्वार।।
मृदुता से काम कर जहाँ कि गुस्सा देखे।
नही काट सकती कच्चे रेशम को तेज़ तलवार।।
मीठी बोली से, कोमलता और प्रसन्नता से।
हो सकता है कि तू हाथी को एक बाल से खीच ले।।

क्षमा माँगते हुए पूर्वापराध की, (वे) उसके चरणो में गिर पडे और कुछ चुम्बन कपटपूर्वक उसके सिर और आँखो पर किये और उसे नाव में अन्दर ले आये। और चल पडे। यहाँ तक कि पहुँचे एक खम्भे के पास, जो कि एक यूनानी इमारत (पुल) में से पानी में खडा था। मल्लाह ने कहा—'नाव को खतरा है, आप में से एक जो बलिष्ठ हो इस खम्भे पर चढ जाय और नाव की रस्सी

श्लोक

यस्य नास्ति धन किञ्चिन्न तस्य पौरुष क्वचित्।
धन चेदस्ति ते तर्हि पौरुष न व्यपेक्षसे।। १०९।।

श्लोक

धन विना बलेनैव नदी तर्तुं न शक्यते।
बलेन दशपुसा कि धनमेकस्य नीयताम्।। ११०।।

यूनश्चित्त नाविकस्याक्षेपात् खिन्न जातम्। स तरिणं प्रतिहिंसालुर्जात। नौका तटात् प्रस्थिता आसीत्। असौ तटादुज्जुहाव—'अयानेन वस्त्रेण यन्मया परिधीयते यदि ते परितोष स्यान्न मे काचिदापत्तिरिति।' नाविको वासे गृध्यन्नाव तटाभिमुख निन्ये।

श्लोक

लोभो निमीलयेद् दृष्टि विदुषामपि चार्चिषाम्।
लोभो विहङ्गमान् मत्स्यान्नयते जालबन्धनम्।। १११।।

यथा हि यूनो हस्त नाविकस्याकूर्चकादुपेयाय स त सदेह नाव आकर्ष्य निर्घृणतया चातीतडत्। नाविकस्य मित्राणि नावो बहिरागत्य तस्य पृष्ठ पुपोष। युधि पारुष्य च दृष्ट्वा पृष्ठ दधु। ऋते सन्धिमुपाय न ददृशु। नि शुल्क च तमाजुहुवु।

गाथा

उपद्रव यदा पश्येद्धत्स्व धैर्यं तदा गृहाम्।
यत् सारल्येन युद्धस्य द्वारमार्गं पिधीयते।। ११२।।
आर्जवेन प्रवर्तेथा यत्र पश्येर्विभीषिकाम्।
कौशेयकवच नैव तीक्ष्णखड्गेन छिद्यते।। ११३।।
मधुवाचाऽऽर्जवेनाथ प्रसादेन तथा किल।
गजराजोऽपि केशेन सन्निबद्धोऽनुगच्छति।। ११४।।

पूर्वकृतस्यापराधस्य क्षमा याचमानास्तेऽस्य चरणावूहु। कपटभावेन चास्य मूर्धानं नयने च चुम्बयित्वैनं नावि निन्यु प्रतस्थिरे च। यावत् तेतुस्थूणामापुर्यन्च कस्माञ्चिद्ध्वसावशिष्टात् सेतोरुद्ग्रीवमात्र जले चासीत्। नाविको ब्रूते—'नावो भयमुपस्थितम्। युष्मासु कश्चिद्यश्च बलिष्ठ स्यात् स इद स्थूणमात्मानमारोप्य नावावलम्बित

पकड ले ताकि इमारत से हम बच सके।" युवक वीरता के गर्व से जो कि वह सिर में रखता था, सताये हुए दिल की दुश्मनी से न डरा और पण्डितो के वचन पर ध्यान न दिया कि कह गये हैं—'जिनको तूने कष्ट पहुँचाया है, यदि उसके पश्चात् तू सौ उपकार करे तो भी उस एक कष्ट के प्रतिशोध से निःशक मत रह क्योकि भाला भले ही घाव से बाहर आ जाय—उसकी कसक दिल में रह जाती है।'

बैत

क्या ही अच्छा कहा है सालार ने सोल्तान से।
जब तू दुश्मन को छेड दे तो निश्चिन्त मत रह॥

क़ता

मत रह निश्चिन्त क्योकि तू क्षुब्धचित्त होगा।
जब तेरे हाथ से कोई दिल सताया जायगा॥
पत्थर, कगूरे पर, किले के मत मार।
क्योकि हो सकता है कि किले से भी पत्थर आ जाय॥

जैसे ही उसने नाव की रस्सी बाँह पर लपेटी और खम्भे की ऊँचाई पर चढा, मल्लाह ने रस्सी उसके हाथ से झटक ली और नाव को चला दिया। बेचारा चकित रह गया। दो दिन तक विपत्ति और कष्ट सहता रहा। तीसरे दिन नींद ने उसकी गर्दन पकड ली और उसे पानी में धकेल दिया। एक रात और एक दिन के पश्चात् किनारे आ लगा। उसकी जिन्दगी में से कुछ साँसें बाकी थीं। पेडो की पत्तियाँ खाने लगा और घास की जडें उखाडने लगा। यहाँ तक कि थोडी सी शक्ति की सम्पत्ति आयी। वह मरुकान्तार में निकल पडा और चलता गया यहाँ तक कि प्यास से अशक्त हो गया। एक कुए के किनारे पहुँचा। लोग उसके चारो ओर इकट्ठे थे और पानी की घूटें एक एक पैसे में पी रहे थे। युवक के पास एक पैसा भी नहीं था। कितना ही मागा और निरुपायता दिखाई, (पर लोगो को) दया न आई। उस ने हिंसा का हाथ लम्बा किया पर लाभान्वित न हुआ। (उस ने) कुछ आदमियो को पीटा पर लोगो ने उसे दबोच लिया और निर्ममता से मारा, घायल हो गया।

क़ता

पिस्सू जब इकट्ठे हो जाते हैं, मार देते है हाथी को।
सहित पौरुष और वीरत्व के जो वह रखता है॥

दाम गृहीत्वा निस्तिष्ठेत् येन सर्वेषा नौकारोहिणा प्राणरक्षा सपद्येत।' युवा स्वस्य शौर्यस्योत्सेकेनाभिभूतस्य चेतसो न बिभयामास, न च पण्डिताना वचासि प्रतीयाय यथाहु —'यश्चापि पुमास त्व कष्टैकेन हिंसितवानसि, ततो यद्यपि शतगुणकार प्रवर्तेयास्तथापि तस्य कष्टैकप्रतिहिंसाया निश्चिन्तो मा भू। यत —बाण व्रणाद् विनिष्क्रान्त चिराच्चेतोऽनुदूयते।'

श्लोक

सालारश इद सूक्त सोलतान शशास ह।
द्विषता चाभियुक्तश्चेन् मा निश्चिन्तो वृत क्वचित्॥ ११५॥

पदम्

मा वृतो वीतचिन्तश्च विषण्णस्त्व भविष्यसि।
त्वया चेत् कस्यचिच्चेत स्वत एव विपीदितम्॥ ११६॥
शैलोत्क्षेप महादुर्गे मा कार्षीस्तदसाम्प्रतम्।
दुर्गान्तरालतश्चापि शैलमुद्भाव्यते क्वचित्॥ ११७॥

यथैव स रज्जु गृहीत्वा स्थूणमारुरोह, नाविकस्तस्य कराद् रज्जुमुत्क्षिप्य नावमुवाह। वराकश्चकित स्थित। द्विदिन यावद्विपत्ति सहमानस्तत्र स्थित। तृतीयेऽह्नि निद्रा त कण्ठेन जग्राह जले च पातयामास। अहोरात्रमुपरान्त स जलतटमुपपेदे। श्वासमात्रैकावशिष्टप्राण स बभूव। क्षुधा जुष्ट स पर्णानि बुभुजे तृणमूलानि चोत्पपाट। अन्तत किञ्चिच्छक्ति सञ्चीय स मरुकान्ताराभिमुख पर्यगात्। गाम गाम च पिपासाकुल सञ्जात। तत किञ्चित् कूपमवाप। तत्र बहव पुमास त परित एकत्रीभूय कार्षापणप्रतिदत्त जलकवल पिवन्तमासन्। युवा तु निधन आसीत्। असौ जल ययाचे, निरुपायता च दर्शयामास, किन्तु पुस्सु करुणोद्रेको नाभवत्। असौ प्रसोढु प्रादुर्बभूव, न च ततोऽपि कृतकार्यता लेभे। अनेन केचन जना पराभूता परन्तु जनसमूहेन सोऽपि पराभूतस्ताडितश्च रक्ताक्तश्च जात।

पदम्

समवाय कृमीणा तु गजेन्द्रमपि हन्ति हि।
शौण्डीर्यञ्चैव वीरत्व दधानञ्चापि कुञ्जरम्॥ ११८॥

चींटियों की जब एकता हो जाती है।
वीर (क्रुद्ध) सिंह की उधेड़ लेती हैं खाल॥

आवश्यकता के कारण (उन ने) एक कारवाँ का पीछा पकड़ लिया और चलने लगा। रात के समय (वे लोग) एक ऐसी जगह पहुँचे जो डाकुओं के कारण खतरे से भरी थी। कारवाँ वालों को देखा कि उनके अंगों में कम्पन हो रहा है और दिल में मरने का विचार घुस गया है। उस ने कहा—'डरो मत! कि इस (काफले) के बीच में मैं भी एक हूँ। जो कि अकेला ही पचास आदमियों का सामना कर लूंगा, और दूसरे युवक भी साथ देंगे।' कारवाँ वालों का उस की डींग से दिल मज़बूत हो गया, और उसकी संगति में खुशी मनाने लगे, और पाथेय और पानी के द्वारा उसकी सहायता करना उचित समझने लगे। युवक की पेट की आग धधक रही थी और सहन शक्ति की लगाम उसके हाथ से छूट चुकी थी। कुछ ग्रास अत्यन्त कामना से खाये और उसके पीछे कई बार पानी पिया। यहाँ तक कि उसके भीतर का राक्षस शान्त हो गया, उसे नींद ने आ घेरा और वह सो गया। एक अनुभवी वृद्ध पुरुष कारवाँ में था। वह बोला—'हे मित्रो! मैं आपके इन चौकीदार से अधिक भयभीत हूँ, डाकुओं की अपेक्षा, क्योंकि कथा कही जाती है कि एक अरब ने कुछ दिरम इकट्ठे कर लिये थे। रात को चोरों के भय से अकेले उसे नींद नहीं आती थी। उस ने एक मित्र को अपने पास बुलवाया ताकि एकान्त का भय उसे देखकर शान्त हो। कई रातें उसकी संगति में रहा। यहाँ तक कि दिरमों के विषय में उसे जानकारी मिली। पूरे के पूरे ले लिये और चल पड़ा। सवेरे लोगों ने उसे नंगा और रोते देखा। किसी ने उससे पूछा—"क्या हाल है? शायद तेरे वे दिरम चोर ले गया?" बोला—"नहीं भगवान कसम चौकीदार ले गया"।'

यदा तु संघबद्धा स्युः समवेता पिपीलिका।
त्वचं सक्रुद्धसिंहस्य विदीर्णां कुरुते भृशम्॥ ११९॥

आवश्यकतानुसारेण स सार्थवाहमनुसरन्नसर्पत्। शर्वयामिमे किंचिद्दस्युभयाक्रान्तं स्थानं प्रतस्थिरे। युवा सार्थवाहजनान् वेपमानाङ्गान् मरणनिहितचित्तांश्च ददर्श। एतद् दृष्ट्वा स उवाच—'मा भैष्ट! अयमहं सार्थवाहसहाय यश्चैकाकी पञ्चाशदाततायिभ्योऽलम्, अन्येऽपि युवानो मम पृष्ठं पोक्ष्यन्ति।' सार्थवाहास्तस्य विकत्थनेन प्रवृद्धोत्साहास्तस्य सङ्गतौ च प्रहृष्टमनसो बभूवुः। भोज्यान्नपानादिसम्प्रदानेन तस्य संवर्धनं विहितं मेनिरे। यूनो जठराग्निः प्रज्वलित आसीत्, सहनशक्तिवल्गा ततः परिच्युता च। स कतिचिद् ग्रासान् सलालसं बुभुजे, भूरिशश्च पानीयं पपौ। यदा तस्य बुभुक्षादैत्यः शान्तः स उन्निद्रो भूत्वा सुष्वाप। कश्चिद्-दृष्टसंसारो वृद्धोऽपि सार्थवाह आसीत्। सोऽवदत्—'हे मित्राणि! अहमस्माद्रक्षकाद् यथा बिभेमि न तथा दस्युभ्यः, यतोऽनुश्रूयतेऽथैकदा कस्यचिदरबवासिनः काचिद्वित्तमात्रा संजाता। शर्वर्यां चौराणां भयाद् एकाकी स निद्रामपि न लेभे। स कश्चन मित्रमाकारितवान् येनैकान्तभयं तं दृष्ट्वा प्रशाम्येत्। कतिपया रजन्यस्तस्य सान्निध्ये समुवाह। प्रसंगवशान् मित्रं दिरमाणां विषयेऽज्ञास्त। स सर्वाणि दिरमाणि मुषित्वा प्रतस्थे। प्रातःकाले गृहस्वामिनं नग्नं रुदन्तं च पुमांसो ददृशुः। अथ केनचित् स पृष्टः—"किमिदम्? सम्भाव्यतेऽथ कश्चिच्चोरस्त्वां मुषित्वा दिरमाणि जहार!" सोऽवदत्—"नैवम्! भगवते शपे रक्षको मां मुमोष"।'

क़ता

(मैं) कभी भी मित्र की ओर से निश्चिन्त होकर नहीं बैठना।
जब तक कि न जान लूं कि उसकी विशेषता क्या है॥
उस दुश्मन के दाँतों का दंश अधिक बुरा होता है।
जो कि दिखता है आदमी की नज़रों में दोस्त॥

'—मित्रो! तुम क्या जानो कि यह भी उन डाकुओं के दल में से हो और कपट से हमारे बीच में घुस पैठ कर गया हो! ताकि

पदम्

नाहं सुखं निविष्टोऽस्मि मित्रात् तस्मात् कदाचन।
यावन्न तस्य वैशिष्ट्यं सर्वतो ज्ञायते मया॥ १२०॥
दंष्ट्रादष्टमरातेस्तु तस्य जायेत भीषणम्।
मित्रस्य छद्मना वैरं यश्च तूष्णीं समाचरेत्॥ १२१॥

'भो मित्राणि! किं युष्माभिर्ज्ञायते नन्वयं जनोऽपि दस्युदलीयो वा न वा स्यात्, कपटाचारेण चास्मासु प्रविष्टो वा स्याद् यतोऽवसर

सुअवसर से मित्रों को सूचित कर दे। मैं तो यह ठीक समझता हूँ कि उसको सोता ही छोड दे।'

कारवाँ वालों को वृद्ध का उपाय ठीक लगा और पहलवान का डर दिल में बैठ गया। उन्होंने सामान उठाया और युवक को सोता छोड गये। जवान को खबर तब मिली जब कि सूर्य उसके कन्धों पर तपा। (उसने) सिर ऊपर उठाया, कारवाँ वालों को नही देखा। बेचारा बहुत घूमा (पर) रास्ता न मिला। प्यासा और भूखा और बेसामान, मुँह धूल पर और दिल मौत पर लगाकर कहने लगा—

समीक्ष्य स्वस्य मित्राणि वा सूचयेत्। अहं तु एनं सुपुप्तं परित्यज्य प्रस्थानमेव श्रेयस्करं मन्ये।'

सार्थवाहेभ्य इदं मतमभिमतं बभूव। ते मल्लाद् भीता बभूवु। ते सवमुपस्करं नीत्वा युवानं सुपुप्तं परित्यज्य प्रतस्थिरे। यदा ललाटन्तप सूर्यस्तं ततापं स शिर उन्नम्य सार्थवाहान्नापश्यत्। वराको भृशमितस्ततो बभ्राम मार्गं च न प्राप। क्षुत्पिपासाकुलो निष्पाथेयश्च मूर्धानं रेणौ चित्तं च मरणे निधाय वक्तुमारेभे—

बैत

कौन है जो मुझसे बात करेगा गुजर जाने पर ऊँटों के।
नही है गरीब के लिये सिवा गरीब के मित्र॥

श्लोक

गते सार्थे मया सार्धं को नु वार्त्तां करिष्यति।
नाना प्रवासिनं नास्ति मित्रं तावत् प्रवासिनः॥ १२२॥

बैत

निष्ठुरता करता है परदेसियों के साथ वही आदमी।
जो कि नही रहा है प्रवास में बहुत॥

श्लोक

अभ्याहरति नैष्ठुर्यं प्रवासिषु स वै पुमान्।
बहुकालावधि यावन्न प्रवासमुवास य॥ १२३॥

बेचारा यह कह ही रहा था कि एक राजा का पुत्र शिकार के लिये साथियों से दूर पडकर उसके सिरहाने आ खडा हुआ। उसने यह उक्ति सुनी और उसकी आकृति को देखा। देखा कि बाह्य रूप पवित्र है और उसका हाल परेशान है। पूछा—'कि तू कहाँ से है और यहाँ कैसे पडा है?' (उसने) थोडी भी जो उसके सिर पर गुज़री थी दुहरा दी। राजकुमार को उसकी दुर्दशा पर दया आ गयी। उसको कपडे और धन दिया और एक विश्वासपात्र को उसके साथ भिजवा दिया ताकि वह अपने शहर जा पहुँचे। बापने उसे देखकर बडी खुशी मनाई और उसकी कुशलावस्था के लिये भगवान् को धन्यवाद दिया। रात के समय जो कुछ उस पर गुज़री थी, नाव की अवस्था, मल्लाह की क्रूरता, गाँव वालो की कुँए पर की कठोरता, और मार्ग मे कारवाँ वालो का छल बाप से बताया। बाप ने कहा—'हे पुत्र! क्या मैंने तुझसे नही कहा था जाते समय कि ख़ाली हाथ वालो की वीरता का हाथ बँधा होता है और शेर के जैसा पंजा टूटा हुआ होता है।'

एवं कथयति तस्मिन्नेव काले कश्चिद् राजपुत्रो मृगयाया कृते वियुक्तपरिजनस्तस्यान्तिकं प्राप्त। स इदं श्रुत्वा तस्याकृतिं ध्यानेनापश्यत्। ददर्श पवित्रसाकाश हीनदशापन्नं च तं युवानम्।

राजपुत्रोऽस्य पप्रच्छ—'कुत आगतोऽसि? कथमिह प्राप्तश्च?' समासतो यद् यदनुभूतवान् तत् सर्वं राजपुत्रं न्यवेदयत्। राजपुत्रस्तस्य विपन्नावस्थाया दयार्द्रं सञ्जात। तस्मै वस्त्राभरणं च दत्त्वा केनचिद् विश्वस्तेन जनेन सार्धं तं तस्य गृहं प्राहिणोत्। पिता तं दृष्ट्वा नितरां प्रहृष्टो बभूव तं सकुशलं च प्रेक्ष्य परमात्मने धन्यवादानर्पयामास। अथ रात्रौ यद् यद् यथा यथा घटितं तत्तत् तथा तथा वर्णितवान्। यथा हि—नावि यथा घटितं, नाविकानां पारुष्यं, कूपप्रपन्नानां ग्रामीणानां नैष्ठुर्यं, मार्गे च सार्थवाहानां कपटं च पितरं न्यवेदयत्। पिताऽवदत्—'हे पुत्र! न किं मयाऽभिहितं यद्रिक्तहस्तानां शौर्यहस्तं निगडितं भवति, सिंहं विश्रान्तश्च करागभागो भग्नश्च विद्यते।'

बैत

कितना अच्छा कहा है उस निधन योद्धा ने।
जौ भर सोना पचास मन जोर से बिहतर है॥

श्लोक

अहो सूक्तमिदं कश्चिदर्थहीनो महारथ।
यवमात्रं सुवर्णं हि शतद्रोणबलाद्वरम्॥ १२४॥

पुत्र ने कहा—'हे पिता ! जब तक तू रंज नहीं उठाता तब तक कोष नहीं पायेगा और जब तक प्राण संकट में नहीं डालेगा, शत्रु पर विजय नहीं पायेगा और जब तक दाने को नहीं बखेरेगा, उपज नहीं बटोरेगा। क्या तू नहीं देखता कि थोड़े से कष्ट के बदले जो कि मैंने उठाया है, कैसी राहत प्राप्त कर लाया हूँ ? और डंक के साथ जो मैंने खाया है, कितना शहद लेकर आया हूँ।'

पुत्रोऽवदत्—'हे पितर् ! यावन्न संशयमारुह्यते तावत् कोषो न लभ्यते, यावच्च प्राणा भये न क्षिप्यन्ते तावदरातयो न जीयन्ते। यावद्-बीजं न क्षिप्यते तावत् कृषिफलं न लभ्यते। अथ किं न पश्यसि यदल्पीयसः कष्टान्मया कियन्मात्रं धनमर्जितम्। यन्मधुमक्षिका-दंशः मया लब्धः तत्प्रतीकर्तुं कियन्मानं मधु मया नीतमिति।'

बैत

यद्यपि अपनी निश्चित जीविका से अधिक कोई नहीं खा सकता।
पर उद्योग में आलस्य करना उचित नहीं है॥

श्लोक

यावन्मानं हि निर्दिष्टं नैव भुङ्क्ते ततोऽधिकम्।
तथाप्युपार्जनालस्यं नरः कुर्यान्न कुत्रचित्॥ १२५॥

बैत

गोताखोर यदि डरे मगर के मुँह से।
कभी नहीं कर सकता बहुमूल्य मोती को हस्तगत॥

श्लोक

भीतो मकरदंष्ट्राया यदि स्यादवगाहकः।
महार्घं मौक्तिकं तर्हि लभते न कदाचन॥ १२६॥

चक्की का निचला पाट (चूंकि) सचल नहीं है अतः बेशक भारी बोझ सहता रहता है।

'अधोऽश्मा सहते भारं घरट्टस्य तु निश्चलः॥ १३॥'

कता

क्या खायेगा भयंकर सिंह भी अपनी माँद में रहकर।
एक पड़े हुए बाज को क्या आहार होगा॥
यदि तू घर बैठे शिकार चाहता है।
तो तेरे हाथ-पैर मकड़ी के से हो जायेंगे॥

पदम्

गह्वरस्थो बली सिंहोऽचलः किं भोक्तुमर्हति।
श्येनोऽनुड्डीयमानोऽपि न च भोज्यं व्यवस्यति॥ १२७॥
गृहस्थः सत्त्वमाखेटमनायासं यदीच्छसि।
शाखास्तेऽपि भविष्यन्ति लूताशाखा इव ध्रुवम्॥ १२८॥

बाप ने कहा—'हे पुत्र ! इस अवसर पर तुझे आकाश ने सहायता की और सौभाग्य ने तेरा पथ प्रदर्शन किया, जिससे कि तेरा फूल काँटे से और काँटा तेरे पैर से निकल आया और एक भूपति तुझे मिला और तुझ पर कृपा की और तेरी टूटी-फूटी हालत को दयादृष्टि से सुधार दिया, और ऐसे संयोग अपवाद होते हैं, और अपवाद पर हुक्म नहीं चलता। सावधान ! ताकि इस जाल की ओर तू न जाय।'

पिताऽब्रवीत्—'हे पुत्र ! इदानीं तु परमात्मना ते साहाय्यं कृतं, सौभाग्येन च ते पन्थाः प्रदर्शितः, येन कण्टकाकीर्णोऽपि त्वं पुष्पितः कण्टकश्च ते पद्भ्यां समुद्धृतः। कश्चिद्राजपुत्रश्च त्वत्सकाशमागत्य त्वयि कृपालुर्जातः, दुर्गतिश्च तेन दयादृष्ट्या सुधारिता। परन्तु एतादृशाः संयोगाः विरलाः। विरलेषु चापवादेषु निग्रहो न स्यात्। अतः सावधानेन भवितव्यम्। न चास्मिन् वागुरादाम्नि त्वया गन्तव्यमिति।'

बैत

शिकारी हर बार शिकार नहीं लाता।
हो सकता है कि एक दिन उसे सिंह फाड़ दे॥

श्लोक

व्याधो न सर्वदाऽऽखेटमानेतुं शक्नुयादिति।
कदाचिद्भाव्यते व्याघ्रश्चावदीर्णं करोति तम्॥ १२९॥

जैसा कि पारस का एक राजा (भगवान् उसकी रक्षा करे) एक बहुमूल्य रत्न अँगूठी में रखता था। एक बार (वह) सैर के लिये अपने कुछ दरबारियों के साथ शीराज़ की ईदगाह से बाहर गया,

यथा हि—कश्चित् पारसीकनरेशः (अवतु तं भगवान् सदा) महार्घरत्नमूर्मिकायां प्रतिबद्धं दधे। एकदा स नगरोपकण्ठविहारार्थी स्वकीयैः पारिषदैः परिवृतः शीराजस्योपासनामन्दिरमुपपेदे।

आज्ञा दी कि अँगूठी को अजुद के गुम्बज पर लटका दे ताकि जो कोई भी अँगूठी के बीच में से तीर निकाल दे—अँगूठी उसकी हो जाय। सयोग से चार सौ सिद्ध धनुर्धरो ने जो राजा की सेवा में थे, तीर चलाये, सब चूक गये, सिवा एक लडके के जो कि घर की छत पर से खेल खेल में हर तरफ तीर चला रहा था। प्रभात पवन ने उसके तीर को अँगूठी के छेद से निकाल दिया। (उसे) वस्त्रोपहार और धन मिला और वह अँगूठी भी उसे दे दी गयी। कहते है कि लडके ने धनुष वाण को जला दिया। लोगो ने उससे पूछा—'कि तू ने ऐसा क्यो किया ?' उसने कहा—'ताकि पहली कीर्ति अटल रहे।'

तत्रादिदेशायोर्मिका मन्दिरशिखरावलम्बिनी दधताम्। यश्चाप्यूर्मिकामन्तरा शर विनिर्गमेत् स ऊर्मिका गृह्णीयात्। चतु शत सिद्धधनुर्धरा राज सेवायामासन्। ते शरसन्धान चक्रु, सर्वे च लक्ष्यभ्रष्टा। कश्चिद्बालकोऽपि स्वगृहादुपरिष्टात् प्रतिदिश क्रीडायामेव वाणान् प्राहिणोत्। दैवयोगात् प्रभातपवनस्तस्य वाणमूर्मिकामन्तरा निवेशयामास। स सम्मानवासो धन च प्राप। ऊर्मिकापि प्राभृतरूपेण तस्मै दत्तेति। श्रूयते स वालक स्वीय सशर क्रीडाधनुरग्निसादकरोत्। पुमासस्तमूचुरथ 'कथमेवमकार्षी ?' सोऽवदत्—'यत प्रतिष्ठा प्राचीना यथावदवतिष्ठते।'

क़ता

कभी, हो सकता है कि ज्ञानी पण्डित से।
न बन पडे ठीक उपया॥
कभी हो सकता है कि नादान वालक।
गलती से निशाने पर तीर मार दे॥

पदम्

सम्भाव्यते क्वचिद्धीमान् विद्याबुद्धिसमन्वित।
उपायमथ नो पश्येत् सिद्ध च सिद्धिदायकम्॥ १३०॥
कदाचिद्भाव्यते नूनमनभिज्ञोऽपि वालक।
लक्ष्यवेध प्रकुर्वीत सहसा दैवयोगत॥ १३१॥

कथा—२८

एक साधु के विषय में मैंने सुना है कि एक गुफा में बैठा था, और ससार के लिये अपना द्वार बन्द कर लिया था, और राजाओं का उसकी दृष्टि में कोई प्रताप नही था।

आख्यायितम्—२८

कस्यचित् साधो कथाऽनुश्रूयतेऽथ ससारद्वारमात्मन कृते पिधाय कस्मिंश्चित् कन्दराया प्रतिवसति स्म। राज्ञा प्रतापस्तस्य दृष्ट्या तृणवदासीत्।

क़ता

जो कोई भी अपने लिये याचना का द्वार खोलता है।
वह मरने तक याचक रहता है॥
लोभ छोड दे और बादशाही कर।
निर्लोभ का सिर ऊँचा रहता है॥

पदम्

येनात्मन कृते द्वार भिक्षावृत्तेरपावृतम्।
यावज्जीव दरिद्र स भिक्षाजीवी भविष्यति॥ १३२॥
लोभ त्यक्त्वा तु विश्वस्य साम्राज्याधिपतिर्भव।
निरपेक्षपुरुषस्य शिरो गर्वोन्नत भवेत्॥ १३३॥

उस तरफ के एक राजा ने प्रस्ताव किया कि (आप जैसे) बडे लोगों की कृपा और सदाचार से यह आशा है कि हमारे साथ रोटी-नमक में हमारे साथ साझा करेंगे। साधु ने स्वीकृति दे दी—क्योंकि निमत्रण स्वीकार करना पैगम्बर द्वारा विहित है। अगले दिन राजा उसके आगमन के कष्ट की क्षमा माँगने गया। साधु उठ खडा हुआ और राजा का आलिंगन किया और सत्कार किया और प्रशस्ति पाठ कहा। जब राजा चला गया एक शिष्य ने पूछा कि इतना सत्कार कि जो आपने आज राजा का किया है, वह आपके स्वभाव के विरुद्ध है। साधु ने कहा—'क्या तूने नही सुना कि कह गये हैं—

केनचित् तत्रत्येन राज्ञा प्रस्तावितमथ—'भवादृशा महापुरुषाणा कृपया आशास्यते यदस्माभि सार्धं पटु-करपट्टिका भक्षयिष्यन्ति भवन्त।' साधुनेदमनुमोदित, यतो निमन्त्रणस्वीकरण हि शास्त्रविहितम्। अपरेऽहनि राजा तस्यागमनस्य कष्टक्षमा याचितु साधु ययौ। साधुरभ्युत्थानपूर्वक राजानमालिंग्य सत्कृतवान् प्रशशस च। यदा राजा निर्जगाम केनचिच्छिष्येण पृष्टमथ—'या सत्क्रियाऽद्य राज्ञि निर्दर्शिता सा ते स्वभावविरुद्धा।' साधुरवदत्—किंन श्रुतवानसि यथाहु —

بیت

هر کرا بر سماط بنشستی
واجب آمد بخدمتش برخاست *

बैत (बहरे खफ़ीफ)

हर किरा बर सिमात बनिशस्ती ।
वाजिब आमद ब ख़िदमतश् बरख़ास्त ।।’

مثنوی

گوش تواند که همه عمر وی
نشنود آواز دف و چنگ و نی ـ
دیده شکیبد ز تماشای باغ
بی گل و نسرین بسر آرد دماغ ـ
گر نبود بالش آگنده پر
خواب توان کرد حجر زیر سر ـ
ور نبود دلبر همخوابه پیش
دست توان کرد در آغوش خویش ـ
وین شکم بی هنر پیچ پیچ
صبر ندارد که بسازد به هیچ *

मसनवी (बहरे सरी)

गोश तवानद कि हमा उम्रे वै ।
न शनवद आवाज़े दफो चंगो नै ।।
दीदा शकेबद ज़ि तमाशाए बाग ।
बेगुलो नसरी ब सर आरद दिमाग ।।
गर न बुवद बालिशे आगन्दा पर ।
ख़्वाब तवाँ कर्द हजर ज़ेरे सर ।।
वर न बुवद दिलबरे हमख़्वाबा पेश ।
दस्त तवाँ कर्द दर आग़ोशे ख़्वेश ।।
वईं शिकमे बे हुनरे पेच पेच ।
सब्र न दारद कि बसाज़द ब हेच ।।

बैत

जिसके दस्तरखान पर तू बैठ चुका है।
उचित है कि उसके स्वागत में तू उठ खडा हो ॥'

मसनवी

कान, हो सकता है अपनी सारी उम्र।
न सुनें ढोल-चग और वशी की धुन ॥
आँखें धीरज रख लेंगी बाग़ के तमाशे से।
बिना गुलाब और चमेली के भी दिमाग काम चला लेगा ॥
यदि न हो तकिया पर भरा हुआ।
सोया जा सकता है सिर के नीचे पत्थर रखकर ॥
और अगर न हो प्रेयसी साथ सोने को।
हाथ रखा जा सकता है अपनी छाती पर ॥
पर यह मूढ पेचदार पेट।
सन्तोष नही करता कि थोडे में काम चला ले ॥

श्लोक

यस्य भोजनशालाया भुक्तवानसि भोजनम्।
उत्थानपूर्वकस्तस्मै सम्मान खलु साम्प्रतम् ॥ १३४ ॥

गाथा

यावज्जीवमुभे श्रोत्रे शृणुयाता न वा क्वचित्।
ध्वनिं मृदङ्गसम्भूतामथवा वेणुसम्भवाम् ॥ १३५ ॥
नेत्रे धृति दधीयातामदृष्ट्वाऽऽरामरम्यताम्।
अनाघ्रायापि पुष्पाणि घ्राण तृप्तिमवाप्नुयात् ॥ १३६ ॥
अलब्धे च शिरोधाने पुखपूर्णे सुकोमले।
शैलखण्ड शिरोधान कृत्वा स्वापोऽपि सम्भवेत् ॥ १३७ ॥
न स्याद्यदि प्रियाऽऽश्लेषो शयनीये कदाचन।
धृत्वा निजकर क्रोडे सुष्वापोऽपि विधीयते ॥ १३८ ॥
वह्वावर्तोदर किन्तु सदा भोगपरायणम्।
धृति धत्ते न चाल्पेन न चैव परितृप्यति ॥ १३९ ॥

باب چهارم

در فوائد خاموشی

حکایت ۱

یکی را از دوستان گفتم - که امتناع سخن گفتنم بعلت آن اختیار آمده است - که غالب اوقات در سخن نیک و بد اتفاق می‌افتد و دیدهٔ دشمنان جز بر بدی نمی‌افتد * گفت - دشمن آن به که نیکی نه بیند *

شعر

وَ اَخُو الْعَدَاوَةِ لَا یَمُرُّ بِصَالِحٍ
اِلَّا وَ یَلْمِزُهٗ بِکَذَّابٍ اَشِرٍ *

بیت

هنر بچشم عداوت بزرگتر عیبی‌ست
گلست سعدی - و در چشم دشمنان خارست *

بیت

نور گیتی فروز چشمه هور
زشت باشد بچشم موشك کور *

حکایت ۲

بازرگانی را هزار دینار خسارت افتاد - پسر را گفت - نباید که با کسی این سخن در میان نهی * گفت - ای پدر! فرمان تراست - نگویم - ولیکن باید که مرا بر فائدهٔ این مطلع گردانی که مصلحت در نهان داشتن چیست؟ گفت - تا مصیبت دو نشود - یکی نقصان مایه - و دوم شماتت همسایه *

بیت

مگو انده خویش با دشمنان
که ''لاحول،، گویند شادی کنان *

बाबे चहारम्

दर सीरते फवायदे खामुशी

हिकायत—१

यके रा अज़ दोस्तान् गुफ्तम्—'कि इम्तनाए सुखुन गुफ्तनम् ब इल्लते आँ इख्तियार आमदा अस्त—कि ग़ालिब औक़ात दर सुखुन नेको बद इत्तिफ़ाक़ मी उफ्तद व दीदाए दुश्मनाँ जुज़ बर बदी नमी उफ्तद।' गुफ्त—'दुश्मन आँ बिह् कि नेकी नै बीनद।'

शेर (बह्रे कामिल)

व'अखु'ल् अदावति ला यमुरु बिसालिहिन्।
इल्ला व यल्मिज़ुहु बिकज्ज़ाबिन् अशिर्॥

बैत (बह्रे मुज्तश्)

हुनर ब चश्मे अदावत बुज़ुर्गतर ऐबे'स्त।
गुल'स्त सादी—ओ दर चश्मे दुश्मनाँ ख़ार'स्त॥

बैत (बह्रे ख़फ़ीफ़)

नूर गेती फ़रोज़ चश्माए हूर।
ज़िश्त बाशद ब चश्मे मूशके कोर॥

हिकायत—२

बाज़रगाने रा हज़ार दीनार ख़सारत उफ्ताद। पिसर रा गुफ्त—'न बायद कि बा कसे ईं सुख़ुन दर मियान् निही।' गुफ्त—'ऐ पिदर! फ़रमाने तुरा'स्त न गोयम्—वलेकिन बायद कि मरा बर फ़ायदाए ईं मुत्तला गरदानी कि मस्लहत दर निहाँ दाश्तन् चीस्त?' गुफ्त—'ता मुसीबत दू न शवद—यके नुक़्साने माया व—दुवुम् शुमातते हमसाया।'

बैत (बह्रे मुतक़ारिब)

मगो अन्दुहे ख़ेश बा दुश्मनाँ।
कि लाहौल गोयन्द शादी कुनाँ॥

चौथा अध्याय

मौन के लाभो के विपय मे

कथा—१

मैंने अपने एक मित्र से कहा—'कि मैंने वाक्सयम इसलिये स्वीकार किया है कि कभी कभी वोलने में भली वुरी वातो का सयोग आ पडता है और शत्रुओ की दृष्टि सिवा वुराई के कही और नही पडती।' यह बोला—'शत्रु वह अच्छा जो भलाई न देखे।'

शेर

द्वेपवन्धु (शत्रु) भले के पास नही फटकता।
वल्कि इलजाम देता है उसे झूठा और शरीर का।।

बैत

दुश्मनी की आँख से गुण ज्यादा वडा ऐव होता है।
सादी गुलाव का फूल है पर शत्रुओ की आँख में काँटा है।।

बैत

विश्व को चमकाने वाला प्रकाश और ज्योति का स्रोत।
वुरा लगता है अन्धे चूहे (छछुन्दर) की दृष्टि मे।।

कथा—२

एक व्यापारी को एक हज़ार दीनार का घाटा हो गया। उसने पुत्र से कहा—'उचित नहीं है कि किसी से यह वात तू कहे।' पुत्र ने कहा—'हे पिता! आपकी आज्ञा ठीक है नही कहूँगा—किन्तु उचित है कि मुझ इसके लाभ से परिचित कराइये कि छिपा रखने में क्या भलाई है?'

वाप वोला—'ताकि मुसीवत दुगुनी न हो—एक तो धन की हानि और दूसरे पडोसी का मजा।'

बैत

मत कह अपना दुःख शत्रुओ से।
जो कि (ऊपर से) 'लाहौल' कहते हैं और (भीतर से) खुश होते है।।

चतुर्थोऽध्यायः

वाक्सयमफले

आख्यायितम्—१

अह किञ्चिन्मित्रमुक्तवान्—'मया वाङ्निवृत्तिरनेन हेतुनाङ्गीकृताऽथ कदाचिद्भद्रमभद्र वा वाच वक्तु सयोगो भवति, दृष्टिश्च द्विपतामृते दोषान्न किञ्चिदन्यत् पश्यतीति।' सोऽब्रवीत्—'शत्रु स हि वर यस्ते सौजन्य न च पश्यति।'

श्लोक

द्वेपभावसमापन्न सज्जन न च गच्छति।
'मृपावादो दुरात्मेति' कृत्वाऽऽक्षिपतित सदा।। १।।

श्लोक

द्वेपदूपितदृष्ट्या हि सर्वो दोपायते गुण।
सादी कुसुमकल्पोऽपि द्विपतामक्षिकण्टक।। २।।

श्लोक

विश्वस्य भास्कर सूर्यं प्रकाशस्योद्गमस्तथा।
दुर्विभातीह चान्धाय मूपकाय तु सवथा।। ३।।

आख्यायितम्—२

कस्यचिद् वणिज सहस्रदीनारस्य व्यृद्धि सञ्जाता। स स्वस्य पुत्रमवदत्—'नैतदुचित यत् कमपि चैना वार्ता ब्रवीथा।' पुत्रोऽब्रवीत्—'हे पितर्! अवितथो हि तवादेश। नाह वक्तास्मि कञ्चन। किन्तु समीचीन ह्यस्य गुणगभतया मा विज्ञापितुम्। यदस्य गोपने किं भद्र पश्यसीति?' पिताऽवदत्—'यत कष्ट द्विगुण न स्यात्, प्रथम वित्तनाशोत्थ द्वितीय जनहर्पजम्।। १।।'

श्लोक

मा वोचो दुःखमात्मान कदाचिद्द्विपत प्रति।
ब्रुवतो हा! महत्कष्ट, हृष्यतो हृदि भूरिश।।४।।